ॐ श्री सरस्वत्यैभया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे।।

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट - पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-2069 शकः-1934 सन् 2012-2013 भारतीय गणराज्य संवत् 63-64

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य

सम्पादक: धर्मपाल अग्रवाल, 2/45-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

मूल्य: 51.00 रु.

वितरक **धर्मसन्त प्रकाशन** नई सड़क दिल्ली-११०००६

विषय सूची

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रातः ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनकी ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंशित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **"शतक मार्त्तण्ड"** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७९ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्य भटीय" कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर **"आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र"** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

"शतक मार्त्तण्ड" जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने "श्री आर्यभट्ट पंचांग" ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

—सम्पादक

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है, यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया, जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख, इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को ओर आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

प्रमुख व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत व्रत पर्वादि सं. 2069 वि.

भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (ता. 23 मार्च सन् 2012 से 10 अप्रैल 2013 ई. तक)

अवकाश दिन	तिथि	मास
श्री राम नवमी	1	अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	5	"
वैशाखी	13	"
डॉ. अम्बेडकर ज.	14	"
मई दिवस	1	मई
बुद्ध पूर्णिमा	6	"
गंगा दशहरा	31	"
शब-ए-बारात (ऐ)	6	जुला.
रक्षा बंधन	2	अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	9-10	"
भा. स्वतंत्रता दिवस 66वाँ वर्ष	15	"
जमातुल विदा (ऐ)	17	"
ईद-उल-फित्र	20	"
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	19	सितं.
अनन्त चतुर्दशी	28	"
महात्मा गांधी व शास्त्री ज.	2	अक्टू.
श्री अग्रसेन जयंती	16	"
विजया दशमी	24	"
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	27	अक्टू.
श्री वाल्मीकि जयंती	29	"
महावीर निर्वाण दिवस	12	नवं.
दीपावली	13	"
भैय्या दूज	15	"
मुहर्रम ताजिया	25	"
गुरु नानक देव जयंती	28	"
गुरु तेग बहादुर बलिदान दि.	17	दिसं.
क्रिसमस डे	25	"
अंग्रेजी नववर्ष 2013 प्रा. (ऐ)	1	जन.
चैहल्लुम (ऐ)	3	"
लोहड़ी उत्सव (पं.-हरि.-हि.प्र.) (ऐ)	13	"
मकर संक्रांति (ऐ)	14	"
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	18	"
भा. गणतन्त्र दिवस 64वाँ वर्ष	26	"
ईद ए मौलाद (ऐ)	30	"
वसंत पंचमी	14	फर.
महाशिवरात्री	10	मार्च
होलिका दहन	26	"

नोट:-1. जिस अवकाश दिन के आगे (ऐ) लिखा है उन्हें ऐच्छिक अर्थात् वैकल्पिक अवकाश समझें। 2. मुस्लिम त्यौहार सभी नये चाँद से होते हैं। अत: स्थान भेद आदि कारणों से कभी-कभी एक दिन का फर्क आ जाना सम्भव है। 3. सभी अवकाशों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है।

प्रमुख व्रत पर्वोत्सवादि

व्रत पर्वोत्सव	तिथि	मास
नववर्ष प्रारम्भ	23	मार्च
सिंधारा (राज.), चेटीचंड	24	"
गणगौरी 3, गौरी 3, सौभाग्य 3	25	"
श्री पंचमी, कल्पादि 5, नाग पंचमी	27	"
स्कंद षष्ठी व्रत	28	"
श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति)	31	"
श्री रामनवमी, नवरात्र पूर्ण	1	अप्रै.
हरिदमनोत्सव	4	"
अनंग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी	5	"
चैत्री पूर्णिमा, मन्वादि 15, गुड फ्राइडे	6	"
श्री हनुमान ज., वैशाख स्नान प्रा.	6	"
अनुसुइया ज.	10	"
शीतला पूजन, बूढ़ा बासोड़ा	12	"
देव दामोदर पुण्य तिथि (असम)	22	"
शिवाजी जयंती	23	"
श्री परशुराम जयंती	24	अप्रै.
अक्षय 3, त्रेता युगादि 3, कल्पादि 3	24	"
चन्दन षष्ठी (बिहार)	27	"
श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति)	28	"
श्री सीता नवमी (जानकी ज.)	30	"
विश्व मजदूर दिवस	1	मई
रुकमणी द्वादशी	3	"
अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा., श्री नृसिंह जयंती	4	"
वैशाखी पूर्णिमा व्रत, श्री कूर्म जयंती	5	"
पीपल पूजन, अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति	6	"
वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा	6	"
देवर्षि नारद जयंती	7	"
श्री दादूदयाल पुण्य तिथि	13	"
मधुसूदन द्वादशी	17	"
वट सावित्री व्रत प्रा. (अमा. पक्ष)	18	"
भावुका अमावस्या	20	"
वट सावित्री व्रत पूजन (अमा.पक्ष)	20	"
करवीर व्रत, करिदिनं, गंगा स्नान प्रा.	21	मई
रम्भा तृतीया व्रत	23	"
पं. जवाहर लाल नेहरू पुण्य दि.	27	"
अरण्य षष्ठी, जामित्र षष्ठी (बंगाल)	27	"
महेश नवमी (माहेश्वरीणां उत्पत्ति)	30	"
श्री गंगा दशहरा (गंगावतरण)	31	"
चम्पक द्वादशी	1	जून
वट सावित्री व्रतारंभ	2	"
ज्येष्ठी पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत पूजन	3	"
विश्व पर्यावरण दिवस	5	"
गोपद्म व्रतोद्यापन	15	"
मनोरथ द्वितीया (बंगाल)	21	"
जगदीश रथ यात्रा (पुरी)	21	"
कुमार षष्ठी व्रत	25	"
वैवस्वत सप्तमी (सूर्य पूजन)	26	"
खरसी पूजा (त्रिपुरा)	27	"
भड्डली नवमी, शूद्रादि 9	28	"
आशा दशमी व्रत, मन्वादि 10	29	"
चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रा.	30	"
आषाढ़ी पूर्णिमा, मन्वादि 15	3	जुला.
कोकिला व्रत, वायु परीक्षा	3	"
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	3	"
अशून्य शयन व्रत प्रा. (बंगाल)	4	"
नाग पंचमी (मरुस्थले)	8	"
शीतला 7 (उड़ीसा), मंगला गौरी पूजा	10	"
विश्व जनसंख्या दिवस	11	"
केर पूजा (त्रिपुरा)	12	"
मंगला गौरी पूजा	17	"
हरियाली 30, मन्वादि 30	19	"
चितलगी 30, सरस माधुरी जयंती	19	"
सिंधारा (राजस्थान)	21	"
मधुश्रवा (छोटी) तीज, हरियाली तीज	22	"
वरद चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	22	"
नाग पंचमी देशाचारे, अमरनाथ यात्रारंभ	23	"
मंगला गौरी पूजा	24	"
शीतला सप्तमी (सिंध)	25	"
पवित्रार्पण 12, दधि भक्षण व्रतारंभ	30	"
मंगला गौरी पूजा	31	"
लोक मान्य तिलक पुण्य दि.	1	अग.
हयग्रीव जयंती, उपाकर्म (अथर्व.)	1	"
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, गायत्री ज.	2	अग.
अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	2	"
अशून्य शयन व्रत पूर्ति (बंगाल)	3	"
सिंधारा (राजस्थान)	3	"
कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज	4	"
संकट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	5	"
रक्षा पंचमी (उड़ीसा)	6	"
चन्दन 6, ऊभी 6, ललही 6, पुत्रार्थी व्रतारंभ	8	"
माधव देव पुण्य ति. (असम)	8	"
भारतीय क्रांति दिवस, कालाष्टमी	9	"
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	9-10	"
मां आद्यकाली जयंती	10	"
गोगा नवमी, नन्दोत्सव (गोकुल)	11	"
वत्स द्वादशी, पर्युषण जैन	14	"
भारतीय स्वतंत्रता दिवस 66 वां वर्ष	15	"
कलियुगादि 13	15	"
अघोरा 14, कैलाश यात्रा	16	"
कुशोत्पाटिनी पिठोरी अमावस्या	17	"
मन्वादि 30, लोहार्गल स्नान (राज.)	17	"
नक्त व्रत पूर्ति, पुरुषोत्तम मास प्रा.	17	"
पुरुषोत्तम मास प्रारंभ	18	"
विश्व साक्षरता दिवस	8	सितं.
भारतीय इन्जीनियर्स डे	15	"
पुरुषोत्तम (अधिक) मास पूर्ति	16	"
विश्वकर्मा पूजन, उपाकर्म (सामगानां)	17	"
बाबा रामदेव मेला प्रा. (रुणिचा)	17	"
हरितालिका 3, गौरी 3, मन्वादि 3	18	"
विनायक 4, कलंकी 4, पत्थर 4	19	"
संवत्सरी जैन	19	"
ऋषि पंचमी व्रत, क्षमावणी पर्व	20	"
सूर्य षष्ठी व्रत, ललिता 6 (गुज.)	21	"
बलदेव 6 (श्री बलराम ज.)	21	"
मुक्ताभरण सप्तमी, संतान सप्तमी	22	"
महालक्ष्मी व्रत प्रारंभ	22	"
श्री राधा जयंती	23	"
श्री चन्द नवमी, अदु:ख 9, भागवत ज.	24	"
दशावतार, मेला रामदेव पूर्ण	25	"
श्रवण द्वादशी व्रत	26	"
विश्व पर्यटक दिवस, गोत्रिरात्री व्रतारंभ	27	"
भुवनेश्वरी ज., अनन्त चतुर्दशी व्रत	28	"

भुवनेश्वरी ज., अनन्त चतुर्दशी व्रत	28 ''
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा व्रत	29 सितं.
महालयारंभ, गोत्रिरात्री व्रत पूर्ण	30 ''
बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी	30 ''
महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री ज.	2 अक्टू.
चन्दन षष्ठी व्रत	5 ''
भा. वायुसेना दिवस, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति	8 ''
जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत,	8 ''
मातृ नवमी, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्धे	9 ''
कात्यायनी जयंती	14 ''
गजच्छाया पर्व स्नानदानार्थ	15 ''
शारदीय नवरात्र प्रा., घटस्थापन	16 ''
विश्व खाद्य दिवस	16 ''
उपांग ललिता पंचमी व्रत	19 ''
सरस्वती आवाहनम्	20 ''
सरस्वती पूजनम्	21 ''
महाष्टमी (भद्रकाल्यावतार)	22 ''
महानवमी, दुर्गानवमी, मन्वादि 9	23 ''
नवरात्र पूर्ण, सरस्वती विसर्जन	23 ''
विजया दशमी (रावण दाह)	24 ''
अपराजिता व शमी पूजन	24 ''
भरत मिलाप	25 ''
शरत्पूर्णिमा, रास पूर्णिमा (वृन्दावन)	29 ''
कोजागर व्रत, कार्तिक स्नान प्रा.	29 ''
इन्दिरा गांधी पुण्य दि., सरदार पटेल ज.	31 ''
करवा चौथ, कर्क 4, दशरथ 4	2 नवं.
अहोई अष्टमी, कालिका पूजा (पं.)	7 ''
गोवत्स द्वादशी (गोवत्स पूजन)	10 ''
धनतेरस, धन्वन्तरी ज., यमाय दीपदानम्	11 ''
नरकहारिणी रूप चतुर्दशी	12 ''
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	13 ''
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बली पूजा	14 ''
पं. जवाहर लाल नेहरू ज., बाल दिवस	14 ''
भैय्या दूज, यम द्वितीया, यमुना स्नान	15 ''
गोसंवर्धन सप्ताह प्रा., चित्रगुप्त पूजन	15 ''
सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार)	17 ''
सौभाग्य पंचमी, पांडव 5	18 ''
श्रीमती इन्दिरा गांधी जन्म दिवस	19 ''
सूर्य षष्ठी (डाला छठ) पूजा (बिहार)	19 ''
सहस्रार्जुन ज., कल्पादि 7	20 ''
गोपाष्टमी, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ति	21 ''
अक्षय नवमी, कूष्मांड 9, आवंला 9	22 ''
कृतयुगादि 9, जगद्धातृ पूजन	22 ''
भीष्म पंचक प्रा., तुलसी विवाह	24 ''
चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण	24 नवं.
प्रबोधनी ११ व्रत	24 ''
मन्वादि द्वादशी, कालीदास जयंती	25 ''
वैकुण्ठ 14 व्रत, झाड़ी पूजन (राज.)	27 ''
काशी विश्वनाथ प्रति. दि., सांई जयंती	27 ''
गुरु नानकदेव जयंती, देव दीपोत्सव	28 ''
कार्तिकी पूर्णिमा, मन्वादि 15	28 ''
कार्तिक स्नान व भीष्म पंचक पूर्ण	28 ''
सौभाग्य सुन्दरी व्रत, विश्व एड्स दिवस	1 दिसं.
डा. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि., विकलांग दि.	3 ''
भारतीय नौ सेना दिवस	4 ''
श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव पूजन	6 ''
भा. झण्डा दिवस	7 ''
वैतरणी व्रत	9 ''
मानवाधिकार दिवस	10 ''
श्री तिरुपति बालाजी जयंती	12 ''
सरदार पटेल पुण्य दि., धनु मलमासारंभ	15 ''
नाग पंचमी (द.भा.)	17 ''
चम्पा षष्ठी व्रत (महा.), स्कंद षष्ठी	18 ''
श्री राम कलेवा, मूलक रूपिणी 6	18 ''
मित्र सप्तमी	19 ''
महानंदा 9, कल्पादि 9	21 ''
स्वा. श्रद्धानंद बलिदान दि., किसान दि.	23 ''
श्री गीता जयंती	23 ''
व्यंजन द्वादशी	24 ''
क्रिसमस डे (बड़ा दिन)	25 ''
अन्नपूर्णा जयंती, श्री दत्तात्रेय जयंती	27 ''
न्यू ईयर इवनिंग डे	31 ''

सन् 2013 ई.

नववर्ष 2013 प्रारंभ	1 जन.
स्वरूप द्वादशी व्रत	8 ''
वकुला 30 (उड़ीसा)	11 ''
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस	11 ''
लोहड़ी उत्सव	13 ''
मकर संक्रांति, मलमास पूर्ण	14 ''
भारतीय थल सेना दिवस	15 ''
शाम्ब दशमी (उड़ीसा)	21 ''
वैकुण्ठ 11 (द.भा.), मन्वादि 11	22 ''
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	23 ''
शाकम्भरी ज., भा. गणतंत्र दि. 64वाँ वर्ष	26 ''
पौषी पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान प्रा.	27 ''
दशाश्वमेध घाटे स्नान प्रा. (काशी)	28 ''
लाला लाजपतराय जयंती	28 ''
महात्मा गांधी पुण्य दि., ईद-ए-मौलाद	30 जन.
स्वामी विवेकानंद ज., श्री रामानंदाचार्य ज.	3 फर.
तिल द्वादशी, श्री शीतलनाथ जन्म-तप	7 ''
रटन्ति कालिका पूजन, ऋषभदेव मोक्ष	8 ''
माघ बिहु (असम), पोंगल पर्व (केरला)	9 ''
मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि 30	10 ''
कुंभ महापर्व प्रयागराज	10 ''
गौरी 3 व्रत, गोंतरी (पं.), वरद 4, तिल 4	13 ''
वसन्त (श्री) पंचमी, तक्षक पूजा	14 ''
वेलेण्टाइन डे, रति कामोत्सव, सरस्वती पुजन	14 ''
दारिद्र्य हरण 6, शीतला षष्ठी (बंगाल)	16 ''
रथ सप्तमी, आरोग्य 7	17 ''
अचल 7, मन्वादि 7, चन्द्रभागा 7	17 ''
भीष्माष्टमी	18 ''
भीष्म द्वादशी (भीष्म तर्पण)	22 ''
कल्पादि 13, फातिहा यजदहुम (मु.)	23 ''
माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति	25 ''
संत रैदास जयंती, ललिता जयंती	25 ''
दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ति (काशी)	25 ''
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दि.	28 ''
समर्थ गुरु रामदास जयंती	6 मार्च
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	7 ''
विश्व महिला दिवस	8 ''
श्री महाशिवरात्री व्रत, वैद्यनाथ जयंती	10 ''
सोमवती अमा., शिव खप्पर पूजन	11 ''
फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस ज.	13 ''
पं. लेखराम वीर 3, मीन मलमासारंभः	14 ''
महर्षि याज्ञवल्क जयंती	16 ''
गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल)	17 ''
होलाष्टक प्रा., दादुदयाल जयंती	20 ''
गोविन्द द्वादशी	24 ''
होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ति	26 ''
मन्वादि 15, चैतन्य महाप्रभु जयंती	27 ''
छारेड़ी, धुलैण्डी	27 ''
वसन्त प्रतिपदा, गणगौरी पू. प्रा.(राज.)	28 ''
कल्पादि 3, गुड फ्राइडे	29 ''
आशा चतुर्थी व्रत (राज.)	30 ''
रंग पंचमी, ईस्टर सण्डे	31 ''
एकनाथ षष्ठी, विश्व स्वास्थ्य दिवस	1 अप्रै.
शीतलाष्टमी, शीतला पूजन, अष्टका श्राद्ध	3 ''
दशामाता व्रत	5 ''
सूरज रोटा व्रत (राज.)	7 ''
रंग त्रयोदशी	8 ''
मन्वादि 30, चांद्र संवत्सर 2069 पूर्ण	10 ''

विनायक चौथ व्रत (शुक्ल पक्षीय)

चैत्र	सोमवार	26 मार्च
वैशाख	बुधवार	25 अप्रै.
ज्येष्ठ	शुक्रवार	25 मई
आषाढ़	शनिवार	23 जून
श्रावण	रविवार	22 जुला.
प्र.भाद्रपद	मंगलवार	21 अग.
द्वि.भाद्रपद	बुधवार	19 सितं.
आश्विन	गुरुवार	18 अक्टू.
कार्तिक	शुक्रवार	16 नवं.
मार्गशीर्ष	रविवार	16 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	मंगलवार	15 जन.
माघ	बुधवार	13 फर.
फाल्गुन	शुक्रवार	15 मार्च

चतुर्थी व्रत (कृष्ण पक्षीय)

वैशाख	सोमवार	9 अप्रै.
ज्येष्ठ	मंगलवार	8 मई
आषाढ़	गुरुवार	7 जून
श्रावण	शुक्रवार	6 जुला.
प्र.भाद्रपद	रविवार	5 अग.
द्वि.भाद्रपद	मंगलवार	4 सितं.
आश्विन	बुधवार	3 अक्टू.
कार्तिक	शुक्रवार	2 नवं.
मार्गशीर्ष	रविवार	2 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	मंगलवार	1 जन.
माघ	बुधवार	30 ''
फाल्गुन	गुरुवार	28 फर.
चैत्र	शनिवार	30 मार्च

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

चैत्र	शनिवार	31 मार्च
वैशाख	रविवार	29 अप्रै.
ज्येष्ठ	मंगलवार	29 मई
आषाढ़	बुधवार	27 जून
श्रावण	गुरुवार	26 जुला.
प्र.भाद्रपद	शुक्रवार	24 अग.
द्वि.भाद्रपद	रविवार	23 सितं.
आश्विन	सोमवार	22 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	31 नवं.

मार्गशीर्ष	गुरुवार	20 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	शनिवार	19 जन.
माघ	सोमवार	18 फर.
फाल्गुन	बुधवार	20 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत

वैशाख	शुक्रवार	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	शनिवार	12 मई
आषाढ़	सोमवार	11 जून
श्रावण	बुधवार	11 जुला.
प्र.भाद्रपद	गुरुवार	9 अग.
द्वि.भाद्रपद	शनिवार	8 सितं.
आश्विन	सोमवार	8 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	7 नवं.
मार्गशीर्ष	गुरुवार	6 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	शनिवार	5 जन.
माघ	रविवार	3 फर.
फाल्गुन	मंगलवार	5 मार्च.
चैत्र	बुधवार	3 अप्रै.

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	3 अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	16-17 ,,
,,	शुक्ल	मोहिनी	2 मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	16 ,,
,,	शुक्ल	निर्जला	1 जून
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी	15 ,,
,,	शुक्ल	देवशयनी	30 ,,
श्रावण	कृष्ण	कामदा	14 जुला.
,,	शुक्ल	पवित्रा	29 ,,
प्र.भाद्रपद	कृष्ण	अजा	13 अग.
,,	शुक्ल	कमला	27 ,,
द्वि.भाद्रपद	कृष्ण	कमला	12 सितं.
,,	शुक्ल	पद्मा(जलझूलनी)	26 ,,
आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा	11 अक्टू.
,,	शुक्ल	पापांकुशा	25 ,,
कार्तिक	कृष्ण	रम्भा	10 नवं.
,,	शुक्ल	देव प्रबोधिनी	24 ,,
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पत्ति	9-10 दिसं.
,,	शुक्ल	मौनी	23 ,,
	सन् 2013 ई.		
पौष	कृष्ण	सफला	8 जन.
पौष	शुक्ल	पुत्रदा	22 जन.
माघ	कृष्ण	षट्तिला	6 फर.
,,	शुक्ल	जया	21 ,,
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	8 मार्च
,,	शुक्ल	आमलकी	23 ,,
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	6 अप्रै.

नोट-उपरोक्त एकादशी व्रतों के आगे जहाँ दो तारीखें दी गई हैं उनमें प्रथम स्मार्तो व दूसरी वैष्णवों की एकादशी समझें।

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल		4 अप्रै.
वैशाख	कृष्ण		18 ,,
,,	शुक्ल		4 मई
ज्येष्ठ	कृष्ण		18 ,,
,,	शुक्ल	शनि प्रदोष	2 जून
आषाढ़	कृष्ण	,, ,,	16 ,,
,,	शुक्ल		1 जुला.
श्रावण	कृष्ण	सोम प्रदोष	16 ,,
,,	शुक्ल	,, ,,	30 ,,
प्र.भाद्रपद	कृष्ण		15 अग.
,,	शुक्ल		29 ,,
द्वि.भाद्रपद	कृष्ण		13 सितं.
,,	शुक्ल		27 ,,
आश्विन	कृष्ण	शनि प्रदोष	13 अक्टू.
,,	शुक्ल	,, ,,	27 ,,
कार्तिक	कृष्ण		11 नवं.
,,	शुक्ल		25 ,,
मार्गशीर्ष	कृष्ण	भौम प्रदोष	11 दिसं.
,,	शुक्ल	,, ,,	25 ,,
	सन् 2013 ई.		
पौष	कृष्ण		9 जन.
,,	शुक्ल		24 ,,
माघ	कृष्ण		8 फर.
,,	शुक्ल	शनि प्रदोष	23 ,,
फाल्गुन	कृष्ण	,, ,,	9 मार्च
,,	शुक्ल		24 ,,
चैत्र	कृष्ण		7 अप्रै.

मासिक शिवरात्री व्रत

वैशाख	गुरुवार	19 अप्रै.
ज्येष्ठ	शनिवार	19 मई
आषाढ़	रविवार	17 जून
श्रावण	मंगलवार	17 जुला.
प्र.भाद्रपद		
द्वि.भाद्रपद	शुक्रवार	14 सितं.
आश्विन	रविवार	14 अक्टू.
कार्तिक	सोमवार	12 नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	11 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	गुरुवार	10 जन.
माघ	शुक्रवार	8 फर.
फाल्गुन	रविवार	10 मार्च.
चैत्र	सोमवार	8 अप्रै.

पूर्णिमा व्रत

चंद्रोदय व्यापिनी	मास	सूर्योदय व्यापिनी
6 अप्रै.	चैत्र	6 अप्रै.
5 मई	वैशाख	6 मई
3 जून	ज्येष्ठ	4 जून
3 जुला.	आषाढ़	3 जुला.
1 अग.	श्रावण	2 अग.
31 ,,	प्र.भाद्रपद	31 ,,
29सितं.	द्वि.भाद्रपद	30 सितं.
29 अक्टू.	आश्विन	29 अक्टू.
28 नवं.	कार्तिक	28 नवं.
27 दिसं.	मार्गशीर्ष	28 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
26 जन.	पौष	27 जन.
25 फर	माघ	25 फर.
26 मार्च	फाल्गुन	27 मार्च

अमावस्याएं

पितृकार्या तर्पणादि निमित्त	मास	देवकार्या स्नान दानार्थ
21 अप्रै.	वैशाख	21 अप्रै.
20 मई	ज्येष्ठ	20 मई
19 जून	आषाढ़	19 जून
18 जुला.	श्रावण	19 जुला.
17 अग.	प्र.भाद्रपद	17 अग.
15 सितं.	द्वि.भाद्रपद	16 सितं.
15 अक्टू.	आश्विन	15 अक्टू.
13 नवं.	कार्तिक	13 नवं.
13 दिसं.	मार्गशीर्ष	13 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
11 जन.	पौष	11 जन.
10 फर	माघ	10 फर.
11 मार्च		11 मार्च

श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र	शुक्रवार	6 अप्रै.
वैशाख	शनिवार	5 मई
ज्येष्ठ	सोमवार	4 जून
आषाढ़	मंगलवार	3 जुला.
श्रावण	गुरुवार	2 अग.
प्र.भाद्रपद	शुक्रवार	31 अग.
द्वि.भाद्रपद	शनिवार	29 सितं.
आश्विन	सोमवार	29 अक्टू.
कार्तिक	बुधवार	28 नवं.
मार्गशीर्ष	शुक्रवार	28 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
पौष	शनिवार	26 जन.
माघ	सोमवार	25 फर.
फाल्गुन	बुधवार	27 मार्च

सायन संक्रांतियां

वृष	गुरुवार	19 अप्रै.
मिथुन	रविवार	20 मई
कर्क	मंगलवार	19 जून
सिंह	रविवार	22 जुला.
कन्या	मंगलवार	21 अग.
तुला	शुक्रवार	21 सितं.
वृश्चिक	सोमवार	22 अक्टू.
धनु	बुधवार	21 नवं.
मकर	गुरुवार	20 दिसं.
	सन् 2013 ई.	
कुंभ	शनिवार	19 जन.
मीन	सोमवार	18 फर.
मेष	बुधवार	20 मार्च

निरयण संक्रांतियाँ (पुण्यकाल)

मेष	शुक्रवार	13 अप्रै.
वृष	सोमवार	14 मई
मिथुन	गुरुवार	14 जून
कर्क	सोमवार	16 जुला.
सिंह	गुरुवार	16 अग.
कन्या	रविवार	16 सितं.
तुला	बुधवार	17 अक्टू.
वृश्चिक	शुक्रवार	16 नवं.

सन् 2013 ई.

मकर	सोमवार	14 जन.
कुम्भ	मंगलवार	12 फर.
मीन	गुरुवार	14 मार्च

षडऋतु, गोल एवं अयनारंभ

तारीख	ऋतु	अयन	गोल
19 अप्रै.	ग्रीष्म	-	-
19 जून	वर्षा	दक्षिण	-
21 अग.	शरद	-	-
21 सितं.	-		दक्षिण
22 अक्टू.	हेमन्त	-	-
20 दिसं.	शिशिर	उत्तर	-
18 फर.	वसन्त	-	-
20 मार्च	-	-	उत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध (महालय)

पूर्णिमा श्राद्ध	30 सितं.
प्रतिपदा श्राद्ध	1 अक्टू.
द्वितीया श्राद्ध	2 ''
तृतीया श्राद्ध	3 ''
चतुर्थी श्राद्ध	4 ''
पंचमी श्राद्ध	5 ''
षष्ठी श्राद्ध	6 ''
सप्तमी श्राद्ध	7 ''
अष्टमी श्राद्ध	8 ''
नवमी श्राद्ध (सौभाग्यवती श्राद्ध)	9 ''
दशमी श्राद्ध	10 ''
एकादशी श्राद्ध	11 ''
द्वादशी श्राद्ध	12 ''
त्रयोदशी श्राद्ध	13 ''
चतुर्दशी श्राद्ध (दुर्मरण श्राद्ध)	14 ''
अमावस्या श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध)	15 ''
मातामह श्राद्ध	16 ''

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	25 मार्च
श्री राम जयंती	1 अप्रै.
श्री परशुराम जयंती	24 ''
श्री नृसिंह जयंती	4 मई
श्री कूर्म जयंती	5 ''
श्री बुद्ध जयंती	6 ''
श्री कल्की जयंती	24 जुला.
श्री कृष्ण जयंती	9 अग.
श्री वाराह जयंती	18 सितं.
श्री वामन जयंती	26 ''

दसमहाविद्या जयंतियाँ

श्री महातारा जयंती	31 मार्च
श्री मातङ्गी जयंती	24 अप्रै.
श्री बगलामुखी जयंती	29 ''
श्री छिन्नमस्ता जयंती	4 मई
श्री धूमावती जयंती	29 ''
आद्या माँ श्रीकाली जयंती	10 अग.
श्री भुवनेश्वरी जयंती	28 सितं.
श्री कमला जयंती	13 नवं.
षोडशी श्री त्रिपुर सुन्दरी जयंती	27 दिसं.
श्री विद्या माँ ललिता जयंती	25 फर.

जैन व्रत, पर्वोत्सव

दशलक्षण व्रत प्रा.	26 मार्च
रोहिणी व्रत	28 ''
आयंबिल ओली प्रा.	30 ''
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	1 अप्रै.
श्री सुमतिनाथ जन्म-ज्ञान-मोक्ष	3 ''
श्री महावीर जयंती	5 ''
दशलक्षण व्रत पूर्ण	6 ''
आयंबिल ओली पूर्ण	6 ''
मुनि सुव्रत नाथ जन्म-तप	15 ''
श्री कुन्थनाथ जन्म-तप	21 ''
रोहिणी व्रत	25 ''
श्री महावीर स्वामी कैवल्य ज्ञान	1 मई
ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा.	6 ''
श्री अनन्त नाथ जन्म-तप	17 ''
श्री शान्ति नाथ जन्म-तप	18 ''
रोहिणी व्रत	22 ''
श्रुति पंचमी	26 ''
श्री सुपार्श्व नाथ जन्म-तप	2 जून
ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण	4 ''
श्री नमीनाथ जन्म-तप	14 ''
रोहिणी व्रत	18 ''
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	27 ''
चौमासी चौदस	2 जुला.
चातुर्मास व्रत नियम प्रा.	2 ''
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	3 ''
तेरापन्थ स्थापना दिवस	3 ''
रोहिणी व्रत	15 जुला.
श्री नेमी नाथ जयंती, श्री पार्श्वनाथ मोक्ष	25 ''
रोहिणी व्रत	12 अग.
पर्यूषण पर्व प्रा.	13 ''
कल्पसूत्र पाठ	17 ''
रोहिणी व्रत	8 सितं.
तेलाधर तप	17 ''
पर्यूषण पर्व पूर्ण, संवत्सरी	19 ''
क्षमावणी पर्व, दशलक्षण व्रत प्रा.	20 ''
श्री कालू निर्वाण दि.	21 ''
आचार्य तुलसी पट्टारोहण	24 ''
आचार्य भिक्षु निर्वाण दि.	29 ''
दशलक्षण व्रत पूर्ण	29 ''
रोहिणी व्रत	5 अक्टू.
आयंबिल ओली प्रा.	21 ''
आयंबिल ओली पूर्ण	29 ''
रोहिणी व्रत	2 नवं.
श्री पद्म प्रभु जन्म-तप	11 ''
श्री महावीर निर्वाण दिवस	12 ''
आचार्य श्री तुलसी जन्म दिवस	15 ''
ज्ञान पंचमी	18 ''
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	21 ''
श्री संभवनाथ जन्म-तप	28 ''
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	28 ''
चातुर्मास्य व्रत नियम पूर्ण	28 ''
रोहिणी व्रत	29 ''
श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस	9 दिसं.
श्री पुष्प दन्त नाथ जन्म-तप	14 ''
श्री मौनी ग्यारस	23 ''
श्री मल्लिनाथ जन्म-तप	23 ''
रोहिणी व्रत	26 ''
श्री अरहनाथ जन्म-तप	27 ''

सन् 2013 ई.

आचार्य श्री तुलसी दीक्षा दिवस	1 जन.
श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप	8 ''
श्री चन्द्र प्रभु जन्म-तप	8 ''
श्री यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पु., त्रिस्तुति	14 ''
श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य	18 ''
रोहिणी व्रत	22 ''
श्री जिनानन्द सागर पुण्य दिवस	22 ''
श्री शीतल नाथ जन्म-तप	7 फर.
मेरु 13, श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणंक	8 ''
श्री ऋषभदेव मोक्ष	8 ''
श्री विमल नाथ जन्म-तप	13 ''
दशलक्षण व्रत प्रा.	15 फर.
मर्यादा महोत्सव	17 ''
रोहिणी व्रत	19 ''
श्री अजित नाथ जन्म-तप	20 ''
श्री अभिनन्दन नाथ जन्म-तप	22 ''
श्री धर्मनाथ जन्म-तप	23 ''
श्री जिनेन्द्र रथ यात्रा	24 ''
दशलक्षण व्रत पूर्ण	25 ''
श्री पद्म प्रभु मोक्ष	1 मार्च
श्री श्रेयांश नाथ जन्म-तप	8 ''
श्री वासुपूज्य जन्म-तप	10 ''
रोहिणी व्रत	18 ''
अष्टान्हिका पर्व प्रा.	19 ''
अष्टान्हिका पर्व पूर्ण	27 ''
श्री ऋषभ देव जन्म-तप	4 अप्रै.

इस्लामी त्यौहार

फातिहा यजदहूम	4 अप्रै.
हजरत अली जन्म	4 जून
शब्बे मिराज	18 ''
शब ए बारात (मु.)	6 जुला.
पाक रोजे शुरू	22 ''
सहादत ए हजरत अली	11 अग.
जमात ए अलविदा, शब ए कद्र	17 ''
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	20 ''
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो (दिल्ली)	3 अक्टू.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	27 ''
मुहर्रम ताजिया	25 नवं.

सन् 2013 ई.

चेहल्लम शहीद करबला	3 जन.
आखरी चाहर शम्बा	9 ''
सहादत ए इमाम हसन	11 ''
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	25 ''
ईद-ए-मौलाद	30 ''
फातिहा यजदहूम	23 फर.

क्रिश्चियन पर्व

क्रिसमस डे (बड़ा दिन), ईसा ज.	25 दिसं.
न्यू ईयर ईवनिंग डे	31 ''
न्यू ईयर सन् 2013 प्रा.	1 जन.
वैलेण्टाइन डे	14 फर.
गुड फ्राइडे	29 मार्च
ईस्टर सण्डे	31 ''

महापुरुष जयन्तियाँ

श्री झूलेलाल जयंती	24 मार्च
भक्त श्री पीपाराम जयंती	6 अप्रै.
डॉ. श्री भीमराव अम्बेडकर जयंती	14 ''
श्री वल्लभाचार्य जयंती	16 ''
श्री सेन भक्त जयंती	16 ''
श्री शुकदेव मुनि जयंती	21 ''
छत्रपति वीर शिवाजी जयंती	23 ''
आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयंती	26 ''
श्री सूरदास जयंती	26 ''
श्री रामानुजाचार्य जयंती (द.भा.)	26 ''
श्री बाबू कुंवर सिंह जयंती (बिहार)	28 ''
श्री हित हरिवंश महाप्रभु जयंती	2 मई
कवि श्री रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती	7 ''
माँ आनंदमयी जयंती	8 ''
श्री महाराणा प्रताप जयंती	24 ''
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	25 ''
सन्त ज्ञानेश्वर जयंती	9 अग.
स्वामी शिवानंद जयंती	14 ''
सन्त सुथरेशाह जयंती	17 ''
ऋषि दधीची जयंती	23 सितं.
स्वामी हरिदास जयंती	23 ''
श्री चन्द जयंती (उदासीन संप्रदाय)	24 ''
डॉ. सर्वपल्ली श्री राधा कृष्णन जयंती	1 अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	2 ''
पं. गोविन्द वल्लभ पंत जयंती	5 ''
महर्षि वाल्मीकि जयंती	29 ''
कविकुल कालीदास जयंती	25 नवं.
वीर वैरागी जयंती (नकोदर)	26 ''
सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती	26 ''
श्री निम्बार्काचार्य जयंती	28 ''
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दि.	3 दिसं.
संत घासीदास जयंती	16 ''
भक्त नरसी मेहता जयंती	19 ''
ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन)	25 ''
पं. मदनमोहन मालवीय जयंती	25 ''
सन् 2013 ई.	
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती	23 जन.
लाला लाजपत राय जयंती	28 ''
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	3 फर.
स्वामी विवेकानन्द जयंती	3 ''
योगीराज बाबा लाल दयाल जयंती	12 ''
श्री रामचरण स्नेही जयंती	24 फर.
भक्त रैदास जयंती	25 ''
समर्थ गुरु रामदास जयंती	6 मार्च
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	7 ''
श्री दीनबंधु इण्ड्यूज जयंती	9 ''
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	13 ''
पं. लेख राम वीर जयंती	14 ''
महर्षि याज्ञवल्क जयंती	16 ''
संत श्री दादूदयाल जयंती	20 ''
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	27 ''
संत तुकाराम जयंती	29 ''
श्री ऋषभदेव जयंती	4 अप्रै.

सिक्ख गुरु पर्व (प्रा. मत से)

प्रकाश दिवस

गुरु तेगबहादुर जी	11 अप्रै.
गुरु अर्जुनदेव जी	12 ''
गुरु अंगददेव जी	22 ''
गुरु अमरदास जी	5 मई
गुरु हरगोविन्द जी	5 जून
गुरु हरकिशन जी	12 जुला.
गुरुग्रंथ साहिब जी	16 सितं.
गुरु रामदास जी	31 अक्टू.
गुरु नानकदेव जी	28 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	18 जन.
गुरु हरराय जी	23 फर.

गुरुयाई मिली (प्रा. मत से)

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु अमरदास जी	23 मार्च
गुरु तेगबहादुर जी	5 अप्रै.
गुरु हरगोविन्द जी	13 मई
गुरु अर्जुनदेव जी	17 सितं.
गुरु रामदास जी	28 ''
गुरु अंगददेव जी	5 अक्टू.
गुरु हरकिशन जी	8 नवं.
गुरु ग्रंथ साहिब जी	15 ''
गुरु गोविन्द सिंह जी	15 दिसं.
गुरु हरराय जी	8 अप्रै.

ज्योति जोत समाए (प्रा. मत से)

गुरु अंगददेव जी	26 मार्च
गुरु हरगोविन्द जी	27 ''
गुरु हरकिशन जी	5 अप्रै.
गुरु अर्जुनदेव जी	25 मई
गुरु रामदास जी	18 सितं.
गुरु अमरदास जी	30 ''
गुरु नानकदेव जी	10 अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	18 नवं.
गुरु तेगबहादुर जी	17 दिसं.
गुरु हरराय जी	8 जन.

सिक्खों के अन्य पर्व (प्रा. मत से)

खालसा पंथ साजना दिवस	13 अप्रै.
गुरुग्रंथ साहिब जी वार्षिकोत्सव	25 दिसं.

प्रकाश दिवस

(नानक शाही कैलेण्डर से)

(शिरोमणी गुरु द्वारा प्रबंधक कमेटी अनुसार)

गुरु अंगददेव जी	18 अप्रै.
गुरु तेगबहादुर जी	18 ''
गुरु अर्जुनदेव जी	2 मई
गुरु अमरदास जी	23 ''
गुरु हरगोविन्द जी	5 जुला.
गुरु हरकिशन जी	23 ''
गुरु ग्रंथ साहिब जी	1 सितं.
गुरु रामदास जी	9 अक्टू.
गुरु नानकदेव जी	28 नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	18 जन.
गुरु हरराय जी	31 ''

गुरुयाई मिली

गुरु नानकदेव जी	अवतार दिन से
गुरु हरराय जी	14 मार्च
खालसा पंथ साजना दिवस	13 अप्रै.
गुरु तेगबहादुर जी	16 ''
गुरु अमरदास जी	16 ''
गुरु हरगोविन्द जी	11 जून
गुरु रामदास जी	16 सितं.
गुरु अर्जुनदेव जी	16 ''
गुरु अंगददेव जी	18 सितं.
गुरु हरकिशन जी	20 अक्टू.
गुरु ग्रन्थ साहिब जी	15 नवं.
गुरु गोबिन्द सिंह जी	31 ''

ज्योति जोत समाए

गुरु अंगददेव जी	16 अप्रै.
गुरु हरकिशन जी	16 ''
गुरु अर्जुनदेव जी	25 मई
गुरु अमरदास जी	16 सितं.
गुरु रामदास जी	16 ''
गुरु नानकदेव जी	22 ''
गुरु हरराय जी	20 अक्टू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	18 नवं.
गुरु तेगबहादुर जी	24 ''
गुरु हरगोविन्द जी	19 मार्च

मेले एवम् उत्सवादि

मेला मनसादेवी पंचकुला (हरि.)	23 से 31 मार्च
मेला चेटी चण्ड	24 ''
मेला गणगौर (जयपुर)	25 ''
मेला माई सरखाना (पंजाब)	29 ''
मेला बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	1 अप्रै.
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर)	1 ''
मेला श्री राम जन्मोत्सव (अयोध्या)	1 ''
मेला माता कांसा देवी (कांसल रोपड़) प्रा.	5 ''
मेला देवी हर्थीहरा (कुरुक्षेत्र)	5 ''
मेला बालासुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	5 ''
मेला मानक पुर शरीफ (पंजाब)	6 ''
मेला हनुमान जयंती सालासर (राज.)	6 ''
मेला हनुमान जयंती तारानगर (राज.)	6 ''
मेला वैशाखी उत्सव (पं.हरि.हि.)	14 ''
मेला पिंजौर (हरियाणा)	21 ''
मेला कशाधा,नहयाणी सह (कुल्लू)	22 ''
मेला श्री बाँके बिहारीजी चरणदर्शन (वृन्दा.)	24 ''
मेला पीपल जातर (कुल्लू)	25 ''
मेला गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	28 ''
मेला आनी आउटर सिराज (कुल्लू)	4 मई
मेला डूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	10 ''
मेला बंजार 4 दिन का प्रा. (कुल्लू)	10 ''
मेला चनाणी माता जी	13 ''
मेला साढ़ी जातरनगर प्रा. (हि.प्र.)	14 ''
मेला भद्रकाली (कपूरथला)	16 ''
मेला हल्दी घाटी (राज.)	25 ''
मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)	29 ''
मेला गंगा दशहरा (हरिद्वार)	31 ''
मेला सपोर यात्रा धारलदा (ऊधमपुर)	31 ''
मेला बरहे भटिण्डा (पंजाब)	1 जून

गुरु हरिगोविन्द जी	27	''
गुरु गोविन्द सिंह जी	24	''
मेला बरहे भटिण्डा (पंजाब)	1	जून

मेला	तिथि	मास
मेला पाण्डवों की बाड़ी का (सोलन)	1	जून
मेला पीपलू (ऊना) हि.प्र.	1	''
मेला शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	4	''
मेला भून्तर (कुल्लू) प्रा. 3 दिन का	9	''
मेला श्री जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी)	21	''
मेला उर्स प्रा. (अजमेर) 9 दिन का	22	''
मेला सन्तोष सिंह जी नानकसर चीमा प्रा.	26	''
मेला शरीफ भवानी (कश्मीर)	28	''
मेला ज्वालामुखी (कश्मीर)	2	जुला.
मेला नैमिषारण्य, काहनूवाल (गुरदासपुर)	2	''
मेला गुरु पूर्णिमा (कुराली)	3	''
मेला नागपंचमी (जयपुर)	8	''
मेला मंढाली शरीफ	14	''
मेला हरियाली अमा. (उदयपुर)	19	''
मेला तीज जयपुर में 2 दिन का प्रा.	22	''
मेला नैना देवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.)	26	''
मे.बाबा निधानसिंह जी (लुधियाना)	1	अग.
मेला बाबा प्यारासिंह जी चमकौर प्रा.	2	''
मेला अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	2	''
मे. गोगामेड़ी प्रा. (राज.)	2-17	''
मेला श्री कृष्ण जन्मोत्सव	9-10	''
मेला द्रौण दनकौर प्रा. (उ.प्र.)	10	''
मेला नंदोत्सव नन्दगाँव, बरसाना	11	''
मेला गोगा 9 अंबाला, गोगा पीर (नकोदर)	11	''
मेला कैलाश यात्रा (कश्मीर)	16	''
मेला सुथरेशाह (दिल्ली)	17	''
मेला राणीसती (झुंझुनू) राज.	17	''
स्नान मेला (लोहर्गल) राज.	17	''
मेला बाबा रामदेव जी रुणीचा प्रारंभ	17	सितं.
मेला गुसाईं आणा कुराली (पंजाब)	18	''
मेला गणेश जन्मोत्सव (मण्डी) हि.प्र.	19	''
मेला गणेश जन्मोत्सव (महा.)	19	''
मेला मोती डूंगरी गणेशजी (जयपुर)	19	''
मेला पट्टा प्रा. (कश्मीर)	20	''
मेला देवछटी व्रजमण्डल व गौतम	21	''
मेला गरुड़ गोविन्द छटीकरा (उ.प्र.)	22	''
मेला श्री राधा जन्मोत्सव बरसाना(उ.प्र.)	23	''
मेला तेजा जी (ब्यावर) राज.	25	''
मेला बाबा रामदेवजी पूर्ण रुणीचा व तारानगर	25	''
मेला चारभुजानाथ मेवाड़ (राज.)	26	''
मेला जलझूलनी एकादशी (उदयपुर)	26	''
मेला वामन द्वादशी अंबाला	26	''
मेला बाबा सोढ़ल व छपार (जालन्धर)	28	''
मेला गींदड़ वाल साहिब अमृतसर	30	''
मेला गुग्गा पीर (लुधियाना)	30	सितं.
मेला आशापति यात्रा (कश्मीर)	14	अक्टू.
मेला फल्गु. (कुरुक्षेत्र)	15	''
मे.आशापूर्णि (पठानकोट) प्रा. 9 दिन का	16	''
मेला आमेर छट (जयपुर)	20	''
मेला ज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.)	22	''
मेला ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	22	''
मेला दशहरा (रावण दाह) सर्वत्र	24	''
मेला बाबा बूढ़ा साहिब (अमृतसर)	24	''
मेला शाकंभरी देवी (उ.प्र.)	29	''
मेला देवि हर्थीहरा (कुरुक्षेत्र)	29	''
मेला महारासोत्सव (ब्रजमण्डल)	29	''
मेला शरद प्रा. 15 दिन का (धौलपुर)	29	''
मेला देवी प्रा. (लखनऊ) उ.प्र.	1	नवं.
मेला राधाकुण्ड स्नान गोवर्धन(उ.प्र.)	7	''
मेला दीपावली (अमृतसर)	13	''
मेला अन्नकूट गोवर्धन (उ.प्र.), बाल मेला	14	''
मेला यमुना स्नान मथुरा (उ.प्र.)	15	''
मेला सूर्यषष्ठी 3 दिन का प्रा.(बिहार)	17	''
मेला गोपाष्टमी गौपूजन (सर्वत्र)	21	''
मेला जुगल जोड़ी परिक्रमा(वृन्दावन)	22	''
मेला अचलेश्वर 2 दिन का प्रा.(बटाला)	23	''
मेला बाबा रुद्रानन्दनारी 5 दिन का प्रा.(ऊना)	23	''
मेला रेणुका (नाहन)हि.प्र. 5 दिन का प्रा.	23	''
मेला पुष्कर राज (राज.) 5 दिन का प्रा.	24	''
मेला पुण्डरपुर यात्रा (महा.)	24	''
मेला वीर वैरागी नकोदर (पंजाब)	26	''
मेला रामतीर्थ (अमृतसर), गढ़गंगा (उ.प्र.)	28	''
मेला कपालमोचन (हरि.)	28	''
मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू)	12	दिसं.
मेला श्रीबांकेबिहारी जी प्रादुर्भावोत्सव (वृन्दा.)	17	''
मेला दुदेहर साहिब (अमृतसर)	18	''
मेला बाबा सत्य साईं ज.(सिरडी)	19	''
मेला श्री घालदास ज. रामधाम खेड़ापा	23	''
मेला कपर्दीश्वर यात्रा दर्शन (कश्मीर)	27	''
सन् 2013 ई.		
मेला चमकौर साहिब 3 दिन का प्रा.	5	जन.
मेला संगीत (बाबा हरवल्लभ) प्रा.(जालन्धर)	7	''
मेला हृतापन नाशन स्नान (मद्रास)	10	''
मेला माणकपुर शरीफ (रोपड़)	11	''
मेला जोड़ फतेहगढ़ साहेब (पं.)	12	''
मेला लोहड़ी उत्सव (पं. हरि. हि. प्र.)	13	''
मेला माघी मुक्तसर (पंजाब)	14	''
मेला मकर संक्रांति (सर्वत्र)	14	''
मेला पौंगल पर्व (द.भा.)	9	फर.
मेला माघ बिहु (असम)	9	''
मेला मौनी अमा. (प्रयाग व हरिद्वार)	10	''
मेला वसन्त पंचमी (सर्वत्र)	14	''
मेला डेजर्ट उत्सव 3 दिन का प्रा.(जैसलमेर)	22	''
मेला वेणेश्वर (मुख्य) बांसवाड़ा	22	''
मेला पंचखण्ड पीठ विराटनगर(राज.)	23	''
मेला माघी पूर्णिमा (उ.प्र.)	25	''
मेला बाबा अन्वर सिंह जी मस्तुआणां (पं.)	8	मार्च
मेला श्री महाशिवरात्री (सर्वत्र)	10	''
मेला श्री नीलकण्ठ महादेव (उत्तरांचल)	10	''
मेला होलियां, होलाष्टक प्रा.	20	''
मेला फूलडोलोत्सव शाहपुरा (मेवाड़)	23	''
मेला श्यामजी खाटू (राज.)	23-25	''
मेला बीरमदास बधौछी (पटियाला)	26	''
मेला पंखा झज्जर (हरि.)	27	''
मेला होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	28	''
मेला गुरु रामसहाय (देहरादून)	29	''
मेला शीतला माता कुराली (पंजाब)	3	अप्रै.
मेला केशरिया (मेवाड़)	4	''
मेला कैलादेवी 15 दिन का प्रा.(करौली)	6	''
मेला पृथूदक् पिहोवा (हरि.)	9	''
मे.बाबा अन्वर सिंह जी (नानकसर, चीमा)	10	''

पंचक सं. 2069 वि.

प्रारंभ		समाप्ति	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
- -	-	24 मार्च	15:14
15 अप्रै.	23:50	20 अप्रै.	21:34
13 मई	6:04	17 मई	27:30
9 जून	14:02	14 जून	9:49
6 जुला.	23:24	11 जुला.	17:03
3 अग.	8:58	7 अग.	25:08
30 ''	17:24	4 सितं.	9:27
26 सितं.	24:05	1 अक्टू.	17:13
23 अक्टू.	29:36	28 ''	23:58
20 नवं.	11:41	24 नवं.	29:56
17 दिसं.	19:56	22 दिसं.	12:04
13 जन.	30:14	18 जन.	19:25
10 फर.	16:47	14 फर.	28:11
9 मार्च	25:35	14 मार्च	13:20
6 अप्रै.	8:02	10 अप्रै.	21:31

गण्ड मूलादि नक्षत्र सं. 2069 वि.

प्रारंभ		समाप्ति	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
23 मार्च	12:36	25 मार्च	18:10
2 अप्रै.	9:37	4 अप्रै.	7:54
10 ''	14:13	12 ''	11:14
19 ''	18:48	21 ''	24:34
29 ''	17:44	1 मई	17:26
7 मई	24:13	9 ''	19:46
16 ''	24:38	19 ''	6:34
26 ''	24:02	28 ''	24:53
4 जून	11:06	6 जून	6:02
13 ''	7:03	15 ''	12:53
23 ''	सूर्योदय	25 ''	6:37
1 जुला.	21:01	3 जुला.	16:26
10 ''	14:35	12 ''	19:58
20 ''	11:43	22 ''	12:10
29 ''	सूर्योदय	30 ''	25:21
6 अग.	23:00	8 अग.	27:48
16 ''	19:23	18 ''	19:05
25 ''	10:35	27 ''	8:08
3 सितं.	7:32	5 सितं.	11:55
13 ''	सूर्योदय	15 ''	सूर्योदय
21 ''	16:05	23 ''	13:34
30 ''	15:16	2 अक्टू.	19:38
10 अक्टू.	13:43	12 ''	13:57
19 ''	सूर्योदय	20 ''	19:37
27 ''	21:47	29 ''	26:31
6 नवं.	21:56	8 नवं.	23:31
15 ''	9:20	16 ''	28:05
24 ''	सूर्योदय	26 ''	8:40
4 दिसं.	सूर्योदय	6 दिसं.	7:10
12 ''	20:50	14 ''	14:56
21 ''	9:50	23 ''	14:48
31 ''	10:10	2 जन.13 ई.	13:01
9 जन.13 ई.	सूर्योदय	10 ''	26:14
17 ''	17:43	19 ''	21:49
27 ''	16:31	29 ''	18:43
5 फर.	15:22	7 फर.	11:37
14 ''	सूर्योदय	16 ''	सूर्योदय
23 ''	24:18	25 ''	25:56
4 मार्च	21:00	6 मार्च	18:16
13 ''	12:24	15 ''	14:55
23 ''	9:07	25 ''	10:51
1 अप्रै.	सूर्योदय	2 अप्रै.	23:37
9 ''	20:24	- -	- -

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2069 वि.

❑ विश्वावसु नाम संवत्सर के कारण राजनैतिक एवं सामाजिक तथा आर्थिक मंदी के कारण क्रांति का योग बनेगा।

❑ राजा शुक्र, मंत्री शुक्र के योग से मांगलिक कार्यक्रमों का वर्चस्व सर्वत्र बना रहेगा। तथा अपहरण धोखाबाजी बढ़ेगी।

❑ जून-जुलाई में सू+मं+शु+बु की युति कुंभ राशि में होने से भौमादित्य योग, शुक्रादित्य योग, बुधादित्य योग से शैक्षिक-सहशैक्षिक गतिविधियां बढ़ेंगी। तथा प्रेम-प्रसंग की गिनती करना असंभव होगा।

❑ वर्ष में प्रलय या विघटन जैसी भ्रामक भविष्यवाणी त्रुटिपूर्ण साबित होंगी। वर्ष मशीनरी, कम्प्यूटर्स, अणु-परमाणु बावत् प्रगतिशील होगा।

❑ संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) सरकार के लिए वर्ष में अशांति तथा अविश्वास का प्रस्ताव भी यानि उथल-पुथल योग है।

❑ यातायात उपक्रमों जल-थल-वायु मार्ग से दुर्घटनाओं का क्रम अभद्रता के रूप में प्रस्तुति होकर जनता को संकट दायक बनेगा।

❑ वर्ष के अंत में मुस्लिम राष्ट्रों में उपद्रव बढ़ेगा। तथा सरकारों का पतन एवं विशिष्ट पदों पर कार्यरत नेताओं का पदच्युत योग।

❑ महंगाई का भूत सर्वत्र सवार रहेगा तथा द्युत क्रीड़ा का योग भी बनता है। असभ्य घटनाओं से गुप्त रहस्यों का पर्दा खुलेगा।

❑ भारत सरकार का संकट भ्रष्टाचार योग से जनता का आंदोलन विशाल हड़ताल के रूप में प्रस्तुति का योग बनता है।

❑ उद्योग विज्ञान, शिक्षा रोजगार, सड़क परिवहन, परमाणु के विकास में शोधपूर्ण कार्य में तकनीकि नवाचार का योग।

❑ प्राकृतिक आपदाओं से विश्व में हल्ला मचा रहेगा। दुर्घटनाएं अनियंत्रित तथा अनगिनत होने के संकेत बनते हैं।

❑ धार्मिक कृत्यों में वृद्धि होगी तथा धार्मिक कार्य योग में स्त्री वर्ग का बाहुल्य तथा स्त्री से स्त्री का हनन योग भी।

❑ कृषक वर्ग सुख का अनुभव करेंगे। वहीं शेयर्स बाजार में रोना-हंसना, तेजी-मंदी का कुयोग ज्यादा बनेगा।

❑ आपातकालीन एवं राष्ट्रपति शासन जैसी घटना झारखंड, उड़ीसा, कर्नाटक, असम एवं बंगाल में बनती है।

❑ राजकीय उपक्रमों की कार्य प्रणाली में सुधार तथा तकनीकी सूचनाओं का कम्प्यूटरीकृत कार्यक्रम चलेगा।

❑ विदेशी व्यापार नीति में तीन बार संशोधन के बाद भी मुद्रास्फीति का नियंत्रण कर पाना संभव नहीं होगा।

❑ राजनीति क्षेत्र में आचार की अनुपालना अनिवार्यत: प्रभावी होगी। तथा उल्लंघन होने पर दण्ड मिलेगा।

❑ छत्र भंग के छ: योग दो भारत में, दो अमेरिका में, एक श्रीलंका में, एक पाकिस्तान में बनने का योग।

❑ विशिष्ट नेताओं के निजी सचिव ही उनके भेदों को उजागर करेंगे। विश्वास मत में न्यूनता आयेगी।

❑ कार्यपालिका की स्थिति चिन्ता दायक रहेगी। न्यायालय प्रकरणों में अविश्वास जनक स्थिति बनेगी।

❑ राजनैतिक क्षेत्र में स्त्री वर्ग का वर्चस्व विजय में एवं मंत्रीमण्डल में तथा शिक्षा में उत्तरोत्तर बढ़ेगा।

❑ पश्चिमी देशों में व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी, मगर धोखा से जन-धन की हानि का योग।

❑ साहित्यविदों, लेखकों एवं प्रकाशकों को संकट का सामना करना पड़ेगा।

❑ पैट्रोलियम बाजार की वृद्धि पर नियंत्रण लगना संभव नहीं होगा।

❑ [illegible]

विक्रम संवत् 2069 शाके 1934 का वर्ष प्रवेश एवं आर्द्रा लग्न प्रवेश

विगत दो दशक से ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गईं उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैव विद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैव विद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अतः समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत ''वाराही संहिता'' के आधार पर ''दैवज्ञ'' वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक 70-80 प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।
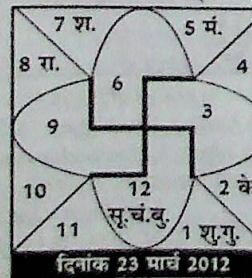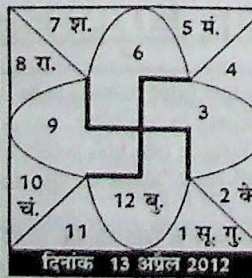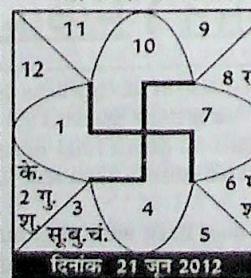
उपर्युक्त लग्नों के आधार पर मेदनीय ज्योतिष सूत्र, नक्षत्रादि तथा शकुन योग एवं ग्रह गति से वर्ष में राजकीय तंत्र में विफलता, स्त्री वर्ग में सफलता तथा कृषक वर्ग को लाभदायक योग बनेगा। राजा एवं मंत्री शुक्र के प्रभाव से नारी शक्ति का वर्चस्व बढ़ेगा, वहीं नारी के सौन्दर्य का विकास एवं ह्रास भी होगा। मीन राशि में सप्तम भाव में तीन ग्रहों की युक्ति जलीय तत्वों से चिन्ता मुक्ति का घटक बनेगा। बुधादित्य+ चन्द्रादित्य योग तकनीकी शिक्षा एवं कलात्मक शिक्षा के लिए नवीन आंदोलन जैसा योग भी बनेगा। **सप्तम भाव मीन राशि में सूर्य चन्द्र बुध। देश का उत्थान हेतु काम करें जन प्रबुध॥** अर्थात् वैज्ञानिक वर्ग काफी नवीन शोध से आम जनता को राहत का योग बनेगा। गुरु+शुक्र की युति से **एक जगह जब शुक्र गुरु हो, बने युद्ध आसार। अनावृष्टि अतिवृष्टि से दुःख पावे संसार॥** यह योग इस वर्ष के लग्न से बनता है। फलतः प्रभाव भी होगा। तेज एवं ठण्डा योग आम जन में रहेगा तथा युद्धादि का योग। जनता संकट में रहेगी। **शुक्रदेव राज बने मंत्री अरु धान्येश। पूरित पृथ्वी धान्य फल, सुखी रहे सब देश॥** इसके प्रभाव से वर्ष में मध्यम फल बनेगा। बुरा+अच्छा-मध्यम में सफलता दायक योग बनता रहेगा।

इस वर्ष भाद्रपद माह अधिक माह के योग में-सूर्य के आगे एक राशि मंगल रहे, पीछे सूर्य होने से वर्षा में न्यूनता तथा उस वर्ष में शुक्र मंत्री तथा राजा दोनों पद सुशोभित करता है, तो दुर्भिक्ष का फल न्यून होकर सुभिक्ष बनता है। अतः यह वर्ष सुभिक्ष होगा। लेकिन उपद्रव बढ़ेंगे। वर्ष में तिल, तेल, घी, सन के भाव तेज होंगे। इनका भाव भी अस्थिर बनेगा। यानि तैजी का घटक चलेगा। विशिष्ट नेता वर्ग का देहान्त योग, दुर्घटना में होगा। मंगल सिंहस्थ होकर एकाएक तेजी का योग बनता है। राजतंत्र में अशांति रहेगी। इस वर्ष ग्रहण योग के अभाव से जनता में पापाचार बढ़ेगा। स्त्री शिक्षा के लिए नये तकनीक शिक्षण संस्थाएं खुलेंगे। रसादि पदार्थों पर गुप्त छापा भी पड़ेगा।

द्विस्वभाव कन्या लग्न में संवत् 2069 का प्रवेश एवं वर्षेश दोनों की लग्न स्थिति फलादेश अच्छा वर्ष होने का संकेत करता है। चिकित्सा विभाग को मंगल ग्रह से काफी परेशानी से गुजरना पड़ेगा। पश्चिमी देशों में लोक मंगल कार्यों के नाम से जनता को लूटा जायेगा। विश्व में जनतंत्र संबंधी विधेयक पर सम्पूर्ण देशों में क्रांति का आंदोलन चलेगा। इस वर्ष में शनि ग्रह तुला राशि में उच्च का होकर गोचर फल इस प्रकार देगा। **सूर्यपुत्रे तुलायते ह्यत्युपद्रवमादिशेत। सप्त धान्या महर्घाणि मेदिनी नष्ट कारिका॥** तुला राशि में शनि के प्रभाव से-विश्व में अग्निकाण्ड उपद्रव होंगे। सभी अनाज, सप्त धान्य महंगे और पृथ्वी पर अनिष्ट घटनाओं का बोलवाला होगा। विश्व में व्याकुलता तथा रोगोत्पत्ति, हीन भावना के विचार बनेंगे। स्त्री वर्ग का एवं मुख्य नेताओं का अपहरण का योग बनता ही रहेगा। डाकुओं को विशेष सफलता बनेगी। बंगाल में उत्पात तथा क्षेत्रवाद का मामला बनेगा। विभिन्न पार्टियों में मतभेद चलेंगे। सत्ता पक्ष को भी अशोभनीय क्रम से गुजरना पड़ेगा। चित्रा नक्षत्र गत शनि का प्रभावादि-**चित्रास्थे प्रमदाजन लेखक चित्रज्ञ चित्र भाण्डानि। स्वातौ मागधचर दूत सूत पोत प्लव नटाद्या॥** इसके प्रभाव से गोचर काल में स्त्रीगण, लेखक, चित्रकार, फोटोग्राफर, भाण्ड, ललित कला के कलाचार्य, कलाकारों एवं अन्य कोमल प्रकृति वालों को कष्ट होगा। इस नक्षत्र में शनि के योग से भारत में अच्छी वर्षा होगी। फसल भी अच्छी होगी। दक्षिण प्रदेशों में आपसी मतभेद बढ़ेगा। तथा प्रजा में भी उपद्रव आंदोलन जैसा योग बनेगा। शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा में होने से-तथा पश्चिम में तुला राशि के योग से प्रभाव चलेगा। अतः भारत के दक्षिणी भागों में प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा। चक्रवात, आतंकवाद, हिंसा एवं अराजकता के प्रभाव से जन-आंदोलन भी भड़कने का योग बनता है। जन-धन-तन तीनों की हानि का योग बनता है। मन्दिर, देवालयों को भी अपवित्रता का गढ़ बना सकते हैं। शनि ग्रह की शांति के लिए महर्षि पिप्लाद के बताये हुए शनि के दशनाम स्तोत्र का स्नानादि के बाद नित्य प्रातःकाल पाठ करने से शनि का कोप, साढ़े साती और ढैया की पीड़ा नष्ट हो जाती है। दशनाम स्तोत्र इस प्रकार है। **नमस्तै कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते। नमस्तै बभ्रुरूपाय कृष्णाय नमोस्तुते॥ नमस्तै रौद्रदेहाय नमस्तै चांतकाय ते। नमस्तै यमसंज्ञाय नमस्तै सौरये विभौ॥ नमस्तै मंद संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रमादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥** इस प्रकार शनि का स्तोत्र पढ़ने तथा शनि ग्रह संबंधित दानादि देने से लाभ होता है।

मेदनीय ज्योतिष-ग्रहयोगानुसार नक्षत्र ग्रह गति योग फलम्

प्रान्तीय (राज्यवार भविष्य मिश्रित ग्रहयुक्ति) फलादेश

राजस्थान-यह क्षेत्र राजपूताना (वीरों का प्रांत) से विश्व में परिचित है। तुला का शनि लग्न में उच्च का साढ़ेसाती के प्रभाव से मिला-जुला भविष्य बनेगा। क्षत्रियों एवं व्यापारियों की मुख्य भूमि होने से तुला राशि का शनि वर्चस्व बढ़ायेगा। राशि पति शुक्र ही राजा व मंत्री होने से स्त्री वर्ग का प्रशासनिक सेवा, तकनीकी सेवा में वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 16.04.2012 से 26.06.2012 तक का समय संकटमय बनेगा। इस वक्त महापुरुषों एवं बड़े राजनेताओं को संकट भय डालेगा। राजनैतिक पार्टियों से विद्रोह एवं विधान सभा का संचालन में बाधक योग बनेगा। अनिवार्य सेवाओं में संकट दायक स्थिति बन सकती है। खनिज का अच्छा भू-भाग मिलेगा। सम्पत्ति बढ़ेगी।

पंजाब, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, उत्तरांचल, बिहार, असम, संघीय प्रदेशों का भविष्य-इन राज्यों की अलग-अलग भविष्य के स्थान पर सामूहिक योग लिखे जा रहे हैं। इन राज्यों में राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन का योग यानि राज्य सरकारें भंग होने तथा अविश्वास प्रस्ताव जन्य अशोभनीय व्यवहार बन सकता है। राज्यपालों की नियुक्ति में भी क्षेत्रीय पार्टियों द्वारा विरोध प्रदर्शन का मामला बनेगा। प्राकृतिक आपदा, बाढ़ादि के प्रभाव से जनता प्रभावित होगी। कृषि वर्ग के लिए एवं स्त्री वर्ग के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। गायों की सुरक्षा का आंदोलन चलेगा। अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड जैसा योग बनेगा। ता. 15.07.2012 से 10.10.2012 तक इन प्रांतों में अभद्रता तथा चिन्ता दायक स्थिति बनेगी। अपहरण काण्ड बढ़ेंगे।

हरियाणा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात-ध्रुवांक गणना मेदनीय ज्योतिष के योग से इन प्रांतों में कृषि कार्य में विशेष विकास होगा। सरकारी तंत्र सुखी रहेगा। राजनैतिक योग में हत्याएं बढ़ेंगी। तथा उद्योग-धंधे भी विकसित होंगे। प्राकृतिक आपदा से जन-धन की हानि होगी। नेताओं के मतभेद बढ़ेंगे। न्यायालय संबंधी प्रकरण भी ज्यादा होंगे। ता. 15.05.2012 से 26.08.2012 तक स्थानीय सरकारों में परिवर्तन अथवा मंत्री मण्डल में परिवर्तन होगा। बाढ़ का प्रकोप बढ़ेगा। नदियों का पानी सीमा से बाहर भी चलने का योग बनता है। भक्ति के क्षेत्र में मन्दिर, मठ, मस्जिदों में भी अशोभनीय योग, बलात्कार, भ्रष्टाचार का योग बनेगा। **पोप पादरी मुल्ला पण्डा। यहां खायेंगे जनता का डण्डा॥** नारी शक्ति का शोषण के साथ अशोभनीय घटनाओं से देह व्यापार से गुजरने को भी मजबूर करने जैसे योग बनते हैं। विद्युत उत्पन्न क्षमता बढ़ेगी। गृह युद्ध जैसा वातावरण के संकेत बनते हैं। जनप्रिय नेताओं को भी आयुक्षीणता अथवा हत्याएं जैसा योग बनता है।

उड़ीसा, कर्नाटका, तामिलनाडू, मेघालय, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, गोआ, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड एवं सभी केन्द्र शासित प्रदेश, पर्वतीय क्षेत्र तथा तीर्थ क्षेत्र, पर्यटन स्थलादि-इन राज्यों में मंगल+शनि का प्रभाव तथा चं+बु की युति सूर्य के साथ होने से शक्ति पूजा, देव पूजा, आध्यात्मिक में अशोभनीय घटनायें घटेंगी। व्यापारी वर्ग ज्यादा चिन्तित होंगे। परिसीमन के मामलों में प्रांतीय सीमा के निर्धारण में गोली काण्ड या हत्या कांड योग बनता है। ता. 16.06.2012 से 19.10.2012 तक इन राज्यों में व्यापारी वर्ग, कृषक वर्ग ज्यादा परेशानी झेलेंगे। युद्ध का ताण्डव व प्राकृतिक घटनाओं के प्रभाव से जन-धन की हानि होगी। नारी शक्ति का तंत्र बढ़ेगा। भ्रूण हत्याओं पर यहां विशेष कार्यक्रम जन हित में आयोजित होंगे। भूकम्प, ज्वालामुखी या सुनामी जैसे प्राकृतिक प्रभावों से संकट छायेगा। केन्द्रीय बल को सुरक्षा हेतु सरकार को तैनात करने का योग बनता है। आतंकवादी इन प्रांतों में छिपकर नहीं, सामने डाकुओं की तरह छायेंगे। **भूम्या नराच्श्रुतृष्याद गजह्य वृषभैर्युद्ध सुभिक्ष रोगैः। पीड़यन्ते सर्वदेशाः उदधिपुर पधे दुर्गेदशेषु भंग॥** पशुओं में दूध की कमी। अशोभनीय पशुओं पर भी अत्याचार गो हस्ती हत्याएं तथा खनन् विभाग में मानव-मानव का भक्षी जैसा योग बनेगा। गांवों की सुरक्षा के अभाव में जनता पीड़ित रहेगी। स्त्री विक्रय धंधा जोर पकड़ेगा। ईश्वर रक्षा करें।

विश्वस्तरीय घटनाक्रम (प्रमुख राष्ट्रों की मिश्रित घटनाएं)

अमेरिका, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, इंग्लैण्ड, मारीसस, ग्रीनलैण्ड-ग्रह गणना योग से इन देशों में राजनैतिक अस्थिरता का योग बनेगा। मजदूर वर्ग संकट में होगा। सरकारी तंत्र में गोपनीयता का पर्दाफाश होगा। औद्योगिक एवं आणविक शक्ति का विकास ज्यादा होगा। प्राकृतिक आपात काल पीड़ा का सामना भी करना पड़ सकता है। चिकित्सक वर्ग पलायन कर सकते हैं। खनिज उत्पादन का योग ज्यादा होगा। वायुयान दुर्घटना की स्थिति एवं आत्म हत्याओं का सिलसिला चलेगा। राजनैतिक दलों में कुठाराघात अपमान जनक घटनाएं घटेंगी। नारी वर्ग सबल बनेगा।

अफगानिस्तान, युगोस्लाविया, मलेशिया, कोरिया, चीन, ईरान, ईराक, फ्रांस, रूस-ग्रह गणना योग से इन देशों में भूकम्प आना, यौनाचार, भ्रष्ट कार्य ज्यादा होंगे। न्यायालयों में झगड़ा-फंसाद से अशोभनीय घटना का योग बनेगा। शासक वर्ग में भी परिवर्तन के योग ज्यादा बनेंगे। राजपक्ष में स्त्री वर्ग शुक्र ग्रह से प्रभावित होना सत्ता पक्ष में प्रबलता बनती है। अतिवृष्टि के प्रभाव से बाढ़ से जन-धन की हानि तथा आतंकवाद का प्रभाव सर्वत्र बनेगा। मनुष्यों का दोहन पशुओं की भांति होगा। राष्ट्रपति के प्रस्तावों का भी हनन् या अशुभता का प्रदर्शन बनेगा। नग्न नृत्यों का बोलबाला भी छाया रहेगा। सिनेमा जगत का यहां वर्चस्व बढ़ेगा।

पाकिस्तान, अफ्रीका, हिन्द चीन, लन्दन, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, कोरिया आदि-ग्रह योग से इन देशों में अनावश्यक शासकीय निर्णय लेने से जनता में विरोध बढ़ेगा। शुक्र राजा व मंत्री के कारण इन देशों में नारी शक्ति को सबलता-प्रबलता का आभास होता है। नारियों का वर्चस्व बढ़ेगा। लेकिन शोध कार्यों के प्रति राजकीय व्यवस्था लड़कियों को मिलने के बावजूद शोषण ज्यादा होगा। चिन्तन मनन-मंथन जैसी वार्त्ताओं को भी गौण समझकर टालने का प्रयास चलेगा। तकनीकी विकास होगा। प्राकृतिक आपदाओं से बाधित देशों में आतंकवाद का वर्चस्व भी छाया रहेगा। शासकीय कार्यों की व्यवस्था बिगड़ेगी। नेताओं का पदच्युत या अपहरण का योग बनता है।

जर्मनी, जापान, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, चीन, कनाडा, हालैण्ड, पोलैण्ड, सिक्किम, मैक्सिको, कोरिया प्रायद्वीप, यूक्रेन, पश्चिमोत्तर देश -इस देशों का राजनैतिक भविष्य अंधकार मय प्रतीत होता है। शुक्र+मं+के+रा के कारण ता. 16.06.2012 से 28.07.2012 तक का समय सत्ता परिवर्तन दायक एवं मशीनरी उद्योग में नयी क्रांति का योग बनता है। आकाशीय गतिविधियों में यहां अशोभनीय प्राकृतिक घटनाओं का ताण्डव छाया रहेगा। आर्थिक दृष्टि से देशों में विरोधी व्यापार दयनीय रहेगा। सू+बु=बुधादित्य योग से चिकित्सा क्षेत्र में अच्छा विकास होगा। खेलकूद कार्यों में भी अग्रणी रहेगा। पदच्युत कार्य अधिकारियों एवं मंत्रियों का बनता रहेगा। बालिका वर्ग को विशेष प्रोत्साहन मिलेगा।
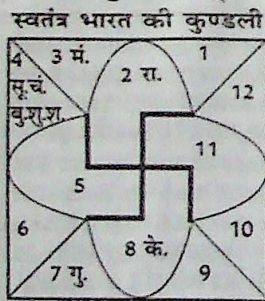
स्वतंत्र भारत की कुण्डली भारत वर्ष (हिन्दुस्तान)-वि. सं. 2069 के कन्या लग्न एवं वर्षेश भी कन्या लग्न के होंने से द्विस्वभाव संज्ञक कन्या राशि स्वामी बुध के प्रभाव बुध भी मीन राशि में चन्द्रादित्य योग (कलात्मक-साहित्य एवं शोध पूर्ण बनेगा) में अग्रसर होगा। बुधादित्य योग से वैज्ञानिक विकास विशेषकर चिकित्सा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होगी। लेकिन राज्यसभा एवं लोकसभा की गति दुर्बल (दयनीय) रहेगी। मानव संशाधन विकास मंत्रालय नयी शिक्षा नीति तथा शैक्षिक कार्य के प्रति जागृत होगा। छद्मवेशी योग भी बनता है। अर्थात् व्यक्ति आपसी विवाद से जनता के प्रति विश्वास में कमी आयेगी। ता. 13.5.2012 से 16.10.2012 तक राजनीति क्षेत्र में खलबली आयेगी। अविश्वास प्रस्तावों की तलवार लटकती रहेगी। भौतिक, शैक्षणिक, अध्यात्मिक कार्यों का यत्र-तत्र-सर्वत्र बोलबाला रहेगा। घोटाला काण्ड, अपहरण काण्ड ज्यादा बनेंगे। लेखक एवं प्रकाशक वर्ग पर कानूनी प्रभावों से वर्चस्व बढ़ेगा। आकाशीय परीक्षण ज्यादा होंगे। विविध प्रांतों में केन्द्रीय घटनाओं को प्रभावित करेगा। ता. 13.1.2013 से 20.2.2013 तक केन्द्रीय सत्ता में विशेष चिन्ताजनक घटनाएं घटेंगी। महामहिम राष्ट्रपति जी के पद की गरिमा भी घट सकती है। तथा बम ब्लास्ट जैसी अशोभनीय घटनाएं घटेंगी। महिलाओं के सम्मान भी अपमान जैसी घटनाएं घटेंगी। अपराधिक मामलों की संख्या अनंत होगी। वायुयान एवं रेल दुर्घटनाओं का भी अनियंत्रित स्थिति से जनता संकट मय रहेगी।

राजनैतिक पार्टियों का भविष्य कथन
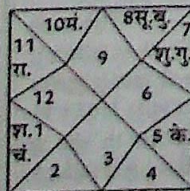
राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी-इस पार्टी के लिए वि. सं. 2069 संकट दायक योग करता है। पार्टी में अंतर्कलह से काफी लोग पार्टी को त्याज्य भी कर सकते हैं। **खुद का बीज बोया हुआ कंटक। कब कटेगा इनका संकट॥** पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन एवं सरकारों में अविश्वास जनक बाड़ खेत ने खाय उक्ति को सार्थक करेंगे ता. 16.4.2012 से 16.8.2012 तक वर्चस्व में न्यूनता तथा विशिष्ट नेताओं का देहावसान होगा। पार्टी के पदाधिकारियों में परिवर्तन के निर्णय में भी रोष (उदासीनता) का योग बनता है। घमासान संकट से पार्टी के वर्चस्व में कमी आयेगी। व्यक्ति विशेष चमकेंगे।

भारतीय जनता पार्टी-वि. सं. 2069 इस पार्टी की कुण्डली से शेयर्स बाजार की भांति रोना-हंसना योग बनता है। वरिष्ठतम नेताओं का पतन जैसा योग बनेगा। सामाजिक दृष्टि से इस पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा। कोर्ट-कचहरी का चक्कर के प्रभाव से पार्टी में फूट पड़ेगी। ता. 17.7.2012 से 18.11.2012 तक स्त्री वर्ग नेताओं से पार्टी के वर्चस्व में कुछ मजबूती बनेगी। हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात प्रांत में कुछ वर्चस्व बढ़ेगा। सदस्यता अभियान से सफलता का योग बन सकता है।
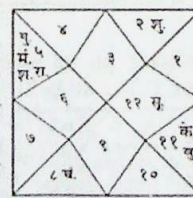
बहुजन समाज पार्टी-इस पार्टी का उत्तरोत्तर भाग्योदय योग बनता है। शनि ग्रह+शुक्र ग्रह के प्रभाव से पार्टी को सन् 2022 से सत्ता पक्ष का विशेष बल मिलेगा। तथा जन-जन में पहचान बनाने में अग्रसर होगी। कुछ नेताओं द्वारा छद्मवेशी योग बनेगा। तथा गुप्तचरों के माध्यम से पार्टी को खोखला करने में गति बढ़ेगी। फिर भी पूर्वी एवं उत्तर भारत में भागीदारी अच्छी रहेगी। सत्ता योग भी बनता है।

समाजवादी पार्टी-इस पार्टी के लिए वर्ष 2069 में ग्रह योग से कलह योग बनता है। परस्पर पार्टी के सदस्यों में अनैतिकता का योग बनेगा। वर्तमान अध्यक्ष को विशेष खतरा भी बनता है। महिलाओं के योगदान से पार्टी जीवित रहेगी। चुनावों में विशेष सफलता के योग नहीं बनेंगे। ता. 14.7.2012 से 10.10.2012 तक पार्टी में घमासान योग या अन्य अशोभनीय घटनाएं घटेंगी। अन्य पार्टियों के सहारे वर्चस्व बढ़ेगा।

जनता दल-इस पार्टी के लिए वर्ष 2069 नयी चेतना का कारक बनेगा। सदस्यता न्यून का योग, लेकिन सदस्यों की संसद में भूमिका अच्छी रहेगी। सेक्स कांड से या अभद्रता के कारण पार्टी का वर्चस्व गिरेगा। नारी शक्ति द्वारा सन् 2015 के बाद वर्चस्व बढ़ेगा। स्थानीय दलों का सहयोग प्राप्त करें तो कुछ वर्चस्व बढ़ सकता है।

माकपा-यह वर्ष पार्टी के लिए काफी परिवर्तन कारक, मुख्यालय में कुछ नवीन सदस्यों द्वारा सुझाव प्राप्त होंगे। दिनांक 23.7.2012 से 28.11.2012 तक पार्टी में नयी गतिविधियां चलेंगी। सत्ता में नेतृत्व का प्रभाव रहेगा। गुप्तचरों से बचकर पार्टी कार्य करें तो अच्छा रहेगा। नारी को नेतृत्व दिया जाये तो विकास ही सके। कार्यालय पर बम ब्लास्ट जैसा योग भी बनता है।

शिव सेना-इस पार्टी में कुछ मतभेद होने का योग बनता है। शीर्षस्थ नेताओं के अड़ियल स्वभाव के कारण वर्चस्व घटेगा। ता. 16.5.2012 से 20.7.2012 तक पार्टी में नवीन योजना बनेगी। वृद्ध जन नेताओं की दुर्घटना में मृत्यु योग बनता है। दक्षिणी भारत, महाराष्ट्र का पूर्वी भाग तथा राजस्थान में प्रभाव बढ़ने का योग बनता है। क्षेत्रीयता में सफलता ज्यादा मिलेगी। दक्षिणी भारत की महिला को दायित्व योग बनते हैं।

तृणमूल कांग्रेस-यह पार्टी क्षेत्रीय स्तर पर वर्चस्व प्राप्त करेगी। राज्य स्तरीय तथा केन्द्र भू-भाग में न्यूनतम स्थिति बनेगी। पार्टी धार्मिक गतिविधियों में सम्मान बढ़ेगा। तथा अध्यक्षता में भी परिवर्तन योग 12.5.2012 से 16.10.2012 तक बनता है। अन्य पार्टियों का सहयोग कम मिलेगा।

यू.पी.ए. गठबंधन-यह गठबंधन अस्थायी रूप में चलेगा। पांच-पांच वर्ष की अवधि में इसका स्वरूप बनता-बिगड़ता रहेगा। सन् 2012 में इसमें काफी अविश्वास का योग बनेगा। धोखा धड़ी एवं कानाफूंसी से विवाद भी बढ़ेगा। खींचतान स्थिति में 2014 तक इसका स्वरूप रहकर नाम परिवर्तन भी हो सकता है। इसके गठन में विभिन्न पार्टियों में समझौता का करार होगा।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा (गठबंधन)-गतिशून्य जैसी लगेगी। सदस्य भी अपने दायित्वों से हटकर चल सकते हैं। ता. 14.5.2012 से 27.10.2012 तक काफी उतार-चढ़ाव जैसे योग बनेंगे। दल का प्रमुख नेता अस्वस्थ भी होगा। तथा दक्षिण भारत में कुछ वर्चस्व बढ़ेगा। **घर का भेदी लंका ढहाये। उनको अब कौन बचाये॥** रा+के+श+मं ग्रह की स्थिति अशुभ दायक है।

संयुक्त मोर्चा-इस संगठन में नेतृत्व का अभाव रहेगा। सर्वजन में इसका वर्चस्व न्यून हो रहा है। ता. 16.4.2012 से 27.6.2012 तक कुछ हलचल में पुन: इसके गठन की पूर्ति या नवीनीकरण जैसा योग बनेगा।

नया गठन-नया संगठन का योग 2015 ई. में या सन् 2014 के अंतिम माह में बनेगा। जो सरकार संचालन की नीति बनायेगा। इसका नेतृत्व दक्षिण भारत की महिला करेगी। नारी उत्थान का भी कारक बनेगा।

अल्प दल-जो क्षेत्रीय पार्टियां अल्प दल की होकर किसी भी गठन या संगठन में सम्मिलित होंगी। सरकार में अपना पद प्राप्ति की शर्त रखेंगे। बजरंग दल का कुछ वर्चस्व बढ़ेगा। आर.एस.एस, संत समुदाय, भारत स्वाभिमान पार्टी जैसे असंख्य सदस्यों का संगठन भी सन् 2015 के आस-पास आगे-पीछे बनेगा। शनि+शुक्र+चन्द्र+मंगल के कारण सत्ता पक्ष में लाभ लेंगे।

क्या वर्तमान केन्द्र सरकार कार्यकाल पूरा करेगी ?-वर्ष लग्न के योग से वर्तमान सरकार का जो गठन है, यथावत् रहेगा। पार्टियों का गठन नहीं टूटकर सरकार को **बैशाखी का सहारा की तरह** चलेगा। व्यक्तिगत परिवर्तन चलते रहेंगे। प्रधान मंत्री को 15.5.2012 से 12.10.2012 तक बीमारी का योग भी। नेतृत्व में कमी नहीं रहेगी। मात्र बढ़ते हुए स्वार्थपरता के कारण कमजोरी रहेगी। सरकार अपना कार्यकाल पूर्ण करने की स्थिति में रहेगी। स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा।

क्या दिल्ली सरकार का कार्यकाल पूरा होगा ?- पूर्व कथन भविष्य के अनुसार दिल्ली की सरकार अपना कार्यकाल पूर्ण करेगी। कुछ छद्मवेशी सदस्यों द्वारा शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ता. 17.6.2012 से 11.11.2012 तक मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित का कार्य काल में आतंकवादी हानि पहुंचा सकते हैं। दुर्घटना योग भी जून 2012 में बनता है। जनता चिन्तित रहेगी।

व्यक्तिगत भविष्य फल कथन

महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल- राष्ट्र हित में आपका वर्चस्व बढ़ेगा तथा शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव का बचाव देश की जनता की दुआओं से समाधान होगा। फिर भी स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अशुभ दायक होगा। उच्च के सूर्य की दृष्टि जब उच्च के शनि पर समसप्तक योग से पड़ेगी, तब नैत्र पीड़ा बनेगी। ता. 14.4.2012 से 14.5.2012 तक का समय प्रतिकूल रहेगा। देश-विदेश यात्राओं में भारत का वर्चस्व बढ़ेगा। मगर स्वास्थ्य की दृष्टि से कार्यकाल में बाधा बनने का योग है। आप स्वास्थ्य से ठीक रहें, तो कार्यकाल पूरा कर पायेंगे।

उपराष्ट्रपति महोदय श्री हामिद अंसारी जी- आपको इस वर्ष शनि के योग से काफी न्यायपूर्वक कार्य की क्षमता बढ़ेगी। वर्चस्व बढ़ेगा। नया भवन या अन्य शुभ कार्य का योग बनेगा। मान-सम्मान भी बढ़ेगा। अंत:रोग शुक्र+शनि+मंगल के कारण रक्त विकार, मानसिक दृष्टि से संकट बनेगा। परिवार में अशोभनीय घटनाएं घटेंगी। ता. 14.7.2012 से 17.10.2012 तक का समय स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कार्यकाल पूर्ण होने में संदेह बनता है।

श्रीमती सोनिया गांधी (राष्ट्रीयाध्यक्षा कॉंग्रेस पार्टी)— आपकी कुण्डली के योग से वर्ष में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। मंगल+शनि+राहु का भावेश संबंध शत्रु दायक है। अत: विपक्षी द्वारा अपमान भी होगा। उदर या स्तन जन्य स्थानों पर आपरेशन का योग बनेगा। तथा हृदय गति अथवा हवाई दुर्घटना में भी अशुभता का योग बनता है। ता. 17.6.2012 से 20.9.2012 तक अशुभ योग। लम्बी यात्रा नहीं करें तो शुभ रहेगा।

डॉ. श्री मनमोहन सिंह (प्रधान मंत्री भारत सरकार)—राशि योग, भारतीयता की भावना से आपके कार्यकाल में अनेक बाधाएं आयेंगी। स्वास्थ्य की गड़बड़ी से आयु हीनता का भी योग बनता है। विपक्ष द्वारा सही निर्णय पर पहुंचने में बाधाएं रहेंगी। आप स्वयं संतुष्ट नहीं रहेंगे। यात्राएं ज्यादा नहीं करें। अग्निकाण्ड के प्रभाव से बचें। ता. 16.5.2012 से 19.10.2012 तक का समय संकट दायक रहेगा।

श्री राहुल गांधी (महासचिव)- उच्च के शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव आपके लिए यात्रा कारक तथा स्वास्थ्य के लिए चिन्ता कारक तथा छद्म वेशी लोगों से भी संकट दायक स्थिति में रहेंगे। युवा वर्ग भी कुछ धोखा कर सकते हैं। शनि न्यायप्रिय ग्रह है। तथा आपको उच्च पद पर भी शनि 2013 से 2015 मध्य बैठायेगा। लेकिन वायुयान की यात्रा में सावधान रहें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी (पूर्व प्रधान मंत्री)- इस वर्ष आपके लिए मं+श+गु+रा+के के योग से स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। गिरने का योग बनता है। भाजपा के योग में आपका राजनीति जीवन का प्रभाव न्यून रहेगा। ता. 15.6.2012 से 20.8.2012 तक स्वास्थ्य विशेष प्रतिकूल होगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। रेल यातायात या हवाई यात्रा में दुर्घटना का योग बनता है। हृदय घात संबंधी योग बनता है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी- यह वर्ष स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपकी रथ यात्रा में भी आशातीत सफलता प्रतीत नहीं होने का योग बनता है। ता. 16.7.2012 से 19.12.2012 तक शारीरिक स्वास्थ्य ठीक प्रतीत नहीं होगा। दक्षिण-पूर्व की यात्रा में सावधान रहें। पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से संकट दायक योग है।

श्रीमती प्रियंका बढेरा- यह वर्ष नारी संगठन में आपको बल प्रदान करेगा। सामाजिक कार्य योग में नेतृत्व कुछ असभ्यता से गुजारना पड़ सकता है। जन संबोधन में गिरने का योग तथा ससुराल से कुछ दबाव भी बनेगा। मन उच्चाटन वाला रहेगा। ता. 14.7.2012 से 14.11.2012 तक भागदौड़ के कारण पति-पत्नि में कटुता का योग तथा राजनैतिक यात्राएं भी होंगी।

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे.अब्दुल कलाम— यह वर्ष आपको मान-सम्मान का रहेगा। स्वास्थ्य भी गिरेगा। हवाई यात्राओं से कुछ चिन्ताजनक घटना से भय या चोट का योग। वैज्ञानिक परिवेश में भारत को विश्व स्तरीय परिवेश प्रदान करने में आपकी अहम् भूमिका रहेगी। ता. 16.6.2012 से 17.9.2012 तक समय प्रतिकूलता का रहेगा। अचानक परेशानी। स्वास्थ्य में गिरावट योग।

श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया- इस वर्ष का राजा एवं मंत्री, राशि स्वामी शुक्र आपको मांगलिक तथा राजनैतिक चाल में शुक्रनीति के योगानुसार सफलता मिलेगी। भाजपा की बागडोर आपकी विशेष रहेगी। इस वर्ष आप भारत में भाजपा का परचम फहरायेंगी। ता. 17.5.2012 से सूर्य का लग्न में होना शारीरिक पीड़ा ऑपरेशन जैसा बनेगा। लेकिन स्वास्थ्य ठीक रहेगा। ता. 16.5.2012 से 18.9.2012 तक तबीयत कुछ गड़बड़ रहेगी। राजनैतिक जीवन इस वर्ष प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय रहेगा।
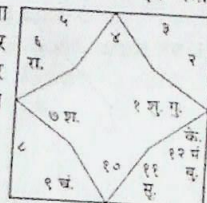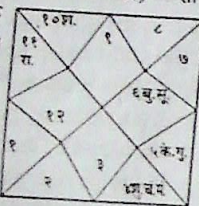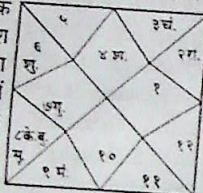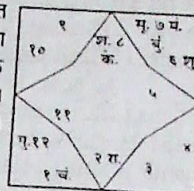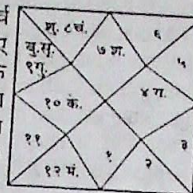
श्री राजनाथ सिंह (पूर्व अध्यक्ष भाजपा)- तुला का लग्नस्थ शनि पारिवारिक जीवन में बाधक होगा। स्वयं की त्रुटियों से पार्टी में उदासीनता बन सकती है। न्यायालय संबंधी प्रकरणों का योग बनेगा। ता. 16.6.2012 से 13.11.2012 तक संकट दायक समय, स्वास्थ्य भी खराब होगा। चोट या असभ्यता के घेरे में फंस सकते हैं।

माननीय श्रीमान् अशोक गहलोत जी- वर्ष 2069 में ग्रह योगानुसार आपको शनि का प्रभाव पत्नी के लिए संकट दायक बनेगा। पार्टी के नेतृत्व में वर्चस्व रहेगा। केन्द्रीय कार्यकारिणी में आपको और सबलता मिलेगी। सरकारी तंत्र में विशेष योजना को संचालित करेंगे। यात्रा में कुछ सावधानी की आवश्यकता रहेगी। ता. 14.5.2012 से 16.10.2012 तक स्वास्थ्य बिगड़ने का योग, ऑपरेशन जैसी स्थिति बनेगी। कार्यकाल पूर्ण होने का संकेत। विपक्ष के तर्कवाद से कार्य सम्पादन में कमी रहेगी।

सुश्री मायावती (मुख्यमंत्री उ.प्र.)-यह वर्ष आपको काफी संकटों का सूत्रपात होगा। असभ्यता के दौर से भी गुजरना पड़ेगा। लेकिन विजय आपकी ही होगी। सन् 2012 से 2017 तक का नेतृत्व कार्य में सहायक रहेगा। बम ब्लास्ट संबंधी अफवाहों से धोखा द्वारा जीवन हानि का योग भी सितंबर 2012 व जनवरी 2013 में बनता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता बढ़ेगी। दक्षिण भारत की यात्रा में सावधानी रखें। ता. 30.5.2012 से 10.11.2012 तक संकट दायक योग है।

श्री मुलायम सिंह यादव (पूर्व मुख्यमंत्री उ.प्र.)-आपको यह वर्ष विफलताओं के रूप में गुजरेगा। स्वास्थ्य गिरेगा। यात्रा या स्वास्थ्य सुधार के लिए विदेश जाने का भी संकेत बनता है। पार्टी के नेतृत्व में कमी आयेगी। अपने ही जनों द्वारा पार्टी का त्याग करना एवं अपमानित करना जैसा योग है। ता. 17.7.2012 से 27.9.2012 तक विशेष सावधान रहें। अग्नि या बम विस्फोट से बचकर चलें।

सुश्री जय ललिता जी- यह वर्ष शुक्र ग्रह से आपको आनंद दायक रहेगा। पार्टी के नेतृत्व में नियंत्रण चमकेगा। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। तथा नये वाहन की भेंट प्राप्ति का योग बनता है। शनि ग्रह की स्थिति आपको न्याय पक्ष में विजय कारक रहेगा। स्त्री पक्ष ही आपकी घातक बन सकती है। ता. 30.5.2012 से 10.10.2012 तक स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी।
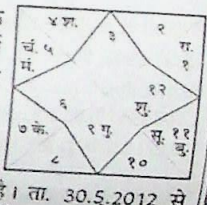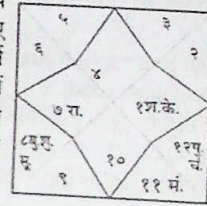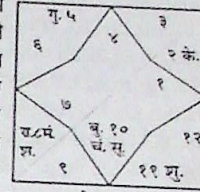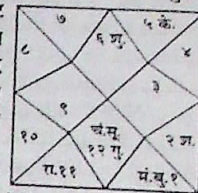
श्री एम. चन्द्रबाबू नायडू-यह वर्ष लक्ष्मी प्रदायक होगा। धार्मिक आयोजनों का लाभ भी होगा। विदेशी यात्राएं स्वास्थ्य की दृष्टि से ज्यादा रहेंगी। गाय, शेर, चीता पशुओं से सावधान रहें। ता. 13.6.2012 से 10.9.2012 तक स्वास्थ्य गड़बड़ है।

श्रीमान् प्रणव मुखर्जी-आपको वर्ष 2069 प्रगति दायक रहेगा। शनि की साढ़ेसाती खर्च तो करायेगा, लेकिन खर्चा हितकारक होगा। राष्ट्रीय सम्मान प्राप्ति के साथ उच्च पद दायित्व सफलता पूर्वक संचालित कर पायेंगे। स्त्री पक्ष की प्रेरणा से लाभदायक योग। ता. 18.5.2012 से 24.8.2012 तक सावधान, दुर्घटना का भय बनता है।

श्रीमान् शरद पवार-आपके नेतृत्व में न्यूनता बनेगी। स्वयं के लिए कुछ स्थिति बिगड़ेगी। फिर भी पार्टी का सबल मिलेगा। अधिकारी वर्ग से, कृषक वर्ग से आपको अच्छा सहयोग मिलेगा। ता. 20.6.2012 से 24.9.2012 तक प्रतिकूल समय रहेगा। हवाई यात्रा से सावधान। स्वास्थ्य अचानक बिगड़ेगा।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी- आपके व्यक्तिगत जीवन से जनता प्रेरणा लेगी। सूर्य+बुध+चन्द्रमा की युति से पार्टी का नेतृत्व भी मिलने का योग बनता है। आप की कुशलता का प्रभाव प्रांतीय नेताओं पर पड़ेगा। पत्नि या परिजनों को कुछ असाध्य रोग का विकार बन सकता है। ता. 30.5.2012 से 20.8.2012 तक स्वास्थ्य खराब रहेगा। पूर्वोत्तर भारत में आपका आदर्श एवं वर्चस्व बढ़ेगा।
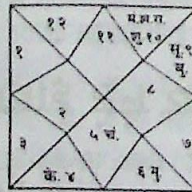
श्रीमान् लालूप्रसाद जी यादव (सांसद) - वर्तमान सांसद को इस वर्ष में स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना चाहिए। पार्टी में खींचतान का योग बनेगा। लेकिन नेतृत्व में सफलता प्राप्त कर लेंगे। जीवन में विशेष घटना घटने का योग भी बनता है। ता. 27.5.2012 से 20.11.2012 तक चोट, रोग बाधा, पीड़ा का योग। पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। संतान का भाग्योदय होगा।

श्री एम. करुणानिधि—यह वर्ष स्वास्थ्य गिरावट एवं रोग कारक होगा। पार्टी में आपके नेतृत्व की न्यूनता बनेगी। रक्त विकार फोड़ा जैसा योग करेगा। कहीं भाषण कार्य में मंच पर भी गिरने का योग बनता है। ता. 20.4.2012 से 24.7.2012 तक विशेष संकट का योग बनता है।

श्रीमान् रामविलास पासवान- शनि ग्रह उच्च का तथा राशि पति शुक्र इस वर्ष का राजा व मंत्री होने से आराम दायक जीवन जीने के साधन मिलेंगे। हवाई यात्रा में खतरा का संकेत तथा पार्टी में आपका वर्चस्व रहेगा। लेकिन न्यायालय संबंधी प्रकरण में हार बनती है। स्त्री की मदद लेवें। ता. 10.5.2012 से 24.7.2012 तक संकट दायक योग।

श्री पी. चिदंबरम्-शनि+मंगल+बुध+सूर्य ग्रहों की गणना से आपका नेतृत्व पार्टी को सबल बनाने में अग्रसर रहेगा। मंत्री तथा नेतृत्व के भार से आपकी भागदौड़ ज्यादा रहेगी। स्त्री पक्ष या किसी भी अनजाने स्थान पर जाने का योग रा+के से बनता है। उदर शूल का योग। आराम नहीं योग, हसेंगे आपको लोग। न्यायालय का प्रकरण भी चलेगा। गोलीकाण्ड में शनि योग।
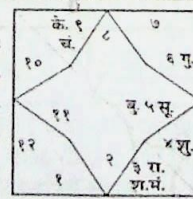
श्रीमान् शिवराज पाटील जी-शनि+शुक्र+बुध के प्रभाव से आपका प्रशासनिक कार्य शुभदायक रहेगा। पार्टी में नेतृत्व न्यून रहेगा। आप अपना कार्यकाल पूर्ण करने में सक्षम होंगे। फिर भी परिवर्तन योग बनता है। स्वास्थ्य में गिरावट। हेलीकॉप्टर दुर्घटना का योग बनता है। ता. 18.5.2012 से 20.10.2012 तक का समय चिन्ता दायक होगा।

सुश्री उमा भारती (साध्वी)-वर्ष में आपका राशि में शुक्र का होना, आपके लिए शुभदायक संकेत करता है। आध्यात्मिकता में शुक्र विशेष सफलता दिलायेगा। जन-जन में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 20.6.2012 से 30.8.2012 तक सावधानी से कार्य करें। विश्वस्तरीय छवि बनेगी। जनता में विश्वास जमेगा।

अभिनेता अमिताभ बच्चन-स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष आपको अशोभनीय रहेगा। ता. 16.8.2012 से 30.12.2012 तक भागदौड़ ज्यादा होगी। सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से आपके कार्य में गिरावट, लेकिन सिनेमा जगत में लाभ मिलेगा। वर्चस्व बढ़ेगा तथा सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा।

श्रीमती शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री दिल्ली)-आपको इस वर्ष में काफी लाभदायक घटक मिलेगा। स्वास्थ्य में गिरावट तथा विधान सभा में भी हृदय का दौरा भी बनेगा। आकाशीय यात्रा में सावधान रहें। घर में काफी अशोभनीय कार्यों का वर्चस्व बनेगा। ता. 13.6.2012 से 14.9.2012 तक स्वास्थ्य खराब रहेगा तथा छद्मवेशी लोगों से भी सावधान रहें। चलते राह में भी सावधानी रखें।

श्रीमती मेनका गांधी-आपको इस वर्ष मंगल ग्रह के दोष से रक्त विकार या गुप्त रोग से परेशानी बढ़ेगी। असमाजिक तत्वों से सावधान रहें। परिवार एवं राजनीति में वर्चस्व बढ़ेगा। हवाई यात्रा से सावधान। ता. 16 अप्रैल से 20 अग. 2012 तक के लिए स्वास्थ्य में गिरावट या अशोभनीय कार्य बनेगा। सम्मान प्राप्ति तथा नये कार्यक्रम में तल्लीनता बावत् वर्ष अच्छा रहेगा।
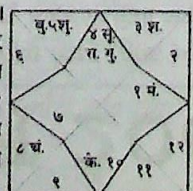
श्रीमती सुषमा स्वराज-यह वर्ष राजनीति की दृष्टि से शुभदायक रहेगा। पार्टी का दायित्व भी संभालना पड़ेगा। संसद में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। छद्म वेशियों से बचकर रहें तो ठीक है। ता. 14.7.2012 से 14.11.2012 तक राजनैतिक समय में कुछ परिवर्तन पद लाभ या यात्राएं आदि में व्यस्त होने से स्वास्थ्य में गड़बड़ होगा। वर्ष में जन सभाओं को संबोधन में भी वर्चस्व बढ़ेगा। सन् 2015 से 2018 तक सावधान रहें।
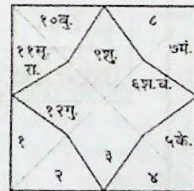
श्री बराक ओबामा (अमेरिकी राष्ट्रपति)-विश्व में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। हवाई यात्रा में अशोभनीय दुर्घटना योग ता. 16.5.2012 से 17.10.2012 तक बनता है। आपकी योजनाएं जन हित कारक होने से लोकप्रियता में आप अग्रसर रहेंगे। अहिंसा एवं शांति के लिए आप सतर्क रहेंगे। वर्ष अच्छा रहेगा।

श्री टोनी ब्लेयर (ब्रिटेन)-स्वास्थ्य की दृष्टि से शनि ग्रह आपको अशोभनीय कारक रहेगा। जनता का विश्वास कम होगा। नैत्र पीड़ा का योग बनेगा। स्त्री पक्ष से अशोभनीय घटना का मामला बनेगा। कोर्ट-कचहरी में भागदौड़ भी बनेगी। ता. 16.6.2012 से 17.11.2012 तक स्वास्थ्य में विशेष गिरावट बनेगी। सावधान रहें।

श्री सचिन तेंदुलकर (क्रिकेट जगत)-इस वर्ष आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। वर्ष भागदौड़ वाला तथा मानसिक दृष्टि से चिन्ता दायक रहेगा। हवाई यात्रा में अशुभ घटना भी या कोई बम बिस्फोट जगह पर चोट का योग बनता है। ता. 10.5.2012 से 16.7.2012 तक संकट स्वास्थ्य आदि का ज्यादा रहेगा।

श्री अन्ना हजारे जी-आपको शनि+सूर्य+मंगल से जन-तंत्र का योगदान एवं विजय का सोपान वर्ष 2011 से 2013 तक मिलेगा। इसी बीच स्वास्थ्य खराब होने से अशोभनीय घटना भी घट सकती है। आपको भारतीयता एवं राष्ट्रीयता का सम्मान प्राप्त होगा। ता. 14.4.2012 से 30.7.2012 तक समय प्रतिकूल बनता है। आप विश्व में बापू तुल्य पहचान बनाकर लोकपाल बिल के प्रेरणादायी बनेंगे।

किरण बेदी-वर्ष 2069 में आप एक प्रेरणादायी नियंत्रण कर्त्ता तथा जन-जन में प्रेम का सौहार्द प्राप्त करने वालों की श्रेणी में आयेंगी। भ्रष्टाचारियों की कार्य प्रक्रिया को नियंत्रण करने में अन्ना जी की टीम का नेतृत्व आपको मिलेगा। ता. 16.9.2012 से 16.11.2012 तक आपका स्वास्थ्य खराब होगा। अथवा चोट का योग बनेगा।

संत मोरारी बापू-यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रतिकूल रहेगा। कथा स्थल पर भी स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः ज्यादा लम्बी यात्रा नहीं करें, तो ठीक रहेगा। ता. 16.6.2012 से 17.11.2012 तक का समय विशेष अशुभ दायक रहेगा।

ग्रहण विवरण संवत् 2069 विक्रमी

विक्रम संवत् 2069 (23 मार्च 2012 से 10 अप्रैल 2013 ई. के मध्य) में पृथ्वी पर सूर्य व चन्द्र के कुल चार ग्रहण दिखाई देंगे। जिनमें दो सूर्यग्रहण एवं दो ही चन्द्रग्रहण हैं। भारतीय भू-भाग पर सूर्य का एक ग्रहण मोक्षावस्था में पूर्वोत्तर क्षेत्रों में दिखाई देगा। अन्य तीन ग्रहण का भारत में दर्शन संभव नहीं होगा। भारतीय भू-भाग पर दृश्य ग्रहण विवरण, सूतक (वेध) एवं राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव निम्न प्रकार है।

1. **कंकणाकृति सूर्यग्रहण** (भारते दृश्य)-
   ज्येष्ठ कृष्ण 30 रविवार, दिनांक 20/21 मई 2012 ई.।
2. **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारते अदृश्य)-
   ज्येष्ठ शुक्ल 15 सोमवार, दिनांक 4 जून 2012 ई.।
3. **खग्रास सूर्यग्रहण** (भारते अदृश्य)-
   कार्तिक कृष्ण 30 मंगलवार, दिनांक 13/14 नवंबर 2012 ई.।
4. **छाया चन्द्रग्रहण** (भारते अदृश्य)-
   कार्तिक शुक्ल 15 बुधवार, दिनांक 28 नवंबर 2012 ई.।

1. भारत में दिखाई देने वाला सूर्यग्रहण

ज्येष्ठ कृष्ण 30 रविवार, दिनांक 20/21 मई 2012 ई. को रात्रि में कृतिका नक्षत्र में यह ग्रहण भारतवर्ष के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों में मोक्षावस्था में दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त उ. अमेरिका, पेसिफिक महासागर, फिलिपीन्स, इन्डोनेशिया, टोकिया, न्यूमेक्सिको, कनाडा, चीन, ग्रीनलैण्ड, रूस, ताइवान, सिंगापुर, कजाकिस्तान, उत्तरी कोरिया, मंगोलिया, दक्षिण कोरिया, मैक्सिको, थाइलैण्ड तथा पूर्वी एशिया के देशों में ही देखा जाएगा। ग्रहण के प्रसार क्षेत्र को मानचित्र में दिखाया गया है। ग्रहण के स्पर्श, मोक्षादि का विवरण भा.स्टै.टा. के अनुसार निम्न प्रकार है।

ग्रहण स्पर्श -ता. 20 मई रात्रि 26।26 बजे।

ग्रहण सम्मिलन-ता. 20 मई रात्रि 27।39 बजे।

ग्रहण मध्यकाल-ता. 21 मई प्रात: 29।23 बजे।

ग्रहण उन्मिलन-ता. 21 मई प्रात: 07।06 बजे।

ग्रहण मोक्ष-ता. 21 मई प्रात: 08।19 बजे।

ग्रहण वेध (सूतक)-ता. 20 मई को सायं 16।30 बजे से होगा। ग्रहण वेध काल में बालक, वृद्ध और रोगी जनों को छोड़कर सूतक के समय भोजन, शयन, मूर्ति पूजा, स्पर्श, हास्य विनोद करना निषेध है। ग्रहण अवधि में अन्न, वस्त्र, धन, स्वर्ण का दान विशेषफल दायक होता है। गर्भवती स्त्री को शांत भाव से ईश्वर व जगत जननी मां दुर्गा जी का कीर्तन व भजन करना चाहिए। मोक्ष पश्चात् स्नान करें।

ग्रहण का मेषादि राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव

मेष-धन हानि	वृष- घात	मिथुन-धन हानि	कर्क-धन प्राप्ति
सिंह-ध्वंश	कन्या-चिन्ता	तुला-सौख्य वृद्धि	वृश्चिक-स्त्री कष्ट
धनु-रोग	मकर-अपमान	कुंभ-सिद्धि	मीन-लाभ

कंकणाकृति सूर्यग्रहण
20/21 मई 2012 ई.
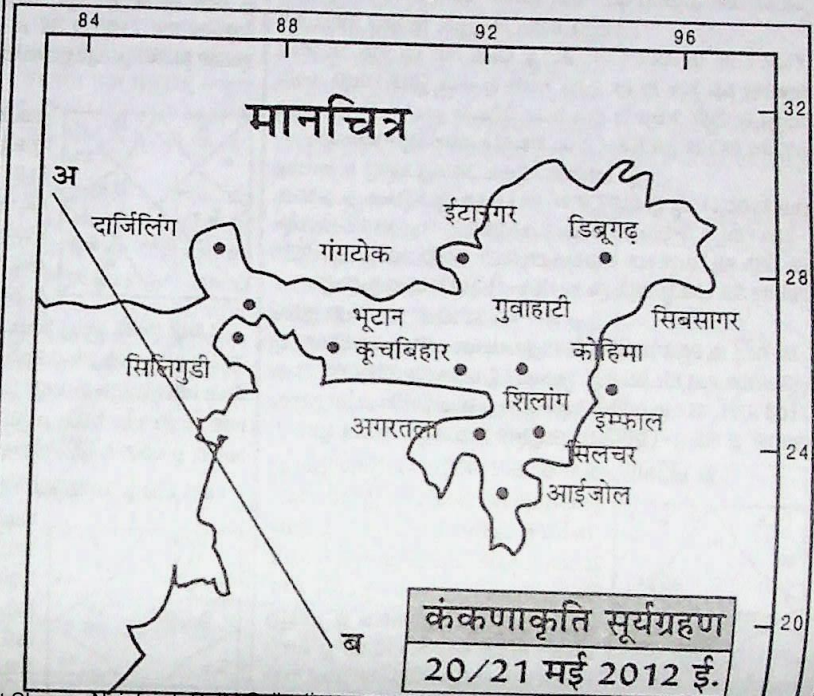
देश के प्रमुख पूर्वोत्तर शहरों में द्रष्टव्य ग्रहण का विवरण

स्थान	स्पर्श	मोक्ष	स्थान	स्पर्श	मोक्ष
ईटानगर	4।25	4।50	कोहिमा	4।27	4।50
दार्जिलिंग	4।45	4।51	शिलांग	4।37	4।49
गंगटोक	4।45	4।52	इम्फाल	4।30	4।49
भूटान	4।43	4।51	सिलिगुडी	4।48	4।52
डिब्रूगढ़	4।19	4।51	अगरतला	4।40	4।47
सिबसागर	4।23	4।50	सिलचर	4।34	4।49
गुवाहाटी	4।34	4।51	आईजोल	4।40	4।48
कूचबिहार	4।45	4।50	तिनसुकिया	4।20	4।51

2. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (भारते अदृश्य)

ज्येष्ठ शुक्ल 15 सोमवार, दिनांक 4 जून 2012 ई. को भारतीय समयानुसार अपराह्न 15।30 पर प्रारंभ होगा तथा ग्रहण का मोक्ष सायं 17।36 पर होगा। ग्रहण की अवधि 04 घंटे 30 मि. 02 सेकेन्ड की है। एशिया, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, पेसिफिक महासागर, जापान, चीन, रूस, मलेशिया, इण्डोनेशिया, ताइवान आदि देशों में दिखाई देने वाला ग्रहण भारत के किसी भी क्षेत्र में दिखाई नहीं देगा। अतः ग्रहण का धार्मिक महत्व नहीं है। तथा इसके वेध आदि नियमों को पालन करने की अवश्यकता नहीं है।

3. खग्रास सूर्यग्रहण (भारते अदृश्य)

कार्तिक कृष्ण 30 मंगलवार, दिनांक 13/14 नवंबर 2012 ई. को भारतीय समयानुसार रात्रि 26।05 पर प्रारंभ होगा तथा ग्रहण का मोक्ष 14 नवंबर प्रातः 29।18 पर होगा। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, अन्टार्टिका, दक्षिणी अमेरिका, पेसिफिक महासागर में दिखाई देने वाला ग्रहण भारत के किसी भी क्षेत्र में दिखाई नहीं देगा। अतः ग्रहण का धार्मिक महत्व नहीं है। तथा इसके वेध आदि नियमों को पालन करने की अवश्यकता नहीं है।

4. छाया चन्द्रग्रहण (भारते अदृश्य)

कार्तिक शुक्ल 15 बुधवार, दिनांक 28 नवंबर 2012 ई. को भारतीय समयानुसार सायं 17।34 पर प्रारंभ होगा तथा ग्रहण का मोक्ष 22।20 पर होगा। ग्रहण की अवधि 04 घंटे 35 मि. 59 सेकेन्ड की है। यूरोप, पूर्वी अमेरिका, एशिया, आस्ट्रेलिया, उ. अमेरिका में दिखाई देने वाला चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। अतः ग्रहण का धार्मिक महत्व नहीं है। तथा इसके वेध आदि नियमों को पालन करने की अवश्यकता नहीं है।

तीर्थराज प्रयाग में कुंभ महापर्व का सुयोग

संवत् 2069 रविवार ता. 10 फरवरी सन् 2013 ई. माघ मौनी अमावस्या को सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि में तथा गुरु वृष राशि में संचरण करने से कुंभ महापर्व का सुयोग बनता है। त्रिवेणी के संगम प्रयागराज (इलाहाबाद) उत्तर प्रदेश में कुंभ महापर्व का यह सुयोग बना है। **ब्रह्मचारी गृहस्थौ वा वाना प्रस्थो अथ भिक्षुकः। बाल वृद्ध युवा नं च नरः नारी नपुंशका॥** अर्थात् कुंभ पर्व योग पावन पर्व स्नान दान करने वाले सात्वकी प्रवृति वाले मनुष्य पुनर्जन्म, मरण के बंधन से मुक्त हो जाते हैं। हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग एवं नासिक-इन तीर्थों पर प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात् सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति-इन तीनों ग्रहों का विशेष योग बनने पर **कुभ महापर्व** का आयोजन किया जाता है। माघ मास में कुंभ महापर्व पर प्रयाग में गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम (प्रयागराज) में स्नान करके प्राणी अनेक पापों से मुक्त होकर स्वर्गिक सुखों को प्राप्त करता है। शास्त्रानुसार व्यक्ति मात्र तीन दिन नियमपूर्वक स्नान कर लें तो उसे एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों को करने के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है।

जो लोग प्रयागराज जाने में असमर्थ हों, वे लोग अपने निवास स्थान पर ही स्नान पात्र में गंगा एवं यमुना का निर्मल जल डालकर भगवान विष्णु, सूर्य एवं वरुण के मंत्र पढ़कर एवं प्रार्थना पूर्वक अन्न, वस्त्र, कलश, तिल, गुड़, पुष्प, फलों का दान तथा श्री विष्णु सहस्त्रणाम, श्री गंगा स्तोत्र, आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्य के द्वादश नाम आदि स्तोत्रों का विधिपूर्वक पाठ करें तो शुभफल की प्राप्ति होती है। एवं मानसिक पापों का क्षय होता है। **अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुंभ स्नानेन तत्फलम्॥** श्रीविष्णु पुरानानुसार सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञ करने से, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह पुण्य फल केवल कुंभ स्नान से प्राप्त होता है। कुंभ पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुंभ का पूजन कर, उसे वस्त्र अलंकार, आभूषण सुवर्ण या चांदी की मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान को संकल्पपूर्वक देने से सैकड़ों गोदान करने का फल मिलता है। कुंभ पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म कल्याण के साथ-साथ पित्तरों की भी तृप्ति होती है। कुंभ पर्व पर मनुष्यों को मन की निर्मलता, सादगी एवं सदाचार का पालन अवश्य करना चाहिए।

कुंभ महापर्व प्रमुख स्नान की तिथियां

1.	पौष शुक्ल तृतीया	सोमवार	ता. 14 जनवरी सन् 2013 ई.
2.	पौष शुक्ल एकादशी	मंगलवार	ता. 22 जनवरी सन् 2013 ई.
3.	पौष शुक्ल पूर्णिमा	रविवार	ता. 27 जनवरी सन् 2013 ई.
4.	माघ कृष्ण तृतीया	बुधवार	ता. 30 जनवरी सन् 2013 ई.
5.	षट्तिला एकादशी	बुधवार	ता. 06 फरवरी सन् 2013 ई.
6.	**माघ मौनी अमावस्या**	**रविवार**	**ता. 10 फरवरी सन् 2013 ई.**
7.	वसन्त पंचमी	गुरुवार	ता. 14 फरवरी सन् 2013 ई.
8.	जया एकादशी	गुरुवार	ता. 21 फरवरी सन् 2013 ई.
9.	माघी पूर्णिमा	सोमवार	ता. 25 फरवरी सन् 2013 ई.

मेष राशिगत गुरु का शुभाशुभ फल

ता. 8 मई 2011 से ता. 16 मई 2012 तक गुरु मेष राशि में ही संचरण करेंगे। ता. 17 मई गुरुवार को वृष राशि में 9।53 में प्रविष्ठ होंगे और संवत् के अंत तक वृष में ही संचरित रहेंगे।

मेष गुरा का लग्नस्थ भाव से स्त्री-संतान, मित्रों का सुख, आरोग्य, भाग्योदय कारक, शासन से लाभ, धार्मिक कृत्यों पर बल, सामाजिक सम्मान प्राप्ति।

वृषभ १२वां भाव गुरु का होने से मित्रों से विवाद, शासन से भय, धन का अपव्यय, प्रवास में दुख, चिन्ता, चोरी या दंड जैसी स्थिति भी, मानसिक विकृति भी।

मिथुन गुरु का ११वां भाव से रोग निदान, वैभव प्राप्ति। वाहन सुख, पुत्र-मित्रों से लाभ, भूमि-भवन, मांगलिक कार्यों का योग। शत्रु प्रबलता से सावधान।

कर्क गुरु का १०वां भाव से राजकीय कार्य योग शुभदायक। यश में वृद्धि, मानसिकता तथा गृह क्लेश का योग ज्यादा बनता है। पारिवारिक विवाद भी बनता है।

सिंह ९वां भाव में गुरु से आर्थिक लाभ, सेवा (नौकरी) प्राप्ति का योग। वस्त्राभूषण प्राप्ति का योग। धार्मिक कृत्यों में खर्चा ज्यादा होगा।

कन्या ८वां भाव में गुरु से मित्र व बंधु वर्गों से उपहास-विरोध होगा। प्रवास योग, स्त्री से कष्ट, संतान प्राप्ति में कष्ट या रोग का प्रभाव।

तुला ७वां गुरु होने से व्यापार में अच्छा लाभ। विदेश यात्रा का शुभ योग। शासन से सम्मान प्राप्ति। इष्ट मित्रों से लाभ दायक योग। नवीन कार्य में प्रगति दायक।

वृश्चिक ६ठा गुरु होने से शत्रुता बढ़ेगी। शक्ति न्यून, मानसिक चिन्ता, धन हानि, इष्ट मित्रों से भी द्वेष। साधना तथा धार्मिक कृत्यों से सफलता का योग बनता है।

धनु ५वां गुरु से संतान सुख, मित्र वृद्धि, मंत्र एवं विद्या अभ्यास से आर्थिक लाभ। प्रतियोगिताओं में सफलता का योग बनेगा।

मकर गुरु ४था भाव में होने से स्त्री वर्ग, पुत्रादि से शुभ दायक योग। सुख की प्राप्ति होगी। भूमि-भवन प्राप्ति का योग। वाहन क्रय-विक्रय में लाभ दायक योग।

कुंभ गुरु का ३रा भाव से श्रम सेवा कार्यो में वृद्धि का योग। अभीष्ट वस्तु प्राप्ति में लाभ एवं जिज्ञासा। स्त्री का सुख अच्छा।

मीन २रा गुरु होने से अर्थ प्राप्ति, मित्र वर्गों से लाभदायक योजना प्राप्ति। अनेक वस्तुओं का क्रय-विक्रय योग। आरोग्य व राजसेवा प्राप्ति, धन लाभ भी।

वृष राशिगत गुरु का शुभाशुभ फल

मेष मांगलिक व शुभ कार्यों का योग। विदेश यात्रा का योग बनता है। प्रतिष्ठित व्यक्तियों के मेल से यश में वृद्धि। धार्मिक कृत्यों में खर्चा ज्यादा होगा।

वृषभ लग्नस्थ गुरु पूज्य हैं। आय कम खर्च की अधिकता रहेगी। धार्मिक कृत्यों से सफलता का योग बनता है। नवीन कार्यों की योजना बनेगी।

मिथुन द्वादशस्थ गुरु होने से खर्च में बढ़ोत्तरी होगी। आय न्यून रहेगा। व्यवसाय में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। मानसिकता तथा गृह क्लेश का योग ज्यादा बनता है।

कर्क भूमि, भवन वाहनादि का योग बनता है। आर्थिक लाभ, सेवा (नौकरी) प्राप्ति का योग। विदेश यात्रा का शुभ योग बनता है। नवीन कार्य में प्रगति दायक।

सिंह गुरु दशमस्थ होने से आय के साधनों में व्यवधान पड़ेंगे। शक्ति न्यून, मानसिक चिन्ता, धन हानि, इष्ट मित्रों से भी द्वेष। खर्च की अधिकता रहेगी।

कन्या गुरु भाग्य स्थान में होने से शुभ फल दायक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्ति का योग बनेगा। व्यापार में अच्छा लाभ का योग बनेगा।

तुला मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ताएं बनेंगी। व्यवसाय में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है। घरेलु परेशानियां बनेंगी। धन हानि का योग बनेगा।

वृश्चिक भूमि-भवन-वाहनादि का योग बनेगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा। मानसिक चिन्ताएं बनेंगी। परिश्रम से धन लाभ का योग।

धनु बनते कार्यों में व्यवधान पड़ेंगे। पशु व शत्रुओं से भय का योग बनेगा। आय की अपेक्षा व्ययं ज्यादा रहेगा। इष्ट मित्रों से भी द्वेष का सामना करना पड़ सकता है।

मकर घर में मांगलिक कार्यों पर ज्यादा खर्च होगा। भूमि-भवन-वाहनादि का योग बनेगा। परीक्षाओं में सफलता का योग। भाग्य उन्नति का अवसर प्राप्त होगा।

कुंभ जीवन में अत्यधिक संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ताएं बनेंगी। स्वास्थ्य नरम रहेगा। आय कम खर्च अधिक रहेगा।

मीन मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ता का योग। शारीरिक कष्ट का योग। व्यावसाय में काफी उलझनों का योग बनेगा। अकस्मात् कोई नये खर्चों से परेशानियां।

वृश्चिक राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

मेष रोग निदान, नवीन कार्य की प्राप्ति, भाग्योदय, धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

वृषभ बाहर प्रवास, चिन्ता योग, शत्रुता योग, लाभ कम खर्च अधिक, बिघ्न बाधाएं।

मिथुन दाम्पत्य जीवन में कष्ट योग, स्वास्थ्य हानि, आय कम खर्च अधिक, आर्थिक परेशानी।

कर्क कार्य में कल्पना मात्र विफलताएं, भाग्य में बिघ्न के कारण गुप्त चिन्ताएं।

सिंह राजकीय दण्ड प्राप्ति, शत्रुता योग, खर्च अधिक, व्यवसाय में धन प्राप्ति।

कन्या वैभव, धन लाभ व उन्नति के अवसर, ऐश्वर्य की प्राप्ति, विदेश यात्रा का योग बनेगा।

तुला चिन्ता दायक, धन नाश, आय कम खर्च अधिक, मानसिक तनाव रहेगा।

वृश्चिक देह पीड़ा, चिन्ता योग, भागदौड़, बनते कार्यों में अड़चन, खर्च की अधिकता।

धनु आय कम खर्च अधिक, अप्रिय घटना का योग, रोग कारक, उदर पीड़ा।

मकर धन लाभ का योग, उन्नति योग, खर्च में बढ़ोत्तरी, विदेश यात्रा का योग बनेगा।

कुंभ खुशी तथा मांगलिक कार्य बाधाओं से अशांति, दौड़ धूप अधिक रहेगी।

मीन द्वेषता का योग, बुद्धि में वृद्धि शुभ, भूमि-भवन वाहनादि सुखों की प्राप्ति।

विशेष अशुभता में पूजा-पाठ, दानादि करें।

तुला राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

मेष स्वास्थ्य नरम रहेगा। स्वजनों से मनमुटाव, बनते कार्यों में अड़चन, खर्च की अधिकता।
वृषभ आय कम खर्च अधिक, अप्रिय घटना का योग बनेगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा।
मिथुन मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ताएं। दाम्पत्य जीवन में कष्ट। आर्थिक परेशानी।
कर्क खर्च की अधिकता। मानसिक तनाव रहेगा, व्यवसाय में अल्प मात्रा में धन प्राप्ति।
सिंह भूमि-भवन-वाहनादि का योग। विदेश यात्रा का योग। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।
कन्या बनते कार्यों में अड़चन, खर्च की अधिकता, स्वास्थ्य में नरमी, मानसिक तनाव बनेंगे।
तुला आय कम खर्च अधिक, मानसिक तनाव, बनते कार्यों में विघ्न, शारीरिक कष्ट योग।
वृश्चिक किसी अप्रिय घटना घटने का योग। आय में अल्पता व खर्च की अधिकता रहेगी।
धनु खर्च में बढ़ोत्तरी, विदेश यात्रा का योग बनेगा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।
मकर बनते कार्यों में अड़चन, खर्च की अधिकता। घरेलु उलझनों से मन अशांत रहेगा।
कुंभ भूमि-भवन वाहनादि सुखों की प्राप्ति। आय में वृद्धि, बिगड़े कार्य बनेंगे। रोग निदान।
मीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के मेल से आय व उन्नति के योग। ऐश्वर्य की प्राप्ति, भाग्योदय।
विशेष अशुभता में पूजा-दानादि करें।

वृषभ राशिगत केतु का शुभाशुभ फल

मेष धन लाभ तथा भूमि लाभ, वृथा खर्च अधिक, घरेलु विघ्न-बाधाएं बढ़ेंगी ।
वृषभ आर्थिक दृष्टि से अचानक शुभ दायक, स्वास्थ्य हानि का योग।
मिथुन धन हानि, चोरी का योग, आय कम खर्च अधिक, स्वास्थ्य हानि।
कर्क सम्पत्ति लाभ तथा धंधा वृद्धि, व्यय की अधिकता।
सिंह सेवा कार्य में रत कार्य ज्यादा, शत्रु भय, रोग, परेशानियां बढ़ेंगी।
कन्या अकस्मात धन का लाभ, भाग्योदय कारक योग करता है।
तुला पत्नि को कष्ट दायक योग, परिश्रम से धन लाभ, वाहनादि सुख, बिगडें काम बनेंगे।
वृश्चिक मांगलिक कार्य अच्छे होंगे, धन का व्यय अधिक होगा।
धनु शत्रुओं की वृद्धि होगी, उन्नति योग, आय कम खर्च की अधिकता रहेगी।
मकर विद्या लाभ शुभदायक योग, मांगलिक कार्य पर खर्च विशेष, विदेश यात्रा योग।
कुंभ माता-पिता को कष्ट योग, वाहन आदि का सुख प्राप्ति, संघर्ष के बाद धन प्राप्ति।
मीन धन लाभ के अवसर प्राप्त हो, मित्र से सहायता, बंटवारा योग अलग-अलग बनता है,
विशेष अशुभता में दानादि उपाय करें।

मेष राशिगत केतु का शुभाशुभ फल

मेष खर्च की अधिकता से मन में परेशानी, संघर्ष अधिक हो, स्वास्थ्य नरम रहेगा।
वृषभ आय कम खर्च अधिक, मानसिक तनाव, बनते कार्यों में अड़चन, शारीरिक कष्ट योग।
मिथुन खर्च की अधिकता। मानसिक तनाव बना रहेगा, व्यवसाय में अल्प मात्रा में धन प्राप्ति।
कर्क रोग व शत्रु भय का योग, स्वजनों से मनमुटाव, आय कम खर्च अधिक रहेगा।
सिंह भूमि-भवन-वाहनादि पर खर्चा। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। धन लाभ का योग।
कन्या भूमि-भवन वाहनादि सुखों की प्राप्ति। आय में वृद्धि, बिगड़े कार्य बनेंगे। रोग निदान।
तुला आय कम खर्च अधिक, मानसिक तनाव रहेगा, बनते कार्यों में अड़चन, मन अशांत।
वृश्चिक आय कम व खर्च की अधिकता। परिश्रम के बाद लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त।
धनु विदेश यात्रा का योग, मांगलिक कार्यों पर खर्चा अधिक, धन लाभ का योग बनेगा।
मकर भूमि-भवन वाहनादि सुखों की प्राप्ति। आय में वृद्धि, बिगड़े कार्य बनेंगे। स्वास्थ्य नरम।
कुंभ बिगड़े कार्य बनेंगे। रोग निदान। प्रतिष्ठित व्यक्तियों के मेल से आय के साधन बनेंगे।
मीन खर्च की अधिकता, आय में कमी रहेगी। मानसिक तनाव। स्वास्थ्य में गिरावट।
विशेष अशुभता में पूजा-दानादि करें।

व्यापारिक भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर सन् 2012-13 ई.

9 मार्च 2012 -(चैत्र मास में 5 शुक्रवार होने से)-25 फरवरी से 25 मार्च 2012 तक पिपरमेन्ट में 65 की भारी तेजी आ सकती है। तो 27 मार्च से 15 अप्रैल तक पिपरमेन्ट में मंदी चल सकती है। 19 जनवरी से 25 अप्रैल 2012 तक ग्वार में 555 की भारी तेजी आवे तो बाद में भारी मंदी आवेगी। 11 फरवरी से 15 मार्च तक चावल, लोहा में भारी तेजी आ सकती है। 15 फरवरी से 5 मार्च तक केसर, मखाना, गेहूं में तेजी तो लौंग, सौंफ में मंदी आ सकती है। 15 से 30 मार्च तक सोयाबीन में भारी तेजी। 6 से 15 मार्च तक अरहर में 200 की तेजी तो 27 मार्च 2012 तक अरहर में 275 की मंदी आ सकती है। 30 मार्च से 18 अप्रैल 2012 तक अरहर में 451 की तेजी आ सकती है। 3 मार्च से 5 अप्रैल तक क्रूड आयल, सोना, मोंठ, काबली चना, अरहर में भारी तेजी। 11 से 25 फरवरी 2012 तक प्याज में भारी तेजी व 1 से 15 मार्च गेहूं, मूंग, उड़द, देशी घी, सोयाबीन में भारी तेजी। इलायची में अच्छी तेजी आ सकती है।

7 अप्रैल 2012-(वैशाख मास में 5 शनिवार होने से)- 7 से 24 अप्रैल 2012 तक नारियल तेल में 212 की भारी तेजी। 3 से 23 अप्रैल तक चना में 355 की भारी तेजी। अरहर में 405 की भड़कती तेजी, तो बाद में मंदी आवेगी। 3 अप्रैल से 11 मई 2012 तक हल्दी में 707 की भारी तेजी आने की संभावना है। 17 मार्च से 7 मई 2012 तक चांदी 4575 की भारी तेजी बन सकती है। उसके बाद चांदी में मंदी आवेगी। 1 से 23 अप्रैल 2012 तक चीनी 105 तेज, 3 से 21 अप्रैल तक मसूर में 575 तेजी आ सकती है। 11 मार्च से 11 अप्रैल तक जीरा में 777 की मंदी तो 7 से 21 अप्रैल 2012 तक कालीमिर्च में 1115 की तेजी आवे तो आगे मंदी आवेगी। मार्च-अप्रैल में तिल में 1175 की जोरदार तेजी आ सकती है। तथा चांदी-सोना में भारी तेजी चलेगी।

6 मई 2012 -(ज्येष्ठ मास में 5 रविवार होने से)-मार्च-अप्रैल में उड़द, मूंग 505, धनियां में भारी तेजी, लौंग में तेजी चल सकती है। 11 मई से 15 जून 2012 तक चना 405 की मंदी, अरहर 275 की मंदी आ सकती है। 11 अप्रैल से 1 मई 2012 तक हल्दी में 799 की भड़कती तेजी, तो 5 अप्रैल से 7 मई 2012 तक चांदी 5005 की तेजी आ सकती है। 2 से 25 मई चीनी में 275 की मंदी चल सकती है। 15 से 23 मई 2012 तक जीरा 1575 की भड़कती तेजी, तो बाद में मंदी आवेगी। 15 से 30 मई तक कालीमिर्च में मंदी आ सकती है। 1 से 25 मई तक तिल 1575 की तेजी तथा अरहर, चना, उड़द, मूंग, सोयाबीन में भारी तेजी। सौंठ में तेजी। हल्दी, धनियां में तेजी आ सकती है। अप्रैल-मई 2012 में दालवाना, गेहूं में भारी तेजी। बेमौसम पानी वर्षा हो सकती है। 5 से 23 अप्रैल तक लालमिर्च 1500 तेज, सौंठ, छुआरे में तेजी आ सकती है। 25 अप्रैल से 25 मई तक धनियां, सौंठ, चावल में अच्छी तेजी आ सकती है।

5 जून 2012 -(आषाढ़ मास में 5 मंगलवार होने से)-27 मई से 6 जुलाई 2012 तक चना 250 मंदी, तो तिल में भारी तेजी। क्रूड आयल में तेजी आ सकती है। 11 से 15 मई तक लोहा में भारी तेजी। 25 मई 2012 से 21 जून तक चना में 275 की मंदी चल सकती है। 21 जून से 27 जुलाई 2012 तक हल्दी में 999 की भड़कती तेजी। 21 मई से 7 जून तक जीरा, लालमिर्च, अजवायन में तेजी। चावल में अच्छी तेजी। गुड़, चीनी में अच्छी तेजी। 27 मई से 11 जून 2012 तक चांदी 2005 तेज। 28 जून से 30 जुलाई 2012 तक चीनी में 111 की मंदी आ सकती है। 11 जून से 15 जुलाई 2012 तक जीरा 3275 की तेजी की संभावना है।

4 जुलाई 2012-(श्रावण मास में 5 बुधवार होने से)-3 जुलाई से 11 अगस्त 2012 के बीच चना 455 तेजी आवे तो 19 अगस्त 2012 तक चना 551 की जोरदार मंदी तो 21 जून 2012 से 3 सितंबर 2012 तक अरहर में 405 की भड़कती तेजी आ सकती है। 11 से 28 जून 2012 तक चांदी 4555 की मंदी तो 29 जून से 18 जुलाई तक चांदी में 5555 की जोरदार तेजी आ सकती है। 3 से 12 जुलाई तक जीरा 555 की तेजी आ सकती है। 11 जून से 20 जुलाई 2012 तक कालीमिर्च 2155 की जोरदार तेजी। 1 से 18 जुलाई तक अरहर, मसूर, चना, सरसों 375 की जोरदार तेजी का तूफान आ सकता है। 25 से 31 जुलाई तक चना 155 तेज, सौंठ 777 तेज, तो अमचूर, तिल 1500 मंदी चल सकती है।

3 अगस्त 2012 -(प्र0 भाद्रपद में 5 शुक्रवार होने से)-1 अग. से 15 सितं. तक हल्दी 1251 की तेजी चल सकती है। 21 अग. से 21 सितं. 2012 के बीच चीनी 399 की तेजी, मसूर 405 की तेजी बन सकती है। 7 अगस्त से 15 सितंबर 2012 तक जीरा 2777 की तेजी, तो कालीमिर्च में मंदी आवेगी। 3 से 16 अग. के बीच चना, अरहर, मसूर में अच्छी तेजी। मूंग 375 तेज, राजमां 250 तेज, सोयाबीन, पाम ऑयल में तूफानी तेजी आ सकती है। 11 से 25 अग. 2012 तक धनियां, नारियल गोला में तेजी। जीरा तेज, हल्दी, चना, मूंग, उड़द, लौंग, चीनी, कलौंजी, कपूर, सौंफ में अच्छी तेजी आ सकती है। क्रूड ऑयल में अच्छी तेजी चल सकती है। 21 से 31 अग. 2012 तक पिपरमेंट में तेजी। गेहूं, बादाम, मखाने, धनियां में अच्छी तेजी। 19 अग. से 18 सितं. के बीच पिपरमेंट में 199 की भड़कती तेजी आ सकती है।

1 सितंबर 2012 -(द्वि0 भाद्रपद में 5 शनिवार होने से)-27 अग. से 5 सितं. 2012 के बीच अरहर 75 तेज, गुड़ 65 तेज, चीनी 65 तेज, सोयाबीन 900 तेज, मूंग, मोठ में तेजी। 5 से 15 सितं. तक चांदी, सोना में तेजी। मूंग, उड़द, तूअर, बाजरा में तेजी। गुड़, चीनी में तेजी। पिपरमेंट में भारी तेजी तथा ग्वार में तेजी। 11 से 25 सितं. तक मसूर, जीरा, धनियां, लालमिर्च, लौंग, क्रूड ऑयल, बादाम में अच्छी तेजी आ सकती है। 9 से 18 सितं. 2012 के बीच गेहूं, बाजरा 50 तेज, धनियां 775 तेज, चना 150 तेज, चीनी 165 तेजी आ सकती है। 29 अग. से 9 अक्टू. 2012 तक चना 155 तेज। लालमिर्च 700 तेज होकर 500 की मंदी। 25 अग. से 17 सितं. 2012 तक जीरा 1199 की तेजी आ सकती है। 18 सितं. से 5 अक्टू. 2012 तक पिपरमेंट में 275 की मंदी आ सकती है। 31 अग. से 12 नवं. 2012 के बीच अरहर 700 से 1100 की भारी मंदी आ सकती है। 19 सितं. से 21 अक्टू. तक गुड़ में 777 की मंदी। 24 अग. से 17 सितं. तक जीरा 1575 की तेजी आ सकती है।

14 अक्टूबर 2012 -(आश्विन मास में 5 सोमवार होने से)-27 सितं. से 18 अक्टू. 2012 के बीच चांदी 3575 की जोरदार मंदी आ सकती है। क्रूड ऑयल, मूंग 275 मंदी आ सकती है। राजमां में 275 की तेजी आ सकती है। देशी घी में अच्छी तेजी आ सकती है। 9 से 31 अक्टूबर तक चना में 299 की मंदी। 7 अक्टू. से 11 जन. 2013 तक लालमिर्च 2575 की मंदी चल सकती है। 11 से 21 अक्टूबर तक चावल 303 तेज, 18 से 30 अक्टू. तक चावल, इलायची में अच्छी तेजी, तो मूंग, उड़द में अच्छी मंदी आ सकती है। 27 अक्टू. से 7 नवम्बर के बीच चना, केसर, लालमिर्च, धनियां में तेजी, तो अरहर, मूंग में मंदी आ सकती है। देशी घी, जूट, बारदाना में अच्छी तेजी आ सकती है। 7 अक्टू. से 21 दिसं. 2012 के बीच जीरा में 5559 की जोरदार मंदी, तो 20 नवं. तक पिपरमेंट में 77 की तेजी आ सकती है।

30 अक्टूबर 2012 -(कार्तिक मास में 5 मंगलवार होने से)-12 से 25 नवंबर 2012 तक अरहर में 555 की तेजी बन सकती है। 25 अक्टू. से 9 नवं. तक गुड़ में 377 की तेजी आ सकती है। 1 से 11 नवंबर तक अरहर, चना में 155 की तेजी आ सकती है। 7 से 15 नवंबर तक गेहूं, मूंग, उड़द में तेजी आ सकती है। तथा राजमां में 257 की तेजी, उड़द 306 तेज, गुड़ 255 तेजी आ सकती है। 16 से 28 नवंबर के बीच मसूर 500 तेज, चावल 405 तेज, चना 99 तेज, गुड़ 45 तेज, चीनी 145 तेजी आ सकती है। 22 से 29 नवंबर 2012 के बीच कालीमिर्च, जीरा तेज। तिल, सोयाबीन, ग्वार, चांदी में जोरदार मंदी आ सकती है। इसके अलावा मूंग, उड़द में मंदी का झटका लग सकता है।

29 नवंबर 2012 -(मार्गशीर्ष में 5 वृहस्पतिवार होने से)-20 नवं. से 10 जन. 2013 तक हल्दी में 155 की मंदी आ सकती है। 21 से 29 नवंबर तक चना, किशमिश तेज तो मूंग, उड़द में मंदी आ सकती है। 1 से 8 दिसंबर 2012 के बीच गेहूं 45 तेज, चीनी 65 तेज, बारदाना तेज, छुआरे, पिस्ता में तेजी, देशी घी तेज तो चावल में मंदी। 1 से 12 दिसंबर तक मसूर 500 तेज। 7 दिसं. से 5 मार्च 2013 के बीच लालमिर्च में 797 की जोरदार मंदी आ सकती है। 5 दिसं. 2012 से 27 जन. 2013 के बीच पिपरमेंट 275 की जोरदार तेजी, तो अरहर में 777 की जोरदार मंदी चल सकती है। 12 दिसंबर से 15 फरवरी 2013 तक गुड़ 275 तेज, चीनी 275 तेज तो जीरा में 799 की तेजी आ सकती है।

29 दिसंबर 2012 -(पौष मास में 5 शनिवार होने से)-11 से 21 दिसं. 2012 तक गेहूं 25 मंदी, मसूर 250 मंदी, राजमां 250 मंदी तो मक्का 45 तेज, बाजरा 65 तेज, सरसों 145 तेज, केशर 2575 तेज, बादाम, तिल तेज, लौंग में तेजी, सोयाबीन 601 तेज तो चांदी-सोना में भयंकर मंदी। 25 दिसंबर 2012 से 5 जन. 2013 तक पोस्तादाना 500 तेज, केशर में तेजी, मगज-तरबूज, अनारदाना शेष पृष्ठ 195 पर

शेष पृष्ठ 195 पर

पुरुषोत्तम (अधिक) मास फल सं. 2069 वि.

एकस्मिन वर्षे अधियुगे अधिक द्वये अति पूर्वोधिमासौ।
प्रथमोधिमासः प्राकृतःवज्ञेय अधि वन्न त्याज॥
असंक्रांति मासो अधिक मासौ स्पुट स्यात्।
द्वि संक्रांति मास क्षयोख्यः मास क्षयोख्यः कदाचित्॥ भास्कराचार्य॥

अर्थात् ज्योतिष की गणना में जब चन्द्र गणना से, सूर्य गणना से एक ही संक्रांति में दो अमावस्यायें आ जाती हैं। तब दूसरी अमावस्या वाले अमान्त महीने की वृद्धि होकर वह मल मास (पुरुषोत्तम मास) अधिक मास बन जाता है।

भविष्य पुराण के अनुसार-चन्द्र और सौर मासों के अंतर को ही अधिक मास कहा गया है। कहा जाता है कि एक समय दुःखी होकर मल मास ने भगवान श्री विष्णु से कहा-हे नाथ! क्या आप मुझ अभागे की पीड़ा को जानते हो। क्षण, लव, मुहूर्त्त, पक्ष, मास, दिन-रात्रि व नक्षत्र, राशियां सभी अपने-अपने स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर विचरण किया करते हैं। हे नाथ! कोई भी विवाह मुहूर्त्त, उत्सव, मांगलिक कार्य भी मुझ में नहीं किये जाते। यहां तक कि देवगण भी मेरा निरादर किया करते हैं। इसलिए हे स्वामी, मैं तो मरना चाहता हूं। मलीय मास की पीड़ा को समझ कर भगवान श्री विष्णु ने कहा-हे मल के रूप में निंदित मलीय मास आज मैं तुम्हें अपना नाम **पुरुषोत्तम** प्रदान करता हूं। जो लोग अधिक मास, लौंद मास, पुरुषोत्तम मास में जप, ध्यान, पूजा, दान, ईश्वर आराधना करेंगे। वे इस लोक में सुख भोगकर सहगति को प्राप्त करेंगे। इसलिए आज भी अधिक मास में दान-पुण्य का ही बड़ा महत्व है।

इस वर्ष भाद्रपद प्रथम शुक्ल पक्ष प्रतिपदा वार शनिवार दिनांक 13.8.2012 से पुरुषोत्तम मास प्रारंभ होगा। जो द्वितीय भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या दिनांक 16.9.2012 रविवार तक चलेगा। इस दौरान पर्वों की गणना प्रथम भाद्रपद कृष्ण व द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तरह ही मान्य होगी। भौगोलिक परिक्रमा मथुरा, वृंदावन, पुष्कर राज, जोधपुर, मेड़ता में नियमित संचालित होती है। दान पुण्य कथाओं का भजनों का पुण्य में गौसेवा का विशेष महत्व बताया गया है।

भाद्रपद मासे पुरुषोत्तम मास का फल जन हितार्थ
भाद्रपदे मासे चक्रेण तस्करे पीडितं जना-प्रजा।
सुभिक्षः क्षेमामरोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिण पये॥
राजानस्तत्र नाश्यति वृद्धि ब्राह्मणा जातिषु॥
कृषकः वैश्या व्यवसायिका सुखी भवेत च॥

अर्थात् प्रजा योग में कार्य में कुछ परिवर्तन जैसा योग बनता है। सम्पूर्ण प्रजा कलह, चौरी, तस्करी, काला बाजारी, आंदोलन, हिंसा, प्रदर्शनों में त्रस्त रहेगी। आरोप-प्रत्यारोप, आरोग्यादि राजनीति में प्रभावित होकर जनता को संकट में डालेंगे। वाहनों की दुर्घटनाओं का प्रभाव भी बढ़ेगा। दुर्भिक्ष-सुभिक्ष का मिश्रित फल मिलेगा। रोग का प्रभाव बढ़ेगा। कृषि में भी हानि कीड़ा का प्रभाव बढ़ेगा। गेहूं, जौ, मटर, अरहर, चना, मूंग, उड़द, चावल के भावों में मंदी का योग। रुई, घी, तैल, लोहा, शेयर्स बाजार में तेजी। अनायास वर्षा भी होगी।

अधिक मास में करने योग्य कार्य

तीर्थ श्राद्ध दर्शश्राद्ध सपिण्डनम। चन्द्र सूर्य ग्रहे स्नानं मल मासे विधियते॥ मल मास में प्राण घातक रोगादि की निवृति के लिए रुद्र जपादि (मनु स्मृति), अनुष्ठान, कपिल षष्ठी आदि व्रत शुभदायक रहेंगे। अनावृष्टि धारण में पुरश्चरण ग्रहण संबंधी श्राद्ध, दान-जप, पुत्र जन्म के कृत्य, पितृ मरण के श्राद्धादि, पुंसवन से सीमांस से संस्कार अवधि समाप्त करने के पूर्वान्त और सीमान्त जैसे संस्कार नियत अवाही करने के पूर्वगत प्रयोग आदि किये जा सकते हैं। कुछ भागवत पुराण, पितृ तृप्ति का विशेष योग भाद्रपद अधिक मास में बनता है।

अधिक मास में नहीं करने योग्य कार्य

अश्लेयाधेय प्रतिष्ठा च यज्ञो दान व्रताणि चः।
वेद वन वृषोत्सर्ग चहा करण मेखला॥
गमनं देव तीर्थानां विवाहमा भेषचनम।
यानं च गृह कार्याणि मल मासे विवर्जयेते॥ गर्ग संहिता।

अर्थात् कुआ निर्माण, बावड़ी, बाग-बगीचा लगाना, देव प्रतिष्ठा, किसी भी प्रयोजन के व्रत, उत्सव, उद्यापन, विवाह, वधु प्रवेश, पृथ्वी, सोना, तुला का दान, सोम यन गोल, वृण का विवाह, ऋषि पूजन, तीर्थ दर्शन, सन्यास, कुआ पूजन (जलवा), किसी भी व्यापार का शुभारंभ निंदित माना गया है। नशीली वस्तुओं का भी त्याग करें।

विशेष कर्तव्य-गोवर्धन धर्म वन्दे गोपालं धर्म गोप रूपिणा।
गोकलोत्सव मीशनं गोविन्द गोपिका प्रिय॥ श्रीमदभागवत।

अर्थात् विशेष रूप से मल मास में प्रथम शुक्ल प्रतिपदा से द्वितीय कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तक श्री पुरुषोत्तम भगवान का जप, ध्यान, श्री गोवर्धन गिरिराज जी की परिक्रमा, श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण-कीर्तन, गौरक्षा, गौसेवा, विधवा व अनाथ, असहाय, साधु-संत, ब्राह्मणों की निष्काम भाव से सेवा व स्वयं धर्मानुसार आचरण से स्वयं की देश और समाज के साथ-साथ विश्व कल्याण की भावना से कार्य करना चाहिए। देवी भागवत, भविष्योत्तर पुराण, हेमाद्रि पूजा, पुण्य कृत्य, भविष्य पुराण, मनुस्मृति, श्री प्रज्ञा पुराण, श्रीमद्भागवत गीता, रामचरित मानस, श्री पुरुषोत्तम मास व्रत कथा का पठन-पाठन करने से विशेष पुण्य का फल मिलता है। कथा पुण्य दान युक्त मल मास में नित योग्य काम करें। पौराणिक ग्रंथों का दान, वस्त्रदान, अन्न दान, गुड़ एवं घृत से बने पुओं के दान का विशेष महात्म्य माना गया है। अधिक मास में साधक को चाहिए कि वह सम्पूर्ण मास भूमि पर शयन करें तथा एकभुक्त सादा एवं सात्विक भोजन करें। पुरुषोत्तम में गौसेवा से अपने पुण्य का फल प्राप्त करें॥ कीर्तन साधना, ध्यान जप जो मल मास में नित करता है, उसका पूर्ण जीवन भी पुरुषोत्तम तुल्य बन जाता है। ❖

विक्रम सम्वत् 2069, शाके 1934 मध्ये शुद्ध विवाह मुहूर्त्ता:

यहां दिये गए विवाह मुहूर्त्त *"लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पंचकम्। एकार्गलौपग्रहौ च क्रांति साम्यं तथा परम्॥ दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषाः महाबलाः। एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधैः॥"* श्लोक सूत्रगत प्रमुख दश दोष रहित है तथा जिन दोषों के परिहार वाक्य मिले उन्हें भी दिया गया है। इस दश दोष शुद्धि को रेखाओं में प्रदर्शित किया गया है। रेखाओं में जहाँ (।) ऐसी खड़ी रेखा है वहां उस दोष की पूर्ण शुद्धि समझें तथा जहाँ (ऽ) ऐसा चिन्ह है उसे परिहार सहित दोष जानें। वैवाहिक नक्षत्र **"रोहिण्युत्तर रेवत्यो स्वाति मूलं मृगो मघा। अनुराधाश्च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदः।।"** किन्तु कात्यायनोक्त **"त्रिषुः त्रिषूत्तरादिषु"** (गृह्य सूत्र) के अनुसार चार विशेष विवाह नक्षत्र भी हैं। इस विषय में धर्म सिंधुकार ने भी लिखा है। **"चित्रा श्रवण धनिष्ठा ऽश्विनि यजुर्वेदीनाम्"** अतः यजुर्वेदियों के विवाह इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों में भी हो सकते हैं। हम पाठकों की सुविधा हेतु इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों के मुहूर्त्त भी अलग से दे रहे हैं।

नोटः- यहां क्रांतिसाम्य (महापात) दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है। लग्नों का समय भा.स्टैं.टा. दिल्ली हेतु है। अतः अन्य नगरों के लिये समय परिवर्तित करके संशोधित कर लें। गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लिया गया है। लग्नों के आगे दिया गया समय लग्नारंभ काल है।

समय शुद्धि

- **मीनाऽर्क (मलमास):-** वर्षारंभ से वैशाख कृ. 8 शुक्रवार दिनांक 13 अप्रैल 2012 ई. तक व फाल्गुन शु. 3 गुरुवार दिनांक 14 मार्च 2013 ई. से वर्ष पर्यन्त तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **देवशयन (चातुर्मास):-** आषाढ़ शु. 11 शनिवार दिनांक 30 जून 2012 ई. से कार्तिक शु. 11 शनिवार दिनांक 24 नवंबर 2012 ई. तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **धनुष्याऽर्घ (मलमास)-** मार्गशीर्ष शु. 3 शनिवार दिनांक 15 दिसंबर 2012 ई. से पौष शु. 3 सोमवार दिनांक 14 जनवरी 2013 ई. तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **गुरु अस्त (तारा):-** बाल्यत्व, वृद्धत्वा सहित वैशाख शु. 12 गुरुवार दिनांक 3 मई 2012 ई. से ज्येष्ठ शु. 7 सोमवार दिनांक 28 मई 2012 ई. तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **शुक्रास्त (तारा):-** बाल्यत्व, वृद्धत्वारंभ सहित ज्येष्ठ शु. 13 शनिवार दिनांक 2 जून 2012 ई. से आषाढ़ कृ. 7 रविवार दिनांक 10 जून 2012 ई. व माघ शु. 2 मंगलवार दिनांक 12 फरवरी 2013 ई. से वर्ष पर्यन्त तक **(सर्वत्र वर्ज्य)**
- **होलाष्टकः-** फाल्गुन शु. 8 बुधवार दिनांक 20 मार्च 2013 ई. से फाल्गुन शु. 15 बुधवार दिनांक 27 मार्च 2013 ई. तक **(रावी, व्यास, शतलुज के किनारे एवं पंजाब, हरि., उ.प्र., राज., हि.प्र. में वर्ज्य)**

—: विवाहे सूर्य, गुरु व चन्द्र बल विचार :—

सूर्यः-3, 6, 10, 11वाँ **शुभ**। 1, 2, 5, 7, 9वाँ **पूज्य**। 4, 8, 12वाँ **नेष्ट**। **गुरुः**-2, 5, 7, 9, 11वाँ **शुभ**। 1, 3, 6, 10वाँ **पूज्य**। 4, 8, 12वाँ **नेष्ट**।
चन्द्रः-1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11वाँ **शुभ**। 12 वाँ **ग्राह्य (पूज्य)**। 4, 8वाँ **नेष्ट**।

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
9	14 अप्रैल	शनि	उ.षा.	9	ऽ॥॥॥।	ल. दिवा वृष 7 ।35 बजे (श. 7 दो.)	मेष	मेष	मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
4	25 अप्रैल	बुध	मृग.	7	॥ऽशु.॥।ऽऽ॥ (शुक्र युति आवश्यके)	ल. रात्री कुम्भ 26 ।24 बजे (भौ. 7 दो.)	मेष	मेष	मिथुन
5	26 "	गुरु	"	7	॥ऽशु.॥।ऽऽ॥ (शुक्र युति आवश्यके)	ल. दिवा वृष 6 ।48 बजे (रा. 7 दो.)	मेष	मेष	मिथुन

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
13	17 जून	रवि	रोहि.	7	॥ऽ।ऽऽ अ.॥॥	ल. रात्री मेष 25 ।43 उप. केतु युति दोषाभाव रेखा वृद्धि 1	मिथुन	वृष	वृष

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
5	24 जून	रवि	मघा	8	॥॥॥ऽऽ॥	ल. दिवा कर्क 7 ।06 बजे, रात्री अ. गो. मकर 20 ।42 बजे (बु. 7 पू.)	मिथुन	वृष	सिंह
8	27 "	बुध	हस्त	8	॥॥॥।ऽ।ऽ (दग्धा ति[illegible]	[illegible] अन्य गोधलि	मिथुन	वृष	कन्या

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
8	27	जून	बुध	हस्त	9	॥॥॥ ऽ ॥	ल. रात्री मकर 20।30 बजे (बु. 7 पू.), रात्री कुंभ 22।13 बजे।	मिथुन	वृष	कन्या
9	28	"	गुरु	स्वाती	9	॥॥॥ ऽ ॥	ल. रात्री वृष 27।15 बजे से (रा. 7 दो.)	मिथुन	वृष	तुला
10	29	"	शुक्र	"	9	॥॥॥ ऽ ॥ (बु. 7 पू.)	ल. दिवा कर्क 6।46 बजे, सिंह 9।7 बजे, रात्री गो. मकर 20।22 बजे, कुंभ 22।05 बजे	मिथुन	वृष	तुला
						कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.				
11	24	नवं.	शनि	रेवती	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा मकर 10।40 बजे, कुंभ 12।23 बजे, रात्री कर्क 21।0 बजे, कन्या 25।42 बजे	वृश्चिक	वृष	मीन
15	28	"	बुध	रोहिणी	7	॥ऽगु. ।ऽ ॥ऽ ॥ (गुरौ युति दोष)	ल. रात्री कर्क 20।45 बजे, रात्री कन्या 25।26 बजे।	वृश्चिक	वृष	वृष
						मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.				
1	29	नवं.	गुरु	रोहिणी	7	॥ऽगु. ।ऽ ॥ऽ ॥ (गुरौ युति दोष)	ल. दिवा मकर 10।21 बजे, कुम्भ 12।03 बजे।	वृश्चिक	वृष	वृष
1	29	"	गुरु	मृग.	10	॥॥॥॥॥	ल. रात्री कर्क 20।41 बजे, कन्या 25।22 बजे।	वृश्चिक	वृष	वृष
2	30	"	शुक्र	"	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा कुम्भ 11।59 बजे, रात्री अन्य गोधूलि (भौ. 8 दोष)	वृश्चिक	वृष	मिथुन
8	7	दिसं.	शुक्र	उ.फा.	8	ऽ ॥॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा मकर 9।49 बजे, कुंभ 11।32 बजे (चं. 7 पू.), रात्री कर्क 20।9, कन्या 24।51 बजे।	वृश्चिक	वृष	सिं./कं.
9	8	"	शनि	हस्त	8	॥॥॥ ऽ ।ऽ (द.ति.आ.)	ल. दिवा मकर 9।45 बजे, कुंभ 11।28 बजे, रात्री गोधूलि वेला (भौ. 8 दोष)	वृश्चिक	वृष	कं./तुला
						पौष शुक्ल सं. 2069 वि.				
5	16	जन.	बुध	उ.भा.	9	॥॥॥ऽ ॥।	ल. रात्री कन्या 22।9 बजे (चं. 7 पू.), धनु 29।07 बजे।	मकर	वृष	मीन
6	17	"	गुरु	"	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा कुंभ 8।50 बजे, वृष 13।17 बजे, मिथुन 15।12 बजे (शु. 7 पू.)	मकर	वृष	मीन
6	17	"	गुरु	रेवती	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. रात्री कन्या 22।05 बजे (चं. 7 पू.), धनु 29।03 बजे।	मकर	वृष	मीन
7	18	"	शुक्र	"	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा कुंभ 8।46 बजे, वृष 13।13 बजे, मिथुन 15।09 बजे (शु. 7 पू.)	मकर	वृष	मीन
12	23	"	बुध	मृग.	8	ऽ ॥॥॥॥ऽ (दग्धा ति. आव.)	ल. रात्री कन्या 21।41 बजे।	मकर	वृष	मिथुन
						माघ कृष्ण सं. 2069 वि.				
3	30	जन.	बुध	उफा.	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. रात्री कन्या 21।14 बजे, धनु 28।12 बजे।	मकर	वृष	सिं./कं.
4	31	"	गुरु	"	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा मीन 9।22 बजे (चं. 7 पू.), मिथुन 14।17 बजे, रात्री अन्य. गोधू.	मकर	वृष	कन्या
4	31	"	गुरु	हस्त	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. रात्री धनु 28।08 बजे।	मकर	वृष	कन्या
5	1	फर.	शुक्र	"	9	॥॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा मीन 9।18 बजे (चं. 7 पू.), मिथुन 14।14 बजे, अ.गोधू.(भौ.8 दो.)	मकर	वृष	कन्या
9	4	"	सोम	अनु.	7	ऽ ॥।ऽ ॥ऽ ॥	ल. अन्य गोधूलि 16।50 बजे बाद (भौ. 8 दोष)	मकर	वृष	वृश्चि.
10	5	"	मंगल	अनु.	7	ऽ ॥।ऽ ॥ऽ ॥	ल. दिवा मीन 9।02 बजे।	मकर	वृष	वृश्चि.
11	6	"	बुध	मूल	8	।ऽ ॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा मिथुन 13।54 बजे (चं. 7 पू.)	मकर	वृष	धनु
11	6	"	बुध	"	7	।ऽ ॥॥।ऽ ।ऽ (दग्धा ति. आव.)	ल. रात्री तुला 23।02 बजे (के. 7 दोष)	मकर	वृष	धनु
12	7	"	गुरु	"	8	।ऽ ॥॥॥ऽ ॥	ल. दिवा मीन 8।55 बजे।	मकर	वृष	धनु

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
11	15 जून	शुक्र	अश्वि.	7	ऽ॥॥ऽऽ॥	ल. दिवा कर्क 7।41 बजे।	मिथुन	वृष	मेष

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
12	25 नवं.	रवि	अश्वि.	7	ऽऽ॥॥ऽ॥।	ल. रात्री कर्क 20।56 बजे, कन्या 26।57 बजे बाद	वृश्चि.	वृष	मेष

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
11	9 दिसं.	रवि	चित्रा	9	॥॥॥ऽ॥	ल. दिवा मकर 9।41 बजे, कुंभ 11।24, रात्री कर्क 20।01, कन्या 24।43 बजे	वृश्चि.	वृष	कं./तुला

पौष शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
3	14 जन.	सोम	धनि.	10	॥॥॥॥	ल. लग्नाभावः (आवश्यके कुंभे दिवा विचारिणाः)	मकर	वृष	कुंभ
8	19 "	शनि	अश्वि.	9	॥॥॥ऽ॥	ल. दिवा कुंभ 6।42 बजे, मीन 10।9 बजे, वृष 13।9 बजे, अ.गो. (भौ. 7 दोष)	मकर	वृष	मेष

माघ कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
5	1 फर.	शुक्र	चित्रा	10	॥॥॥॥	ल. रात्री कन्या 22।55 बजे बाद।	मकर	वृष	कन्या

(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः)

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय विवाह मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
5	24 जून.	रवि	मघा	7	॥॥ऽरो.ऽऽ॥	ल. दिवा कर्क 7।6 बजे, तुला 14।0 बजे, रात्री कुंभ 22।24 बजे।	मिथुन	वृष	सिंह
8	27 "	बुध	हस्त	7	॥॥ऽऽऽ।ऽ॥	ल. दिवा कर्क 6।54 बजे, कन्या 11।32 बजे।	मिथुन	वृष	कन्या
10	29 "	शुक्र	स्वाती	8	॥॥ऽनृ.।ऽ॥	ल. कन्या 11।24 बजे, अन्य गोधूलि।	मिथुन	वृष	तुला

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
3	6 जुला.	शुक्र	धनि.	9	॥॥ऽ॥॥	ल. मकर 19।55 बजे, कुंभ 21।37 बजे (बु. 7 पू.)	मिथुन	वृष	म./कुंभ
4	7 "	शनि	धनि.	10	॥॥॥॥	ल. कर्क 6।15 बजे।	मिथुन	वृष	कुंभ
7	10 "	मंगल	उ.भा.	8	॥॥ऽमं.ऽचौ.॥॥	ल. दिवा सिंह 8।23 बजे, तुला 12।57 बजे।	मिथुन	वृष	मीन

तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
श्रावण शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.									
5	24 जुला.	मंगल	हस्त	7	॥ऽमं. ॥ऽरो. ॥।ऽ (दग्धा ति. आव.)	ल. मकर 18।40 बजे। कुंभ 20।23 बजे।	कर्क	वृष	कन्या
10	28 ''	शनि	अनु.	7	॥।ऽऽ ॥।ऽ।	ल. कन्या 9।30 बजे, अन्य गोधूलि।	कर्क	वृष	वृश्चि.
12	30 ''	सोम	मूल	9	॥॥।ऽ॥।	ल. रात्री कुंभ 20।03 बजे।	कर्क	वृष	धनु
15	2 अग.	गुरु	श्रवण	10	॥॥॥॥॥	ल. रात्री मकर 18।09 बजे।	कर्क	वृष	मकर
प्रथम भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.									
5	7 अग.	भौम	रेवती	7	॥ऽ ॥ऽ ॥ऽ।	ल. दिवा कन्या 8।50 बजे, अन्य गोधूलि।	कर्क	वृष	मीन
11	13 ''	सोम	मृग.	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा कन्या 8।31 बजे।	कर्क	वृष	मिथुन
द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.									
5	20 सितं.	गुरु	अनु.	8	॥॥ऽ।ऽ॥	ल. अन्य धूलिमुखे सायंकाले।	कन्या	वृष	वृश्चि.
8	23 ''	रवि	मूल	7	॥॥ऽ।ऽऽ।	ल. दिवा धनु 12।40 बजे (चं. 1 पू.)	कन्या	वृष	धनु
15	30 ''	रवि	उ.भा.	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा धनु 12।13 बजे।	कन्या	वृष	मीन
आश्विन शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.									
6	20 अक्टू.	शनि	मूल	9	ऽ॥॥॥॥।	ल. दिवा धनु 10।54 बजे, मकर 12।58 बजे।	तुला	वृष	धनु
8	22 ''	सोम	उ.षा.	10	॥॥॥॥॥	ल. दिवा धनु 10।46 बजे।	तुला	वृष	मकर
10	24 ''	बुध	धनि.	7	॥ऽ ॥ऽ ॥ऽ।	ल. दिवा धनु 10।38 बजे।	तुला	वृष	कुंभ
15	29 ''	सोम	अश्वि.	10	॥॥॥॥॥	ल. रात्री मिथुन 22।43 बजे।	तुला	वृष	मेष

अथ गृहारम्भ (नींव रखना) मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
31 मई	ज्येष्ठ	शु. 10	गुरु	हस्त	ल. मिथुन
1 अग.	श्राव.	शु. 14	बुध	उ.षा.	ल. सिंह, कन्या 11।01 तक
4 ''	प्र.भाद्र.	कृ. 2	शनि	शत.	ल. अभिजिते
1 नवं.	कार्तिक	कृ. 3	गुरु	रोहि.	ल. अभिजिते
2 ''	''	कृ. 3	शुक्र	''	ल. धनु (11।26 तक)
2 ''	''	कृ. 3	शुक्र	मृग.	ल. अभिजिते (ति.दोष)
24 ''	''	शु. 11	शनि	रेव.	ल. अभिजित
28 ''	''	शु. 15	बुध	रोहि.	ल. लग्नाभावः
30 ''	मार्ग.	कृ. 2	शुक्र	मृग.	ल. अभिजित
18 जन.	पौष	शु. 7	शुक्र	रेव.	ल. अभिजित
23 जन.	पौष	शु. 12	बुध	मृग.	ल. कुंभ, मीन, मिथुन
24 ''	''	शु. 13	गुरु	मृग.	ल. कुंभ (9।18 या.)
31 ''	माघ	कृ. 4	गुरु	उ.फा.	ल. अभिजित

अथ नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
18 अप्रै.	वैशाख	कृ. 12	बुध	उभा.	ल. कन्या (17।17या.) भौ.12दो.
13 जून	आषा.	कृ. 9	बुध	रेव.	ल. मिथुन, (सू.गु.12 दो.) □
16 जन.	पौष	शु. 5	बुध	उभा.	ल. वृष □ सिंह, कन्या (मं.12 दो.)
17 ''	''	शु. 6	गुरु	''	ल. अभिजित ♦मीन (श. 8 दो.)
23 ''	''	शु. 12	बुध	मृग.	ल. कुंभ (सू.मं.बु.12 दो.) ♦
24 ''	''	शु. 13	गुरु	''	ल. कुंभ (9।48 या.) *
8 फर.	माघ	कृ. 13	शुक्र	उ.षा.	ल. अभिजित *(सू.मं.बु.12 दो.)

अथ जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ. 11	सोम	धनि.	ल. वृष, मिथुन अभि. (कुं.च.शु.)
16 ''	''	कृ. 11	सोम	शत.	ल. सिंह (कुं.च.शु.)
28 ''	''	शु. 7	शनि	पुष्ये	ल. कन्या (कुं.च.शु.)
7 जुला.	श्राव.	कृ. 4	शनि	शत.	ल. वृश्चि. (16।44 उप.) (कुं.च.र.)
26 ''	''	शु. 8	गुरु	स्वा.	ल. वृश्चि. (14।30 बाद) (कुं.च.शु.)
10 दिसं.	मार्ग.	कृ. 12	चन्द्र	''	ल. अभिजित (कुं.च.शु.)

नोटः-उपरोक्त जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त उन लोगों के उपयोगार्थ हैं जिन्हें ट्रांसफर या किसी आपदा वश या अन्य किसी कारण वश किराये आदि के मकानों का परिवर्तन करना पड़ता है। यहाँ अधिक मास व गुरु-शुक्रास्तादि का विचार नहीं किया गया है। कुंभ चक्र रहित एवं शुद्ध दोनों ही प्रकार के मुहूर्त्त दिये गये हैं।

शेष पृष्ठ 189 पर

अथ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् 2069 विक्रमी

(दिनांक 23 मार्च 2012 ई. से 10 अप्रैल 2013 ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य, गुरु व चंद्र बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए 4, 8, 12वें सूर्य व 4, 8वें चन्द्र का परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अत: 4, 8, 12वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ और अष्टम चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। यहां कात्यायनोक्त चार नक्षत्रों के विवाह मुहूर्तों की तारीखें भी सम्मिलित हैं। अत: स्वप्रथानुसार ग्रहण करें।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष:-**जून**-24, 27, 28, 29, **जन.**-16, 17, 18, 23, 30, 31, **फर.**-1, 4, 5, 6, 7।	15 मई से 14 जून तक	**मेष:**-**अप्रै.**-14, 25, 26, **जून**-24, 27, 28, 29, **नवं.**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8, **जन.**-16, 17, 18, 23, 30, 31, **फर.**-1, 4, 5, 6, 7।	ता. 14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक
वृष:-**जून**-24, 27, 28, 29, **नवं**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8, **जन.**-16, 17, 18, 23, 30, 31, **फर.**-1, 4, 5, 6, 7।	14 मई से 16 जुला. तक 16 नवं. से 15 दिसं. तक 14 जन. से 12 फर. तक	**वृष:**-**जून**-24, 27, 28, 29, **नवं**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8, **जन.**-16, 17, 18, 23, 30, 31, **फर.**-1, 4, 5, 6, 7।	14 जून से वर्ष पर्यन्त तक
मिथुन:-**अप्रैल**-14, 25, 26, **जून**-24, 27, 28, 29, **नवं.**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8।	14 जून से 16 जुला. तक	**मिथुन:**-**अप्रैल**-14, 25, 26।	14 जून से वर्ष पर्यन्त तक गुरु 12 वां (नेष्ट) आव.
कर्क:-**अप्रैल**-14, 25, 26, **नवं.**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8, **जन.**-16, 17, 18, 23, 30, 31, **फर.**-1, 4, 5, 6, 7।	16 नवं. से 15 दिसं. तक 14 जन. से 12 फर. तक	**कर्क:**-**अप्रैल**-14, 25, 26, **जून**-24, 27, 28, 29, **नवं.**-24, 28, 29, 30, **दिसं.**-7, 8, **जन.**-16, 17, 18,	14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
सिंह:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, जनवरी-16, 17, 18, 23, 30, 31, फरवरी-1, 4, 5, 6, 7।	13 अप्रै. से 14 मई तक	सिंह:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 जून से वर्ष पर्यन्त तक
कन्या:-जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 मई से 14 जून तक 14 जन. से 12 फर. तक	कन्या:-जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फरवरी-1, 4, 5, 6, 7।	14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक गुरु 8 वां (नेष्ट)
तुला:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8।	13 अप्रै. से 14 मई. तक 16 नवं. से 15 दिसं. तक	तुला:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	(अभाव:)
वृश्चिक:-अप्रै.-14, 25, 26, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 मई से 14 जून. तक 16 नवं. से 15 दिसं. तक	वृश्चिक:-अप्रै.-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक
धनु:-अप्रै.-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	13 अप्रै. से 14 मई तक 14 जून से 16 जुला. तक 14 जन. से 12 फर. तक	धनु:-अप्रै.-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 जून से वर्ष पर्यन्त तक
मकर:-जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 मई से 14 जून तक 14 जन. से 12 फर. तक	मकर:-जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फरवरी-1, 4, 5, 6, 7।	14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक नेष्ट
कुंभ:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8।	14 जून से 16 जुला. तक	कुंभ:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8। जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 अप्रैल से 26 अप्रैल तक
मीन:-अप्रैल-14, 25, 26, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	13 अप्रै. से 14 मई तक 16 नवं. से 15 दिसं. तक	मीन:-अप्रैल-14, 25, 26, जून-24, 27, 28, 29, नवं.-24, 28, 29, 30, दिसं.-7, 8, जन.-16, 17, 18, 23, 30, 31, फर.-1, 4, 5, 6, 7।	14 जून से वर्ष पर्यन्त तक

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र-राशि संचार, वक्री-मार्गी एवं उदयास्तादि सं. 2069 वि.

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
24 मार्च	उभा.	3	मीन	
27 "	"	4		
30 "	रेवती	1		29:55
3 अप्रै.	"	2		
6 "	"	3		
10 "	"	4		
13 "	अश्वि.	1	मेष	19:20
16 "	"	2		
20 "	"	3		
23 "	"	4		
27 "	भर.	1		11:03
30 "	"	2		
4 मई	"	3		
7 "	"	4		
10 "	कृति	1		29:17
14 "	"	2	वृष	16:10
17 "	"	3		
21 "	"	4		
24 "	रोहि.	1		25:25
28 "	"	2		
31 "	"	3		
4 जून	"	4		
7 "	मृग.	1		23:20
11 "	"	2		
14 "	"	3	मिथुन	22:44
18 "	"	4		
21 "	आर्द्रा	1		22:17
25 "	"	2		
28 "	"	3		
2 जुला.	"	4		
5 "	पुन.	1		21:53
9 "	"	2		
12 "	"	3		
16 "	"	4	कर्क	9:34
19 "	पुष्य	1		21:23
23 "	"	2		

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
26 जुला.	पुष्य	3	कर्क	
30 "	"	4		
2 अग.	श्ले.	1		20:17
6 "	"	2		
9 "	"	3		
13 "	"	4		
16 "	मघा	1	सिंह	17:58
19 "	"	2		
23 "	"	3		
26 "	"	4		
30 "	पूफा.	1		13:55
2 सितं.	"	2		
6 "	"	3		
9 "	"	4		
13 "	उफा.	1		7:50
16 "	"	2	कन्या	17:54
19 "	"	3		
23 "	"	4		
26 "	हस्त	1		23:16
30 "	"	2		
3 अक्टू.	"	3		
6 "	"	4		
10 "	चित्रा	1		12:21
13 "	"	2		
16 "	"	3	तुला	29:51
20 "	"	4		
23 "	स्वा.	1		22:45
27 "	"	2		
30 "	"	3		
2 नवं.	"	4		
6 "	विशा.	1		6:59
9 "	"	2		
12 "	"	3		
15 "	"	4	वृश्चि.	29:37
19 "	अनु.	1		12:56
22 "	"	2		

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
25 नवं.	अनु.	3	वृश्चि.	
29 "	"	4		
2 दिसं.	ज्ये.	1		17:18
5 "	"	2		
9 "	"	3		
12 "	"	4		
15 "	मूल	1	धनु	20:16
18 "	"	2		
22 "	"	3		
25 "	"	4		
28 "	पूषा.	1		22:31
31 "	"	2		
4 जन.	"	3		
7 "	"	4		
10 "	उषा.	1		24:31
13 "	"	2	मकर	31:01
17 "	"	3		
20 "	"	4		
23 "	श्रव.	1		26:48
27 "	"	2		
30 "	"	3		
2 फर.	"	4		
5 "	धनि.	1		30:02
9 "	"	2		
12 "	"	3	कुंभ	20:03
15 "	"	4		
19 "	शत.	1		10:29
22 "	"	2		
25 "	"	3		
28 "	"	4		
4 मार्च	पूभा.	1		16:53
7 "	"	2		
11 "	"	3		
14 "	"	4	मीन	16:57
17 "	उभा.	1		25:16
[illegible]				

सूर्य का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
24 मार्च	उभा.	3	मीन	
27 "	"	4		
31 "	रेवती	1		12:11
3 अप्रै.	"	2		
7 "	"	3		
10 "	"	4		

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
6 अप्रै.	व.मघा.	3	सिंह	
21 "	मा."	4		
10 मई	पूफा.	1		13:20
21 "	"	2		
30 "	"	3		
7 जून	"	4		
14 "	उफा.	1		23:57
21 "	"	2	कन्या	24:09
28 "	"	3		
4 जुला.	"	4		
11 "	हस्त.	1		6:47
17 "	"	2		
22 "	"	3		
28 "	"	4		
3 अग.	चित्रा.	1		11:53
8 "	"	2		
14 "	"	3	तुला	9:53
19 "	"	4		
24 "	स्वा.	1		23:24
29 "	"	2		
4 सितं.	"	3		
9 "	"	4		
14 "	विशा.	1		6:17
18 "	"	2		
23 "	"	3		
28 "	"	4	वृश्चि.	20:52
3 अक्टू.	अनु.	1		15:25

मंगल का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
12 अक्टू.	अनु.	3	वृश्चि.	
17 "	"	4		
22 "	ज्ये.	1		7:26
26 "	"	2		
31 "	"	3		
4 नवं.	"	4		
9 "	मूल	1	धनु	9:48
13 "	"	2		
18 "	"	3		
22 "	"	4		
26 "	पूषा.	1		25:17
1 दिसं.	"	2		
5 "	"	3		
9 "	"	4		
14 "	उषा.	1		8:38
18 "	"	2	मकर	15:27
22 "	"	3		
26 "	"	4		
31 "	श्रव.	1		10:11
4 जन.	"	2		
8 "	"	3		
12 "	"	4		
17 "	धनि.	1		8:15
21 "	"	2		
25 "	"	3	कुंभ	18:42
29 "	"	4		
2 फर.	शत.	1		29:08
7 "	"	2		
11 "	"	3		
15 "	"	4		
19 "	पूभा.	1		26:45
24 "	"	2		
28 "	"	3		
4 मार्च	"	4	मीन	20:47
8 "	उभा.	1		27:15
13 "	"	2		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
21 मार्च	उभा.	4	मीन	
26 "	रेव.	1		8:19
30 "	"	2		
3 अप्रै.	"	3		
8 "	"	4		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
26 मार्च	व.पूभा.	4		21:59
30 "	"	3		
2 अप्रै.	व."	3	कुंभ	16:15
6 "	"	4	मीन	16:01
13 "	उभा.	1		21:48
17 "	"	2		
20 "	"	3		
23 "	"	4		
26 "	रेवती	1		18:34
29 "	"	2		
1 मई	"	3		
3 "	"	4		
5 "	अश्वि.	1	मेष	21:07
7 "	"	2		
9 "	"	3		
11 "	"	4		
13 "	भर.	1		13:11
15 "	"	2		
16 "	"	3		
18 "	"	4		
20 "	कृति.	1		7:38
21 "	"	2	वृष	21:53
23 "	"	3		
24 "	"	4		
26 "	रोहि.	1		13:07
27 "	"	2		
29 "	"	3		
30 "	"	4		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
2 जून	मृग.	2	वृष	
4 "	"	3	मिथुन	18।32
6 "	"	4		
7 "	आर्द्रा	1		25।17
9 "	"	2		
11 "	"	3		
13 "	"	4		
15 "	पुन.	1		7।48
17 "	"	2		
19 "	"	3		
21 "	"	4	कर्क	18।37
24 "	पुष्य	1		5।33
26 "	"	2		
29 "	"	3		
3 जुला.	"	4		
8 "	श्लेषा	1		10।15
21 "	व. पुष्य	4		28।23
27 "	"	3		
31 "	"	2		
14 अग.	मा. "	3		
18 "	"	4		
21 "	श्लेषा	1		6।15
23 "	"	2		
25 "	"	3		
27 "	"	4		
28 "	मघा	1	सिंह	29।13
30 "	"	2		
1 सितं.	"	3		
3 "	"	4		
4 "	पूफा.	1		26।52
6 "	"	2		
8 "	"	3		
10 "	"	4		
11 "	उफा.	1		26।15
13 "	"	2	कन्या	21।33
15 "	"	3		
17 "	"	4		
19 "	हस्त	1		12।09

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
21 सितं.	हस्त	2	कन्या	
23 "	"	3		
25 "	"	4		
27 "	चित्रा	1		12।09
29 "	"	2		
1 अक्टू.	"	3	तुला	17।42
3 "	"	4		
5 "	स्वाती	1		27।31
8 "	"	2		
10 "	"	3		
12 "	"	4		
15 "	विशा.	1		14।15
17 "	"	2		
20 "	"	3		
23 "	"	4	वृश्चि.	14।51
26 "	अनु.	1		17।01
30 "	"	2		
5 नवं.	"	3		
16	व. विशा.	4		15।38
18 "	"	3	तुला	27।17
22 "	"	2		
2 दिसं.	मा. "	3		
6 "	"	4	वृश्चि.	9।12
8 "	अनु.	1		29।45
11 "	"	2		
14 "	"	3		
16 "	"	4		
18 "	ज्ये.	1		23।28
21 "	"	2		
23 "	"	3		
25 "	"	4		
27 "	मूल	1	धनु	22।08
29 "	"	2		
1 जन.	"	3		
3 "	"	4		
5 "	पूषा.	1		13।29
7 "	"	2		
9 "	"	3		

बुध का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
11 जन.	पूषा.	4	धनु	
13 "	उषा.	1		21।56
15 "	"	2	मकर	22।50
17 "	"	3		
19 "	"	4		
21 "	श्रव.	1		22।29
23 "	"	2		
25 "	"	3		
27 "	"	4		
29 "	धनि.	1		15।32
31 "	"	2		
2 फर.	"	3	कुंभ	10।30
4 "	"	4		
5 "	शत.	1		30।23
8 "	"	2		
10 "	"	3		
12 "	"	4		
14 "	पूभा.	1		22।53
17 "	"	2		
4 मार्च	शत.	4		20।07
7 "	"	3		
12 "	"	2		
29 "	मा. "	4		
1 अप्रै.	पूभा.	1		15।12
4 "	"	2		
7 "	"	3		
9 "	"	4	मीन	25।57

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
4 अप्रै.	भर.	3	मेष	
18 "	"	4		
3 मई	कृति.	1		8।10
17 "	"	2	वृष	9।53
31 "	"	3		
14 जून	"	4		
29 "	रोहि.	1		28।12
16 जुला.	"	2		
3 अग.	"	3		

गुरु का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
26 अग.	रोहि.	4	वृष	
11 नवं.	व. "	3		
7 दिसं.	"	2		
5 जन.	"	1		
24 फर.	मा. "	2		
24 मार्च	"	3		

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
24 मार्च	कृति.	1	मेष	29।35
28 "	"	2	वृष	14।21
31 "	"	3		
4 अप्रै.	"	4		
8 "	रोहि.	1		8।10
12 "	"	2		
16 "	"	3		
20 "	"	4		
25 "	मृग.	1		23।14
1 मई	"	2		
3 जून	व.रोहि.	4		16।40
8 "	"	3		
15 "	"	2		
22 जुला.	मा.मृग.	1		23।57
27 "	"	2		
31 "	"	3	मिथुन	19।45
4 अग.	"	4		
8 "	आर्द्रा.	1		14।03
11 "	"	2		
15 "	"	3		
18 "	"	4		
22 "	पुन.	1		13।10
25 "	"	2		
28 "	"	3		
1 सितं.	"	4	कर्क	6।14
4 "	पुष्य	1		9।35
7 "	"	2		
10 "	"	3		
13 "	"	4		
16 "	श्ले.	1		14।16

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
19 सितं.	श्ले.	2	कर्क	
22 "	"	3		
25 "	"	4		
28 "	मघा	1	सिंह	8।44
1 अक्टू.	"	2		
3 "	"	3		
6 "	"	4		
9 "	पूफा.	1		19।46
12 "	"	2		
15 "	"	3		
18 "	"	4		
20 "	उफा.	1		25।14
23 "	"	2	कन्या	19।55
26 "	"	3		
29 "	"	4		
31 "	हस्त	1		26।37
3 नवं.	"	2		
6 "	"	3		
9 "	"	4		
11 "	चित्रा	1		24।46
14 "	"	2		
17 "	"	3	तुला	10।55
19 "	"	4		
22 "	स्वा.	1		20।35
25 "	"	2		
28 "		3		
30 "	"	4		
3 दिसं.	विशा.	1		14।46
6 "	"	2		
8 "	"	3		
11 "	"	4	वृश्चि.	15।33
14 "	अनु.	1		7।41
16 "	"	2		
19 "	"	3		
22 "	"	4		
24 "	ज्ये.	1		23।52
27 "	"	2		
30 "	"	3		

शुक्र का नक्षत्र राशि संचार

ता.मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
1 जन.	ज्ये.	4	वृश्चि.	
4 "	मूल	1	धनु.	15।35
7 "	"	2		
9 "	"	3		
12 "	"	4		
14 "	पूषा.	1		30।59
17 "	"	2		
20 "	"	3		
23 "	"	4		
25 "	उषा.	1		22।21
28 "	"	2	मकर	14।13
31 "	"	3		
2 फर.	"	4		
5 "	श्रव.	1		13।47
8 "	"	2		
10 "	"	3		
13 "	"	4		
15 "	धनि.	1		
18 "	"	2		
21 "	"	3	कुंभ	13।14
23 "	"	4		
26 "	शत.	1		21।15
1 मार्च	"	2		
3 "	"	3		
6 "	"	4		
9 "	पूभा.	1		13।31
12 "	"	2		
14 "	"	3		
17 "	"	4	मीन	14।00
19 "	उभा.	1		30।14
22 "	"	2		
25 "	"	3		
28 "	"	4		
30 "	रेव.	1		23।36
2 अप्रै.	"	2		
5 "	"	3		
7 "	"	4		
10 "	अश्वि.	1	मेष	17।32

शनि का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
31	मार्च	व.चित्रा	3		
16	मई	,,	2	कन्या	8 ।09
4	अग.	,,	3	तुला	7 ।54
12	सितं.	,,	4		
11	अक्टू.	स्वा.	1		24 ।53
8	नवं.	,,	2		
8	दिसं.	,,	3		
18	जन.	,,	4		
23	मार्च	व. ,,	3		

राहु का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
15	अप्रै.	अनु.	3	वृश्चि.	22 ।28
17	जून	,,	2		
19	अग.	,,	1		8 ।53
21	अक्टू.	विशा.	4		15 ।25
23	दिसं.	,,	3	तुला	17 ।45
24	फर.	,,	2		

केतु का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
15	अप्रै.	रोहि.	1	वृष	22 ।28
17	जून	कृति.	4		28 ।55
19	अग.	,,	3		8 ।53
21	अक्टू.	,,	2		15 ।25
23	दिसं.	,,	1	मेष	17 ।45
24	फर.	भर.	4		10 ।46

हर्षल का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
19	मई	उ.भा.	4
8	सितं.	व. ,,	3
14	जन.	मा. ,,	4

नेपच्यून का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
6	अक्टू.	धनि.	4	वक्री
16	दिसं.	शत.	1	मा.
26	मार्च	शत.	2	

प्लूटो का नक्षत्र राशि संचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	राशि	घं.मि.
7	अग.	मूल	4		11 ।45
28	अक्टू.	पू.षा.	1		23 ।31
12	फर.	पू.षा.	2		

मंगल का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
14	अप्रै.	मार्गी	10 ।55

बुध का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
4	अप्रै.	मार्गी	14 ।53
15	जुला.	वक्री	7 ।04
8	अग.	मार्गी	10 ।20
6	नवं.	वक्री	27 ।38
26	,,	मार्गी	27 ।20
23	फर.	वक्री	14 ।14
17	मार्च	मार्गी	24 ।44

गुरु का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
4	अक्टू.	वक्री	18 ।47
30	जन.	मार्गी	17 ।12

शुक्र का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
15	मई	वक्री	19 ।50
27	जून.	मार्गी	20 ।25

शनि का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
26	जून	मार्गी	8 ।40
19	फर.	वक्री	16 ।28

हर्षल का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
13	जुला.	वक्री	7 ।23
12	दिसं.	मार्गी	14 ।23

नेपच्यून का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
5	जून	वक्री	14 ।42
11	नवं.	मार्गी	21 ।10

प्लूटो का वक्री-मार्गी

ता.	मास	व./मा.	घं.मि.
13	अप्रै.	वक्री	12 ।49
18	सितं.	मार्गी	10 ।15

मंगल का उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.		घं.मि.
31	जन.	अस्त	पश्चि.	14 ।22

बुध का उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.		घं.मि.
28	मार्च	उदय	पूर्व	15 ।43
15	मई	अस्त	पूर्व	6 ।12
8	जून	उदय	पश्चिम	19 ।02
20	जुला.	अस्त	पश्चिम	25 ।10
5	अग.	उदय	पूर्व	24 ।39
26	,,	अस्त	पूर्व	22 ।25
27	सितं.	उदय	पश्चिम	20 ।40
12	नवं.	अस्त	पश्चिम	9 ।19
23	,,	उदय	पूर्व	13 ।07
26	दिसं.	अस्त	पूर्व	11 ।00
5	फर.	उदय	पश्चिम	20 ।03
25	,,	अस्त	पश्चिम	25 ।41
10	मार्च	उदय	पूर्व	22 ।47

गुरु का उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.		घं.मि.
3	मई	अस्त	पश्चि.	28 ।28
29	,,	उदय	पूर्व	16 ।25

शुक्र का उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.		घं.मि.
2	जून	अस्त	पश्चिम	26 ।27
11	,,	उदय	पूर्व	12 ।14
12	फर.	अस्त	पूर्व	24 ।10

शनि का उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.		घं.मि.
8	अक्टू.	अस्त	पश्चिम	18 ।35
12	नवं.	उदय	पूर्व	17 ।39

अगस्त्य तारा उदयास्त

ता.	मास	उ./अ.	घं.मि.
25	अप्रै.	अस्त	28 ।29
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अंतरिक्ष में अद्भूत दृश्य-शुक्र का सूर्यातिक्रमण

(दिनांक 6 जून 2012 ई.)

ता. 6 जून 2012 ई. बुधवार को प्रात:काल भारतीय समय अनुसार 3 ।40 से 10 ।19 के बीच वक्रगति से भ्रमण करता हुआ शुक्र सूर्य बिम्ब के ऊपर से होकर गुजरेगा। जब-जब सूर्य-पृथ्वी के बीच से होकर शुक्र या बुध गुजरते हैं, तब-तब शुक्रातिक्रमण व बुधातिक्रमण होता है। चूंकि बुध एवं शुक्र अन्य ग्रहों की भांति सूर्य के चारों ओर अण्डाकार मार्ग में भ्रमण करते हैं। और इसका भ्रमण मार्ग सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य में पड़ता है। अत: अपने भ्रमण मार्ग पर चलते-चलते कभी-कभी ये पृथ्वी व सूर्य के मध्य में आ जाते हैं। परिणामस्वरूप इनकी सूर्य के साथ भेदयोग पृथ्वी पर दिखाई देता है।

शुक्र जब सूर्य व पृथ्वी की सीध में से गुजरते हैं तो सूर्य बिम्बपर इसकी छाया छोटे से चलबिन्दु समान दिखलाई पड़ता है। भारत में इस दृश्य को स्थानीय सूर्योदय से देखा जा सकता है। सबसे पहले पूर्वी भारत में ही दिखाई देना शुरू करेगा। आकृति में वक्रगति से भ्रमण करता हुआ शुक्र सूर्यबिम्ब में पूर्व दक्षिण की ओर से बिन्दु अ पर भारतीय समयानुसार रात्रि 3 ।40 पर प्रवेश होकर प्रात: 10 ।19 पर उसके दक्षिण-पश्चिमी भाग के बिन्दु ब से निकास होगा। भारत में इस खगोलीय घटना का आरंभ नहीं देखा जा सकेगा। क्योंकि भारतीय समयानुसार रात्रि 3 ।40 पर भारत के किसी भी नगर में सूर्योदय नहीं हुआ होगा। अत: केवल अतिक्रमण का दृश्य भारत के विभिन्न शहरों में देखा जा सकेगा। दिल्ली 5 ।24, मुम्बई 6 ।03, कलकत्ता 4 ।52, पटना 4 ।59, पुणे 5 ।59, श्रीनगर 5 ।20, भोपाल 5 ।36, अहमदाबाद 5 ।54 के पश्चात् सूर्य के ऊपर एक बिन्दु मात्र शुक्र दिखाई पड़ेगा। जिसे दूरबीन से देखा जा सकेगा। नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकेगा। नंगी आंख से देखने से आंख खराब भी हो सकती है। अत: सावधानी अपेक्षित है।

शुक्र-सूर्य अतिक्रमण के सम्पूर्ण निष्क्रमण को विभिन्न देशों में देखा जा सकेगा। उत्तरी अमेरिका, उत्तरी प्रशांत महासागर, उत्तरी ऐशिया, जापान, कोरिया, चीन, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिलीपींस, वियतनाम आदि में पूर्णरूपेण दिखाई देगा।

शुक्र-सूर्यातिक्रमण योग को अनिष्टकारी बताया गया है। विभिन्न राज्य व केन्द्र की सरकारों में सत्ता परिवर्तन व नेतृत्व परिवर्तन योग बनेगा। राजनीतिक उथल-पुथल का योग। कहीं अतिवृष्टि व

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल सं. वि. 2069, सन् 2012-13 ई.

नोट:- यह राशिफल गोचर ग्रहों के योग से नाम राशि-जन्म राशि मिश्रित गणना के रूप में लिखा गया है। सुविधा के लिए नामाक्षर, राशि स्वामी एवं नग भी लिखे हैं।

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

स्वामी-मंगल **नग-मूंगा**

मार्च 2012-इस माह में माता-पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आर्थिक परेशानी होगी। ससुराल से अनबन का योग बनता है। व्यापारिक गतिशीलता में अवरोध बनता है। राजकीय कर्मियों को अशांति रहेगी। आयात-निर्यात तथा हवाई यात्रा के योग भी बनेंगे। ता. 2, 13, 19, 24 को सावधान रहें। पशुओं से संभल कर रहना ठीक रहेगा। **अप्रैल**-इस माह में आपको अपनी मेहनत का फल अच्छा मिलेगा। घरेलू कार्यों की कार्य गति में प्रगति बनेगी। भूमि-भवन, जायदाद संबंधी कार्य अच्छा बनेगा। राजनैतिक एवं न्यायिक जैसे विवादों से परेशानी बनेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं का योग ठीक बनेगा। ता. 4, 10, 18 व 26 को यात्रा में संभल कर चलें, तो ठीक रहेगा। **मई**-इस माह में पारिवारिक मामलों की जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। संतान लाभ तथा सामाजिक कार्यों में अर्थ खर्च होगा। आप अपने गुस्से पर नियंत्रण रखेंगे तो कार्य में सफलता की प्राप्ति होगी। सरकारी काम-काज में भागदौड़ बढ़ेगी। स्त्री वर्ग की प्रगति ज्यादा बनेगी। सिर शूल का योग ज्यादा बनेगा। ता. 3, 9, 17, 21 नेष्ट रहेंगी। **जून**-माह में उत्तम ग्रहचाल रहेगा। नवीन उपलब्धि हासिल होगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी हो सकती है। नव-निर्माण कार्य, राजयोग, स्थायी सम्पत्ति की खरीद का अच्छा योग बनेगा। मांगलिक कार्यों में खर्चा भी ज्यादा होगा। प्रेम प्रसंग के चक्कर में मान-हानि जैसा योग बनेगा। ता. 4, 14, 22, 28 अशुभ दायक रहेंगी। **जुलाई**-परिवार में सामंजस्य बढ़ेगा। बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। घर-गृहस्थी की चिन्ता बढ़ेगी। माह में ग्रह चाल की स्थिति स्वास्थ्य के प्रति प्रतिकूल रहेगी। व्यापारिक कार्यों में साझेदारी से बचें, तो ठीक रहेगा। नये कार्य में मित्र मण्डली का योगदान अच्छा रहेगा। नौकरी योग बनेगा। ता. 5, 13, 19, 23 अशुभ दायक रहेंगी। **अगस्त**-माह में पारिवारिक सुख बढ़ेगा। पशुओं का लेन-देन से लाभ होगा। राजनीतिक कार्यों में चिन्ता जनक स्थिति रहेगी। वाहन लेन-देन से लाभ होगा। विदेशी यात्राओं का अच्छा योग बनता है। प्रतियोगिता में सफलता का योग बनता है। जीवन साथी अथवा प्रेमिका या प्रेमी का योगदान पारिवारिक कार्यों में अच्छा होगा। ता. 6, 14, 23, 29 अशुभदायक रहेंगी। **सितंबर**-नौकरी पेशा को फायदा रहेगा। किसी की कही सुनी बातों यानि अफवाहों से बचना। माह में भ्रमण का योग बनता है। साज-सज्जा, शृंगार सामग्री के कार्यों में लाभ मिलेगा। विरोधी के षड्यंत्र से बचें। परिवार में सामंजस्य बनाये रखें। घर के कार्यों में भागदौड़ ज्यादा रहेगी। ता. 7, 12, 24, 28 अशुभदायक रहेंगी। **अक्टूबर**-इस माह में पुराने सम्पर्क से अच्छा कार्य होगा। वाहन, भवन तथा प्रतियोगिताओं में सफलता के अच्छे योग बनेंगे। काम का बोझ बढ़ेगा। नवीन कार्य में मित्र वर्ग मदद करेंगे। मानसिकता के स्तर में बीमारी जैसी स्थिति बनेगी, लेकिन यह मात्र भ्रम होगा। सूर्य की पूजा करने से लाभ होगा। ता. 2, 10, 14, 23 अशुभ हैं। **नवंबर**-माह में भूमि-भवन तथा मांगलिक कार्यों में प्रगति होगी। धंधा में भी नवीनता आयेगी। अध्यात्म के प्रति कार्य योजना बनेगी। राज-समाज में सम्मान मिलेगा। सामाजिक कृत्यों से धन लाभ भी होगा। विश्वासघात एवं धोखा से बचें। घर-गृहस्थी में सामंजस्य बनाये रखना। ता. 4, 13, 19, 24 अशुभ दायक हैं। **दिसंबर**-विरोधी पक्ष से बचकर रहें। समस्या का समाधान कुछ समय बाद। नवीन कार्य में मित्र वर्ग से सहयोग मिलेगा। किसी प्रकार के जोखिम के कार्य में जमानती का कार्य न करें। चोरी, डकैती का तीन योग बनेगा। राजयोग सेवा का उत्तम बनता है। गैस, विद्युत एवं पेड़ से गिरने का भय रहेगा। ता. 3, 10, 18, 23 अशुभ रहेंगी। रोजमर्रा के कार्यों में कोताही न बरतें। **जनवरी 2013**-माह में पारिवारिक सौहार्द बना रहेगा। धार्मिक यात्राओं का कार्यक्रम बनेगा। नये कार्यों के प्रति योजना का निर्माण तथा सम्मान प्राप्ति का योग बनता है। सामाजिक तथा कोर्ट-कचहरी संबंधी कार्यों में विजय प्राप्ति का योग बनेगा। राज योग की प्राप्ति तथा वाहन प्राप्ति का योग बनेगा। गायों से सावधान रहें। ता. 6, 14, 28, 30 को सावधान रहें। **फरवरी**-अनावश्यक कार्यों से परेशानी का योग बनेगा। टकराव जनित मामला से बचना चाहिए। रोग-पीड़ा तथा रक्त विकार जैसी विकृति बनेगी। वैवाहिक कार्यों में खर्चा होगा। भूमि लेन-देन में सावधानी रखें। सहकारी विभाग से शुभदायक कार्य की योजना बनेगी। ता. 3, 12, 18, 24 अशुभ दायक हैं। **मार्च**-इस माह में खर्च की अधिकता के कारण मन में परेशानी रहेगी। विद्यार्थियों की परीक्षा के लिए माह शुभ दायक रहेगा। संतान का भाग्योदय योग। पुराने लेन-देन की प्रक्रिया में रुकावटें बनेंगी। मित्र वर्ग का सहयोग बना रहेगा। व्यापारिक गति में स्थिति सुधरेगी। क्रोध पर काबू रखें। ता. 4, 9, 16, 27 अशुभ हैं।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

स्वामी-शुक्र **नग-हीरा**

मार्च 2012-इस माह में भागदौड़ तथा घरेलू खर्चा ज्यादा होगा। मांगलिक खर्च ज्यादा होने से चिन्ता दायक योग बनेगा। सामाजिक सेवा का लाभ अच्छा मिलेगा। आकस्मिक आर्थिक लाभ जैसी योजनाएं बनेंगी। पारिवारिक रिश्तों में छोटी-मोटी बारदातों से मन उदासीनता युक्त रहेगा। ता. 2, 9, 19, 23 अशुभदायक रहेंगी। **अप्रैल**-आपको अध्ययन या विद्या के प्रति आने वाली बाधाओं से मुक्ति का योग बनेगा। राजकीय पक्ष प्रबल होगा। पुराने दोस्तों से मुलाकात से अच्छा लाभ भी होगा। अधिकारी वर्ग का अच्छा सहयोग मिलेगा। संतान प्राप्ति तथा भाग्योदय का अच्छा माह रहेगा। वाहन क्रय-विक्रय का योग बनेगा। ता. 4, 12, 22, 29 अशुभ रहेंगी। **मई**-माह में मानसिक एवं शारीरिक अशांति का योग बनता है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। व्यापारिक कार्यों में साझेदारी से भी लाभ मिलेगा। रोजगार, राजसेवा का लाभ प्राप्ति का योग बनता है। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। भौतिक सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। खर्चा पर नियंत्रण रखें, तो श्रेष्ठ रहेगा। राजकीय कार्यों में बाधाएं। ता. 2, 10, 18, 27 अशुभदायक रहेंगी। **जून**-आकस्मिक धार्मिक यात्रा का योग बनेगा। साझेदारी कार्यों में कुछ मन-मुटाव रहेगा। विदेश यात्रा का योग भी बनता है। परीक्षा में सफलता। माता का स्वास्थ्य बड़बड़ होगा। वाहन चलाने में भी सावधानी रखें। पत्नि द्वारा श्रेष्ठ कार्य की जानकारी मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से माह अच्छा रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखें। ता. 7, 20, 24, 29 अशुभदायक हैं। **जुलाई**-व्यापारिक कार्य या अन्य कार्यों में साझेदारी में असहयोग, मनमुटाव व आर्थिक हानि का योग बनता है। भूमि-भवन का लेन-देन, औषधि व्यापार में लाभ। आत्म विश्वास बढ़ेगा। भौतिक साधनों की प्राप्ति होगी। संतान द्वारा नया परामर्श मिलेगा। नये कार्यों की गति बढ़ेगी। वाहन प्राप्ति का योग। ता. 3, 9, 16, 22 अशुभ दायक रहेंगी। **अगस्त**-मित्र वर्ग से लाभदायक योजना प्राप्त होगी। जमीन व पशुओं के लेन-देन में अच्छा लाभ भी होगा। रोजगार राजकीय सेवा योग बनेगा। पदोन्नति के योग भी बनते हैं। राजकीय पक्षों में सफलता का योग बनेगा। कृषि कार्य में भी सफलता का शुभ योग। कुछ जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। शत्रु पक्ष प्रबल भी। ता. 2, 12, 23, 28 अशुभदायक रहेंगी। **सितंबर**-इस माह

में अध्ययन संबंधी आने वाली बाधाएं दूर होंगी। माता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। पारिवारिक विवादों से बचकर रहें। धार्मिक कार्यों के लिए धन खर्चा होगा। कीर्ति तथा आशाओं के अनुकूल कार्य होगा। धार्मिक यात्राओं में भी यह माह तेज रहेगा। मांगलिक कार्यों में भी भागदौड़ रहेगी। ता. 1, 9, 19, 24 अशुभदायक होंगी। **अक्टूबर**-सामाजिक सेवा में भागदौड़ रहेगी। कुछ समय तक मानसिक परेशानी भी रहेगी। स्वास्थ्य में गिरावट का योग। स्त्री पक्ष से कुछ असंतोषजनक जानकारी से मन उदास होगा। राजनैतिक क्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। व्यापारिक गति में शिथिलता का योग। मांगलिक यात्रा योग। ता. 6, 14, 23, 29 अशुभदायक। **नवंबर**-माह में संतान का भाग्योदय संबंधी गतिविधियां संचालित होंगी। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा। प्रकाशन, लेखन संबंधी कार्यों में गतिशीलता बढ़ेगी। पत्नि पक्ष से किया गया कार्य आपके भाग्योदय में अप्रत्यक्ष मदद करेगा। शत्रु पक्ष कुछ परेशानी के घटक बनेंगे। आलस्य से बचेंगे तो आर्थिक लाभ होगा। संतान प्राप्ति योग तथा वाहन पुरस्कार जैसा योग भी बनता है। ता. 2, 6, 13, 21 अशुभदायक रहेंगी। **दिसंबर**-इस माह में सुख-सुविधाओं के प्रति कार्य योजना अच्छी बनेगी। सामाजिक जीवन में वर्चस्व बढ़ेगा। सामाजिक संस्थाओं से मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। मित्र वर्ग कार्य की सराहना करेंगे। आर्थिक दृष्टि से माह शुभ दायक रहेगा। राजसेवा योग भी। ता. 3, 13, 24 व 30 अशुभदायक हैं। **जनवरी 2013**-परिवार में कुछ मन-मुटाव व अशांति दायक रहेगा। राजकीय कार्यों में बाधाएं बढ़ेंगी। शैक्षिक दृष्टि से सफलता का योग बनता है। विदेश यात्रा एवं उद्योग स्थापना अथवा व्यवसाय अभिवृद्धि का योग बनेगा। पारिवारिक कार्यों का दायित्व बढ़ेगा। लंदन या अमेरिका देशों की शुभ यात्रा योग भी। ता. 9, 16, 24, 28 अशुभदायक रहेंगी। **फरवरी**-नौकरी-पेशा में फायदा। किसी की कही सुनी बातों में न आकर स्वयं की क्षमता से कार्य करें। नदी, तालाब के पानी से बचकर रहें। अध्यात्म कार्य में भी रुचि बढ़ेगी। परिवार में खुशी बनेगी। सर्दी के प्रभाव से बचें। साज-श्रृंगार सामग्री का क्रय करेंगे। वाहन प्राप्ति योग भी। ता. 6, 14, 22, 27 अशुभदायक। **मार्च**-व्यवसायिक समझौता से परिवार में शांति बनेगी। सामाजिक कार्यों का दायित्व बढ़ेगा। प्रकृति के सानिध्य में रहने का मौका मिलेगा। शत्रु की गतिविधियों पर नजर रहेंगी। पर्याप्त धन से कार्य बढ़ेगा। पितृ संबंधी पूजा का योग। भूमि-भवन एवं व्यापारिक गतिशीलता बढ़ेगी। ता. 7, 18, 22, 27 अशुभदायक।

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

स्वामी-बुध **नग-पन्ना**

मार्च 2012-माह में अपेक्षित सफलता मिलेगी। आर्थिक समृद्धि प्राप्ति का योग। दाम्पत्य सुख शुभदायक तथा गर्भधारण का शुभ योग भी बनेगा। परिवार में आध्यात्मिक कार्य योजना में देव पूजन, माता पूजन जैसा शुभ योग बनेगा। व्यापारिक रुकावटें दूर होंगी। खर्चा बढ़ेगा लेकिन सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। विदेश यात्रा योग। ता. 3, 14, 24, 27 अशुभदायक होंगी। **अप्रैल**-माह में अधिकांश समय हंसी-खुशी से बीतेगा। साझेदारी के काम का विचार बनेगा। मांगलिक कार्य की शुभ योजना बनेगी। विद्या पक्ष में भी सफलता मिलेगी। नये वाहन क्रय का योग बनता है। यश प्राप्ति तथा कार्य में तल्लीनता से युक्त कार्य होगा। राहु का योग शत्रुता से विजय भी करेगा। ता. 3, 16, 23, 29 अशुभदायक रहेंगी। **मई**-इस माह में सुनियोजित कार्य से लाभ होगा। नये मेहमानों के आगमन एवं सगाई या वैवाहिक कार्यों में शुभदायक समाचार मिलेंगे। यात्रा योग शुभ बनेगा। गृहस्थी में कुछ नये कार्य का शुभारंभ होगा। धन प्राप्ति की रूप रेखा में राजकीय व्यवस्था का लाभ मिलेगा। सभी को साथ लेकर विचार मंथन करना सामाजिक कार्य में यश मिलेगा। ता. 4, 19, 24, 28 अशुभदायक रहेंगी। **जून**-अधिकारी वर्ग से सम्पर्क अच्छा बनेगा। ऋण संबंधी बैंक कार्य में सफलता का योग बनेगा। कृषि कार्य में नया मोड़ परिवर्तन आयेगा। पदोन्नति का अवसर भी मिलेगा। व्यर्थ के झमेले से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। पशु या हिंसक जानवरों से सावधान रहें। भूमि-भवन का योग। ता. 6, 13, 18, 26 अशुभदायक रहेंगी। **जुलाई**-माह में आर्थिक लाभ तथा पदोन्नति का लाभ बनेगा। इच्छित वस्तु प्राप्ति का अच्छा माह रहेगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। व्यर्थ भ्रमण नहीं करें तो अच्छा रहेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कानूनी विवादों से बचें। स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण व्यवहार से व्यापार एवं कार्य करें। ता. 2, 12, 21, 29 अशुभ रहेंगी। **अगस्त**-माह में मानसिक परेशानियां बढ़ेंगी। भाग्य के भरोसे नहीं बैठें। पुरुषार्थ करें। रोजगार प्राप्ति का योग बनता है। मेहनत का सितारा बुलन्द होगा। प्रकाशन, लेखन एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। साहित्य एवं ललित कलाओं में रुचि बढ़ेगी। पूर्व निर्धारित क्रियान्वित योजना का लाभ मिलेगा। ता. 3, 11, 21, 27 अशुभदायक रहेंगी। **सितंबर**-इस माह में व्यापारिक विरोधी पक्ष आपके लिए रुकावटें पैदा करेगा। आप अपनी मेहनत व समझदारी से रुकावटों का निदान कर विजय प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। मांगलिक कार्यों के प्रति भागदौड़ रहेगी। आकस्मिक भ्रमण से नयी जानकारी मिलेगी। संतान का भाग्योदय योग बनेगा। ता. 2, 13, 19, 24 अशुभदायक रहेंगी। **अक्टूबर**-माह में व्यर्थ झमेलों से बचें। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। कोई चिन्ता दायक समाचार की प्राप्ति होगी। दूर या समीप की यात्रा होगी। स्थान परिवर्तन का लाभ मिलेगा। सपरिवार घूमने का योग बनेगा। स्त्री वर्ग की सलाह से किया गया कार्य लाभदायक। ता. 3, 13, 24, 29 अशुभदायक रहेंगी। **नवंबर**-माह में भूमि-भवन का विवाद तथा शत्रुता के प्रभाव से मानसिक अशांति का कारण बनेगा। सामाजिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा। कानूनी विवाद में विजय प्राप्ति का योग। देश-विदेश संबंधी यात्राओं के प्रभाव से कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। रोजगार प्राप्ति तथा राजकीय सेवा का योग बनता है। ता. 1, 12, 24, 30 अशुभ दायक रहेंगी। **दिसंबर**-इस माह में सामाजिक कार्यों में भागदौड़ ज्यादा बनेगी। पदोन्नति समाचार की प्राप्ति भी। बिगड़े काम बनेंगे। राजकीय यात्राओं में घूमना पड़ सकता है। धन प्राप्ति की रूप रेखा बनेगी। पारिवारिक परेशानियां बढ़ेंगी। व्यापारिक गतिशीलता बढ़ेगी। विदेश यात्रा योग। ता. 4, 14, 26, 31 अशुभदायक हैं। **जनवरी 2013**-इस माह में स्थान परिवर्तन, नये भवन में प्रवेश योग। राजकीय सम्मान प्राप्ति। बिगड़े हुए काम बनेंगे। मेहनत के अनुसार सफलता प्राप्ति का योग। उतार-चढ़ाव की स्थिति माह के अंत में बनेगी। वायु विकार, सिर शूल जैसे रोग से प्रभावित होंगे। वाणी की माधुर्यता का माह रहेगा। ता. 2, 13, 22, 26 नेष्ट रहेंगी। **फरवरी**-इस माह में आपका अपना नियंत्रण ठीक नहीं रहेगा। गुस्सा का भी योग से परिजन चिन्तित होंगे। संतान प्राप्ति का योग। वाहन जैसा लेन-देन में लाभ होगा। पड़ोसी से विवाद हो सकता है। रचनात्मक-सृजनात्मक प्रवृति में समय व्यतीत होगा। मनोत्साह में वृद्धि होगी। कार्य-क्षेत्र भी बढ़ेगा। ता. 3, 12, 19, 27 अशुभ दायक हैं। **मार्च**-माह में भूमि क्रय का योग बनता है। असफलता का परिवर्तन सफलता में होगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। मलेरिया या मोतीझरा का योग बनता है। दोस्त वर्ग मदद करेंगे। नया समझौता पारिवारिक आपके हित में रहेगा। साहित्य संगीत में आपकी रुचि बढ़ेगी। ता. 4, 14, 23, 28 अशुभदायक रहेंगी।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

स्वामी-चन्द्र **नग-मोती**

मार्च 2012-व्यापारिक कार्यों में साझेदारी से हानि का योग बनेगा। शनि की ढैया से पारिवारिक परेशानियां बढ़ेंगी। भागदौड़ ज्यादा, लाभ कम मिलेगा। वाहन प्राप्ति का योग। कुछ विवाद से मानसिक तनाव भी बन सकता है। विश्वासी वर्ग भी कुछ समाचार गुप्त रखने का योग तथा परेशानी से विजय कारक योग भी बनेगा। ता. 3, 14, 22, 29 अशुभदायक बनती हैं। **अप्रैल**-भागदौड़ ज्यादा रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। स्थान परिवर्तन योग। दाम्पत्य वर्ग शुभदायक रहेगा। सामाजिक सेवाओं का लाभ होगा। वाहन से सावधान रहें। दुर्घटना जैसा योग है। जीवन बीमा जैसी ऐजेंसी से लाभ मिलेगा। नौकरी-पेशा वर्ग खुश रहेगा। ता. 10, 20,

वि. सं. 2069 के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रवि आदि योगों का विवरण।

निम्नांकित शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धि प्रद होते हैं किन्तु द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ दोनों ही प्रकार के कार्य द्विगुन व त्रिगुण फल प्रद होते हैं। अतः इन में यदि मृत्यु हो तो विधिवत् शांति करवानी आवश्यक होती है। यहां सभी योगों का प्रा. व समाप्ति काल अंग्रेजी ता. अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
23 मार्च	12:36	24 मार्च	सूर्योदय
25 "	सूर्योदय	25 "	18:10
27 "	"	29 "	सूर्योदय
1 अप्रै.	9:15	2 अप्रै.	9:37
3 "	सूर्योदय	3 "	9:09
14 "	10:40	15 "	सूर्योदय
19 "	18:48	21 "	"
25 "	सूर्योदय	26 "	"
27 "	14:58	28 "	"
29 "	सूर्योदय	29 "	17:44
5 मई	8:58	6 मई	सूर्योदय
7 "	सूर्योदय	8 "	"
11 "	17:43	12 "	17:46
17 "	सूर्योदय	19 "	सूर्योदय
21 "	12:49	22 "	"
23 "	सूर्योदय	23 "	18:27
24 "	20:47	25 "	22:41
2 जून	सूर्योदय	2 जून	16:39
4 "	"	4 "	11:06
8 "	"	9 "	सूर्योदय
12 "	"	13 "	"
14 "	"	15 "	12:53
18 "	"	19 "	सूर्योदय
21 "	"	22 "	"
27 "	5:49	28 "	"
6 जुला.	सूर्योदय	6 जुला.	11:42
10 "	"	10	14:35
12 "	"	12 "	19:58
16 "	"	17 "	सूर्योदय
19 "	"	20 "	"
25 "	"	25 "	10:20
11 अग.	9:55	12 अग.	सूर्योदय
13 "	सूर्योदय	13 "	15:23
16 "	"	16 "	19:23
26 अग.	9:19	27 अग.	सूर्योदय
2 सितं.	6:13	3 सितं.	"
4 "	9:27	5 "	"
8 "	सूर्योदय	8 "	20:59
16 "	"	17 "	सूर्योदय
20 "	17:43	21 "	16:05
23 "	सूर्योदय	23 "	13:34
30 "	"	30	15:16
2 अक्टू.	"	2 अक्टू.	19:38
14 "	"	15 "	सूर्योदय
18 "	"	18 "	23:21
21 "	18:24	22 "	सूर्योदय
11 नवं.	सूर्योदय	12 नवं.	"
14 "	12:15	15	9:20
18 "	सूर्योदय	20 "	सूर्योदय
25 "	"	26 "	"
27 "	11:38	29 "	"
3 दिसं.	सूर्योदय	5 दिसं.	"
12 "	"	12 "	20:50
16 "	"	16 "	10:05
17 "	"	17	8:28
21 "	9:50	22 "	सूर्योदय
23 "	सूर्योदय	23 "	14:48
25 "	"	27 "	सूर्योदय
30 "	8:08	31 "	10:10
1 जन.	सूर्योदय	1 जन.	11:48
18 "	"	19 "	सूर्योदय
23 "	"	24 "	"
25 "	12:35	26 "	"
27 "	सूर्योदय	27 "	16:31
9 फर.	7:29	10 फर.	सूर्योदय
14 "	सूर्योदय	16 "	"
18 "	11:35	19 "	"
20 "	सूर्योदय	20 "	17:43
21 "	20:25	22 "	22:39
2 मार्च	सूर्योदय	3 मार्च	सूर्योदय
4 "	"	4 "	21:00
8 "	15:26	9 "	14:09
12 "	12:06	13 "	सूर्योदय
14 "	सूर्योदय	15 "	14:55
18 "	"	19 "	सूर्योदय
21 "	"	22	7:14
27 "	10:06	28 "	सूर्योदय
5 अप्रै.	सूर्योदय	5 अप्रै.	20:21
9 "	"	9 "	20:24

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
23 मार्च	12:36	24 मार्च	सूर्योदय
20 अप्रै.	सूर्योदय	20 अप्रै.	21:34
16 जुला.	"	17 जुला.	सूर्योदय
19 "	10:48	20 "	"
11 अग.	9:55	12 अग.	"
13 "	सूर्योदय	13 "	15:23
16 "	"	16 "	19:23
4 सितं.	9:27	5 सितं.	सूर्योदय
8 "	सूर्योदय	8 "	20:59
2 अक्टू.	"	2 अक्टू.	19:38
14 "	11:17	15 "	सूर्योदय
11 नवं.	सूर्योदय	11 नवं.	20:10
14 "	12:15	15 "	सूर्योदय
12 दिसं.	सूर्योदय	12 दिसं.	20:50
21 "	9:50	22 "	सूर्योदय
9 जन.	सूर्योदय	9 जन.	7:27
18 "	"	18 "	19:25

रवि पुष्य योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
1 अप्रै.	9:15	2 अप्रै.	सूर्योदय
29 "	सूर्योदय	29 "	17:44
30 दिसं.	8:08	31 दिसं.	सूर्योदय
27 जन.	सूर्योदय	27 जन.	16:31

गुरु पुष्य योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
19 जुला.	10:48	20 जुला.	सूर्योदय
16 अग.	सूर्योदय	16 अग.	19:23

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
22 मई	15:46	23 मई	सूर्योदय
7 अक्टू.	सूर्योदय	7 अक्टू.	7:43
20 नवं.	सूर्योदय	20 नवं.	8:23
19 मार्च	"	19 मार्च	9:41

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
17 अप्रै.	14:12	18 अप्रै.	सूर्योदय
28 "	सूर्योदय	28 "	16:43
26 जून	6:27	27 जून.	सूर्योदय
25 दिसं.	सूर्योदय	25 दिसं.	8:05
30 "	"	30 "	8:08
12 फर.	"	12 फर.	9:16
17 "	8:37	17 "	12:48

रवि योग

प्रारम्भ ता. मास	घं. मि.	समाप्त ता. मास	घं. मि.
25 मार्च	18:10	26 मार्च	21:18
28 "	सूर्योदय	29 "	सूर्योदय
1 अप्रै.	9:15	3 अप्रै.	9:09
5 "	सूर्योदय	6 "	सूर्योदय
11 "	12:26	12 "	11:14
24 "	6:50	25 "	9:42
27 "	14:58	28 "	16:43
30 "	17:59	2 मई	16:09
4 मई	11:46	5 "	8:58
10 "	18:24	11 "	सूर्योदय
11 "	17:43	12 "	17:46
23 "	18:27	24 "	20:47
25 "	सूर्योदय	25 "	22:41
27 "	"	28 "	सूर्योदय
29 "	24:20	31 "	21:24
2 जून	16:39	3 जून	13:54
10 "	सूर्योदय	11 "	सूर्योदय
23 "	"	24 "	6:19
25 "	6:37	26 "	6:27
28 "	सूर्योदय	30 "	सूर्योदय
1 जुला.	21:01	2 जुला.	18:41
9 "	12:43	10 "	14:35
22 "	12:10	23 "	11:51
24 "	11:14	25 "	10:20
27 "	7:55	29 "	5:42
31 "	सूर्योदय	31 "	23:44
8 अग.	"	9 अग.	सूर्योदय
20 "	17:13	21 "	15:58
22 "	14:38	23 "	13:16
25 "	10:35	27 "	8:08
29 "	6:12	30 "	सूर्योदय
30 अग.	13:55	31 अग.	सूर्योदय
6 सितं.	11:49	7 सितं.	17:55
18 "	21:28	19 "	19:32
20 "	17:43	21 "	16:05
23 "	13:34	25 "	12:14
28 "	12:47	29 "	13:47
6 अक्टू.	सूर्योदय	7 अक्टू.	7:43
18 "	"	19 "	सूर्योदय
19 "	21:18	20 "	19:37
22 "	17:41	23 "	22:45
23 "	22:45	25 "	18:41
27 "	21:47	28 "	23:58
4 नवं.	17:34	5 नवं.	20:02
6 "	सूर्योदय	7 "	सूर्योदय
16 "	"	17 "	"
18 "	"	19 "	"
19 "	12:56	19 "	23:49
21 "	24:22	23 "	27:34
26 "	8:40	27 "	11:38
5 दिसं.	सूर्योदय	6 दिसं.	7:10
15 "	12:17	15 "	20:15
16 "	10:05	17 "	8:28
18 "	7:36	19 "	7:31
21 "	9:50	23 "	14:48
25 "	21:00	26 "	24:07
3 जन.	13:46	4 जन.	14:01
14 "	17:34	15 "	16:47
16 "	16:50	17 "	17:43
19 "	21:49	22 "	सूर्योदय
25 "	12:35	26 "	14:47
1 फर.	19:17	2 फर.	18:49
13 "	सूर्योदय	14 "	सूर्योदय
15 "	"	16 "	"
18 "	11:35	19 "	10:28
20 "	17:43	21 "	20:25
23 "	24:18	25 "	सूर्योदय
3 मार्च	सूर्योदय	3 मार्च	22:14
4 "	16:53	4 "	21:00
14 "	13:20	15 "	14:55
16 "	17:08	17 "	19:50
18 "	सूर्योदय	18 "	22:50
21 "	"	23 "	9:07
25 "	10:51	26 "	10:45
2 अप्रै.	सूर्योदय	3 अप्रै.	सूर्योदय

वि. सं. 2069 मध्ये शनि की साढ़ेसाती व ढैया विचार

वि. सं. 2069 में शनि वक्री तुला में गमन करता हुआ 16 मई को लौटकर पूर्व राशि कन्या में आयेगा। पुनः 26 जून को शनि मार्गी होकर 4 अगस्त 2012 को तुला राशि में प्रवेश करेगा। तथा संवत् के अंत तक तुला राशि में ही संचरण करता रहेगा।

शनि की साढ़ेसाती- से कन्या, तुला और वृश्चिक राशि वाले जातकों को शुभाशुभ फल रहेंगे। संतान एवं परिवार संबंधी परेशानियां, रोग व शत्रु भय, शारीरिक व मानसिक कष्ट, आय कम और व्यय की अधिकता रहेगी। बनते कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। स्वजन एवं मित्रों से भी मनमुटाव की संभावना रहेगी।

शनि की ढैय्या-कर्क एवं मीन राशि वाले जातकों के ऊपर अशुभ प्रभाव रहेगा। इससे जातक को विभिन्न प्रकार के रोग, शोक, गुप्त चिन्ताओं का सामना करना पड़ सकता है। घर में कलह व क्लेश की अधिकता रहेगी। धन का अपव्यय एवं स्वजन-परिजनों से विरोध रह सकता है।

तुला राशिगत शनि का गोचर फल सं. 2069 वि.

मेष राशि-इस वर्ष मेष राशि वालों के लिए शनि **तांबा के पाये** पर रहेगा। शनि के प्रभाव से यात्रा में कष्ट, दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करेगा। कोर्ट-कचहरी में तलाक जैसा विवाद भी होने का योग बनेगा। शत्रु ज्यादा हावी रहेगा। संतान को कष्ट, धन हानि तथा बुद्धि भ्रंश का योग बनता है। राजनीति में जातक को मान हानि तथा लज्जित जन्य आरोप से प्रभावित करेगा।

वृषभ राशि-वृषभ राशि के लिए शनिदेव **चांदी के पाये** पर रहेगा। पराक्रम, उत्साह वृद्धि तथा आर्थिक दृष्टि से शुभ दायक रहेगा। राजकीय व्यवस्था की कृपा बनी रहेगी। स्त्री, संतान का भी सुख, संबंध नहीं होने वाले जातकों का संबंध करायेगा। धन संचय का योग बनता है। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेगा। भवन निर्माण तथा पदोन्नति भी दिलायेगा।

मिथुन राशि-इस राशि वालों के लिए इस वर्ष शनि के योग से **स्वर्ण का पाया** बनता है। इससे पारिवारिक पीड़ा बढ़ेगी। वात (वायु) का प्रकोप बढ़ेगा। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। श्वास रोग पीड़ा तथा पशुओं से टक्कर भी होने का योग है। परिश्रम अधिक करने के साथ भी फल प्राप्ति न्यून बनती है। श्री गणेशोपासना से समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

कर्क राशि-कर्क राशि जल तत्व प्रधान है। इसके लिए इस वर्ष का शनि **लोहे का पाया** से तथा शनि की ढैया से ग्रसित है। आर्थिक हानि ज्यादा होगी। पति-पत्नि में भी मन मुटाव होने का योग होगा। मन में व्याकुलता रहेगी। माता-पिता को कष्ट, घर में क्लेश योग बनेगा। नैत्र रोग पीड़ा का योग बनता है। शनि का व्रत व उपवास करें, तो शुभ है।

सिंह राशि-ग्रह राज सूर्य की राशि सिंह पर शनि की **स्वर्ण पाया** से बनती है। पाया की अशुभता से जातक मानसिक दृष्टि से चिन्तित रहेगा। परिश्रम का फल मिलेगा। अशुभता में सूर्य पूजा, जल अर्घ्य भी सूर्य भगवान को देने से समस्या का समाधान होगा। आपको शासन से सम्मान एवं लाभ प्राप्ति का योग बनता है। वाहन क्रय-विक्रय का योग भी।

कन्या राशि-कन्या राशि के लिए **ताम्र पाये** पर उतरती शनि की साढ़ेसाती रहेगी। इससे मुख और पैरों में रोग की शिकायत बनेगी। संतान प्राप्ति में गड़बड़ योग बनेगा। धन खर्चा विलासिता में अथवा कोर्ट-कचहरी में हो सकता है। राजकीय कार्यों में बाधाएं बनेंगी। राजतंत्र में अशांति दायक निर्णय भी कारागार जैसा बन सकता है।

तुला राशि-यह राशि शनि की अपनी उच्च राशि है। **रजत पाद** पर लग्नस्थ शनि की साढ़ेसाती चलेगी। मस्तक, छाती में, तन पर पीड़ा दायक रहेगा। स्वजनों से विरोध बढ़ेगा। क्लेश विवाद से पारिवारिक कार्यों की गति मंदी होगी। दाम्पत्य सुख अच्छा बनेगा। भवन-भूमि, उद्योग, राजसेवा, नेता योग अच्छा बनेगा। वाहन क्रय-विक्रय में भी लाभ होगा।

वृश्चिक राशि-वृश्चिक राशि के लिए शनि मस्तिष्क पर चढ़ती शनि की साढ़ेसाती रहेगी। **लोहा के पाया** पर शनि का संक्रमण जातक को रोग पीड़ा बाधाएं आदि तथा सांस की विशेष बीमारी करेगा। राजकीय कार्य गति में शिथिलता बनेगी। वन-विभाग में हिंसक जानवरों से भी हानि का योग बनेगा। भ्रमण तथा खर्चा, दुर्घटना योग ज्यादा है।

धनु राशि-धनु राशि पर शनि **तांबा के पाये** पर संक्रमण करेगा। प्रकाशन, लेखन आय प्राप्ति करायेगा। वर्चस्व बढ़ायेगा। जनप्रियता, लोकप्रियता का योग भी। संतान सुख योग। उत्साह, धैर्य वृद्धि तथा मानसिक संतुष्टि का योग रहेगा। धैर्य की वृद्धि होगी। मांगलिक कार्य, विवाह, भूमि-भवन, व्यवसाय, रोजगार प्राप्ति भी शुभदायक।

मकर राशि-मकरस्थ शनि स्वामी यानि मकर राशि का शनि मालिक है। तथा **सोने के पाये** पर शनि संक्रमण करेगा। शासन से भय रहेगा। धन हानि भी करेगा। कोर्ट-कचहरी का विवाद भी व्यापार में हानि दायक योग बनेगा। चोरों का भी भय रहेगा। सामाजिक परिवेश में भागदौड़ योग ज्यादा बनेगा। नवीन उद्योग स्थापना तथा बैंक बैलेंस में मित्र वर्ग मदद करेंगे।

कुम्भ राशि-इसका स्वामी स्वयं शनि ही है। **चांदी के पाये** पर शनिदेव संक्रमण करेंगे। यह वर्ष काफी परिवर्तन कारक तथा कार्यशैली सामान्य रहेगी। पद लाभ तथा पद हानि दोनों ही बनते हैं। धन का कुछ दुरुपयोग तथा शासन से कुछ भयभीत स्थिति भी बनेगी। स्वविवेक से कार्य करें। मशीनरी कार्य बढ़ायेगा। सेवा योग भी करेगा।

मीन राशि-मीन राशि के लिए ढैया की स्थिति में शनि **लौह पाया** पर संक्रमण करेगा। इसका प्रभाव रोग बाधा, पीड़ा, पति-पत्नि से मन मुटाव तथा अचानक विवाद से धन हानि का योग भी बनेगा। प्रवास में शत्रुता का भय रहेगा। कठोर परिश्रम से कुछ लाभ दायक स्थिति बनेगी। यात्रा कार्य, धार्मिक कार्यों में भी खर्चा करायेगा।

कन्या राशिगत शनि का गोचर फल सं. 2069 वि.

मेष राशि-मेष राशि वाले जातको के लिए शनि **लौह के पाये** पर रहेगा। शनि के प्रभाव से शुभाशुभ फल प्राप्ति का योग। मानसिक परेशानियां व आर्थिक उलझनों के कारण चिन्ताएं बढ़ेंगी।

वृषभ राशि-वृषभ राशि के लिए शनिदेव **स्वर्ण के पाये** पर रहेगा। फलस्वरूप परिश्रम से शुभ फल की प्राप्ति। खर्च की अधिकता। स्वास्थ्य में नरमी रहें। स्वजनों व मित्रों से मन मुटाव रहेगा।

मिथुन राशि-जातकों के लिए इस वर्ष शनि के योग से **तांबा का पाया** बनता है। जिससे धन का आगमन अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्यों का सम्पादन होगा। धन ज्यादा खर्च होने का योग बनता है। जातकों के लिए शनि की ढैय्या का दुष्प्रभाव भी रहेगा। जिससे धन व्यय की अधिकता रहेगी।

कर्क राशि-जातकों लिए इस वर्ष का शनि रजत का पाया से बनता है। फलस्वरूप भूमि, भवन, वाहनादि सुखों की प्राप्ति का योग बनेगा। परिश्रम से आय के साधनों में बढ़ोत्तरी होगी।

सिंह राशि-शनि की साढ़ेसाती एवं शनि का पाया लौह होने से अत्यधिक परिश्रम के बाद धन की प्राप्ति का योग। घरेलू व आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी। धन व्यय की अधिकता रहेगी।

कन्या राशि-कन्या राशि के लिए ताम्र पाये पर उतरती शनि की साढ़ेसाती रहेगी। स्वजनों, मित्रों से विरोध रहेगा। बनते हुए कार्य में बिगाड़। स्वास्थ्य नरम व मानसिक परेशानियां रहेंगी।

तुला राशि-स्वर्ण पाद पर लग्नस्थ शनि की साढ़ेसाती से पारिवारिक कार्यों की गति मंदी होगी। मानसिक तनाव रहेगा। सामाजिक परिवेश में भागदौड़ योग ज्यादा बनेगा।

वृश्चिक राशि-चांदी के पाया पर शनि का साढ़ेसाती जातक को शुभ फल प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। परिश्रम के उपरांत धन की अत्यधिक प्राप्ति का योग। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

धनु राशि-धनु राशि वालों के लिए शनि **लौह के पाये** से फल उत्तम रहेगा। व्यापार में बढ़ोत्तरी होगी। भूमि, भवनादि प्राप्ति का योग बनेगा। दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा। स्वजनों और मित्रों के सहयोग से धन की प्राप्ति होगी।

मकर राशि- इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से धार्मिक लाभ का संयोग बनेगा। विदेश यात्रा का योग। परिवार में मांगलिक कार्य का योग। नवीन व्यवसाय से धन प्राप्ति का योग।

कुम्भ राशि-कुंभ राशि वाले जातकों के लिए शनि की ढैय्या होने से धन प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करेगा। **चांदी के पाये** पर शनिदेव के संक्रमण से बने कार्य में व्यवधान पैदा करेगा। धन का दुरुपयोग व स्वास्थ्य हानि रहेगा।

मीन राशि-मीन राशि वाले जातको के शनि **स्वर्ण पाया** पर संक्रमण करेगा। फलत: मानसिक तनाव, रोग बाधा, घरेलु उलझनें तथा धन का खर्च अधिक होगा। व्यवसाय में परेशानियां दृष्टिगोचर होगी। आय में अल्पता व व्यव में अधिकता का योग बनेगा।

तुला राशिगत शनि का पुन: आगमन का गोचर फल सं. 2069 वि.

मेष राशि-शनि का पाया स्वर्ण होने से आकस्मिक यात्रा से खर्च का योग अधिक रहेगा। उन्नति के अवसर में बाधाएं उत्पन्न होंगी। मानसिक कष्ट, स्वास्थ्य हानि का योग रहेगा।

वृषभ राशि-वृषभ राशि के लिए शनिदेव **ताम्र के पाये** पर रहेगा। फलस्वरूप भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा। अकस्मात धन की प्राप्ति का योग भी बनेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता का योग। विदेश यात्रा का योग बनेगा।

मिथुन राशि-जातकों के लिए शनि का पाया **रजत** होने से विदेश यात्रा का योग। वाहनादि प्राप्ति का योग बनेगा। दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। मांगलिक कार्यों का सम्पादन होगा। उच्च शिक्षा में सफलता के योग बनेंगे। पदोन्नति का योग भी।

कर्क राशि-जातकों लिए इस वर्ष शनि की ढैय्या तथा शनि का पाया लौह होने से घरेलू कलह-क्लेश से मन परेशान रहेगा। व्यर्थ के दौड़-धूप से परेशानियां बढ़ेंगी। व्यय की अधिकता रहेगी। व्यवसाय में उलझनें व बाधाएं दृष्टिगोचर होंगी।

सिंह राशि-शनि का पाया **ताम्र** होने से भूमि, भवन, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों का सम्पादन होगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि। धन का खर्च अधिक होगा। पूर्व नियोजित योजनाओं में सफलता की प्राप्ति होगी।

कन्या राशि-कन्या राशि के लिए **स्वर्ण पाये** पर शनि की साढ़ेसाती रहेगी। फलस्वरूप आय कम व व्यय की अधिकता रहेगी। मन अशांत रहेगा। स्वजनों व मित्रों से मन मुटाव रहेगा। उन्नति के मार्ग में अनेक विघ्न बाधाएं परिलक्षित होंगी।

तुला राशि-रजत पाद पर शनि संचरित होने से भूमि, भवन, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी। विदेश यात्रा गमन का योग बनेगा। शनि की साढ़ेसाती से पारिवारिक कार्यों की गति मंदी होगी। मानसिक तनाव रहेगा। घरेलू उलझनों से मन अशांत रहेगा। स्वास्थ्य भी नरम रहेगा।

वृश्चिक राशि-शनि की साढ़ेसाती से जातक को व्यर्थ के कामों में दौड़-धूप ज्यादा करनी पड़ेगी। बने कार्यों में व्यवधान पड़ेगा। आय कम, व्यय अधिक रहे। शनि का लौह पाद होने से जातकों को शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। मानसिक तनाव व व्यर्थ की चिन्ता रहेगी।

धनु राशि-धनु राशि वालों के लिए शनि **ताम्र के पाये** से फल मध्यम रहेगा। व्यापार में संघर्ष के उपरांत धन लाभ का योग बनेगा। नौकरी वालों के लिए पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। आय के महत्वपूर्ण साधनों का विकास होगा।

मकर राशि- इस राशि पर शनि का पाया **रजत** होने से विदेश यात्रा का योग। भूमि, भवन, वाहनादि प्राप्ति का योग बनेगा। नवीन व्यवसाय से धन प्राप्ति का योग। आय की अपेक्षा खर्च की अधिकता रहेगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

कुम्भ राशि-कुंभ राशि वाले जातकों के लिए शनि का पाया **स्वर्ण** होने से परिवार में मतभेद व कलह का योग बनेगा। भाग्योदय में अड़चनें पैदा होंगी। स्वास्थ्य हानि का योग। मानसिक तनाव से मन अशांत रहेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। स्वजनों से मतभेद भी।

मीन राशि-मीन राशि वाले जातकों को के शनि की ढैय्या अशुभ फलकारक रहेगा। शनि का पाया **लौह** होने से दुर्घटना का योग बनता है। खर्च की अधिकता रहेगी। स्वजनों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव व बने कामों में बाधाएं उत्पन्न होंगी।

साढ़ेसाती में शनि का अरिष्ट (अशुभ) फलादेश

राशि	फलादेश
मेष	इसके लिए ढाई वर्ष मध्य के अशुभदायक रहेंगे।
वृषभ	इसके लिए प्रथम ढाई वर्ष अशुभदायक रहेंगे।
मिथुन	इसके लिए अंत के ढाई वर्ष अशुभदायक रहेंगे।
कर्क	इसके लिए मध्य के ढाई वर्ष अशुभदायक रहेंगे।
सिंह	इसके लिए पहले पांच वर्ष, उसमें भी मध्य के ढाई वर्ष विशेष अशुभदायक हैं।
कन्या	इसके लिए प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी मध्य के ढाई वर्ष विशेष अशुभदायक रहेंगे।
तुला	इसके लिए अंत में वर्ष विशेष अरिष्ट दायक रहेगा।
वृश्चिक	इसके लिए अंतिम पांच वर्ष अशुभ, उसमें भी बीच के ढाई वर्ष नेष्ट रहेंगे।
धनु	इसके लिए प्रारंभ के ढाई वर्ष अशुभदायक रहेंगे।
मकर	इसके लिए प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी पहले के ढाई वर्ष विशेष अशुभ रहेंगे।
कुम्भ	इसके लिए आरंभ और अंत के पांच वर्ष, उस कालावधि में अंत के ढाई वर्ष नेष्ट हैं।
मीन	इसके लिए पूरे साढ़े सात वर्ष, उसमें भी अंतिम ढाई वर्ष अशुभदायक रहेंगे।

शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ

तैल, छायापात्र का दान, शनि मंत्र का जाप, दशांश हवन व श्री हनुमान जी की पूजा अभिषेक, तैल युक्त सिन्दूर, सात धान, लौहा का वर्त्तन, उड़द, पीपल पूजन, गरीबों को भोजन, गायों की सेवा, शनिवार व्रत करना, कथादि करना तथा शनि की उपासना, ढैया दशा, साढ़ेसाती दशा एवं महादशा के उपचार श्रद्धा विश्वास मुख्य आधार हैं।

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९।०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते है। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने है।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।०४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं। यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटावें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अभीष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्तर गत १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति= ३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अतः **१५ अगस्त की शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त के शनि स्पष्ट** ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त के** शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५ आया।**

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (◆ को $\frac{1}{4}$) (★ को $\frac{1}{2}$) (● को $\frac{3}{4}$) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१•	०।०२•	०।०५	०।०७•	०।१०	०।१२•	०।१५	०।१७•	०।२०	०।२२•	०।२५	०।२७•	०।३०
२	०।०२•	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३●	०।०७•	०।१५	०।२२•	०।३०	०।३७•	०।४५	०।५२•	१।००	१।०७•	१।१५	१।२२•	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६•	०।१२•	०।२५	०।३७•	०।५०	१।०२•	१।१५	१।२७•	१।४०	१।५२•	२।०५	२।१७•	२।३०
६	०।०७•	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८●	०।१७•	०।३५	०।५२•	१।१०	१।२७•	१।४५	२।०२•	२।२०	२।३७•	२।५५	३।१२•	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११•	०।२२•	०।४५	१।०७•	१।३०	१।५२•	२।१५	२।३७•	३।००	३।२२•	३।४५	४।०७•	४।३०
१०	०।१२•	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३●	०।२७•	०।५५	१।२२•	१।५०	२।१७•	२।४५	३।१२•	३।४०	४।०७•	४।३५	५।०२•	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६•	०।३२•	१।०५	१।३७•	२।१०	२।४२•	३।१५	३।४७•	४।२०	४।५२•	५।२५	५।५७•	६।३०
१४	०।१७•	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८●	०।३७•	१।१५	१।५२•	२।३०	३।०७•	३।४५	४।२२•	५।००	५।३७•	६।१५	६।५२•	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१•	०।४२•	१।२५	२।०७•	२।५०	३।३२•	४।१५	४।५७•	५।४०	६।२२•	७।०५	७।४७•	८।३०
१८	०।२२•	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३●	०।४७•	१।३५	२।२२•	३।१०	३।५७•	४।४५	५।३२•	६।२०	७।०७•	७।५५	८।४२•	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६•	०।५२•	१।४५	२।३७•	३।३०	४।२२•	५।१५	६।०७•	७।००	७।५२•	८।४५	९।३७•	१०।३०
२२	०।२७•	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८●	०।५७•	१।५५	२।५२•	३।५०	४।४७•	५।४५	६।४२•	७।४०	८।३७•	९।३५	१०।३२•	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१•	१।०२•	२।०५	३।०७•	४।१०	५।१२•	६।१५	७।१७•	८।२०	९।२२•	१०।२५	११।२७•	१२।३०
२६	०।३२•	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३●	१।०७•	२।१५	३।२२•	४।३०	५।३७•	६।४५	७।५२•	९।००	१०।०७•	११।१५	१२।२२•	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६•	१।१२•	२।२५	३।३७•	४।५०	६।०२•	७।१५	८।२७•	९।४०	१०।५२•	१२।०५	१३।१७•	१४।३०
३०	०।३७•	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८●	१।१७•	२।३५	३।५२•	५।१०	६।२७•	७।४५	९।०२•	१०।२०	११।३७•	१२।५५	१४।१२•	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१•	१।२२•	२।४५	४।०७•	५।३०	६।५२•	८।१५	९।३७•	११।००	१२।२२•	१३।४५	१५।०७•	१६।३०
३४	०।४२•	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३●	१।२७•	२।५५	४।२२•	५।५०	७।१७•	८।४५	१०।१२•	११।४०	१३।०७•	१४।३५	१६।०२•	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६•	१।३२•	३।०५	४।३७•	६।१०	७।४२•	९।१५	१०।४७•	१२।२०	१३।५२•	१५।२५	१६।५७•	१८।३०
३८	०।४७•	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८●	१।३७•	३।१५	४।५२•	६।३०	८।०७•	९।४५	११।२२•	१३।००	१४।३७•	१६।१५	१७।५२•	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१•	१।४२•	३।२५	५।०७•	६।५०	८।३२•	१०।१५	११।५७•	१३।४०	१५।२२•	१७।०५	१८।४७•	२०।३०
४२	०।५२•	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३●	१।४७•	३।३५	५।२२•	७।१०	८।५७•	१०।४५	१२।३२•	१४।२०	१६।०७•	१७।५५	१९।४२•	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६•	१।५२•	३।४५	५।३७•	७।३०	९।२२•	११।१५	१३।०७•	१५।००	१६।५२•	१८।४५	२०।३७•	२२।३०
४६	०।५७•	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८●	१।५७•	३।५५	५।५२•	७।५०	९।४७•	११।४५	१३।४२•	१५।४०	१७।३७•	१९।३५	२१।३२•	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१•	२।०२•	४।०५	६।०७•	८।१०	१०।१२•	१२।१५	१४।१७•	१६।२०	१८।२२•	२०।२५	२२।२७•	२४।३०
५०	१।०२•	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३●	२।०७•	४।१५	६।२२•	८।३०	१०।३७•	१२।४५	१४।५२•	१७।००	१९।०७•	२१।१५	२३।२२•	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६•	२।१२•	४।२५	६।३७•	८।५०	११।०२•	१३।१५	१५।२७•	१७।४०	१९।५२•	२२।०५	२४।१७•	२६।३०
५४	१।०७•	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८●	२।१७•	४।३५	६।५२•	९।१०	११।२७•	१३।४५	१६।०२•	१८।२०	२०।३७•	२२।५५	२५।१२•	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११•	२।२२•	४।४५	७।०७•	९।३०	११।५२•	१४।१५	१६।३७•	१९।००	२१।२२•	२३।४५	२६।०७•	२८।३०
५८	१।१२•	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३●	२।२७•	४।५५	७।२२•	९।५०	१२।१७•	१४।४५	१७।१२•	१९।४०	२२।०७•	२४।३५	२७।०२•	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः 5।30 बजे के भारतीय स्टैंण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +3 घं. 30 मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः 9 घं. 00 मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

अप्रैल सन् 2013 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।43"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रै.
1	11 17 22 42	07 18 20 16	11 21 10 45	10 19 35 35	01 17 48 33	11 18 12 50	06 16 06 33	06 24 46 52	11 14 36 05	10 10 10 26	08 17 30 14	1
2	11 18 21 54	08 02 37 01	11 21 56 38	10 20 36 48	01 17 58 30	11 19 27 19	06 16 02 50	06 24 43 41	11 14 39 31	10 10 12 20	08 17 30 35	2
3	11 19 21 04	08 16 48 15	11 22 42 29	10 21 40 39	01 18 08 34	11 20 41 48	06 15 59 04	06 24 40 31	11 14 42 56	10 10 14 12	08 17 30 54	3
4	11 20 20 12	09 00 52 16	11 23 28 17	10 22 47 00	01 18 18 45	11 21 56 15	06 15 55 14	06 24 37 20	11 14 46 21	10 10 16 04	08 17 31 12	4
5	11 21 19 18	09 14 47 40	11 24 14 03	10 23 55 43	01 18 29 01	11 23 10 42	06 15 51 20	06 24 34 09	11 14 49 46	10 10 17 54	08 17 31 27	5
6	11 22 18 23	09 28 33 12	11 24 59 46	10 25 06 43	01 18 39 24	11 24 25 08	06 15 47 24	06 24 30 58	11 14 53 10	10 10 19 43	08 17 31 41	6
7	11 23 17 25	10 12 07 32	11 25 45 27	10 26 19 54	01 18 49 52	11 25 39 33	06 15 43 24	06 24 27 48	11 14 56 35	10 10 21 31	08 17 31 53	7
8	11 24 16 26	10 25 29 26	11 26 31 05	10 27 35 12	01 19 00 27	11 26 53 56	06 15 39 21	06 24 24 37	11 14 59 58	10 10 23 18	08 17 32 02	8
9	11 25 15 25	11 08 37 44	11 27 16 40	10 28 52 31	01 19 11 07	11 28 08 19	06 15 35 15	06 24 21 26	11 15 03 22	10 10 25 03	08 17 32 10	9
10	11 26 14 23	11 21 31 36	11 28 02 13	11 00 11 49	01 19 21 53	11 29 22 41	06 15 31 07	06 24 18 16	11 15 06 45	10 10 26 47	08 17 32 16	10

मार्च सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।01' ।53"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
23	11 08 43 47	11 13 04 43	04 12 47 04	11 06 28 21	00 17 19 56	00 24 38 42	06 03 53 17	07 14 35 57	11 10 22 14	10 07 45 06	08 15 26 22	23
24	11 09 43 19	11 25 08 36	04 12 30 34	11 05 34 37	00 17 32 40	00 25 39 27	06 03 49 19	07 14 32 47	11 10 25 39	10 07 47 07	08 15 26 56	24
25	11 10 42 48	00 07 04 27	04 12 14 46	11 04 42 19	00 17 45 27	00 26 39 48	06 03 45 18	07 14 29 36	11 10 29 05	10 07 49 07	08 15 27 28	25
26	11 11 42 15	00 18 54 21	04 11 59 40	11 03 52 26	00 17 58 17	00 27 39 44	06 03 41 14	07 14 26 25	11 10 32 31	10 07 51 05	08 15 27 58	26
27	11 12 41 40	01 00 41 10	04 11 45 19	11 03 05 47	00 18 11 12	00 28 39 15	06 03 37 07	07 14 23 14	11 10 35 56	10 07 53 03	08 15 28 27	27
28	11 13 41 03	01 12 28 37	04 11 31 42	11 02 23 08	00 18 24 10	00 29 38 19	06 03 32 57	07 14 20 04	11 10 39 22	10 07 54 59	08 15 28 53	28
29	11 14 40 24	01 24 21 06	04 11 18 50	11 01 45 02	00 18 37 11	01 00 36 56	06 03 28 45	07 14 16 53	11 10 42 47	10 07 56 55	08 15 29 18	29
30	11 15 39 42	02 06 23 33	04 11 06 45	11 01 11 57	00 18 50 16	01 01 35 04	06 03 24 30	07 14 13 42	11 10 46 12	10 07 58 49	08 15 29 40	30
31	11 16 38 58	02 18 41 16	04 10 55 26	11 00 44 13	00 19 03 24	01 02 32 43	06 03 20 12	07 14 10 31	11 10 49 37	10 08 00 43	08 15 30 01	31

अप्रैल सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।01' ।56"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
1	11 17 38 11	03 01 19 25	04 10 44 54	11 00 22 03	00 19 16 35	01 03 29 52	06 03 15 53	07 14 07 21	11 10 53 02	10 08 02 35	08 15 30 20	1
2	11 18 37 23	03 14 22 32	04 10 35 09	11 00 05 32	00 19 29 49	01 04 26 29	06 03 11 31	07 14 04 10	11 10 56 26	10 08 04 26	08 15 30 37	2
3	11 19 36 31	03 27 53 52	04 10 26 11	10 29 54 44	00 19 43 07	01 05 22 34	06 03 07 07	07 14 00 59	11 10 59 50	10 08 06 15	08 15 30 52	3
4	11 20 35 38	04 11 54 24	04 10 18 01	मा10 29 49 35	00 19 56 27	01 06 18 05	06 03 02 42	07 13 57 49	11 11 03 14	10 08 08 04	08 15 31 05	4
5	11 21 34 43	04 26 22 18	04 10 10 37	10 29 49 58	00 20 09 50	01 07 13 01	06 02 58 14	07 13 54 38	11 11 06 37	10 08 09 51	08 15 31 17	5
6	11 22 33 45	05 11 12 29	04 10 04 01	10 29 55 47	00 20 23 15	01 08 07 21	06 02 53 45	07 13 51 27	11 11 10 00	10 08 11 36	08 15 31 26	6
7	11 23 32 45	05 26 17 01	04 09 58 11	11 00 06 50	00 20 36 43	01 09 01 04	06 02 49 15	07 13 48 16	11 11 13 22	10 08 13 21	08 15 31 33	7
8	11 24 31 43	06 11 26 14	04 09 53 08	11 00 22 57	00 20 50 14	01 09 54 08	06 02 44 43	07 13 45 06	11 11 16 43	10 08 15 04	08 15 31 39	8
9	11 25 30 40	06 26 30 20	04 09 48 51	11 00 43 53	00 21 03 48	01 10 46 32	06 02 40 11	07 13 41 55	11 11 20 04	10 08 16 46	08 15 31 43	9
10	11 26 29 34	07 11 20 55	04 09 45 21	11 01 09 28	00 21 17 23	01 11 38 15	06 02 35 37	07 13 38 44	11 11 23 25	10 08 18 26	08 15 31 45	10
11	11 27 28 27	07 25 52 05	04 09 42 36	11 01 39 28	00 21 31 01	01 12 29 16	06 02 31 02	07 13 35 33	11 11 26 45	10 08 20 06	08 15 31 45	11
12	11 28 27 18	08 10 00 44	04 09 40 37	11 02 13 40	00 21 44 42	01 13 19 32	06 02 26 27	07 13 32 23	11 11 30 04	10 08 21 43	व.08 15 31 43	12
13	11 29 26 07	08 23 46 12	04 09 39 22	11 02 51 52	00 21 58 25	01 14 09 03	06 02 21 51	07 13 29 12	11 11 33 22	10 08 23 20	08 15 31 40	13
14	00 00 24 54	09 07 09 37	मा04 09 38 53	11 03 33 53	00 22 12 10	01 14 57 47	06 02 17 14	07 13 26 01	11 11 36 40	10 08 24 55	08 15 31 34	14
15	00 01 23 40	09 20 13 07	04 09 39 07	11 04 19 31	00 22 25 57	01 15 45 42	06 02 12 38	07 13 22 50	11 11 39 56	10 08 26 28	08 15 31 27	15
16	00 02 22 24	10 02 59 17	04 09 40 06	11 05 08 35	00 22 39 46	01 16 32 46	06 02 08 01	07 13 19 39	11 11 43 12	10 08 28 00	08 15 31 18	16
17	00 03 21 07	10 15 30 48	04 09 41 48	11 06 00 56	00 22 53 37	01 17 18 59	06 02 03 24	07 13 16 29	11 11 46 27	10 08 29 31	08 15 31 07	17
18	00 04 19 48	10 27 50 09	04 09 44 13	11 06 56 24	00 23 07 29	01 18 04 16	06 01 58 47	07 13 13 18	11 11 49 42	10 08 30 59	08 15 30 54	18
19	00 05 18 26	11 09 59 30	04 09 47 21	11 07 54 51	00 23 21 24	01 18 48 38	06 01 54 11	07 13 10 07	11 11 52 55	10 08 32 27	08 15 30 39	19
20	00 06 17 04	11 22 00 46	04 09 51 10	11 08 56 08	00 23 35 20	01 19 32 00	06 01 49 35	07 13 06 57	11 11 56 07	10 08 33 52	08 15 30 23	20
21	00 07 15 39	00 03 55 38	04 09 55 40	11 10 00 09	00 23 49 18	01 20 14 22	06 01 44 59	07 13 03 46	11 11 59 18	10 08 35 17	08 15 30 05	21
22	00 08 14 12	00 15 45 52	04 10 00 52	11 11 06 47	00 24 03 17	01 20 55 40	06 01 40 24	07 13 00 35	11 12 02 28	10 08 36 39	08 15 29 44	22
23	00 09 12 44	00 27 33 26	04 10 06 43	11 12 15 56	00 24 17 18	01 21 35 52	06 01 35 51	07 12 57 25	11 12 05 36	10 08 38 00	08 15 29 23	23
24	00 10 11 13	01 09 20 38	04 10 13 14	11 13 27 30	00 24 31 20	01 22 14 56	06 01 31 18	07 12 54 14	11 12 08 44	10 08 39 19	08 15 28 59	24
25	00 11 09 40	01 21 10 16	04 10 20 24	11 14 41 24	00 24 45 23	01 22 52 48	06 01 26 47	07 12 51 03	11 12 11 50	10 08 40 37	08 15 28 33	25
26	00 12 08 06	02 03 05 37	04 10 28 12	11 15 57 35	00 24 59 28	01 23 29 26	06 01 22 16	07 12 47 52	11 12 14 55	10 08 41 53	08 15 28 06	26
27	00 13 06 29	02 15 10 28	04 10 36 38	11 17 15 58	00 25 13 33	01 24 04 47	06 01 17 48	07 12 44 41	11 12 17 59	10 08 43 07	08 15 27 37	27
28	00 14 04 50	02 27 29 02	04 10 45 41	11 18 36 31	00 25 27 40	01 24 38 48	06 01 13 21	07 12 41 31	11 12 21 02	10 08 44 19	08 15 27 07	28
29	00 15 03 09	03 10 05 41	04 10 55 19	11 19 59 09	00 25 41 47	01 25 11 25	06 01 08 56	07 12 38 20	11 12 24 03	10 08 45 30	08 15 26 35	29
30	00 16 01 26	03 23 04 38	04 11 05 33	11 21 23 52	00 25 55 56	01 25 42 35	[illegible]	[illegible]	11 12 27 03	10 08 46 39	08 15 26 01	30

मई सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।01' ।59"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
1	00 16 59 41	04 06 29 16	04 11 16 21	11 22 50 36	00 26 10 05	01 26 12 15	06 01 00 12	07 12 31 58	11 12 30 01	10 08 47 46	08 15 25 25	1
2	00 17 57 54	04 20 21 36	04 11 27 44	11 24 19 20	00 26 24 15	01 26 40 21	06 00 55 53	07 12 28 48	11 12 32 58	10 08 48 52	08 15 24 48	2
3	00 18 56 05	05 04 41 21	04 11 39 39	11 25 50 03	00 26 38 25	01 27 06 50	06 00 51 36	07 12 25 37	11 12 35 53	10 08 49 55	08 15 24 09	3
4	00 19 54 14	05 19 25 33	04 11 52 07	11 27 22 43	00 26 52 36	01 27 31 39	06 00 47 22	07 12 22 26	11 12 38 47	10 08 50 57	08 15 23 28	4
5	00 20 52 21	06 04 28 13	04 12 05 06	11 28 57 21	00 27 06 47	01 27 54 43	06 00 43 10	07 12 19 16	11 12 41 39	10 08 51 57	08 15 22 46	5
6	00 21 50 26	06 19 40 55	04 12 18 37	00 00 33 55	00 27 20 59	01 28 16 00	06 00 39 01	07 12 16 05	11 12 44 29	10 08 52 55	08 15 22 02	6
7	00 22 48 30	07 04 53 53	04 12 32 37	00 02 12 26	00 27 35 12	01 28 35 25	06 00 34 55	07 12 12 54	11 12 47 18	10 08 53 52	08 15 21 17	7
8	00 23 46 32	07 19 57 28	04 12 47 08	00 03 52 53	00 27 49 24	01 28 52 56	06 00 30 51	07 12 09 43	11 12 50 05	10 08 54 46	08 15 20 30	8
9	00 24 44 33	08 04 43 36	04 13 02 08	00 05 35 16	00 28 03 37	01 29 08 28	06 00 26 51	07 12 06 32	11 12 52 51	10 08 55 39	08 15 19 42	9
10	00 25 42 32	08 19 06 42	04 13 17 36	00 07 19 36	00 28 17 51	01 29 21 58	06 00 22 54	07 12 03 21	11 12 55 35	10 08 56 30	08 15 18 52	10
11	00 26 40 30	09 03 03 58	04 13 33 32	00 09 05 53	00 28 32 04	01 29 33 24	06 00 19 00	07 12 00 11	11 12 58 17	10 08 57 19	08 15 18 01	11
12	00 27 38 27	09 16 35 03	04 13 49 56	00 10 54 07	00 28 46 18	01 29 42 41	06 00 15 10	07 11 57 00	11 13 00 57	10 08 58 06	08 15 17 08	12
13	00 28 36 22	09 29 41 32	04 14 06 47	00 12 44 17	00 29 00 31	01 29 49 47	06 00 11 23	07 11 53 49	11 13 03 36	10 08 58 51	08 15 16 14	13
14	00 29 34 16	10 12 26 12	04 14 24 05	00 14 36 25	00 29 14 45	01 29 54 38	06 00 07 39	07 11 50 38	11 13 06 12	10 08 59 35	08 15 15 18	14
15	01 00 32 09	10 24 52 37	04 14 41 48	00 16 30 29	00 29 28 58	01 29 57 13	06 00 03 59	07 11 47 28	11 13 08 47	10 09 00 16	08 15 14 21	15
16	01 01 30 00	11 07 04 31	04 14 59 58	00 18 26 28	00 29 43 11	व01 29 57 28	06 00 00 24	07 11 44 17	11 13 11 20	10 09 00 56	08 15 13 22	16
17	01 02 27 51	11 19 05 36	04 15 18 32	00 20 24 21	00 29 57 24	01 29 55 23	05 29 56 51	07 11 41 06	11 13 13 51	10 09 01 34	08 15 12 23	17
18	01 03 25 40	00 00 59 14	04 15 37 31	00 22 24 05	01 00 11 37	01 29 50 54	05 29 53 23	07 11 37 56	11 13 16 20	10 09 02 09	08 15 11 21	18
19	01 04 23 28	00 12 48 22	04 15 56 54	00 24 25 38	01 00 25 49	01 29 44 00	05 29 50 00	07 11 34 45	11 13 18 47	10 09 02 43	08 15 10 19	19
20	01 05 21 15	00 24 35 42	04 16 16 41	00 26 28 55	01 00 40 01	01 29 34 42	05 29 46 40	07 11 31 34	11 13 21 11	10 09 03 15	08 15 09 15	20
21	01 06 19 00	01 06 23 39	04 16 36 51	00 28 33 50	01 00 54 12	01 29 22 59	05 29 43 25	07 11 28 23	11 13 23 34	10 09 03 45	08 15 08 10	21
22	01 07 16 44	01 18 14 30	04 16 57 25	01 00 40 18	01 01 08 23	01 29 08 51	05 29 40 14	07 11 25 12	11 13 25 54	10 09 04 13	08 15 07 03	22
23	01 08 14 26	02 00 10 31	04 17 18 20	01 02 48 09	01 01 22 32	01 28 52 20	05 29 37 07	07 11 22 01	11 13 28 13	10 09 04 38	08 15 05 56	23
24	01 09 12 08	02 12 14 00	04 17 39 38	01 04 57 14	01 01 36 41	01 28 33 29	05 29 34 06	07 11 18 51	11 13 30 29	10 09 05 02	08 15 04 47	24
25	01 10 09 47	02 24 27 25	04 18 01 17	01 07 07 22	01 01 50 50	01 28 12 20	05 29 31 09	07 11 15 40	11 13 32 43	10 09 05 25	08 15 03 37	25
26	01 11 07 26	03 06 53 27	04 18 23 17	01 09 18 20	01 02 04 57	01 27 48 59	05 29 28 17	07 11 12 29	11 13 34 55	10 09 05 45	08 15 02 26	26
27	01 12 05 03	03 19 34 59	04 18 45 37	01 11 29 53	01 02 19 03	01 27 23 29	05 29 25 29	07 11 09 18	11 13 37 04	10 09 06 03	08 15 01 14	27
28	01 13 02 38	04 02 34 55	04 19 08 18	01 13 41 46	01 02 33 08	01 26 55 59	05 29 22 47	07 11 06 07	11 13 39 12	10 09 06 19	08 15 00 01	28
29	01 14 00 12	04 15 55 48	04 19 31 19	01 15 53 43	01 02 47 12	01 26 26 36	05 29 20 10	07 11 02 57	11 13 41 16	10 09 06 33	08 14 58 47	29
30	01 14 57 44	04 29 39 28	04 19 54 38	01 18 05 28	01 03 01 15	01 25 55 28	05 29 17 37	07 10 59 46	11 13 43 19	10 09 06 45	08 14 57 31	30
31	01 15 55 15	05 13 46 26	04 20 18 17	01 20 16 45	01 03 15 16	01 25 22 45	05 29 15 10	07 10 56 35	11 13 45 19	10 09 06 55	08 14 56 15	31

जून सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।04"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
1	01 16 52 45	05 28 15 27	04 20 42 13	01 22 27 16	01 03 29 16	01 24 48 40	05 29 12 48	07 10 53 24	11 13 47 17	10 09 07 03	08 14 54 58	1
2	01 17 50 14	06 13 03 02	04 21 06 28	01 24 36 47	01 03 43 15	01 24 13 23	05 29 10 31	07 10 50 14	11 13 49 12	10 09 07 10	08 14 53 40	2
3	01 18 47 41	06 28 03 24	04 21 31 00	01 26 45 02	01 03 57 12	01 23 37 08	05 29 08 20	07 10 47 03	11 13 51 05	10 09 07 14	08 14 52 21	3
4	01 19 45 07	07 13 08 49	04 21 55 50	01 28 51 50	01 04 11 07	01 23 00 10	05 29 06 14	07 10 43 52	11 13 52 55	10 09 07 16	08 14 51 01	4
5	01 20 42 33	07 28 10 32	04 22 20 56	02 00 56 58	01 04 25 01	01 22 22 41	05 29 04 13	07 10 40 41	11 13 54 43	वा10 09 07 17	08 14 49 40	5
6	01 21 39 57	08 13 00 02	04 22 46 19	02 03 00 16	01 04 38 54	01 21 44 58	05 29 02 17	07 10 37 30	11 13 56 29	10 09 07 15	08 14 48 18	6
7	01 22 37 21	08 27 30 08	04 23 11 58	02 05 01 35	01 04 52 45	01 21 07 14	05 29 00 28	07 10 34 19	11 13 58 12	10 09 07 12	08 14 46 56	7
8	01 23 34 44	09 11 35 58	04 23 37 53	02 07 00 48	01 05 06 34	01 20 29 45	05 28 58 43	07 10 31 08	11 13 59 53	10 09 07 06	08 14 45 33	8
9	01 24 32 06	09 25 15 09	04 24 04 04	02 08 57 49	01 05 20 21	01 19 52 46	05 28 57 05	07 10 27 58	11 14 01 31	10 09 06 59	08 14 44 09	9
10	01 25 29 28	10 08 27 48	04 24 30 30	02 10 52 32	01 05 34 06	01 19 16 31	05 28 55 31	07 10 24 47	11 14 03 06	10 09 06 50	08 14 42 45	10
11	01 26 26 49	10 21 15 58	04 24 57 11	02 12 44 56	01 05 47 49	01 18 41 13	05 28 54 04	07 10 21 36	11 14 04 39	10 09 06 39	08 14 41 20	11
12	01 27 24 10	11 03 43 06	04 25 24 08	02 14 34 56	01 06 01 31	01 18 07 05	05 28 52 42	07 10 18 25	11 14 06 09	10 09 06 26	08 14 39 54	12
13	01 28 21 30	11 15 53 27	04 25 51 19	02 16 22 31	01 06 15 10	01 17 34 19	05 28 51 26	07 10 15 15	11 14 07 36	10 09 06 11	08 14 38 27	13
14	01 29 18 50	11 27 51 40	04 26 18 45	02 18 07 38	01 06 28 47	01 17 03 06	05 28 50 16	07 10 12 04	11 14 09 01	10 09 05 54	08 14 37 01	14
15	02 00 16 09	00 09 42 16	04 26 46 25	02 19 50 17	01 06 42 21	01 16 33 36	05 28 49 11	07 10 08 53	11 14 10 23	10 09 05 35	08 14 35 33	15
16	02 01 13 28	00 21 29 29	04 27 14 20	02 21 30 27	01 06 55 54	01 16 05 57	05 28 48 12	07 10 05 42	11 14 11 43	10 09 05 14	08 14 34 05	16
17	02 02 10 47	01 03 17 05	04 27 42 28	02 23 08 06	01 07 09 24	01 15 40 17	05 28 47 19	07 10 02 32	11 14 13 00	10 09 04 52	08 14 32 36	17
18	02 03 08 05	01 15 08 22	04 28 10 50	02 24 43 13	01 07 22 51	01 15 16 43	05 28 46 32	07 09 59 21	11 14 14 14	10 09 04 27	08 14 31 08	18
19	02 04 05 23	01 27 06 04	04 28 39 26	02 26 15 48	01 07 36 16	01 14 55 20	05 28 45 51	07 09 56 10	11 14 15 25	10 09 04 01	08 14 29 38	19
20	02 05 02 40	02 09 12 25	04 29 08 15	02 27 45 50	01 07 49 38	01 14 36 12	05 28 45 16	07 09 52 59	11 14 16 33	10 09 03 33	08 14 28 09	20
21	02 05 59 57	02 21 29 06	04 29 37 17	02 29 13 17	01 08 02 58	01 14 19 22	05 28 44 47	07 09 49 48	11 14 17 39	10 09 03 03	08 14 26 39	21
22	02 06 57 13	03 03 57 26	05 00 06 32	03 00 38 07	01 08 16 15	01 14 04 52	05 28 44 24	07 09 46 37	11 14 18 42	10 09 02 31	08 14 25 08	22
23	02 07 54 29	03 16 38 30	05 00 36 00	03 02 00 18	01 08 29 28	01 13 52 45	05 28 44 07	07 09 43 27	11 14 19 42	10 09 01 57	08 14 23 38	23
24	02 08 51 44	03 29 33 15	05 01 05 40	03 03 19 49	01 08 42 39	01 13 43 00	05 28 43 56	07 09 40 16	11 14 20 39	10 09 01 22	08 14 22 07	24
25	02 09 48 59	04 12 42 41	05 01 35 32	03 04 36 37	01 08 55 47	01 13 35 38	मा05 28 43 51	07 09 37 05	11 14 21 34	10 09 00 45	08 14 20 36	25
26	02 10 46 13	04 26 07 40	05 02 05 36	03 05 50 38	01 09 08 51	01 13 30 39	05 28 43 52	07 09 33 54	11 14 22 25	10 09 00 06	08 14 19 05	26
27	02 11 43 26	05 09 48 55	05 02 35 52	03 07 01 49	01 09 21 52	01 13 28 00	05 28 43 59	07 09 30 44	11 14 23 14	10 08 59 25	08 14 17 34	27
28	02 12 40 39	05 23 46 39	05 03 06 19	03 08 10 06	01 09 34 50	मा01 13 27 41	05 28 44 11	07 09 27 33	11 14 23 59	10 08 58 42	08 14 16 02	28
29	02 13 37 51	06 08 00 24	05 03 36 58	03 09 15 25	01 09 47 45	01 13 29 40	05 28 44 30	07 09 24 22	11 14 24 42	10 08 57 58	08 14 14 31	29
30	02 14 35 03	06 22 28 29	05 04 07 47	03 10 17 [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	30

जुलाई सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।09"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
1	02 15 32 14	07 07 07 43	05 04 38 48	03 11 16 48	01 10 13 23	01 13 40 21	05 28 45 25	07 09 18 00	11 14 26 00	10 08 56 25	08 14 11 28	1
2	02 16 29 25	07 21 53 14	05 05 09 59	03 12 12 41	01 10 26 08	01 13 48 57	05 28 46 02	07 09 14 49	11 14 26 34	10 08 55 35	08 14 09 57	2
3	02 17 26 36	08 06 38 42	05 05 41 20	03 13 05 14	01 10 38 48	01 13 59 41	05 28 46 45	07 09 11 39	11 14 27 05	10 08 54 45	08 14 08 26	3
4	02 18 23 47	08 21 16 58	05 06 12 52	03 13 54 19	01 10 51 25	01 14 12 28	05 28 47 33	07 09 08 28	11 14 27 34	10 08 53 52	08 14 06 55	4
5	02 19 20 58	09 05 41 07	05 06 44 34	03 14 39 51	01 11 03 58	01 14 27 15	05 28 48 28	07 09 05 17	11 14 28 00	10 08 52 58	08 14 05 24	5
6	02 20 18 09	09 19 45 22	05 07 16 26	03 15 21 40	01 11 16 27	01 14 44 00	05 28 49 28	07 09 02 06	11 14 28 23	10 08 52 03	08 14 03 53	6
7	02 21 15 20	10 03 25 56	05 07 48 28	03 15 59 41	01 11 28 52	01 15 02 37	05 28 50 34	07 08 58 55	11 14 28 42	10 08 51 05	08 14 02 22	7
8	02 22 12 31	10 16 41 21	05 08 20 40	03 16 33 44	01 11 41 14	01 15 23 04	05 28 51 46	07 08 55 44	11 14 28 59	10 08 50 07	08 14 00 52	8
9	02 23 09 43	10 29 32 21	05 08 53 02	03 17 03 42	01 11 53 31	01 15 45 17	05 28 53 04	07 08 52 34	11 14 29 14	10 08 49 07	08 13 59 22	9
10	02 24 06 55	11 12 01 33	05 09 25 33	03 17 29 27	01 12 05 44	01 16 09 12	05 28 54 27	07 08 49 23	11 14 29 25	10 08 48 05	08 13 57 52	10
11	02 25 04 07	11 24 12 55	05 09 58 14	03 17 50 50	01 12 17 53	01 16 34 46	05 28 55 57	07 08 46 12	11 14 29 33	10 08 47 02	08 13 56 23	11
12	02 26 01 20	00 06 11 14	05 10 31 05	03 18 07 45	01 12 29 57	01 17 01 55	05 28 57 32	07 08 43 02	11 14 29 38	10 08 45 57	08 13 54 54	12
13	02 26 58 33	00 18 01 39	05 11 04 05	03 18 20 05	01 12 41 57	01 17 30 36	05 28 59 13	07 08 39 51	बा11 14 29 41	10 08 44 51	08 13 53 25	13
14	02 27 55 47	00 29 49 16	05 11 37 14	03 18 27 43	01 12 53 53	01 18 00 44	05 29 01 00	07 08 36 40	11 14 29 40	10 08 43 43	08 13 51 57	14
15	02 28 53 02	01 11 38 55	05 12 10 33	व03 18 30 35	01 13 05 44	01 18 32 18	05 29 02 52	07 08 33 29	11 14 29 37	10 08 42 34	08 13 50 29	15
16	02 29 50 17	01 23 34 51	05 12 44 00	03 18 28 39	01 13 17 30	01 19 05 14	05 29 04 51	07 08 30 18	11 14 29 30	10 08 41 24	08 13 49 02	16
17	03 00 47 32	02 05 40 40	05 13 17 37	03 18 21 52	01 13 29 11	01 19 39 27	05 29 06 55	07 08 27 07	11 14 29 21	10 08 40 13	08 13 47 35	17
18	03 01 44 48	02 17 59 02	05 13 51 23	03 18 10 18	01 13 40 48	01 20 14 57	05 29 09 04	07 08 23 57	11 14 29 09	10 08 39 00	08 13 46 09	18
19	03 02 42 05	03 00 31 35	05 14 25 18	03 17 54 00	01 13 52 19	01 20 51 38	05 29 11 19	07 08 20 46	11 14 28 54	10 08 37 46	08 13 44 44	19
20	03 03 39 22	03 13 18 59	05 14 59 22	03 17 33 08	01 14 03 46	01 21 29 30	05 29 13 40	07 08 17 35	11 14 28 36	10 08 36 30	08 13 43 19	20
21	03 04 36 39	03 26 20 56	05 15 33 34	03 17 07 53	01 14 15 07	01 22 08 28	05 29 16 07	07 08 14 24	11 14 28 16	10 08 35 14	08 13 41 55	21
22	03 05 33 57	04 09 36 28	05 16 07 54	03 16 38 33	01 14 26 23	01 22 48 30	05 29 18 39	07 08 11 14	11 14 27 52	10 08 33 56	08 13 40 31	22
23	03 06 31 15	04 23 04 19	05 16 42 24	03 16 05 28	01 14 37 34	01 23 29 35	05 29 21 16	07 08 08 03	11 14 27 25	10 08 32 37	08 13 39 09	23
24	03 07 28 33	05 06 43 06	05 17 17 01	03 15 29 06	01 14 48 38	01 24 11 39	05 29 23 59	07 08 04 52	11 14 26 56	10 08 31 17	08 13 37 47	24
25	03 08 25 52	05 20 31 40	05 17 51 47	03 14 49 58	01 14 59 38	01 24 54 40	05 29 26 47	07 08 01 41	11 14 26 24	10 08 29 55	08 13 36 25	25
26	03 09 23 11	06 04 29 06	05 18 26 40	03 14 08 38	01 15 10 32	01 25 38 36	05 29 29 41	07 07 58 31	11 14 25 49	10 08 28 33	08 13 35 05	26
27	03 10 20 31	06 18 34 36	05 19 01 42	03 13 25 48	01 15 21 20	01 26 23 26	05 29 32 40	07 07 55 20	11 14 25 11	10 08 27 10	08 13 33 46	27
28	03 11 17 51	07 02 47 17	05 19 36 51	03 12 42 09	01 15 32 02	01 27 09 08	05 29 35 44	07 07 52 09	11 14 24 30	10 08 25 45	08 13 32 27	28
29	03 12 15 11	07 17 05 39	05 20 12 08	03 11 58 29	01 15 42 38	01 27 55 39	05 29 38 54	07 07 48 58	11 14 23 47	10 08 24 20	08 13 31 10	29
30	03 13 12 32	08 01 27 15	05 20 47 33	03 11 15 33	01 15 53 08	01 28 42 58	05 29 42 08	07 07 45 47	11 14 23 01	10 08 22 54	08 13 29 53	30
31	03 14 09 54	08 15 48 29	05 21 23 05	03 10 34 12	01 16 03 32	01 29 31 04	05 29 45 28	07 07 42 36	11 14 22 12	10 08 21 27	08 13 28 37	31

अगस्त सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।14"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अगस्त
1	03 15 07 16	09 00 04 41	05 21 58 44	03 09 55 11	01 16 13 51	02 00 19 55	05 29 48 53	07 07 39 26	11 14 21 21	10 08 19 59	08 13 27 23	1
2	03 16 04 39	09 14 10 40	05 22 34 31	03 09 19 15	01 16 24 02	02 01 09 29	05 29 52 23	07 07 36 15	11 14 20 27	10 08 18 30	08 13 26 09	2
3	03 17 02 03	09 28 01 28	05 23 10 25	03 08 47 08	01 16 34 08	02 01 59 45	05 29 55 58	07 07 33 04	11 14 19 30	10 08 17 00	08 13 24 57	3
4	03 17 59 28	10 11 33 11	05 23 46 26	03 08 19 28	01 16 44 07	02 02 50 42	05 29 59 38	07 07 29 53	11 14 18 31	10 08 15 30	08 13 23 45	4
5	03 18 56 53	10 24 43 32	05 24 22 35	03 07 56 51	01 16 53 59	02 03 42 18	06 00 03 22	07 07 26 43	11 14 17 29	10 08 13 59	08 13 22 35	5
6	03 19 54 20	11 07 32 10	05 24 58 50	03 07 39 45	01 17 03 45	02 04 34 32	06 00 07 12	07 07 23 32	11 14 16 24	10 08 12 27	08 13 21 25	6
7	03 20 51 48	11 20 00 35	05 25 35 13	03 07 28 36	01 17 13 24	02 05 27 23	06 00 11 06	07 07 20 21	11 14 15 17	10 08 10 54	08 13 20 17	7
8	03 21 49 18	00 02 11 53	05 26 11 43	मा03 07 23 47	01 17 22 57	02 06 20 48	06 00 15 05	07 07 17 11	11 14 14 07	10 08 09 21	08 13 19 11	8
9	03 22 46 48	00 14 10 22	05 26 48 20	03 07 25 31	01 17 32 22	02 07 14 49	06 00 19 09	07 07 14 00	11 14 12 55	10 08 07 47	08 13 18 05	9
10	03 23 44 20	00 26 01 02	05 27 25 04	03 07 34 03	01 17 41 40	02 08 09 22	06 00 23 18	07 07 10 49	11 14 11 40	10 08 06 13	08 13 17 00	10
11	03 24 41 54	01 07 49 18	05 28 01 55	03 07 49 30	01 17 50 52	02 09 04 27	06 00 27 31	07 07 07 38	11 14 10 23	10 08 04 38	08 13 15 57	11
12	03 25 39 28	01 19 40 36	05 28 38 53	03 08 11 56	01 17 59 55	02 10 00 03	06 00 31 49	07 07 04 27	11 14 09 03	10 08 03 02	08 13 14 55	12
13	03 26 37 05	02 01 40 04	05 29 15 59	03 08 41 24	01 18 08 52	02 10 56 08	06 00 36 11	07 07 01 17	11 14 07 41	10 08 01 27	08 13 13 55	13
14	03 27 34 42	02 13 52 13	05 29 53 11	03 09 17 51	01 18 17 41	02 11 52 43	06 00 40 38	07 06 58 06	11 14 06 17	10 07 59 50	08 13 12 55	14
15	03 28 32 22	02 26 20 34	06 00 30 30	03 10 01 13	01 18 26 22	02 12 49 45	06 00 45 10	07 06 54 55	11 14 04 50	10 07 58 13	08 13 11 58	15
16	03 29 30 02	03 09 07 24	06 01 07 56	03 10 51 23	01 18 34 56	02 13 47 15	06 00 49 45	07 06 51 44	11 14 03 21	10 07 56 36	08 13 11 01	16
17	04 00 27 44	03 22 13 24	06 01 45 28	03 11 48 12	01 18 43 22	02 14 45 10	06 00 54 26	07 06 48 34	11 14 01 50	10 07 54 59	08 13 10 06	17
18	04 01 25 27	04 05 37 37	06 02 23 08	03 12 51 28	01 18 51 39	02 15 43 30	06 00 59 10	07 06 45 23	11 14 00 16	10 07 53 21	08 13 09 12	18
19	04 02 23 12	04 19 17 42	06 03 00 54	03 14 00 56	01 18 59 49	02 16 42 15	06 01 03 59	07 06 42 12	11 13 58 40	10 07 51 43	08 13 08 20	19
20	04 03 20 57	05 03 10 12	06 03 38 47	03 15 16 21	01 19 07 50	02 17 41 23	06 01 08 52	07 06 39 02	11 13 57 02	10 07 50 05	08 13 07 29	20
21	04 04 18 44	05 17 11 17	06 04 16 46	03 16 37 24	01 19 15 43	02 18 40 54	06 01 13 48	07 06 35 51	11 13 55 22	10 07 48 26	08 13 06 40	21
22	04 05 16 32	06 01 17 21	06 04 54 51	03 18 03 44	01 19 23 28	02 19 40 47	06 01 18 49	07 06 32 40	11 13 53 39	10 07 46 48	08 13 05 52	22
23	04 06 14 21	06 15 25 28	06 05 33 03	03 19 34 58	01 19 31 04	02 20 41 02	06 01 23 54	07 06 29 29	11 13 51 55	10 07 45 09	08 13 05 06	23
24	04 07 12 12	06 29 33 40	06 06 11 22	03 21 10 42	01 19 38 32	02 21 41 37	06 01 29 03	07 06 26 19	11 13 50 09	10 07 43 30	08 13 04 22	24
25	04 08 10 03	07 13 40 40	06 06 49 46	03 22 50 30	01 19 45 50	02 22 42 34	06 01 34 16	07 06 23 08	11 13 48 20	10 07 41 51	08 13 03 39	25
26	04 09 07 56	07 27 45 37	06 07 28 17	03 24 33 55	01 19 53 00	02 23 43 50	06 01 39 33	07 06 19 57	11 13 46 30	10 07 40 13	08 13 02 57	26
27	04 10 05 50	08 11 47 32	06 08 06 54	03 26 20 29	01 20 00 02	02 24 45 26	06 01 44 53	07 06 16 46	11 13 44 38	10 07 38 34	08 13 02 17	27
28	04 11 03 46	08 25 44 55	06 08 45 37	03 28 09 46	01 20 06 54	02 25 47 21	06 01 50 17	07 06 13 35	11 13 42 44	10 07 36 56	08 13 01 39	28
29	04 12 01 42	09 09 35 38	06 09 24 26	04 00 01 19	01 20 13 37	02 26 49 34	06 01 55 45	07 06 10 25	11 13 40 49	10 07 35 17	08 13 01 03	29
30	04 12 59 40	09 23 16 57	06 10 03 20	04 01 54 41	01 20 20 11	02 27 52 06	06 02 01 16	07 06 07 14	11 13 38 51	10 07 33 39	08 13 00 28	30
31	04 13 57 40	10 06 45 55	06 10 42 21	04 03 49 [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सितंबर सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।17"

ता. सितं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (वक्री) रा. अं. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अं. क. वि.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क. वि.	प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि.	ता. सितं.
1	04 14 55 41	10 19 59 52	06 11 21 27	04 05 45 19	01 20 32 51	02 29 58 03	06 02 12 30	07 06 00 52	11 13 34 52	10 07 30 23	08 12 59 23	1
2	04 15 53 44	11 02 56 56	06 12 00 39	04 07 41 51	01 20 38 57	03 01 01 27	06 02 18 11	07 05 57 42	11 13 32 49	10 07 28 46	08 12 58 53	2
3	04 16 51 48	11 15 36 27	06 12 39 57	04 09 38 48	01 20 44 53	03 02 05 08	06 02 23 56	07 05 54 31	11 13 30 45	10 07 27 09	08 12 58 25	3
4	04 17 49 54	11 27 59 10	06 13 19 21	04 11 35 52	01 20 50 39	03 03 09 06	06 02 29 45	07 05 51 21	11 13 28 40	10 07 25 32	08 12 57 58	4
5	04 18 48 02	00 10 07 13	06 13 58 51	04 13 32 49	01 20 56 16	03 04 13 19	06 02 35 36	07 05 48 10	11 13 26 33	10 07 23 55	08 12 57 33	5
6	04 19 46 12	00 22 03 58	06 14 38 26	04 15 29 27	01 21 01 43	03 05 17 48	06 02 41 31	07 05 44 59	11 13 24 25	10 07 22 19	08 12 57 10	6
7	04 20 44 24	01 03 53 47	06 15 18 08	04 17 25 37	01 21 07 00	03 06 22 32	06 02 47 29	07 05 41 48	11 13 22 15	10 07 20 44	08 12 56 49	7
8	04 21 42 38	01 15 41 39	06 15 57 55	04 19 21 09	01 21 12 06	03 07 27 31	06 02 53 30	07 05 38 38	11 13 20 04	10 07 19 09	08 12 56 30	8
9	04 22 40 54	01 27 32 58	06 16 37 48	04 21 15 57	01 21 17 03	03 08 32 44	06 02 59 34	07 05 35 27	11 13 17 52	10 07 17 34	08 12 56 12	9
10	04 23 39 13	02 09 33 12	06 17 17 47	04 23 09 56	01 21 21 49	03 09 38 12	06 03 05 41	07 05 32 16	11 13 15 39	10 07 16 00	08 12 55 56	10
11	04 24 37 33	02 21 47 33	06 17 57 51	04 25 03 01	01 21 26 24	03 10 43 53	06 03 11 51	07 05 29 05	11 13 13 24	10 07 14 27	08 12 55 42	11
12	04 25 35 55	03 04 20 28	06 18 38 02	04 26 55 08	01 21 30 49	03 11 49 48	06 03 18 04	07 05 25 54	11 13 11 09	10 07 12 54	08 12 55 29	12
13	04 26 34 20	03 17 15 16	06 19 18 18	04 28 46 16	01 21 35 04	03 12 55 56	06 03 24 19	07 05 22 44	11 13 08 52	10 07 11 22	08 12 55 19	13
14	04 27 32 46	04 00 33 33	06 19 58 40	05 00 36 22	01 21 39 07	03 14 02 16	06 03 30 38	07 05 19 33	11 13 06 35	10 07 09 51	08 12 55 10	14
15	04 28 31 15	04 14 14 49	06 20 39 07	05 02 25 26	01 21 43 00	03 15 08 49	06 03 36 59	07 05 16 22	11 13 04 16	10 07 08 20	08 12 55 03	15
16	04 29 29 45	04 28 16 23	06 21 19 40	05 04 13 26	01 21 46 41	03 16 15 34	06 03 43 23	07 05 13 12	11 13 01 57	10 07 06 50	08 12 54 58	16
17	05 00 28 17	05 12 33 39	06 22 00 19	05 06 00 23	01 21 50 12	03 17 22 31	06 03 49 49	07 05 10 01	11 12 59 36	10 07 05 21	08 12 54 55	17
18	05 01 26 51	05 27 00 43	06 22 41 03	05 07 46 16	01 21 53 31	03 18 29 39	06 03 56 17	07 05 06 50	11 12 57 15	10 07 03 53	मा08 12 54 53	18
19	05 02 25 27	06 11 31 23	06 23 21 53	05 09 31 07	01 21 56 39	03 19 36 58	06 04 02 48	07 05 03 40	11 12 54 53	10 07 02 26	08 12 54 54	19
20	05 03 24 05	06 26 00 04	06 24 02 48	05 11 14 56	01 21 59 36	03 20 44 28	06 04 09 22	07 05 00 29	11 12 52 31	10 07 00 59	08 12 54 56	20
21	05 04 22 44	07 10 22 30	06 24 43 49	05 12 57 43	01 22 02 21	03 21 52 09	06 04 15 58	07 04 57 18	11 12 50 08	10 06 59 34	08 12 55 00	21
22	05 05 21 25	07 24 35 57	06 25 24 55	05 14 39 30	01 22 04 55	03 23 00 01	06 04 22 36	07 04 54 07	11 12 47 45	10 06 58 10	08 12 55 06	22
23	05 06 20 08	08 08 39 00	06 26 06 06	05 16 20 17	01 22 07 17	03 24 08 03	06 04 29 16	07 04 50 57	11 12 45 21	10 06 56 47	08 12 55 14	23
24	05 07 18 52	08 22 31 03	06 26 47 23	05 18 00 06	01 22 09 28	03 25 16 15	06 04 35 58	07 04 47 46	11 12 42 57	10 06 55 25	08 12 55 24	24
25	05 08 17 38	09 06 11 52	06 27 28 44	05 19 38 58	01 22 11 27	03 26 24 37	06 04 42 42	07 04 44 35	11 12 40 33	10 06 54 04	08 12 55 36	25
26	05 09 16 26	09 19 41 15	06 28 10 11	05 21 16 52	01 22 13 15	03 27 33 09	06 04 49 28	07 04 41 24	11 12 38 08	10 06 52 44	08 12 55 50	26
27	05 10 15 15	10 02 58 48	06 28 51 42	05 22 53 51	01 22 14 51	03 28 41 51	06 04 56 16	07 04 38 14	11 12 35 43	10 06 51 25	08 12 56 05	27
28	05 11 14 07	10 16 04 00	06 29 33 19	05 24 29 56	01 22 16 15	03 29 50 42	06 05 03 06	07 04 35 03	11 12 33 18	10 06 50 07	08 12 56 22	28
29	05 12 13 00	10 28 56 15	07 00 15 00	05 26 05 07	01 22 17 28	04 00 59 43	06 05 09 58	07 04 31 52	11 12 30 53	10 06 48 51	08 12 56 41	29
30	05 13 11 55	11 11 35 08	07 00 56 47	05 27 39 25	01 22 18 28	04 02 08 53	06 05 16 51	07 04 28 42	11 12 28 28	10 06 47 36	08 12 57 02	30

अक्टूबर सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।20"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
1	05 14 10 52	11 24 00 39	07 01 38 38	05 29 12 51	01 22 19 17	04 03 18 13	06 05 23 46	07 04 25 31	11 12 26 03	10 06 46 22	08 12 57 25	1
2	05 15 09 51	00 06 13 32	07 02 20 35	06 00 45 26	01 22 19 53	04 04 27 41	06 05 30 42	07 04 22 20	11 12 23 38	10 06 45 10	08 12 57 50	2
3	05 16 08 53	00 18 15 21	07 03 02 36	06 02 17 09	01 22 20 18	04 05 37 19	06 05 37 40	07 04 19 10	11 12 21 13	10 06 43 58	08 12 58 16	3
4	05 17 07 56	01 00 08 36	07 03 44 42	06 03 48 03	01 22 20 31	04 06 47 05	06 05 44 40	07 04 15 59	11 12 18 48	10 06 42 49	08 12 58 45	4
5	05 18 07 02	01 11 56 39	07 04 26 53	06 05 18 06	व01 22 20 32	04 07 57 00	06 05 51 41	07 04 12 48	11 12 16 24	10 06 41 40	08 12 59 15	5
6	05 19 06 10	01 23 43 33	07 05 09 09	06 06 47 19	01 22 20 20	04 09 07 03	06 05 58 43	07 04 09 37	11 12 14 00	10 06 40 33	08 12 59 47	6
7	05 20 05 20	02 05 34 00	07 05 51 31	06 08 15 41	01 22 19 57	04 10 17 14	06 06 05 47	07 04 06 27	11 12 11 36	10 06 39 28	08 13 00 21	7
8	05 21 04 33	02 17 33 02	07 06 33 57	06 09 43 13	01 22 19 21	04 11 27 34	06 06 12 52	07 04 03 16	11 12 09 13	10 06 38 24	08 13 00 57	8
9	05 22 03 48	02 29 45 50	07 07 16 28	06 11 09 53	01 22 18 33	04 12 38 02	06 06 19 58	07 04 00 05	11 12 06 51	10 06 37 21	08 13 01 34	9
10	05 23 03 05	03 12 17 21	07 07 59 04	06 12 35 41	01 22 17 33	04 13 48 37	06 06 27 05	07 03 56 54	11 12 04 29	10 06 36 20	08 13 02 14	10
11	05 24 02 25	03 25 11 47	07 08 41 45	06 14 00 35	01 22 16 21	04 14 59 20	06 06 34 13	07 03 53 44	11 12 02 07	10 06 35 21	08 13 02 55	11
12	05 25 01 46	04 08 32 00	07 09 24 31	06 15 24 35	01 22 14 57	04 16 10 11	06 06 41 22	07 03 50 33	11 11 59 47	10 06 34 23	08 13 03 38	12
13	05 26 01 11	04 22 18 56	07 10 07 21	06 16 47 38	01 22 13 20	04 17 21 08	06 06 48 32	07 03 47 22	11 11 57 27	10 06 33 27	08 13 04 23	13
14	05 27 00 37	05 06 31 04	07 10 50 17	06 18 09 42	01 22 11 32	04 18 32 13	06 06 55 43	07 03 44 12	11 11 55 08	10 06 32 32	08 13 05 10	14
15	05 28 00 05	05 21 04 17	07 11 33 17	06 19 30 44	01 22 09 31	04 19 43 24	06 07 02 55	07 03 41 01	11 11 52 49	10 06 31 39	08 13 05 58	15
16	05 28 59 36	06 05 52 11	07 12 16 22	06 20 50 41	01 22 07 18	04 20 54 42	06 07 10 07	07 03 37 50	11 11 50 32	10 06 30 48	08 13 06 48	16
17	05 29 59 08	06 20 46 54	07 12 59 32	06 22 09 30	01 22 04 54	04 22 06 06	06 07 17 20	07 03 34 39	11 11 48 16	10 06 29 58	08 13 07 40	17
18	06 00 58 42	07 05 40 16	07 13 42 46	06 23 27 06	01 22 02 17	04 23 17 37	06 07 24 34	07 03 31 29	11 11 46 01	10 06 29 10	08 13 08 34	18
19	06 01 58 19	07 20 25 03	07 14 26 05	06 24 43 23	01 21 59 29	04 24 29 14	06 07 31 48	07 03 28 18	11 11 43 47	10 06 28 24	08 13 09 29	19
20	06 02 57 57	08 04 55 46	07 15 09 29	06 25 58 16	01 21 56 29	04 25 40 57	06 07 39 02	07 03 25 07	11 11 41 34	10 06 27 40	08 13 10 27	20
21	06 03 57 37	08 19 09 04	07 15 52 56	06 27 11 38	01 21 53 17	04 26 52 46	06 07 46 17	07 03 21 56	11 11 39 23	10 06 26 57	08 13 11 26	21
22	06 04 57 18	09 03 03 28	07 16 36 29	06 28 23 21	01 21 49 54	04 28 04 40	06 07 53 32	07 03 18 45	11 11 37 12	10 06 26 16	08 13 12 27	22
23	06 05 57 02	09 16 38 57	07 17 20 05	06 29 33 17	01 21 46 19	04 29 16 40	06 08 00 47	07 03 15 35	11 11 35 04	10 06 25 38	08 13 13 29	23
24	06 06 56 47	09 29 56 26	07 18 03 46	07 00 41 15	01 21 42 34	05 00 28 46	06 08 08 03	07 03 12 24	11 11 32 56	10 06 25 01	08 13 14 33	24
25	06 07 56 33	10 12 57 21	07 18 47 31	07 01 47 04	01 21 38 37	05 01 40 57	06 08 15 18	07 03 09 13	11 11 30 50	10 06 24 25	08 13 15 39	25
26	06 08 56 22	10 25 43 18	07 19 31 21	07 02 50 29	01 21 34 29	05 02 53 14	06 08 22 34	07 03 06 03	11 11 28 46	10 06 23 52	08 13 16 46	26
27	06 09 56 12	11 08 15 58	07 20 15 14	07 03 51 17	01 21 30 10	05 04 05 36	06 08 29 49	07 03 02 52	11 11 26 43	10 06 23 21	08 13 17 55	27
28	06 10 56 04	11 20 36 53	07 20 59 11	07 04 49 11	01 21 25 40	05 05 18 04	06 08 37 05	07 02 59 41	11 11 24 42	10 06 22 51	08 13 19 06	28
29	06 11 55 57	00 02 47 30	07 21 43 13	07 05 43 50	01 21 21 00	05 06 30 36	06 08 44 20	07 02 56 31	11 11 22 43	10 06 22 24	08 13 20 18	29
30	06 12 55 53	00 14 49 19	07 22 27 19	07 06 34 53	01 21 16 10	05 07 43 14	06 08 51 35	07 02 53 20	11 11 20 45	10 06 21 58	08 13 21 32	30
31	06 13 55 50	00 26 44 01	07 23 11 28	07 07 2[illegible]								

नवंबर सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।23"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
1	06 14 55 50	01 08 33 40	07 23 55 42	07 08 04 33	01 21 05 58	05 10 08 44	06 09 06 03	07 02 46 58	11 11 16 55	10 06 21 12	08 13 24 04	1
2	06 15 55 51	01 20 20 44	07 24 40 00	07 08 42 13	01 21 00 37	05 11 21 37	06 09 13 17	07 02 43 47	11 11 15 03	10 06 20 52	08 13 25 22	2
3	06 16 55 54	02 02 08 12	07 25 24 22	07 09 14 23	01 20 55 07	05 12 34 34	06 09 20 30	07 02 40 37	11 11 13 13	10 06 20 34	08 13 26 42	3
4	06 17 56 00	02 13 59 32	07 26 08 48	07 09 40 27	01 20 49 26	05 13 47 37	06 09 27 43	07 02 37 26	11 11 11 25	10 06 20 19	08 13 28 04	4
5	06 18 56 07	02 25 58 40	07 26 53 18	07 09 59 48	01 20 43 37	05 15 00 43	06 09 34 55	07 02 34 15	11 11 09 38	10 06 20 05	08 13 29 27	5
6	06 19 56 17	03 08 09 57	07 27 37 52	07 10 11 47	01 20 37 38	05 16 13 55	06 09 42 07	07 02 31 04	11 11 07 54	10 06 19 53	08 13 30 51	6
7	06 20 56 29	03 20 37 53	07 28 22 30	व07 10 15 42	01 20 31 31	05 17 27 10	06 09 49 17	07 02 27 53	11 11 06 12	10 06 19 43	08 13 32 17	7
8	06 21 56 43	04 03 26 46	07 29 07 12	07 10 10 55	01 20 25 15	05 18 40 30	06 09 56 27	07 02 24 43	11 11 04 32	10 06 19 35	08 13 33 45	8
9	06 22 56 58	04 16 40 17	07 29 51 58	07 09 56 52	01 20 18 50	05 19 53 54	06 10 03 36	07 02 21 32	11 11 02 55	10 06 19 29	08 13 35 13	9
10	06 23 57 16	05 00 20 46	08 00 36 47	07 09 33 05	01 20 12 17	05 21 07 22	06 10 10 44	07 02 18 21	11 11 01 19	10 06 19 25	08 13 36 44	10
11	06 24 57 36	05 14 28 44	08 01 21 41	07 08 59 17	01 20 05 36	05 22 20 54	06 10 17 51	07 02 15 11	11 10 59 46	मा10 06 19 24	08 13 38 15	11
12	06 25 57 57	05 29 02 06	08 02 06 39	07 08 15 28	01 19 58 47	05 23 34 30	06 10 24 57	07 02 12 00	11 10 58 15	10 06 19 24	08 13 39 48	12
13	06 26 58 21	06 13 56 05	08 02 51 40	07 07 21 57	01 19 51 51	05 24 48 09	06 10 32 01	07 02 08 49	11 10 56 47	10 06 19 26	08 13 41 22	13
14	06 27 58 46	06 29 03 17	08 03 36 45	07 06 19 32	01 19 44 48	05 26 01 52	06 10 39 05	07 02 05 38	11 10 55 21	10 06 19 30	08 13 42 58	14
15	06 28 59 13	07 14 14 35	08 04 21 54	07 05 09 26	01 19 37 39	05 27 15 38	06 10 46 07	07 02 02 27	11 10 53 57	10 06 19 37	08 13 44 34	15
16	06 29 59 41	07 29 20 24	08 05 07 06	07 03 53 23	01 19 30 23	05 28 29 27	06 10 53 07	07 01 59 17	11 10 52 36	10 06 19 45	08 13 46 12	16
17	07 01 00 11	08 14 12 11	08 05 52 22	07 02 33 33	01 19 23 01	05 29 43 19	06 11 00 06	07 01 56 06	11 10 51 18	10 06 19 56	08 13 47 52	17
18	07 02 00 42	08 28 43 30	08 06 37 42	07 01 12 27	01 19 15 33	06 00 57 14	06 11 07 04	07 01 52 55	11 10 50 02	10 06 20 09	08 13 49 32	18
19	07 03 01 14	09 12 50 33	08 07 23 05	06 29 52 45	01 19 08 00	06 02 11 12	06 11 14 00	07 01 49 44	11 10 48 49	10 06 20 24	08 13 51 14	19
20	07 04 01 48	09 26 32 06	08 08 08 31	06 28 37 06	01 19 00 21	06 03 25 13	06 11 20 54	07 01 46 33	11 10 47 38	10 06 20 41	08 13 52 57	20
21	07 05 02 23	10 09 49 01	08 08 54 01	06 27 27 55	01 18 52 39	06 04 39 16	06 11 27 46	07 01 43 22	11 10 46 31	10 06 21 00	08 13 54 41	21
22	07 06 02 59	10 22 43 39	08 09 39 34	06 26 27 16	01 18 44 51	06 05 53 22	06 11 34 37	07 01 40 12	11 10 45 25	10 06 21 21	08 13 56 26	22
23	07 07 03 37	11 05 19 10	08 10 25 09	06 25 36 39	01 18 37 00	06 07 07 31	06 11 41 25	07 01 37 01	11 10 44 23	10 06 21 44	08 13 58 13	23
24	07 08 04 15	11 17 39 04	08 11 10 48	06 24 57 07	01 18 29 05	06 08 21 42	06 11 48 12	07 01 33 50	11 10 43 23	10 06 22 09	08 14 00 00	24
25	07 09 04 55	11 29 46 51	08 11 56 30	06 24 29 10	01 18 21 07	06 09 35 56	06 11 54 57	07 01 30 40	11 10 42 26	10 06 22 36	08 14 01 48	25
26	07 10 05 35	00 11 45 42	08 12 42 15	06 24 12 51	01 18 13 07	06 10 50 12	06 12 01 39	07 01 27 29	11 10 41 32	10 06 23 05	08 14 03 38	26
27	07 11 06 17	00 23 38 28	08 13 28 03	मा06 24 07 52	01 18 05 03	06 12 04 31	06 12 08 19	07 01 24 18	11 10 40 41	10 06 23 36	08 14 05 28	27
28	07 12 07 00	01 05 27 40	08 14 13 54	06 24 13 39	01 17 56 58	06 13 18 52	06 12 14 57	07 01 21 07	11 10 39 53	10 06 24 10	08 14 07 19	28
29	07 13 07 45	01 17 15 33	08 14 59 48	06 24 29 29	01 17 48 50	06 14 33 15	06 12 21 33	07 01 17 56	11 10 39 07	10 06 24 45	08 14 09 11	29
30	07 14 08 30	01 29 04 15	08 15 45 45	06 24 54 29	01 17 40 42	06 15 47 41	06 12 28 06	07 01 14 46	11 10 38 25	10 06 25 22	08 14 11 05	30

दिसंबर सन् 2012 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° 102' 127"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
1	07 15 09 17	02 10 55 52	08 16 31 45	06 25 27 48	01 17 32 32	06 17 02 09	06 12 34 37	07 01 11 35	11 10 37 45	10 06 26 02	08 14 12 59	1
2	07 16 10 06	02 22 52 38	08 17 17 48	06 26 08 33	01 17 24 21	06 18 16 39	06 12 41 06	07 01 08 24	11 10 37 08	10 06 26 43	08 14 14 54	2
3	07 17 10 55	03 04 57 00	08 18 03 53	06 26 55 54	01 17 16 10	06 19 31 12	06 12 47 32	07 01 05 13	11 10 36 34	10 06 27 26	08 14 16 49	3
4	07 18 11 46	03 17 11 51	08 18 50 02	06 27 49 03	01 17 07 59	06 20 45 46	06 12 53 55	07 01 02 02	11 10 36 04	10 06 28 12	08 14 18 46	4
5	07 19 12 38	03 29 40 19	08 19 36 13	06 28 47 17	01 16 59 49	06 22 00 23	06 13 00 16	07 00 58 52	11 10 35 36	10 06 28 59	08 14 20 43	5
6	07 20 13 32	04 12 25 48	08 20 22 27	06 29 49 58	01 16 51 39	06 23 15 01	06 13 06 34	07 00 55 41	11 10 35 11	10 06 29 48	08 14 22 42	6
7	07 21 14 27	04 25 31 38	08 21 08 44	07 00 56 31	01 16 43 30	06 24 29 42	06 13 12 48	07 00 52 30	11 10 34 49	10 06 30 40	08 14 24 40	7
8	07 22 15 23	05 09 00 39	08 21 55 03	07 02 06 25	01 16 35 23	06 25 44 24	06 13 19 00	07 00 49 19	11 10 34 30	10 06 31 33	08 14 26 40	8
9	07 23 16 20	05 22 54 45	08 22 41 25	07 03 19 12	01 16 27 18	06 26 59 08	06 13 25 09	07 00 46 09	11 10 34 14	10 06 32 28	08 14 28 40	9
10	07 24 17 19	06 07 14 10	08 23 27 50	07 04 34 30	01 16 19 15	06 28 13 53	06 13 31 15	07 00 42 58	11 10 34 01	10 06 33 25	08 14 30 41	10
11	07 25 18 18	06 21 56 51	08 24 14 18	07 05 51 59	01 16 11 15	06 29 28 40	06 13 37 18	07 00 39 47	11 10 33 52	10 06 34 24	08 14 32 42	11
12	07 26 19 19	07 06 57 55	08 25 00 48	07 07 11 20	01 16 03 17	07 00 43 29	06 13 43 17	07 00 36 36	11 10 33 45	10 06 35 25	08 14 34 44	12
13	07 27 20 21	07 22 09 46	08 25 47 20	07 08 32 18	01 15 55 24	07 01 58 19	06 13 49 14	07 00 33 25	11 10 33 42	10 06 36 28	08 14 36 47	13
14	07 28 21 23	08 07 22 52	08 26 33 55	07 09 54 40	01 15 47 34	07 03 13 10	06 13 55 07	07 00 30 14	11 10 33 42	10 06 37 32	08 14 38 50	14
15	07 29 22 26	08 22 27 06	08 27 20 32	07 11 18 15	01 15 39 48	07 04 28 02	06 14 00 56	07 00 27 03	11 10 33 44	10 06 38 39	08 14 40 54	15
16	08 00 23 30	09 07 13 25	08 28 07 12	07 12 42 54	01 15 32 07	07 05 42 56	06 14 06 42	07 00 23 52	11 10 33 50	10 06 39 48	08 14 42 58	16
17	08 01 24 34	09 21 35 08	08 28 53 54	07 14 08 29	01 15 24 31	07 06 57 50	06 14 12 24	07 00 20 42	11 10 33 59	10 06 40 58	08 14 45 03	17
18	08 02 25 39	10 05 28 38	08 29 40 37	07 15 34 51	01 15 17 01	07 08 12 46	06 14 18 03	07 00 17 31	11 10 34 12	10 06 42 10	08 14 47 08	18
19	08 03 26 44	10 18 53 20	09 00 27 23	07 17 01 57	01 15 09 36	07 09 27 42	06 14 23 38	07 00 14 20	11 10 34 27	10 06 43 24	08 14 49 13	19
20	08 04 27 49	11 01 51 08	09 01 14 11	07 18 29 40	01 15 02 17	07 10 42 39	06 14 29 09	07 00 11 09	11 10 34 45	10 06 44 40	08 14 51 19	20
21	08 05 28 55	11 14 25 37	09 02 01 01	07 19 57 56	01 14 55 04	07 11 57 37	06 14 34 36	07 00 07 59	11 10 35 07	10 06 45 57	08 14 53 25	21
22	08 06 30 01	11 26 41 20	09 02 47 52	07 21 26 43	01 14 47 58	07 13 12 36	06 14 40 00	07 00 04 48	11 10 35 32	10 06 47 16	08 14 55 31	22
23	08 07 31 07	00 08 43 09	09 03 34 45	07 22 55 57	01 14 40 59	07 14 27 35	06 14 45 19	07 00 01 37	11 10 35 59	10 06 48 37	08 14 57 38	23
24	08 08 32 13	00 20 35 48	09 04 21 40	07 24 25 37	01 14 34 07	07 15 42 36	06 14 50 34	06 29 58 26	11 10 36 30	10 06 50 00	08 14 59 44	24
25	08 09 33 19	01 02 23 37	09 05 08 36	07 25 55 40	01 14 27 23	07 16 57 37	06 14 55 46	06 29 55 16	11 10 37 04	10 06 51 24	08 15 01 51	25
26	08 10 34 26	01 14 10 20	09 05 55 35	07 27 26 05	01 14 20 46	07 18 12 38	06 15 00 53	06 29 52 05	11 10 37 41	10 06 52 50	08 15 03 58	26
27	08 11 35 33	01 25 59 04	09 06 42 34	07 28 56 51	01 14 14 18	07 19 27 41	06 15 05 55	06 29 48 54	11 10 38 21	10 06 54 17	08 15 06 06	27
28	08 12 36 39	02 07 52 19	09 07 29 36	08 00 27 57	01 14 07 58	07 20 42 44	06 15 10 54	06 29 45 43	11 10 39 04	10 06 55 46	08 15 08 13	28
29	08 13 37 47	02 19 51 56	09 08 16 38	08 01 59 24	01 14 01 46	07 21 57 48	06 15 15 48	06 29 42 32	11 10 39 50	10 06 57 17	08 15 10 21	29
30	08 14 38 54	03 01 59 20	09 09 03 43	08 03 31 10	01 13 55 43	07 23 12 52	06 15 20 38	06 29 39 21	11 10 40 40	10 06 58 50	08 15 12 28	30
31	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जनवरी सन् 2013 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।33"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जनवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जनवरी
1	08 16 41 10	03 26 42 09	09 10 37 56	08 06 35 40	01 13 44 05	07 25 43 04	06 15 30 05	06 29 33 00	11 10 42 27	10 07 01 59	08 15 16 43	1
2	08 17 42 18	04 09 20 04	09 11 25 04	08 08 08 25	01 13 38 30	07 26 58 11	06 15 34 41	06 29 29 49	11 10 43 26	10 07 03 36	08 15 18 51	2
3	08 18 43 26	04 22 11 05	09 12 12 14	08 09 41 30	01 13 33 04	07 28 13 18	06 15 39 13	06 29 26 38	11 10 44 27	10 07 05 14	08 15 20 58	3
4	08 19 44 35	05 05 17 06	09 12 59 26	08 11 14 56	01 13 27 49	07 29 28 26	06 15 43 40	06 29 23 28	11 10 45 31	10 07 06 54	08 15 23 05	4
5	08 20 45 44	05 18 40 09	09 13 46 38	08 12 48 43	01 13 22 43	08 00 43 34	06 15 48 02	06 29 20 17	11 10 46 38	10 07 08 35	08 15 25 13	5
6	08 21 46 53	06 02 22 10	09 14 33 52	08 14 22 52	01 13 17 48	08 01 58 43	06 15 52 19	06 29 17 06	11 10 47 49	10 07 10 18	08 15 27 20	6
7	08 22 48 03	06 16 24 25	09 15 21 07	08 15 57 23	01 13 13 04	08 03 13 53	06 15 56 31	06 29 13 55	11 10 49 02	10 07 12 02	08 15 29 26	7
8	08 23 49 12	07 00 46 56	09 16 08 23	08 17 32 18	01 13 08 30	08 04 29 03	06 16 00 39	06 29 10 44	11 10 50 18	10 07 13 47	08 15 31 33	8
9	08 24 50 22	07 15 27 39	09 16 55 41	08 19 07 38	01 13 04 07	08 05 44 13	06 16 04 41	06 29 07 33	11 10 51 37	10 07 15 34	08 15 33 39	9
10	08 25 51 31	08 00 21 57	09 17 42 59	08 20 43 22	01 12 59 55	08 06 59 24	06 16 08 39	06 29 04 22	11 10 52 59	10 07 17 22	08 15 35 46	10
11	08 26 52 41	08 15 22 40	09 18 30 19	08 22 19 33	01 12 55 54	08 08 14 35	06 16 12 31	06 29 01 12	11 10 54 24	10 07 19 12	08 15 37 51	11
12	08 27 53 50	09 00 20 51	09 19 17 40	08 23 56 10	01 12 52 04	08 09 29 47	06 16 16 18	06 28 58 01	11 10 55 51	10 07 21 02	08 15 39 57	12
13	08 28 54 59	09 15 07 11	09 20 05 01	08 25 33 15	01 12 48 26	08 10 44 58	06 16 20 00	06 28 54 50	11 10 57 22	10 07 22 54	08 15 42 02	13
14	08 29 56 07	09 29 33 32	09 20 52 23	08 27 10 49	01 12 45 00	08 12 00 10	06 16 23 36	06 28 51 39	11 10 58 55	10 07 24 48	08 15 44 07	14
15	09 00 57 15	10 13 34 10	09 21 39 46	08 28 48 51	01 12 41 46	08 13 15 21	06 16 27 07	06 28 48 28	11 11 00 31	10 07 26 42	08 15 46 11	15
16	09 01 58 23	10 27 06 28	09 22 27 09	09 00 27 24	01 12 38 43	08 14 30 33	06 16 30 33	06 28 45 18	11 11 02 10	10 07 28 37	08 15 48 15	16
17	09 02 59 29	11 10 10 42	09 23 14 33	09 02 06 28	01 12 35 52	08 15 45 44	06 16 33 53	06 28 42 07	11 11 03 52	10 07 30 34	08 15 50 18	17
18	09 04 00 35	11 22 49 36	09 24 01 57	09 03 46 03	01 12 33 13	08 17 00 55	06 16 37 07	06 28 38 56	11 11 05 36	10 07 32 32	08 15 52 21	18
19	09 05 01 40	00 05 07 29	09 24 49 22	09 05 26 10	01 12 30 47	08 18 16 07	06 16 40 16	06 28 35 46	11 11 07 23	10 07 34 30	08 15 54 23	19
20	09 06 02 44	00 17 09 34	09 25 36 47	09 07 06 49	01 12 28 32	08 19 31 18	06 16 43 20	06 28 32 35	11 11 09 13	10 07 36 30	08 15 56 24	20
21	09 07 03 47	00 29 01 24	09 26 24 12	09 08 48 01	01 12 26 30	08 20 46 29	06 16 46 17	06 28 29 24	11 11 11 05	10 07 38 31	08 15 58 25	21
22	09 08 04 50	01 10 48 22	09 27 11 37	09 10 29 46	01 12 24 39	08 22 01 40	06 16 49 09	06 28 26 13	11 11 13 00	10 07 40 32	08 16 00 26	22
23	09 09 05 51	01 22 35 24	09 27 59 03	09 12 12 02	01 12 23 01	08 23 16 50	06 16 51 56	06 28 23 02	11 11 14 58	10 07 42 35	08 16 02 25	23
24	09 10 06 51	02 04 26 45	09 28 46 28	09 13 54 51	01 12 21 36	08 24 32 01	06 16 54 36	06 28 19 51	11 11 16 58	10 07 44 39	08 16 04 24	24
25	09 11 07 51	02 16 25 49	09 29 33 54	09 15 38 10	01 12 20 22	08 25 47 12	06 16 57 11	06 28 16 41	11 11 19 00	10 07 46 43	08 16 06 23	25
26	09 12 08 49	02 28 35 02	10 00 21 20	09 17 21 59	01 12 19 21	08 27 02 22	06 16 59 40	06 28 13 30	11 11 21 05	10 07 48 48	08 16 08 20	26
27	09 13 09 47	03 10 55 49	10 01 08 46	09 19 06 15	01 12 18 33	08 28 17 32	06 17 02 04	06 28 10 19	11 11 23 12	10 07 50 54	08 16 10 17	27
28	09 14 10 44	03 23 28 43	10 01 56 11	09 20 50 56	01 12 17 56	08 29 32 43	06 17 04 21	06 28 07 08	11 11 25 22	10 07 53 01	08 16 12 13	28
29	09 15 11 40	04 06 13 37	10 02 43 37	09 22 35 58	01 12 17 32	09 00 47 53	06 17 06 32	06 28 03 58	11 11 27 35	10 07 55 09	08 16 14 08	29
30	09 16 12 35	04 19 10 05	10 03 31 03	09 24 21 18	01 12 17 20	09 02 03 03	06 17 08 38	06 28 00 47	11 11 29 49	10 07 57 17	08 16 16 02	30
31	09 17 13 29	05 02 17 40	10 04 18 28	09 26 06 49	01 12 17 20	09 03 18 13	06 17 10 37	06 27 57 36	11 11 32 06	10 07 59 26	08 16 17 56	31

फरवरी सन् 2013 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° 02' 37"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फरवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फरवरी
1	09 18 14 23	05 15 36 11	10 05 05 53	09 27 52 26	01 12 17 32	09 04 33 23	06 17 12 30	06 27 54 25	11 11 34 25	10 08 01 36	08 16 19 48	1
2	09 19 15 16	05 29 05 53	10 05 53 18	09 29 38 01	01 12 17 57	09 05 48 33	06 17 14 17	06 27 51 15	11 11 36 46	10 08 03 47	08 16 21 39	2
3	09 20 16 08	06 12 47 21	10 06 40 43	10 01 23 23	01 12 18 34	09 07 03 43	06 17 15 59	06 27 48 04	11 11 39 10	10 08 05 58	08 16 23 30	3
4	09 21 16 59	06 26 41 20	10 07 28 08	10 03 08 22	01 12 19 23	09 08 18 53	06 17 17 34	06 27 44 53	11 11 41 36	10 08 08 09	08 16 25 20	4
5	09 22 17 49	07 10 48 16	10 08 15 32	10 04 52 44	01 12 20 24	09 09 34 02	06 17 19 03	06 27 41 42	11 11 44 04	10 08 10 21	08 16 27 08	5
6	09 23 18 39	07 25 07 32	10 09 02 57	10 06 36 13	01 12 21 37	09 10 49 12	06 17 20 25	06 27 38 31	11 11 46 34	10 08 12 34	08 16 28 56	6
7	09 24 19 27	08 09 36 59	10 09 50 20	10 08 18 31	01 12 23 03	09 12 04 21	06 17 21 42	06 27 35 21	11 11 49 06	10 08 14 47	08 16 30 42	7
8	09 25 20 15	08 24 12 25	10 10 37 44	10 09 59 15	01 12 24 41	09 13 19 30	06 17 22 52	06 27 32 10	11 11 51 40	10 08 17 01	08 16 32 28	8
9	09 26 21 01	09 08 47 49	10 11 25 07	10 11 38 02	01 12 26 30	09 14 34 39	06 17 23 56	06 27 28 59	11 11 54 17	10 08 19 15	08 16 34 12	9
10	09 27 21 47	09 23 16 04	10 12 12 29	10 13 14 24	01 12 28 32	09 15 49 48	06 17 24 54	06 27 25 48	11 11 56 55	10 08 21 30	08 16 35 55	10
11	09 28 22 30	10 07 30 07	10 12 59 51	10 14 47 50	01 12 30 45	09 17 04 56	06 17 25 45	06 27 22 37	11 11 59 35	10 08 23 45	08 16 37 37	11
12	09 29 23 13	10 21 24 07	10 13 47 11	10 16 17 46	01 12 33 11	09 18 20 04	06 17 26 30	06 27 19 27	11 12 02 17	10 08 26 00	08 16 39 18	12
13	10 00 23 54	11 04 54 21	10 14 34 31	10 17 43 36	01 12 35 48	09 19 35 11	06 17 27 09	06 27 16 16	11 12 05 01	10 08 28 15	08 16 40 57	13
14	10 01 24 34	11 17 59 37	10 15 21 51	10 19 04 40	01 12 38 37	09 20 50 18	06 17 27 42	06 27 13 05	11 12 07 47	10 08 30 31	08 16 42 35	14
15	10 02 25 12	00 00 41 06	10 16 09 09	10 20 20 16	01 12 41 37	09 22 05 24	06 17 28 08	06 27 09 55	11 12 10 35	10 08 32 47	08 16 44 12	15
16	10 03 25 48	00 13 01 55	10 16 56 26	10 21 29 44	01 12 44 49	09 23 20 29	06 17 28 28	06 27 06 44	11 12 13 24	10 08 35 03	08 16 45 48	16
17	10 04 26 22	00 25 06 34	10 17 43 42	10 22 32 19	01 12 48 13	09 24 35 34	06 17 28 41	06 27 03 33	11 12 16 15	10 08 37 20	08 16 47 22	17
18	10 05 26 55	01 07 00 19	10 18 30 57	10 23 27 21	01 12 51 47	09 25 50 38	06 17 28 49	06 27 00 23	11 12 19 08	10 08 39 36	08 16 48 56	18
19	10 06 27 26	01 18 48 44	10 19 18 11	10 24 14 10	01 12 55 33	09 27 05 42	व06 17 28 50	06 26 57 12	11 12 22 03	10 08 41 53	08 16 50 27	19
20	10 07 27 55	02 00 37 21	10 20 05 24	10 24 52 11	01 12 59 30	09 28 20 45	06 17 28 45	06 26 54 01	11 12 24 58	10 08 44 09	08 16 51 58	20
21	10 08 28 22	02 12 31 17	10 20 52 35	10 25 20 54	01 13 03 38	09 29 35 47	06 17 28 33	06 26 50 50	11 12 27 56	10 08 46 26	08 16 53 26	21
22	10 09 28 48	02 24 34 57	10 21 39 45	10 25 39 55	01 13 07 57	10 00 50 48	06 17 28 16	06 26 47 39	11 12 30 55	10 08 48 43	08 16 54 54	22
23	10 10 29 11	03 06 51 48	10 22 26 54	व10 25 49 00	01 13 12 27	10 02 05 49	06 17 27 52	06 26 44 29	11 12 33 56	10 08 50 59	08 16 56 20	23
24	10 11 29 33	03 19 24 06	10 23 14 01	10 25 48 03	01 13 17 08	10 03 20 50	06 17 27 22	06 26 41 18	11 12 36 57	10 08 53 16	08 16 57 45	24
25	10 12 29 53	04 02 12 47	10 24 01 07	10 25 37 11	01 13 21 59	10 04 35 49	06 17 26 46	06 26 38 07	11 12 40 01	10 08 55 33	08 16 59 08	25
26	10 13 30 12	04 15 17 29	10 24 48 12	10 25 16 44	01 13 27 00	10 05 50 48	06 17 26 04	06 26 34 57	11 12 43 05	10 08 57 49	08 17 00 30	26
27	10 14 30 28	04 28 36 43	10 25 35 15	10 24 47 13	01 13 32 12	10 07 05 47	06 17 25 15	06 26 31 46	11 12 46 11	10 09 00 05	08 17 01 50	27
28	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्च सन् 2013 ई. प्रातः कालीन भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 5 घं. 30 मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः 24° ।02' ।40"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (वक्री)	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
1	10 16 30 57	05 25 49 51	10 27 09 16	10 23 24 15	01 13 43 06	10 09 35 42	06 17 23 20	06 26 25 25	11 12 52 27	10 09 04 37	08 17 04 26	1
2	10 17 31 09	06 09 39 10	10 27 56 15	10 22 32 57	01 13 48 48	10 10 50 38	06 17 22 14	06 26 22 14	11 12 55 36	10 09 06 53	08 17 05 41	2
3	10 18 31 19	06 23 34 34	10 28 43 12	10 21 36 49	01 13 54 40	10 12 05 35	06 17 21 01	06 26 19 03	11 12 58 47	10 09 09 08	08 17 06 55	3
4	10 19 31 28	07 07 34 58	10 29 30 08	10 20 37 17	01 14 00 41	10 13 20 30	06 17 19 42	06 26 15 52	11 13 01 58	10 09 11 24	08 17 08 08	4
5	10 20 31 35	07 21 39 38	11 00 17 02	10 19 35 50	01 14 06 53	10 14 35 25	06 17 18 18	06 26 12 41	11 13 05 11	10 09 13 38	08 17 09 18	5
6	10 21 31 41	08 05 47 49	11 01 03 54	10 18 33 58	01 14 13 14	10 15 50 20	06 17 16 47	06 26 09 31	11 13 08 25	10 09 15 53	08 17 10 28	6
7	10 22 31 45	08 19 58 14	11 01 50 45	10 17 33 04	01 14 19 45	10 17 05 14	06 17 15 11	06 26 06 20	11 13 11 40	10 09 18 07	08 17 11 35	7
8	10 23 31 48	09 04 08 44	11 02 37 34	10 16 34 26	01 14 26 25	10 18 20 07	06 17 13 29	06 26 03 09	11 13 14 56	10 09 20 21	08 17 12 41	8
9	10 24 31 49	09 18 16 10	11 03 24 22	10 15 39 14	01 14 33 15	10 19 35 00	06 17 11 41	06 25 59 58	11 13 18 13	10 09 22 34	08 17 13 45	9
10	10 25 31 48	10 02 16 33	11 04 11 08	10 14 48 25	01 14 40 14	10 20 49 52	06 17 09 48	06 25 56 48	11 13 21 30	10 09 24 47	08 17 14 48	10
11	10 26 31 45	10 16 05 35	11 04 57 52	10 14 02 44	01 14 47 22	10 22 04 43	06 17 07 48	06 25 53 37	11 13 24 49	10 09 26 59	08 17 15 49	11
12	10 27 31 41	10 29 39 23	11 05 44 34	10 13 22 46	01 14 54 38	10 23 19 33	06 17 05 43	06 25 50 26	11 13 28 08	10 09 29 11	08 17 16 48	12
13	10 28 31 34	11 12 55 02	11 06 31 14	10 12 48 55	01 15 02 04	10 24 34 23	06 17 03 33	06 25 47 16	11 13 31 28	10 09 31 22	08 17 17 45	13
14	10 29 31 26	11 25 51 05	11 07 17 52	10 12 21 25	01 15 09 39	10 25 49 11	06 17 01 17	06 25 44 05	11 13 34 49	10 09 33 32	08 17 18 41	14
15	11 00 31 16	00 08 27 49	11 08 04 28	10 12 00 23	01 15 17 22	10 27 03 59	06 16 58 56	06 25 40 54	11 13 38 10	10 09 35 42	08 17 19 35	15
16	11 01 31 03	00 20 47 05	11 08 51 02	10 11 45 48	01 15 25 13	10 28 18 46	06 16 56 29	06 25 37 44	11 13 41 32	10 09 37 51	08 17 20 27	16
17	11 02 30 48	01 02 52 05	11 09 37 34	10 11 37 33	01 15 33 13	10 29 33 31	06 16 53 57	06 25 34 33	11 13 44 54	10 09 40 00	08 17 21 17	17
18	11 03 30 31	01 14 47 01	11 10 24 03	मा10 11 35 30	01 15 41 22	11 00 48 16	06 16 51 20	06 25 31 22	11 13 48 17	10 09 42 08	08 17 22 06	18
19	11 04 30 12	01 26 36 47	11 11 10 30	10 11 39 25	01 15 49 38	11 02 03 00	06 16 48 38	06 25 28 11	11 13 51 40	10 09 44 15	08 17 22 52	19
20	11 05 29 51	02 08 26 35	11 11 56 55	10 11 49 03	01 15 58 02	11 03 17 42	06 16 45 51	06 25 25 01	11 13 55 04	10 09 46 21	08 17 23 37	20
21	11 06 29 27	02 20 21 41	11 12 43 18	10 12 04 09	01 16 06 35	11 04 32 24	06 16 42 59	06 25 21 50	11 13 58 28	10 09 48 27	08 17 24 20	21
22	11 07 29 01	03 02 27 05	11 13 29 38	10 12 24 25	01 16 15 15	11 05 47 04	06 16 40 03	06 25 18 39	11 14 01 52	10 09 50 31	08 17 25 02	22
23	11 08 28 32	03 14 47 08	11 14 15 56	10 12 49 36	01 16 24 02	11 07 01 43	06 16 37 01	06 25 15 28	11 14 05 17	10 09 52 35	08 17 25 41	23
24	11 09 28 02	03 27 25 16	11 15 02 11	10 13 19 24	01 16 32 57	11 08 16 21	06 16 33 55	06 25 12 18	11 14 08 42	10 09 54 38	08 17 26 19	24
25	11 10 27 29	04 10 23 33	11 15 48 24	10 13 53 34	01 16 42 00	11 09 30 58	06 16 30 45	06 25 09 07	11 14 12 07	10 09 56 40	08 17 26 55	25
26	11 11 26 54	04 23 42 31	11 16 34 34	10 14 31 51	01 16 51 09	11 10 45 35	06 16 27 30	06 25 05 56	11 14 15 33	10 09 58 41	08 17 27 29	26
27	11 12 26 17	05 07 20 57	11 17 20 42	10 15 14 00	01 17 00 26	11 12 00 09	06 16 24 11	06 25 02 46	11 14 18 58	10 10 00 41	08 17 28 01	27
28	11 13 25 38	05 21 16 06	11 18 06 48	10 15 59 48	01 17 09 50	11 13 14 43	06 16 20 47	06 24 59 35	11 14 22 23	10 10 02 40	08 17 28 31	28
29	11 14 24 57	06 05 24 03	11 18 52 51	10 16 49 03	01 17 19 20	11 14 29 16	06 16 17 20	06 24 56 24	11 14 25 49	10 10 04 38	08 17 29 00	29
30	11 15 24 14	06 19 40 17	11 19 38 51	10 17 41 32	01 17 28 58	11 15 43 48	06 16 13 48	06 24 53 14	11 14 29 14	10 10 06 35	08 17 29 26	30
31	11 16 23 29	07 04 00 20	11 20 24 49	10 18 37 06	01 17 38 42	11 16 58 20	06 16 10 13	06 24 50 03	11 14 32 40	10 10 08 31	08 17 29 51	31

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ 1 ॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥ 2 ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र "**ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च**" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जहाश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान 43,20,000 सौर वर्ष है। इस प्रकार 1000 चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में 14 मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में 71 महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक 6 मन्वन्तर के 26 महायुग बीत गये हैं और 27वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें 5113 वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का 64वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर 13 घड़ी 42 पल 3 विपल 43 प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु 17,28,000 वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, बराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः 1,00,000 वर्ष, बाल्यावस्था 10,000 वर्ष, देह की लम्बाई 21 हाथ थी। पुण्य 20 विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्र ग्रहण 2,000 थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 12,96,000 वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः 10,000 वर्ष और बाल्यावस्था 1,000 वर्ष थी। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। पुरुष का देहमान 14 हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण 20,000 और चन्द्र ग्रहण 30,000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण 30 को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 8,64,00 वर्ष थी। इसमें 2 अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु 1,000 वर्ष थी। बाल्यावस्था 100 वर्ष थी। पुरुष का देहमान 7 हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे था। सूर्यग्रहण 24,000 और चन्द्र ग्रहण 36,000 थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण 13 को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 4,32,000 वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु 120 वर्ष और बाल्यावस्था 10 वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण 46,000 होंगे। सं. 2069 में कलियुग के 5113 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के 4,26,887 वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान

सम्वत् 2069 वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि दशाधिकारी फलम्

श्री गणेशाम्बा गुरुभ्यो नमः

वागीशाद्या सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृत्कृत्या स्युः तन्नमामि विनायकम्॥
तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करण मेव च। पंचांगं श्रृणुते नित्य गंगा स्नान फलं लभेत्॥
तिथि आयुकरि प्रोक्ता नक्षत्रं पाप नाशनम्। वारं शत्रून् विनाशाय योगो वृद्धि शतानि च॥
करणं करोतु कल्याणं चन्द्रो लक्ष्मी दिने दिने। यशसो वर्द्धते नित्यं दिवाकरो भूमण्डले॥

अथ श्री मन्नृपति चक्र चूड़ामणि वीर विक्रमादित्य राज्यात् शुभ संवत् 2069 तथा च श्री मन्नृपति शालिवाहन राज्याच्छुभ शाकः 1934, वर्षेऽस्मिन् कल्पतोगताब्दाः 1,95,58,85,113। तत्र कृतयुग प्रमाणं 17,28,000। त्रेता युग प्रमाणं 12,96,000। द्वापर युग प्रमाणं 8,64,000। कलियुग प्रमाणं 4,32,000 वर्षाणि, तन्मध्ये भुक्त कलिः 5113। भोग्य कलिः 4,26,887। श्री कृष्ण जन्मतो गताब्दाः 5248। श्री बौद्धावतार संवत् 2635-36। श्री महावीर निर्वाण जैन संवत् 2538-39। ईस्वी सन् 2012-13। हिजरी सन् 1433-34। भारतीय गणराज्य सम्वत् 63-64 प्रवर्त्तते। अथाऽस्मिन् वर्षे राजा शुक्रः। मंत्री शुक्रः। सस्येशो चन्द्रः। धान्येशो शनिः। मेघेशो गुरुः। रसेशो भौमः। नीरसेशो रविः। फलेशो गुरुः। धनेशो रविः। दुर्गेशो गुरुः। एते दशाधिकारिणः। तत्र बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि षष्ट्याब्दानां मध्ये विष्णु विंशतिकायां 19 "विश्वावसु" नामाख्यः सम्वत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्क समये भुक्त मासादयः 11 |23 |45 |36। भोग्य मासादि 0 |6 |14 |24। विश्व देवे दैवतं युगम् शुभम्। वर्षनाम "आश्विन"। चतुर्मेघानां मध्ये "आवर्तः" नाम मेघः। रोहिणी निवासः "पर्वते" (वर्षा का अभाव योग)। समय निवासो "कुंभकार" गृहे।

समय वाहन "दुर्दुर (मेंढक)"। स्तंभः 1 "तृण"। सोमवत्याऽमावस्या 2। अंगारकी चतुर्थी 2। सोमवती पंचमी 1। भानु सप्तमी 2। बुधाष्टमी 3। रविदशमी 1। समय विश्वा 20। समय मुर्हूर्त्तानि 390। समय दिनानि 384। तिथि क्षयः 18। तिथि वृद्धिः 12। अष्टोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा 99। खपति विश्वा 126। विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा 87। खपति विश्वा 123। वर्षा विश्वा 17। धान्यम् 17। तृणम् 15। शीतम् 15। तेजः 11। वायुः 13। वृद्धिः 15। क्षयः 15। विग्रहः 11। तयोरैक्यम् 129। क्षुधाः 5। तृष्णाः 15। निद्रा 5। आलस्यः 1। उद्यम् 17। उद्भिज 9। जरायुजः 3। पिण्डजः 11। स्वेदज 5। शांतिः 1। क्रोधः 3। दण्ड 5, मैत्री 13। उत्सवः 11। पापः 11। पुण्यः 7। उग्रत्वः 5। रसोत्पत्तिः 3। फलोत्पत्ति 7, व्याधिः 5। व्याधिनाशः 19। आचार 19। अनाचार 7। मृत्युः 3। जन्मः 11। चौर 17। उपशमन 5। अग्निभय 11। अग्निशमः 3। सत्यम् अर्द्ध। धर्मम् डेढ़। पापम् 18। शनि दृष्टिः पश्चिमायाम्। ग्रहणाऽभाव। इस वर्ष का फल ग्रह योग एवं आकाशीय परिषद से उत्तम बनता है।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता व लोक नायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के राजा-मन्त्री आदि दशाधिकारियों का प्रभाव यूं तो न्यूनाधिक सर्वत्र होता है तथापि राजा का प्रभाव भारत वर्ष मुकट मणि कश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मन्त्री का प्रभाव कलिंग में, रस्येश का विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट व मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोवा में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग व कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धनेश व दुर्गेश का प्रभाव सर्वत्र समान रूप से पड़ता है।

अथ विश्वावसु नाम संवत्सर फलम्

अब्दे विश्वावसौ सश्वद्धौर रोग धरा नराः।
सस्यार्ध वृष्टयोमध्या भूपाला नाति भूतयः॥

अर्थात् विश्वावसु नाम संवत्सर से जनता में भयानक रोगों का प्रादुर्भाव। वर्ष में वर्षा की कमी तथा अनाज की पैदावार भी कम रहे। राजस्व प्राप्ति में कमी का योग।

अथ राजा शुक्रः तस्य फलम्

शुक्रस्यराज्ये बहुसस्य संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽबुराशिभिः।
फलति वृक्षा बहु गौ प्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिव सौख्य संयुक्ताः॥

वर्ष के राजा शुक्र का फल-शुक्र राजा हो तो कृषि संबंधी कार्यों में शुभदायक वृद्धि होगी। वर्षा की प्रबलता होगी। जिससे नदियों के वेग में वृद्धि होगी। तथा हरियाली के दृश्य मन मोहक होंगे। गौ आदि जननियों की संतान सुख की अधिक प्राप्ति होगी। विश्व के सभी राष्ट्र तथा नेताओं को खुशहाली के प्रयास और अधिक करने होंगे। स्त्री वर्ग का प्रशासन एवं नियंत्रण, स्त्री वर्ग का निर्णय निष्पक्ष रूप में चर्चित होंगे।

अथ मंत्री शुक्रः तस्य फलम्

भृगु सुते ननु मंत्रीपदं गते शलभ मूषक मूषक रोहिषः।
भवति धान्यं समर्घता भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्॥

वर्ष के मंत्री शुक्र का फल-मंत्री शुक्र ग्रह होने से खेती में चूहा, कातरा, टिड्डी आदि से हानि होगी। वर्षा समयानुकूल उत्तम होने से धान्यों के भावों में मंदी रहेगी। किशमिश, काजू, छुहारा, मेवा आदि का उत्पादन बढ़ेगा। ग्रामीण इलाकों को छोड़कर शहरी भागों में भय, स्त्री वर्ग की लोक लाज पर खुला हमला का योग। तथा आतंक की गतिविधियां बढ़ेंगी। प्रजा में भय बढ़ेगा।

अथ सस्येशो चन्द्रः तस्य फलम्

सस्याधिपे शीत करे प्रजा सुखं मेघः पयोमुंचति गोपगोधुकः।
देव द्विजाराधनततपरा नृपा धरा भवेद्धान्यं धनौधपूर्णाः॥

वर्ष के सस्येश चन्द्रः का फल— प्रजा में सुख-शांति का वातावरण बनेगा। तथा बादलों से श्रेष्ठ वर्षा होने से अनाजादि की पैदावार बढ़ेगी। गाय, भैंस, बकरी आदि का दूध अधिक मात्रा में होगा। धार्मिक आस्था के लोग देव आराधना में अधिक लगेंगे। पृथ्वी धन धान्य से पूर्ण होगी। स्त्री वर्ग की कलाओं में वृद्धि तथा सौन्दर्यकरण बढ़ेगा।

अथ धान्येशो शनिः तस्य फलम्

निर्धनाः क्षिति भुजो रणादाराः सस्यमल्पमति रोगिणो नराः।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वरः स्याद्यदान्नत्यकणपः शनैश्चरः॥

वर्ष के धान्येश शनि का फल—रबी की फसल का मालिक शनि बना है। अतः राष्ट्रों में सर्वत्र नेताओं की स्वार्थ परायणता से जनता क्षुब्ध होगी। श्रमिक वर्ग उत्पादन में बाधा उत्पन्न करेंगे। वर्षा समयानुकूल नहीं होने से दुर्भिक्ष भय, प्रजा में कलह, निर्धनता तथा रोगी स्थिति यत्र-तत्र बनेगी। पीड़ा में भी बढ़ोत्तरी का योग। यत्र-तत्र युद्धादि भय से प्रजा में डर बनेगा। अनाज, रस पदार्थों में तेजी होगी। अपहरण का योग ज्यादा बनेगा। गुप्त भेदों का रहस्य भी खुलेगा।

अथ मेघेशो गुरुः तस्य फलम्

गुरुरपि प्रिय वृष्टि करः सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा।
श्रुति विचार परा नरपालकाः रस समृद्धि युताखिल मानवः॥

वर्ष के मेघेश गुरु का फल—मेघेश का स्वामी गुरु होने से वर्षा समयानुकूल ठीक होगी। धन-धान्य से युक्त मानव अपना जीवन विलासिता की ओर बढ़ायेंगे। राष्ट्रनायकों में वेद शास्त्रों के प्रति रुचि बढ़ेगी। जनता में धार्मिक भावना बढ़ने से धार्मिक कृत्य यत्र-तत्र-सर्वत्र बढ़ेंगे। विवाह योग्य कन्याओं का वैवाहिक कार्यक्रम भी ज्यादा होंगे।

अथ रसेशो भौमः तस्य फलम्

यदि धरा तनयो रसपो भवेन रसयुक्ता राशि जनता शुभा।
नरपतिर्विषमो जनता पदोन जलदो बहुवृष्टि करोभुवि॥

वर्ष के रसेश भौम का फल—भूमिपुत्र मंगल रसपति होने से अन्न की पैदावार अच्छी होगी। जनता में शुभ दायक स्थिति सौहार्द वातावरण से शारीरिक स्वास्थ्य रोगादि का निवारण होगा। राजाओं में पद प्राप्ति की होड़ में काफी विवाद तथा रक्त धरा युक्ता यानि धरती रक्त से पोषित होने कारक एवं वर्षा से बाढ़ आदि का प्रभाव बढ़ेगा। फलतः जन-धन की हानि व भूकम्प का योग भी करेगा। ज्वालामुखी फटने से प्राकृतिक आपदा का योग करेगा।

अथ नीरसेशो सूर्य तस्य फलम्

नीरसाधिपति सूर्य नरवंचला स्ताम्र चन्दन रत्न माणिक्य मुक्ताअपि।
धर्म कर्म अपि र्यं प्रजावेत् मधोगत चापदे कृशलत्वा यदा कदा॥

वर्ष के नीरसेश रवि का फल—नीरसेश पद पर रवि विराजमान होकर विश्व में आपकी रश्मि किरणें-तांबा, चन्दन, रत्न, माणिक्य, मोती, दवाओं, ज्वैलर्स सामग्री, नाना प्रकार के रत्न आदि में वृद्धि करेगा। औषधि बाजार विशेष तेज। कल-कारखानों में वृद्धि। नवीन राष्ट्रीय योजनाओं का लोकार्पण का ज्यादा योग करेगा। धार्मिक कृत्यों में अनाचार का गुप्त रहस्य चलता हुआ लाभ या हानि से परे होकर धोखा-कपट का योग ज्यादा बनेगा। चापलूसी की हद को तथागतों में प्रयोग करते हुए यत्र-तत्र चोरी, नाकाबंदी या उत्साह हीनता का योग बनेगा।

अथ फलशो गुरुः तस्य फलम्

सुरगुरुः फल नायकतां गतो गतभया वन राशि महा द्रुमाः।
यजन याजन कोत्सव मन्दिरा श्रुति विचार पराःद्वज पूर्वकाः॥

वर्ष के फलेश गुरु का फल—वर्षा श्रेष्ठ होगी। इससे कृषि पैदावार बढ़ेगी। वृक्षों में तथा बेलों में फल प्रचुर मात्रा में लगेंगे। जनता में निर्भीकता बढ़ेगी। मानव मात्र धार्मिक तथा सत्य निष्ठा के कार्यों में संलग्न रहेंगे। गुप्त रहस्यों का भण्डा फोड़ कार्य भी स्वतः ही आपसी फूट से प्रकट होकर पापाचार के प्रति भय बढ़ेगा।

अथ धनेशो सूर्यः तस्य फलम्

द्रविणपो यदि वासरपो यदा वणिजतो बहु द्रव्य समागमः।
गज तुरंगम मेष खरोष्ट्रतो धनचयं लभते विक्रयात्॥

वर्ष के धनेश सूर्य का फल—कोष का स्वामी सूर्य होने से व्यापारियों को व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। घोड़ा, ऊंट, हाथी, भेड़, बकरी आदि पशुओं का क्रय-विक्रय करने वालों को भी लाभ प्राप्त होगा। देश के आर्थिक संकट दूर करने के कारगर उपाय होंगे। यातायात के साधनों का विस्तार होगा। विदेशी व्यापारिक कार्य क्षेत्र बढ़ेगा। नवीन व्यापार नीति की अवधारणा बनेगी।

अथ दुर्गेशो गुरुः तस्य फलम्

सुरगुरो गढ़पे नय शोभिता नरवराः नरपा करपालिताः।
गिरिपुरै नगेरषु समं सुखं सुभमति द्विज शस्त्रवतांविशाम्॥

वर्ष के दुर्गेश गुरु का फल—शासन व्यवस्था में सुदृढ़ता आयेगी या परिवर्तन का संकेत बनेगा। प्रशासन में सुदृढ़ता से प्रजा में सुख-शांति का विस्तार होगा। चोरी, डकैती, लूटपाट की वारदातें कम होंगी। शासक [illegible] का संचालन करेंगे। वन, जंगल, पहाड़ों, नगरों की सुरक्षा की बढ़ोत्तरी तथा निजी धार्मिक संस्थाएं अग्रसर सेवा का लाभ प्राप्त करेंगी।

अथ वर्षनाम आश्विनः तत्फलम्

सुभिक्षं पूर्वसस्यं स्या ज्वर रोगांकुल जगत।
आश्विने शोभना वृष्टिर्नृपो सौख्य करीमदा॥

वर्षनाम आश्विन का फल —आश्विन वर्षनाम होने से सुकाल योग, समयानुकूलता, प्रतिकूलता का योग, रोग बाधा ज्यादा बढ़ेगी। ज्वर पीड़ा से जन-जन चिन्तित होंगे। वर्षा की अधिकता से बाढ़ के अधिकांश योग जन-धन की हानि का कारक होगा। राजसत्ता में सुखदायक कार्य योजना का निर्माण होगा। आश्विन मास में भी वर्षा श्रेष्ठ होगी।

चतुमेघानां मध्ये "आवर्तः" नाम मेघः तत्फलम-वर्षा की न्यूनता से फसलों को भारी नुकसान होता है। जौ, चावल, गेहूं, कपास, घी आदि में कमी होने के कारण इनके मूल्यों में विशेष तेजी होती है।

वर्ष के चार स्तंभ विचार-इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती का योग 68.15% बना है। अतः वर्षा अच्छी होगी। उभा. नक्षत्र के शुभारंभ से कहीं-कहीं अकाल का योग बनेगा। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी का योग 85% के योग से तृण, घास श्रेष्ठ उत्पन्न होगा। अतः रुई, पाट, बारदाना का उत्पादन भी अच्छा होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा का अभाव होने से वायु वेग कम चलेगा। आषाढ़ सुदी प्रतिपदा को 15% पुनर्वसु के योग से अन्न की पैदावार कम बनेगी। तथा घास, चारा या अन्य वस्तुएं ज्यादा उत्पादित होंगी।

रोहिणी निवासे 'पर्वते' तत्फलम्-वर्षा भिन्न-भिन्न रूप में कहीं ज्यादा तो कहीं कम होगी। रोहिणी पर्वत बसे मेघ माला अशुभ योग। कृषक वर्ग दूर हटे जलधारा बने कुयोग॥

समय निवासो 'कुंभकार गृहे' तस्य फलम्- समय निवासो कुंभ गृहे युक्ति भूक्ति योग। परिश्रम ज्यादा, लाभ कम, ऐसा बनेगा योग॥ ऐसा बनेगा योग, जन-धन त्राहि मचाये। सुखी रहे वो लोग, श्रम से जो जी ना चुराये॥ जी ना चुराये श्रम से, लगे कार्यरत योग। तो समझो परिश्रमी वही जन, दुःख निवृत होय॥

समय वाहन 'दुर्दुरः' तस्य फलम्-सम्वत् का वाहन दुर्दुरः (मेढ़क) होने से कुछ प्रदशों में भारी वर्षा होने से बाढ़ादि का प्रकोप जारी रहेगा। कृषि, धन, जन हानि का योग बनेगा। कुछ प्रदेशों में अल्पवृष्टि से फसलों को नुकशान का भी योग बनता है।

लाभ-खर्च कोष्ठक वि. सं. 2069

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	11	5	11	5	8	11	5	11	8	2	2	8
व्यय	5	14	11	8	5	11	14	5	11	14	14	11

आय-व्यय देखने की विधि-अपनी राशि के आय-व्यय अंको को जोड़कर उसमें 1 घटा दें, शेष को 8 से भाग करने पर यदि अंक 1 शेष बचे तो लाभ, 2 सुख, 3 चिन्ता, 4 रोग, 5 अपयश, 6 सम्मान, 7 विजय, 8 या 0 बचें तो हानि योग हैं। यह फल सारांश रूप में माना जाता है।

हानि से परे होकर धोखा-कपट का योग ज्यादा | कम होगी। शासक वर्ग नीति और न्यायपूर्वक कार्य | हानि योग है। यह फल सारांश रूप में माना जाता है।

श्री चैत्र शुक्ल पक्षः- 1

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 23 मार्च से 6 अप्रैल सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 3 चैत्र से 17 चैत्र तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
		ति	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि	प्र	मु	अं	रा.घं.मि.	रा	अं	क	वि		घं	मि	घं	मि	
3	शु	1	39	10	22	3	उ.भा.	15	34	12	36	ब्र	50	43	26	40	किं	6	41	9	3	30	25	6	23	18	33	10	29	23	मीन	11	8	43	47	59/34	6	24	19	21	संवत्सरारंभः, वर्षफल श्रवण, वासन्तीय नवरात्रारंभः, घट A
4	श	2	44	50	24	18	रे	22	12	15	14	ऐं	52	37	27	24	बा	11	55	11	8	30	29	6	22	18	33	11	30	24	मे. 15।14	11	9	43	19	32	6	57	20	14	चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, पंचक 15।14 तक, कृतिका में B
5	र	3	51	13	26	50	अ	29	35	18	10	वै	55	2	28	21	तै	17	59	13	32	30	33	6	20	18	34	12	ज.उ./अ.1	25	मेष	11	10	42	48	29	7	33	21	7	जमादि उल अव्वल मु. मा. 5 प्रा., गौरी 3, गणगौर पूजन, C
6	चं	4	57	59	29	31	भ	37	27	21	18	वि	57	43	29	24	व	24	36	16	10	30	38	6	19	18	34	13	2	26	वृ. 28।06	11	11	42	15	27	8	10	22	0	भ. 16।10 से 29।31 तक, विनायक 4 व्रत, वक्री पू.भा. D
7	मं	5	60	0	-	-	कृ	45	24	24	28	प्री	60	0	-	-	ब	31	24	18	52	30	42	6	18	18	35	14	3	27	वृष	11	12	41	40	25	8	52	22	52	श्री पंचमी, नाग 5 व्रत, कल्पादि 5, हय 5, श्री राम जन्मोत्सव प्रा.
8	बु	5	4	43	8	10	रो	52	55	27	27	प्री	0	24	6	27	बा	4	43	8	10	30	46	6	17	18	36	15	4	28	वृष	11	13	41	3	23	9	36	23	42	पंचमी तिथि वृद्धि, वृषे शुक्रः 14।21, पूर्वोदयं बुधः 15।43, E
9	गु	6	10	47	10	34	मृ	59	26	30	2	आ	2	36	7	18	तै	10	47	10	34	30	51	6	16	18	36	16	5	29	मि. 16।48	11	14	40	24	21	10	24	-	-	E स्कन्द 6 व्रत F आयंबिल औली प्रा. (जैन)
10	शु	7	15	38	12	30	आ	60	0	-	-	सौ	3	58	7	50	व	15	38	12	30	30	55	6	15	18	37	17	6	30	मिथुन	11	15	39	42	18	11	16	24	31	भ. 12।30 से 25।14 तक, रेवती में सूर्यः 29।55, F
11	श	8	18	48	13	45	आ	4	30	8	1	शो	4	6	7	52	ब	18	48	13	45	30	59	6	13	18	37	18	7	31	क. 27।01	11	16	38	58	16	12	11	25	17	श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मां तारा जयंती D में बुधः 21।10
12	र	9	19	56	14	11	पुन	7	36	9	15	अ	2/59	44/38	7/30	18/4	कौ	19	56	14	11	31	3	6	12	18	38	19	8	A1	कर्क	11	17	38	11	13	13	9	26	1	अप्रैल मा.4 ता. 30 प्रा., श्रीराम नवमी, नवरात्र पूर्ति, श्री राम G
13	चं	10	18	52	13	44	पु	8	36	9	37	धृ	54	51	28	8	ग	18	52	13	44	31	8	6	11	18	38	20	9	2	कर्क	11	18	37	23	12	14	8	26	43	भ. 25।12 से, वक्री बुध कुम्भ में 16।15
14	मं	11	15	39	12	26	श्ले	7	28	9	9	शू	48	27	25	33	वि	15	39	12	26	31	12	6	10	18	39	21	10	3	सिं. 9।09	11	19	36	31	8	15	10	27	22	भ. 12।26 तक, कामदा 11 व्रत (सर्वेषां), लक्ष्मीकांत डोलोत्सव
15	बु	12	10	29	10	21	म	4/59	22/35	7/29	54/59	गं	40	37	22	24	बा	10	29	10	21	31	16	6	9	18	39	22	11	4	सिंह	11	20	35	38	7	16	13	28	1	मार्गी बुधः 14।53, प्रदोष व्रत, हरिदमनोत्सव, फातिहा यजदहूम (मु.)
16	गु	13	3	42	7	37	पू.फा.	53	35	27	34	वृ	31	37	18	47	तै	3	42	7	37	31	20	6	8	18	40	23	12	5	कं. 11।25	11	21	34	43	5	17	18	28	41	भ. 28।33 से, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयंती (जैन), *
0	गु	14	55	39	28	33	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी क्षयः * दमनक 14
17	शु	15	46	51	24	51	ह	46	46	24	49	ध्रु	21	49	14	50	वि	21	21	14	39	31	25	6	7	18	41	24	13	6	कन्या	11	22	33	45	2	18	25	29	21	भ. 14।39 तक, मीने बुधः 16।1, श्री सत्यनारायण, गुड फ्राइडे H

A स्थापन, ध्वजा रोपण, गुड़ी पड़वा, गौतम ज., आर्य समाज सथापना दिवस B शुक्रः 29।35, सिंधारा, चेटी चण्ड, झूलेलाल ज. (सिं. सं.) C मत्स्य ज., मनोरथ 3, आंदोलन 3, सौभाग्य 3 व्रत, मन्वादि 3

G जन्मोत्सव, मूर्ख दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस H पूर्णिमा व्रत, पुण्यं च, श्री हनुमज्जयंती, मेला सालासर (राज.), आयंबिल औली पूर्ण (जैन.), वैशाख स्नान प्रा., मन्वादि 15

चैत्र शु. 8 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 31 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	2	4	11	0	1	6	7	1	11	10	8
16	18	10	0	19	2	3	14	14	10	8	15
38	41	55	44	3	32	20	10	10	49	0	30
58	16	26	13	24	43	12	31	31	37	43	1
59	737	11	27	13	67	4	3	3	3	1	0
16	43	19	44	08	39	18	11	11	25	54	21
-	-	व	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.भा. 3	आर्द्रा 3	मघा 3	पू.भा. 4	भर. 2	कृत्ति. 2	चित्रा 4	अनु. 4	रोहि. 2	उ.भा. 3	शत. 1	पू.षा. 1

1 गु. | ने.11 | 2 शु. के. | सू. | बु. ह. 12 | 9 प्लू. | 10 | 3 चं. | 6 | 4 | 8 रा. | 5 मं. | 7 श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार, शुभ नवरात्रा, वासंतीय योग, उ.भा. नक्षत्र, चन्द्र-मीन, सूर्य-मीन, बुध-मीन तथा विश्वावसु नामास्य संवत्सर के योग से शुभारंभ हुआ है। राजनैतिक भू-चाल का योग तथा रोग बाधा का योग बनेगा। वर्ष का शुभारंभ कन्या लग्न में होने से तिलहन महंगे। धातु बाजार में उठापटक के योग बनेंगे। दक्षिण दिशा में विशेष रोग या मरी पड़ने का योग बनता है। बंगाल में उपद्रव बढ़ेगा। पश्चिम में लोक विग्रह होगा। मध्य प्रदेश में प्रजातंत्र भंग जैसा योग बनेगा। घृत सस्ता तथा अन्न महंगा होगा। पंचमी तिथि वृद्धि योग से संवत्सर का फल शुभ दायक रहेगा। चतुर्दशी का क्षय राजपक्ष में विद्रोह का योग करता है। आणविक स्पर्धा का योग सर्वत्र छाया रहेगा। प्रतिपदा को शुक्र तथा शुक्र ही राजा एवं मंत्री होने से सौन्दर्य संबंधी वस्तुओं का वर्चस्व बढ़ेगा। शासन भी स्त्री वर्ग के लिए विशेष घोषणाएं करेगा। शेयर्स बाजार पीड़ित रहेगा। धार्मिक आयोजनों में कहीं पर विवाद का बवण्डर बढ़ेगा। तथा अशोभनीय घटनाएं घटेंगी। **व्यापार भविष्य**-मीन राशि त्रिकुग्रहादि योग से धान्य महंगा। तिलहन भी महंगा तथा दलहन में मंदापन रहेगा। **पचंमी वृद्धि तिथौ योग रोहिणी नखत। व्यापारी चिन्ता करे, देखें लोग हसंत॥** कपास, बिनौला, नमक, गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी तेजी में। सोना, चांदी, तांबा, रुई, गैस में उठापटक। **आकाश लक्षण**-आकाश लक्षण योग में-पक्ष में 25, 29 मार्च, 3, 4, 5 अप्रैल को असम, भूटान, सिक्किम, श्रीलंका, पश्चिम बंगाल, कश्मीर में बादल चाल वायु वेग के साथ बूंदा-बांदी भी। **शकुन विचार**-चैत्र सुदी पंचमी को दक्षिण-पूर्व की हवा चले तथा वर्षा हो तो, इस वर्ष धान्य के भावों में तेजी रहेगी। **चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां वायुर्दक्षिण-पूर्वयो। वृष्टया सह सदा वर्षे धान्य त्रिगुणता भवेत॥**

ता. 6 अप्रैल ❖ चैत्र शु. 15 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

1 गु. | 11 बु.ने. | के. शु.2 | 12 सू. ह. | 9 प्लू. | 10 | 3 | 6 चं. | रा. 8 | 4 | 5 मं. | 7 श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	5	4	10	0	1	6	7	1	11	10	8
22	11	10	29	20	8	2	13	13	11	8	15
33	12	4	55	23	7	53	51	51	10	11	31
45	29	1	57	15	21	45	27	27	0	36	26
59	890	6	5	13	54	4	3	3	3	1	0
2	11	36	49	25	20	29	11	11	23	45	09
-	-	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
रेव. 2	हस्त 1	मघा 4	पू.भा. 3	भर. 3	कृत्ति. 4	चित्रा 3	अनु. 4	रोहि. 2	उ.भा. 3	शत. 1	पू.षा. 1

आर्यभट्ट पंचांगम्

वैशारव कृष्ण पक्षः- 2

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 7 से 21 अप्रैल सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 18 चैत्र से 1 वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विशेष
18	श	1	37	43	21	13	चि	39	37	21	56	व्या	11	33	10	43	बा	12	20	11	1	31	29	6	5	18	41	25	14	7	तु. 11।23	11	23	32	45	59/0	19	33	6	4	A (ठंडा वासी भोजन), गुरु अर्जुनदेव ज. (प्रा. मत से)
19	र	2	28	41	17	33	स्वा	32	34	19	6	ह	1/50	10/59	6/26	32/28	तै	3	11	7	21	31	33	6	4	18	42	26	15	8	तुला	11	24	31	43	58/58	20	42	6	51	भ. 27।47 से, रोहिण्यां शुक्रः 8।10 ईस्टर सण्डे
20	चं	3	20	8	14	7	वि	26	4	16	29	सि	41	24	22	37	वि	20	8	14	7	31	37	6	3	18	42	27	16	9	वृ. 11।06	11	25	30	40	57	21	50	7	42	भ. 14।7 तक, कृष्ण 4 व्रत
21	मं	4	12	27	11	1	अनु	20	27	14	13	व्य	32	38	19	6	बा	12	27	11	1	31	41	6	2	18	43	28	17	10	वृश्चिक	11	26	29	34	54	22	54	8	38	अनुसूइया जयंती
22	बु	5	5	55	8	23	ज्ये	16	3	12	26	वरि	24	55	15	59	तै	5	55	8	23	31	45	6	1	18	43	29	18	11	ध. 12।26	11	27	28	27	53	23	51	9	38	गुरु तेगबहादुर जयंती (प्रा. मत से)
23	गु	6	0	47	6	19	मू	13	4	11	14	प	18	23	13	21	व	0	47	6	19	31	50	6	0	18	44	30	19	12	धनु	11	28	27	18	51	24	0	10	40	भ. 6।19 से 17।31 तक, शीतला पूजन, बूढ़ा बासोड़ा A
0	गु	7	57	9	28	52	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षयः
24	शु	8	55	8	28	2	पूषा	11	38	10	38	शि	13	6	11	14	बा	25	58	16	22	31	54	5	59	18	44	वै.1	20	13	भ. 16।35	11	29	26	7	49	24	44	11	42	सौर वैशाख प्रा., अश्विन्यां मेषे सूर्यः 19।20, उभा. में बुधः B
25	श	9	54	41	27	50	उषा	11	45	10	40	सि	9	6	9	36	तै	24	45	15	52	31	48	5	58	18	45	2	21	14	मकर	0	0	24	54	47	25	30	12	43	मार्गी भौमः 10।55, डॉ. अम्बेडकर जयंती
26	र	10	55	43	28	14	श्र	13	24	11	48	सा	6	19	8	28	व	25	3	15	58	32	2	5	57	18	46	3	22	15	कुं. 23।60	0	1	23	40	46	26	10	13	41	भ. 15।58 से 28।14 तक, पंचक 23।50 से, अनु. 3 में C
27	चं	11	58	4	29	10	ध	16	26	12	30	शुभ	4	40	7	48	ब	26	45	16	38	32	6	5	56	18	46	4	23	16	कुम्भ	0	2	22	24	44	26	47	14	36	वरुथिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), श्री वल्लभाचार्य जयंती
28	मं	12	60	0	-	-	श	20	42	14	12	शु	4	3	7	32	कौ	29	43	17	48	32	10	5	55	18	47	5	24	17	कुम्भ	0	3	21	7	43	27	21	15	30	वरुथिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)
29	बु	12	1	38	6	33	पूभा	26	3	16	19	ब्र	4	19	7	37	तै	1	38	6	33	32	14	5	54	18	47	6	25	18	मी. 9।45	0	4	19	48	41	27	53	16	23	द्वादशी तिथि वृद्धिः, प्रदोष व्रत, भर. 4 में गुरुः 26।18
30	गु	13	6	9	8	21	उभा	32	17	18	48	ऐं	5	20	8	1	व	6	9	8	21	32	18	5	53	18	48	7	26	19	मीन	0	5	18	26	38	28	55	17	16	भ. 8।21 से 21।23 तक, सायन वृषे सूर्यः 21।27, ग्रीष्म D
31	शु	14	11	30	10	28	रे	39	16	21	34	वै	6	59	8	39	श	11	30	10	28	32	22	5	52	18	48	8	27	20	मे. 21।34	0	6	17	4	38	28	58	18	9	पंचक 21।34 तक — D ऋतु प्रा., मास शिवरात्री व्रत
वै.1	श	30	17	30	12	51	अ	46	47	24	34	वि	9	9	9	30	ना	17	30	12	51	32	26	5	51	18	49	9	28	21	मेष	0	7	15	39	35	29	33	19	2	रा. वैशाख प्रा., देवपितृकार्यऽमावस्या, श्री शुकदेव ज., मेला E

B 21।48, वक्री प्लूटो 12।49, वैशाखी पर्व, कालाष्टमी, मीन मलमास पूर्ति, संक्रांति पुण्यं C राहु, रोहि. 1 में केतुः 22।28, मुनि सुव्रतनाथ जन्म-तप (जैन) E पिंजौर (हरि.), विशु (केरल), वैशाख बिहु (असम)

वैशाख कृ. 8 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	8	4	11	0	1	6	7	1	11	10	8
29	23	9	2	21	14	2	13	13	11	8	15
26	46	39	51	58	9	21	29	29	33	23	31
7	12	22	52	25	3	51	12	12	22	20	40
58	825	1	38	13	49	4	3	3	3	1	0
49	28	15	12	43	31	36	11	11	18	37	3
-	-	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
रे. 4	पूषा. 4	मघा 3	पूभा. 4	भर. 3	रोहि. 2	चित्रा 2	अनु. 4	रोहि. 2	उ.भा. 3	शत. 1	पूषा. 1

1 गु.
2 शु. के.
नें.11
सू.
10
बु. ह. 12
9 प्लू. चं.
3
6
4
8 रा.
5 मं.
7 श.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवार से शुरू होकर शनि अमावस्या तक रहेगा। पक्ष में कृष्णा सप्तमी का क्षय होना, द्वादशी की वृद्धि होना काफी परिवर्तन कारक रहेगा। **जेहि पखवारे तिथि घटे, वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु मंदी बिकै, महंगाई हट जाय॥** अतः महंगाई पर नियंत्रण रहेगा। मंदी का योग बनेगा। इस पक्ष में वैशाख कृष्ण अष्टमी शुक्रवार को भुवन भास्कर सूर्यदेव उच्च राशि मेष में गोधूलिक वेला में प्रवेश करेंगे। ऊभी संक्रांति 45 मुहूर्त्ती दृष्टि पश्चिम में होने से पश्चिमी देशों में चमत्कारिक घटनाएं विद्युतीयक्रम संबंधी बनेगी या घटेगी। **शुक्रवार के दिन कभी सूर्य संक्रमण होय। हाथी, घोड़ा, ऊंट, गुड़ में महंगापन होय॥** अर्थात् शुक्रवार की संक्रांति होने से हाथी, घोड़ा, ऊंट तथा गुड़ में तेजी होगी। इस चन्द्र मास में पांच शनिवार होने से-शनिवारा यदा पंच जायन्ते रवि पंचकम। महार्घ जायन्ते धान्य रोग शोका-कुला मही॥ फलतः रोग-पीड़ा, महामारी, प्राकृतिक प्रकोप, जनता में विद्रोह एवं अपहरण संबंधी घटनाएं घटेंगी। कहीं-कहीं युद्धाग्नि तुल्य योग-स्वीडन, पौलेण्ड, ईराक, ईरान, श्रीलंका, आयरलैण्ड में घटेंगी। कीड़े-मकोड़ों तथा अन्य अण्डज जीवों का प्रकोप बढ़ेगा। व्यापार भविष्य-चावल, गेहूं, चना, जौ, मौंठ, बाजरा, मक्का, अरहर, मटर में तेजी चलेगी। पाट, बारदाना, सूत, सन, रेशम में घटाबढ़ी का योग चलेगा। धातु बाजार एकतरफा चलेगा। आकाश लक्षण-इस पक्ष में 8, 10, 12, 14, 16, 20, 21 अप्रैल को मैसूर, उड़ीसा, केरल, श्रीलंका, उत्तर प्रदेश, आसाम, राजस्थान, सिक्किम में वर्षा [illegible] विचार-वैशाख कृष्ण प्रतिपदा को सूर्य बादलों में उदय हो तो

ता. 21 अप्रैल ❖ वैशाख कृ. 30 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

2 शु.के.
12 बु. ह.
3
11 नें.
1 सू. चं. गु.
10
4
7 श.
9 प्लू.
5 मं.
6
8 रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
0	0	4	11	0	1	6	7	1	11	10	8
7	3	9	10	23	20	1	13	13	11	8	15
15	55	55	0	49	14	44	3	3	59	35	30
39	38	40	9	18	22	59	46	46	18	17	5
58	834	4	64	13	42	4	3	3	3	1	0
35	52	30	1	58	22	36	11	11	11	25	18
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि 3	अश्वि 2	मघा 3	उभा. 2	भर. 4	भर. 3	चित्रा 3	अनु. 2	कृत्ति. 4	उ.भा. 3	शत. 1	पूषा. 1

ठड़ीसा, करेल, श्रीलंका, उत्तर प्रदेश, आसाम, राजस्थान, सिक्किम में वर्षा कारक योग बनता है। पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रदेश में वायु एवं बादल चाल। शकुन विचार-वैशाख कृष्ण प्रतिपदा को सूर्य बादलों में उदय हो तो

वैशारव शुक्ल पक्षः- 3

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 22 अप्रैल से 6 मई सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 2 से 16 वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	विशेष
2	र	1	23	57	15	25	भ	54	38	27	41	प्री	11	41	10	30	ब	23	57	15	25	32	30	5	50	18	50	10	29	22	मेष	0	8	14	12	58/33	6	10	19	54	चन्द्रदर्शनम् मु. 15, महर्घता, देवदामोदर पुण्यं, गुरु अंगददेव ज. A
3	चं	2	30	36	18	3	कृ	60	0	-	-	आ	14	24	11	34	कौ	30	36	18	3	32	34	5	49	18	50	11	1	23	वृ. 10।28	0	9	12	44	32	6	50	20	47	जमादि-उस्सानी मु.मा. 6 प्रा., श्री शिवाजी ज. A (प्रा. मत से)
4	मं	3	37	7	20	39	कृ	2	35	6	50	सौ	17	6	12	38	तै	3	55	7	22	32	37	5	49	18	51	12	2	24	वृष	0	10	11	13	29	7	34	21	38	अक्षय तृतीया, श्री परशुराम ज., मातंगी ज., त्रेतायुगादि 3, B
5	बु	4	43	9	23	2	रो	10	13	9	52	शो	19	31	13	35	व	10	14	9	53	32	41	5	47	18	51	13	3	25	मि. 23।18	0	11	9	40	27	8	21	22	27	भ. 9।53 से 23।2 तक, अगस्तास्तं 28।29, मृगे. शुक्र: C
6	गु	5	48	15	25	4	मृ	17	10	12	38	अ	21	21	14	19	ब	15	51	12	7	32	45	5	46	18	52	14	4	26	मिथुन	0	12	8	6	26	9	11	23	13	अरण्यां सूर्य: 11।03, रेवती में बुध: 18।34, श्री आद्य D
7	शु	6	52	1	26	33	आ	23	2	14	58	सु	22	19	14	41	कौ	20	20	13	53	32	49	5	45	18	53	15	5	27	मिथुन	0	13	6	29	23	10	4	23	57	चन्दन षष्ठी (बिहार) F हितहरिवंश महाप्रभु ज.
8	श	7	54	6	27	23	पुन	27	26	16	43	धृ	22	7	14	35	ग	23	18	15	4	32	52	5	44	18	53	16	6	28	क. 10।20	0	14	4	50	21	10	59	-	-	भ. 27।23 से, श्री गंगासप्तमी, गंगा पूजन
9	र	8	54	16	27	26	पु	30	3	17	44	शू	20	30	13	55	वि	24	27	15	30	32	56	5	43	18	54	17	7	29	कर्क	0	15	3	9	19	11	56	24	38	भ. 15।30 तक, श्री दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती
10	चं	9	52	23	26	40	श्ले	30	42	17	59	गं	17	20	12	38	बा	23	36	15	9	33	0	5	42	18	54	18	8	30	सिं. 17।59	0	16	1	26	17	12	55	25	17	श्री सीता नवमी, श्री जानकी जयंती
11	मं	10	48	32	25	6	म	29	22	17	26	वृ	12	32	10	43	तै	20	43	13	59	33	3	5	42	18	55	19	9	M1	सिंह	0	16	59	41	15	13	55	25	55	मई मा.5 ता. 31 प्रा., मई दिवस
12	बु	11	42	53	22	50	पूफा	26	11	16	9	ध्रु	6/58	12/25	8/29	10/3	व	15	56	12	3	33	7	5	41	18	56	20	10	2	कं. 21।43	0	17	57	54	13	14	57	26	33	भ. 12।3 से 22।50 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (सर्वे.), श्री F
13	गु	12	35	42	19	57	उफा	21	22	14	13	ह	49	30	25	28	ब	9	29	9	27	33	11	5	40	18	56	21	11	3	कन्या	0	18	56	5	11	16	1	27	12	कृति. 1 में गुरु: 8।10, रुक्मिणी 12, पश्चिमास्तं गुरौ: 28।28
14	शु	13	27	21	16	36	ह	15	18	11	46	व	39	41	21	32	कौ	1	40	6	19	33	14	5	39	18	57	22	12	4	तु. 22।24	0	19	54	14	9	17	8	27	53	प्रदोष व्रत, नृसिंह-छिन्नमस्ता ज., अशोक त्रिरात्री व्रत प्रारंभ
15	श	14	18	14	12	56	चि	8	20	8	58	सि	29	19	17	22	व	18	14	12	56	33	18	5	38	18	57	23	13	5	तुला	0	20	52	21	7	18	17	28	37	भ. 12।56 से 23।02 तक, अश्विन्यां मेषे बुध: 21।7, G
16	र	15	8	45	9	8	स्वा	0/53	56/29	6/27	0/1	व्य	18	43	13	7	ब	8	45	9	8	33	21	5	38	18	58	24	14	6	वृ. 21।45	0	21	50	26	5	19	27	29	27	पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पूजनम्, यमाय जल कुंभदान, H

पश्चिमास्तं गुरौ: 3 मई

B कल्पादि 3, श्री बांके बिहारी जी के चरण दर्शन (वृंदावन) C 23।14, विनायक 4 व्रत D जगद्गुरु शंकराचार्य व सूरदास ज., श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भा.)

E विश्व मजदूर दिवस, महावीर स्वामी कैवल्य-ज्ञान दिवस G सत्यनारायण व पूर्णिमा व्रत, श्री कूर्म जयंती H अशोक त्रिरात्री व्रत व वैशाख स्नान पूर्ण, ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा. (जैन)

वैशाख शु. 8 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 29 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
0	3	4	11	0	1	6	7	1	11	10	8
15	10	10	19	25	25	1	12	12	12	8	15
3	5	55	59	41	11	8	38	38	24	45	26
9	41	19	9	37	25	56	20	20	3	30	35
58	756	9	82	14	32	4	3	3	3	1	0
19	39	38	38	07	37	25	11	11	1	11	32
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

2 शु.के. | 12 बु.ह. | सू. | 3 | गु. 1 | 10 | 11 ने. | 4 चं. | 7 श. | 5 मं. | 9 प्लू. | 6 | 8 रा.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष रविवार भरणी नक्षत्र के योग से शुरू हुआ है। सूर्य-चन्द्र प्रतिपदा को एक ही राशि मेष में होने से-सूर्य चन्द्र का योग राशि का हो एक धरातल मेल। महावृष्टि का योग बने, कहे ज्योतिष का ग्रह युक्ति का खेल॥ यदि रात्रि के समय सूर्य-चन्द्र की एक ही राशि में युक्ति हो तो वर्षा का अच्छा योग बनता है। कृष्ण 14 को शुक्र-रेवती के योग से उत्तम अन्न प्राप्ति या उत्पत्ति का योग बनता है। शनिवारी अमावस्या दुर्भिक्ष कारक-फलत: मध्यम लाभ होगा। वैशाख शुक्ला तीज को कृतिका नक्षत्र के योग से वर्षा भी मध्यम बनती है। शुक्ला पंचमी को गुरुवार होने से सुभिक्ष योग। पूर्णिमा को स्वाती नक्षत्र योग से दुर्भिक्ष। विशाखा नक्षत्र का क्षय होना-महंगाई का घटक बनता है। शुक्रवार की संक्रांति होने से प्रजा सुखी होगी। स्वर्ण, चांदी के भावों में तेजी होगी। मंगल सिंहस्थ होने से भूमि-भवन के लेनदेन बढ़ेंगे। मेष राशि का गुरु भी आध्यात्मिक कार्यों में तेजी कारक होगा। प्रशासकों का वर्चस्व बढ़ेगा। महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटका की राजनीति में चाल बदलेगी। हत्याओं का बोलबाला ज्यादा होगा। **व्यापार भविष्य**-सोना, चांदी, धातु बाजार में तेजी बनेगी। गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, मोटर वाहन के भावों में तेजी होगी। रसकस, लवण, घृत के भावों में मंदी का योग बनता है। ऊन, कपास के भावों में उथल-पुथल का योग बनेगा। **आकाश लक्षण**-दिनांक 24, 29, 30 अप्रैल तथा 2, 4, 5 मई को असम, तिरुवनन्तपुरम, पूर्वी उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, बिहार, विन्ध्य प्रदेश, मुम्बई, भूटान, सिक्किम में वर्षा का अच्छा योग है। हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**-सुदी पंचमी वैशाख में, जब सूरज हो अस्त। पुरवा पवन चलै, करो संग्रह धान्य समस्त। वैशाखी पूनम तथा जेठ बदी दिन आठ। जो चालै पुरवा पवन, तो वर्षा का ठाठ॥

ता. 6 मई ❖ वैशाख शु. 15 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

2 शु.के. | 12 ह. | 3 | 1 सू. बु. गु. | 10 | 11 ने. | 4 | 7 चं. | 9 | 5 मं. | प्लू. | 6 | 8 रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
0	6	4	0	0	1	6	7	1	11	10	8
21	19	12	0	27	28	0	12	12	12	8	15
50	40	18	33	20	16	39	16	16	44	52	22
26	55	37	55	59	0	1	5	5	29	55	2
58	912	13	96	14	22	4	3	3	2	0	0
5	42	37	34	12	17	9	11	11	50	58	44
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः- 4

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 7 से 20 मई सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 17 से 30 वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
0	र	1	59	18	29	21	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0
17	चं	2	50	21	25	45	अनु	46	31	24	13	वरि	8/58	15/12	8/28	55/54	तै	24	45	15	31
18	मं	3	42	15	22	30	ज्ये	40	23	21	45	शिव	48	57	25	11	व	16	11	12	5
19	बु	4	35	23	19	45	मू	35	27	19	46	सि	40	45	21	53	ब	8	40	9	3
20	गु	5	30	1	17	35	पूषा	32	3	18	24	सा	33	48	19	6	कौ	2	31	6	35
21	शु	6	26	23	16	7	उषा	30	22	17	43	शुभ	28	17	16	53	व	26	23	16	7
22	श	7	24	36	15	24	श्र	30	31	17	46	शु	24	16	15	16	ब	24	36	15	24
23	र	8	24	42	15	26	ध	32	31	18	33	ब्र	21	44	14	15	कौ	24	42	15	26
24	चं	9	26	34	16	10	श	36	13	20	2	ऐं	20	37	13	47	ग	26	34	16	10
25	मं	10	30	0	17	32	पूभा	41	25	22	5	वै	20	43	13	49	वि	30	0	17	32
26	बु	11	34	43	19	24	उभा	47	46	24	38	वि	21	51	14	16	ब	2	14	6	25
27	गु	12	40	22	21	40	रे	54	58	27	30	प्री	23	45	15	1	कौ	7	28	8	30
28	शु	13	46	37	24	9	अ	60	0	-	-	आ	26	11	15	58	ग	13	27	10	53
29	श	14	53	8	26	45	अ	2	42	6	34	सौ	28	53	17	3	वि	19	52	13	26
30	र	30	59	36	29	20	भ	10	35	9	43	शो	31	38	18	8	चतु	26	24	16	3

रा.मि.	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं	मि.	विशेष
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा तिथि क्षयः
17	33	24	5	37	18	59	25	15	7	वृश्चिक	0	22	48	30	58/4	20	35	6	22	रविन्द्रनाथ टैगोर ज., श्री नारद ज., वीणादि वाद्य यंत्र दानम्
18	33	28	5	36	18	59	26	16	8	ध. 21।45	0	23	46	32	2	21	38	7	22	भ. 12।5 से 22।30 तक, मां आनंदमयी ज., कृष्ण चतुर्थी व्रतं
19	33	31	5	35	19	0	27	17	9	धनु	0	24	44	33	1	22	35	8	25	A द्वादशी, श्री अनन्त नाथ जन्म-तप (जैन)
20	33	34	5	35	19	0	28	18	10	म. 24।09	0	25	42	32	57/59	23	25	9	30	कृतिका में सूर्यः 29।17, पूफायां भौमः 13।20
21	33	37	5	34	19	1	29	19	11	मकर	0	26	40	30	58	24	0	10	33	भ. 16।7 से 27।39 तक
22	33	40	5	33	19	2	30	20	12	मकर	0	27	38	27	57	24	9	11	33	कालाष्टमी
23	33	44	5	33	19	2	31	21	13	कुं. 6।04	0	28	36	22	55	24	47	12	31	पंचक 6।4 से, भरण्यां बुधः 13।11, श्रीदादुदयाल पुण्य दिवस
24	33	47	5	32	19	3	ज्ये. 1	22	14	कुम्भ	0	29	34	16	54	25	22	13	26	भ. 28।45 से, सौर ज्येष्ठ प्रा., वृषेऽर्कः 16।10
25	33	50	5	32	19	3	2	23	15	मी. 15।32	1	0	32	9	53	25	55	14	20	भ. 17।32 तक, वक्री शुक्रः 19।50, पूर्वास्तं बुधः 6।12
26	33	52	5	31	19	4	3	24	16	मीन	1	1	30	0	51	26	28	15	12	कन्यायां चित्रा 2 में शनि 8।9, अपरा एकादशी व्रत (सर्वे.)
27	33	55	5	30	19	5	4	25	17	मे. 27।30	1	2	27	51	50	27	0	16	5	पंचक 27।30 तक, वृषे कृति.2 में गुरुः 9।53, मधुसूदन A
28	33	58	5	30	19	5	5	26	18	मेष	1	3	25	40	49	27	34	16	57	भ. 24।9 से, प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारंभ (अमा. पक्ष)
29	34	1	5	29	19	6	6	27	19	मेष	1	4	23	28	48	28	10	17	50	भ. 13।26 तक, उ.भा. 4 हर्षल, मास शिवरात्री व्रत
30	34	4	5	29	19	6	7	28	20	वृ. 16।30	1	5	21	15	47	28	49	18	42	सायन मिथुन में सूर्यः 20।38, कृति. बुधः 7।38, B

B देवपितृकार्यऽमावस्या, भाऊका 30, शनैश्चर जन्म दि., वटसावित्री व्रत पूजनम् (मरु.)

ज्येष्ठ कृ. 8 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 13 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
0	9	4	0	0	1	6	7	1	11	10	8
28	29	14	12	29	29	0	11	11	13	8	15
36	41	6	44	0	49	11	53	53	3	58	16
22	32	47	17	31	47	23	49	49	36	51	14
57	786	16	110	14	7	3	3	3	2	0	0
55	29	51	10	13	06	47	11	11	39	45	54
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
भर. 4	धनि. 1	मघा 4	अश्वि 3	भर. 4	मृग. 1	चित्रा 2	अनु. 2	कृति. 4	उ.भा. 2	धनि. 4	मूल 4

[पक्ष फलम्]

ता. 13 मई: 1 बु. गु., 2 शु. के. सू., 3, 4, 5 मं., 6, 7 श., 8 रा., 9 प्लू., 10 चं., 11 ने., 12 ह.

यह पक्ष प्रतिपदा क्षय, रविवार योग से रविवार शनिश्चर जयंती तक चलेगा। इस पक्ष में सू+गु+बु ग्रह की त्रिक् युक्ति। अमावस्या को के+गु+शु+सू चतुर्थ ग्रहादि युक्ति होना-गुरु **शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशय॥** अर्थात् इस योग से कहीं आंतरिक अशांति व युद्धमय वातावरण बनेगा। कहीं अकालिक वर्षा से हानि भी होगी। कहीं-कहीं पर छत्रभंग योग भी बनेगा। राजनीतिज्ञों के लिए समय अनुकूल नहीं रहेगा। वृषभ राशि में भुवन भास्कर सूर्यदेव दिनांक 14 मई 2012 सोमवार को मध्याह्न बेला में प्रवेशादि होने से बैठी संक्रांति १५ मुहूर्ती श्वेत कंचुकी के योग से व्यापारिक स्थिति अस्थिर रहेगी। तथा घात योग भी बनेगा। बुध, गुरु, शुक्र, सूर्य जबै ही इकट्ठा होय। **घात योग के कारणों, धूल उड़े चहुं ओर॥** इनके एक राशि में होने से पक्ष में अकाल तथा संकट योग के साथ गृहयुद्ध या निष्कंटक योग से गुजरना पड़ सकता है। **व्यापार भविष्य**-ग्रहचाल योग से चावल, गेहूं, उड़द, खाद्यानों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, अफीम में मंदी का योग एकाएक बनेगा। 12 से 15 मई तक उछाला एवं गिरना अस्थाई योग बनेगा। 17 मई के लगभग तेल, तिलहन, घी, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, सूत, सुपारी, मिर्च में तेजी चलेगी। **आकाश लक्षण**-मई 9, 10, 14, 17, 18, 20 को उड़ीसा, असम, शिलांग, काठमाण्डु में वायुवेग से हानिकारक घटना घटेंगी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब में खण्डवृष्टि का अचानक भूचाल चलेगा। **शकुन विचार-चित्रा स्वाती विशाखा, जो जेठ मास बरसाय। अन्न भव महंगा रहे, वर्षे वर्षा नाश॥ आठे चौदस जेठ बदी, चालै** [illegible] का परीक्षण जरूर करें, अर्थ सरल है।

ता. 20 मई ❖ ज्येष्ठ कृ. 30 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. 20 मई: 1 चं. बु., 2 गु. शु. के. सू., 3, 4, 5 मं., 6 श., 7, 8 रा., 9 प्लू., 10, 11 ने., 12 ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
1	0	4	0	1	1	5	7	1	11	10	8
5	24	16	26	0	29	29	11	11	13	9	15
21	35	16	28	40	34	46	31	31	21	3	9
15	42	41	55	1	42	40	34	34	11	15	15
57	707	19	123	14	5	4	3	3	2	0	1
47	20	47	17	12	18	20	11	11	24	32	4
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
कृति. 2	भर. 3	मघा 4	भर. 3	कृति. 1	मृग. 1	चित्रा 1	अनु. 2	कृति. 4	उ.भा. 3	धनि. 4	मूल 4

अन्न भव महंगा रहे, वर्षे वर्षा नाश॥ आठे चौदस जेठ बदी, चालै दखिन बाय।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- 5

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 21 मई से 4 जून सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 31 वैशाख से 14 ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
31	चं	1	60	0	-	-	कृ	18	21	12	49	अ	34	14	19	10	किं	32	45	18	34	34	6	5	28	19	7	8	29	21	वृष	1	6	19	0	57/45	5	32	19	34	वृष में बुधः 21।53, दशाश्वमेध घाटे गंगा स्नान प्रा. A
ज्ये 1	मं	1	5	46	7	47	रो	25	44	15	46	सु	36	29	20	4	ब	5	46	7	47	34	9	5	28	19	8	9	30	22	मि. 29।09	1	7	16	44	44	6	18	20	24	चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, प्रतिपदा वृद्धिः, रा. ज्येष्ठारंभः
2	बु	2	11	19	9	59	मृ	32	29	18	27	धृ	38	11	20	44	कौ	11	19	9	59	34	11	5	28	19	8	10	1	23	मिथुन	1	8	14	26	42	7	7	21	11	रज्जब मु.मा. 7 प्रा., रम्भा तृतीया व्रतम्
3	गु	3	16	1	11	52	आ	38	20	20	47	शू	39	11	21	8	ग	16	1	11	52	34	14	5	27	19	9	11	2	24	मिथुन	1	9	12	8	42	8	0	21	56	भ. 24।37 से, रोहिण्यां सूर्यः 25।25, श्री महाराणा प्रताप ज.
4	शु	4	19	38	13	18	पुन	43	4	22	41	गं	39	16	21	9	वि	19	38	13	18	34	16	5	27	19	9	12	3	25	क. 16।15	1	10	9	47	39	8	54	32	38	भ. 13।18 तक, विनायक 4 व्रत, मेला हल्दी घाटी (राज.)B
5	श	5	21	57	14	13	पु	46	28	24	2	वृ	38	18	20	46	बा	21	57	14	13	34	18	5	27	19	10	13	4	26	कर्क	1	11	7	26	39	9	50	23	17	रोहिण्यां बुधः 13।7, श्रुति पंचमी (जैन) C विन्ध्यवासिनी पूजन
6	र	6	22	46	14	33	श्ले	48	21	24	47	ध्रु	36	8	19	54	तै	22	46	14	33	34	20	5	26	19	10	14	5	27	सि. 24।47	1	12	5	3	37	10	47	23	54	पं. जवाहर लाल नेहरु पु. दि., अरण्य षष्ठी, जामित्र 6, C
7	चं	7	21	59	14	13	म	48	37	24	53	व्या	32	40	18	30	व	21	59	14	13	34	22	5	26	19	11	15	6	28	सिंह	1	13	2	38	35	11	45	-	-	भ. 14।13 से 25।52 तक, D क्षीर भवानी (कश्मीर)
8	मं	8	19	31	13	14	पूफा	47	15	24	20	ह	27	53	16	35	ब	19	31	13	14	34	24	5	26	19	11	16	7	29	सिंह	1	14	0	12	34	12	44	24	31	श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती ज., पूर्वोदयं गुरोः 16।25, मेला D
9	बु	9	15	25	11	36	उफा	44	18	23	9	व	21	46	14	8	कौ	15	25	11	36	34	26	5	25	19	12	17	8	30	क. 6।05	1	14	57	44	32	13	45	25	8	महेश नवमी, माहेश्वरीणामुत्पत्ति, पूर्वोदयं गुरोः 29 मई
10	गु	10	9	49	9	21	ह	39	57	21	24	सि	14	27	11	12	ग	9	49	9	21	34	28	5	25	19	12	18	9	31	कन्या	1	15	55	15	31	14	49	25	46	भ. 20।2 से, व्यतिपात 11।12 से, श्री गंगा दशहरा F
11	शु	11	2	56	6	35	चि	34	27	19	12	व्य	6/56	5/51	7/28	51/9	वि	2	56	6	35	34	30	5	25	19	13	19	10	J1	तु. 8।21	1	16	52	45	30	15	55	26	27	भ. 6।35 तक, जून मा. 6 ता. 30 प्रा., मृगे. बुधः 15।15, G
0	शु	12	54	59	27	25	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षयः ❖ वटसावित्री व्रत (गुर्जराणां)
12	श	13	46	20	23	57	स्वा	28	4	16	39	प	47	2	24	14	कौ	20	44	13	42	34	32	5	25	19	13	20	11	2	तुला	1	17	50	14	29	17	3	27	13	शनि प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभः, पश्चिमास्तं शुक्रः 26।27
13	र	14	37	19	20	20	वि	21	12	13	54	शिव	36	55	20	11	ग	11	51	10	9	34	33	5	25	19	14	21	12	3	वृ. 8।35	1	18	47	41	27	18	12	28	4	भ. 20।20 से, रोहिण्यां 4 वक्री शुक्रः 16।40, पूर्णिमा व्रतं, ❖
14	चं	15	28	19	16	44	अनु	14	14	11	6	सि	26	49	16	8	वि	2	48	6	32	34	35	5	24	19	14	22	13	4	वृश्चिक	1	19	45	7	26	19	18	29	2	भ. 6।32 तक, मिथुने बुधः 18।32, हजरत अली जन्म H

A (काशी), करवीर व्रतं, करिदिनं B गुरु अर्जुन देव जी बलिदान दिवस (प्रा.मत से) F (गंगावतरण), मेला हरिद्वार, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दि., दशहरा व्रत पूर्ण, दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ण (काशी) G निर्जला 11 व्रत (सबका), मेला बरहे (भटिण्डा), चंपक द्वादशी H (मु.), श्री सत्यनारायण व्रतं, पूर्णिमा पुण्यं च, मन्वादि 15, ज्येष्ठी पूर्णिमा, कबीर ज., ज्येष्ठी योग, वट सावित्री व्रत पूजन, ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ण (जैन)

ज्येष्ठ शु. 8 मंगल प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 29 मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
1	4	4	1	1	1	5	7	1	11	10	8
14	15	19	15	2	26	29	11	11	13	9	14
0	55	31	53	47	26	20	2	2	41	6	58
12	48	19	43	12	36	10	57	57	16	33	47
57	801	23	131	14	29	2	3	3	2	0	1
34	18	1	57	4	23	37	11	11	4	14	14
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible] 1	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 1	[illegible] 1	[illegible] 4	[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 4

3 — सू. शु. — 1 — 4 — बु. गु. 2 के. — 11 ने. — 12 ह. — 5 मं. चं. — 8 रा. — 6 श. — 10 — 7 — 9 प्लू.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार से प्रारंभ होकर प्रतिपदा वृद्धि के योग तथा चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती के योग से महंगाई पर नियंत्रण बावत् सरकार द्वारा कई योजनाएं घोषित की जायेंगी। सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात्सुख भवति सर्वदा। इसके योग से धन-धान्य की उत्पत्ति अच्छी बनेगी। धान्य सस्ता भी होने का योग बनेगा। सुभिक्ष योग भी बनता है। जनता का जीवन आनंदमय रहने का संकेत भी बनता है। कृतिका का बुध-शक्कर, गुड़, पीपरमेन्ट में जोरदार तेजी का कारक है। पूर्णिमा अनुराधा युक्त होने से दुर्भिक्ष का योग बनता है। सोमवार की संक्रांति होने से दक्षिण की पवन चलेगी। धान्यादि सभी भाव मंदे की स्थिति में रहेंगे। रस, घृत, किराने की वस्तुओं में तेजी हो। लोक, महाजन प्रसन्न हों। प्रजा में सदभाव बना रहेगा। इस पक्ष में वृषभ राशि में सू+बु+शु+गु+के पंच ग्रहादि योग बनता है। एक राशौ यदा यान्ति, चत्वार पंच खेचराः। प्लावयंति मही, सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥ राजनैतिक गतिरोध बढ़ेगा। धरती कम्पायमान होगी। यत्र-तत्र सत्ता परिवर्तन योग, खून-खराबा तथा पश्चिमी देशों में युद्ध भी आकाश मार्ग का चलेगा। जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। एक वस्तु क्या तेज बिके, सभी तेज हो जाय॥ इस पक्ष के अंत में सभी वस्तुओं में तेजी का योग। विद्रोह बढ़ेगा। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से 22, 24, 28, 30 मई को मंदी का दौर सभी वस्तुओं में बनता है। शेयर्स बाजार में अचानक तेजी का अच्छा योग। सोना, चांदी में उछाला योग। तिलहन तेज। आकाश लक्षण-ता. 21, 25, 26, 31 मई तथा 2, 3 जून को गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, शिलांग, उड़ीसा, दमन द्वीप, गोआ तथा पाण्डेचेरी में वर्षा का योग। उत्तरी भारत में तेज हवाओं का जोर रहेगा। शकुन विचार-ज्येष्ठ सुदी सप्तमी को यदि बादल गरजे, दक्षिणी वायु चले तो तिलहन के स्टॉक में पौष-माघ में लाभ होगा। पाचै शुक्ला ज्येष्ठ में बादल दखिनी बाय। गल्ला संग्रह कीजिये आश्विन दुगना भाय॥

ता. 4 जून ❖ ज्येष्ठ शु. 15 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

3 — सू.2 — 1 — 4 — गु. बु. शु.के. — 11 ने. — 12 ह. — 5 मं. — 8 चं.रा. — 6 श. — 10 — 7 — 9 प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
1	7	4	1	1	1	5	7	1	11	10	8
19	13	21	28	4	23	29	10	10	13	9	14
45	8	55	51	11	0	6	43	43	52	7	51
7	49	50	50	7	10	14	52	52	55	16	1
57	905	24	126	13	36	2	3	3	1	0	1
26	25	50	48	55	58	6	11	11	50	2	20
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible] 2	[illegible] 2	[illegible] 2	[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 3	[illegible] 1	[illegible] 2	[illegible] 4	[illegible] 3	[illegible] 4	[illegible] 4

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- 6

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 5 से 19 जून सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 15 से 29 ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
15	मं	1	19	43	13	18	ज्ये	7	33	8	26	सा	17	2	12	13	कौ	19	43	13	18	34	36	5	24	19	15	23	14	5	ध. 8।26	1	20	42	33	57/26	20	19	6	4	वक्री नेपच्यून 14।42, विश्व पर्यावरण दि., गुरु हरगोविन्द A
16	बु	2	11	55	10	10	मू	1/56	36/44	6/28	2/6	शुभ	7/59	55/45	8/29	34/18	ग	11	55	10	10	34	38	5	24	19	15	24	15	6	धनु	1	21	39	57	24	21	14	7	10	भ. 20।51 से , A सिंह ज. (प्रा. मत से)
17	गु	3	5	17	7	31	उषा	53	20	26	44	ब्र	52	47	26	31	वि	5	17	7	31	34	39	5	24	19	16	25	16	7	म. 9।42	1	22	37	21	24	22	2	8	15	भ. 7।31 तक, मृगे. सूर्यः 23।20, आर्द्रायां बुधः 25।17, B
18	शु	4	0	9	5	28	श्र	51	41	26	5	ऐं	47	16	24	19	बा	0	9	5	28	34	40	5	24	19	16	26	17	8	मकर	1	23	34	44	23	22	44	9	19	पश्चिमोदयं बुधः 19।2
0	शु	5	56	47	28	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	पंचमी तिथि क्षयः
19	श	6	55	24	27	34	ध	51	58	26	11	वै	43	19	22	43	ग	25	51	15	44	34	41	5	24	19	17	27	18	9	कु. 14।02	1	24	32	6	22	23	21	10	20	भ. 27।34 से, पंचक 14।2 से, मेला भुंतर (हि.प्र.)
20	र	7	56	2	27	49	श	54	14	27	6	वि	40	58	21	47	वि	25	28	15	35	34	42	5	24	19	17	28	19	10	कुंभ	1	25	29	28	22	23	56	11	18	भ. 15।35 तक
21	चं	8	58	34	28	50	पूभा	58	22	28	45	प्री	40	9	21	28	बा	27	4	16	14	34	43	5	24	19	17	29	20	11	मी. 22।16	1	26	26	49	21	24	0	12	13	कालाष्टमी, पूर्वोदयं शुक्रः 12।14 B कृष्ण चतुर्थी व्रत
22	मं	9	60	0	-	-	उभा	60	0	-	-	आ	40	42	21	41	तै	30	29	17	36	34	44	5	24	19	18	30	21	12	मीन	1	27	24	10	21	24	29	13	7	E मास शिवरात्री व्रत
23	बु	9	2	46	6	30	उभा	4	6	7	3	सौ	42	20	22	20	ग	2	46	6	30	34	45	5	24	19	18	31	22	13	मीन	1	28	21	30	20	25	2	14	0	भ. 19।37 से, नवमी तिथि वृद्धि D व्रतोद्यापन
24	गु	10	8	12	8	41	रे	11	2	9	49	शो	44	42	23	17	वि	8	12	8	41	34	46	5	24	19	18	आ1	23	14	मे. 9।49	1	29	18	50	20	25	35	14	52	भ. 8।41 तक, सौर आषाढ़ारंभः, पंचक 9।49 तक, मिथुने C
25	शु	11	14	25	11	10	अ	18	41	12	53	अ	47	26	24	23	बा	14	25	11	10	34	46	5	24	19	19	2	24	15	मेष	2	0	16	9	19	26	10	15	45	पुन. में बुधः 7।48, योगिनी 11 व्रत (सर्वे.), गोपद्म D
26	श	12	20	55	13	46	भ	26	35	16	2	सु	50	13	25	29	तै	20	55	13	46	34	47	5	24	19	19	3	25	16	वृ. 22।49	2	1	13	28	19	26	48	16	37	शनि प्रदोष व्रतम् C सूर्यः 22।44, उ.फा. में मंगल 23।57
27	र	13	27	13	16	18	कृ	34	16	19	7	धृ	52	43	26	30	व	27	13	16	18	34	47	5	24	19	19	4	26	17	वृष	2	2	10	47	19	27	29	17	29	भ. 16।18 से, अनु. 2 में राहु, कृति. 4 में केतुः 28।55, E
28	चं	14	32	59	18	36	रो	41	23	21	58	शू	54	42	27	18	वि	0	11	5	29	34	47	5	25	19	20	5	27	18	वृष	2	3	8	5	18	28	14	18	20	भ. 5।29 तक, शब्बे मिराज (मु.) F देवपितृकार्याऽमावस्या
29	मं	30	37	55	20	35	मृ	47	41	24	29	गं	56	1	27	49	चतु	5	34	7	38	34	48	5	25	19	20	6	28	19	मि. 11।16	2	4	5	23	18	29	3	19	9	सायन कर्क में सूर्य 28।37, दक्षिणायन व वर्षा ऋतु प्रा., F

पूर्वोदयं शुक्रः 11 जून

आषाढ़ कृ. 8 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
1	10	4	2	1	1	5	7	1	11	10	8
26	21	24	12	5	18	28	10	10	14	9	14
26	15	57	44	47	41	54	21	21	4	6	41
49	58	11	56	49	13	4	36	36	39	39	20
57	768	26	112	13	35	1	3	3	1	0	1
21	10	41	24	43	18	20	11	11	33	11	25
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
4	4	3	1	2	2	1	2	4	3	4	4
रोहि.	श्रव.	पूफा.	रोहि.	कृति.	रोहि.	चित्रा	अनु.	कृति.	उभा.	धनि.	मूल

लग्न चक्र (ता. 11 जून): 1; 12 ह.; 11 ने. चं.; 10; 9 प्लू.; 8 रा.; 7; 6 श.; 5 मं.; 4; 3 बु. सू.; गु. शु. के. 2

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष मंगलवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, प्रतिपदा से शुरू होकर भौमवती अमावस्या तक रहेगा। इस पक्ष में तिथि क्षय तथा तिथि वृद्धि दोनों योग हैं-**जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। एक वस्तु क्या मंदी बिकै, सभी सस्ती हो जाय॥** अर्थात् मंदी के लक्षण दिखाई देते हैं। अतः संग्रह न करें। ता. 14 जून को भुवन भास्कर भगवान मिथुन राशि में रात्रि में 22।44 पर प्रवेश बैठी अवस्था 30 मूहूर्त्ती में करेंगे। **गुरुवारी संक्रांति जब-जब जग में आव। सुखी प्रजा धन-धान्य युक्त सभी वस्तु समभाव॥** सभी वस्तुओं के भाव सम रहेंगे। धार्मिक कार्यक्रमों का सिलसिला योगादि शुभ कार्यों का बनेगा। कथाओं, यज्ञादि का आयोजन भी के+गु+शु+सू की युक्ति से राजनैतिक स्थिति में हलचल विरोधी रूप में चलेगी। शुक्रोदय के योग से **शुक्र जब उदय हुए चमके श्वेत रंग। तेजी का सुयोग बने रजत चावल तंग॥** सरकार शासन प्रजाहित में कई कार्यक्रम चलाये जायेंगे। लेकिन आम जनता को लाभ नहीं मिलेगा। व्यापारिक गतिविधियां, राजनैतिक दृष्टि चिन्तादायक भी होगी। **घटबढ़ योग, वस्तु बढ़े जग भोग।** यानि बुध ग्रह के कारण घास, तृण, भूसा महंगा रहेगा। उद्योग कार्य की योजना बनेगी। **व्यापार भविष्य**-चावल, चना, जौ, चांदी, खल, बिनौला, अलसी, अरण्ड में तेजी। कपास, सूत में मंदी का योग। तेल, तिलहन, ग्वार, ज्वार, कॉफी में जोरदार मंदी का योग बनेगा। उटापटक का बाजार चलेगा। **आकाश लक्षण**-जून 8, 10, 14, 18, 19 को हिमाचल प्र०, पंजाब, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, नेपाल में आंधी-तूफान का योग बनेगा। [illegible]

ता. 19 जून ❖ आषाढ़ कृ. 30 मंगल प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

लग्न चक्र (ता. 19 जून): 4; 5 मं.; 3 सू. बु.; चं. गु. शु. के. 2; 1; 12 ह.; 6 श.; 9 प्लू.; ने.; 11; 7; 8 रा.; 10

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
2	1	4	2	1	1	5	7	1	11	10	8
4	27	28	26	7	14	28	9	9	14	9	14
5	6	39	15	36	55	45	56	56	15	4	29
23	4	26	48	16	20	51	10	10	25	1	38
57	717	28	92	13	21	0	3	3	1	0	1
18	42	36	35	25	23	41	11	11	11	26	30
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
3	1	4	1	3	1	1	1	3	3	4	4
मृग.	मृग.	पूफा.	पुन.	कृति.	रोहि.	चित्रा	अनु.	कृति.	उभा.	धनि.	मूल

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- 7

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 20 जून से 3 जुलाई सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 30 ज्येष्ठ से 12 आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	द. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
30	बु	1	41	50	22	9	आ	52	59	26	37	वृ	56	31	28	1	कि	10	0	9	25	34	48	5	25	19	20	7	29	20	मिथुन	2	5	2	40	57/17	5	55	19	55
31	गु	2	44	39	23	17	पुन	57	13	28	18	ध्रु	56	9	27	53	बा	13	23	10	46	34	48	5	25	19	20	8	30	21	क. 21।55	2	5	59	57	17	6	49	20	38
आ.1	शु	3	46	18	23	57	पु	60	0	-	-	व्या	54	52	27	22	तै	15	37	11	40	34	48	5	25	19	21	9	1	22	कर्क	2	6	57	13	16	7	45	21	18
2	श	4	46	46	24	8	पु	0	17	5	33	ह	52	39	26	29	व	16	41	12	6	34	47	5	26	19	21	10	2	23	कर्क	2	7	54	29	16	8	42	21	56
3	र	5	46	2	23	51	श्ले	2	13	6	19	व	49	30	25	14	ब	16	33	12	3	34	47	5	26	19	21	11	3	24	सिं. 6।19	2	8	51	44	15	9	40	22	33
4	चं	6	44	7	23	5	म	2	57	6	37	सि	45	22	23	35	कौ	15	13	11	31	34	47	5	26	19	21	12	4	25	सिंह	2	9	48	59	15	10	38	23	9
5	मं	7	41	0	21	51	पूफा	2	31	6	27	व्य	40	18	21	34	ग	12	42	10	31	34	46	5	26	19	21	13	5	26	क. 12।20	2	10	46	13	14	11	37	23	45
6	बु	8	36	45	20	9	उफा	0 / 58	36 / 14	5 / 28	49 / 44	वरि	34	18	19	10	वि	9	0	9	3	34	46	5	27	19	21	14	6	27	कन्या	2	11	43	26	13	12	38	-	-
7	गु	9	31	26	18	2	चि	54	30	27	15	परि	27	25	16	25	बा	4	13	7	8	34	45	5	27	19	21	15	7	28	तु. 16।03	2	12	40	39	13	13	41	24	24
8	शु	10	25	11	15	32	स्वा	49	54	25	25	शिव	19	45	13	22	ग	25	11	15	32	34	45	5	27	19	21	16	8	29	तुला	2	13	37	51	12	14	46	25	6
9	श	11	18	9	12	43	वि	44	36	23	18	सि	11	26	10	2	वि	18	9	12	44	34	44	5	28	19	21	17	9	30	वृ. 17।51	2	14	35	3	12	15	52	25	54
10	र	12	10	33	9	42	अनु	38	52	21	1	सा	2 / 53	37 / 32	6 / 26	31 / 53	बा	10	33	9	42	34	43	5	28	19	21	18	10	J1	वृश्चिक	2	15	32	14	11	16	58	26	46
11	चं	13	2	40	6	33	ज्ये	33	0	18	41	शु	44	25	23	15	तै	2	40	6	33	34	42	5	29	19	21	19	11	2	ध. 18।41	2	16	29	25	11	18	1	27	45
0	चं	14	54	49	27	24	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
12	मं	15	47	19	24	24	मू	27	22	16	26	ब्र	35	32	19	42	वि	20	59	13	53	34	41	5	29	19	21	20	12	3	धनु	2	17	26	36	11	18	59	28	49

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

C गिरिजा पूजा, श्री जगदीश पुनर्रथ यात्रा (पुरी)
चन्द्रदर्शनम् मु. 45 समर्घता, कन्या में मंगल 24।9, कर्क में A
साबान मु. मा. 8 प्रा., रा. आषाढ़ारंभः
भ. 12।6 से 24।8 तक, विनायक 4 व्रत
पुष्ये बुधः 5।33 D नियमादि प्रा., गोपद्म व्रतोद्यापन
कुमार षष्ठी व्रत B भवानी (कश्मीर)
भ. 21।51 से, व्यतिपात पुण्यं, मार्गी शनिः 8।40, विवस्वत् 7
भ. 9।3 तक, मार्गी शुक्रः 20।25, श्री दुर्गाष्टमी
भड्डली नवमी, शूद्रादि-कल्पादि 9, कन्दर्प 9, मेला शरीफ B
भ. 26।10 से, रोहिणी 1 में गुरुः 28।12, आशा दशमी, C
भ. 12।44 तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सर्वे.), चातुर्मास D
जुलाई मा. 7 ता. 31 प्रा., जया पार्वती व्रत, प्रदोष व्रत, E
भ. 27।24 से, चौमासी 14, मास शिवरात्री व्रत, चातुर्मासारंभः (जैन)
चतुर्दशी तिथि क्षयः E सन्यासीनां चातुर्मासारंभः
भ. 13।53 तक, श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत पुण्यं च, F

A बुधः 18।37, आर्द्रा में सूर्यः 22।17, श्री जगदीश रथयात्रा (जगन्नाथ पुरी), मनोरथ द्वितीया (बंगाल) F आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, कोकिला व्रत, वायु परीक्षा, मन्वादि 15, व्यास पूजन

आषाढ़ शु. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 27 जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
2	5	5	3	1	1	5	7	1	11	10	8
11	9	2	7	9	13	28	9	9	14	8	14
43	48	35	1	21	28	43	30	30	23	59	17
26	55	52	49	52	0	59	44	44	14	25	34
57	821	25	71	13	2	0	3	3	0	0	1
13	15	16	11	01	39	7	11	11	49	41	31
-	-	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
1 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]

5 | 4 बु. | सू. 3 | गु.शु.के. 2 | 1 | 12 ह. | 6 मं.चं. | 9 प्लू. | 7 | 11 ने. | 8 रा. | 10

[पक्ष फलम्]
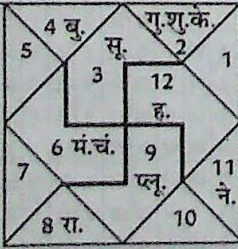
यह पक्ष बुधवार, आर्द्रा चन्द्र मिथुन का तथा चन्द्रदर्शन गुरुवार पुनर्वसु द्वितीया को चन्द्रदर्शन के योग से तथा आर्द्रायां रवि प्रवेश के कारण तथा पांच मंगलवार आषाढ़ी योग से शुभ दायक लेकिन राजनैतिक दृष्टि से किसी बड़े व्यक्ति की मृत्यु या चिन्ता जनक स्थिति बनेगी। मंगलवारी अमावस्या होने से अल्पवृष्टि और मृगशिरा योग से सुभिक्ष, इस प्रकार मिला-जुला सम प्रभाव रहेगा। यत्र मासे मही सूनोर्जायन्ते पंचवासरा। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यही कार्य गति चलेगी। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो मंदी क्या, महंगाई हट जाय॥ अर्थात् अति अच्छी वर्षा का योग। गुरुवार को आर्द्रा प्रवेश लग्न रवि 22:17 बजे। ता. 21 जून मकर लग्न में होने से मशीनरी उद्योग, तकनीकी कार्यशाला में अभिवृद्धि योग बनेगा। विद्या-शिक्षा-कला के क्षेत्र में काफी प्रगति का कारक बु+चं कर्क स्थिति से बनेगा। गु+शु की युक्ति विवाद कारक योग है। कृषक वर्ग के लिए पक्ष शुभदायक तथा कृषि कार्य के लिए अच्छी वर्षा का योग भी है। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से तांबा, पीतल, सोना, चांदी, चना, गेहूं, लालमिर्च, लालचंदन, घी, मजीठ, गुड़, खाण्ड में तेजी का योग बनेगा। चांदी और रुई में ठठापटक ज्यादा चलेगी। सफेद रंग की वस्तुओं के भाव मंदे रहेंगे। घास, तृण, ग्वार, जीरा, रायरा, तिलहन में अचानक तेजी योग। आकाश लक्षण-दिनांक 22, 24, 29, 30 जून तथा 1, 2 जुलाई 2012 तक भूटान, शिलांग, असम, हरियाणा, राजस्थान का दक्षिणी भाग में वर्षा के साथ वायु प्रकोप बढ़ेगा। ओले, बिजली गिरेगी। शकुन विचार-साढ़ी सुदी चौथ को बिजली वर्षा गाज। उत्तम वर्षा समझिये, उपजे खूब अनाज॥ साढ़ सुदी पांचै दिना, पच्छम धनुष दिखाय। पच्छम का वायु चले, जल बरसे झड़ लगाय॥

ता. 3 जुलाई ❖ आषाढ़ शु. 15 मंगल प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

4 बु. | गु.शु.के. 2 | 5 | 3 सू. | 1 | 12 ह. | 6 मं. श. | 9 चं. प्लू. | 7 | 11 ने. | 8 रा. | 10

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
2	8	5	3	1	1	5	7	1	11	10	8
17	6	5	13	10	13	28	9	9	14	8	14
26	38	41	5	38	59	46	11	11	27	54	8
36	42	20	14	48	41	45	39	39	5	45	26
57	885	31	52	12	10	0	3	3	0	0	1
11	28	21	33	40	44	43	11	11	31	50	31
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
3 [illegible]	1 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	4 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]

श्रावण कृष्ण पक्षः- 8 श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 4 से 19 जुलाई सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 13 से 28 आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
13	बु	1	40	32	21	42	पूषा	22	18	14	25	ऐं	27	11	16	22	बा	13	48	11	1	34	40	5	29	19	21	21	13	4	म. 19 58	2	18	23	47	57/11	19	51	5	54	अशून्य शयन व्रतारंभः (बंगाल), नक्त व्रतारंभः
14	गु	2	34	51	19	26	उषा	18	14	12	47	वै	19	40	13	22	तै	7	31	8	30	34	38	5	30	19	21	22	14	5	मकर	2	19	20	58	11	20	36	7	0	पुनर्वसु सूर्यः 21 53
15	शु	3	30	37	17	45	श्र	15	30	11	42	वि	13	16	10	49	व	2	31	6	31	34	37	5	30	19	21	23	15	6	कुं. 23 24	2	20	18	9	11	21	17	8	3	भ. 6 31 से 17 45 तक, पंचक 23 24 से, शब-ए-बारात A
16	श	4	28	6	16	45	ध	14	26	11	17	प्री	8	13	8	48	बा	28	6	16	45	34	36	5	31	19	21	24	16	7	कुम्भ	2	21	15	20	11	21	54	9	4	A (मु.), कृष्ण 4 व्रत
17	र	5	27	32	16	32	श	15	14	11	37	आ	4	40	7	23	तै	27	32	16	32	34	34	5	31	19	21	25	17	8	कुम्भ	2	22	12	31	11	22	28	10	2	श्लेषायां बुधः 10 15, नाग पंचमी मरुस्थले
18	चं	6	28	58	17	7	पूभा	17	59	12	43	सौ	2	43	6	37	व	28	58	17	7	34	32	5	32	19	21	26	18	9	मी. 6 22	2	23	9	43	12	23	2	10	57	भ. 17 7 से, श्रावण सोमवार व्रत B कालाष्टमी, मन्वादि 8
19	मं	7	32	15	18	26	उभा	22	36	14	35	शो	2	17	6	27	वि	0	23	5	41	34	31	5	32	19	20	27	19	10	मीन	2	24	6	55	12	23	35	11	51	भ. 5 41 तक, शीतला सप्तमी (उड़ीसा), मंगला गौरी पूजा
20	बु	8	37	6	20	23	रे	28	46	17	3	अ	3	11	6	49	बा	4	30	7	20	34	29	5	33	19	20	28	20	11	मे. 17 03	2	25	4	7	12	24	0	12	45	पंचक 17 3 तक, हस्ते भौमः 6 47, विश्व जनसंख्या दिवस, B
21	गु	9	43	0	22	45	अ	26	2	19	58	सु	5	7	7	36	तै	9	56	9	32	34	27	5	33	19	20	29	21	12	मेष	2	26	1	20	13	24	10	13	38	केर पूजा (त्रिपुरा), गुरु हरिकिशन सिंह ज. (प्रा. मत से)
22	शु	10	49	23	25	19	भ	43	48	23	5	धृ	7	40	8	38	व	16	9	12	1	34	25	5	33	19	20	30	22	13	मेष	2	26	58	33	13	24	47	14	30	भ. 12 1 से 25 19 तक, वक्री हर्षल 7 23
23	श	11	55	37	27	49	कृ	51	29	26	10	शू	10	24	9	44	ब	22	32	14	35	34	23	5	34	19	19	31	23	14	वृ. 5 52	2	27	55	47	14	25	27	15	22	कामदा एकादशी व्रत (सर्वे.)
24	र	12	60	0	-	-	रो	58	34	29	0	गं	12	54	10	44	कौ	28	30	16	59	34	21	5	35	19	19	32	24	15	वृष	2	28	53	2	15	26	10	16	14	वक्री बुधः 7 04
25	चं	12	1	11	6	3	मृ	60	0	-	-	वृ	14	48	11	30	तै	1	11	6	3	34	19	5	35	19	19	श्राव. 1	25	16	मि. 18 17	2	29	50	17	15	26	57	17	3	सौर श्रावण प्रा., कर्केऽर्कः 9 34, सोम प्रदोष व्रत, C
26	मं	13	5	42	7	52	मृ	4	37	7	26	ध्रु	15	50	11	56	व	5	42	7	52	34	17	5	36	19	18	2	26	17	मिथुन	3	0	47	32	15	27	48	17	51	भ. 7 52 से 20 34 तक, मास शिवरात्री व्रत, मंगला गौरी पूजा
27	बु	14	8	57	9	11	आ	9	28	9	23	व्या	15	52	11	57	श	8	57	9	11	34	15	5	36	19	18	3	27	18	क. 28 30	3	1	44	48	16	28	42	18	35	पितृकार्याऽमावस्या
28	गु	30	10	50	9	57	पुन	12	59	10	48	ह	14	50	11	33	ना	10	50	9	57	34	12	5	37	19	18	4	28	19	कर्क	3	2	42	5	17	29	38	19	17	पुष्ये रविः 21 23, देवकार्याऽमावस्या, हरियाली 30, D

C श्रावण सोमवार व्रत, रविन्द्रनाथ पुण्य दिवस

D चित्तलगी 30 (उड़ीसा), मन्वादि 30, सरस माधुरी ज., लक्ष्मी पोल यात्रा पुष्करजी (राज.)

श्रावण कृ. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 11 जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
2	11	5	3	1	1	5	7	1	11	10	8
25	24	9	17	12	16	28	8	8	14	8	13
4	12	58	50	17	34	55	46	46	29	47	56
8	55	14	50	53	46	57	12	12	33	2	23
57	731	32	21	12	25	1	3	3	0	1	1
12	22	41	23	09	34	30	11	11	08	3	29
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
1 [illegible]	2 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]

4 बु. | गु.शु.के. 2 | सू. 3 | 5 | 1 | 12 चं. ह. | 6 मं. श. | 9 प्लू. | 7 | 11 ने. | 8 रा. | 10

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बुधवार पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र एवं नक्त व्रतारंभ से अमावस्या गुरुवार तक चलेगा। पुनर्वसु में रवि श्रावण कृष्ण तीज गुरुवार स्त्री-पुरुष योग, महिष वाहन वर्षा योग। अष्टमी बुध को भौम हस्त नक्षत्र में तथा कर्क राशि में भुवन भास्कर सूर्यदेव का प्रवेश श्रावण कृष्ण द्वादशी दिनांक 16 जुलाई 2012 सोमवार, प्रौढ़ावस्था, बैठी 30 मुहूर्त्ती के योग से प्रातः 9:34 पर प्रवेश तथा बुधास्त पश्चिम में कर्क संक्रांति के दिन होने से व्यापारिक वर्ग चिन्तित रहेगा। कृषक वर्ग वर्षा के सुयोग से हर्षित रहेंगे। प्राकृतिक आपदाओं से भारी जन-धन हानि के योग हैं। अनेक खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। उग्रवादियों के आतंक से जनता परेशान रहेगी। केन्द्रीय सत्ता के नियंत्रण में कमी आयेगी। महानगरों में विस्फोट जन्य योग बनते नजर आयेंगे। जेहि पखवारे तिथौ वृद्धि, पक्ष षोडष दिन जान। सोना, चांदी, शेयर्स में वृद्धि के तेजी योग बखान॥ गुरु+शुक्र की युक्ति के योग से जनता में विद्रोह का योग बनेगा। व्यापार

ता. 19 जुलाई ❖ श्रावण कृ. 30 गुरु प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

5 | 3 | गु. 2 शु. के. | 6 मं. श. | 4 सू. बु. चं. | 1 | 7 | 10 | 8 रा. | 12 ह. | 9 प्लू. | 11 ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
3	3	5	3	1	1	5	7	1	11	10	8
2	0	14	17	13	20	29	8	8	14	9	13
42	31	25	54	52	51	11	20	20	28	37	44
5	35	18	0	19	38	19	46	46	54	46	44
57	752	33	16	11	36	2	3	3	0	1	1
17	33	55	18	31	41	15	11	11	15	14	25
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
2 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]	1 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	2 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	4 [illegible]

भविष्य-पुनर्वसु के सूर्य के योग से खाद्यान्न के भावों में मंदी का योग बनता है। तथा तैल, तिल, सरसों, गुड़, खाण्ड, ज्वार, बाजरा, नारियल, सोंठ, सोना, चांदी में तेजी का योग बनता है। सिमेन्ट के भावों में विशेष घटाबढ़ी का योग चलेगा। तृण पशु आहार में तेजी का योग बनता है। **आकाश लक्षण**-इस पक्ष में ग्रह योग से दिनांक 6, 8, 9, 13, 15, 16 को आसाम, बंगाल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्र० में तेज वर्षा के योग तथा कहीं-कहीं बिजली भी गिरेगी। वायु वेग से फसलों को हानि [illegible]

श्रावण शुक्ल पक्षः- 9

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 20 जुलाई से 2 अगस्त सन् 2012 ई., रा. मिति 29 आषाढ़ से 11 श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
29	शु	1	11	25	10	11	पु	15	13	11	43	व	12	46	10	44	ब	11	25	10	11	34	10	5	37	19	18	5	29	20	कर्क	3	3	39	22	57/17	6	35	19	57
30	श	2	10	47	9	56	श्ले	16	18	12	9	सि	9	45	9	32	कौ	10	47	9	57	34	7	5	38	19	17	6	30	21	सिं. 12।9	3	4	36	39	17	7	34	20	34
31	र	3	9	6	9	17	म	16	20	12	10	व्य	5	54	8	0	ग	9	6	9	17	34	5	5	38	19	17	7	श्रावण 1	22	सिंह	3	5	33	57	18	8	33	21	11
श्रा.1	चं	4	6	31	8	15	पू.फा	15	30	11	51	वरि	1/56	19/6	6/28	10/5	वि	6	31	8	15	34	2	5	39	19	16	8	2	23	क. 17।43	3	6	31	15	18	9	32	21	48
2	मं	5	3	10	6	55	उ.फा	13	55	11	14	शिव	50	20	25	47	बा	3	10	6	55	33	59	5	39	19	16	9	3	24	कन्या	3	7	28	33	18	10	32	22	26
0	मं	6	59	9	29	19	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
3	बु	7	54	32	27	29	ह	11	41	10	20	सि	44	3	23	17	ग	26	54	16	26	33	57	5	40	19	15	10	4	25	तु. 21।49	3	8	25	52	19	11	34	23	6
4	गु	8	49	23	25	26	चि	8	53	9	14	सा	37	21	20	37	वि	22	1	14	29	33	54	5	40	19	15	11	5	26	तुला	3	9	23	11	19	12	37	23	50
5	शु	9	43	47	23	12	स्वा	5	34	7	55	शुभ	30	14	17	47	बा	16	38	12	20	33	51	5	41	19	14	12	6	27	वृ. 24।48	3	10	20	31	20	13	41	24	0
6	श	10	37	48	20	49	वि	1/57	48/43	6/28	25/47	शु	22	48	14	49	तै	10	49	10	1	33	48	5	42	19	14	13	7	28	वृश्चिक	3	11	17	51	20	14	45	24	39
7	र	11	31	33	18	19	ज्ये	53	25	27	4	ब्र	15	7	11	45	व	4	41	7	35	33	45	5	42	19	13	14	8	29	ध. 27।04	3	12	15	11	20	15	48	25	34
8	चं	12	25	13	15	48	मू	49	6	25	21	ऐं	7/59	18/34	8/29	38/32	बा	25	13	15	48	33	42	5	43	19	12	15	9	30	धनु	3	13	12	32	21	16	46	26	34
9	मं	13	19	1	13	20	पू.षा	45	3	23	44	वि	52	3	26	33	तै	19	1	13	20	33	39	5	43	19	12	16	10	31	म. 29।22	3	14	9	54	22	17	39	27	37
10	बु	14	13	14	11	1	उ.षा	41	32	23	45	प्री	45	2	23	45	व	13	13	11	1	33	36	5	44	19	11	17	11	A1	मकर	3	15	7	16	22	18	27	28	42
11	गु	15	8	9	9	0	श्र	38	55	21	15	आ	38	45	21	15	ब	9	9	9	0	33	33	5	44	19	10	18	12	2	मकर	3	16	4	39	23	19	10	29	45

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- पश्चिमास्तं बुध: 25।10 A सिंधारा, शृंगार 2
- चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, वक्री पुष्य में बुध: 28।23, A
- भ. 20।52 से, रमजान मु. मा. 9 प्रा., सायन सिंहे सूर्य: B
- भ. 8।15 तक, रा. श्रावणारंभ:, नाग पंचमी (देशाचारे), C
- वर्ण श्रृयाल षष्ठी, मंगला गौरी पूजा, श्री कल्की जयंती
- षष्ठी तिथि क्षय:
- भ. 27।29 से, शीतला 7 सिंध, गोस्वामी तुलसीदास जयंती, D
- भ. 14।29 तक, श्री दुर्गाष्टमी, मेला नैनादेवी चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)
- D पार्श्वनाथ मोक्ष (जैन)
- E श्रावण सोमवार व्रतं
- भ. 7।35 से 18।19 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (सर्वेषां)
- पवित्रार्पण द्वादशी, दधि भक्षण व्रतारंभ:, सोम प्रदोष व्रत, E
- मिथुन में शुक्र: 19।45, मंगला गौरी पूजा
- भ. 11।1 से 21।58 तक, अगस्त मा. 8 ता. 31 प्रा., F
- श्लेषायां सूर्य: 20।17, सत्यनारायण व्रत पुण्यं च, रक्षा बंधन G

B 15।35, मृगे शुक्र: 23।57, रोजा प्रा. (मु.), मधुश्रवा (छोटी) तीज, हरियाली 3, विनायक 4 व्रत, वरद 4 C भीती चित्रे, नाग पूजा, जीवंतिका पूजा, अमरनाथ यात्रा, श्रावण सोमवार व्रत, लोकमान्य तिलक ज. F लोकमान्य तिलक पुण्य दि., हयग्रीव जयंती, पूर्णिमा व्रतं, उपाकर्म (अथर्ववेदीनां) G (सम्पूर्ण), गायत्री ज., अमरनाथ दर्शन (कश्मीर), उपाकर्म (यजुर्वेदीनां)

श्रावण शु. 8 गुरु प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 26 जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
3	6	5	3	1	1	5	7	1	11	10	8
9	4	18	14	15	25	29	7	7	14	8	13
23	29	26	8	10	38	29	58	58	25	28	35
11	6	40	38	32	36	41	31	31	49	33	5
57	838	34	41	10	43	2	3	3	0	1	1
19	26	53	20	54	56	54	11	11	35	22	20
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

5, 3, सू., 6 मं. श., बु. 4, 1, 2 शु. गु. के., 7 चं., 10, 8 रा., 12 ह., 9 प्लू., 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार पुष्य नक्षत्र के योग में, शनिवार आश्लेषा चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्ती-वर्षा योग। रक्षाबंधन को आश्लेषा में रवि तथा श्रावणी उपाकर्म योग तथा पांच बुधवार और पांच गुरुवार होने से मिला-जुला तेजी-मंदी का योग बनेगा। एक जगह गुरु-शुक्र हो, बने युद्ध आसार। अनावृष्टि, अतिवृष्टि से दुःख पावे संसार॥ अर्थात् गुरु-शुक्र दोनों की युति से संसार में कहीं-कहीं युद्ध या युद्ध की चर्चा तथा लक्षण दिखाई देंगे। तथा युद्ध छिड़ने के योग से जनता में भय का वातावरण रहेगा। अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि से भी कष्ट योग बनेगा। बुधस्य पंचवाराः स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्ष च प्रजायते॥ के योग से कुछ सुविधाएं बढ़ेंगी। तथा सुभिक्ष का योग बनेगा। फसलें अच्छी होंगी। एकादश्यां क्रूर वारे छत्र भंगोऽथवा भुवि। नगर ग्राम भंगःस्यात् वैरी चौराद्युपद्रवाः॥ इस योग के कारण अमेरिका, पाकिस्तान, हॉलैण्ड, श्रीलंका तथा भारत एवं आस्ट्रेलिया प्रभावित होंगे। यत्र मासे पंचवासरा जायन्ते वृहस्पतेः। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्ध च जायते॥ पश्चिमी राष्ट्रों में विग्रह तथा युद्धादि योग बनेगा। व्यापार भविष्य-रुई, चांदी, चावल, फल मंदे। लालमिर्च, सोना, तांबा, पत्थर, संगमरमर में तेजी। कपड़ा, साबुन, कोयला, सूखी लकड़ी, कागज के दामों में वृद्धि होगी। वायदा बाजार में लाभदायक योग विशेष बनेगा। गेहूं में जोरदार तेजी। सरसों व रायरा में भी तेजी। ग्वार आकाश छूयेगा। आकाश लक्षण-ता. 22 जुला. से 1 अग० तक सम्पूर्ण भारत में अच्छी वर्षा का योग। श्रीलंका में बाढ़ का योग विशेष। दक्षिणी भारत की नदियां तूफानी दौर में चलेंगी। उत्तरांचल में अतिवृष्टि से जन-धन हानि का योग। बिजली गिरने का योग दक्षिण भारत तथा दक्षिण राजस्थान में बनेगा। शकुन विचार-श्रावण शुक्ला सप्तमी यदि वर्षा हो जाय। अन्न बहुत पैदा हुए मंगसिर में मंदी होय॥ चित्रा स्वाती विशाखा में श्रावण न बरसत। अन्न को संग्रह करो, दूना भाव बढ़त॥ श्रावण शुक्ला अष्टमी के दिन प्रातः काल। सूरज पर बादल छवै वर्षा करे निहाल॥

ता. 2 अगस्त ❖ श्रावण शु. 15 गुरु प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

5, 3 शु., सू., 6 मं., 4, 2 गु., श., 1, के., बु., 7, 10 चं., 8, 12, रा., ह., 9 प्लू., 11 ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
3	9	5	3	1	2	5	7	1	11	10	8
16	14	22	9	16	1	29	7	7	14	8	13
4	10	34	19	24	9	52	36	36	20	18	26
39	40	31	15	2	29	23	15	15	27	30	9
57	845	35	35	11	49	3	3	3	0	1	1
23	59	47	56	11	34	30	11	11	54	29	14
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्र. भाद्रपद कृष्ण पक्षः-10 श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 3 से 17 अगस्त सन् 2012 ई., रा. मिति 12 से 26 श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
12	शु	1	4	8	7	24	ध	37	31	20	45	सौ	33	28	19	8	कौ	4	5	7	24	33	30	5	45	19	9	19	13	3	कुं. 8।58	3	17	2	3	57/24	19	49	6	47	पंचक 8।58 से, चित्रायां भौम: 11।52, अशून्य शयन व्रत A
13	श	2	1	28	6	21	श	38	38	20	49	शो	29	24	17	31	ग	1	28	6	21	33	26	5	45	19	8	20	14	4	कुम्भ	3	17	59	28	25	20	25	7	46	भ. 18।5 से, तुलायां चित्रा 3 में शनि: 7।54, कज्जली B
14	र	3	0	26	5	56	पूभा	39	27	21	33	अ	26	42	16	27	वि	0	26	5	57	33	23	5	46	19	7	21	15	5	मी. 15।18	3	18	56	53	25	21	0	8	44	भ. 5।57 तक, पूर्वोदयं बुध: 24।39, कृष्ण चतुर्थी व्रत, C
15	चं	4	1	12	6	15	उभा	43	4	23	0	सु	25	27	15	57	बा	1	12	6	15	33	20	5	47	19	7	22	16	6	मीन	3	19	54	20	27	21	34	9	40	रक्षा पंचमी (उड़ीसा) A पूर्ति (बंगाल) C संकट 4, बहुला 4
16	मं	5	3	47	7	18	रे	48	22	25	8	धृ	25	34	16	1	तै	3	47	7	18	33	16	5	47	19	6	23	17	7	मे. 23।08	3	20	51	48	28	22	9	10	34	पंचक 25।8 तक, मूले 4 प्लूटो 11।45 G कलियुगादि 13
17	बु	6	8	2	9	1	अ	55	1	27	48	शू	26	54	16	33	व	8	2	9	1	33	13	5	48	19	5	24	18	8	मेष	3	21	49	18	30	22	45	11	28	भ. 9।1 से 22।15 तक, आर्द्रायां शुक्र: 14।3, मार्गी बुध: D
18	गु	7	13	33	11	14	भ	60	0	-	-	गं	29	5	17	26	ब	13	33	11	14	33	9	5	48	19	4	25	19	9	मेष	3	22	46	48	30	23	24	12	21	भा. क्रांति दिवस, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.), कालाष्टमी व्रत
19	शु	8	19	48	13	44	भ	2	30	6	49	वृ	31	42	18	30	कौ	19	48	13	44	33	6	5	49	19	3	26	20	10	वृ. 13।36	3	23	44	20	32	24	0	13	14	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव), मां आद्यकाली ज., मेला E
20	श	9	26	6	16	16	कृ	10	14	9	55	धु	34	16	19	32	ग	26	6	16	16	33	2	5	49	19	2	27	21	11	वृष	3	24	41	54	34	24	6	14	5	भ. 29।28 से, सहादत-ए-हजरत अली (मु.), गोगा नवमी, F
21	र	10	31	49	18	33	रो	17	33	12	51	व्या	36	19	20	22	वि	31	49	18	33	32	59	5	50	19	1	28	22	12	मि. 26।11	3	25	39	28	34	24	51	14	55	भ. 18।33 तक E द्रौण (दनकौर) F नंदोत्सव (गोकुल)
22	चं	11	36	23	20	24	मृ	23	52	15	23	ह	37	28	20	50	ब	4	16	7	33	32	55	5	50	19	1	29	23	13	मिथुन	3	26	37	5	37	25	40	15	44	अजा एकादशी व्रत (सबका) B (बड़ी) तीज, सातूड़ी तीज
23	मं	12	39	28	21	38	आ	28	47	17	22	व	30	28	20	50	कौ	8	7	9	6	32	51	5	51	19	0	30	24	14	मिथुन	3	27	34	42	37	26	32	16	29	तुला में मंगल 9।53, वत्स द्वादशी, पर्युषण (जैन)
24	बु	13	40	52	22	13	पुन	32	6	18	42	सि	36	9	20	19	ग	10	22	10	0	32	48	5	52	18	59	31	25	15	क. 12।26	3	28	32	22	40	27	27	17	13	भ. 22।13 से, भारतीय स्वतंत्रता दिवस 66 वां, प्रदोष व्रत, G
25	गु	14	40	39	22	8	पु	33	48	19	23	व्य	33	33	19	17	वि	10	57	10	15	32	44	5	52	18	58	भा.1	26	16	कर्क	3	29	30	2	40	28	24	17	53	भ. 10।15 तक, व्यतिपात पुण्यं, सौर भाद्रपद प्रा., मघायां H
26	शु	30	38	56	21	27	श्ले	34	1	19	29	वरि	29	45	17	47	चतु	9	57	9	51	32	40	5	53	18	57	2	27	17	सिं. 19।29	4	0	27	44	42	29	23	18	32	जमातुल विदा, शब-ए-कद्र (मु.), देवपितृकार्याऽमावस्या, J

D 10।20, चन्दन षष्ठी व्रत, ऊभी 6, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रतारंभ, माधव देव तिथि (असम) H सिंहेऽर्क: 19।58, अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा, संक्रांति पुण्यं, मास शिवरात्री व्रत J कुशोत्पाटिनी पिठोरी मन्वादि 30, कुशाग्रहण मंत्र (ॐ हुँ फट् स्वाहा), मेला राणी सती (झुंझुनू), लोहर्गल स्नान (राज.), मेला सुथरेशाह (दिल्ली), पुरुषोत्तम (अधिक) मासारंभ:, नक्त व्रत पूर्ण, कल्प-सूत्र पाठ (जैन)

प्र.भाद्रपद कृ. 8 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 10 अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
3	0	5	3	1	2	6	7	1	11	10	8
23	26	27	7	17	8	0	7	7	14	8	13
44	1	25	34	41	9	23	10	10	11	6	17
20	2	4	3	40	22	18	49	49	40	13	0
57	770	36	8	19	54	4	3	3	1	1	1
32	40	44	32	18	33	09	11	11	15	34	5
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.फा. 2	भर. 3	चित्रा 1	पुष्य 1	रोहि. 2	मृग. 4	चित्रा 3	अनु. 1	कृत्ति. 3	उ.भा. 3	धनि. 4	मूल 4

5 | 3 शु. | सू. | 2 गु. के. | 6 मं. | बु. 4 | 1 चं. | 7 श. | 10 | 8 रा. | 12 ह. | 9 प्लू. | 11 ने.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शुक्रवार धनिष्ठा नक्षत्र से अमावस्या शुक्रवार आश्लेषा तक चलेगा। चित्रा में भौम, बुधोदय पूर्व दिशा में, मघा नक्षत्रे भुवन भास्कर सूर्य ता. 16 अगस्त गुरुवार सायं 19:58 पर प्रवेश के कारण वर्षा का योग भी अच्छा बनेगा। संक्रांति ऊभी 30 मुहूर्त्ती के योग से जनता में धोखा संबंधी घटनाएं ज्यादा चलेंगी। गुरुवारी संक्रांतियां जब-जब जग में आव। सुखी प्रजा धन-धान्य युक्त सभी वस्तु समभाव॥ गुरुवार की संक्रांति से सभी वस्तुओं के भाव सम यानि समान रहेंगे। कुशाग्रहणी अमावस्या आश्लेषा शुक्रवार। नारी घर बिगाड़ करे, बढ़े बलात्कार॥ गुरु-शुक्र की राशि परिवर्तन के कारण सत्ता पक्ष में भी परिवर्तन योग बनता है। मुस्लिम राष्ट्रों में उपद्रव तथा आंदोलन बढ़ेंगे। विदेशी व्यापार प्रणाली में भी परिवर्तन का योग यानि शर्तों का पुन: लेखन तथा चिन्तन होगा। गुरु, केतु के अंशात्मक नजदीक होने के कारण विश्व शांति के कारगर उपाय नहीं किये गये तो अनिष्ट होगा। यत्र-तत्र भूकम्प, बाढ़ ग्रस्त योग, पाकिस्तान में दंगा का रोग उत्पन्न होने का योग है। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदा। सूत, चांदी, सोना में तेजी। मसाला उद्योग में तेजी, किराना सामग्री, सूखी मेवा में विशेष तेजी। बिनौला, असली मूसली, अरहर, चना, गेहूं में तेजी का योग है। आकाश लक्षण-ता. 3 से 15 अग० तक पंजाब, हिमाचल प्र०, कश्मीर, आसाम, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र के अनेक क्षेत्रों में बाढ़ जैसा वातावरण चलेगा। यत्र-तत्र बिजली गिरने का भी योग बनता है। शकुन विचार-भादवा बदी बीज को घटा टोप आकाश। अन्न खरीदो खूब ही तेजी फागुन आश॥ तथा भाद्रपद कृष्ण में चन्द्रमा के चारों ओर कुण्डल बने तो आगे श्रेष्ठ वर्षा सूचक होता है। दो दो कुण्डल शशि इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगाय सी नदी बहे भरपूर॥

ता. 17 अगस्त ❖ प्र.भाद्रपद कृ. 30 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

6 | 4 चं.बु. | 7 मं. श. | सू. 5 | 3 शु. | 2 गु. के. | 8 रा. | 11 ने. | 9 प्लू. | 1 | 10 | 12 ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
4	3	6	3	1	2	6	7	1	11	10	8
0	22	1	11	18	14	0	6	6	14	7	13
27	13	45	48	43	45	54	48	48	1	54	10
44	24	28	12	22	10	26	34	34	50	59	6
57	786	34	56	8	57	4	3	3	1	1	0
42	00	32	49	26	55	41	11	11	31	37	55
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मघा 1	पुन. 1	चित्रा 3	पुष्य 2	रोहि. 2	आर्द्रा 2	चित्रा 3	अनु. 1	कृत्ति. 3	उ.भा. 3	धनि. 4	मूल 4

प्र. भाद्रपद शुक्ल पक्षः-11

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 18 से 31 अगस्त सन् 2012 ई., रा. मि. 27 श्रावण से 9 भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
27	श	1	35	59	20	17	म	32	59	19	5	प	24	55	15	51	किं	7	35	8	55
28	र	2	32	3	18	43	पूफा	30	59	18	17	शि	19	15	13	36	बा	4	7	7	32
29	चं	3	27	27	16	53	उफा	28	17	17	13	सि	12	58	11	6	ग	27	27	16	53
30	मं	4	22	24	14	52	ह	25	8	15	58	सा	6 / 59	16 / 22	8 / 29	25 / 40	वि	22	24	14	52
31	बु	5	17	6	12	46	चि	21	46	14	38	शुभ	52	20	26	51	बा	17	6	12	46
भा.1	गु	6	11	44	10	37	स्वा	18	20	13	16	ब्र	45	17	24	3	तै	11	44	10	37
2	शु	7	6	23	8	29	वि	14	55	11	54	ऐं	38	17	21	15	व	6	23	8	29
3	श	8	1	7	6	24	अनु	11	36	10	35	वै	31	22	18	30	ब	1	7	6	24
0	श	9	56	0	28	21	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0
4	र	10	51	3	26	23	ज्ये	8	25	9	19	वि	24	35	15	48	तै	23	29	15	21
5	चं	11	46	23	24	31	मू	5	26	8	8	प्री	18	0	13	10	व	18	40	13	26
6	मं	12	42	8	22	50	पूषा	2	46	7	5	आ	11	41	10	39	ब	14	11	11	39
7	बु	13	38	28	21	22	उषा	0 / 59	33 / 1	6 / 29	12 / 35	सौ	5	45	8	17	कौ	10	12	10	4
8	गु	14	35	36	20	14	ध	58	19	29	19	शो	0 / 55	22 / 44	6 / 28	8 / 17	ग	6	55	8	45
9	शु	15	33	47	19	31	श	58	45	29	30	सु	51	58	26	47	वि	4	32	7	49

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
27	32	37	5	53	18	56	3	28	18	सिंह	4	1	25	27	57 / 43	6	22	19	10	पुरुषोत्तम मास महात्म्य श्रवणारंभः
28	32	33	5	54	18	55	4	29	19	क. 24।02	4	2	23	12	45	7	23	19	48	चन्द्रदर्शन मु. 45 समर्घता, अनु. 1 राहुः कृति. 3 में केतुः 8।53
29	32	29	5	54	18	54	5	1	20	कन्या	4	3	20	57	45	8	24	20	26	भ. 27।53 से, सव्वाल मु. 10 प्रा., ईदूल फित्तर (मीठी ईद) मु.
30	32	25	5	55	18	53	6	2	21	तु. 27।18	4	4	18	44	47	9	27	21	6	भ. 14।52 तक, सायन कन्या में सूर्यः 17।32, शरद ऋतु A
31	32	21	5	55	18	52	7	3	22	तुला	4	5	16	32	48	10	30	21	50	पुनर्वसो शुक्रः 13।10
भा.1	32	17	5	56	18	51	8	4	23	तुला	4	6	14	21	49	11	34	22	38	रा. भाद्रपद प्रारंभ
2	32	13	5	57	18	50	9	5	24	वृ. 6।15	4	7	12	12	51	12	38	23	30	भ. 8।29 से 19।26 तक, स्वाती में मंगल 23।24, श्रीदुर्गाष्टमी
3	32	9	5	57	18	49	10	6	25	वृश्चिक	4	8	10	3	51	13	40	24	0	A प्रा., श्लेषा में बुधः 6।15, विनायक 4 व्रत
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	नवमी तिथि क्षयः
4	32	5	5	57	18	48	11	7	26	ध. 9।19	4	9	7	56	53	14	39	24	27	पूर्वास्तं बुधः 22।25
5	32	1	5	58	18	46	12	8	27	धनु	4	10	5	50	54	15	32	25	27	भ. 13।26 से 24।31 तक, कमला एकादशी व्रत (सर्वे.)
6	31	57	5	58	18	45	13	9	28	म. 12।51	4	11	3	46	56	16	21	26	30	मघायां सिंहे बुधः 29।13
7	31	53	5	59	18	44	14	10	29	मकर	4	12	1	42	56	17	5	27	32	अगस्तोदयं 23।57, प्रदोष व्रतं B 15 पुण्यं च
8	31	49	5	59	18	43	15	11	30	कुं. 17।24	4	12	59	40	58	17	45	28	33	भ. 20।14 से, पंचक 17।24 से, पूफायां सूर्यः 13।55
9	31	45	6	0	18	42	16	12	31	कुम्भ	4	13	57	40	58 / 0	18	21	29	33	भ. 7।49 तक, श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत, अधिक मासीय B

प्र.भाद्रपद शु. 8 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 25 अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
4	7	6	3	1	2	6	7	1	11	10	8
8	13	6	22	19	22	1	6	6	13	7	13
10	40	49	50	45	42	34	23	23	48	41	3
3	40	46	30	50	34	16	8	8	20	51	39
57	847	38	99	7	60	05	3	3	1	1	0
51	00	24	48	18	57	13	11	11	49	39	43
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

7 मं. श.
6
4 बु.
सू. 5
2 गु. के.
3 शु.
8 रा. चं.
11 ने.
9 प्लू.
1
10
12 ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार से प्रारंभ होकर पूर्णिमा शुक्रवार तक रहेगा। चन्द्रदर्शन द्वितीया को 45 मुहूर्त्ती होना पुनर्वसु में शुक्र का प्रवेश, मघा में बुध, रोहिणी 4 में गुरु प्रवेश तथा पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) का प्रारंभ होना ता. 30 अग० को पूर्वाफाल्गुनी में सूर्य का प्रवेश इत्यादि ग्रहादि योग से सामाजिक परिक्षेत्र में अध्यात्म चर्चाएं, धार्मिक आयोजन, भौगोलिक वृज परिक्रमा तथा यज्ञादि कार्यों का अनुष्ठान जैसा कार्यक्रम चलेगा। दो भाद्रपद मास होने से कृषि क्षेत्र में अच्छा विकास एवं अच्छी पैदावार होगी। इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा में वृद्धि तथा स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। व्यभिचार तथा भ्रष्टाचार में वृद्धि होगी। शुक्रस्य पंचवारास्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ राजा-प्रजा में सुख-शांति तथा सुभिक्ष का संचार बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय जगत में विश्व शांति की चर्चाएं जोर-शोर से होंगी। नवीन अनुसंधान व व्यापारिक जगत में नवीन उद्योग-धंधों की स्थापना की जायेगी। बुधास्त पूर्वस्याम् के योग से व्यपारिक गति में तीव्रता का झटका लगेगा। पूर्णिमा को शुक्रवार और शतभिषा के योग से माह में शुभ कार्य योग ज्यादा बनेंगे। तथा गुरुवार की संक्रांति के कारण पीले रंग की वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। धान्य मंदा होगा। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल के योग से रुई में मंदी का झटका आयेगा। गुड़, तैल, तिलहन, सोना में तेजी का योग तथा खाण्ड, शक्कर, खोपरा, राई, नमक, पशु आहार, औषधियों में भी तेजी रहेगी। चावल, धनियां, चना के भावों में घटाबढ़ी चलेगी। अरहर, अलसी, जीरा, तारामीरा, अरण्डी के भाव यथावत् रहेंगे। **आकाश लक्षण**-ता. 19, 23, 25, 27, 30 व 31 को पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्र०, जम्मू-कश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान में वर्षा का दौर यत्र-तत्र-सर्वत्र अच्छा चलेगा। तूफान का योग भी है। **शकुन विचार**-भाद्र शुक्ल पूर्णिमा निर्मल भया आकाश। गेहूं, जौ, चना, चावल का स्टॉक लाभ की आश॥ पुरुषोत्तम मास में धर्म गति जो चले सुचाल। जन-जन में स्नेह बढ़े, तीर्थ व्रत खुशहाल॥ चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षे भादव मास। वर्षा समझो समाप्त है, रखो आगे की आस॥

ता. 31 अगस्त ❖ प्र.भाद्रपद शु. 15 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

7 मं. श.
6
4
5 सू. बु.
2 गु. के.
3 शु.
8 रा.
11 ने. चं.
9 प्लू.
1
10
12 ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
4	10	6	4	1	2	6	7	1	11	10	8
13	6	10	3	20	28	2	6	6	13	7	12
57	45	42	49	26	54	6	4	4	36	32	59
40	55	21	28	36	56	51	3	3	52	1	54
58	808	39	114	6	62	5	3	3	1	1	0
0	58	01	47	25	50	35	11	11	59	38	34
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

द्वि. भाद्रपद कृष्ण पक्षः-12 श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 1 से 16 सितंबर सन् 2012 ई., राष्ट्रीय मिति 10 से 25 भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गतांश	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
10	श	1	33	15	19	18	पूभा	60	0	-	-	धृ	49	15	25	43	बा	3	20	7	20	31	41	6	0	18	41	17	13	1	मी. 23।59	4	14	55	41	58/1	18	57	6	31	सितंबर मा. 9 ता. 30 प्रा., कर्के शुक्रः 6।14
11	र	2	34	11	19	41	पूभा	0	30	6	13	शू	47	44	25	6	तै	3	30	7	25	31	37	6	1	18	40	18	14	2	मीन	4	15	53	44	3	19	31	7	27	A अंगारकी कृष्ण चतुर्थी व्रतं
12	चं	3	36	41	20	42	उभा	3	46	7	32	गं	47	26	25	0	व	5	13	8	7	31	33	6	1	18	39	19	15	3	मीन	4	16	51	48	4	20	6	8	22	भ. 8।7 से 20।42 तक
13	मं	4	40	42	22	19	रे	8	33	9	27	वृ	48	16	25	20	ब	8	30	9	26	31	29	6	2	18	37	20	16	4	मे. 9।27	4	17	49	54	6	20	43	9	17	पंचक 9।27 तक, पूफायां बुधः 26।52, पुष्ये शुक्रः 9।35, A
14	बु	5	46	1	24	27	अ	14	42	11	55	ध्रु	50	4	26	4	कौ	13	13	11	20	31	25	6	2	18	36	21	17	5	मेष	4	18	48	2	8	21	21	10	11	शिक्षक दिवस
15	गु	6	52	13	26	56	भ	21	54	11	49	व्या	52	30	27	3	ग	19	2	14	0	31	20	6	3	18	35	22	18	6	वृ. 21।35	4	19	46	12	10	22	2	11	4	भ. 26।56 से,
16	शु	7	58	42	29	32	कृ	29	39	17	55	ह	55	8	28	7	वि	25	27	16	14	31	16	6	3	18	34	23	19	7	वृष	4	20	44	24	12	22	45	11	56	भ. 16।14 तक
17	श	8	60	0	-	-	रो	37	18	20	59	व	57	30	29	4	बा	31	49	18	48	31	12	6	4	18	33	24	20	8	वृष	4	21	42	38	14	23	32	12	47	उभा. 3 वक्री हर्षल 10।25, विश्व साक्षरता दिवस, कालाष्टमी
18	र	8	4	46	7	59	मृ	44	13	23	46	सि	59	8	29	44	कौ	4	46	7	59	31	8	6	4	18	32	25	21	9	मि. 10।26	4	22	40	54	16	24	0	13	36	C ऽमावस्या, पुरुषोत्तम (अधिक) मास पूर्ति, संक्रांति पुण्यं
19	चं	9	9	50	10	1	आ	49	50	26	1	व्य	59	39	29	57	ग	9	50	10	1	31	4	6	5	18	30	26	22	10	मिथुन	4	23	39	13	17	24	22	14	22	भ. 22।48 से, व्यतिपात पुण्यं
20	मं	10	13	22	11	26	पुन	53	46	27	36	वरि	58	47	29	36	वि	13	22	11	26	31	0	6	5	18	29	27	23	11	क. 21।16	4	24	37	33	20	25	15	15	6	भ. 11।26 तक, उफायां बुधः 26।15
21	बु	11	15	4	12	7	पु	55	48	28	25	परि	56	24	28	39	बा	15	4	12	7	30	55	6	6	18	28	28	24	12	कर्क	4	25	35	55	22	26	11	15	47	कमला एकादशी व्रत (सर्वेषां) B शिवरात्री व्रतं
22	गु	12	14	49	12	2	श्ले	56	0	28	30	शिव	52	30	27	7	तै	14	49	12	2	30	51	6	6	18	27	29	25	13	सिं. 28।30	4	26	34	20	25	27	8	16	27	कन्या में बुधः 21।33, उफा. में सूर्यः 7।50, प्रदोष व्रतं
23	शु	13	12	43	11	12	म	54	30	27	55	सि	47	15	25	1	व	12	43	11	12	30	47	6	7	18	26	30	26	14	सिंह	4	27	32	46	26	28	7	17	5	भ. 11।12 से 22।30 तक, विशाखायां भौमः 6।17, मास B
24	श	14	9	0	9	43	पूफा	51	38	26	46	सा	40	49	22	27	श	9	0	9	43	30	43	6	7	18	24	31	27	15	सिंह	4	28	31	15	29	29	8	17	43	भारतीय इंजीनियर्स डे, पितृकार्याऽमावस्या
25	र	30	3	58	7	43	उफा	47	44	25	13	शुभ	33	30	19	32	ना	3	58	7	43	30	39	6	8	18	23	अ1	28	16	क. 8।25	4	29	29	45	30	30	10	18	22	कन्यायांऽर्कः 17।54, श्लेषायां शुक्रः 14।16, देवकार्या C

द्वि.भाद्रपद कृ. 8 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 8 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
4	1	6	4	1	3	6	7	1	11	10	8
21	15	15	19	21	7	2	5	5	13	7	12
42	41	57	21	12	27	53	38	38	20	19	56
38	39	55	9	6	31	30	38	38	4	9	30
58	707	39	115	5	65	6	3	3	2	1	0
14	52	47	32	6	09	01	11	11	11	45	19
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पूफा. 3	रोहि. 2	स्वा. 3	पूफा. 1	रोहि. 4	पुष्य 1	चित्रा 3	विशा. 4	कृत्ति. 2	उभा. 4	धनि. 4	मूल 4

7 मं. श. | 6 | सू. | 4 शु. | 3 | 5 बु. | 2 चं. गु. के. | 8 रा. | 11 ने | 9 प्लू. | 1 | 10 | 12 ह.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा शनिवार से प्रारंभ होकर अमावस्या रविवार तक चलेगा। पक्ष में ता. 1 को कर्क में शुक्र, ता. 4 को पुष्य में शुक्र, ता. 13 को उ०फा० में सूर्य, ता. 11 को उ०फा० में बुध ग्रहादि योग तथा मं+श की तुला में युक्ति का योग अकाल के लक्षण बनाता है। **शनि-गुरु भृगु घैर, अथवा गुरु-भृगु संग। वर्षा होय अकाल में, अथवा जग में जंग॥** जब शनि, मंगल और गुरु-शुक्र वृषभ या तुला में आवे तो अथाह वर्षा योग बिना समय के होगी या राजाओं में जंग छिड़ेगा। युद्ध का वातावरण पश्चिमोत्तर देशों में बनेगा। इस पक्ष में पुरुषोत्तम मास की समाप्ति हो रही है। तथा कृष्णा अष्टमी से अमावस्या तक कालसर्प योग भी शंख पाल कालसर्प योग बनता है। फलतः केन्द्रीय सरकार में विद्रोह बढ़ेगा। अथवा अकाल मृत्यु की घटना घटेगी। **षोडष दिवस पखवारा जब-जब भी होय। सुख-शांति सर्वत्र रहे, जनता हर्षित होय॥** अर्थात् पक्ष में शांति का योग अच्छा तथा उपद्रव में न्यूनता बनती है। श्रेष्ठ कार्यों की योजनाएं बनेंगी। देव स्थानों, पुराने खण्डहरों को प्राचीन परम्परा के योग से पुरातत्व विभाग में गतिशीलता बढ़ेगी। पर्यटक बढ़ेंगे। **व्यापार** भविष्य-ग्रहचाल से गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी एवं घी के योग मंदे बनते हैं। सोना, चांदी, सरसों के भावों में उठापटक रहेगी। तिलहन, दलहन एवं शेयर्स बाजार तेज रहेंगे। रुई, पाट, बारदाना, अखबारी कागज, सीमेन्ट, खड्डी, खाण्ड, शक्कर, मिश्री, अरहर के भाव यथावत् स्थिर चलेंगे। **आकाश लक्षण**-3 से 14 सितं० तक दक्षिणी भारत, नेपाल, सूरत, दार्जलिंग, विन्ध्य प्रदेश, उ० प्र० बिहार, [illegible] अनहोनी घटनाएं प्राकृतिक घटेंगी। जन-धन हानि भी भगदड़

ता. 16 सितंबर ❖ द्वि.भाद्रपद कृ. 30 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

6 बु. | 4 शु. | 7 मं. श. | 5 सू. चं. | 3 | 2 गु. के. | 8 रा. | 11 ने. | 9 प्लू. | 1 | 10 | 12 ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
4	4	6	5	1	3	6	7	1	11	10	8
29	28	21	4	21	16	3	5	5	13	7	12
29	16	19	13	46	15	43	13	13	1	6	54
45	23	40	26	41	34	23	12	12	57	50	58
58	845	40	108	3	66	6	3	3	2	1	0
30	34	33	00	41	45	24	11	11	19	30	05
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उफा. 1	उफा. 1	विशा. 1	उफा. 3	रोहि. 4	पुष्य 4	चित्रा 4	अनु. 1	कृत्ति. 3	उ.भा. 3	शत. 1	मूल 4

द्वि. भाद्रपद शुक्ल पक्षः-13 श्री सं. 2069 | दिन | स्टैं.टा. | दिनांक | चन्द्र राशि | दै. रवि स्पष्ट | | चन्द्रोदयास्त | ता. 17 से 30 सितंबर सन् 2012 ई. ...

द्वि. भाद्रपद शुक्ल पक्षः-13

शाके 1934

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	मान	मान	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
0	र	1	58	1	29	20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
26	चं	2	51	27	26	43	ह	43	10	23	24	शु	25	33	16	22	बा	24	47	16	3	30	34	6	8	18	22	2	29	17	कन्या	5	0	28	17	58 / 32	7	13	19	3
27	मं	3	44	38	24	0	चि	38	18	21	28	ब्र	17	16	13	3	तै	18	3	13	22	30	30	6	9	18	21	3	1	18	तु. 10।07	5	1	26	51	34	8	18	19	46
28	बु	4	37	53	21	18	स्वा	33	27	19	32	ऐं	8	54	9	43	व	11	13	10	39	30	26	6	9	18	20	4	2	19	तुला	5	2	25	27	36	9	23	20	34
29	गु	5	31	25	18	44	वि	28	52	17	43	वै	0 / 52	40 / 46	6 / 27	26 / 16	व	4	35	8	0	30	21	6	10	18	18	5	3	20	वृ. 12।09	5	3	24	5	38	10	29	21	26
30	शु	6	25	25	16	20	अनु	24	46	16	5	प्री	45	16	24	17	तै	25	25	16	20	30	17	6	10	18	17	6	4	21	वृश्चिक	5	4	22	44	39	11	33	22	22
31	श	7	20	2	14	12	ज्ये	21	16	14	41	आ	38	19	21	30	व	20	2	14	12	30	13	6	11	18	16	7	5	22	ध. 14।41	5	5	21	25	41	12	33	23	22
आ.1	र	8	15	21	12	19	मू	18	27	13	34	सौ	31	55	18	57	ब	15	20	12	29	30	9	6	11	18	15	8	6	23	धनु	5	6	20	8	43	13	29	-	-
2	चं	9	11	23	10	45	पूषा	16	22	12	44	शो	26	8	16	39	कौ	11	23	10	45	30	5	6	12	18	14	9	7	24	म. 18।35	5	7	18	52	44	14	18	24	24
3	मं	10	8	13	9	30	उषा	15	3	12	14	अ	20	59	14	36	ग	8	13	9	30	30	0	6	12	18	12	10	8	25	मकर	5	8	17	38	46	15	3	25	25
4	बु	11	5	53	8	34	श्र	14	33	12	3	सु	16	30	12	49	वि	5	53	8	34	29	56	6	13	18	11	11	9	26	कुं. 24।05	5	9	16	26	48	15	43	26	26
5	गु	12	4	27	8	0	ध	15	0	12	13	धृ	12	45	11	19	बा	4	27	8	0	29	52	6	13	18	10	12	10	27	कुम्भ	5	10	15	15	49	16	20	27	25
6	शु	13	4	1	7	50	श	16	24	12	47	शू	9	47	10	9	तै	4	1	7	50	29	47	6	14	18	9	13	11	28	कुम्भ	5	11	14	7	52	16	56	28	22
7	श	14	4	40	8	6	पूभा	18	53	13	47	गं	7	40	9	18	व	4	40	8	6	29	43	6	14	18	8	14	12	29	मी. 7।30	5	12	13	0	53	17	30	29	18
8	र	15	6	31	8	51	उभा	22	32	15	16	वृ	6	29	8	51	ब	6	31	8	51	29	39	6	15	18	6	15	13	30	मीन	5	13	11	55	55	18	5	30	13

ता. 17 से 30 सितंबर सन् 2012 ई., रा. मि. 26 भाद्रपद से 8 आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

प्रतिपदा तिथि क्षयः B हरितालिका 3, मन्वादि 3, गौरी 3
चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, विश्वकर्मा पूजन, बाबा रामदेव A
जिल्काद मु. मा. 11 प्रा., मार्गी प्लूटो 10।15, वाराह ज., B
भ. 10।39 से 21।18 तक, हस्ते बुधः 12।9, श्री गणेश जन्म C
ऋषि पंचमी, क्षमावणी पर्व (जैन) E महालक्ष्मी व्रतारंभ
सायन तुलायां सूर्यः 13।30, दक्षिण गोल प्रा., सूर्य षष्ठी व्रत, D
भ. 14।12 से 25।13 तक, मुक्ता भरण सप्तमी, सन्तान 7, E
रा. आश्विनारंभः, श्री दुर्गाष्टमी, दधीची ज., श्री राधाष्टमी, F
श्री चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), भागवत G
भ. 20।53 से, दशावतार 10, मेला बाबा रामदेव पूर्ण (रुणीचा)
भ. 8।34 तक, पंचक 24।5 से, हस्ते सूर्यः 23।16, पद्मा H
चित्रा में बुधः 12।9, पश्चिमोदयं बुधः 20।40, विश्व पर्यटक दि., K
वृश्चिके भौमः 20।52, मघायां सिंहे शुक्रः 8।44, भुवनेश्वरी ज. J
भ. 8।6 से 20।25 तक, श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत
बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबंदी, पूर्णिमा पुण्यं, गोत्रिरात्री व्रत पूर्ण, L
L प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, महालय प्रा., पूर्णिमा श्राद्ध

A मेला प्रा. (रुणीचा), तेलाधर तप (जैन), उपाकर्म (सामवे.) C 4 व्रत, विनायक 4, सिद्धि विनायक व्रत, कलंकी-पत्थर 4, चन्द्रदर्शन निषेध, श्री गणेश जन्मोत्सव (महा.), संवत्सरी (जैन), पर्युषण पर्व पूर्ण (जैन) D ललिता 6 व्रत (गुज.), बलदेव 6, मेला व्रजमंडल (उ.प्र.) F मेला बरसाना (उ.प्र.) G ज., दशावतार व्रत H (जलझूलनी) 11 व्रत (सब.), मेला चारभुजा नाथ गढ़भीर (राज.), श्री वामन ज., श्रवण 12 व्रत, हरिवासरः 12।3 तक J अनन्त 14 व्रत, मेला सोढल व छपार (पं.) K प्रदोष व्रतं, गोत्रिरात्री व्रतारंभः

द्वि. भाद्रपद शु. 8 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 23 सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
5	8	6	5	1	3	6	7	1	11	10	8
6	8	26	16	22	24	4	4	4	12	6	12
20	39	6	20	7	8	29	50	50	45	56	55
8	0	6	17	17	3	16	57	57	21	47	14
58	843	41	100	2	68	6	3	3	2	1	0
43	03	11	47	22	2	40	11	11	24	23	8
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
3 [illegible]	3 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	4 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]

7 मं. श. | 5 | सू. | 8 रा. | 4 शु. | 6 बु. | 3 | 9 चं. प्लू. | 12 ह. | 10 | 2 गु. के. | 11 ने. | 1

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष क्षय तिथौ प्रतिपदा के योग से द्वितीया सोमवार को प्रारंभ हो रहा है। जो कि पूर्णिमा रविवार तक चलेगा। पक्ष में चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती, उपाकर्म, विश्वकर्मा पुण्य, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत जयंती, दिनांक 16 सितं० को अमावस्या योग में भुवन भास्कर सूर्यदेव कन्या राशि में प्रवेश सायं 17:54 पर शुभ योग। ऊभी संक्रांति 45 मुहूर्त्ती के योग से तथा मं+रा की युक्ति कपट व्यवहार का प्रभाव बढ़ेगा। रक्तादि लहर जैसा वातावरण बनेगा। बु+सू+श+मं+रा के द्वि-द्वि ग्रहादि युक्ति से तकनीकी शिक्षा की विशेष वृद्धि होगी। विशाखा का मंगल विद्रोह योग। जनता में बढ़े अविश्वास का रोग॥ इस माह में पांच शनि तथा पांच रविवार का योग बना है। यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्ष छत्र भंगः स्यात्तदा तत्र महद्भयम्॥ शनिवासरा यदा पंच जायन्ते रवि पंचकम्। महार्घं जायन्ते धान्यं रोग शोका कुला मही॥ भूमि पर प्राकृतिक आपदाएं, दुर्घटनाओं का सिलसिला जारी रहेगा। श्रीलंका, पाकिस्तान, भूटान, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, हिन्दचीन, बर्मा, नागालैण्ड, मलेशिया, मॉरीशस आदि अनेक देशों में प्राकृतिक ताण्डव का प्रभाव चलेगा। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तेल, तिल, दलहन तेज रहेंगे। 20 सितं० के लगभग गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, लाल रंग की वस्तुएं, मिर्च, कालीमिर्च, लौंग, इलायची में तेजी का विशेष योग बनेगा। गाय का भूसा सस्ता होगा। शेयर्स बाजार में मंदी का दौर तीन बार चलेगा। आकाश लक्षण-सितं० 18, 22, 28, 29 व 30 को चीन, इंग्लैण्ड, नेपाल, श्रीलंका, जापान, तुर्की, बर्मा, दक्षिणी पठारी भाग, समुद्र तटीय भाग, पश्चिमी राजस्थान में तेज वायु के साथ वर्षा योग। शकुन विचार-भाद्रपद शुक्ला अष्टमी मंगल मूल नक्षत्र योग। सन, सूत, घृत, गुड़ पांचवे मास वृद्धि योग॥ भाद्रपद राधाष्टमी योग रविवार। सातों संध्या शुभ बने, वृष्टि सम आधार॥

ता. 30 सितंबर ❖ द्वि. भाद्रपद शु. 15 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

7 श. | 5 शु. | 8 मं. रा. | 4 | 6 सू. बु. | 3 | 9 प्लू. | 12 चं. ह. | 10 | 2 गु. के. | 11 ने. | 1

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
5	11	7	5	1	4	6	7	1	11	10	8
13	11	0	27	2	2	5	4	4	12	6	12
11	35	56	39	18	8	16	28	28	28	47	57
55	8	47	25	28	53	51	42	42	28	36	2
58	758	41	154	1	69	6	3	3	2	1	0
55	53	47	18	00	10	53	11	11	25	15	21
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
1 [illegible]	3 [illegible]	4 [illegible]	2 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]

आश्विन कृष्ण पक्षः-14

श्री सं. 2069 शाके 1934

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
9	चं	1	9	37	10	6	रे	27	24	17	13	धु	6	16	8	46	कौ	9	37	10	6	29	35	6	15	18	5	16	14	1	मे. 17।13	5	14	10	52	58/57	18	41	7	7
10	मं	2	13	57	11	51	अ	33	26	19	38	व्या	6	59	9	4	ग	13	57	11	51	29	30	6	16	18	4	17	15	2	मेष	5	15	9	51	59	19	18	8	2
11	बु	3	19	24	14	2	भ	40	27	22	27	ह	8	34	9	42	वि	19	24	14	2	29	26	6	16	18	3	18	16	3	वृ. 29।12	5	16	8	53	59/2	19	58	8	55
12	गु	4	25	40	16	33	कृ	48	8	25	32	व	10	48	10	36	बा	25	40	16	33	29	22	6	17	18	2	19	17	4	वृष	5	17	7	56	3	20	41	9	48
13	शु	5	32	20	19	14	रो	56	1	28	42	सि	13	24	11	39	तै	32	20	19	14	29	18	6	18	18	1	20	18	5	वृष	5	18	7	2	6	21	26	10	39
14	श	6	38	50	21	50	मृ	60	0	-	-	व्य	15	59	12	42	ग	5	37	8	33	29	14	6	18	18	0	21	19	6	मि. 18।14	5	19	6	10	8	22	15	11	28
15	र	7	44	33	24	8	मृ	3	30	7	43	वरि	18	9	13	34	वि	11	49	11	2	29	9	6	19	17	58	22	20	7	मिथुन	5	20	5	20	10	23	6	12	15
16	चं	8	48	57	25	54	आ	10	5	10	21	परि	19	28	14	7	बा	16	56	13	6	29	5	6	19	17	58	23	21	8	क. 29।57	5	21	4	33	13	23	59	12	59
17	मं	9	51	34	26	57	पुन	15	11	12	24	शिव	19	35	14	10	तै	20	29	14	32	29	1	6	20	17	56	24	22	9	कर्क	5	22	3	48	15	-	-	13	41
18	बु	10	52	10	27	12	पु	18	27	13	43	सि	18	12	13	37	व	22	7	15	11	28	57	6	20	17	55	25	23	10	कर्क	5	23	3	5	17	24	55	14	20
19	गु	11	50	41	26	37	श्ले	19	43	14	14	सा	15	13	12	26	ब	21	40	15	1	28	53	6	21	17	54	26	24	11	सिं. 14।14	5	24	2	25	20	25	51	15	59
20	शु	12	47	13	25	15	म	18	58	13	57	शुभ	10	36	10	36	कौ	19	10	14	2	28	48	6	22	17	53	27	25	12	सिंह	5	25	1	46	21	26	50	15	36
21	श	13	42	4	23	12	पूफा	16	23	12	55	शु	4/57	28/4	8/29	9/12	ग	14	50	12	18	28	44	6	22	17	52	28	26	13	क. 18।34	5	26	1	11	25	27	51	16	15
22	र	14	35	31	20	35	उफा	12	16	11	17	ऐं	48	35	25	49	वि	8	56	9	57	28	40	6	23	17	51	29	27	14	कन्या	5	27	0	37	26	28	53	16	55
23	चं	30	27	59	17	35	ह	7	0	9	11	वै	39	22	22	8	चतु	1	50	7	7	28	36	6	23	17	50	30	28	15	तु. 20।01	5	28	0	5	28	29	58	17	37

ता. 1 से 15 अक्टूबर सन् 2012 ई., रा. मिति 9 से 23 आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

अक्टूबर मा. 10 ता. 31 प्रा., तुला में बुध: 17।42, प्रतिपदा A
भ. 24।53 से, महात्मा गांधी व शास्त्री ज., द्वितीया श्राद्ध
भ. 14।2 तक, अनु. में मंगल 15।25, तृतीया श्राद्ध, कृष्ण 4 B
वक्री गुरु: 18।47, चतुर्थी श्राद्ध, दशरथ ललिता व्रत
स्वात्यां बुध: 27।31, पंचमी श्राद्ध, चन्दन षष्ठी व्रत
भ. 21।50 से, व्यतिपात पुण्यं, धनि. 4 वक्री नेपच्यून, C
भ. 11।2 तक, सप्तमी श्राद्ध C षष्ठी श्राद्ध
भा. वायुसेना दिवस, अष्टमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत, D
पूफायां शुक्र: 19।46, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध
भ. 15।11 से 27।12 तक, चित्रा में सूर्य: 12।21, दशमी श्राद्ध
स्वात्यां 1 शनि: 24।53, इन्दिरा एकादशी व्रत (सर्वे.), E
द्वादशी श्राद्ध E एकादशी व सन्यासीनां श्राद्ध
भ. 23।12 से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
भ. 9।57 तक, चतुर्दशी शस्त्रादि हतानां श्राद्ध, मास शिवरात्री F
विशाखा में बुध: 14।15, देवपितृ कार्याऽमावस्या, सोमवती G
G 30, सर्वपितृ श्राद्ध, गजच्छाया पर्व (स्नान दानार्थ)

A श्राद्ध, पंचक 17।13 तक B व्रत, उर्स ख्वाजा अमीर खुशरो (दिल्ली) D पश्चिमास्तं शनि: 18।35, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, अशोकाष्टमी, कालाष्टमी F व्रत, कात्यायनी जयंती

आश्विन कृ. 8 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 8 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
5	2	7	6	1	4	6	7	1	11	10	8
21	17	6	9	22	11	6	4	4	12	6	13
4	33	33	43	19	27	12	3	3	9	38	0
33	2	57	13	21	34	52	16	16	13	24	57
59	719	42	87	0	70	7	3	3	2	1	0
13	2	26	32	36	20	05	11	11	23	04	36
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
हस्त 4	आर्द्रा 4	अनु. 1	स्वा. 1	रोहि. 4	मघा 4	चित्रा 4	अनु. 1	कृत्ति. 3	पू.भा. 3	धनि. 4	मूल 4

7 बु. श. | 5 शु. | सू. | 8 मं. रा. | 6 | 4 | 3 चं. | 9 प्लू. | 12 ह. | 10 | 2 गु. के. | 11 ने. | 1

[पक्ष फलम्]
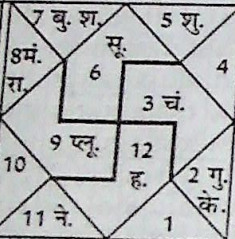
यह पक्ष सोमवार प्रतिपदा से शुरू होकर सोमवती अमावस्या तक चलेगा। रेवती नक्षत्र, सोमवार, प्रतिपदा श्राद्ध योग शुभ। तुला में बुध का प्रवेश सायं 17:42 पर मंगल+राहु युक्ति, श+बुध युक्ति, शनि अस्त पश्चिम में, वर्षा अल्पवृष्टि योग, चित्रा रवि प्रवेश ता. 10 अक्टू० दिवा 12:21 पर, सर्वपितृ श्राद्ध पक्ष के योग से पितृ पूजन का उत्तम पक्ष रहेगा। **सिंह शुक्र हो जब भवानी। चाले पवन बरसे नहीं पानी॥** वायुवेग तेज चलेगा। फसलों का सुखाने का योग पवन करेगा। **सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धन-धान्य समृद्धिः स्यात्सुख भवति सर्वदा।** पांच सोमवार होने के योग से धन-धान्य उत्पादन की श्रेष्ठता रहेगी। तथा सुखदायक योग बनेंगे। जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठेगा। सामाजिक तत्वों का उपद्रव में नियंत्रण बढ़ेगा। राजनैतिक हलचल अशोभनीय होगी। दक्षिण भारत में गुप्त रहस्यों का पर्दा खुलेगा। कुछ रोगोपद्रव के प्रभाव से विशेष बीमारी की उत्पत्ति का योग भी बनता है। भूमि-भवन, कला-सौन्दर्य कार्य की गति बढ़ेगी। **व्यापार भविष्य**-ग्रहचाल से बाजार की स्थिति-सोना, चांदी, कपास, रुई, घी, तेल, तिलहन में तेजी का योग। गेहूं, चावल, सरसों, तांबा, पीतल में झटका जैसी तेजी बनेगी। रायरा, लहसुन, प्याज में तेजी। बाजरा, ज्वार, ग्वार, मूंग, मोंठ में मंदी का योग चलेगा। **आकाश लक्षण**-ता. 1, 4, 8, 9, 10 व 13 [illegible] पश्चिमी बंगाल में वायु वेग के साथ खण्डवृष्टि का योग बनता

ता. 15 अक्टूबर ❖ आश्विन कृ. 30 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

7 बु. श. | 5 शु. | सू. | 8 मं. रा. | 6 चं. | 4 | 3 | 9. प्लू. | 12 ह. | 10 | 2 गु. के. | 11 ने. | 1

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
5	5	7	6	1	4	6	7	1	11	10	8
28	21	11	19	22	19	7	3	3	11	6	13
0	4	33	30	9	43	2	41	41	52	31	5
5	17	17	44	31	24	55	1	1	49	39	58
59	873	43	81	2	69	7	3	3	1	0	0
28	13	00	2	01	11	12	11	11	19	53	48
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
चित्रा 2	हस्त 3	अनु. 3	स्वा. 4	रोहि. 4	पूफा. 2	स्वा. 1	अनु. 1	कृत्ति. 3	उ.भा. 3	धनि. 4	मूल 4

आश्विन शुक्ल पक्षः-15

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 16 से 29 अक्टूबर सन् 2012 ई., रा. मि. 24 आश्विन से 7 कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद्-हेमन्त ऋतु।

रा. मि.	वा.	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
24	मं	1	19	51	14	20	चि	5/54	57/36	6/28	47/14	वि	29	43	18	17	ब	19	51	14	20	28	32	6	24	17	48	31	29	16	तुला	5	28	59	36	59/31	7	5	18	24
25	बु	2	11	31	11	1	वि	48	16	25	43	प्री	19	58	14	24	कौ	11	31	11	1	28	28	6	25	17	48	कार्ति. 1	30	17	वृ. 20।20	5	29	59	8	32	8	12	19	16
26	गु	3	3	22	7	47	अनु	42	21	23	21	आ	10	24	10	35	ग	3	22	7	47	28	24	6	25	17	47	2	[illegible] 1	18	वृश्चिक	6	0	58	42	34	9	19	20	12
0	शु	4	55	44	28	43	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
27	शु	5	48	52	25	59	ज्ये	37	9	21	18	सौ	1/52	17/52	6/27	57/35	ब	22	11	15	18	28	20	6	26	17	46	3	2	19	ध. 21।18	6	1	58	19	37	10	24	21	13
28	श	6	43	2	23	39	मू	32	56	19	37	अ	45	16	24	33	कौ	15	48	12	46	28	16	6	26	17	45	4	3	20	धनु	6	2	57	57	38	11	23	22	16
29	र	7	38	23	21	48	पूषा	29	52	18	24	सु	38	38	21	54	ग	10	32	10	40	28	12	6	27	17	44	5	4	21	म. 24।10	6	3	57	37	40	12	15	23	19
30	चं	8	35	2	20	29	उषा	28	4	17	41	धृ	33	2	19	40	वि	6	32	9	4	28	8	6	28	17	43	6	5	22	मकर	6	4	57	18	41	13	2	24	0
कार्ति. 1	मं	9	33	1	19	41	श्र	27	34	17	30	शू	28	29	17	52	बा	3	50	8	1	28	4	6	28	17	42	7	6	23	कुं. 29।36	6	5	57	2	44	13	44	24	21
2	बु	10	32	21	19	25	ध	28	23	17	50	गं	25	0	16	29	तै	2	30	7	29	28	0	6	29	17	41	8	7	24	कुम्भ	6	6	56	47	45	14	22	25	20
3	गु	11	32	59	19	41	श	30	28	18	41	वृ	22	31	15	30	व	2	29	7	29	27	56	6	30	17	40	9	8	25	कुम्भ	6	7	56	33	46	14	57	26	18
4	शु	12	34	51	20	27	पूभा	33	46	20	1	ध्रु	21	1	14	55	ब	3	45	8	0	27	52	6	30	17	39	10	9	26	मी. 13।38	6	8	56	22	49	15	31	27	13
5	श	13	37	53	21	40	उभा	38	10	21	47	व्या	20	25	14	41	कौ	6	13	9	0	27	48	6	31	17	38	11	10	27	मीन	6	9	56	12	50	16	5	28	8
6	र	14	41	59	23	20	रे	43	35	23	58	ह	20	38	14	47	ग	9	48	10	27	27	44	6	32	17	38	12	11	28	मे. 23।58	6	10	56	4	52	16	40	29	2
7	चं	15	47	3	25	22	अ	49	56	26	31	व	21	36	15	11	वि	14	24	12	18	27	40	6	33	17	37	13	12	29	मेष	6	11	55	57	53	17	17	29	55

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

विश्व खाद्य दिवस, मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., घट A
चन्द्रदर्शन मु. 45 समर्घता, सौर कार्तिक प्रा., तुलायांऽर्कः 8।15, B
भ. 18।12 से 28।43 तक, जिल्हेज मु. मास 12 प्रा., विनायक C
चतुर्थी क्षयः A स्थापन, अग्रसेन जयंती
उपांग ललिता पंचमी व्रत B संक्रांति पुण्यं
उफायां शुक्रः 25।14, सरस्वती आवाहनम् C चतुर्थी व्रतं
भ. 21।48 से, विशा. 4 में राहुः, कृति. 2 में केतुः 15।25, D
भ. 9।4 तक, सायन वृश्चिके सूर्यः 10।53, हेमन्त ऋतु प्रारंभ, E
पंचक 29।36 से, रा. कार्तिकारंभः, वृश्चिक में बुधः 14।51, F
विजया दशमी (रावण दाह), अपराजिता व शमी पूजा, दशहरा, G
भ. 7।29 से 19।41 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (सबका), H
अनु. में बुधः 17।01 H भरत मिलाप
ईद-उल-जुहा (मु.), शनि प्रदोष व्रत
भ. 23।20 से, पंचक 23।58 तक, पूषा. 1 प्लूटो 23।31
भ. 12।18 तक, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा व्रत पुण्यं च, कोजागर J
J व्रत, रास पूर्णिमा (वृन्दावन), शरद् पूर्णिमा, मेला शाकम्भरी K

D सरस्वती पूजनम्, आयंबिल ओली प्रा. (जैन), भद्रकाल्यावतार E ज्येष्ठायां भौमः 7।26, श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वत्यै बलिदानम्, मेला तारादेवी व ज्वालामुखी (हि.प्र.) F कन्या में शुक्र 19।55, स्वात्यां सूर्यः 22।45, महानवमी, नवरात्र पूर्ण, मन्वादि 9, सरस्वती विसर्जन, अस्त्र शस्त्रादि पूजनं G बौद्धावतार, श्री माधवाचार्य ज., आकाश दीपारंभः K देवी (उ.प्र.), महर्षि बाल्मिकि ज., आयंबिल ओली व्रत पूर्ण (जैन), कार्तिक स्नानारंभ

आश्विन शु. 8 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 22 अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
6	9	7	6	1	4	6	7	1	11	10	8
4	3	16	28	21	28	7	3	3	11	6	13
57	3	36	23	49	4	53	18	18	37	26	12
18	28	29	21	54	40	32	45	45	12	16	27
59	834	43	71	3	71	7	3	3	2	0	1
41	24	33	43	23	54	15	11	11	11	41	1
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

8 मं.रा. | 6 | 9 प्लू. | सू. | 5 शु. | बु. श. 7 | 4 | 10 चं. | 1 | 11 ने. | 3 | 12 ह. | 2 गु.के.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष भौमवार प्रतिपदा चित्रा+स्वाती के योग से प्रारंभ होकर आश्विन सुदी 15 पूर्णिमा सोमवार तक रहेगा। पक्ष में नवरात्रा, घटस्थापना प्रातः 10:30 से 1:30 मध्याह्न तक शुभ योग। शारदीय नवरात्रा गुजरात प्रांते विशेष पूजा योग। शुक्ला 4 चतुर्थी क्षय का होना अशुभ घटना का कारक है। सोमवती अमावस्या के योग से पक्ष में प्रजा में सुखदायक योग, आरोग्य का योग बनता है। मूंग, घी में तेजी का योग। आसोज सुदी 9 नवमी को मंगलवार होने से कपास, सूत, सन, नमक का भाव मंदा होगा। पूर्णिमा अश्विनी युक्ता शुभ फल दायिनी। फलतः शुभाशुभ योग समरूप बनते हैं। लालमिर्च में तेजी तथा प्रजा में विद्रोह या आंदोलन की क्रांति, हिंसादियोग, बम ब्लास्ट जैसे उपद्रव महानगरों की बजाय पर्यटन स्थलों पर गिराने का योग सू+श की युक्ति से बनता है। सुत पिता युक्ति सूर्य-शनि सूरज नीच शनि उच्च। करना क्या है? पता नहीं, निर्णय करो कोई सर्वोच्च॥ भगवान ही मालिक है। व्यापार

ता. 29 अक्टूबर ❖ आश्विन शु. 15 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

म.बु.रा. 8 | 6 शु. | 9 प्लू. | सू. श. 7 | 5 | 4 | 10 | 1 चं. | 11 ने. | 3 | 12 ह. | 2 गु. के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
6	0	7	7	1	5	6	7	1	11	10	8
11	2	21	5	21	6	8	2	2	11	6	13
55	47	43	43	21	30	44	56	56	22	22	20
57	30	13	50	0	36	20	31	31	43	24	18
59	730	44	54	4	72	7	3	3	1	0	1
53	37	2	39	40	32	15	11	11	59	27	12
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्य-ग्रहचाल से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, लालमिर्च, उड़द, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी-मंदी के झटके बनेंगे। गेहूं, बाजरा, मूंग, ज्वार, तिलहन, दलहन के भाव मंदे बनेंगे। सूखा मेवा तेज रहेगा। रुई, ऊन, कपड़ा के भावों में तेजी का सिलसिला चलेगा। **आकाश लक्षण**-अक्टूबर 17, 20, 22, 24, 26 व 27 को उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर, पाकिस्तान, जर्मनी, दक्षिणी अमेरिका, श्रीलंका, भारत के समुद्र तटीय क्षेत्रों में तेज वायु तथा सुनामी का योग भी तथा यत्र-तत्र बूंदा-बांदी भी। खड़ी फसलों में हानि का योग बनता है। **शकुन विचार-आसोज शुक्ला सप्तमी, जो वर्षा हो जाय। राज्य प्रजा दोनों सुखी संताप सभी मिट जाय॥ आसोज शुक्ला पूर्णिमा बादल, बिजली गाज। नफा मिलेगा चैत्र में संग्रह करो अनाज॥**

कार्तिक कृष्ण पक्षः-16 श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 30 अक्टू. से 13 नवं. सन् 2012 ई., रा. मि. 8 से 22 कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
8	मं	1	52	55	27	44	भ	57	1	29	22	सि	23	14	15	51	बा	19	53	14	30	27	37	6	33	17	36	14	13	30	मेष	6	12	55	53	59/56	17	56	6	49
9	बु	2	59	23	30	19	कृ	60	0	-	-	व्य	25	22	16	43	तै	26	5	17	0	27	33	6	34	17	35	15	14	31	वृ. 12।07	6	13	55	50	57	18	37	7	41
10	गु	3	60	0	-	-	कृ	4	37	8	25	वरि	27	50	17	43	व	32	43	19	40	27	29	6	35	17	34	16	15	N1	वृष	6	14	55	50	60/0	19	22	8	33
11	शु	3	6	5	9	2	रो	12	29	11	35	परि	30	23	18	45	वि	6	5	9	2	27	25	6	35	17	34	17	16	2	मि. 25।09	6	15	55	51	1	20	10	9	23
12	श	4	12	44	11	42	मृ	20	13	14	41	शि	32	45	19	42	बा	12	44	11	42	27	22	6	36	17	33	18	17	3	मिथुन	6	16	55	54	3	21	0	10	10
13	र	5	18	50	14	9	आ	27	13	17	34	सि	34	36	20	27	तै	18	50	14	9	27	18	6	37	17	32	19	18	4	मिथुन	6	17	56	0	6	21	52	10	55
14	चं	6	23	55	16	12	पुन	33	32	20	2	सा	35	36	20	52	व	23	55	16	12	27	14	6	38	17	31	20	19	5	क. 13।28	6	18	56	7	7	22	45	11	37
15	मं	7	27	34	17	40	पु	38	13	21	56	शुभ	35	27	20	49	ब	27	34	17	40	27	11	6	38	17	31	21	20	6	कर्क	6	19	56	17	10	23	40	12	16
16	बु	8	29	24	18	25	श्ले	41	9	23	7	शु	33	54	20	13	कौ	29	24	18	25	27	7	6	39	17	30	22	21	7	सिं. 23।07	6	20	56	29	12	-	-	12	54
17	गु	9	29	15	18	22	म	42	7	23	31	ब्र	30	48	18	59	ग	29	15	18	22	27	4	6	40	17	30	23	22	8	सिंह	6	21	56	43	14	24	36	13	31
18	शु	10	27	3	17	30	पूफा	41	6	23	7	ऐं	26	5	17	7	वि	27	3	17	30	27	1	6	41	17	29	24	23	9	क. 28।54	6	22	56	58	15	25	34	14	7
19	श	11	22	54	15	51	उफा	38	12	21	58	वै	19	50	14	37	बा	22	54	15	51	26	57	6	41	17	28	25	24	10	कन्या	6	23	57	16	18	26	34	14	46
20	र	12	17	1	13	31	ह	33	40	20	10	वि	12	9	11	34	तै	17	1	13	31	26	54	6	42	17	28	26	25	11	कन्या	6	24	57	36	20	27	35	15	26
21	चं	13	9	43	10	36	चि	27	50	17	51	प्री	3/53	17/33	8/28	2/8	व	9	43	10	36	26	51	6	43	17	27	27	26	12	तु. 7।04	6	25	57	57	21	28	41	16	10
22	मं	14	1	21	7	16	स्वा	21	4	15	9	सौ	43	11	24	0	श	1	21	7	16	26	47	6	44	17	27	28	27	13	तुला	6	26	58	21	24	29	48	17	0
0	मं	30	52	22	27	41	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0

- (9) व्यतिपात पुण्यं, हस्ते शुक्रः 26।37, इन्दिरा गांधी पु. दि., A
- (10) भ. 19।40 से, नवम्बर मा. 11 ता. 30 प्रा.
- (11) भ. 9।2 तक, तृतीया तिथि वृद्धिः, दशरथ 4, करवा चौथ B
- (12) B व्रत, कृष्ण 4 व्रत
- (13) A सरदार पटेल ज., गुरु रामदास ज. (प्रा. मत से)
- (14) भ. 16।12 से 29।02 तक, स्कन्ध षष्ठी व्रत
- (15) विशाखायां सूर्यः 6।59, वक्री बुधः 27।38
- (16) अहोई 8, कालाष्टमी, काली पूजा, राधाकुण्ड स्नान (गोवर्द्धन)
- (17) भ. 30।2 से,
- (18) भ. 17।30 तक, मूले धनुषि भौमः 9।48
- (19) रम्भा एकादशी व्रत (सबका), गोवत्स द्वादशी, गोपूजन
- (20) चित्रायां शुक्रः 24।46, मार्गी नेपच्यून 21।10, प्रदोष व्रतं, C
- (21) भ. 10।36 से 20।58 तक, पश्चिमास्तं बुधः 9।19, D
- (22) देवपितृकार्याऽमावस्या, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कुबेर E
- (0) अमावस्या तिथि क्षयः E पूजा, कमला जयंती

C यम प्रीत्यर्थं दीपदानं, श्री पद्मप्रभु जन्म-तप (जैन), धन तेरस, धनवंतरी जं., गोत्रिरात्री व्रत

D पूर्वोदयं शनिः 17।39, मास शिवरात्री व्रत, रूप चतुर्दशी, नरक हारिणी 14, श्री हनुमान ज. (उ.भा.), श्री महावीर निर्वाण दिवस (जैन)

कार्तिक कृ. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 7 नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
6	3	7	7	1	5	6	7	1	11	10	8
20	20	28	10	20	17	9	2	2	11	6	13
56	37	22	15	31	27	49	27	27	6	19	32
29	53	30	42	31	10	17	53	53	12	43	17
60	799	44	3	6	73	7	3	3	1	0	1
12	56	38	55	07	15	10	11	11	42	10	26
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
स्वा. 4	श्ले. 1	ज्येष्ठ 3	अनु. 2	रोहि. 3	हस्त 2	चित्रा 4	विशा. 3	कृत्ति. 1	उ.भा. 2	धनि. 3	मघा 4

सं. बु. रा. 8 — 9 प्लू. — 7 श. — 6 शु. — सू. — 5 — 4 चं. — 10 — 1 — 11 ने. — 3 — 12 ह. — 2 गु. के.

[पक्ष फलम्]
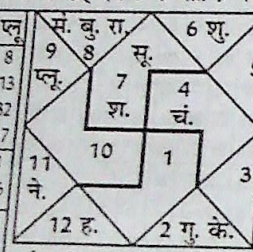
यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार से शुभारंभ होकर अमावस्या भौम क्षय योग चतुर्दशी में विलीन होना आश्चर्यजनक अशुभ घटना का संकेत करता है। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। एक वस्तु क्या मंदी बिके, सभी सस्ती हो जाय॥** ता. 12 नवंबर को शनि ग्रह का उदय होना, बुध का अस्त होना, धातु बाजार लोहादि को प्रभावित करता है। तथा वाहनादि, मोटर कार में भी तेजी का योग बनेगा। **पांच भौम जिस मास में, वस्तु लाल रंग तेज। अन्न तेजी जनता दुःखी, व्यापारी जन निस्तेज॥** अर्थात् व्यापारी वर्ग की हर्ष ध्वनि क्षीण होकर उदासीनता की ओर चिन्तन चलेगा। पंच भौमे भयं बहतेः वृष्टि रोधस्तु कुत्र चितः। ईतय सप्तधा भौमे पीड़ा पराभवाः॥ किसी विशिष्ट नेता को पद्च्युत होना पड़ेगा। युवा वर्ग की राजनीति को बढ़ावा मिलेगा। **कार्तिक मावस देखो जोशी, रवि शनि भौमवार जो होसी। स्वाती नक्षत्र अरु आयु संयोगा, काल पड़े अरु नाशै सभी हांसी॥** इस योग से काफी जन-धन हानि का योग बनेगा। दुर्भिक्ष जैसा वातावरण बनेगा। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से-मंगल धनु में होने से लालमिर्च, कालीमिर्च, लौंग, मसाला, मक्का, सरसों, सोना, चांदी, पारा, औषधियां, पशुधन, ऊंट, हाथी, घोड़े सभी में तेजी का योग करेगा। गुलाब, पंचरंग, मूंगफली, घृतादि में जोरदार उठापटक। हाजिर व्यापारी अच्छा लाभ ले सकेंगे। **आकाश लक्षण**-पर्वतीय इलाकों में बादल छाये रहेंगे। यत्र-तत्र ओला वृष्टि से फसल को हानि का योग बनेगा। 31 अक्टूबर, 2, 4, 8, 10, 13 नवं. 2012 को शीत वर्षा का ...

ता. 13 नवंबर ❖ कार्तिक कृ. 14 मंगल प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

8 बु. रा. — 9 प्लू. मं. — 7 सू. चं. श. — 6 शु. — 5 — 4 — 10 — 1 — 11 ने. — 3 — 12 ह. — 2 गु. के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
6	6	8	7	1	5	6	7	1	11	10	8
26	13	2	7	19	24	10	2	2	10	6	13
58	56	51	21	51	48	32	8	8	56	19	41
21	5	40	57	51	9	1	49	49	47	26	22
60	893	45	53	6	73	7	3	3	1	0	1
24	59	01	31	56	39	04	11	11	28	02	34
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
विशा. 2	स्वा. 2	ज्येष्ठ 4	अनु. 1	रोहि. 2	हस्त 4	स्वा. 1	विशा. 3	कृत्ति. 1	उ.भा. 2	धनि. 3	मघा 4

कार्तिक शुक्ल पक्षः-17

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 14 से 28 नवंबर सन् 2012 ई., रा. मिति 23 कार्तिक से 7 मार्ग. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान		सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	अस्त घं	अस्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
23	बु	1	43	6	23	59	वि	13	47	12	15	शो	32	34	19	46	किं	17	43	13	50	26	44	6	45	17	26	29	28	14	वृ. 6 59	6	27	58	46	60 25	6	57	17	55	पं. जवाहर लाल नेहरु ज., बाल दिवस, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, A
24	गु	2	34	0	20	21	अ	6 / 59	27 / 29	9 / 30	20 / 33	अ	22	0	15	33	बा	8	29	10	9	26	41	6	45	17	26	30	29	15	ध. 30 33	6	28	59	13	27	8	5	18	56	चन्द्रदर्शनम् मु. 15 महर्घता, यम द्वितीया, भैय्या दूज, यमुना B
25	शु	3	25	29	16	58	मू	53	16	28	5	सु	11	50	11	30	ग	25	29	16	58	26	38	6	46	17	25	मार्ग. 1	मुहर्र. 1	16	धनु	6	29	59	41	28	9	8	20	0	भ. 27 26 से, मुहर्रम मु. मा. 1 हिजरी सन् 1434 प्रा., सौर मार्ग. C
26	श	4	17	54	13	57	पूषा	48	11	26	3	धृ	2 / 53	22 / 54	7 / 28	44 / 21	वि	17	54	13	57	26	35	6	47	17	25	2	2	17	धनु	7	1	0	11	30	10	6	21	6	भ. 13 57 तक, तुला में शुक्रः 10 55, सूर्य षष्ठी व्रत प्रा. (बिहार)
27	र	5	11	37	11	27	उषा	44	31	24	36	गं	46	36	25	26	बा	11	37	11	27	26	32	6	48	17	25	3	3	18	म. 7 38	7	2	0	42	31	10	57	22	10	तुला में वक्री बुधः 27 17, सौभाग्य पंचमी, पांडव 5, ज्ञान 5 D
28	चं	6	6	53	9	34	श्र	42	31	23	49	वृ	40	38	23	4	तै	6	53	9	34	26	29	6	49	17	24	4	4	19	मकर	7	3	1	14	32	11	42	23	13	अनु. में सूर्यः 12 56, श्रीमती गांधी जन्म दि., सूर्य 6 व्रत, छठ E
29	मं	7	3	53	8	23	ध	42	18	23	44	ध्रु	36	7	21	16	व	3	53	8	23	26	27	6	49	17	24	5	5	20	कुं. 11 41	7	4	1	48	34	12	22	-	-	भ. 8 23 से 20 1 तक, पंचक 11 41 से, कल्पादि 7, सहस्रार्जुन जयंती
30	बु	8	2	44	7	56	श	43	50	24	22	व्या	33	0	20	2	ब	2	44	7	56	26	24	6	50	17	24	6	6	21	कुम्भ	7	5	2	23	35	12	59	24	12	सायन सूर्य धनुः 6 50, श्रीदुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गौ पूजन, F
मार्ग. 1	गु	9	3	23	8	12	पूभा	47	4	25	41	ह	31	16	19	21	कौ	3	23	8	12	26	22	6	51	17	23	7	7	22	मी. 19 17	7	6	2	59	36	13	34	25	9	रा. मार्ग. प्रा., स्वात्यां शुक्रः 20 35, अक्षय नवमी, कूष्मांड G
2	शु	10	5	44	9	9	उभा	51	45	27	34	व	30	44	19	9	ग	5	44	9	9	26	19	6	52	17	23	8	8	23	मीन	7	7	3	37	38	14	8	26	4	भ. 21 51 से, पूर्वोदयं बुधः 13 7 ♦ जयंती, प्रदोष व्रत
3	श	11	9	32	10	41	रे	57	39	29	56	सि	31	12	19	22	वि	9	32	10	41	26	16	6	53	17	23	9	9	24	मे. 29 56	7	8	4	15	38	14	42	26	58	भ. 10 41 तक, पंचक 29 56 तक, देव प्रबोधिनी एका. व्रत J
4	र	12	14	30	12	41	अ	60	0	-	-	व्य	32	29	19	53	बा	14	30	12	41	26	14	6	53	17	23	10	10	25	मेष	7	9	4	55	40	15	18	27	51	व्यतिपात पुण्यं, मुहर्रम (ताजिया) मु., मन्वादि 12, कालीदास ♦
5	चं	13	20	21	15	2	अ	4	24	8	40	वरि	34	21	20	39	तै	20	21	15	2	26	11	6	54	17	23	11	11	26	मेष	7	10	5	35	40	15	55	28	44	पूषायां भौमः 25 17, मार्गी बुधः 27 20, मेला वीर वैरागी नकोदर (पं.)
6	मं	14	26	45	17	37	भ	11	47	11	38	परि	36	35	21	33	व	26	45	17	37	26	9	6	55	17	23	12	12	27	वृ. 18 24	7	11	6	17	42	16	36	29	37	भ. 17 37 से, वैकुण्ठ 14, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, ❖
7	बु	15	33	26	20	18	कृ	19	30	14	44	शि	38	59	22	31	वि	0	4	6	57	26	7	6	56	17	22	13	13	28	वृष	7	12	7	0	43	17	19	30	29	भ. 6 57 तक, श्रीसत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत पुण्यं च, पुष्कर K

A बलीपूजा, गो-क्रीड़ा, द्यूत क्रीड़ा B स्नान, गोसंवर्द्धन सप्ताह प्रा., चित्रगुप्त पूजन C प्रा., वृश्चिक सूर्यः 8 13, संक्रांति पुण्यं, विशाखा 4 में वक्री बुधः 15 38, विनायक 4 व्रत D (जैन), गुरु गोविन्द सिंह बलिदान दि. (प्रा. मत से) E पूजा (बिहार), डाला छठ, सूर्य 6 व्रत पूर्ण F गौशालादि निर्माण, यवधान्यादि दानम्, अष्टान्हिका पर्वारंभः (जैन) G नवमी, आंवला 9, कृतयुगादि 9, जगद्धातृ पूजा, जुगल-जोड़ी परिक्रमा (वृंदावन) J (सबका), भीष्म पंचकारंभ, तुलसी विवाह, चातुर्मास नियमादि पूर्ण, मेलारंभ पुष्कर (राज.), पुण्डरपुर यात्रा (महा.) K मेला पूर्ण, गुरु नानकदेव जयंती, निम्बार्काचार्य ज., देवदीपोत्सव, भीष्म पंचक पूर्ण, कार्तिक स्नान पूर्ण, अष्टान्हिका व्रत पूर्ण (जैन), रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, रथयात्रा, चातुर्मास नियम पूर्ण ❖ साईं बाबा जयंती

कार्तिक शु. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 21 नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
7	10	8	6	1	6	6	7	1	11	10	8
5	9	8	27	18	4	11	1	1	10	6	13
2	49	54	27	52	39	27	43	43	46	21	54
23	1	1	55	39	16	46	22	22	31	0	41
60	796	45	69	7	74	6	3	3	1	0	1
35	55	30	11	42	3	52	11	11	07	19	44
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

9 मं.प्लू. | बु.शु.श. 7 | सू. 8 रा. | 10 | 6 | 5 | 11 चं. ने. | 1 गु. के. | 12 ह. | 4 | 1 | 3

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष बुधवार विशाखा नक्षत्र से प्रारंभ होकर शुक्ल पूर्णिमा बुधवार तक कृतिका योग में चलेगा। चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्त्ती, बुधोदय, अनुराधा रवि संक्रमण योग सोमवार को होना शुभदायक योग बनता है। मं+चं की युक्ति से तूफान एवं सत्यात्य घटनाओं, अशांति का योग है। **बुधस्य पंच वाराश्चे च निरन्तरम्। प्रजानां सुखम् मत्यन्तं सुभिक्षं च प्रजायते॥** इस योग से सुख, समृद्धि एवं सुभिक्ष योग बनेगा। राजनैतिक हलचल भी शांतिदायक बनेगी। युवावस्था सूती मुहूर्त्ती 15 के योग से धान्य के भावों में तेजी बनेगी। गणकानाम सुखदा तथा व्यापारी एवं कृषक वर्ग परस्पर मतभेद के रूप में आमने-सामने होंगे। पूर्णिमा बुधवार कृतिका युक्त होने से शुभफल दायिनी है। हस्त नक्षत्र युक्त शुक्र होने से पेन्टर, चित्रकार पीड़ित होंगे। मेघों की गर्जना के साथ कहीं-कहीं वर्षा होगी। मांगलिक कार्यों की धूम मचेगी। **व्यापार भविष्य**-ग्रहचाल योग से-तैल, तिल, सरसों, राई, रुई, चांदी में तेजी का योग रहेगा। वायदा बाजार में उठापटक से हानि का योग ज्यादा बनता है। धातु बाजार स्थिर चलेगा। सीमेन्ट, पत्थर, चूना, बारदाना के भाव भी तेज होंगे। शेयर्स बाजार अस्थिर चलेगा। **आकाश लक्षण**-उत्तरी भारत, बिहार, आसाम, मेघालय, अरुणाचल, मिजोरम, नागालैण्ड, श्रीलंका में वायु वेग से मेघ गर्जना तथा शीत लहर का प्रभाव बढ़ेगा। कहीं-कहीं ओले गिरेंगे। **शकुन विचार-कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा मेघ छटा आकाश। गल्ला घी संग्रह करो, लाभ तीसरे मास॥ कार्तिक पड़वा दोनों जो रहे सूर्य के कुण्डल, सरसों अलसी तैल तिल तेजी का मण्डल॥**

ता. 28 नवंबर ❖ कार्तिक शु. 15 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

9 मं.प्लू. | बु.शु.श. 7 | 8 सू. रा. | 10 | 6 | 5 | 11 ने. | 2 चं. गु.के. | 12 ह. | 4 | 1 | 3

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
7	1	8	6	1	6	6	7	1	11	10	8
12	5	14	24	17	13	12	1	1	10	6	14
7	27	13	13	56	18	14	21	21	39	24	7
0	40	54	39	58	52	57	7	7	53	10	19
60	709	45	5	8	74	6	3	3	0	0	1
43	12	51	47	5	21	38	11	11	48	34	51
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
अनु. 2	कृति. 2	मृग. 4	विशा. 1	रोहि. 2	स्वा. 1	स्वा. 1	विशा. 3	कृति. 1	उ.भा. 2	धनि. 3	मूल. 4

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः-18

श्री सं. 2069 शाके 1934

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
8	गु	1	40	8	23	0	रो	27	16	17	51	सि	41	22	23	29	बा	6	47	9	39	26	5	6	57	17	22	14	14	29	वृष	7	13	7	45	60 / 45	18	6	7	19
9	शु	2	46	33	25	35	मृ	34	49	20	53	सा	43	33	24	23	तै	13	22	12	18	26	2	6	57	17	22	15	15	30	मि. 7 03	7	14	8	30	45	18	55	8	7
10	श	3	52	27	27	57	आ	41	55	23	44	शुभ	45	21	25	6	व	19	34	14	48	26	0	6	58	17	22	16	16	D1	मिथुन	7	15	9	17	47	19	47	8	53
11	र	4	57	32	30	0	पुन	48	18	26	18	शु	46	34	25	36	ब	25	6	17	1	25	58	6	59	17	22	17	17	2	क. 19 42	7	16	10	6	49	20	39	9	35
12	चं	5	60	0	-	-	पु	53	41	28	28	ब्र	47	0	25	48	कौ	29	41	18	52	25	56	7	0	17	22	18	18	3	कर्क	7	17	10	55	49	21	33	10	15
13	मं	5	1	30	7	37	श्ले	57	47	30	7	ऐं	46	27	25	35	तै	1	30	7	37	25	55	7	0	17	22	19	19	4	सिं. 30 07	7	18	11	46	51	22	28	10	53
14	बु	6	4	9	8	41	म	60	0	-	-	वै	44	44	24	55	व	4	9	8	41	25	53	7	1	17	22	20	20	5	सिंह	7	19	12	38	52	23	24	11	29
15	गु	7	5	12	9	7	म	0	21	7	10	वि	41	42	23	43	ब	5	12	9	7	25	51	7	2	17	22	21	21	6	सिंह	7	20	13	32	54	24	0	12	5
16	शु	8	4	30	8	51	पूफा	1	17	7	33	प्री	37	17	21	57	कौ	4	30	8	51	25	50	7	3	17	23	22	22	7	क. 13 32	7	21	14	27	55	24	21	12	41
17	श	9	2	0	7	51	उफा	0 / 57	26 / 54	7 / 30	14 / 13	आ	31	26	19	38	ग	2	0	7	51	25	48	7	3	17	23	23	23	8	कन्या	7	22	15	23	56	25	20	13	19
0	श	10	57	45	30	9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
18	र	11	51	52	27	49	चि	53	43	28	33	सौ	24	14	16	46	ब	24	59	17	4	25	47	7	4	17	23	24	24	9	तु. 17 28	7	23	16	20	57	26	21	14	0
19	चं	12	44	35	24	55	स्वा	48	11	26	21	शो	15	49	13	24	कौ	18	22	14	26	25	46	7	5	17	23	25	25	10	तुला	7	24	17	19	59	27	26	14	45
20	मं	13	36	14	21	35	वि	41	36	23	44	अ	6 / 56	22 / 11	9 / 29	38 / 34	ग	10	31	11	18	25	45	7	5	17	23	26	26	11	वृ. 18 25	7	25	18	18	59	28	32	15	36
21	बु	14	27	10	17	58	अनु	34	20	20	50	धृ	45	31	25	19	वि	1	45	7	48	25	44	7	6	17	24	27	27	12	वृश्चिक	7	26	19	19	61 / 01	29	40	16	34
22	गु	30	17	48	14	14	ज्ये	26	50	17	51	शू	34	44	21	0	ना	17	48	14	14	25	43	7	7	17	24	28	28	13	ध. 17 51	7	27	20	21	2	30	46	17	37

ता. 29 नवंबर से 13 दिसंबर सन् 2012 ई., रा. मि. 8 से 22 मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- A विश्व एड्स दिवस, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
- भ. 14 48 से 27 57 तक, दिसंबर मा. 12 ता. 31 प्रा., A
- ज्येष्ठायां में सूर्य: 17 18, कृष्ण चतुर्थी व्रत
- विशा. में शुक्र: 14 46, विकलांग दिवस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद B
- पंचमी तिथि वृद्धि, भारतीय नौ सेना दिवस
- भ. 8 41 से 20 59 तक B जन्म दिवस
- वृश्चिके बुध: 9 12, कालाष्टमी, काल भैरवाष्टमी, भैरव पूजन
- भा. झण्डा दिवस, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा) D शिवरात्री व्रत
- भ. 19 16 से 30 19 तक, अनु. में बुध: 29 45
- दशमी तिथि क्षय: C (जैन), संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस
- उत्पत्ति 11 व्रत (स्मा.), वैतरणी व्रत, महावीर स्वामी दीक्षा C
- मानवाधिकार दिवस, उत्पत्ति एकादशी व्रत (वैष्णव)
- भ. 21 35 से, वृश्चिके शुक्र: 15 33, भौम प्रदोष व्रत, मास D
- भ. 7 48 तक, मार्गी हर्षल 14 23, मेला पुरमण्डल देविका E
- देवपितृकार्याऽमावस्या E स्नान (कश्मीर), बालाजी जयंती

मार्गशीर्ष कृ. 8 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 7 दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
7	4	8	7	1	6	6	7	1	11	10	8
21	25	21	0	16	24	13	0	0	10	6	14
14	31	8	56	43	29	12	52	52	34	30	24
27	38	44	31	30	42	48	30	30	49	40	40
60	785	46	6	8	74	6	3	3	0	0	1
55	50	17	33	9	41	14	11	11	22	52	52
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
ज्येष्ठा 1	पूफा. 3	पूषा. 2	विशा. 3	रोहि. 3	विशा. 2	स्वा. 2	विशा. 4	कृति. 2	उ.भा. 3	धनि. 4	पूषा. 1

9 मं.प्लू. | 7 शु.श. | सू. 8 | 10 | 6 | बु. रा. | 5 चं. | 11 ने. | 2 गु. के. | 12 ह. | 4 | 1 | 3

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा गुरुवार रोहिणी नक्षत्र से शुरू होकर अमावस्या गुरुवार ज्येष्ठा नक्षत्र तक चलेगा। इस पक्ष में पंचमी वृद्धि तथा दशमी क्षय तिथि का योग बनता है। **जाहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिकै, महंगाई हट जाय॥** अर्थात् मंदा का योग चलेगा। ता. 2 दिसंबर को ज्येष्ठा में रवि का प्रवेश तथा शुक्र क्षेत्रे शनि+शु+बुध की युक्ति से मांगलिक कार्य ज्यादा होंगे। सामाजिक समारोह का आयोजन भी, सम्मान समारोह भी यत्र-तत्र बनते रहेंगे। शनि की दृष्टि से कहीं अकाल की स्थिति बनेगी। प्राकृतिक प्रकोप के प्रभाव से भू-चाल, बाढ़ जैसे असामयिक वर्षा से अचानक योग बनना। पूर्वी देशों में राजनैतिक पतन जैसा योग बनेगा। सु+बु+रा की युक्ति से सू+रा से ग्रहण योग बनता है। इससे देश में धोखाधड़ी का योग ज्यादा बनता है। किसी राजनेता का असामयिक निधन का योग भी बनता है। आदित्य संग राहु चले अरु राशि वृश्चिक। वृष्टि अति दुःख योग का लग जाये कलंक॥ **व्यापार भविष्य**-ग्रहचाल से-गुड़, खाण्ड, दालवाना, मक्का, चना, पटसन, मटर में तेजी का योग है। रुई, तांबा, सोना, चांदी व ऊनी वस्त्रों में भी तेजी का योग बनेगा। शेयर्स बाजार में मंदी का योग है। औषधि बाजार में विशेष तेजी बनेगी। गेहूं, चावल, सब्जी बाजार भी तेजी में रहेगा। **आकाश लक्षण**-दिनांक 30 नवं., 3, 5, 7, 9, 12 दिसं. को कश्मीर, हि.प्र., नेपाल, उत्तराखण्ड, बिहार, राजस्थान, गुजरात, म.प्र. में वर्षा का योग बनता है। समुद्रतटीय इलाकों में कोहरा छाया रहेगा। यातायात प्रभावित होंगे। शकुन विचार-मार्गशीर्ष [illegible] दर्शे वा दृश्यते यदा। घनैराच्छादितो भानुस्तदा स्य महर्घता॥

ता. 13 दिसंबर ❖ मार्गशीर्ष कृ. 30 गुरु प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

9 मं. प्लू. | 7 श. | 6 सू. | 10 | 6 | बु.चं. शु.रा. | 5 | 11 ने. | 2 गु. के. | 12 ह. | 4 | 1 | 3

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
7	7	8	7	1	7	6	7	1	11	10	8
27	22	25	8	15	1	13	0	0	10	6	14
20	9	47	32	55	58	49	33	33	33	36	36
21	46	20	18	24	19	14	25	25	42	28	47
61	911	46	80	7	74	5	3	3	0	1	2
2	51	32	58	53	50	57	11	11	3	3	3
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
ज्येष्ठा 4	ज्येष्ठा 2	पूषा. 4	अनु. 2	रोहि. 2	विशा. 4	स्वा. 3	विशा. 4	कृति. 2	उ.भा. 3	धनि. 3	पूषा. 1

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः-19

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 14 से 28 दिसं. सन् 2012 ई., रा. मिति 23 मार्ग. से 7 पौष तक। रवि दक्षिणे-उत्तरे, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ
23	शु	1	8	34	10	33	मू	19	32	14	56	गं	24	10	16	47	ब	8	34	10	33	25	42	7	7	17	24	29	29	14	धनु	7	28	21	23	6 1/2	7	48	18	43	चन्द्रदर्शनम्, उषायां भौम: 8।38, अनु. में शुक्र: 7।41
0	शु	2	59	55	31	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीया तिथि क्षय:
24	श	3	52	14	28	2	पूषा	12	53	12	17	वृ	14	10	12	48	तै	25	55	17	30	25	41	7	8	17	24	पौष 1	सफर 1	15	म. 17।41	7	29	22	26	3	8	44	19	51	सफर मु. मा. 2 प्रा., सौर पौषारंभ:, मूले धनुषि सूर्य: 20।16, A
25	र	4	45	58	25	32	उषा	7	21	10	5	ध्रु	5/57	5/14	9/30	10/2	व	18	53	14	42	25	40	7	9	17	25	2	2	16	मकर	8	0	23	30	4	9	34	20	56	भ. 14।42 से 25।32 तक, विनायक 4 व्रत, संत घासीदास जयंती
26	चं	5	41	26	23	44	श्र	3	18	8	28	ह	50	48	27	28	ब	13	27	12	32	25	40	7	9	17	25	3	3	17	कुं. 19।56	8	1	24	34	4	10	18	21	59	पंचक 19।56 से, नाग पंचमी (द.भा.), श्री राम विवाहोत्सव, B
27	मं	6	38	56	22	44	ध	1	4	7	36	व	46	0	25	34	कौ	9	55	11	8	25	40	7	10	17	26	4	4	18	कुंभ	8	2	25	39	5	10	57	22	59	मकरे भौम: 15।27, ज्येष्ठायां बुध: 23।28, चम्पा षष्ठी व्रत C
28	बु	7	38	35	22	36	श	0	53	7	31	सि	42	52	24	19	ग	8	29	10	34	25	39	7	10	17	26	5	5	19	मी. 26।01	8	3	26	44	5	11	34	23	57	भ. 22।36 से, मित्र सप्तमी, भक्त नरसी मेहता जयंती
29	गु	8	40	20	23	19	पूभा	2	46	8	17	व्य	41	20	23	43	वि	9	11	10	51	25	39	7	11	17	26	6	6	20	मीन	8	4	27	49	5	12	9	-	-	भ. 10।51 तक, व्यतिपात पुण्यं, सायन मकरे सूर्य: 28।33, D
30	शु	9	43	59	24	47	उभा	6	38	9	50	वरि	41	15	23	41	बा	11	56	11	58	25	39	7	11	17	27	7	7	21	मीन	8	5	28	55	6	12	43	24	52	महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी
पौष 1	श	10	49	10	26	52	रे	12	10	12	4	परि	42	19	24	8	तै	16	24	13	45	25	39	7	12	17	27	8	8	22	मे. 12।04	8	6	30	1	6	13	19	25	46	पंचक 12।4 तक, रा. पौष प्रारंभ:
2	र	11	55	24	29	22	अ	18	58	14	48	शिव	44	13	24	53	व	22	10	16	4	25	39	7	12	17	28	9	9	23	मेष	8	7	31	7	6	13	56	26	39	भ. 16।4 से 29।22 तक, विशा. 3 तुला राहु: कृति. 1 मेषे E
3	चं	12	60	0	-	-	भ	26	33	17	50	सि	46	35	25	51	ब	28	45	18	43	25	39	7	13	17	28	10	10	24	वृ. 24।37	8	8	32	13	6	14	35	27	32	ज्येष्ठायां शुक्र: 23।52, व्यंजन द्वादशी
4	मं	12	2	10	8	5	कृ	34	27	21	0	सा	49	4	26	51	बा	2	10	8	5	25	39	7	13	17	29	11	11	25	वृष	8	9	33	19	6	15	17	28	24	द्वादशी तिथि वृद्धि:, ईसा मसीह क्रिसमस डे (बड़ा दिन), मदन F
5	बु	13	9	3	10	51	रो	42	14	24	7	शुभ	51	26	27	48	तै	9	3	10	51	25	40	7	14	17	29	12	12	26	वृष	8	10	34	26	7	16	2	29	15	पिशाचमोचन श्राद्ध, पूर्वास्तं बुध: 11।00 H बतीसी (पूर्णिमा)
6	गु	14	15	38	13	29	मृ	49	36	27	4	शु	53	25	28	36	व	15	38	13	29	25	40	7	14	17	30	13	13	27	मि. 13।37	8	11	35	33	7	16	51	30	4	भ. 13।29 से 26।42 तक, मूल धनु में बुध: 22।8, पूर्णिमा G
7	शु	15	21	38	15	54	आ	56	19	29	46	ब्र	54	54	29	12	ब	21	38	15	54	25	41	7	14	17	31	14	14	28	मिथुन	8	12	26	39	6	17	42	30	51	पूषायां सूर्य: 22।31, श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा पुण्यं, H

A पटेल पुण्य दिवस, धनु मलमासारंभ:, संक्रांति पुण्यं B श्री बांके बिहारी जी प्रादुर्भावोत्सव (वृन्दावन), गुरु तेगबहादुर बलिदान दि. C (महा.), गुह (स्कन्द) षष्ठी, मूलक रूपिणी 6, श्री राम कलेवा D उत्तरायणे व शिशिर ऋतु प्रा., श्री दुर्गाष्टमी E केतु: 17।45, स्वा. श्रद्धानंद बलिदान दि., किसान दि., मौनी 11 व्रत (जैन), मोक्षदा 11 व्रत (सर्वे.), श्री गीता जयंती F मोहन मालवीय जन्म, भौम प्रदोष व्रत, गुरु ग्रन्थ साहिब वार्षिकोत्सव, अनंग 13 व्रत G व्रतं, श्री दत्तात्रेय जयंती, मां अन्नपूर्णा ज., षोडशी ज.

मार्गशीर्ष शु. 8 गुरु प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 20 दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
8	11	9	7	1	7	6	7	1	11	10	8
4	1	1	18	15	10	14	0	0	10	6	14
27	51	14	29	2	42	29	11	11	34	44	51
49	8	11	40	17	39	9	9	9	45	40	19
61	777	46	87	7	75	6	3	3	0	1	2
5	48	48	43	19	17	31	11	11	18	16	6
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

10 मं. | बु.शु.रा. 8 | 7 श. | 6 | 5 | 4 | 3 | 2 गु.के. | 1 | 12 चं. ह. | 11 ने. | 9 सू. प्लू.

[पक्ष फलम्]
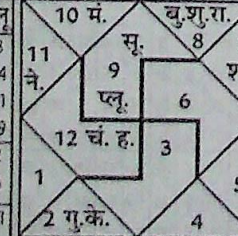
यह पक्ष शुक्रवार प्रतिपदा मूल नक्षत्र तथा द्वितीया क्षय तिथी के योग से पूर्णिमा शुक्रवार आर्द्रा नक्षत्र तक रहेगा। चन्द्रदर्शन मु. 30, धनुषे मूले रवि 15 दिसं. 2012 एवं धनु राशि में भुवन भास्कर सूर्यदेव का प्रवेश मार्गशीर्ष शुक्ला 3 शनिवार को सायं 20:16 से होगा। मुकुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रौढ़ावस्था बैठी 45 मुहूर्त्ती संक्रांति के योग से मध्यम फल यानि न ज्यादा, न कम, बराबर तेजी-मंदी तथा विकास की गति चलेगी। यत्र मासे पंचवारा जायन्ते, वृहस्पते च। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्ध च जायन्ते॥ शुक्रस्य पंचवारा स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ जाहि पखवारे तिथि घटे, वाहि में बढ़ जाय। सभी वस्तु मंदी बिकै, महंगाई हट जाय॥ इन सब योगों का मिश्रित फल यह है कि व्यापारिक गतिशीलता में परिवर्तन कम होंगे। तथा राजनैतिक वर्ग में भी शांति का वातावरण रहेगा-ऐसा योग है। शीत लहर के प्रभाव से पशुधन में रोग पीड़ा बाधा योग बनता है। व्यापार भविष्य-ग्रह चाल के योग से पक्षारंभ में तिल, तैल, सरसों, मूंगफली, घृत, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी बनेगी। पक्ष मध्य मंदी का दौर सभी वस्तुओं में चलेगा। सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड, लालमिर्च में तेजी का योग बनता है। आकाश लक्षण-ता. 18, 20, 24, 27, 28 दिसं. को भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रों में हिमपात योग या शीत लहर से कोई चिन्ताजनक घटना भी घटेंगी। रोग-पीड़ा का प्रभाव ज्यादा बनता है। शकुन विचार-मंगशिर सुदी प्रतिपदा निर्मल दिन अरु रात। वर्षा योग अच्छा बने, देव इन्द्र का साथ॥ मंगशिर शुक्ला दशमी बादल बिजली गाज। आगे ज्येष्ठ आषाढ़ में इन्द्रदेव का राज॥ यानि श्रेष्ठ समय चलेगा।

ता. 28 दिसंबर ❖ मार्गशीर्ष शु. 15 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

10 मं. | 8 शु. | 7 श. रा. | 6 | 5 | 4 | 3 चं. | 2 गु. | 1 के. | 12 ह. | 11 ने. | 9 सू. बु.प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
8	2	9	8	1	7	6	6	0	11	10	8
12	7	7	0	14	20	15	29	29	10	6	15
36	52	29	27	7	42	10	45	45	39	55	8
39	19	36	57	58	44	54	43	43	4	46	13
61	683	47	91	6	75	4	3	3	0	1	2
6	15	2	6	20	03	59	11	11	43	29	7
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	भा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मूल 4	आर्द्रा 1	उषा. 4	मूल 1	रोहि. 2	ज्येष्ठा 2	स्वा. 3	विशा. 3	कृति. 1	उभा. 3	शत. 1	पूषा. 1

पौष कृष्ण पक्षः- 20

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 29 दिसंबर 2012 से 11 जनवरी 2013 ई., रा. मि. 8 से 21 पौष तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
8	श	1	26	52	18	0	पुन	60	0	-	-	ऐं	55	46	29	33	कौ	26	52	18	0	25	42	7	15	17	31	15	15	29	क. 25।35	8	13	37	47	6/8	18	35	7	35	अयन करिदिन
9	र	2	31	14	19	44	पुन	2	14	8	8	वै	55	56	29	38	ग	31	14	19	44	25	42	7	15	17	32	16	16	30	कर्क	8	14	38	54	7	19	29	8	16	
10	चं	3	34	37	21	6	पु	7	16	10	10	वि	55	22	29	24	व	3	3	8	28	25	43	7	15	17	33	17	17	31	कर्क	8	15	40	2	8	20	23	8	54	भ. 8।28 से 21।6 तक, श्रवणे भौम: 10।11, न्यूईयर इवनिंग डे
11	मं	4	36	57	22	9	श्ले	11	21	11	48	प्री	53	58	28	51	ब	5	55	9	38	25	44	7	15	17	33	18	18	J1	सिं. 11।48	8	16	41	10	8	21	19	9	31	जनवरी मा. 1 ता. 31 सन् 2013 ई. प्रारंभ, कृष्ण चतुर्थी व्रत
12	बु	5	38	10	23	32	म	14	22	13	1	आ	51	41	27	56	कौ	7	42	10	21	25	45	7	16	17	34	19	19	2	सिंह	8	17	42	18	8	22	15	10	6	
13	गु	6	28	7	22	31	पूफा	16	14	13	46	सौ	48	26	26	38	ग	8	18	10	35	25	47	7	16	17	35	20	20	3	क. 19।52	8	18	43	26	8	23	12	10	42	भ. 22।31 से, चेहल्लुम (मु.)
14	शु	7	36	46	21	59	उफा	16	52	14	1	शो	44	9	24	56	वि	7	37	10	19	25	48	7	16	17	35	21	21	4	कन्या	8	19	44	35	9	-	-	11	18	भ. 10।19 तक, मूल धनु में शुक्र: 15।35
15	श	8	34	2	20	53	ह	16	9	13	44	अ	38	47	22	47	बा	5	34	9	30	25	49	7	16	17	36	22	22	5	तु. 25।23	8	20	45	44	9	24	10	11	56	पूषायां बुध: 13।29, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
16	र	9	29	55	19	14	चि	14	5	12	54	सु	32	19	20	12	तै	2	9	8	8	25	51	7	16	17	37	23	23	6	तुला	8	21	46	53	7	25	11	12	38	भ. 30।13 से,
17	चं	10	24	28	17	4	स्वा	10	41	11	33	धृ	24	47	17	11	वि	24	28	17	4	25	52	7	17	17	38	24	24	7	वृ. 28।12	8	22	48	3	10	26	15	13	25	भ. 17।4 तक
18	मं	11	17	49	14	24	वि	6	4	9	42	शू	16	18	13	48	बा	17	49	14	24	25	54	7	17	17	38	25	25	8	वृश्चिक	8	23	49	12	9	27	20	14	17	सफला एकादशी व्रत (सर्वे.), सुरुप द्वादशी
19	बु	12	10	13	11	22	अनु	0 / 54	26 / 5	7 / 28	27 / 55	गं	7 / 57	2 / 12	10 / 30	5 / 10	तै	10	13	11	22	25	56	7	17	17	39	26	26	9	ध. 28।55	8	24	50	22	10	28	25	15	16	आखिरी चहार शम्बा, प्रदोष व्रत
20	गु	13	1	57	8	4	मू	47	23	26	14	ध्रु	47	6	26	7	व	1	57	8	4	25	58	7	17	17	40	27	27	10	धनु	8	25	51	31	9	29	28	16	20	भ. 8।4 से 18।22 तक, उषायां सूर्य: 24।31, मास शिवरात्री व्रत
0	गु	14	53	24	28	38	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय:
21	शु	30	44	58	25	16	पूषा	40	45	23	35	व्या	37	4	22	6	चतु	19	9	14	56	26	0	7	17	17	41	28	28	11	म. 28।56	8	26	52	41	10	30	27	17	26	शहादत-ए-इमाम हसन, लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस, A

A देवपितृकार्य अमावस्या, कुहूहन 30, वकुला 30 (उड़ीसा)

पौष कृ. 8 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
8	5	9	8	1	8	6	6	0	11	10	8
20	18	13	12	13	0	15	29	29	10	7	15
45	40	46	48	22	43	48	20	20	46	8	25
44	9	38	43	43	34	2	17	17	38	35	13
61	803	47	93	5	75	4	3	3	1	1	2
9	3	12	47	6	08	22	11	11	7	41	8
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पूषा. 3	पूफा. 3	श्रवण 2	मूल 4	रोहि. 2	मूल 1	स्वाती 3	विशा. 3	कृति. 1	उ.भा. 3	शत. 1	पूषा. 1

10 मं. | 9 सू. | 8 | 7 श. रा. | 11 ने. | बु. शु. प्लू. | 6 चं. | 12 ह. | 3 | 1 के. | 5 | 2 गु. | 4

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष शनिवार प्रतिपदा पुनर्वसु नक्षत्र के योग से प्रारंभ होकर अमावस्या शुक्रवार पूर्वाषाढ़ा तक योग में रहेगा। कुहू अमावस्या पू.षा. मंदी की सूचक बनती है। **कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, शुक्ल पक्ष में बढ़ जाय। एक वस्तु तो क्या बढ़े, सभी तेज हो जाय॥ मकर मंगल गुरु वृषभ राशि योग। स्त्री वर्ग का अशुभ बने कुयोग॥** यानि भ्रूण हत्या यत्र-तत्र बनेगा। अपराध भी बढ़ेगा। शनि +राहु की युक्ति राजनैतिक शासन व्यवस्था को खण्डित करता है। **शनि-राहु की युक्ति होय तुला में संग। जाने अनजाने में, लोग रहेंगे तंग॥ शनिवासरा यदा पंच जायन्ते रवि पंचकम्। महार्घ जायन्ते धान्यं रोग शोका-कुला मही॥** इस मास में पांच शनि, पांच रवि के योग से विश्व के अनेक भागों में रोग-पीड़ा, महामारी तथा प्राकृतिक प्रकोप से जनता पीड़ित होंगी। तथा युद्धादि का वातावरण या बादलों की तरह संकट छाया रहेगा। असंख्य कीटोत्पत्ति रोग बाधा फैलायेंगे। **व्यापार भविष्य**-ग्रहचाल से पक्ष के शुभारंभ में सोना, चांदी, कपास, सूत, गुड़, घी, अनाज तेज रहेगा। पक्ष के मध्य मंदी का झटका तथा शेयर्स बाजार में मंदी का झटका जोरदार लगेगा। चना, मोंठ, मूंग, ग्वार, मूंगफली, ईलायची, पंचमेवा, औषधि बाजार तेज रहेगा। **आकाश लक्षण**-ता. 30 दिसं., जन. 2013 ता. 4, 6, 8, 10, 12 को उत्तरी भारत में भयंकर शीत लहर का योग बनता है। कहीं-कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी होगी। कोहरा, धुन्ध भी आयेंगी। **शकुन विचार**-पौष कृष्णा नवमी को पूर्व दिशा में बादल, बिजली व गर्जना हो तो अनाजादि व्यापार करने वाले व्यापारियों को अन्न संग्रह करना चाहिए। आगे तेजी होगी। नवमी पौष बदी बरसे, अन [illegible] शकुन॥

ता. 11 जनवरी ❖ पौष कृ. 30 शुक्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

मं. 10 | 9 प्लू. | 8 | 7 श. रा. | 11 ने. | सू. चं. बु. शु. | 6 | 12 ह. | 3 | 1 के. | 5 | 2 गु. | 4

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
8	8	9	8	1	8	6	6	0	11	10	8
26	15	18	22	12	8	16	29	29	10	7	15
52	22	30	19	55	14	12	1	1	54	19	37
41	40	19	33	54	35	31	12	12	24	12	51
61	900	47	96	4	75	3	3	3	1	1	2
10	43	20	11	1	11	52	11	11	25	50	05
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उषा. 1	पूषा. 1	श्रव. 3	पूषा. 3	रोहि. 1	मूल 3	स्वा. 3	विशा. 3	कृति. 1	उ.भा. 3	शत. 1	पूषा. 1

पौष शुक्ल पक्षः- 21

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 12 से 27 जनवरी सन् 2013 ई., रा. मि. 22 पौष से 7 माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिन मान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
22	श	1	37	5	22	7	उषा	34	37	21	8	ह	27	25	18	15	किं	10	55	11	39	26	2	7	17	17	41	29	29	12	मकर	8	27	53	50	61 9	7	20	18	34
23	र	2	30	12	19	21	श्र	29	29	19	4	व	18	31	14	41	बा	3	29	8	40	26	4	7	17	17	42	30	30	13	कुं. 30।14	8	28	54	59	9	8	7	19	39
24	चं	3	24	44	17	10	ध	25	45	17	34	सि	10	42	11	34	ग	24	44	17	10	26	6	7	17	17	43	माघ 1	[illegible] 1	14	कुम्भ	8	29	56	7	8	8	50	20	42
25	मं	4	21	5	15	42	श	23	47	16	47	व्य	4 / 59	16 / 25	8 / 31	59 / 2	वि	21	5	15	42	26	8	7	16	17	44	2	2	15	कुम्भ	9	0	57	15	8	9	29	21	42
26	बु	5	19	31	15	5	पूभा	23	53	16	50	परि	56	16	29	47	बा	19	31	15	5	26	11	7	16	17	45	3	3	16	मी. 10।44	9	1	58	23	8	10	6	22	40
27	गु	6	20	9	15	20	उभा	26	7	17	43	शि	54	49	29	12	तै	20	9	15	20	26	13	7	16	17	46	4	4	17	मीन	9	2	59	29	6	10	41	23	36
28	शु	7	22	56	16	27	रे	30	23	19	25	सि	54	53	29	13	व	22	56	16	27	26	16	7	16	17	46	5	5	18	मे. 19।25	9	4	0	35	6	11	17	24	0
29	श	8	27	35	18	18	अ	36	24	21	49	सा	56	10	29	44	ब	27	35	18	18	26	18	7	16	17	47	6	6	19	मेष	9	5	1	40	5	11	54	24	31
30	र	9	33	37	20	42	भ	43	38	24	43	शुभ	58	18	30	35	बा	0	28	7	27	26	21	7	16	17	48	7	7	20	मेष	9	6	2	44	4	12	33	25	25
माघ 1	चं	10	40	24	23	25	कृ	51	30	27	51	शु	60	0	-	-	तै	6	57	10	2	26	24	7	15	17	49	8	8	21	वृ. 7।29	9	7	3	47	3	13	14	26	17
2	मं	11	47	19	26	11	रो	59	24	31	0	शु	0	50	7	35	व	13	53	12	48	26	27	7	15	17	50	9	9	22	वृष	9	8	4	50	3	13	59	27	9
3	बु	12	53	48	28	46	मृ	60	0	-	-	ब्र	3	20	8	35	ब	20	39	15	30	26	29	7	15	17	51	10	10	23	मि. 20।31	9	9	5	51	1	14	46	27	59
4	गु	13	59	27	31	1	मृ	6	49	9	58	ऐं	5	25	9	24	कौ	26	45	17	57	26	32	7	14	17	51	11	11	24	मिथुन	9	10	6	51	0	15	36	28	46
5	शु	14	60	0	-	-	आ	13	23	12	35	वै	6	50	9	58	ग	31	53	19	59	26	35	7	14	17	52	12	12	25	मिथुन	9	11	7	51	0	16	28	29	31
6	श	14	4	1	8	50	पुन	18	52	14	47	वि	7	26	10	12	व	4	1	8	50	26	39	7	14	17	53	13	13	26	क. 8।16	9	12	8	49	60 / 58	17	22	30	14
7	र	15	7	24	10	11	पु	23	15	16	31	प्री	7	9	10	5	ब	7	24	10	11	26	42	7	13	17	54	14	14	27	कर्क	9	13	9	47	58	18	17	30	54

चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, पंचक 30।14 से, मकरे सूर्यः A
भ. 28।20 से, रवि-उल-अव्वल मु. मा. 3 प्रा., सौर माघारंभः, B
व्यतिपात पुण्यं 8।59 तक, मकरे बुधः 22।50, भा. थलसेना C
C दिवस, विनायक चतुर्थी व्रत
धनिष्ठायां भौमः 8।15
भ. 16।27 से 29।18 तक, पंचक 19।25 तक, गुरु गोविन्द D
सायन कुम्भे सूर्यः 7।18, श्रीदुर्गाष्टमी
D सिंह ज. (प्रा. मत से), श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य (जैन)
रा. माघ प्रा., श्रवणे बुधः 22।29, शाम्ब 10 (उड़ीसा)
भ. 12।48 से 26।11 तक, पवित्रा (पुत्रदा) 11 व्रत (सर्वे.), E
श्रवण में सूर्यः 26।48, सुभाष चन्द्र बोस जयंती
प्रदोष व्रतम् E वैकुण्ठ 11 (द.भा.), मन्वादि 11
कुम्भ में मंगल 18।42, उषा. में शुक्रः 22।21, ईद-ए-मिलाद
भ. 8।50 से 21।33 तक, चतुर्दशी तिथि वृद्धि, भारतीय गणतंत्र F
पौषी पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नानारंभः, गंगासागर यात्रा

A 31।01, उषा. में बुध 21।56, लोहड़ी उत्सव (पं.,हरि.,हि.प्र.) B पूषायां शुक्रः 30।59, उभा. 4 मा. हर्षल 20।52, मकर संक्रांति पुण्यं, यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य व त्रिस्तुति (जैन), धनु मलमास पूर्ण
F दिवस वर्ष 64 वां, सत्यनारायण-पूर्णिमा व्रतं, शाकम्भरी जयंती

पौष शु. 8 शनि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 19 जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
9	0	9	9	1	8	6	6	0	11	10	8
5	5	24	5	12	18	16	28	28	11	7	15
1	7	49	26	30	16	40	35	35	7	34	54
40	29	22	10	47	7	16	46	46	23	30	23
61	737	47	100	2	75	3	3	3	1	1	2
5	53	25	7	26	12	09	11	11	47	58	2
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
3 [illegible]	2 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	2 [illegible]	4 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]

11 ने. | 9 शु.प्लू. | 12 ह. | 10 सू. मं. बु. | 7 श. रा. | 8 | 1 चं. के. | 4 | 2 गु. | 6 | 3 | 5

[पक्ष फलम्]
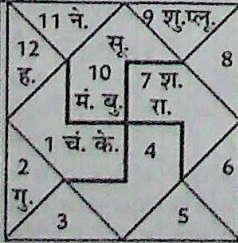
यह पक्ष शनिवार प्रतिपदा से शुभारंभ होकर रविवार पूर्णिमा पुष्य रवि के योग तक चलेगा। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती श्रेष्ठ तथा पुष्पों को प्लवित करने वाला पक्ष आर्थिक दृष्टि से अग्रसर रहेगा। यानि जनता की आय के साधन तो बढ़ेंगे, लेकिन प्राप्ति बाद धक्का लगने तथा योग बनेगा। इसी पक्ष में पौष सुदी तीज रविवार को भुवन भास्कर सूर्यदेव मकर राशि में प्रवेश मध्य रात्रि बाद प्रभात सूर्योदय पूर्व करेंगे। बिल्व पुष्ट, मुकुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रौढ़ावस्था बैठी 30 मुहूर्त्ती के योग से धान्य के भावों में मंदी बनेगी। सूर्य-बुध-शुक्र की युक्ति धनु राशि में होय। नूतन धंधा तकनीकि शिक्षा का विकास होय॥ गुरु वक्रता योग में पीत वस्तु गड़बड़ होय। सोना, सरसों, शीशम बढ़े गरीबों को संकट होय॥ नेपाल, आसाम, उड़ीसा में राजनैतिक उपद्रव बढ़ेंगे। केन्द्रीय सत्ता में छद्मवेशी योग की घटना घटेगी। भारत की गरिमा पर प्रश्न चिन्ह लगने जैसी घटनाएं भी घटेंगी। चोरी, डकैती, अपहरण, बलात् योग का प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार भविष्य-ग्रह चाल से पक्ष के प्रारंभ में रुई में तेजी। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, हल्दी, गुग्गल, चांदी, सोना में तेजी का रुख तेज रहेगा। मध्य पांच दिन मंदा योग बनता है। पक्षान्त में एकाएक तेजी सभी जिन्सों में बनेगी। शेयर्स बाजार मंदा होगा। तृण, घास, रसकस में गड़बड़ योग रहेगा। आकाश लक्षण-जनवरी ता. 14, 17, 22, 27 को खण्डवृष्टि का योग बनता है। उत्तर भारत में शीत लहर प्रकोप रूप धारण करने का योग है। हिमपात के प्रभाव से यातायात भी बाधित होगा। शकुन विचार-पौष शुक्ला द्वितीया मेघ गाज में संग। अन्न बहुत ही निपजै सस्ताई का [illegible] वर्षा होय॥

ता. 27 जनवरी ❖ पौष शु. 15 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

11 मं.ने. | शु. प्लू. 9 | 12 ह. | 10 सू. बु. | 7 श.रा. | 8 | 1 के. | 4 चं. | 2 गु. | 6 | 3 | 5

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
9	3	10	9	1	8	6	6	0	11	10	8
13	10	1	19	12	28	17	28	28	11	7	16
9	55	8	6	18	17	2	10	10	23	50	10
47	49	46	15	33	32	4	19	19	12	54	17
60	740	47	104	0	75	2	3	3	2	2	1
58	47	26	16	48	10	24	11	11	7	06	57
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
1 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]	4 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	3 [illegible]	1 [illegible]	1 [illegible]

माघ कृष्ण पक्षः- 22

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 28 जनवरी से 10 फरवरी सन् 2013 ई., रा. मि. 8 से 21 माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
		ति	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	रा.घं.मि.	रा.	अं.	क	वि.		घं.	मि.	घं	मि.	
8	चं	1	9	37	11	3	श्ले	26	31	17	49	आ	5	59	9	36	कौ	9	37	11	3	26	45	7	13	17	55	15	15	28	सिं. 17/49	9	14	10	44	60/57	19	13	7	32	मकरे शुक्र: 14/13, लाजपतराय ज., दशाश्वमेध घाटे स्नान प्रा. (काशी)
9	मं	2	10	45	11	30	म	28	47	18	43	सौ	4	0	8	48	ग	10	45	11	30	26	48	7	12	17	56	16	16	29	सिंह	9	15	11	40	56	20	10	8	8	भ. 23/36 से, धनि. में बुध: 15/32
10	बु	3	10	54	11	34	पूफा	30	8	19	15	शो	1/57	15/47	7/30	42/18	वि	10	54	11	34	26	51	7	12	17	56	17	17	30	कं. 25/20	9	16	12	35	55	21	7	8	44	भ. 11/34 तक, मार्गी गुरु: 17/12, ईद-ए-मौलाद (मु.), A
11	गु	4	10	9	11	15	उफा	30	37	19	26	सु	53	39	28	39	बा	10	9	11	15	26	55	7	11	17	57	18	18	31	कन्या	9	17	13	29	54	22	5	9	20	पश्चिमास्तं भौम: 14/22
12	शु	5	8	33	10	36	ह	30	16	19	17	धृ	48	52	26	43	तै	8	33	10	36	26	58	7	11	17	58	19	19	F1	तु. 31/05	9	18	14	23	54	23	5	9	58	फरवरी मा. 2 ता. 28 प्रा.
13	श	6	6	6	9	36	चि	29	6	18	49	शू	43	25	24	32	व	6	6	9	36	27	2	7	10	17	59	20	20	2	तुला	9	19	15	16	53	-	-	10	38	भ. 9/36 से 21/02 तक, कुंभे बुध: 10/30, शते भौम: 29/8
14	र	7	2	47	8	16	स्वा	27	5	18	0	गं	37	16	22	4	ब	2	47	8	16	27	5	7	10	18	0	21	21	3	तुला	9	20	16	8	52	24	6	11	22	स्वामी विवेकानंद जयंती, रामानंदाचार्य जयंती, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
0	र	8	58	35	30	36	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	अष्टमी तिथि क्षय:
15	चं	9	53	34	28	35	वि	24	14	16	50	वृ	30	27	19	20	तै	26	11	17	38	27	9	7	9	18	0	22	22	4	वृ. 11/10	9	21	16	59	51	25	8	12	10	B पश्चिमोदयं बुध: 20/3, श्रवणे शुक्र: 13/47, डेजर्ट दि.
16	मं	10	47	46	26	15	अनु	20	33	15	22	ध्रु	22	59	16	20	व	20	46	15	27	27	12	7	8	18	1	23	23	5	वृश्चिक	9	22	17	49	50	26	11	13	5	भ. 15/27 से 26/15 तक, धनिष्ठायां सूर्य: 30/2, शते. बुध: 30/23, B
17	बु	11	41	19	23	39	ज्ये	16	10	13	36	व्या	14	56	13	6	ब	14	37	12	59	27	16	7	8	18	2	24	24	6	ध. 13/36	9	23	18	39	50	27	13	14	4	षट्तिला एकादशी व्रत (सर्वे.)
18	गु	12	34	27	20	54	मू	11	16	11	37	ह	6/57	27/42	9/30	42/12	कौ	7	56	10	18	27	20	7	7	18	3	25	25	7	धनु	9	24	19	27	48	28	12	15	7	तिल द्वादशी, शीतलनाथ जन्म-तप (जैन)
19	शु	13	27	28	18	5	पूषा	6	5	9	32	सि	48	59	26	42	ग	0	58	7	30	27	23	7	6	18	4	26	26	8	म. 15/01	9	25	20	15	48	29	6	16	13	भ. 18/5 से 28/42 तक, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत, मेरु C
20	श	14	20	40	15	22	उषा	0/57	58/17	7/29	29/36	व्य	40	35	23	19	श	20	40	15	22	27	27	7	6	18	4	27	27	9	मकर	9	26	21	1	46	29	56	17	18	व्यतिपात पुण्यं, माघ बिहु (असम), पोंगल पर्व (केरला)
21	र	30	14	29	12	53	ध	52	29	28	4	वरि	32	46	20	11	ना	14	29	12	53	27	31	7	5	18	5	28	28	10	कुं. 16/47	9	27	21	47	46	30	40	18	22	पंचक 16/47 से, देवपितृकार्याऽमावस्या, मौनी अमावस्या, D

A महात्मा गांधी पु. दि., संकट 4, कृष्ण चतुर्थी व्रत C त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणांक, रटन्ति कालिका पूजन, ऋषभदेव मोक्ष (जैन)

D द्वापरयुगादि 30, विशाल मेला (हरिद्वार व प्रयाग), आखरी चाहर शम्बा (मु.)

माघ कृ. 7 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 3 फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
9	6	10	10	1	9	6	6	0	11	10	8
20	12	6	1	12	7	17	27	27	11	8	16
16	47	40	23	18	3	15	48	48	39	5	23
8	21	43	23	34	43	59	4	4	10	58	30
60	821	47	105	0	75	1	3	3	2	2	1
52	28	25	22	37	10	42	11	11	24	11	51
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
श्रव. 4	शता. 2	शता. 1	पूभा. 3	रोहि. 1	उषा. 4	श्ले. 4	विशा. 3	कृति. 1	उभा. 3	शता. 1	पूषा. 1

12 ह. | 11 म.बु.ने. | 10 सू. शु. | 9 प्लू. | 8 | 7 चं. रा. श. | 6 | 5 | 4 | 3 | 2 गु. | 1 के.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार प्रतिपदा आश्लेषा से प्रारंभ होकर अमावस्या रविवार धनिष्ठा नक्षत्र के योग तक चलेगा। पक्ष में अष्टमी का क्षय विशेष अशुभ संकेत करता है। राजनेताओं को संकट योग बनेगा। धनिष्ठा में बुध, भौमास्त, मौनी अमावस्या रविवार आदि योग से पक्ष में कहीं भयंकर दुर्घटना का योग, विस्फोट एवं प्राकृतिक आपदा का योग बनता है। कहीं सत्ता परिवर्तन जैसा योग भी बनता है। कहा है कि **अमावस्या सहस्यस्य शनि सूर्य वासरे। यदि स्याद्भय मोदश्यं तदा सस्य महर्घता॥** प्रजा में भय, आतंक की वृद्धि होगी। शासकों में विरोध होगा। जन कल्याण योजना बंद या क्रियान्वित नहीं होंगी। मंगल कुंभ राशि में होने से विद्रोह स्वप्न में भी चलता रहेगा। **सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धन-धान्य समृद्धिः स्यात्सुख भवति सर्वदा॥** इस योग से जनता के विद्रोह में कुछ न्यूनता का योग बनेगा। मशीनरी एवं शैक्षिक उद्योग विशेषतः उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। विश्व व्यापार संगठन में नवीन उदारता नीति की प्रस्तुति होगी। स्त्री वर्ग में भी परस्पर मन-मुटाव बढ़ेगा। **व्यापार भविष्य**-ग्रहादि चाल से गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सन, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, सुपारी, लौंग, कालीमिर्च, लालमिर्च, ग्वार, मौंठ, मूंग में विशेष तेजी बनेगी। चना, चावल, बाजरा में कुछ घटाबढ़ी भी चलेगी। मूंगफली की तेजी विशेष 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ेगी। **आकाश लक्षण**-जनवरी 30, 31 व फर. 7, 8, 10 को उत्तर भारत में ओले गिरने का योग तथा शीत लहर चलेगी। जन-धन की हानि भी। केन्द्रीय सरकार में भयावह अफवाह का वातावरण से धन हानि योग बनेगा। अचानक कोहरा छाने से हवाई यात्राएं प्रभावित होंगी। **शकुन विचार-माघ कृष्णा प्रतिपदा बादल बिजली होय। तिलहन तेज सरसों भी महंगाई जोय॥ माघ कृष्णा तृतीया गर्जे परन्तु न बरसे मेह। जौ गेहूं संग्रह करो लाभ दोगुना नहीं संदेह॥**

ता. 10 फरवरी ❖ माघ कृ. 30 रवि प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

12 ह. | 11 म.बु.ने. | 10 सू. चं. शु. | 9 प्लू. | 8 | 7 श. रा. | 6 | 5 | 4 | 3 | 2 गु. | 1 के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
9	9	10	10	1	9	6	6	0	11	10	8
27	23	12	13	12	15	17	27	27	11	8	16
21	16	12	14	28	49	24	25	25	56	21	35
47	4	29	24	32	48	54	48	48	55	30	55
60	868	47	86	2	75	0	3	3	2	2	1
46	15	22	22	2	09	58	11	11	38	15	43
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
धनि. 2	श्रव. 4	शता. 2	शता. 2	रोहि. 1	श्रव. 2	श्ले. 4	विशा. 3	कृति. 1	उ.भा. 3	शता. 1	पूषा. 1

माघ शुक्ल पक्षः- 23

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 11 से 25 फरवरी सन् 2013 ई., रा. मिति 22 माघ से 6 फाल्गुन तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर-वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
22	चं	1	9	18	10	47	श	49	57	27	3	प	25	53	17	25	ब	9	18	10	47	27	35	7	4	18	6	29	29	11	कुम्भ	9	28	22	30	60 43	7	21	19	24	B (गोंतरी पंजाब), विनायक 4 व्रत, तिल 4, वरद 4
23	मं	2	5	30	9	16	पूभा	49	1	26	40	शि	20	12	15	8	कौ	5	30	9	16	27	38	7	3	18	7	1	30	12	मी. 20 ।42	9	29	23	13	42	8	0	20	24	चन्द्रदर्शनम् मु. 15 महर्घता, सौर फाल्गुन प्रा., कुम्भेऽर्कः 20 ।3, A
24	बु	3	3	27	8	25	उभा	49	58	27	2	सि	15	56	13	25	ग	3	27	8	25	27	42	7	2	18	7	2	1	13	मीन	10	0	23	54	41	8	37	21	22	भ. 20 ।18 से, रवि-उस्सानी मु. मा. 4 प्रा., गौरी तृतीया व्रत B
25	गु	4	3	20	8	22	रे	52	53	28	11	सा	13	13	12	19	वि	3	20	8	22	27	46	7	2	18	8	3	2	14	मे. 28 ।11	10	1	24	34	40	9	13	22	18	भ. 8 ।22 तक, पंचक 28 ।11 तक, पूभायां बुध: 22 ।53, C
26	शु	5	5	17	9	8	अ	57	41	30	5	शुभ	12	4	11	50	बा	5	17	9	8	27	50	7	1	18	9	4	3	15	मेष	10	2	25	12	38	9	51	23	13	धनिष्ठायां शुक्र: 29 ।20 D अचल 7, चन्द्रभागा 7
27	श	6	9	8	10	39	भ	60	0	-	-	शु	12	21	11	57	तै	9	8	10	39	27	54	7	0	18	10	5	4	16	मेष	10	3	25	48	36	10	29	24	0	दारिद्र्य हरण षष्ठी, शीतला षष्ठी (बंगाल)
28	र	7	14	33	12	48	भ	4	5	8	37	ब्र	13	48	12	30	व	14	33	12	48	27	58	6	59	18	10	6	5	17	वृ. 15 ।20	10	4	26	22	34	11	10	24	7	भ. 12 ।48 से 26 ।2 तक, रथ सप्तमी, आरोग्य 7, मन्वादि 7, D
29	चं	8	20	58	15	22	कृ	11	30	11	35	ऐं	16	1	13	23	ब	20	58	15	22	28	2	6	58	18	11	7	6	18	वृष	10	5	26	55	33	11	53	25	0	सायन मीने सूर्य: 17 ।25, वसंत ऋतु प्रा., श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी
30	मं	9	27	44	18	3	रो	19	21	14	42	वै	18	31	14	22	कौ	27	44	18	3	28	6	6	57	18	12	8	7	19	मि. 28 ।14	10	6	27	26	31	12	40	25	51	शते. सूर्य: 10 ।29, पूभायां भौम: 26 ।45, वक्री शनि: 16 ।28
फाल्गुन 1	बु	10	34	10	20	37	मृ	26	57	17	43	वि	20	51	15	17	तै	1	3	7	22	28	10	6	56	18	13	9	8	20	मिथुन	10	7	27	55	29	13	28	26	39	रा. फाल्गुनारंभः
2	गु	11	39	42	22	48	आ	33	45	20	25	प्री	22	35	15	57	व	7	6	9	46	28	14	6	56	18	13	10	9	21	मिथुन	10	8	28	22	27	14	19	27	25	भ. 9 ।46 से 22 ।48 तक, E
3	शु	12	43	56	24	29	पुन	39	21	22	39	आ	23	25	16	17	ब	12	1	11	43	28	18	6	55	18	14	11	10	22	क. 16 ।09	10	9	28	48	26	15	13	28	9	भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण, वेणेश्वर मेला प्रा. (बांसवाड़ा)
4	श	13	46	40	25	34	पु	43	32	24	18	सौ	23	10	16	10	कौ	15	30	13	6	28	23	6	54	18	15	12	11	23	कर्क	10	10	29	11	23	16	7	28	50	वक्री बुध: 14 ।14, फातिहा यजदहूम (मु.), शनि प्रदोष व्रत, F
5	र	14	47	55	26	3	श्ले	46	16	25	23	शो	21	46	15	35	ग	17	30	13	53	28	28	6	53	18	15	13	12	24	सिं. 25 ।23	10	11	29	33	22	17	4	29	29	भ. 26 ।3 से, विशा. 2 में राहु:, भर. 4 में केतु: 10 ।46, श्री G
6	चं	15	47	47	25	58	म	47	41	25	56	अ	19	15	14	34	वि	18	2	14	4	28	31	6	52	18	16	14	13	25	सिंह	10	12	29	53	20	18	1	30	7	भ. 14 ।4 तक, पश्चिमास्तं बुध: 25 ।41, सत्यनारायण-पूर्णिमा H

पूर्वास्तं शुक्रः 12 फर.

G रामचरण स्नेही ज., श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन)

A पूर्वास्तं शुक्र: 24 ।10, बाबा लाल दयाल ज., C वेलेन्टाइन डे, वसन्त पंचमी, तक्षक पूजन, रति कामोत्सव, सरस्वती पूजन, शुक्र वृद्धत्वारंभ: 14 ।17 E कुंभे शुक्र: 13 ।15, जया एकादशी व्रत (सबका)
F कल्पादि 13, गुरु हरराय ज. (प्रा. मत से), मेला पंचखण्ड पीठ विराट नगर (राज.) H व्रत पुण्यं च, संत रैदास जय., श्री ललिता ज., माघ स्नान पूर्ति, दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ण (काशी)

माघ शु. 8 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 18 फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	1	10	10	1	9	6	6	0	11	10	8
5	7	18	23	12	25	17	27	27	12	8	16
26	0	30	27	51	50	28	0	0	19	39	48
55	19	57	21	47	38	49	23	23	8	36	56
60	713	47	55	3	75	0	3	3	2	2	1
33	45	15	2	34	4	8	11	11	53	16	34
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (18 फरवरी): 12 ह. | 10 शु. | 1 के. | सू. | मं.11 बु.ने. | 9 प्लू. | 8 | 2 चं. गु. | 5 | 3 | 7 श. रा. | 4 | 6

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष सोमवार प्रतिपदा शतभिषा नक्षत्र तिथौ योग से प्रारंभ होकर पूर्णिमा सोमवार मघा नक्षत्र तक चलेगा। चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्त्ती महंगाई का कारक बनेगा। तृतीया बुधवार को शुक्रास्त का योग तथा सुदी तीज भौमवार को भुवन भास्कर सूर्यदेव कुंभ राशि में प्रवेश सायं 20:3 पर करेंगे। प्रबल भूषण, युवावस्था, सूती संक्रांति के योग से तथा 30 मुहूर्त्ती होने से धान्य भावों में मंदी या समभाव न तेजी, न मंदी का योग करता है। राहु शनैश्चर का बनै जब एक बैर मिलाप। महंगाई हो अन्न में राजा को संताप॥ यह योग इसी पक्ष में बना है। अतः अनाजों में तेजी आयेगी। कोई भी मंत्री पद्च्युत या देहावसान का शिकार होगा। शनिवारी संक्रांति फिर दूजी हो रविवार। तीजी मंगलवार को शर्पर योग विचार॥ यह योग भी इस पक्ष में होने से दुर्भिक्ष कारक, खर्पर योग बनता है। यानि वस्तु की न्यूनता कमी तथा तेजी विशेष। व्यापार

ता. 25 फरवरी ❖ माघ शु. 15 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (25 फरवरी): 12 ह. | 10 | 1 के. | सू. 11 | मं. बु. शु. ने. | 9 प्लू. | 8 | 2 गु. | 5 चं. | 3 | 7 श. रा. | 4 | 6

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	4	10	10	1	10	6	6	0	11	10	8
12	2	24	25	13	4	17	26	26	12	8	16
29	12	1	37	21	35	26	38	38	40	55	59
53	47	7	11	59	49	46	7	7	1	33	8
60	828	47	10	4	74	0	3	3	3	2	1
20	41	6	52	51	59	36	11	11	04	17	23
-	-	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भविष्य-ग्रह चाल से गेहूं, जौ, चना, चावल, साबुदाना, दूध, दही, घृत, गुड़, बारदाना, पाट, पटसन, नारियल, जूट, नमक के भावों में तेजी बनेगी। तारामीरा, रायरा, ईसबगोल, जीरा, राई के भावों में अस्थिरता रहेगी। यानि घटबढ़ चलेगी। **आकाश लक्षण**-दिनांक 13, 16, 20, 23, 24 व 25 फर. को लंका, पूर्वी भारत का किनारा, शिलांग, मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान पश्चिम भाग में बादल चाल बूंदा-बांदी तथा फसल को हानिदायक योग बनेगा। उत्तर भारत में वायु की गति तेज रहेगी। मौसम में परिवर्तन भी होगा। **शकुन विचार**-माघ शुक्ला सप्तमी भरणी नक्षत्र विचार। सभी वस्तु सस्ती बिकै, सुख पावै नर नार॥ माघ शुक्ला पूर्णिमा बादल बिजली [illegible]

फाल्गुन कृष्ण पक्षः- 24

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 26 फरवरी से 11 मार्च 2013 ई., रा. मि. 7 से 20 फाल्गुन तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
7	मं	1	46	27	25	26	पूफा	47	56	26	1	सु	15	45	13	9	बा	17	16	13	45
8	बु	2	44	10	24	30	उफा	47	14	25	43	धृ	11	23	11	23	तै	15	26	13	0
9	गु	3	41	6	23	15	ह	45	49	25	8	शू	6	21	9	21	व	12	44	11	54
10	शु	4	37	28	21	47	चि	43	50	24	20	गं	0/54	46/43	7/28	6/41	ब	9	22	10	33
11	श	5	33	23	20	8	स्वा	41	26	23	21	धु	48	23	26	8	कौ	5	30	8	58
12	र	6	28	56	18	20	वि	38	41	22	14	व्या	41	47	23	28	ग	1	13	7	15
13	चं	7	24	11	16	25	अ	35	38	21	0	ह	34	57	20	43	व	24	11	16	25
14	मं	8	19	11	14	24	ज्ये	32	21	19	40	व	27	55	17	54	कौ	19	11	14	24
15	बु	9	13	59	12	18	मू	28	54	18	16	सि	20	45	15	0	ग	13	59	12	18
16	गु	10	8	40	10	9	पूषा	25	21	16	50	व्य	13	29	12	5	वि	8	40	10	9
17	शु	11	3	23	8	1	उषा	21	54	15	26	वरि	6/59	16/12	9/30	11/21	बा	3	23	8	1
0	शु	12	58	16	29	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0
18	श	13	53	39	28	7	श्र	18	44	14	9	शि	52	32	27	40	ग	25	55	17	1
19	र	14	49	47	26	33	ध	16	8	13	5	सि	46	28	25	13	वि	21	38	15	17
20	चं	30	46	57	25	24	श	14	22	12	22	सा	41	13	23	6	चतु	18	14	13	55

रा.मि.	दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
7	28	35	6	51	18	17	15	14	26	सिंह	10	13	30	12	60/19	18	59	6	44
8	28	39	6	50	18	17	16	15	27	कं. 7:59	10	14	30	28	16	19	58	7	20
9	28	44	6	49	18	18	17	16	28	कन्या	10	15	30	43	15	20	58	7	58
10	28	48	6	48	18	19	18	17	M1	तु. 12:45	10	16	30	57	14	21	59	8	38
11	28	54	6	47	18	20	19	18	2	तुला	10	17	31	9	12	23	2	9	21
12	28	58	6	46	18	21	20	19	3	वृ. 16:31	10	18	31	19	10	-	-	10	8
13	29	2	6	44	18	21	21	20	4	वृश्चिक	10	19	31	28	9	24	4	11	1
14	29	6	6	43	18	22	22	21	5	ध. 19:40	10	20	31	35	7	25	6	11	57
15	29	11	6	42	18	23	23	22	6	धनु	10	21	31	41	6	26	4	12	58
16	29	15	6	41	18	23	24	23	7	म. 22:28	10	22	31	45	4	26	59	14	1
17	29	19	6	40	18	24	25	24	8	मकर	10	23	31	48	3	27	48	15	4
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0
18	29	23	6	39	18	24	26	25	9	कुं. 25:35	10	24	31	49	1	28	34	16	7
19	29	28	6	38	18	25	27	26	10	कुम्भ	10	25	31	48	59/59	29	15	17	8
20	29	32	6	37	18	26	28	27	11	मी. 30:07	10	26	31	45	57	29	54	18	8

रा.मि.	विवरण
7	शतं. शुक्र: 21:15
8	A मेला मस्तुआणा (पं.), कृष्ण चतुर्थी व्रत
9	भ. 11:54 से 23:15 तक, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस, A
10	मार्च मा. 3 ता. 31 प्रारंभ
11	
12	भ. 18:20 से 29:26 तक
13	मीने भौम: 20:47, पूभायां सूर्य: 16:53, शते. 4 वक्री बुध: 20:7
14	कालाष्टमी B व्रतं (सर्वेषां)
15	भ. 23:15 से, समर्थ गुरु रामदास ज.
16	भ. 10:9 तक, व्यतिपात पुण्यं, महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
17	उभा. में मंगल 27:15, विश्व महिला दिवस, विजया एकादशी B
0	द्वादशी तिथि क्षय: C प्रदोष व्रत
18	भ. 28:7 से, पंचक 25:35 से, पूभायां शुक्र: 13:31, शनि C
19	भ. 15:17 तक, पूर्वोदयं बुध: 22:47, श्री महाशिवरात्री व्रत, D
20	देवपितृकार्या-सोमवती अमावस्या, शिवखप्पर पूजन D ज्योतिर्लिंगानां अभिषेकं, वैद्यनाथ जयंती

फाल्गुन कृ. 8 मंगल प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 5 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	7	11	10	1	10	6	6	0	11	10	8
20	21	0	19	14	14	17	26	26	13	9	17
31	39	17	35	6	35	18	12	12	5	13	9
35	38	2	50	53	25	18	41	41	11	38	18
60	844	46	61	6	74	1	3	3	3	2	1
7	40	54	27	12	55	24	11	11	13	14	10
-	-	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
पूभा. 1	अनुराधा 2	पूभा. 4	शत. 4	रोहि. 2	शत. 3	स्वाती 4	विशा. 2	भरणी 4	उभा. 3	शत. 1	पूषा. 2

12 मं. ह. — 11 सू. बु. शु. ने. — 10 — 9 प्लू. — 8 चं. — 7 श. रा. — 6 — 5 — 4 — 3 — 2 गु. — 1 के.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा भौमवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र योग से प्रारंभ होकर सोमवती अमावस्या शतभिषा तक चलेगा। द्वादशी का क्षय, शुक्ल पक्ष में षष्ठी का बढ़ना योग से मंदी का योग बनता है। **यत्र मासे महि सूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पांच मंगल अग्निकाण्ड का योग करते हैं। विद्रोह एवं वाद-विवाद से जनता में रक्त संचरण जैसी घटनाएं गृह क्लेश से बनती हैं। छत्र भंग यानि बड़े नेता की हत्या या अवसान योग, झण्डा झुकने का योग बनता है। **पंच व चतुर्थ ग्रहाः युक्ति जायन्ते। कलह योग सर्वत्र प्रदायते॥ बुधस्य युक्ति सूर्य सह यस्मिन पक्षे वर्तते। यत्र तत्र सर्वत्र प्रजानां सुभिक्षं च प्रजायते॥** इस योग से मिश्रित फल फलित होगा, यानि उपद्रव बढ़कर शीघ्र ही शांत हो जायेंगे। मुस्लिम देशों में असामयिक घटनाओं का योग यत्र-तत्र चलता रहेगा। शैक्षिक क्रांति के योग से स्त्री वर्ग विशेष लाभान्वित होंगी। व्यापार भविष्य-पक्षारंभ में ग्रह योग से सोना, चांदी, ग्वार, ज्वार समभाव या मंदी का योग बनेगा। तिलहन, दलहन, जीरा, शेयर्स में तेजी बनेगी। कपड़ा, सूत, कपास मंदा होगा। घृत विशेष तेज रहेगा। आकाश लक्षण-दिनांक 26, 28 फरवरी व 2, 7, 9, 10, 11 मार्च को शिलांग, भूटान, आसाम, नेपाल, बंगाल, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ में तेज वायु के कारण वृक्षादि नष्ट हो जायेंगे। तथा बूंदा-बांदी से शीलता या ठंड का योग बनेगा। कहीं-कहीं बिजली कड़क कर गिरेगी। शकुन विचार-**रविवारी तीन अमावस्या पौण संवत जान। चौथाई से तीन गया पाव पहचान॥ किसी मास में पूर्णिमा को यदि वर्षे मेह। घी गेहूं धान्य की तेजी जानो निःसंदेह॥**

ता. 11 मार्च ❖ फाल्गुन कृ. 30 चन्द्र प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

12 मं. ह. — 11 ने. सू. चं. बु. शु. — 10 — 9 प्लू. — 8 — 7 श. रा. — 6 — 5 — 4 — 3 — 2 गु. — 1 के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
10	10	11	10	1	10	6	6	0	11	10	8
26	16	4	14	14	22	17	25	25	13	9	17
31	5	57	2	47	4	7	53	53	24	26	15
45	35	52	44	22	43	48	37	37	49	59	49
59	829	46	45	7	74	2	3	3	3	2	1
57	02	44	41	08	51	00	11	11	19	12	1
-	-	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
पूभा. 2	शत. 3	उभा. 1	शत. 3	रोहि. 2	पूभा. 1	स्वा. 4	विशा. 2	भ. 4	उभा. 4	शत. 1	पूषा. 2

फाल्गुन शुक्ल पक्षः- 25

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 12 से 27 मार्च सन् 2013 ई., रा. मिति 21 फाल्गुन से 6 चैत्र तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण-उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान	दिनमान	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र. मु. अं. 1	प्र. मु. अं. 2	प्र. मु. अं. 3	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
21	मं	1	45	26	24	46	पूभा	13	45	12	6	शुभ	37	0	21	24	किं	16	2	13	0	29	36	6	36	18	26	29	28	12	मीन	10	27	31	41	59/56	6	32	19	7
22	बु	2	45	28	24	46	उभा	14	32	12	24	शु	33	59	20	10	बा	15	16	12	41	29	41	6	35	18	27	30	29	13	मीन	10	28	31	34	53	7	9	20	4
23	गु	3	47	12	25	26	रे	16	55	13	20	ब्र	32	16	19	28	तै	16	9	13	1	29	45	6	33	18	27	चै. 1	1	14	मे. 13।20	10	29	31	26	52	7	46	21	0
24	शु	4	50	37	26	47	अ	20	57	14	55	ऐं	31	52	19	17	व	18	44	14	2	29	49	6	32	18	28	2	2	15	मेष	11	0	31	16	50	8	25	21	56
25	श	5	55	31	28	43	भ	26	31	17	8	वै	32	39	19	35	ब	22	55	15	41	29	54	6	31	18	29	3	3	16	वृ. 23।46	11	1	31	3	47	9	5	22	49
26	र	6	60	0	-	-	कृ	33	20	19	50	वि	34	23	20	15	कौ	28	25	17	52	29	58	6	30	18	29	4	4	17	वृष	11	2	30	48	45	9	48	23	41
27	चं	6	1	33	7	6	रो	40	53	22	50	प्री	36	42	21	10	तै	1	23	7	6	30	2	6	29	18	30	5	5	18	वृष	11	3	30	31	43	10	33	-	-
28	मं	7	8	4	9	41	मृ	48	36	25	54	आ	39	10	22	8	व	8	4	9	41	30	7	6	28	18	30	6	6	19	मि. 12।23	11	4	30	12	41	11	21	24	31
29	बु	8	14	29	12	14	आ	55	50	28	46	सौ	41	21	22	59	ब	14	29	12	14	30	11	6	26	18	31	7	7	20	मिथुन	11	5	29	51	39	12	10	25	18
30	गु	9	20	9	14	29	पुन	60	0	-	-	शो	42	47	23	32	कौ	20	9	14	29	30	15	6	25	18	31	8	8	21	क. 24।40	11	6	29	27	36	13	2	26	2
चैत्र 1	शु	10	24	32	16	13	पुन	2	4	7	14	अ	43	10	23	40	ग	24	32	16	13	30	19	6	24	18	32	9	9	22	कर्क	11	7	29	1	34	13	56	26	44
2	श	11	27	19	17	19	पु	6	49	9	7	सु	42	16	23	17	वि	27	19	17	19	30	24	6	23	18	33	10	10	23	कर्क	11	8	28	32	31	14	51	27	24
3	र	12	28	20	17	42	श्ले	9	53	10	19	धृ	40	0	22	22	बा	28	20	17	42	30	28	6	22	18	33	11	11	24	सि. 10।19	11	9	28	2	30	15	47	28	2
4	चं	13	27	37	17	23	म	11	16	10	51	शू	36	25	20	55	तै	27	37	17	23	30	32	6	21	18	34	12	12	25	सिंह	11	10	27	29	27	16	45	28	39
5	मं	14	25	20	16	28	पूफा	11	3	10	45	गं	31	37	18	58	व	25	20	16	28	30	37	6	20	18	34	13	13	26	कं. 16।38	11	11	26	54	25	17	44	29	16
6	बु	15	21	44	15	0	उफा	9	29	10	6	वृ	25	47	16	37	ब	21	44	15	0	30	41	6	18	18	35	14	14	27	कन्या	11	12	26	17	23	18	45	29	54

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- चन्द्रदर्शनम् मु. 30 साम्यार्घ, फुलरिया 2, श्रीरामकृष्ण परमहंस ज.
- जमादि-उल-अव्वल मु. मा. 5 प्रा., सौर चैत्रारंभः, पंचक A
- भ. 14।2 से 26।47 तक, विनायक 4 व्रत, संत 4 (उड़ीसा)
- महर्षि याज्ञवल्क जयंती
- मीन में शुक्रः 14।0, उभायां सूर्यः 25।16, मार्गी बुधः B
- षष्ठी तिथि वृद्धिः B 24।44, गोरूपीणी षष्ठी (बंगाल)
- भ. 9।41 से 23।0 तक, उभायां शुक्रः 30।14
- सायन मेष में सूर्यः 16।30, उत्तर गोल प्रा., दुर्गाष्टमी, C
- C होलाष्टक, दादुदयाल ज., अष्टान्हिका प्रा. (जैन)
- भ. 28।53 से,
- भ. 17।19 तक, आमलकी 11 व्रत (सर्वे.), मेला श्रीश्याम जी D
- गोविन्द द्वादशी, मेला श्याम जी पूर्ण, प्रदोष व्रत
- E होलिकादहन, होलाष्टक पूर्ण F धुलैण्डी, करिदिनं
- भ. 16।28 से 27।48 तक, रेवती में मंगल 8।19, पूर्णिमा व्रतं, E
- सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्यं, श्रीचैतन्य महाप्रभु ज., छारेड़ी देशाचारे, F

A 13।20 तक, मीनेऽर्कः 16।57, पं. लेखाराम वीर तृतीया, मीन मलमासारंभः D 2 दिन का, श्रीरामचरण स्नेही फूलडोल, मेला शाहपुरा (मेवाड़)

फाल्गुन शु. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 20 मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	2	11	10	1	11	6	6	0	11	10	8
5	8	11	11	15	3	16	25	25	13	9	17
29	26	56	49	58	17	45	25	25	55	46	23
51	35	55	3	2	42	51	1	1	4	21	37
59	709	46	9	8	74	2	3	3	3	2	0
39	48	25	38	24	42	47	11	11	24	6	45
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
पूभा. 1	आर्द्रा 1	उभा. 3	शत. 2	रोहि. 2	पूभा. 4	स्वा. 4	विशा. 2	भर. 4	उभा. 4	शत. 1	पूषा. 2

1 के., 11 बु., सू., ने., 2 गु., मं.12, शु. ह., 9 प्लू., 10, 3 चं., 6, 4, 8, 7, 5, श. रा.

[पक्ष फलम्]

यह पक्ष प्रतिपदा मंगलवार से पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र शुभ योग तिथौ से शुभारंभ होकर पूर्णिमा बुधवार उ०फा० नक्षत्र की गणना तक चलेगा। यह पक्ष सोलह दिनों का होना, शुभ दायक वृद्धि कारक है। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती महंगाई पर नियंत्रण का प्रतीक बनेगा। उ०भा० रवि संक्रमण से पीत व श्वेत रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी का झटका। इस माह में मीन राशि पर भुवन भास्कर सूर्यदेव फाल्गुन सुदी 3 को सायं 16:57 पर प्रवेश करेंगे। प्रौढ़ावस्था बैठी 30 मुहूर्त्ती संक्रांति धान्य भावों में समभाव, न तेजी, न मंदी का योग बनाता है। गुरुवारी संक्रांति पीले रंग की वस्तुओं को तेजी का अच्छा लाभ दिलायेगी। यानि सोना तेज रहेगा। लेकिन जेहि माह कृष्ण पक्ष तिथि घटे, शुक्ल पक्ष में वृद्धि होय। एक वस्तु क्या तेज बिके, सभी महंगी हो जाय॥ गुरुवारी संक्रांति जब जब आये। सुखी प्रजा धन धान्य से चहुं ओर खुशी छाये॥ यानि जनता में सुखद योग का कारक सभी वस्तुएं समभाव चलने का योग बनता है। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से चना, उड़द, सरसों, तिल तैल, ऊनी वस्त्र, सोना, पीतल में मंदी का योग। चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। खेल सामग्री, इलायची, चाय, ग्वार, वनस्पति, चद्दर, सीमेन्ट तेज। मादक द्रव्य, अशाकाहारी भोजनादि के भाव तेजी के रुख में चलेंगे। आकाश लक्षण-मार्च 13, 16, 20, 22, 24, 27 को सिक्किम, भूटान, बंगलादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, पश्चिमी भू-भाग राजस्थान में ऋतु परिवर्तन के योग से मौसमी बीमारी का प्रभाव बढ़ेगा। दुर्घटनाओं का तांता लगा रहेगा। कहीं-कहीं अग्निकाण्ड भी होगा। शकुन विचार-पूरण जब उ०फा० रहे, पूनम फागुन मास। रस पदार्थ गुड़ खाण्ड तिल तिलहन धान्य विनाश॥ शुक्रास्त से धान्य भाव में तेजी। उदय होते ही मंदी है जी॥

ता. 27 मार्च ❖ फाल्गुन शु. 15 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

1 के., 11 बु., 12, ने., 2 गु., सू. मं., शु. ह., 9 प्लू., 10, 3, 6 चं., 4, 8, 5, 7 श.रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	5	11	10	1	11	6	6	0	11	10	8
12	7	17	15	17	12	16	25	25	14	10	17
26	20	20	14	0	0	24	2	2	18	0	28
17	57	42	0	26	9	11	46	46	58	41	1
59	818	46	42	9	74	3	3	3	3	2	0
23	26	08	09	17	34	19	11	11	25	00	32
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
उभा. 3	उफा. 4	रेवती 1	शत. 3	रोहि. 3	उभा. 3	स्वा. 3	विशा. 2	भर. 4	उभा. 4	शत. 2	पूषा. 2

चैत्र कृष्ण पक्षः- 26

श्री सं. 2069 शाके 1934

ता. 28 मार्च से 10 अप्रैल 2013 ई., राष्ट्रीय मिति 7 से 20 चैत्र तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः 5 घं. 30 मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
7	गु	1	17	6	13	8	ह	6	50	9	1	धु	19	9	13	57	कौ	17	6	13	8	30	45	6	17	18	35	15	15	28	तु. 20।22	11	13	25	38	59/21	19	48	6	34	वसंत प्रतिपदा, गणगौरी पूजानारंभ (राज.), मेला होला आनंदपुरा A
8	शु	2	11	44	10	58	चि	3/59	25/27	7/30	38/3	व्या	11	56	11	3	ग	11	44	10	58	30	50	6	16	18	36	16	16	29	तुला	11	14	24	57	19	20	51	7	17	भ. 21।48 से, संत तुकाराम ज., कल्पादि 3, गुड फ्राइडे
9	श	3	5	55	8	37	वि	55	19	28	22	ह	4/56	22/34	8/28	0/53	वि	5	55	8	37	30	54	6	15	18	36	17	17	30	वृ. 22।48	11	15	24	14	17	21	56	8	4	भ. 8।37 तक, रेवत्यां शुक्र: 23।36, कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा B
0	श	4	59	51	30	11	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	०	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय: A साहिब (पं.) B चौथ व्रत (राज.)
10	र	5	53	51	27	46	अनु	51	10	26	42	सि	48	50	25	46	कौ	26	52	16	58	30	58	6	14	18	37	18	18	31	वृश्चिक	11	16	23	29	15	22	59	8	56	रेवत्यां सूर्य: 12।11, रंग पंचमी, ईस्टर सण्डे
11	चं	6	48	2	25	25	ज्ये	47	12	25	5	व्य	41	14	22	42	ग	20	56	14	35	31	2	6	13	18	38	19	19	A1	ध. 25।05	11	17	22	42	13	23	59	9	52	भ. 25।25 से, व्यतिपात पुण्यं, अप्रैल मास 4 ता. 30 प्रा., C
12	मं	7	42	31	23	12	मू	43	33	23	37	वरि	33	52	19	44	वि	15	15	12	18	31	7	6	11	18	38	20	20	2	धनु	11	18	21	54	12	-	-	10	52	भ. 12।18 तक E 15 दिन का प्रा. (करौली)
13	बु	8	37	27	21	9	पूषा	40	19	22	18	परि	26	51	16	55	बा	9	57	10	9	31	11	6	10	18	39	21	21	3	म. 28।00	11	19	21	4	10	24	55	11	54	शीतलाष्टमी, शीतला पूजन, मेला शीतला माता (कुराली), D
14	गु	9	32	54	19	19	उषा	37	37	21	12	शि	20	14	14	15	तै	5	7	8	12	31	15	6	9	18	39	22	22	4	मकर	11	20	20	12	8	25	46	12	57	श्री ऋषभदेव ज., मेला केशरिया (मेवाड़), वर्षी तप प्रा. (जैन)
15	शु	10	28	58	17	43	श्र	35	33	20	21	सि	14	9	11	48	ब	0	52	6	29	31	19	6	8	18	40	23	23	5	मकर	11	21	19	18	6	26	32	13	59	भ. 6।29 से 17।43 तक, दशामाता व्रत F व्रत (राज.)
16	श	11	25	46	16	25	ध	34	13	19	48	सा	8	36	9	33	बा	25	26	16	25	31	24	6	7	18	40	24	24	6	कुं. 8।02	11	22	18	23	5	27	13	14	59	पंचक 8।2 से, पापमोचनी 11 व्रत (सर्वे.), मेला कैला देवी E
17	र	12	23	24	15	27	श	33	44	19	35	शुभ	3/59	42/30	7/29	34/54	तै	23	24	15	27	31	28	6	6	18	41	25	25	7	कुम्भ	11	23	17	25	2	27	53	15	58	प्रदोष व्रतं, वारुणी योग 15।27 से 19।35 तक, सूरज रोटा F
18	चं	13	22	1	14	53	पूभा	34	14	19	46	ब्र	56	11	28	33	व	22	1	14	53	31	32	6	5	18	41	26	26	8	मी. 13।41	11	24	16	26	1	28	30	16	56	भ. 14।53 से 26।47 तक, मास शिवरात्री व्रत, रंग त्रयोदशी
19	मं	14	21	45	14	46	उभा	35	51	20	24	ऐं	53	48	27	35	श	21	45	14	46	31	36	6	4	18	42	27	27	9	मीन	11	25	15	25	58/59	29	6	17	53	मीने बुध: 25।57, मेला पृथुदक पिहोवा (हरि.)
20	बु	30	22	43	15	8	रे	38	41	21	31	वै	52	25	27	1	ना	22	43	15	8	31	40	6	2	18	43	28	28	10	मे. 21।31	11	26	14	23	58	29	43	18	49	पंचक 21।31 तक, अश्विन्यां मेषे शुक्र: 17।32, देवपितृकार्य G

G अमावस्या, मनवादि 30, चान्द्रसंवत्सर 2069 पूर्ण।

C पूभायां बुध: 15।12, एकनाथ 6, मूर्ख दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस D बासौड़ा (ठंडा वासी भोजन), कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध

चैत्र कृ. 8 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. 3 अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	8	11	10	1	11	6	6	0	11	10	8
19	16	22	21	18	20	15	24	24	14	10	17
21	48	42	40	8	41	59	40	40	42	14	30
4	15	29	39	34	48	4	31	31	56	12	54
59	851	45	63	10	74	3	3	3	3	1	0
10	14	51	51	4	29	46	11	11	25	52	19
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
रेवती 1	पूभा. 2	रेवती 2	पूभा. 1	रोहि. 3	रेवती 2	चित्रा 3	विशा. 2	भरणी 4	उ.भा. 4	श्रवि. 2	पूषा. 2

के. 1
12 सू.
11 बु. ने.
2 गु.
मं.
शु. ह.
9 चं. प्लू.
10
3
6
4
8
5
7 श.रा.

[पक्ष फलम्]
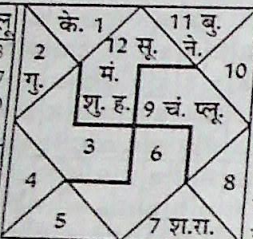
यह पक्ष गुरुवार प्रतिपदा से हस्त नक्षत्र के योग से अमावस्या बुधवार रेवती नक्षत्र गणना तक रहेगा। पक्ष में कृष्णा अष्टमी को बुधवार होने से अल्प वर्षा योग बनता है। अमावस्या रेवती के योग से सुभिक्ष और सुखद योग बनेगा। शुक्र का रेवती में भ्रमण होने से पथिकों को पीड़ा दायक रहेगा। पूर्वा भाद्रपद में बुध के योग से कहीं-कहीं दुर्भिक्ष, भूख-बाधा, घृणा से विवाद तथा क्रांतिकारी योग बनेंगे। अश्विनी में शुक्र ग्रहादि योग से ब्राह्मणों का विरोध यानि दैत्य गुरु का प्रभाव बढ़ेगा। घोड़ों, भैसों, ऊंटों के लिए शुक्र रोग कारक रहेगा। जौ, तिल, उड़द की पैदावार कम होगी। चतुर्थी तिथौ क्षय **चैत्र बदी शनिवार। व्यापारी चिन्ता करे, माल न मिले सिरधार॥ मंगल-सूर्य-शुक्र युक्ति मीन राशि में होय। शासक वर्ग चिन्तित रहे, कहीं गुप्त भेद न खुल जोय॥** राजनीति में गति आलस्यात्मक प्रवृति की बनेगी। व्यापार भविष्य-ग्रहचाल से सोना, चांदी, गुड़, तिल तैल, अलसी में तेजी आकर दो दिन बाद मंदी। ज्वार, ग्वार, बाजरा, मोंठ, मूंग में तेजी का झटका लगेगा। चावल, शक्कर, चना में मंदी का योग। अरहर, सरसों, तारामीरा, राई में मंदी का योग बनेगा। उठापटक व्यापार चलेगा। **आकाश लक्षण**-ता. 28, 29 व 30 मार्च तथा 3, 7, 8, 9 अप्रैल को पूर्वी आसाम, भूटान, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू कश्मीर, पश्चिमी राजस्थान तथा दमन द्वीप में बूंदा-बांदी या भू-चाल का योग बनेगा। तेज हवा से मौसम में अचानक परिवर्तन भी होगा। **शकुन विचार**-चैत्र बदी तीज को, वायु उत्तर पूर्व। वर्ष आगामी अच्छा, फले कोष अपूर्व॥ चैत्र बदी तिथि घटे, सर्दी में बढ़ जाय। होय सुभिक्ष सुकाल सब...

ता. 10 अप्रैल ❖ चैत्र कृ. 30 बुध प्रातः 5 घं. 30 मि. के ग्रह स्पष्ट

के. 1
12 सू. ह.
11 ने.
2 गु.
चं. मं.
बु. शु.
9 प्लू.
10
3
6
4
8
5
7 श.रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
11	11	11	11	1	11	6	6	0	11	10	8
26	21	28	0	19	29	15	24	24	15	10	17
14	31	2	11	21	22	31	18	18	6	26	32
23	36	13	49	53	41	7	16	16	45	47	16
58	773	45	79	10	74	4	3	3	3	1	0
58	52	33	18	46	22	8	11	11	23	44	6
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
रेवती 3	रेवती 2	रेवती 4	पूभा. 4	रोहि. 3	रेवती 4	स्वा. 3	विशा. 2	भर. 4	उ.भा. 4	श्रवि. 2	पूषा. 2

ऋतु का आरंभ हो जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में

एक सामान्य अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में खगोल ज्ञान के साथ भौगोलिक जानकारी परमावश्यक है। ग्रहों का देशान्तरीय भेद से उदयास्त, ग्रहणादि का स्थानीय दृश्य काल एवं उसका मान तथा पृथ्वी पर दिखाई देने वाली खगोलीय चमत्कृति का सूक्ष्म समय काल जानने के लिये अक्षांश रेखांशादि भेदिक परिवर्तन समय हेतु भौगोलिक ज्ञान का विशेष महत्व होता है। उत्तर दक्षिण गोलार्द्ध, भूमध्य रेखा, कर्क मकर वृत्त, अक्षांश व रेखांशादि की जानकारी आवश्यक है जिसका सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

अक्षांश व उसका अभिप्राय:- पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा "भू मध्य रेखा" कहलाती है। यहां पर अक्षांश (0) शून्य होता है। इसके उत्तर विभाग को "उत्तर गोल" व दक्षिणी विभाग को "दक्षिण गोल" कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर विभाग (उत्तर गोल) में ९० एवं दक्षिण विभाग (दक्षिण गोल) में भी ९० अक्षांश होते हैं।

यह "श्री आर्य भट्ट पंचांगम्" दिल्ली के स्थानीय समय काल हेतु आधारित किया गया है। भौगोलिक स्थित्यानुसार दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर है। भू मध्य रेखा से उत्तर गोल में दिल्ली नगर २८ व २९ अक्षांश के बीच में है। प्रत्येक अक्षांश को ६० भाग में विभाजित किया गया है जिसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर स्थित है।

एक अक्षांश की दूरी ७५ मील होती है। पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अण्डाकार वस्तु को लंबाई में अर्थात् उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटेंगे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित भाग पर आयेगा। इसलिए पृथ्वी के इसी मध्य भाग को भू मध्य रेखा कहा जाता है। भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर है इससे दक्षिण में ९० अक्षांश है जो दक्षिणी अक्षांश होते हैं। और इसी प्रकार भू मध्य रेखा (0) शून्य से उत्तर में ९० अक्षांश उत्तरी अक्षांश कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा अथवा घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है और घूमते हुए एक अण्डाकार गोल परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते हुए वह अपने केन्द्र स्थान की ओर थोड़ा झुका हुआ रहता है। इसी तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसी बदले झुकाव के कारण ही सूर्य "उत्तरायण" तथा "दक्षिणायन" होता प्रतीत होता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया गया है परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में आधार हीन अधर में ही घूमती है।

ता. २१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात प्रथम राशि में प्रवेश करता है उस समय पृथ्वी का भू मध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है जहां रवि की क्रांति शून्य होती है। पृथ्वी पर उस समय दिन रात बराबर होते हैं। इस दिन के बाद से सूर्य उत्तर गोल में चलता है और रवि की उत्तर क्रांति प्रति दिन बढ़ती है। ता. २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है अर्थात् सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और रवि क्रांति अपनी चरम सीमा २३अंश हो जाती है। आकाशी क्रांति पथ के साथ पृथ्वी का क्रांति पथ २३.५ अंश का कोण होता है। उस समय दिन का माम अधिक व रात्री का मान न्यून होता है। विश्व का मानचित्र देखें कि भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर भारत से दक्षिण में लम्बी दूरी पर दूर समुन्द्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब इस रेखा पर आता है तो भारत का मध्य भाग सूर्य के सीधे प्रभाव में होने से वहां पर अधिकतम गर्मी की ऋतु का पूर्ण आभास होता है। ता. २१ जून को सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो जाता है। इसे ही "दक्षिणायन" कहते हैं। जो ता. २१ सितम्बर तक दक्षिणावृत्ति से पुन: भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर पहुंच जाता है तथा उसकी उत्तर क्रांति भी क्रमश: कम होकर शून्य हो जाती है और दिन रात बराबर होते हैं। इसके बाद सूर्य दक्षिणावृत्ति से ही चलता है परन्तु ता. २१ सितम्बर तक तो सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में ही ऋतु का आरंभ हो जाता है।

सूर्य निरन्तर दक्षिणायन रहकर दक्षिणी गोलार्द्ध में अग्रसर होता है। जो ता. २१ दिसम्बर को मकर रेखा पर पहुंच जाता है तथा सूर्य की दक्षिण क्रांति अपनी चरम सीमा पर होती है। ता. २१-२२ दिसम्बर को दिन का मान छोटा व रात्री का मान बड़ा होता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) भारत से बहुत दूर हिन्द महासागर के उपर से दक्षिणी अमेरिका के मध्य भाग, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है तो उस समय इन सभी देशो में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूरी होने के कारण यहां मौसम अत्यधिक ठण्डा होता है। ता. २१ दिसम्बर के बाद से सूर्य उत्तर की ओर चलनारंभ होता है। इसे ही "उत्तरायण" कहते हैं।

(**नोट:-** सूर्य आकाश में स्थिर है परंतु पृथ्वी की गति में क्रांति के परिवर्तन होने पर वह इस प्रकार परिवर्तन करता प्रतीत होता है तो प्रचलित बोल चाल तथा लिखने की भाषा में सूर्य चल रहा है यही कहा जाता है।)

ता. २१-२२ दिसंबर से सूर्य उत्तरावृत्ति से पुन: ता. २१ मार्च को दक्षिणी गोलार्द्ध की यात्रा करते हुए भू मध्य रेखा (शून्य अक्षांश) पर आता है। इस दिन रवि की दक्षिण क्रांति भी शून्य होती है। इस दिन सूर्य उत्तरावृत्ति से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है।

अत: सूर्य की स्थिति ता. २१ मार्च से २१ सितंबर तक उत्तर गोल में और ता. २१ सितम्बर से ता. २१ मार्च तक दक्षिण गोल में होती है। ता. २१ दिसंबर से ता. २१ जून तक सूर्य उत्तरायण एवं ता. २१ जून से ता. २१ दिसंबर तक दक्षिणायन होता है।

सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूर्व पश्चिम क्षितिज पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखकर अथवा ऊपर आकाश में सूर्य भ्रमण पर ध्यान देकर या घर में आने वाली धूप की किरणों के बदलते कोण देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायन होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रति दिन जो अंतर आता है उसे चरांतर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रांति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरांतर सारणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है। और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरांतर सारणी पृष्ठ संख्या ९६ तथा रवि क्रांति सारणी इस पंचांग के पृष्ठ संख्या ९५ पर दी हुई है।

रेखांश व उसकी उपयोगिता- जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अक्षांशों में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार इसको पूर्व-पश्चिम ३६० रेखांशों में विभाजित किया गया है। जिस प्रकार उत्तर व दक्षिण का विभाजन करने के लिए भू मध्य रेखा को (0) शून्य अक्षांश माना गया है। उसी प्रकार पूर्व व पश्चिम का विभाजन करने के लिए मध्यमान होना आवश्यक है और इसके लिए कोई भी रेखा को (0) शून्य रेखांश माना जा सकता है। पहले कभी भारत के उज्जैन नगर को शून्य रेखांश के लिए सम्मान प्राप्त था परन्तु वर्तमान में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला के कारण लंदन के पास ग्रीनविच को यह महत्व दिया गया है। ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे (0) शून्य रेखांश मान कर पूर्व के रेखांशों के पूर्व रेखांश व पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है।

पृथ्वी की परिधि भू मध्य रेखा पर २९४०० मील है। अत: भू मध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी ७० मील होती है। पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात ३६० रेखांश २४ घण्टे में सूर्य के सामने से गुजरते हैं। तदनुसार एक रेखांश अंतर चार मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। उदाहरणार्थ माना कि दिल्ली में सूर्योदय ६।३० बजे हुआ है और दिल्ली का रेखांश ७७।१३ पूर्व है तो ७८।१३ पूर्व रेखांश पर स्थित नगर का सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा अथवा पूर्व रेखांश ७६।१३ हो तो ४ मिनट दिल्ली के बाद होगा। इसी प्रकार प्रति रेखांश में ४ मिनट कम अथवा अधिक रेखांशानुसार होगा। यदि रेखांश कम होंगे तो सूर्योदय बाद में तथा रेखांश अधिक होने पर पहले होगा।

प्राचीन काल में प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण धूप घड़ियों ,जल घड़ियों अथवा शंकु छायादि उपकरणों की सहायता से मध्यान्ह और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे।

सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाइम (मानक समय) रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टे आगे था और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितंबर १९१७ से लागू कर दिया गया परंतु बंगाल प्रांत और आस-पास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रांतों ने सितंबर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाइम को व्यवहार में लाना आरंभ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितंबर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में (जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे) समय १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात ग्रीनविच समय से ६.३० घण्टा आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टा आगे है और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो काम-काज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से संपादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है। उसका समय उतने ही अंतर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अंतर होता है। अत: १५ रेखांश पर १ घण्टे का अंतर हुआ। जो ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टे के अंतर पर निर्धारित है। हौलेण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, हंगरी, यूगोस्लाविया, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टा आगे है। मिस्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराईल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय २ घण्टे आगे है। ये देश २ घण्टे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, ईथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घण्टे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४.३० घण्टे तथा पाकिस्तान ५ घण्टे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घण्टे तथा बर्मा ६.३० घण्टे आगे है। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घण्टे के क्षेत्र में हैं। चीन, हौंगकोंग, फिलिपिन्स ८ घण्टे तथा कोरिया व जापान ९ घण्टे के अंतर पर है। आस्ट्रेलिया १० घण्टे और न्यूजीलैण्ड १२ घण्टे के अंतर पर है। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है। उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टोरंटो, ओटावा, बॉस्टन आदि नगर ५ घण्टे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घण्टे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लॉसएन्जिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घण्टे कम है। किसी भी एटलस में दुनियां का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमाएं लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घण्टे के समय क्षेत्र में रखा गया है। और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगला देश को ६ घण्टे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५.३० घण्टा समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि १ रेखांश पर ४ मिनट का अंतर आता है तो ५.३० घण्टे का अंतर ८२।३० रेखांश पर ही आता है। भारत में ८२।३० रेखांश इलाहाबाद, अयोध्या के आस-पास उत्तर से दक्षिण काकीनाड़ा, मच्छलीपटनम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है परंतु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है। तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है। जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है ८५।१३ है जो ८२।३० से २।४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय १० मिनट ५२ सैकेण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारणी इस पंचांग में पृष्ठ ९७ पर दी गई है। इसमें मुख्य-मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अंतर तथा दिल्ली के समय से देशांतर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांश आदि सारणी में यह नाम नहीं हैं। मानचित्र में यह धौलपुर और ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर हैं अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है यह स्थान मानचित्र में धौलपुर व ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सेन्टीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नाप कर उनके अक्षांश रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है।

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन एवं उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्नका समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक केअक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है। घं.मि.

सारिणी से प्राप्त १५ जु. को वृश्चि. समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया (१३।४८ मि. आधे से अधिक होने से १४ लिये)	+०।१४
मध्यम लग्न समाप्त	=१७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने १७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान +–	—०।१७
अतः नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल	१७।११

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सै. एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान कोगुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारंभ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

अ/लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	−१५	−३२	−४१	−३६	−२३	−४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	−१५	−३०	−३९	−३५	−२२	−४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	−१४	−२९	−३७	−३३	−२१	−४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	−१४	−२८	−३५	−३१	−२०	−४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	−१३	−२६	−३३	−३०	−१९	−४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	−१२	−२५	−३२	−२८	−१८	−३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	−१२	−२३	−३०	−२७	−१७	−३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	−११	−२२	−२८	−२५	−१६	−३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	−१०	−२१	−२६	−२३	−१५	−३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	−९	−१९	−२४	−२१	−१४	−३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	−९	−१८	−२३	−२०	−१३	−२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	−८	−१६	−२१	−१८	−१२	−२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	−७	−१५	−१९	−१६	−११	−२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	−६	−१३	−१७	−१४	−१०	−२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	−५	−१२	−१५	−१२	−९	−२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	−५	−१०	−१२	−१०	−७	−१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	−४	−८	−१०	−८	−६	−१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	−३	−६	−८	−६	−५	−१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	−२	−५	−६	−५	−४	−१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	−१	−३	−४	−३	−३	−१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	−१	−१	−१	−१	−१	०	+१
२९	०	−१	−१	−१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	−२	−३	−३	−२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	−१
३१	−४	−६	−५	−३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	−२
३२	−६	−८	−८	−५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	−३
३३	−८	−११	−१०	−६	−१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	−४
३४	−१०	−१३	−१३	−८	−१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	−५
३५	−१२	−१६	−१५	−९	−१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	−६

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

पंचांग में दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल की तालिका प्रति मासिक दी गई है। उनमें पृथ्वी की अयनगति वश प्रति वर्ष परिवर्तन होता है। इसलिए लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल जानने के लिए वार्षिक संस्कार देकर शुद्ध करे लें। अतः वार्षिक लग्नों में संस्कारार्थ तालिका दी जा रही है।

जिन वर्षों में तिथ्याधिक वर्ष हो अर्थात् २९ दिनों का फरवरी मास होता है। (यह प्रति चार से आता है।) इन वर्षों की तालिका में दो बार पंक्तियां दी गई। जिसके सन् के आगे फ.प. लगाया गया है। इसका अभिप्राय है कि १ जनवरी से २८ फरवरी तक इस पंक्ति के संस्कारों को काम में लें तथा उसी सन् को लिखकर आगे फ.बा. लगाया गया है। इन संस्कारों का उपयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक करें।

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

सन्\राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२००० फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००० फप	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४ फप	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८फप.	−१	−१	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	−१
२००९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२ फप	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	−१

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८ १५	८ ५३ १०	१० २८ १५	१२ २३ ३७	१४ ३८ ०८	१६ ५८ २७	१९ १५ ४६	२१ ३२ ०३	२३ ५१ ३१	२ १४ ०५	४ १८ १५	६ ०० ४३
२	७ २४ १९	८ ४९ १४	१० २४ २०	१२ १९ ४१	१४ ३४ १२	१६ ५४ ३१	१९ ११ ५०	२१ २८ ०७	२३ ४७ ३५	२ १० ०९	४ १४ १९	५ ५६ ४७
३	७ २० २३	८ ४५ १८	१० २० २४	१२ १५ ४५	१४ ३० १६	१६ ५० ३६	१९ ०७ ५५	२१ २४ १२	२३ ४३ ४०	२ ०६ १३	४ १० २३	५ ५२ ५२
४	७ १६ २७	८ ४२ २३	१० १६ २८	१२ ११ ४९	१४ २६ २०	१६ ४६ ४०	१९ ०३ ५९	२१ २० १६	२३ ३९ ४४	२ ०२ १७	४ ०६ २७	५ ४८ ५६
५	७ १२ ३२	८ ३७ २७	१० १२ ३२	१२ ०७ ५४	१४ २२ २४	१६ ४२ ४४	१९ ०० ०३	२१ १६ २०	२३ ३५ ४८	१ ५८ २१	४ ०२ ३१	५ ४५ ००
६	७ ०८ ३६	८ ३३ ३१	१० ०८ ३६	१२ ०३ ५८	१४ १८ २८	१६ ३८ ४८	१८ ५६ ०७	२१ १२ २४	२३ ३१ ५२	१ ५४ २५	३ ५८ ३६	५ ४१ ०४
७	७ ०४ ४०	८ २९ ३५	१० ०४ ४०	१२ ०० ०२	१४ १४ ३२	१६ ३४ ५२	१८ ५२ ११	२१ ०८ २८	२३ २७ ५६	१ ५० २९	३ ५४ ४०	५ ३७ ०८
८	७ ०० ४४	८ २५ ३९	१० ०० ४४	११ ५६ ०६	१४ १० ३६	१६ ३० ५६	१८ ४८ १५	२१ ०४ ३२	२३ २४ ००	१ ४६ ३४	३ ५० ४४	५ ३३ १२
९	६ ५६ ४८	८ २१ ४३	९ ५६ ४८	११ ५२ १०	१४ ०६ ४०	१६ २७ ००	१८ ४४ १९	२१ ०० ३६	२३ २० ०४	१ ४२ ३८	३ ४६ ४८	५ २९ १६
१०	६ ५२ ५२	८ १७ ४७	९ ५२ ५२	११ ४८ १४	१४ ०२ ४४	१६ २३ ०४	१८ ४० २३	२० ५६ ४०	२३ १६ ०८	१ ३८ ४२	३ ४२ ५२	५ २५ २०
११	६ ४८ ५६	८ १३ ५१	९ ४८ ५६	११ ४४ १८	१३ ५८ ४९	१६ १९ ०८	१८ ३६ २७	२० ५२ ४४	२३ १२ १२	१ ३४ ४६	३ ३८ ५६	५ २१ २४
१२	६ ४५ ००	८ ०९ ५५	९ ४५ ०१	११ ४० २२	१३ ५४ ५३	१६ १५ १२	१८ ३२ ३१	२० ४८ ४८	२३ ०८ १६	१ ३० ५०	३ ३५ ००	५ १७ २८
१३	६ ४१ ०४	८ ०५ ५९	९ ४१ ०५	११ ३६ २६	१३ ५० ५७	१६ ११ १७	१८ २८ ३६	२० ४४ ५३	२३ ०४ २१	१ २६ ५४	३ ३१ ०४	५ १३ ३२
१४	६ ३७ ०८	८ ०२ ०४	९ ३७ ०९	११ ३२ ३०	१३ ४७ ०१	१६ ०७ २१	१८ २४ ४०	२० ४० ५७	२३ ०० २५	१ २२ ५८	३ २७ ०८	५ ०९ ३७
१५	६ ३३ १२	७ ५८ ०८	९ ३३ १३	११ २८ ३५	१३ ४३ ०५	१६ ०३ २५	१८ २० ४४	२० ३७ ०१	२२ ५६ २९	१ १९ ०२	३ २३ १२	५ ०५ ४१
१६	६ २९ १७	७ ५४ १२	९ २९ १७	११ २४ ३९	१३ ३९ ०९	१५ ५९ २९	१८ १६ ४८	२० ३३ ०५	२२ ५२ ३३	१ १५ ०६	३ १९ १७	५ ०१ ४५
१७	६ २५ २१	७ ५० १६	९ २५ २१	११ २० ४३	१३ ३५ १३	१५ ५५ ३३	१८ १२ ५२	२० २९ ०९	२२ ४८ ३७	१ ११ १०	३ १५ २१	४ ५७ ४९
१८	६ २१ २५	७ ४६ २०	९ २१ २५	११ १६ ४७	१३ ३१ १७	१५ ५१ ३७	१८ ०८ ५६	२० २५ १३	२२ ४४ ४१	१ ०७ १४	३ ११ २५	४ ५३ ५३
१९	६ १७ २९	७ ४२ २४	९ १७ २९	११ १२ ५१	१३ २७ २१	१५ ४७ ४१	१८ ०५ ००	२० २१ १७	२२ ४० ४५	१ ०३ १९	३ ०७ २९	४ ४९ ५७
२०	६ १३ ३३	७ ३८ २८	९ १३ ३३	११ ०८ ५५	१३ २३ २५	१५ ४३ ४५	१८ ०१ ०४	२० १७ २१	२२ ३६ ४९	० ५९ २३	३ ०३ ३३	४ ४६ ०१
२१	६ ०९ ३७	७ ३४ ३२	९ ०९ ३७	११ ०४ ५९	१३ १९ ३०	१५ ३९ ४९	१७ ५७ ०८	२० १३ २५	२२ ३२ ५३	० ५५ २७	२ ५९ ३७	४ ४२ ०५
२२	६ ०५ ४१	७ ३० ३६	९ ०५ ४१	११ ०१ ०३	१३ १५ ३४	१५ ३५ ५३	१७ ५३ १२	२० ०९ २९	२२ २८ ५७	० ५१ ३१	२ ५५ ४१	४ ३८ ०९
२३	६ ०१ ४५	७ २६ ४०	९ ०१ ४६	१० ५७ ०७	१३ ११ ३८	१५ ३१ ५८	१७ ४९ १७	२० ०५ ३४	२२ २५ ०२	० ४७ ३५	२ ५१ ४५	४ ३४ १३
२४	५ ५७ ४९	७ २२ ४४	८ ५७ ५०	१० ५३ ११	१३ ०७ ४२	१५ २८ ०२	१७ ४५ २१	२० ०१ ३८	२२ २१ ०६	० ४३ ३९	२ ४७ ४९	४ ३० १८
२५	५ ५३ ५३	७ १८ ४९	८ ५३ ५४	१० ४९ १६	१३ ०३ ४६	१५ २४ ०६	१७ ४१ २५	१९ ५७ ४२	२२ १७ १०	० ३९ ४३	२ ४३ ५३	४ २६ २२
२६	५ ४९ ५७	७ १४ ५३	८ ४९ ५८	१० ४५ २०	१२ ५९ ५०	१५ २० १०	१७ ३७ २९	१९ ५३ ४६	२२ १३ १४	० ३५ ४७	२ ३९ ५७	४ २२ २६
२७	५ ४६ ०२	७ १० ५७	८ ४६ ०२	१० ४१ २४	१२ ५५ ५४	१५ १६ १४	१७ ३३ ३३	१९ ४९ ५०	२२ ०९ १८	० ३१ ५१	२ ३६ ०२	४ १८ ३०
२८	५ ४२ ०६	७ ०७ ०१	८ ४२ ०६	१० ३७ २८	१२ ५१ ५८	१५ १२ १८	१७ २९ ३७	१९ ४५ ५४	२२ ०५ २२	० २७ ५५	२ ३२ ०६	४ १४ ३४
२९	५ ३८ १०	७ ०३ ०५	८ ३८ १०	१० ३३ ३२	१२ ४८ ०२	१५ ०८ २२	१७ २५ ४१	१९ ४१ ५८	२२ ०१ २६	० २० ०४	२ २८ १०	४ १० ३८
३०	५ ३४ १४	६ ५९ ०९	८ ३४ १४	१० २९ ३६	१२ ४४ ०६	१५ ०४ २६	१७ २१ ४५	१९ ३८ ०२	२१ ५७ ३०	० १६ ०८	२ २४ १४	४ ०६ ४२

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५१ १७	८ २६ २३	१० २१ ४४	१२ ३६ १५	१४ ५६ ३४	१७ १३ ५३	१९ ३० १०	२१ ४९ ३८	० ०८ १६	२ १६ २२	३ ५८ ५०	५ २६ २२
२	६ ४७ २१	८ २२ २७	१० १७ ४८	१२ ३२ १९	१४ ५२ ३९	१७ ०९ ५८	१९ २६ १५	२१ ४५ ४३	० ०४ २०	२ १२ २६	३ ५४ ५४	५ २२ २६
३	६ ४३ २५	८ १८ ३१	१० १३ ५२	१२ २८ २३	१४ ४८ ४३	१७ ०६ ०२	१९ २२ १९	२१ ४१ ४७	० ०० २४	२ ०८ ३०	३ ५० ५९	५ १८ ३०
४	६ ३९ ३०	८ १४ ३५	१० ०९ ५७	१२ २४ २७	१४ ४४ ४७	१७ ०२ ०६	१९ १८ २३	२१ ३७ ५१	२३ ५६ २८	२ ०४ ३४	३ ४७ ०३	५ १४ ३४
५	६ ३५ ३४	८ १० ३९	१० ०६ ०१	१२ २० ३१	१४ ४० ५१	१६ ५८ १०	१९ १४ २७	२१ ३३ ५५	२३ ५२ ३२	२ ०० ३८	३ ४३ ०७	५ १० ३८
६	६ ३१ ३८	८ ०६ ४३	१० ०२ ०५	१२ १६ ३५	१४ ३६ ५५	१६ ५४ १४	१९ १० ३१	२१ २९ ५९	२३ ४८ ३६	१ ५६ ४३	३ ३९ ११	५ ०६ ४३
७	६ २७ ४२	८ ०२ ४७	९ ५८ ०९	१२ १२ ३९	१४ ३२ ५९	१६ ५० १८	१९ ०६ ३५	२१ २६ ०३	२३ ४४ ४१	१ ५२ ४७	३ ३५ १५	५ ०२ ४७
८	६ २३ ४६	७ ५८ ५१	९ ५४ १३	१२ ०८ ४३	१४ २९ ०३	१६ ४६ २२	१९ ०२ ३९	२१ २२ ०७	२३ ४० ४५	१ ४८ ५१	३ ३१ १९	४ ५८ ५१
९	६ १९ ५०	७ ५४ ५५	९ ५० १७	१२ ०४ ४७	१४ २५ ०७	१६ ४२ २६	१८ ५८ ४३	२१ १८ ११	२३ ३६ ४९	१ ४४ ५५	३ २७ २३	४ ५४ ५५
१०	६ १५ ५४	७ ५० ५९	९ ४६ २१	१२ ०० ५२	१४ २१ ११	१६ ३८ ३०	१८ ५४ ४७	२१ १४ १५	२३ ३२ ५३	१ ४० ५९	३ २३ २७	४ ५० ५९
११	६ ११ ५८	७ ४७ ०३	९ ४२ २५	११ ५६ ५६	१४ १७ १५	१६ ३४ ३४	१८ ५० ५१	२१ १० १९	२३ २८ ५७	१ ३७ ०३	३ १९ ३१	४ ४७ ०३
१२	६ ०८ ०२	७ ४३ ०८	९ ३८ २९	११ ५३ ००	१४ १३ २०	१६ ३० ३९	१८ ४६ ५६	२१ ०६ २४	२३ २५ ०१	१ ३३ ०७	३ १५ ३५	४ ४३ ०७
१३	६ ०४ ०६	७ ३९ १२	९ ३४ ३३	११ ४९ ०४	१४ ०९ २४	१६ २६ ४३	१८ ४३ ००	२१ ०२ २८	२३ २१ ०५	१ २९ ११	३ ११ ३९	४ ३९ ११
१४	६ ०० ११	७ ३५ १६	९ ३० ३८	११ ४५ ०८	१४ ०५ २८	१६ २२ ४७	१८ ३९ ०४	२० ५८ ३२	२३ १७ ०९	१ २५ १५	३ ०७ ४४	४ ३५ १५
१५	५ ५६ १५	७ ३१ २०	९ २६ ४२	११ ४१ १२	१४ ०१ ३२	१६ १८ ५१	१८ ३५ ०८	२० ५४ ३६	२३ १३ १३	१ २१ १९	३ ०३ ४८	४ ३१ १९
१६	५ ५२ १९	७ २७ २४	९ २२ ४६	११ ३७ १६	१३ ५७ ३६	१६ १४ ५५	१८ ३१ १२	२० ५० ४०	२३ ०९ १७	१ १७ २४	२ ५९ ५२	४ २७ २४
१७	५ ४८ २३	७ २३ २८	९ १८ ५०	११ ३३ २०	१३ ५३ ४०	१६ १० ५९	१८ २७ १६	२० ४६ ४४	२३ ०५ २२	१ १३ २८	२ ५५ ५६	४ २३ २८
१८	५ ४४ २७	७ १९ ३२	९ १४ ५४	११ २९ २४	१३ ४९ ४४	१६ ०७ ०३	१८ २३ २०	२० ४२ ४८	२३ ०१ २६	१ ०९ ३२	२ ५२ ००	४ १९ ३२
१९	५ ४० ३१	७ १५ ३६	९ १० ५८	११ २५ २८	१३ ४५ ४८	१६ ०३ ०७	१८ १९ २४	२० ३८ ५२	२२ ५७ ३०	१ ०५ ३६	२ ४८ ०४	४ १५ ३६
२०	५ ३६ ३५	७ ११ ४०	९ ०७ ०२	११ २१ ३३	१३ ४१ ५२	१५ ५९ ११	१८ १५ २८	२० ३४ ५६	२२ ५३ ३४	१ ०१ ४०	२ ४४ ०८	४ ११ ४०
२१	५ ३२ ३९	७ ०७ ४४	९ ०३ ०६	११ १७ ३७	१३ ३७ ५६	१५ ५५ १५	१८ ११ ३२	२० ३१ ००	२२ ४९ ३८	० ५७ ४४	२ ४० १२	४ ०७ ४४
२२	५ २८ ४३	७ ०३ ४९	८ ५९ १०	११ १३ ४१	१३ ३४ ०१	१५ ५१ २०	१८ ०७ ३७	२० २७ ०४	२२ ४५ ४२	० ५३ ४८	२ ३६ १६	४ ०३ ४८
२३	५ २४ ४७	६ ५९ ५३	८ ५५ १४	११ ०९ ४५	१३ ३० ०५	१५ ४७ २४	१८ ०३ ४१	२० २३ ०९	२२ ४१ ४६	० ४९ ५२	२ ३२ २०	३ ५९ ५२
२४	५ २० ५१	६ ५५ ५७	८ ५१ १८	११ ०५ ४९	१३ २६ ०९	१५ ४३ २८	१७ ५९ ४५	२० १९ १३	२२ ३७ ५०	० ४५ ५६	२ २८ २४	३ ५५ ५६
२५	५ १६ ५६	६ ५२ ०१	८ ४७ २३	११ ०१ ५३	१३ २२ १३	१५ ३९ ३२	१७ ५५ ४९	२० १५ १७	२२ ३३ ५४	० ४२ ००	२ २४ २९	३ ५२ ००
२६	५ १३ ००	६ ४८ ०५	८ ४३ २७	१० ५७ ५७	१३ १८ १७	१५ ३५ ३६	१७ ५१ ५३	२० ११ २१	२२ २९ ५८	० ३८ ०५	२ २० ३३	३ ४८ ०४
२७	५ ०९ ०४	६ ४४ ०९	८ ३९ ३१	१० ५४ ०१	१३ १४ २१	१५ ३१ ४०	१७ ४७ ५७	२० ०७ २५	२२ २६ ०३	० ३४ ०९	२ १६ ३७	३ ४४ ०९
२८	५ ०५ ०८	६ ४० १३	८ ३५ ३५	१० ५० ०५	१३ १० २५	१५ २७ ४४	१७ ४४ ०१	२० ०३ २९	२२ २२ ०७	० ३० १३	२ १२ ४१	३ ४० १३
२९	५ ०१ १२	६ ३६ १७	८ ३१ ३९	१० ४६ ०९	१३ ०६ २९	१५ २३ ४८	१७ ४० ०५	१९ ५९ ३३	२२ १८ ११	० २६ १७	२ ०८ ४५	३ ३६ १७

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २८ २५	८ २३ ४७	१० ३८ १८	१२ ५८ ३८	१५ १५ ५७	१७ ३२ १३	१९ ५१ ४२	२२ १० १९	० १४ २१	२ ०० ५३	३ २८ २५	४ ५३ २०
२	६ २४ ३०	८ १९ ५१	१० ३४ २२	१२ ५४ ४२	१५ ११ ०१	१७ २८ १८	१९ ४७ ४६	२२ ०६ २३	० १० ३३	१ ५६ ५७	३ २४ २९	४ ४९ २४
३	६ २० [illegible]	८ १५ ५५	१० ३० २६	१२ ५० ४६	१५ ०८ ०५	१७ २४ २२	१९ ४३ ५०	२२ ०२ २७	० ०६ ३७	१ ५३ ०१	३ २० ३३	४ ४५ २८
४	६ १६ ३८	८ १२ ००	१० २६ ३०	१२ ४६ ५०	१५ ०४ ०९	१७ २० २६	१९ ३९ ५४	२१ ५८ ३१	० ०२ ४१	१ ४९ ०६	३ १६ ३७	४ ४१ ३२
५	६ १२ ४२	८ ०८ ०४	१० २२ ३४	१२ ४२ ५४	१५ ०० १३	१७ १६ ३०	१९ ३५ ५८	२१ ५४ ३५	२३ ५८ ४६	१ ४५ १०	३ १२ ४१	४ ३७ ३७
६	६ ०८ ४६	८ ०४ ०८	१० १८ ३८	१२ ३८ ५८	१४ ५६ १७	१७ १२ ३४	१९ ३२ ०२	२१ ५० ३९	२३ ५४ ५०	१ ४१ १४	३ ०८ ४५	४ ३३ ४१
७	६ ०४ ५०	८ ०० १२	१० १४ ४२	१२ ३५ ०२	१४ ५२ २१	१७ ०८ ३८	१९ २८ ०६	२१ ४६ ४४	२३ ५० ५४	१ ३७ १८	३ ०४ ५०	४ २९ ४५
८	६ ०० ५४	७ ५६ १६	१० १० ४६	१२ ३१ ०६	१४ ४८ २५	१७ ०४ ४२	१९ २४ १०	२१ ४२ ४८	२३ ४६ ५८	१ ३३ २२	३ ०० ५४	४ २५ ४९
९	५ ५६ ५८	७ ५२ २०	१० ०६ ५०	१२ २७ १०	१४ ४४ २९	१७ ०० ४६	१९ २० १४	२१ ३८ ५२	२३ ४३ ०२	१ २९ २६	२ ५६ ५८	४ २१ ५३
१०	५ ५३ ०२	७ ४८ २४	१० ०२ ५५	१२ २३ १६	१४ ४० ३३	१६ ५६ ५०	१९ १६ १८	२१ ३४ ५६	२३ ३९ ०६	१ २५ ३०	२ ५३ ०२	४ १७ ५७
११	५ ४९ ०६	७ ४४ २८	९ ५८ ५९	१२ १९ १९	१४ ३६ ३८	१६ ५२ ५४	१९ १२ २२	२१ ३१ ००	२३ ३५ १०	१ २१ ३४	२ ४९ ०६	४ १४ ०१
१२	५ ४५ ११	७ ४० ३२	९ ५५ ०३	१२ १५ २३	१४ ३२ ४२	१६ ४८ ५९	१९ ०८ २७	२१ २७ ०४	२३ ३१ १४	१ १७ ३८	२ ४५ १०	४ १० ०५
१३	५ ४१ १५	७ ३६ ३६	९ ५१ ०७	१२ ११ २७	१४ २८ ४६	१६ ४५ ०३	१९ ०४ ३१	२१ २३ ०८	२३ २७ १८	१ १३ ४२	२ ४१ १४	४ ०६ ०९
१४	५ ३७ १९	७ ३२ ४१	९ ४७ ११	१२ ०७ ३१	१४ २४ ५०	१६ ४१ ०७	१९ ०० ३५	२१ १९ १२	२३ २३ २२	१ ०९ ४७	२ ३७ १८	४ ०२ १३
१५	५ ३३ २३	७ २८ ४५	९ ४३ १५	१२ ०३ ३५	१४ २० ५४	१६ ३७ ११	१८ ५६ ३९	२१ १५ १६	२३ १९ २७	१ ०५ ५१	२ ३३ २२	३ ५८ १८
१६	५ २९ २७	७ २४ ४९	९ ३९ १९	११ ५९ ३९	१४ १६ ५८	१६ ३३ १५	१८ ५२ ४३	२१ ११ २०	२३ १५ ३१	१ ०१ ५५	२ २९ २६	३ ५४ २२
१७	५ २५ ३१	७ २० ५३	९ ३५ २३	११ ५५ ४३	१४ १३ ०२	१६ २९ १९	१८ ४८ ४७	२१ ०७ २५	२३ ११ ३५	० ५७ ५९	२ २५ ३१	३ ५० २६
१८	५ २१ ३५	७ १६ ५७	९ ३१ २७	११ ५१ ४७	१४ ०९ ०६	१६ २५ २३	१८ ४४ ५१	२१ ०३ २९	२३ ०७ ३९	० ५४ ०३	२ २१ ३५	३ ४६ ३०
१९	५ १७ ३९	७ १३ ०१	९ २७ ३२	११ ४७ ५१	१४ ०५ १०	१६ २१ २७	१८ ४० ५५	२० ५९ ३३	२३ ०३ ४३	० ५० ०७	२ १७ ३९	३ ४२ ३४
२०	५ १३ ४३	७ ०९ ०५	९ २३ ३६	११ ४३ ५५	१४ ०१ १४	१६ १७ ३१	१८ ३६ ५९	२० ५५ ३७	२२ ५९ ४७	० ४६ ११	२ १३ ४३	३ ३८ ३८
२१	५ ०९ ४७	७ ०५ ०९	९ १९ ४०	११ ४० ००	१३ ५७ १९	१६ १३ ३५	१८ ३३ ०३	२० ५१ ४१	२२ ५५ ५१	० ४२ १५	२ ०९ ४७	३ ३४ ४२
२२	५ ०५ ५२	७ ०१ १३	९ १५ ४४	११ ३६ ०४	१३ ५३ २३	१६ ०९ ४०	१८ २९ ०८	२० ४७ ४५	२२ ५१ ५५	० ३८ १९	२ ०५ ५२	३ ३० ४६
२३	५ ०१ ५६	६ ५७ १७	९ ११ ४८	११ ३२ ०८	१३ ४९ २७	१६ ०५ ४४	१८ २५ १२	२० ४३ ४९	२२ ४७ ५९	० ३४ २३	२ ०१ ५५	३ २६ ५०
२४	४ ५८ ००	६ ५३ २२	९ ०७ ५२	११ २८ १२	१३ ४५ ३१	१६ ०१ ४८	१८ २१ १६	२० ३९ ५३	२२ ४४ ०३	० ३० २७	१ ५७ ५९	३ २२ ५४
२५	४ ५४ ०४	६ ४९ २६	९ ०३ ५६	११ २४ १६	१३ ४१ ३५	१५ ५७ ५२	१८ १७ २०	२० ३५ ५७	२२ ४० ०८	० २६ ३१	१ ५४ ०३	३ १८ ५९
२६	४ ५० ०८	६ ४५ ३०	९ ०० ००	११ २० २०	१३ ३७ ३९	१५ ५३ ५६	१८ १३ २४	२० ३२ ०२	२२ ३६ १२	० २२ ३६	१ ५० ०७	३ १५ ०३
२७	४ ४६ १२	६ ४१ ३४	८ ५६ ०४	११ १६ २४	१३ ३३ ४३	१५ ५० ००	१८ ०९ २८	२० २८ ०६	२२ ३२ १६	० १८ ४४	१ ४६ १२	३ ११ ०७
२८	४ ४२ १६	६ ३७ ३८	८ ५२ ०८	११ १२ २८	१३ २९ ४७	१५ ४६ ०४	१८ ०५ ३२	२० २४ १०	२२ २८ २०	० १० ४८	१ ४२ १६	३ ०७ ११
२९	४ ३८ २०	६ ३३ ४२	८ ४८ १३	११ ०८ ३२	१३ २५ ५१	१५ ४२ ०८	१८ ०१ ३६	२० २० १४	२२ २४ २४	० ०६ ५२	१ ३८ २०	३ ०३ १५
३०	४ ३४ २४	६ २९ ४६	८ ४४ १७	११ ०४ ३७	१३ २१ ५५	१५ ३८ १२	१७ ५७ ४०	२० १६ १८	२२ २० १८	० ०२ ५६	१ ३४ २४	२ ५९ १९
३१	४ ३० २८	६ २५ ५०	८ ४० २१	११ ०० ४१	१३ १८ ००	१५ ३४ १७	१७ ५३ ४५	२० १२ २२	२२ १६ ३२	२३ ५९ ००	१ ३० २८	२ ५५ २३

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ २१ ५४	८ ३६ २५	१० ५६ ४५	१३ १४ ०४	१५ ३० २१	१७ ४९ ४९	२० ०८ २६	२२ १२ ३६	२३ ५५ ०४	१ २६ ३२	२ ५१ २७	४ २६ ३३
२	६ १७ ५८	८ ३२ २९	१० ५२ ४९	१३ १० ०८	१५ २६ २५	१७ ४५ ५३	२० ०४ ३०	२२ ०८ ४०	२३ ५१ ०८	१ २२ ३६	२ ४७ ३१	४ २२ ३७
३	६ १४ ०३	८ २८ ३३	१० ४८ ५३	१३ ०६ १२	१५ २२ २९	१७ ४१ ५७	२० ०० ३४	२२ ०४ ४४	२३ ४७ १३	१ १८ ४०	२ ४३ ३५	४ १८ ४१
४	६ १० ०७	८ २४ ३७	१० ४४ ५७	१३ ०२ १६	१५ १८ ३३	१७ ३८ ०१	१९ ५६ ३८	२२ ०० ४९	२३ ४३ १७	१ १४ ४४	२ ३९ ४०	४ १४ ४५
५	६ ०६ ११	८ २० ४१	१० ४१ ०१	१२ ५८ २०	१५ १४ ३७	१७ ३४ ०५	१९ ५२ ४३	२१ ५६ ५३	२३ ३९ २१	१ १० ४८	२ ३५ ४४	४ १० ४९
६	६ ०२ १५	८ १६ ४५	१० ३७ ०५	१२ ५४ २४	१५ १० ४१	१७ ३० ०९	१९ ४८ ४७	२१ ५२ ५७	२३ ३५ २५	१ ०६ ५३	२ ३१ ४८	४ ०६ ५३
७	५ ५८ १९	८ १२ ४९	१० ३३ ०९	१२ ५० २८	१५ ०६ ४५	१७ २६ १३	१९ ४४ ५१	२१ ४९ ०१	२३ ३१ २९	१ ०२ ५७	२ २७ ५२	४ ०२ ५७
८	५ ५४ २३	८ ०८ ५४	१० २९ १३	१२ ४६ ३२	१५ ०२ ४९	१७ २२ १७	१९ ४० ५५	२१ ४५ ०५	२३ २७ ३३	० ५९ ०१	२ २३ ५६	३ ५९ ०१
९	५ ५० २७	८ ०४ ५८	१० २५ १८	१२ ४२ ३७	१४ ५८ ५४	१७ १८ २१	१९ ३६ ५९	२१ ४१ ०९	२३ २३ ३७	० ५५ ०५	२ २० ००	३ ५५ ०५
१०	५ ४६ ३१	८ ०१ ०२	१० २१ २२	१२ ३८ ४१	१४ ५४ ५८	१७ १४ २६	१९ ३३ ०३	२१ ३७ १३	२३ १९ ४१	० ५१ ०९	२ १६ ०४	३ ५१ ०९
११	५ ४२ ३५	७ ५७ ०६	१० १७ २६	१२ ३४ ४५	१४ ५१ ०२	१७ १० ३०	१९ २९ ०७	२१ ३३ १७	२३ १५ ४५	० ४७ १३	२ १२ ०८	३ ४७ १४
१२	५ ३८ ४०	७ ५३ १०	१० १३ ३०	१२ ३० ४९	१४ ४७ ०६	१७ ०६ ३४	१९ २५ ११	२१ २९ २१	२३ ११ ४९	० ४३ १७	२ ०८ १२	३ ४३ १८
१३	५ ३४ ४४	७ ४९ १४	१० ०९ ३४	१२ २६ ५३	१४ ४३ १०	१७ ०२ ३८	१९ २१ १५	२१ २५ २६	२३ ०७ ५४	० ३९ २१	२ ०४ १६	३ ३९ २२
१४	५ ३० ४८	७ ४५ १८	१० ०५ ३८	१२ २२ ५७	१४ ३९ १४	१६ ५८ ४२	१९ १७ २०	२१ २१ ३०	२३ ०३ ५८	० ३५ २५	२ ०० २१	३ ३५ २६
१५	५ २६ ५२	७ ४१ २२	१० ०१ ४२	१२ १९ ०१	१४ ३५ १८	१६ ५४ ४६	१९ १३ २४	२१ १७ ३४	२३ ०० ०२	० ३१ २९	१ ५६ २५	३ ३१ ३०
१६	५ २२ ५६	७ ३७ २६	९ ५७ ४६	१२ १५ ०५	१४ ३१ २२	१६ ५० ५०	१९ ०९ २८	२१ १३ ३८	२२ ५६ ०६	० २७ ३४	१ ५२ २९	३ २७ ३४
१७	५ १९ ००	७ ३३ ३१	९ ५३ ५०	१२ ११ ०९	१४ २७ २६	१६ ४६ ५४	१९ ०५ ३२	२१ ०९ ४२	२२ ५२ १०	० २३ ३८	१ ४८ ३३	३ २३ ३८
१८	५ १५ ०४	७ २९ ३५	९ ४९ ५४	१२ ०७ १३	१४ २३ ३०	१६ ४२ ५८	१९ ०१ ३६	२१ ०५ ४६	२२ ४८ १४	० १५ ४६	१ ४४ ३७	३ १९ ४२
१९	५ ११ ०८	७ २५ ३९	९ ४५ ५९	१२ ०३ १८	१४ १९ ३५	१६ ३९ ०३	१८ ५७ ४०	२१ ०१ ५०	२२ ४४ १८	० ११ ५०	१ ४० ४२	३ १५ ४६
२०	५ ०७ १२	७ २१ ४३	९ ४२ ०३	११ ५९ २२	१४ १५ ३९	१६ ३५ ०७	१८ ५३ ४४	२० ५७ ५४	२२ ४० २२	० ०७ ५४	१ ३६ ४५	३ ११ ५२
२१	५ ०३ १६	७ १७ ४७	९ ३८ ०७	११ ५५ २६	१४ ११ ४३	१६ ३१ ११	१८ ४९ ४८	२० ५३ ५८	२२ ३६ २६	० ०३ ५८	१ ३२ ४९	३ ०७ ५५
२२	४ ५९ २१	७ १३ ५१	९ ३४ ११	११ ५१ ३०	१४ ०७ ४७	१६ २७ १५	१८ ४५ ५२	२० ५० ०२	२२ ३२ ३१	० ०० ०२	१ २८ ५३	३ ०३ ५९
२३	४ ५५ २५	७ ०९ ५५	९ ३० १५	११ ४७ ३४	१४ ०३ ५१	१६ २३ १९	१८ ४१ ५६	२० ४६ ०७	२२ २८ ३५	२३ ५६ ०६	१ २४ ५७	३ ०० ०३
२४	४ ५१ २९	७ ०५ ५९	९ २६ १९	११ ४३ ३८	१३ ५९ ५५	१६ १९ २३	१८ ३८ ०१	२० ४२ ११	२२ २४ ३९	२३ ५२ १०	१ २१ ०२	२ ५६ ०७
२५	४ ४७ ३३	७ ०२ ०३	९ २२ २३	११ ३९ ४२	१३ ५५ ५९	१६ १५ २७	१८ ३४ ०५	२० ३८ १५	२२ २० ४३	२३ ४८ १५	१ १७ ०६	२ ५२ ११
२६	४ ४३ ३७	६ ५८ ०८	९ १८ २७	११ ३५ ४६	१३ ५२ ०३	१६ ११ ३१	१८ ३० ०९	२० ३४ १९	२२ १६ ४७	२३ ४४ १९	१ १३ १०	२ ४८ १५
२७	४ ३९ ४१	६ ५४ १२	९ १४ ३१	११ ३१ ५०	१३ ४८ ०७	१६ ०७ ३५	१८ २६ १३	२० ३० २३	२२ १२ ५१	२३ ४० २३	१ ०९ १४	२ ४४ १९
२८	४ ३५ ४५	६ ५० १६	९ १० ३६	११ २७ ५५	१३ ४४ १२	१६ ०३ ३९	१८ २२ १७	२० २६ २७	२२ ०८ ५५	२३ ३६ २७	१ ०५ १८	२ ४० २३
२९	४ ३१ ४९	६ ४६ २०	९ ०६ ४०	११ २३ ५९	१३ ४० १६	१५ ५९ ४४	१८ १८ २१	२० २२ ३१	२२ ०४ ५९	२३ ३२ ३१	१ ०१ २२	२ ३६ २७
३०	४ २७ ५३	६ ४२ २४	९ ०२ ४४	११ २० ०३	१३ ३६ २०	१५ ५५ ४८	१८ १४ २५	२० १८ ३५	२२ ०१ ०३	२३ २८ ३५	० ५७ २६	२ ३२ ३१

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३८ २८	८ ५८ ४८	११ १६ ०७	१३ ३२ २४	१५ ५१ ५२	१८ १० २९	२० १४ ३९	२१ ५७ ०७	२३ २४ ३९	० ५३ ३०	२ २८ ३६	४ २३ ५७
२	६ ३४ ३२	८ ५४ ५२	११ १२ ११	१३ २८ २८	१५ ४७ ५६	१८ ०६ ३३	२० १० ४३	२१ ५३ ११	२३ २० ४३	० ४९ ३४	२ २४ ४०	४ [illegible] ०२
३	६ ३० ३६	८ ५० ५६	११ ०८ १५	१३ २४ ३२	१५ ४४ ००	१८ ०२ ३८	२० ०६ ४८	२१ ४९ १६	२३ १६ ४७	० ४५ ३८	२ २० ४४	४ १६ ०६
४	६ २६ ४०	८ ४७ ००	११ ०४ १९	१३ २० ३६	१५ ४० ०४	१७ ५८ ४२	२० ०२ ५२	२१ ४५ २०	२३ १२ ५१	० ४१ ४३	२ १६ ४८	४ १२ १०
५	६ २२ ४४	८ ४३ ०४	११ ०० २३	१३ १६ ४०	१५ ३६ ०८	१७ ५४ ४६	१९ ५८ ५६	२१ ४१ २४	२३ ०८ ५६	० ३७ ४७	२ १२ ५२	४ ०८ १४
६	६ १८ ४९	८ ३९ ०८	१० ५६ २७	१३ १२ ४४	१५ ३२ १२	१७ ५० ५०	१९ ५५ ००	२१ ३७ २८	२३ ०५ ००	० ३३ ५१	२ ०८ ५६	४ ०४ १८
७	६ १४ ५३	८ ३५ १२	१० ५२ ३१	१३ ०८ ४८	१५ २८ १६	१७ ४६ ५४	१९ ५१ ०४	२१ ३३ ३२	२३ ०१ ०४	० २९ ५५	२ ०५ ००	४ ०० २२
८	६ १० ५७	८ ३१ १७	१० ४८ ३६	१३ ०४ ५३	१५ २४ २१	१७ ४२ ५८	१९ ४७ ०८	२१ २९ ३६	२२ ५७ ०८	० २५ ५९	२ ०१ ०४	३ ५६ २६
९	६ ०७ ०१	८ २७ २१	१० ४४ ४०	१३ ०० ५७	१५ २० २५	१७ ३९ ०२	१९ ४३ १२	२१ २५ ४०	२२ ५३ १२	० २२ ०३	१ ५७ ०८	३ ५२ ३०
१०	६ ०३ ०५	८ २३ २५	१० ४० ४४	१२ ५७ ०१	१५ १६ २९	१७ ३५ ०६	१९ ३९ १६	२१ २१ ४४	२२ ४९ १६	० १४ ११	१ ५३ १३	३ ४८ ३४
११	५ ५९ ०९	८ १९ २९	१० ३६ ४८	१२ ५३ ०५	१५ १२ ३३	१७ ३१ १०	१९ ३५ २०	२१ १७ ४८	२२ ४५ २०	० १० १५	१ ४९ १७	३ ४४ ३९
१२	५ ५५ १३	८ १५ ३३	१० ३२ ५२	१२ ४९ ०९	१५ ०८ ३७	१७ २७ १४	१९ ३१ २४	२१ १३ ५२	२२ ४१ २४	० ०६ १९	१ ४५ २१	३ ४० ४३
१३	५ ५१ १७	८ ११ ३७	१० २८ ५६	१२ ४५ १३	१५ ०४ ४१	१७ २३ १९	१९ २७ २९	२१ ०९ ५७	२२ ३७ २८	० ०२ २४	१ ४१ २५	३ ३६ ४७
१४	५ ४७ २१	८ ०७ ४१	१० २५ ००	१२ ४१ १७	१५ ०० ४५	१७ १९ २३	१९ २३ ३३	२१ ०६ ०१	२२ ३३ ३२	२३ ५८ २८	१ ३७ २९	३ ३२ ५१
१५	५ ४३ २६	८ ०३ ४५	१० २१ ०४	१२ ३७ २१	१४ ५६ ४९	१७ १५ २७	१९ १९ ३७	२१ ०२ ०५	२२ २९ ३६	२३ ५४ ३२	१ ३३ ३३	३ २८ ५५
१६	५ ३९ ३०	७ ५९ ४९	१० १७ ०८	१२ ३३ २५	१४ ५२ ५३	१७ ११ ३१	१९ १५ ४१	२० ५८ ०९	२२ २५ ४१	२३ ५० ३६	१ २९ ३७	३ २४ ५९
१७	५ ३५ ३४	७ ५५ ५४	१० १३ १२	१२ २९ २९	१४ ४८ ५७	१७ ०७ ३५	१९ ११ ४५	२० ५४ १३	२२ २१ ४५	२३ ४६ ४०	१ २५ ४१	३ २१ ०३
१८	५ ३१ ३८	७ ५१ ५८	१० ०९ १७	१२ २५ ३४	१४ ४५ ०२	१७ ०३ ३९	१९ ०७ ४९	२० ५० १७	२२ १७ ४९	२३ ४२ ४४	१ २१ ४५	३ १७ ०७
१९	५ २७ ४२	७ ४८ ०२	१० ०५ २१	१२ २१ ३८	१४ ४१ ०६	१६ ५९ ४३	१९ ०३ ५३	२० ४६ २१	२२ १३ ५३	२३ ३८ ४८	१ १७ ४९	३ १३ ११
२०	५ २३ ४६	७ ४४ ०६	१० ०१ २५	१२ १७ ४२	१४ ३७ १०	१६ ५५ ४७	१८ ५९ ५७	२० ४२ २५	२२ ०९ ५७	२३ ३४ ५२	१ १३ ५४	३ ०९ १५
२१	५ १९ ५०	७ ४० १०	९ ५७ २९	१२ १३ ४६	१४ ३३ १४	१६ ५१ ५१	१८ ५६ ०१	२० ३८ २९	२२ ०६ ०१	२३ ३० ५६	१ ०९ ५८	३ ०५ २०
२२	५ १५ ५४	७ ३६ १४	९ ५३ ३३	१२ ०९ ५०	१४ २९ १८	१६ ४७ ५५	१८ ५२ ०६	२० ३४ ३४	२२ ०२ ०५	२३ २७ ००	१ ०६ ०२	३ ०१ २४
२३	५ ११ ५८	७ ३२ १८	९ ४९ ३७	१२ ०५ ५४	१४ २५ २२	१६ ४४ ००	१८ ४८ १०	२० ३० ३८	२१ ५८ ०९	२३ २३ ०५	१ ०२ ०६	२ ५७ २८
२४	५ ०८ ०२	७ २८ २२	९ ४५ ४१	१२ ०१ ५८	१४ २१ २६	१६ ४० ०४	१८ ४४ १४	२० २६ ४२	२१ ५४ १३	२३ १९ ०९	० ५८ १०	२ ५३ ३२
२५	५ ०४ ०७	७ २४ २६	९ ४१ ४५	११ ५८ ०२	१४ १७ ३०	१६ ३६ ०८	१८ ४० १८	२० २२ ४६	२१ ५० १७	२३ १५ १३	० ५४ १४	२ ४९ ३६
२६	५ ०० ११	७ २० ३०	९ ३७ ४९	११ ५४ ०६	१४ १३ ३४	१६ ३२ १२	१८ ३६ २२	२० १८ ५०	२१ ४६ २२	२३ ११ १७	० ५० १८	२ ४५ ४०
२७	४ ५६ १५	७ १६ ३४	९ ३३ ५४	११ ५० ११	१४ ०९ ३९	१६ २८ १६	१८ ३२ २६	२० १४ ५४	२१ ४२ २६	२३ ०७ २१	० ४६ २२	२ ४१ ४४
२८	४ ५२ १९	७ १२ ३९	९ २९ ५८	११ ४६ १५	१४ ०५ ४३	१६ २४ २०	१८ २८ ३०	२० १० ५८	२१ ३८ ३०	२३ ०३ २५	० ४२ २६	२ ३७ ४८
२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ १९	१४ ०१ ४७	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२१ ३४ ३४	२२ ५९ २९	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ ४४ २७	७ ०४ ४७	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२१ ३० ३८	२२ ५५ ३३	० ३४ ३५	२ २९ ५७
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५६ ५५	९ १४ १४	११ ३० ३१	१३ ४९ ५१	१६ ०८ ३७	१८ १२ ३६	१९ ५५ १४	२१ २२ ३६	२२ ४७ ४१	० २६ ४३	२ २२ ०५	४ ३६ ३५
२	६ ५२ ५९	९ १० १८	११ २६ ३५	१३ ४६ ०३	१६ ०४ ४१	१८ ०८ ४१	१९ ५१ १९	२१ १८ ४०	२२ ४३ ४६	० २२ ४७	२ १८ ०९	४ ३२ ३९
३	६ ४९ ०३	९ ०६ २२	११ २२ ३९	१३ ४२ ०७	१६ ०० ४५	१८ ०४ ४५	१९ ४७ २३	२१ १४ ४४	२२ ३९ ५०	० १४ ५५	२ १४ १३	४ २८ ४३
४	६ ४५ ०७	९ ०२ २६	११ १८ ४३	१३ ३८ ११	१५ ५६ ४९	१८ ०० ४९	१९ ४३ २७	२१ १० ४८	२२ ३५ ५४	० १० ५९	२ १० १७	४ २४ ४८
५	६ ४१ ११	८ ५८ ३०	११ १४ ४७	१३ ३४ १५	१५ ५२ ५३	१७ ५६ ५३	१९ ३९ ३१	२१ ०७ ०३	२२ ३१ ५८	० ०७ ०३	२ ०६ २१	४ २० ५२
६	६ ३७ १६	८ ५४ ३५	११ १० ५२	१३ ३० २०	१५ ४८ ५७	१७ ५३ ०७	१९ ३५ ३५	२१ ०३ ०७	२२ २८ ०२	० ०३ ०७	२ ०२ २५	४ १६ ५६
७	६ ३३ २०	८ ५० ३९	११ ०६ ५६	१३ २६ २४	१५ ४५ ०१	१७ ४९ ११	१९ ३१ ३९	२० ५९ ११	२२ २४ ०६	२३ ५९ ११	१ ५८ २९	४ १३ ००
८	६ २९ २४	८ ४६ ४३	११ ०३ ००	१३ २२ २८	१५ ४१ ०५	१७ ४५ १५	१९ २७ ४३	२० ५५ १५	२२ २० १०	२३ ५५ १६	१ ५४ ३३	४ ०९ ०४
९	६ २५ २८	८ ४२ ४७	१० ५९ ०४	१३ १८ ३२	१५ ३७ ०९	१७ ४१ १९	१९ २३ ४७	२० ५१ १९	२२ १६ १४	२३ ५१ २०	१ ५० ३७	४ ०५ ०८
१०	६ २१ ३२	८ ३८ ५१	१० ५५ ०८	१३ १४ ३६	१५ ३३ १३	१७ ३७ २३	१९ १९ ५१	२० ४७ २३	२२ १२ १८	२३ ४७ २४	१ ४६ ४२	४ ०१ १२
११	६ १७ ३६	८ ३४ ५५	१० ५१ १२	१३ १० ४०	१५ २९ १७	१७ ३३ २७	१९ १५ ५५	२० ४३ २७	२२ ०८ २२	२३ ४३ २८	१ ४२ ४६	३ ५७ १६
१२	६ १३ ४०	८ ३० ५९	१० ४७ १६	१३ ०६ ४४	१५ २५ २२	१७ २९ ३२	१९ १२ ००	२० ३९ ३१	२२ ०४ २६	२३ ३९ ३२	१ ३८ ५०	३ ५३ २०
१३	६ ०९ ४४	८ २७ ०३	१० ४३ २०	१३ ०२ ४८	१५ २१ २६	१७ २५ ३६	१९ ०८ ०४	२० ३५ ३५	२२ ०० ३१	२३ ३५ ३६	१ ३४ ५४	३ ४९ २४
१४	६ ०५ ४८	८ २३ ०७	१० ३९ २४	१२ ५८ ५२	१५ १७ ३०	१७ २१ ४०	१९ ०४ ०८	२० ३१ ३९	२१ ५६ ३५	२३ ३१ ४०	१ ३० ५८	३ ४५ २९
१५	६ ०१ ५३	८ १९ ११	१० ३५ २८	१२ ५४ ५६	१५ १३ ३४	१७ १७ ४४	१९ ०० १२	२० २७ ४४	२१ ५२ ३९	२३ २७ ४४	१ २७ ०२	३ ४१ ३३
१६	५ ५७ ५७	८ १५ १६	१० ३१ ३३	१२ ५१ ०१	१५ ०९ ३८	१७ १३ ४८	१८ ५६ १६	२० २३ ४८	२१ ४८ ४३	२३ २३ ४८	१ २३ ०६	३ ३७ ३७
१७	५ ५४ ०१	८ ११ २०	१० २७ ३७	१२ ४७ ०५	१५ ०५ ४२	१७ ०९ ५२	१८ ५२ २०	२० १९ ५२	२१ ४४ ४७	२३ १९ ५२	१ १९ १०	३ ३३ ४१
१८	५ ५० ०५	८ ०७ २४	१० २३ ४१	१२ ४३ ०९	१५ ०१ ४६	१७ ०५ ५६	१८ ४८ २४	२० १५ ५६	२१ ४० ५१	२३ १५ ५७	१ १५ १४	३ २९ ४५
१९	५ ४६ ०९	८ ०३ २८	१० १९ ४५	१२ ३९ १३	१४ ५७ ५०	१७ ०२ ००	१८ ४४ २८	२० १२ ००	२१ ३६ ५५	२३ १२ ०१	१ ११ १९	३ २५ ४९
२०	५ ४२ १३	७ ५९ ३२	१० १५ ४९	१२ ३५ १७	१४ ५३ ५४	१६ ५८ ०४	१८ ४० ३२	२० ०८ ०४	२१ ३२ ५९	२३ ०८ ०५	१ ०७ २३	३ २१ ५३
२१	५ ३८ १७	७ ५५ ३६	१० ११ ५३	१२ ३१ २१	१४ ४९ ५९	१६ ५४ ०८	१८ ३६ ३६	२० ०४ ०८	२१ २९ ०३	२३ ०४ ०९	१ ०३ २७	३ १७ ५७
२२	५ ३४ २१	७ ५१ ४०	१० ०७ ५७	१२ २७ २५	१४ ४६ ०३	१६ ५० १३	१८ ३२ ४१	२० ०० १२	२१ २५ ०७	२३ ०० १३	० ५९ ३१	३ १४ ०१
२३	५ ३० २५	७ ४७ ४४	१० ०४ ०१	१२ २३ २९	१४ ४२ ०७	१६ ४६ १७	१८ २८ ४५	१९ ५६ १६	२१ २१ १२	२२ ५६ १७	० ५५ ३५	३ १० ०६
२४	५ २६ २९	७ ४३ ४८	१० ०० ०५	१२ १९ ३३	१४ ३८ ११	१६ ४२ २१	१८ २४ ४९	१९ ५२ २०	२१ १७ १६	२२ ५२ २१	० ५१ ३९	३ ०६ १०
२५	५ २२ ३४	७ ३९ ५२	९ ५६ ०९	१२ १५ ३७	१४ ३४ १५	१६ ३८ २५	१८ २० ५३	१९ ४८ २४	२१ १३ २०	२२ ४८ २५	० ४७ ४३	३ ०२ १४
२६	५ १८ ३८	७ ३५ ५७	९ ५२ १४	१२ ११ ४२	१४ ३० १९	१६ ३४ २९	१८ १६ ५७	१९ ४४ २९	२१ ०९ २४	२२ ४४ २९	० ४३ ४७	२ ५८ १८
२७	५ १४ ४२	७ ३२ ०१	९ ४८ १८	१२ ०७ ४६	१४ २६ २३	१६ ३० ३३	१८ १३ ०१	१९ ४० ३३	२१ ०५ २८	२२ ४० ३३	० ३९ ५१	२ ५४ २२
२८	५ १० ४६	७ २८ ०५	९ ४४ २२	१२ ०३ ५०	१४ २२ २७	१६ २६ ३७	१८ ०९ ०५	१९ ३६ ३७	२१ ०१ ३२	२२ ३६ ३७	० ३५ ५५	२ ५० २६
२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४१	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४१	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३४	१६ १८ ४५	१८ ०१ १३	१९ २८ ४५	२० ५३ ४०	२२ २८ ४६	० २८ ०४	२ ४२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै.

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाइम घण्टा-मिनट-सेकण्ड

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२ २१	९ २८ ३८	११ ४८ ०६	१४ ०६ ४४	१६ १० ५४	१७ ५३ २२	१९ २० ५३	२० ४५ ४८	२२ २० ५४	० १६ १६	२ ३४ ४२	४ ५५ ०२
२	७ ०८ २५	९ २४ ४२	११ ४४ १०	१४ ०२ ४८	१६ ०६ ५८	१७ ४९ २६	१९ १६ ५७	२० ४१ ५३	२२ १६ ५८	० १२ २०	२ ३० ४७	४ ५१ ०६
३	७ ०४ २९	९ २० ४६	११ ४० १४	१३ ५८ ५२	१६ ०३ ०२	१७ ४५ ३०	१९ १३ ०१	२० ३७ ५७	२२ १३ ०२	० ०८ २४	२ २६ ५१	४ ४७ १०
४	७ ०० ३३	९ १६ ५०	११ ३६ १८	१३ ५४ ५६	१५ ५९ ०६	१७ ४१ ३४	१९ ०९ ०५	२० ३४ ०१	२२ ०९ ०६	० ०४ २८	२ २२ ५५	४ ४३ १५
५	६ ५६ ३८	९ १२ ५५	११ ३२ २३	१३ ५१ ००	१५ ५५ १०	१७ ३७ ३८	१९ ०५ १०	२० ३० ०५	२२ ०५ १०	० ०० ३२	२ १८ ५९	४ ३९ १९
६	६ ५२ ४२	९ ०८ ५९	११ २८ २७	१३ ४७ ०४	१५ ५१ १४	१७ ३३ ४२	१९ ०१ १४	२० २६ ०९	२२ ०१ १४	२३ ५६ ३६	२ १५ ०३	४ ३५ २३
७	६ ४८ ४६	९ ०५ ०३	११ २४ ३१	१३ ४३ ०८	१५ ४७ १८	१७ २९ ४६	१८ ५७ १८	२० २२ १३	२१ ५७ १८	२३ ५२ ४०	२ ११ ०७	४ ३१ २७
८	६ ४४ ५०	९ ०१ ०७	११ २० ३५	१३ ३९ १२	१५ ४३ २२	१७ २५ ५०	१८ ५३ २२	२० १८ १७	२१ ५३ २३	२३ ४८ ४५	२ ०७ ११	४ २७ ३१
९	६ ४० ५४	८ ५७ ११	११ १६ ३९	१३ ३५ १६	१५ ३९ २६	१७ २१ ५४	१८ ४९ २६	२० १४ २१	२१ ४९ २७	२३ ४४ ४९	२ ०३ १५	४ २३ ३५
१०	६ ३६ ५८	८ ५३ १५	११ १२ ४३	१३ ३१ २१	१५ ३५ ३०	१७ १७ ५८	१८ ४५ ३०	२० १० २५	२१ ४५ ३१	२३ ४० ५३	१ ५९ १९	४ १९ ३९
११	६ ३३ ०२	८ ४९ १९	११ ०८ ४७	१३ २७ २५	१५ ३१ ३५	१७ १४ ०२	१८ ४१ ३४	२० ०६ २९	२१ ४१ ३५	२३ ३६ ५७	१ ५५ २३	४ १५ ४३
१२	६ २९ ०६	८ ४५ २३	११ ०४ ५१	१३ २३ २९	१५ २७ ३९	१७ १० ०७	१८ ३७ ३८	२० ०२ ३३	२१ ३७ ३९	२३ ३३ ०१	१ ५१ २८	४ ११ ४७
१३	६ २५ १०	८ ४१ २७	११ ०० ५५	१३ १९ ३३	१५ २३ ४३	१७ ०६ ११	१८ ३३ ४२	१९ ५८ ३८	२१ ३३ ४३	२३ २९ ०५	१ ४७ ३२	४ ०७ ५१
१४	६ २१ १४	८ ३७ ३१	१० ५६ ५९	१३ १५ ३७	१५ १९ ४७	१७ ०२ १५	१८ २९ ४६	१९ ५४ ४२	२१ २९ ४७	२३ २५ ०९	१ ४३ ३६	४ ०३ ५६
१५	६ १७ १९	८ ३३ ३६	१० ५३ ०४	१३ ११ ४२	१५ १५ ५१	१६ ५८ १९	१८ २५ ५१	१९ ५० ४६	२१ २५ ५१	२३ २१ १३	१ ३९ ४०	३ ६० ००
१६	६ १३ २३	८ २९ ४०	१० ४९ ०८	१३ ०७ ४५	१५ ११ ५५	१६ ५४ २३	१८ २१ ५५	१९ ४६ ५०	२१ २१ ५५	२३ १७ १७	१ ३५ ४४	३ ५६ ०४
१७	६ ०९ २७	८ २५ ४४	१० ४५ १२	१३ ०३ ४९	१५ ०७ ५९	१६ ५० २७	१८ १७ ५९	१९ ४२ ५४	२१ १७ ५९	२३ १३ २१	१ ३१ ४८	३ ५२ ०८
१८	६ ०५ ३१	८ २१ ४८	१० ४१ १६	१२ ५९ ५३	१५ ०४ ०३	१६ ४६ ३१	१८ १४ ०३	१९ ३८ ५८	२१ १४ ०४	२३ ०९ २६	१ २७ ५२	३ ४८ १२
१९	६ ०१ ३५	८ १७ ५२	१० ३७ २०	१२ ५५ ५७	१५ ०० ०७	१६ ४२ ३५	१८ १० ०७	१९ ३५ ०२	२१ १० ०८	२३ ०५ ३०	१ २३ ५६	३ ४४ १६
२०	५ ५७ ३९	८ १३ ५६	१० ३३ २४	१२ ५२ ०१	१४ ५६ ११	१६ ३८ ३९	१८ ०६ ११	१९ ३१ ०६	२१ ०६ १२	२३ ०१ ३४	१ २० ००	३ ४० २०
२१	५ ५३ ४३	८ १० ००	१० २९ २८	१२ ४८ ०६	१४ ५२ १६	१६ ३४ ४३	१८ ०२ १५	१९ २७ १०	२१ ०२ १६	२२ ५७ ३८	१ १६ ०४	३ ३६ २४
२२	५ ४९ ४७	८ ०६ ०४	१० २५ ३२	१२ ४४ १०	१४ ४८ २०	१६ ३० ४८	१७ ५८ १९	१९ २३ १४	२० ५८ २०	२२ ५३ ४२	१ १२ ०८	३ ३२ २८
२३	५ ४५ ५१	८ ०२ ०८	१० २१ ३६	१२ ४० १४	१४ ४४ २४	१६ २६ ५२	१७ ५४ २३	१९ १९ १९	२० ५४ २४	२२ ४९ ४६	१ ०८ १३	३ २८ ३२
२४	५ ४१ ५५	७ ५८ १२	१० १७ ४०	१२ ३६ १८	१४ ४० २८	१६ २२ ५६	१७ ५० २७	१९ १५ २३	२० ५० २८	२२ ४५ ५०	१ ०४ १७	३ २४ ३७
२५	५ ३८ ००	७ ५४ १७	१० १३ ४५	१२ ३२ २२	१४ ३६ ३२	१६ १९ ००	१७ ४६ ३१	१९ ११ २७	२० ४६ ३२	२२ ४१ ५४	१ ०० २१	३ २० ४१
२६	५ ३४ ०४	७ ५० २१	१० ०९ ४९	१२ २८ २६	१४ ३२ ३६	१६ १५ ०४	१७ ४२ ३६	१९ ०७ ३१	२० ४२ ३६	२२ ३७ ५८	० ५६ २५	३ १६ ४५
२७	५ ३० ०८	७ ४६ २५	१० ०५ ५३	१२ २४ ३०	१४ २८ ४०	१६ ११ ०८	१७ ३८ ४०	१९ ०३ ३५	२० ३८ ४०	२२ ३४ ०२	० ५२ २९	३ १२ ४९
२८	५ २६ १२	७ ४२ २९	१० ०१ ५७	१२ २० ३४	१४ २४ ४४	१६ ०७ १२	१७ ३४ ४४	१८ ५९ ३९	२० ३४ ४५	२२ ३० ०७	० ४८ ३३	३ ०८ ५३
२९	५ २२ १६	७ ३८ ३३	९ ५८ ०१	१२ १६ ३८	१४ २० ४८	१६ ०३ १६	१७ ३० ४८	१८ ५५ ४३	२० ३० ४९	२२ २६ ११	० ४४ ३७	३ ०४ ५७
३०	५ १८ २०	७ ३४ ३७	९ ५४ ०५	१२ १२ ४३	१४ १६ ५२	१५ ५९ २०	१७ २६ ५२	१८ ५१ ४७	२० २६ ५३	२२ २२ १५	० ४० ४१	३ ०१ ०१

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३० ४१	९ ५० ०९	१२ ०८ ४७	१४ १२ ५७	१५ ५५ २४	१७ २२ ५६	१८ ४७ ५१	२० २२ ५७	२२ १८ १९	० ३६ ४५	२ ५७ ०५	५ १४ २४
२	७ २६ ४५	९ ४६ १३	१२ ०४ ५१	१४ ०९ ०१	१५ ५१ २८	१७ १९ ००	१८ ४३ ५५	२० १९ ०१	२२ १४ २३	० ३२ ४९	२ ५३ ०९	५ १० २८
३	७ २२ ४९	९ ४२ १७	१२ ०० ५५	१४ ०५ ०५	१५ ४७ ३३	१७ १५ ०४	१८ ३९ ५९	२० १५ ०५	२२ १० २७	० २८ ५४	२ ४९ १३	५ ०६ ३२
४	७ १८ ५३	९ ३८ २१	११ ५६ ५९	१४ ०१ ०९	१५ ४३ ३७	१७ ११ ०८	१८ ३६ ०४	२० ११ ०९	२२ ०६ ३१	० २४ ५८	२ ४५ १७	५ ०२ ३६
५	७ १४ ५८	९ ३४ २६	११ ५३ ०३	१३ ५७ १३	१५ ३९ ४१	१७ ०७ १२	१८ ३२ ०८	२० ०७ १३	२२ ०२ ३५	० १७ ०६	२ ४१ २२	४ ५८ ४१
६	७ ११ ०२	९ ३० ३०	११ ४९ ०७	१३ ५३ १७	१५ ३५ ४५	१७ ०३ १७	१८ २८ १२	२० ०३ १७	२१ ५८ ३९	० १३ १०	२ ३७ २६	४ ५४ ४५
७	७ ०७ ०६	९ २६ ३४	११ ४५ ११	१३ ४९ २१	१५ ३१ ४९	१६ ५९ २१	१८ २४ १६	१९ ५९ २१	२१ ५४ ४३	० ०९ १४	२ ३३ ३०	४ ५० ४९
८	७ ०३ १०	९ २२ ३८	११ ४१ १५	१३ ४५ २५	१५ २७ ५३	१६ ५५ २५	१८ २० २०	१९ ५५ २५	२१ ५० ४८	० ०५ १८	२ २९ ३४	४ ४६ ५३
९	६ ५९ १४	९ १८ ४२	११ ३७ १९	१३ ४१ २९	१५ २३ ५७	१६ ५१ २९	१८ १६ २४	१९ ५१ ३०	२१ ४६ ५२	० ०१ २२	२ २५ ३८	४ ४२ ५७
१०	६ ५५ १८	९ १४ ४६	११ ३३ २४	१३ ३७ ३३	१५ २० ०१	१६ ४७ ३३	१८ १२ २८	१९ ४७ ३४	२१ ४२ ५६	२३ ५७ २६	२ २१ ४२	४ ३९ ०१
११	६ ५१ २२	९ १० ५०	११ २९ २८	१३ ३३ ३७	१५ १६ ०५	१६ ४३ ३७	१८ ०८ ३२	१९ ४३ ३८	२१ ३९ ००	२३ ५३ ३०	२ १७ ४६	४ ३५ ०५
१२	६ ४७ २६	९ ०६ ५४	११ २५ ३२	१३ २९ ४२	१५ १२ ०९	१६ ३९ ४१	१८ ०४ ३६	१९ ३९ ४२	२१ ३५ ०४	२३ ४९ ३४	२ १३ ५०	४ ३१ ०९
१३	६ ४३ ३०	९ ०२ ५८	११ २१ ३६	१३ २५ ४६	१५ ०८ १४	१६ ३५ ४५	१८ ०० ४०	१९ ३५ ४६	२१ ३१ ०८	२३ ४५ ३९	२ ०९ ५४	४ २७ १३
१४	६ ३९ ३४	८ ५९ ०२	११ १७ ४०	१३ २१ ५०	१५ ०४ १८	१६ ३१ ४९	१७ ५६ ४५	१९ ३१ ५०	२१ २७ १२	२३ ४१ ४३	२ ०५ ५९	४ २३ १७
१५	६ ३५ ३९	८ ५५ ०७	११ १३ ४४	१३ १७ ५४	१५ ०० २२	१६ २७ ५३	१७ ५२ ४९	१९ २७ ५४	२१ २३ १६	२३ ३७ ४७	२ ०२ ०३	४ १९ २२
१६	६ ३१ ४३	८ ५१ ११	११ ०९ ४८	१३ १३ ५८	१४ ५६ २६	१६ २३ ५७	१७ ४८ ५३	१९ २३ ५८	२१ १९ २०	२३ ३३ ५१	१ ५८ ०७	४ १५ २६
१७	६ २७ ४७	८ ४७ १५	११ ०५ ५२	१३ १० ०२	१४ ५२ ३०	१६ २० ०२	१७ ४४ ५७	१९ २० ०२	२१ १५ २४	२३ २९ ५५	१ ५४ ११	४ ११ ३०
१८	६ २३ ५१	८ ४३ १९	११ ०१ ५६	१३ ०६ ०६	१४ ४८ ३४	१६ १६ ०६	१७ ४१ ०१	१९ १६ ०६	२१ ११ २९	२३ २५ ५९	१ ५० १५	४ ०७ ३४
१९	६ १९ ५५	८ ३९ २३	१० ५८ ००	१३ ०२ १०	१४ ४४ ३८	१६ १२ १०	१७ ३७ ०५	१९ १२ ११	२१ ०७ ३३	२३ २२ ०३	१ ४६ १९	४ ०३ ३८
२०	६ १५ ५९	८ ३५ २७	१० ५४ ०४	१२ ५८ १४	१४ ४० ४२	१६ ०८ १४	१७ ३३ ०९	१९ ०८ १५	२१ ०३ ३७	२३ १८ ०७	१ ४२ २३	३ ५९ ४२
२१	६ १२ ०३	८ ३१ ३१	१० ५० ०९	१२ ५४ १८	१४ ३६ ४६	१६ ०४ १८	१७ २९ १३	१९ ०४ १९	२० ५९ ४१	२३ १४ ११	१ ३८ २७	३ ५५ ४६
२२	६ ०८ ०७	८ २७ ३५	१० ४६ १३	१२ ५० २३	१४ ३२ ५०	१६ ०० २२	१७ २५ १७	१९ ०० २३	२० ५५ ४५	२३ १० १६	१ ३४ ३१	३ ५१ ५०
२३	६ ०४ ११	८ २३ ३९	१० ४२ १७	१२ ४६ २७	१४ २८ ५५	१५ ५६ २६	१७ २१ २१	१८ ५६ २७	२० ५१ ४९	२३ ०६ २०	१ ३० ३५	३ ४७ ५४
२४	६ ०० १५	८ १९ ४३	१० ३८ २१	१२ ४२ ३१	१४ २४ ५९	१५ ५२ ३०	१७ १७ २६	१८ ५२ ३१	२० ४७ ५३	२३ ०२ २४	१ २६ ४०	३ ४३ ५८
२५	५ ५६ २०	८ १५ ४८	१० ३४ २५	१२ ३८ ३५	१४ २१ ०३	१५ ४८ ३४	१७ १३ ३०	१८ ४८ ३५	२० ४३ ५७	२२ ५८ २८	१ २२ ४४	३ ४० ०३
२६	५ ५२ २४	८ ११ ५२	१० ३० २९	१२ ३४ ३९	१४ १७ ०७	१५ ४४ ३८	१७ ०९ ३४	१८ ४४ ३९	२० ४० ०१	२२ ५४ ३२	१ १८ ४८	३ ३६ ०७
२७	५ ४८ २८	८ ०७ ५६	१० २६ ३३	१२ ३० ४३	१४ १३ ११	१५ ४० ४३	१७ ०५ ३८	१८ ४० ४३	२० ३६ ०५	२२ ५० ३६	१ १४ ५२	३ ३२ ११
२८	५ ४४ ३२	८ ०४ ००	१० २२ ३७	१२ २६ ४७	१४ ०९ १५	१५ ३६ ४७	१७ ०१ ४२	१८ ३६ ४७	२० ३२ १०	२२ ४६ ४०	१ १० ५६	३ २८ १५
२९	५ ४० ३६	८ ०० ०४	१० १८ ४१	१२ २२ ५१	१४ ०५ १९	१५ ३२ ५१	१६ ५७ ४६	१८ ३२ ५२	२० २८ १४	२२ ४२ ४४	१ ०७ ००	३ २४ १९
३०	५ ३६ ४०	७ ५६ ०८	१० १४ ४५	१२ १८ ५५	१४ ०१ २३	१५ २८ ५५	१६ ५३ ५०	१८ २८ ५६	२० २४ १८	२२ ३८ ४८	१ ०३ ०४	३ २० २३
३१	५ ३२ ४४	७ ५२ १२	१० १० ५०	१२ १४ ५९	१३ ५७ २७	१५ २४ ५९	१६ ४९ ५४	१८ २५ ००	२० २० २२	२२ ३४ ५२	० ५९ ०८	३ १६ २७

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४८ १६	१० ०६ ५४	१२ ११ ०४	१३ ५३ ३१	१५ २१ ०३	१६ ४५ ५८	१८ २१ ०४	२० १६ २६	२२ ३० ५७	० ५५ १२	३ १२ ३१	५ २८ ४८
२	७ ४४ २०	१० ०२ ५८	१२ ०७ ०८	१३ ४९ ३५	१५ १७ ०७	१६ ४२ ०२	१८ १७ ०८	२० १२ ३०	२२ २७ ०१	० ५१ १६	३ ०८ ३५	५ २४ ५२
३	७ ४० २४	९ ५९ ०२	१२ ०३ १२	१३ ४५ ४०	१५ १३ ११	१६ ३८ ०६	१८ १३ १२	२० ०८ ३४	२२ २३ ०५	० ४७ २१	३ ०४ ३९	५ २० ५६
४	७ ३६ २९	९ ५५ ०६	११ ५९ १६	१३ ४१ ४४	१५ ०९ १५	१६ ३४ ११	१८ ०९ १६	२० ०४ ३८	२२ १९ ०९	० ४३ २५	३ ०० ४४	५ १७ ०१
५	७ ३२ ३३	९ ५१ १०	११ ५५ २०	१३ ३७ ४८	१५ ०५ १९	१६ ३० १५	१८ ०५ २०	२० ०० ४२	२२ १५ १३	० ३९ २९	२ ५६ ४८	५ १३ ०५
६	७ २८ ३७	९ ४७ १४	११ ५१ २४	१३ ३३ ५२	१५ ०१ २४	१६ २६ १९	१८ ०१ २४	१९ ५६ ४६	२२ ११ १७	० ३५ ३३	२ ५२ ५२	५ ०९ ०९
७	७ २४ ४१	९ ४३ १८	११ ४७ २८	१३ २९ ५६	१४ ५७ २८	१६ २२ २३	१७ ५७ २८	१९ ५२ ५१	२२ ०७ २१	० ३१ ३७	२ ४८ ५६	५ ०५ १३
८	७ २० ४५	९ ३९ २२	११ ४३ ३२	१३ २६ ००	१४ ५३ ३२	१६ १८ २७	१७ ५३ ३३	१९ ४८ ५५	२२ ०३ २५	० २७ ४१	२ ४५ ००	५ ०१ १७
९	७ १६ ४९	९ ३५ २७	११ ३९ ३६	१३ २२ ०४	१४ ४९ ३६	१६ १४ ३१	१७ ४९ ३७	१९ ४४ ५९	२१ ५९ २९	० २३ ४५	२ ४१ ०४	४ ५७ २१
१०	७ १२ ५३	९ ३१ ३१	११ ३५ ४०	१३ १८ ०८	१४ ४५ ४०	१६ १० ३५	१७ ४५ ४१	१९ ४१ ०३	२१ ५५ ३४	० १५ ५३	२ ३७ ०८	४ ५३ २५
११	७ ०८ ५७	९ २७ ३५	११ ३१ ४५	१३ १४ १२	१४ ४१ ४४	१६ ०६ ३९	१७ ४१ ४५	१९ ३७ ०७	२१ ५१ ३८	० ११ ५७	२ ३३ १२	४ ४९ २९
१२	७ ०५ ०१	९ २३ ३९	११ २७ ४९	१३ १० १६	१४ ३७ ४८	१६ ०२ ४३	१७ ३७ ४९	१९ ३३ ११	२१ ४७ ४२	० ०८ ०२	२ २९ १६	४ ४५ ३३
१३	७ ०१ ०५	९ १९ ४३	११ २३ ५३	१३ ०६ २१	१४ ३३ ५२	१५ ५८ ४७	१७ ३३ ५३	१९ २९ १५	२१ ४३ ४६	० ०४ ०६	२ २५ २०	४ ४१ ३७
१४	६ ५७ १०	९ १५ ४७	११ १९ ५७	१३ ०२ २५	१४ २९ ५६	१५ ५४ ५२	१७ २९ ५७	१९ २५ १९	२१ ३९ ५०	० ०० १०	२ २१ २५	४ ३७ ४२
१५	६ ५३ १४	९ ११ ५१	११ १६ ०१	१२ ५८ २९	१४ २६ ००	१५ ५० ५६	१७ २६ ०१	१९ २१ २३	२१ ३५ ५४	२३ ५६ १४	२ १७ २९	४ ३३ ४६
१६	६ ४९ १८	९ ०७ ५५	११ १२ ०५	१२ ५४ ३३	१४ २२ ०५	१५ ४७ ००	१७ २२ ०५	१९ १७ २७	२१ ३१ ५८	२३ ५२ १८	२ १३ ३३	४ २९ ५०
१७	६ ४५ २२	९ ०३ ५९	११ ०८ ०९	१२ ५० ३७	१४ १८ ०९	१५ ४३ ०४	१७ १८ ०९	१९ १३ ३२	२१ २८ ०२	२३ ४८ २२	२ ०९ ३७	४ २५ ५४
१८	६ ४१ २६	९ ०० ०३	११ ०४ १३	१२ ४६ ४१	१४ १४ १३	१५ ३९ ०८	१७ १४ १४	१९ ०९ ३६	२१ २४ ०६	२३ ४४ २६	२ ०५ ४१	४ २१ ५८
१९	६ ३७ ३०	८ ५६ ०८	११ ०० १७	१२ ४२ ४५	१४ १० १७	१५ ३५ १२	१७ १० १८	१९ ०५ ४०	२१ २० १०	२३ ४० ३०	२ ०१ ४५	४ १८ ०२
२०	६ ३३ ३४	८ ५२ १२	१० ५६ २१	१२ ३८ ४९	१४ ०६ २१	१५ ३१ १६	१७ ०६ २२	१९ ०१ ४४	२१ १६ १४	२३ ३६ ३४	१ ५७ ४९	४ १४ ०६
२१	६ २९ ३८	८ ४८ १६	१० ५२ २६	१२ ३४ ५३	१४ ०२ २५	१५ २७ २०	१७ ०२ २६	१८ ५७ ४८	२१ १२ १९	२३ ३२ ३९	१ ५३ ५३	४ १० १०
२२	६ २५ ४२	८ ४४ २०	१० ४८ ३०	१२ ३० ५७	१३ ५८ २९	१५ २३ २४	१६ ५८ ३०	१८ ५३ ५२	२१ ०८ २३	२३ २८ ४३	१ ४९ ५७	४ ०६ १४
२३	६ २१ ४७	८ ४० २४	१० ४४ ३४	१२ २७ ०२	१३ ५४ ३३	१५ १९ २८	१६ ५४ ३४	१८ ४९ ५६	२१ ०४ २७	२३ २४ ४७	१ ४६ ०२	४ ०२ १९
२४	६ १७ ५१	८ ३६ २८	१० ४० ३८	१२ २३ ०६	१३ ५० ३७	१५ १५ ३३	१६ ५० ३८	१८ ४६ ००	२१ ०० ३१	२३ २० ५१	१ ४२ ०६	३ ५८ २३
२५	६ १३ ५५	८ ३२ ३२	१० ३६ ४२	१२ १९ १०	१३ ४६ ४१	१५ ११ ३७	१६ ४६ ४२	१८ ४२ ०४	२० ५६ ३५	२३ १६ ५५	१ ३८ १०	३ ५४ २७
२६	६ ०९ ५९	८ २८ ३६	१० ३२ ४६	१२ १५ १४	१३ ४२ ४५	१५ ०७ ४१	१६ ४२ ४६	१८ ३८ ०८	२० ५२ ३९	२३ १२ ५९	१ ३४ १४	३ ५० ३१
२७	६ ०६ ०३	८ २४ ४०	१० २८ ५०	१२ ११ १८	१३ ३८ ५०	१५ ०३ ४५	१६ ३८ ५०	१८ ३४ १३	२० ४८ ४३	२३ ०९ ०३	१ ३० १८	३ ४६ ३५
२८	६ ०२ ०७	८ २० ४४	१० २४ ५४	१२ ०७ २२	१३ ३४ ५४	१४ ५९ ४९	१६ ३४ ५४	१८ ३० १७	२० ४४ ४७	२३ ०५ ०७	१ २६ २२	३ ४२ ३९
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०८ ५७	१० १३ ०७	११ ५५ ३४	१३ २३ ०६	१४ ४८ ०१	१६ २३ ०७	१८ १८ २९	२० ३३ ००	२२ ५३ २०	१ १४ ३४	३ ३० ५१	५ ५० १९
२	८ ०५ ०१	१० ०९ ११	११ ५१ ३८	१३ १९ १०	१४ ४४ ०५	१६ १९ ११	१८ १४ ३३	२० २९ ०४	२२ ४९ २४	१ १० ३८	३ २६ ५५	५ ४६ २३
३	८ ०१ ०५	१० ०५ १५	११ ४७ ४३	१३ १५ १४	१४ ४० ०९	१६ १५ १५	१८ १० ३७	२० २५ ०८	२२ ४५ २८	१ ०६ ४३	३ २३ ००	५ ४२ २८
४	७ ५७ ०९	१० ०१ १९	११ ४३ ४७	१३ ११ १८	१४ ३६ १४	१६ ११ १९	१८ ०६ ४१	२० २१ १२	२२ ४१ ३२	१ ०२ ४७	३ १९ ०४	५ ३८ ३२
५	७ ५३ १३	९ ५७ २३	११ ३९ ५१	१३ ०७ २२	१४ ३२ १८	१६ ०७ २३	१८ ०२ ४५	२० १७ १६	२२ ३७ ३६	० ५८ ५१	३ १५ ०८	५ ३४ ३६
६	७ ४९ १७	९ ५३ २७	११ ३५ ५५	१३ ०३ २६	१४ २८ २२	१६ ०३ २७	१७ ५८ ५०	२० १३ २०	२२ ३३ ४०	० ५४ ५५	३ ११ १२	५ ३० ४०
७	७ ४५ २१	९ ४९ ३१	११ ३१ ५९	१२ ५९ ३१	१४ २४ २६	१५ ५९ ३१	१७ ५४ ५४	२० ०९ २४	२२ २९ ४४	० ५० ५९	३ ०७ १६	५ २६ ४४
८	७ ४१ २६	९ ४५ ३५	११ २८ ०३	१२ ५५ ३५	१४ २० ३०	१५ ५५ ३६	१७ ५० ५८	२० ०५ २८	२२ २५ ४८	० ४७ ०३	३ ०३ २०	५ २२ ४८
९	७ ३७ ३०	९ ४१ ३९	११ २४ ०७	१२ ५१ ३९	१४ १६ ३४	१५ ५१ ४०	१७ ४७ ०२	२० ०१ ३३	२२ २१ ५२	० ४३ ०७	२ ५९ २४	५ १८ ५२
१०	७ ३३ ३४	९ ३७ ४४	११ २० ११	१२ ४७ ४३	१४ १२ ३८	१५ ४७ ४४	१७ ४३ ०६	१९ ५७ ३७	२२ १७ ५६	० ३९ ११	२ ५५ २८	५ १४ ५६
११	७ २९ ३८	९ ३३ ४८	११ १६ १५	१२ ४३ ४७	१४ ०८ ४२	१५ ४३ ४८	१७ ३९ १०	१९ ५३ ४१	२२ १४ ०१	० ३५ १५	२ ५१ ३२	५ ११ ००
१२	७ २५ ४२	९ २९ ५२	११ १२ १९	१२ ३९ ५१	१४ ०४ ४६	१५ ३९ ५२	१७ ३५ १४	१९ ४९ ४५	२२ १० ०५	० ३१ २०	२ ४७ ३७	५ ०७ ०५
१३	७ २१ ४६	९ २५ ५६	११ ०८ २४	१२ ३५ ५५	१४ ०० ५०	१५ ३५ ५६	१७ ३१ १८	१९ ४५ ४९	२२ ०६ ०९	० २७ २४	२ ४३ ४१	५ ०३ ०९
१४	७ १७ ५०	९ २२ ००	११ ०४ २८	१२ ३१ ५९	१३ ५६ ५५	१५ ३२ ००	१७ २७ २२	१९ ४१ ५३	२२ ०२ १३	० २३ २८	२ ३९ ४५	४ ५९ १३
१५	७ १३ ५४	९ १८ ०४	११ ०० ३२	१२ २८ ०३	१३ ५२ ५९	१५ २८ ०४	१७ २३ २६	१९ ३७ ५७	२१ ५८ १७	० १५ ३६	२ ३५ ४९	४ ५५ १७
१६	७ ०९ ५८	९ १४ ०८	१० ५६ ३६	१२ २४ ०८	१३ ४९ ०३	१५ २४ ०८	१७ १९ ३१	१९ ३४ ०१	२१ ५४ २१	० ११ ४०	२ ३१ ५३	४ ५१ २१
१७	७ ०६ ०२	९ १० १२	१० ५२ ४०	१२ २० १२	१३ ४५ ०७	१५ २० १२	१७ १५ ३५	१९ ३० ०५	२१ ५० २५	० ०७ ४४	२ २७ ५७	४ ४७ २५
१८	७ ०२ ०७	९ ०६ १६	१० ४८ ४४	१२ १६ १६	१३ ४१ ११	१५ १६ १७	१७ ११ ३९	१९ २६ १०	२१ ४६ २९	० ०३ ४८	२ २४ ०१	४ ४३ २९
१९	६ ५८ ११	९ ०२ २०	१० ४४ ४८	१२ १२ २०	१३ ३७ १५	१५ १२ २१	१७ ०७ ४३	१९ २२ १४	२१ ४२ ३३	२३ ५९ ५२	२ २० ०५	४ ३९ ३३
२०	६ ५४ १५	८ ५८ २५	१० ४० ५२	१२ ०८ २४	१३ ३३ १९	१५ ०८ २५	१७ ०३ ४७	१९ १८ १८	२१ ३८ ३८	२३ ५५ ५६	२ १६ ०९	४ ३५ ३७
२१	६ ५० १९	८ ५४ २९	१० ३६ ५६	१२ ०४ २८	१३ २९ २३	१५ ०४ २९	१६ ५९ ५१	१९ १४ २२	२१ ३४ ४२	२३ ५२ ०१	२ १२ १३	४ ३१ ४२
२२	६ ४६ २३	८ ५० ३३	१० ३३ ०१	१२ ०० ३२	१३ २५ २७	१५ ०० ३३	१६ ५५ ५५	१९ १० २६	२१ ३० ४६	२३ ४८ ०५	२ ०८ १८	४ २७ ४६
२३	६ ४२ २७	८ ४६ ३७	१० २९ ०५	११ ५६ ३६	१३ २१ ३१	१४ ५६ ३७	१६ ५१ ५९	१९ ०६ ३०	२१ २६ ५०	२३ ४४ ०९	२ ०४ २२	४ २३ ५०
२४	६ ३८ ३१	८ ४२ ४१	१० २५ ०९	११ ५२ ४०	१३ १७ ३६	१४ ५२ ४१	१६ ४८ ०३	१९ ०२ ३४	२१ २२ ५४	२३ ४० १३	२ ०० २६	४ १९ ५४
२५	६ ३४ ३५	८ ३८ ४५	१० २१ १३	११ ४८ ४४	१३ १३ ४०	१४ ४८ ४५	१६ ४४ ०८	१८ ५८ ३८	२१ १८ ५८	२३ ३६ १७	१ ५६ ३०	४ १५ ५८
२६	६ ३० ३९	८ ३४ ४९	१० १७ १७	११ ४४ ४८	१३ ०९ ४४	१४ ४४ ४९	१६ ४० १२	१८ ५४ ४२	२१ १५ ०२	२३ ३२ २१	१ ५२ ३४	४ १२ ०२
२७	६ २६ ४४	८ ३० ५३	१० १३ २१	११ ४० ५३	१३ ०५ ४८	१४ ४० ५३	१६ ३६ १६	१८ ५० ४६	२१ ११ ०६	२३ २८ २५	१ ४८ ३८	४ ०८ ०६
२८	६ २२ ४८	८ २६ ५७	१० ०९ २५	११ ३६ ५७	१३ ०१ ५२	१४ ३६ ५८	१६ ३२ २०	१८ ४६ ५१	२१ ०७ १०	२३ २४ २९	१ ४४ ४२	४ ०४ १०
२९	६ १८ ५२	८ २३ ०१	१० ०५ २९	११ ३३ ०१	१२ ५७ ५६	१४ ३३ ०२	१६ २८ २४	१८ ४२ ५५	२१ ०३ १४	२३ २० ३३	[illegible]	[illegible]

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ १० १३	९ ५२ ४१	११ २० १३	१२ ४५ ०८	१४ २० १४	१६ १५ ३५	१८ ३० ०५	२० ५० २५	२३ ०७ ४४	१ २७ ५७	३ ४७ २५	६ ०६ ०३
२	८ ०६ १७	९ ४८ ४६	११ १६ १७	१२ ४१ १३	१४ १६ १८	१६ ११ ३९	१८ २६ १०	२० ४६ २९	२३ ०३ ४८	१ २४ ०१	३ ४३ २९	६ ०२ ०७
३	८ ०२ २१	९ ४४ ५०	११ १२ २२	१२ ३७ १७	१४ १२ २२	१६ ०७ ४३	१८ २२ १४	२० ४२ ३४	२२ ५९ ५३	१ २० ०५	३ ३९ ३३	५ ५८ ११
४	७ ५८ २५	९ ४० ५४	११ ०८ २६	१२ ३३ २१	१४ ०८ २६	१६ ०३ ४७	१८ १८ १८	२० ३८ ३८	२२ ५५ ५७	१ १६ १०	३ ३५ ३७	५ ५४ १५
५	७ ५४ ३०	९ ३६ ५८	११ ०४ ३०	१२ २९ २५	१४ ०४ ३०	१५ ५९ ५२	१८ १४ २२	२० ३४ ४२	२२ ५२ ०१	१ १२ १४	३ ३१ ४२	५ ५० १९
६	७ ५० ३४	९ ३३ ०२	११ ०० ३४	१२ २५ २९	१४ ०० ३४	१५ ५५ ५६	१८ १० २६	२० ३० ४६	२२ ४८ ०५	१ ०८ १८	३ २७ ४६	५ ४६ २३
७	७ ४६ ३८	९ २९ ०६	१० ५६ ३८	१२ २१ ३३	१३ ५६ ३८	१५ ५२ ००	१८ ०६ ३०	२० २६ ५०	२२ ४४ ०९	१ ०४ २२	३ २३ ५०	५ ४२ २७
८	७ ४२ ४२	९ २५ १०	१० ५२ ४२	१२ १७ ३७	१३ ५२ ४२	१५ ४८ ०४	१८ ०२ ३४	२० २२ ५४	२२ ४० १३	१ ०० २६	३ १९ ५४	५ ३८ ३२
९	७ ३८ ४६	९ २१ १४	१० ४८ ४६	१२ १३ ४१	१३ ४८ ४६	१५ ४४ ०८	१७ ५८ ३८	२० १८ ५८	२२ ३६ १७	० ५६ ३०	३ १५ ५८	५ ३४ ३६
१०	७ ३४ ५०	९ १७ १८	१० ४४ ५०	१२ ०९ ४५	१३ ४४ ५१	१५ ४० १२	१७ ५४ ४२	२० १५ ०२	२२ ३२ २१	० ५२ ३४	३ १२ ०२	५ ३० ४०
११	७ ३० ५४	९ १३ २२	१० ४० ५४	१२ ०५ ५०	१३ ४० ५५	१५ ३६ १६	१७ ५० ४७	२० ११ ०६	२२ २८ २५	० ४८ ३८	३ ०८ ०६	५ २६ ४४
१२	७ २६ ५८	९ ०९ २७	१० ३६ ५८	१२ ०१ ५४	१३ ३६ ५९	१५ ३२ २०	१७ ४६ ५१	२० ०७ १०	२२ २४ ३०	० ४४ ४२	३ ०४ १०	५ २२ ४८
१३	७ २३ ०२	९ ०५ ३१	१० ३३ ०३	११ ५७ ५८	१३ ३३ ०३	१५ २८ २४	१७ ४२ ५५	२० ०३ १५	२२ २० ३४	० ४० ४७	३ ०० १४	५ १८ ५२
१४	७ १९ ०६	९ ०१ ३५	१० २९ ०७	११ ५४ ०२	१३ २९ ०७	१५ २४ २९	१७ ३८ ५९	१९ ५९ १९	२२ १६ ३८	० ३६ ५१	२ ५६ १९	५ १४ ५६
१५	७ १५ ११	८ ५७ ३९	१० २५ ११	११ ५० ०६	१३ २५ ११	१५ २० ३३	१७ ३५ ०३	१९ ५५ २३	२२ १२ ४२	० ३२ ५५	२ ५२ २३	५ ११ ००
१६	७ ११ १५	८ ५३ ४३	१० २१ १५	११ ४६ १०	१३ २१ १५	१५ १६ ३७	१७ ३१ ०७	१९ ५१ २७	२२ ०८ ४६	० २८ ५९	२ ४८ २७	५ ०७ ०४
१७	७ ०७ १९	८ ४९ ४७	१० १७ १९	११ ४२ १४	१३ १७ १९	१५ १२ ४१	१७ २७ ११	१९ ४७ ३१	२२ ०४ ५०	० २१ ०७	२ ४४ ३१	५ ०३ ०८
१८	७ ०३ २३	८ ४५ ५१	१० १३ २३	११ ३८ १८	१३ १३ २३	१५ ०८ ४५	१७ २३ १५	१९ ४३ ३५	२२ ०० ५४	० १७ ११	२ ४० ३५	४ ५९ १३
१९	६ ५९ २७	८ ४१ ५५	१० ०९ २७	११ ३४ २२	१३ ०९ २७	१५ ०४ ४९	१७ १९ १९	१९ ३९ ३९	२१ ५६ ५८	० १३ १५	२ ३६ ३९	४ ५५ १७
२०	६ ५५ ३१	८ ३७ ५९	१० ०५ ३१	११ ३० २६	१३ ०५ ३१	१५ ०० ५३	१७ १५ २४	१९ ३५ ४३	२१ ५३ ०२	० ०९ १९	२ ३२ ४३	४ ५१ २१
२१	६ ५१ ३५	८ ३४ ०३	१० ०१ ३५	११ २६ ३०	१३ ०१ ३६	१४ ५६ ५७	१७ ११ २८	१९ ३१ ४७	२१ ४९ ०६	० ०५ २३	२ २८ ४७	४ ४७ २५
२२	६ ४७ ३९	८ ३० ०८	९ ५७ ३९	११ २२ ३५	१२ ५७ ४०	१४ ५३ ०१	१७ ०७ ३२	१९ २७ ५२	२१ ४५ ११	० ०१ २८	२ २४ ५१	४ ४३ २९
२३	६ ४३ ४३	८ २६ १२	९ ५३ ४४	११ १८ ३९	१२ ५३ ४४	१४ ४९ ०५	१७ ०३ ३६	१९ २३ ५६	२१ ४१ १५	२३ ५७ ३२	२ २० ५५	४ ३९ ३३
२४	६ ३९ ४७	८ २२ १६	९ ४९ ४८	११ १४ ४३	१२ ४९ ४८	१४ ४५ १०	१६ ५९ ४०	१९ २० ००	२१ ३७ १९	२३ ५३ ३६	२ १७ ००	४ ३५ ३७
२५	६ ३५ ५२	८ १८ २०	९ ४५ ५२	११ १० ४७	१२ ४५ ५२	१४ ४१ १४	१६ ५५ ४४	१९ १६ ०४	२१ ३३ २३	२३ ४९ ४०	२ १३ ०४	४ ३१ ४१
२६	६ ३१ ५६	८ १४ २४	९ ४१ ५६	११ ०६ ५१	१२ ४१ ५६	१४ ३७ १८	१६ ५१ ४८	१९ १२ ०८	२१ २९ २७	२३ ४५ ४४	२ ०९ ०८	४ २७ ४५
२७	६ २८ ००	८ १० २८	९ ३८ ००	११ ०२ ५५	१२ ३८ ००	१४ ३३ २२	१६ ४७ ५२	१९ ०८ १२	२१ २५ ३१	२३ ४१ ४८	२ ०५ १२	४ २३ ४९
२८	६ २४ ०४	८ ०६ ३३	९ ३४ ०४	१० ५८ ५९	१२ ३४ ०४	१४ २९ २६	१६ ४३ ५६	१९ ०४ १६	२१ २१ ३५	२३ ३७ ५२	२ ०१ १६	४ १९ ५४
२९	६ २० ०८	८ ०२ ३६	९ ३० ०८	१० ५५ ०३	१२ ३० ०८	१४ २५ ३०	१६ ४० ००	१९ ०० २०	२१ १७ ३९	२३ ३३ ५६	१ ५७ २०	४ १५ ५८
३०	६ १६ १२	७ ५८ ४०	९ २६ १२	१० ५१ ०७	१२ २६ १३	१४ २१ ३४	१६ ३६ ०५	१८ ५६ २४	२१ १३ ४३	२३ ३० ००	१ ५३ २४	४ १२ ०२
३१	६ १२ १६	७ ५४ ४४	९ २२ १६	१० ४७ ११	१२ २२ १७	१४ १७ ३८	१६ ३२ ०९	१८ ५२ २८	२१ ०९ ४७	२३ २६ ०४	१ ४९ २८	४ ०८ ०६

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५० ४९	९ १८ २०	१० ४३ १६	१२ १८ २१	१४ १३ ४२	१६ २८ १३	१८ ४८ ३३	२१ ०५ ५२	२३ २२ ०९	१ ४५ ३२	४ ०४ १०	६ ०८ २०
२	७ ४६ ५३	९ १४ २४	१० ३९ २०	१२ १४ २५	१४ ०९ ४६	१६ २४ १७	१८ ४४ ३७	२१ ०१ ५६	२३ १८ १३	१ ४१ ३६	४ ०० १४	६ ०४ २४
३	७ ४२ ५७	९ १० २९	१० ३५ २४	१२ १० २९	१४ ०५ ५१	१६ २० २१	१८ ४० ४१	२० ५८ ००	२३ १४ १७	१ ३७ ४१	३ ५६ १८	६ ०० २८
४	७ ३९ ०१	९ ०६ ३३	१० ३१ २८	१२ ०६ ३३	१४ ०१ ५५	१६ १६ २५	१८ ३६ ४५	२० ५४ ०४	२३ १० २१	१ ३३ ४५	३ ५२ २२	५ ५६ ३३
५	७ ३५ ०५	९ ०२ ३७	१० २७ ३२	१२ ०२ ३७	१३ ५७ ५९	१६ १२ २९	१८ ३२ ४९	२० ५० ०८	२३ ०६ २५	१ २९ ४९	३ ४८ २६	५ ५२ ३७
६	७ ३१ ०९	८ ५८ ४१	१० २३ ३६	११ ५८ ४१	१३ ५४ ०३	१६ ०८ ३३	१८ २८ ५३	२० ४६ १२	२३ ०२ २९	१ २५ ५३	३ ४४ ३१	५ ४८ ४१
७	७ २७ १३	८ ५४ ४५	१० १९ ४०	११ ५४ ४५	१३ ५० ०७	१६ ०४ ३७	१८ २४ ५७	२० ४२ १६	२२ ५८ ३३	१ २१ ५७	३ ४० ३५	५ ४४ ४५
८	७ २३ १७	८ ५० ४९	१० १५ ४४	११ ५० ४९	१३ ४६ ११	१६ ०० ४१	१८ २१ ०१	२० ३८ २०	२२ ५४ ३७	१ १८ ०१	३ ३६ ३९	५ ४० ४९
९	७ १९ २१	८ ४६ ५३	१० ११ ४८	११ ४६ ५४	१३ ४२ १५	१५ ५६ ४६	१८ १७ ०५	२० ३४ २४	२२ ५० ४१	१ १४ ०५	३ ३२ ४३	५ ३६ ५३
१०	७ १५ २५	८ ४२ ५७	१० ०७ ५२	११ ४२ ५८	१३ ३८ १९	१५ ५२ ५०	१८ १३ ०९	२० ३० २९	२२ ४६ ४५	१ १० ०९	३ २८ ४७	५ ३२ ५७
११	७ ११ ३०	८ ३९ ०१	१० ०३ ५७	११ ३९ ०२	१३ ३४ २३	१५ ४८ ५४	१८ ०९ १४	२० २६ ३३	२२ ४२ ५०	१ ०६ १३	३ २४ ५१	५ २९ ०१
१२	७ ०७ ३४	८ ३५ ०५	१० ०० ०१	११ ३५ ०६	१३ ३० २७	१५ ४४ ५८	१८ ०५ १८	२० २२ ३७	२२ ३८ ५४	१ ०२ १८	३ २० ५५	५ २५ ०५
१३	७ ०३ ३८	८ ३१ १०	९ ५६ ०५	११ ३१ १०	१३ २६ ३२	१५ ४१ ०२	१८ ०१ २२	२० १८ ४१	२२ ३४ ५८	० ५८ २२	३ १६ ५९	५ २१ ०९
१४	६ ५९ ४२	८ २७ १४	९ ५२ ०९	११ २७ १४	१३ २२ ३६	१५ ३७ ०६	१७ ५७ २६	२० १४ ४५	२२ ३१ ०२	० ५४ २६	३ १३ ०३	५ १७ १४
१५	६ ५५ ४६	८ २३ १८	९ ४८ १३	११ २३ १८	१३ १८ ४०	१५ ३३ १०	१७ ५३ ३०	२० १० ४९	२२ २७ ०६	० ५० ३०	३ ०९ ०७	५ १३ १८
१६	६ ५१ ५०	८ १९ २२	९ ४४ १७	११ १९ २२	१३ १४ ४४	१५ २९ १४	१७ ४९ ३४	२० ०६ ५३	२२ २३ १०	० ४६ ३४	३ ०५ १२	५ ०९ २२
१७	६ ४७ ५४	८ १५ २६	९ ४० २१	११ १५ २६	१३ १० ४८	१५ २५ १८	१७ ४५ ३८	२० ०२ ५७	२२ १९ १४	० ४२ ३८	३ ०१ १६	५ ०५ २६
१८	६ ४३ ५८	८ ११ ३०	९ ३६ २५	११ ११ ३०	१३ ०६ ५२	१५ २१ २२	१७ ४१ ४२	१९ ५९ ०१	२२ १५ १८	० ३८ ४२	२ ५७ २०	५ ०१ ३०
१९	६ ४० ०२	८ ०७ ३४	९ ३२ २९	११ ०७ ३४	१३ ०२ ५६	१५ १७ २७	१७ ३७ ४६	१९ ५५ ०५	२२ ११ २२	० ३४ ४६	२ ५३ २४	४ ५७ ३४
२०	६ ३६ ०६	८ ०३ ३८	९ २८ ३३	११ ०३ ३९	१२ ५९ ००	१५ १३ ३१	१७ ३३ ५१	१९ ५१ १०	२२ ०७ २६	० ३० ५०	२ ४९ २८	४ ५३ ३८
२१	६ ३२ ११	७ ५९ ४२	९ २४ ३८	१० ५९ ४३	१२ ५५ ०४	१५ ०९ ३५	१७ २९ ५५	१९ ४७ १४	२२ ०३ ३१	० २६ ५४	२ ४५ ३२	४ ४९ ४२
२२	६ २८ १५	७ ५५ ४६	९ २० ४२	१० ५५ ४७	१२ ५१ ०८	१५ ०५ ३९	१७ २५ ५९	१९ ४३ १८	२१ ५९ ३५	० १९ ०३	२ ४१ ३६	४ ४५ ४६
२३	६ २४ १९	७ ५१ ५१	९ १६ ४६	१० ५१ ५१	१२ ४७ १३	१५ ०१ ४३	१७ २२ ०३	१९ ३९ २२	२१ ५५ ३९	० १५ ०७	२ ३७ ४०	४ ४१ ५०
२४	६ २० २३	७ ४७ ५५	९ १२ ५०	१० ४७ ५५	१२ ४३ १७	१४ ५७ ४७	१७ १८ ०७	१९ ३५ २६	२१ ५१ ४३	० ११ ११	२ ३३ ४४	४ ३७ ५५
२५	६ १६ २७	७ ४३ ५९	९ ०८ ५४	१० ४३ ५९	१२ ३९ २१	१४ ५३ ५१	१७ १४ ११	१९ ३१ ३०	२१ ४७ ४७	० ०७ १५	२ २९ ४८	४ ३३ ५९
२६	६ १२ ३१	७ ४० ०३	९ ०४ ५८	१० ४० ०३	१२ ३५ २५	१४ ४९ ५५	१७ १० १५	१९ २७ ३४	२१ ४३ ५१	० ०३ १९	२ २५ ५२	४ ३० ०३
२७	६ ०८ ३५	७ ३६ ०७	९ ०१ ०२	१० ३६ ०७	१२ ३१ २९	१४ ४५ ५९	१७ ०६ १९	१९ २३ ३८	२१ ३९ ५५	२३ ५९ २३	२ २१ ५७	४ २६ ०७
२८	६ ०४ ३९	७ ३२ ११	८ ५७ ०६	१० ३२ ११	१२ २७ ३३	१४ ४२ ०३	१७ ०२ २३	१९ १९ ४२	२१ ३५ ५९	२३ ५५ २७	२ १८ ०१	४ २२ ११

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैंण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		१।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अतः अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय घं.मि.से.

	६।००।००
चर	+०।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६।२४।४८
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६।११।२७

सूर्यास्त घं.मि.से.

	६।००।००
चर	—०।११।१२
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६।०२।२४
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५।४९।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	—०।५६
दिनमान नागपुर	२९।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६०।००
दिनमान	—२९।०४
रात्रिमान	३०।५६

उदाहरण २ — मद्रास में २६ जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+००।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+००।३४
अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय घं.मि.से.

	६।००।००
चर	—०।२३।१२
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।०८।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५।४५।४०
वेलांतर	+०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५।४६।५४

सूर्यास्त घं.मि.से.

	६।००।००
चर	+०।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+०।०८।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६।३२।०४
वेलांतर	+०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६।३३।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

		रात्रिमान—	
मध्याह्न दिनमान	३०।००	अहोरात्र	६०।००
चर पल	+०१।५६	दिनमान	—३१।५६
दिनमान मद्रास	३१।५६	रात्रिमान	२८।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रात: ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	२५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२)	२५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	''
		६	०९	''
	६।९ को ढाई से गुना किया	६	०९	
		३	०४	३०
	इष्टकाल घटी पल विपल में	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	१० सितम्बर की जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।	२०	४५	भा.स्टै.टा.
(२)	१० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	''
	शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
		१४	४०	
		७	२०	३०
(३)	इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	''
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से [illegible]

चर सारिणी

क्रान्त्यंश

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२ ३६	५ १२	७ ४६	१० २५	१३ २	१५ ३९	१८ १६	२० ५७	२३ ३७	२६ १८	२८ ५९	३१ ४४	३४ २९	३७ १६	४० ५	४२ ५६	४५ ४८	४८ ४४	५१ ४०	५४ ४१	५७ ४४	६० ५१	६३ ५७	६७ १३
३४	२ ४२	५ २४	८ ५	१० ४९	१३ ३२	१६ १६	१९ १	२१ ४५	२४ ३२	२७ १९	३० ६	३२ ५८	३५ ४९	३८ ४४	४१ ३९	४४ ३६	४७ ३६	५० ३७	५३ ४३	५६ ५१	६० १	६३ १५	६६ ३३	६९ ५४
३५	२ ४८	५ ३६	८ २५	११ १४	१४ १	१६ ५३	१९ ४४	२२ ३५	२५ २४	२८ २२	३१ १७	३४ १४	३७ १३	४० १३	४३ १५	४६ १९	४९ २७	५२ ३६	५५ ४४	५९ ४	६२ २२	६५ ४४	६९ १०	७२ ४०
३६	२ ५४	५ ४९	८ ४४	११ ३५	१४ ३५	१७ ३१	२० २८	२३ २७	२६ २६	२९ २७	३२ २९	३५ ३२	३८ ३७	४१ ४५	४४ ५०	४८ ६	५१ २०	५४ ३७	५७ ५७	६१ २०	६४ ४७	६८ १७	७१ ५१	७५ ३०
३७	३ १	६ २	९ ३	१२ ५	१५ ६	१८ १०	२१ १४	२४ १९	२७ २५	३० ३३	३३ ४१	३६ ५२	४० ५	४३ १९	४६ ३६	४९ ५५	५३ १७	५६ ४१	६० ७	६३ ४०	६७ १५	७० ५४	७४ ३९	७८ २४
३८	३ ८	६ १५	९ २३	१२ ३२	१५ ४१	१८ ४७	२२ १	२५ १३	२८ २६	३१ ४१	३४ ५६	३८ १४	४१ ३४	४४ ५४	४८ २०	५१ ४७	५५ १७	५८ ४९	६२ २५	६६ ५	६९ ४८	७३ ३६	७७ २८	८१ २५
३९	३ १४	६ २९	९ ४४	१३ ०	१६ १५	१९ ३२	२२ ५०	२६ ८	२९ २९	३२ ५०	३६ १४	३९ ३९	४२ ५	४६ ३६	५० ८	५३ ४२	५७ २०	६० ५८	६४ ४६	६८ ३४	७२ २६	७६ २३	८० २५	८४ ३२
४०	३ २१	६ ४३	१० ५	१३ २७	१६ ४७	२० १४	२३ ३८	२७ ४	३० ३३	३४ २	३७ ३३	४१ ६	४४ ४१	४८ १८	५१ ५८	५५ ४१	५९ २८	६३ १७	६७ १०	७१ ६	७५ १०	७९ १६	८३ २८	८७ ४५
४१	३ २९	६ ५७	१० २५	१३ ५६	१७ २७	२० ५६	२४ ३०	२८ ४	३१ ३९	३५ १६	३८ ५५	४२ ३५	४६ १९	४९ ५८	५३ ५३	५७ ४४	६१ ३९	६५ ३८	६९ ४०	७३ ४७	७७ ७८	८२ १५	८६ ३७	९१ ५
४२	३ ३६	७ १२	१० ४९	१४ २६	१८ ०	२१ ४३	२५ २३	२९ ५	३२ ४८	३६ ३१	४० १९	४४ ६	४७ ५९	५१ ५४	५५ ५१	५९ ५१	६३ ५५	६८ ४	७२ १५	७६ ३१	८० ५३	८५ २०	८९ ५३	९४ ३२
४३	३ ४४	७ २८	११ १२	१४ ५७	१८ ४३	२२ २७	२६ १८	३० ७	३३ ५८	३७ ५१	४१ ५६	४५ ४४	४९ ४४	५३ ४७	५७ ५३	६२ २	६६ १६	७० ३३	७४ ५५	७९ २२	८३ ५४	८८ ३२	९३ १६	९८ ७
४४	३ ५२	७ ४४	११ ३४	१५ २९	१९ २३	२३ १८	२७ १४	३१ १०	३५ १२	३९ १०	४३ १७	४७ २३	५१ ३२	५५ ४०	५९ ५७	६४ १८	६८ ४१	७३ ९	७७ ४१	८२ १९	८७ २	९१ ५२	९६ ४८	१०१ ५१
४५	४ ०	८ ०	१२ १	१६ २	२० ५	२४ ४	२८ १०	३२ १९	३६ २७	४० ३७	४४ ४७	४९ ५	५३ २४	५७ ४५	६२ १०	६६ ४०	७१ १३	७५ ५१	८० ३४	८५ २३	९० १८	९५ १९	१०० २८	१०४ ४५
४६	४ ९	८ १७	१२ २७	१६ ३७	२० ४८	२५ ०	२९ १३	३३ २८	३७ ४६	४२ ५	४६ २७	५० ५२	५५ २१	५९ ५०	६४ २६	६९ ६	७३ ५०	७९ ३९	८३ ३३	८८ ३४	९३ ४१	९८ ५६	१०४ १८	१०९ ४९
४७	४ १८	८ ३५	१२ ५३	१७ १२	२१ ३२	२५ ५१	३० १६	३४ ४०	३९ ७	४३ ३६	४८ ८	५२ ४२	५७ १७	६२ २	६६ ४८	७१ ३८	७६ ३३	८१ ३४	८६ ४१	९१ ५०	९७ १४	१०२ ४२	१०८ ११	११४ ४
४८	४ २७	८ ५३	१३ २१	१७ ४९	२२ १८	२६ ३९	३१ २१	३५ ५५	४० ३०	४५ १०	४९ ५२	५४ ३७	५९ २६	६४ १८	६९ १५	७४ १७	७९ २४	८४ ३६	८९ ५६	९५ २२	१०० १६	१०६ ३९	११२ ३०	११८ ३२
[illegible]	४ [illegible]	९ [illegible]	१३ [illegible]	१८ [illegible]	२३ [illegible]	२७ [illegible]	३२ [illegible]	३७ [illegible]	४२ [illegible]	४६ [illegible]	५१ [illegible]	५६ [illegible]	६१ [illegible]	६६ [illegible]	७१ [illegible]	७७ [illegible]	८२ [illegible]	८७ [illegible]	९३ [illegible]	९८ [illegible]	१०४ [illegible]	११० [illegible]	११६ [illegible]	१२३ [illegible]

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४ ४६	९ ३२	१४ १९	१९ ७	२३ ५६	२८ ४७	३३ ३९	३८ ३४	४३ ३१	४८ ३१	५३ ३५	५८ ४२	६३ ५३	६९ ९	७४ २९	७९ ५६	८५ २८	९१ ४	९६ ५४	१०२ ५०	१०८ ५४	११५ ८	१२१ ३३	१२८ ११
५१	४ ५६	९ ५३	१४ ५१	१९ ४९	२४ ४९	२९ ५०	३४ ५३	४० ०	४५ ७	५० १८	५५ ३३	६० ५२	६६ १६	७१ ४४	७७ १७	८२ ५७	८८ ४४	९४ ३७	१०० ३९	१०६ ४७	११३ ११	११९ ४३	१२६ २७	१३३ २५
५२	५ ७	१० १५	१५ २३	२० ३२	२५ ४३	३० ५४	३६ १०	४१ २७	४६ ४७	५२ ७	५७ ३७	६३ ९	६८ ४५	७४ २६	८० १४	८६ ८	९२ ६	९८ १९	१०४ ३६	१११ ४	११७ ४३	१२४ ३४	१३१ ३८	१३८ ५८
५३	५ १८	१० ३७	१५ ५७	२१ १८	२६ ४०	३२ ४	३७ ३१	४२ ५६	४८ ३२	५४ ८	५९ ४८	६५ ३२	७१ २२	७७ १७	८३ १९	८९ २८	९५ ४५	१०२ १०	१०८ ४६	११५ ३२	१२२ ३०	१२९ ४१	१३७ ८	१४४ ५२
५४	५ ३०	११ १	१६ ३३	२२ ४	२७ ४०	३३ १६	३८ ५५	४४ ३७	५० ५२	५६ ११	६२ ४	६८ २	७४ ७	८० १७	८६ ३४	९३ ०	९९ ३२	१०६ १६	११३ ९	१२० १५	१२७ ३४	१३४ ९	१४३ ०	१५१ १०
५५	५ ४३	११ २६	१७ १०	२२ ५६	२८ ४३	३४ ३१	४० २४	४६ १८	५२ १८	५८ २०	६४ २८	७० ४१	७६ ५९	८३ ३६	९० ०	९६ ४२	१०३ ३३	११० ३५	११७ ४९	१२४ १७	१३२ ५९	१४० ५८	१४९ १६	१५७ ५६
५६	५ ५६	११ ५२	१७ ५०	२३ ४८	२९ ४९	३५ ५१	४१ ५७	४८ ७	५४ १९	६० ३५	६७ ०	७३ २८	८० ४	८६ ४६	९३ ३८	१०० ३८	१०७ ३९	११४ ११	१२२ ४७	१३० ३८	१३८ ४५	१४७ ११	१५६ ०	१६४ १३
५७	६ १०	१२ २०	१८ ३१	२४ ४४	३० ५६	३७ १०	४३ ३६	५० १	५६ २८	६३ १	६९ ४०	७६ २५	८३ १८	९० १९	९७ २६	१०४ ४९	११७ १०	१२० ५	१२८ ५	१३६ २१	१४४ ५६	१५३ ५४	१६३ १६	१७३ ७
५८	६ २४	१२ ४९	१९ १५	२५ ४२	३२ १२	३८ ४४	४५ १७	५१ ५९	५८ ४४	६५ ३४	७२ ३०	७९ २६	८६ ४४	९४ ४	१०१ ३४	१०९ १६	११७ १०	१२५ १९	१३३ ४५	१४२ ३२	१५१ ३६	१६१ ८	१७१ ९	१८१ ४६
५९	६ ४०	१३ २०	२० १	२६ ४४	३३ २९	४० १८	४७ १०	५४ ६	६१ ६	६८ १६	७५ ३०	८२ ५२	९० २३	९८ ४	१०५ ५६	११३ ५६	१२२ २०	१३० ५६	१३९ ५९	१४९ ८	१५८ ५०	१६९ १	१७९ ४७	१९१ १५
६०	६ ५६	१३ ५२	२० ५०	२७ ५०	३४ ४६	४१ ५७	४९ ७	५६ २१	६३ ४१	७१ ६	७८ ४२	८६ २५	९४ १७	१०२ २०	११० ३७	११९ ५	१२७ ५४	१३७ ०	१४० २७	१५६ १९	१६६ ४१	१७१ ३९	१८९ १८	२०१ ५०
६१	७ १३	१४ २७	२१ ४२	२८ ५९	३६ १९	४३ ४३	५१ ११	५८ ४६	६६ १९	७४ १२	८२ ५	९० १२	९८ ११	१०६ ५५	११५ ३८	१२४ ३६	१३३ ५४	१४३ ३३	१५३ ३७	१६४ ७	१७५ १९	१८७ १०	१९९ ५४	२१३ ४५
६२	७ ३२	१५ ४	२२ ३८	३० १७	३७ ५०	४५ ३६	५३ २४	६१ १६	६९ १५	७७ २१	८५ ४६	९४ ७	१०२ ५६	१११ ५१	१२१ ३	१३० ३२	१४० २४	१५० ४०	१६१ २६	१७२ ४७	१८४ ५२	१९७ ४९	२११ ५३	२२७ २७
६३	७ ५१	१५ ४३	२३ ३७	३१ ३३	३९ ३२	४७ ३७	५५ ४७	६४ २	७२ २६	८० ५९	८९ ४२	९८ १९	१०७ ४६	११७ ११	१२६ ५०	१३७ ०	१४७ २९	१५८ २९	१७० ४	१८२ २१	१९२ ३२	२०९ ५१	२२५ ४०	२४३ ३७
६४	८ १२	१६ २५	२४ ४०	३२ ५८	४१ २०	४९ ४६	५८ ११	६६ ५९	७५ ४८	८४ ४६	९३ ५५	१०३ २१	११२ ५७	१२२ ५८	१३३ १८	१४४ २	१५५ १६	१६७ ६	१७९ ३८	१९३ ४	२०७ ३८	२२३ ४३	२४१ ५८	२६३ ३७
६५	८ ३५	१७ ११	२५ ४९	३४ ३०	४३ २५	५२ ४	६१ ४	७० १०	७९ २५	८८ ५२	९८ ३३	१०८ २४	११८ ४२	१२९ १७	१४० २४	१५१ ४७	१६३ ५२	१७६ ४०	१९० २३	२०५ १४	२२१ ३७	२४० ११	२६२ ११	२८९ २९

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं.	क.	फरवरी दक्षिण अं.	क.	मार्च दक्षिण अं.	क.	अप्रैल उत्तर अं.	क.	मई उत्तर अं.	क.	जून उत्तर अं.	क.	जुलाई उत्तर अं.	क.	अगस्त उत्तर अं.	क.	सितम्बर उत्तर अं.	क.	अक्टूबर दक्षिण अं.	क.	नवम्बर दक्षिण अं.	क.	दिसम्बर दक्षिण अं.	क.
१	२३	४	१७	१८	७	५२	४	१४	१४	५६	२१	५९	२३	९	१८	९	८	२८	२	५९	१४	१६	२१	४३
२	२२	५९	१७	१	७	२९	४	३८	१५	१४	२२	७	२३	५	१७	५४	८	७	३	२२	१४	३५	२१	५२
३	२२	५४	१६	४४	७	६	५	१	१५	३२	२२	१५	२३	१	१७	३९	७	४५	३	४६	१४	५४	२२	१
४	२२	४८	१६	२७	६	४३	५	२५	१५	४९	२२	२२	२२	५६	१७	२३	७	२३	४	९	१५	१३	२२	१०
५	२२	४२	१६	९	६	२०	५	४९	१६	७	२२	२९	२२	५१	१७	७	७	१	४	३२	१५	३२	२२	१८
६	२२	३५	१५	५१	५	५७	६	१२	१६	२४	२२	३६	२२	४५	१६	५१	६	३९	४	५५	१५	५०	२२	२६
७	२२	२८	१५	३२	५	३५	६	३५	१६	४१	२२	४२	२२	३९	१६	३५	६	१६	५	१८	१६	८	२२	३३
८	२२	२१	१५	१३	५	१२	६	५८	१६	५७	२२	४८	२२	३३	१६	१८	५	५४	५	४१	१६	२६	२२	४०
९	२२	१३	१४	५४	४	४९	७	२१	१७	१३	२२	५३	२२	२६	१६	१	५	३१	६	४	१६	४४	२२	४६
१०	२२	५	१४	३५	४	२६	७	४३	१७	२९	२२	५८	२२	१९	१५	४३	५	९	६	२७	१७	१	२२	५२
११	२१	५६	१४	१५	४	३	८	६	१७	४५	२३	३	२२	११	१५	२६	४	४६	६	५०	१७	१८	२२	५८
१२	२१	४७	१३	५६	३	४०	८	२९	१८	१	२३	७	२२	३	१५	८	४	२४	७	१२	१७	३४	२३	३
१३	२१	३७	१३	३६	३	१७	८	५१	१८	१६	२३	११	२१	५५	१४	५०	४	१	७	३५	१७	५०	२३	८
१४	२१	२७	१३	१६	२	५४	९	१४	१८	३०	२३	१४	२१	४६	१४	३२	३	३८	७	५७	१८	६	२३	१२
१५	२१	१६	१२	५६	२	३१	९	३६	१८	४४	२३	१७	२१	३७	१४	१३	३	१५	८	२०	१८	२२	२३	१५
१६	२१	५	१२	३५	२	७	९	५७	१८	५८	२३	२०	२१	२८	१३	५४	२	५२	८	४२	१८	३७	२३	१८
१७	२०	५४	१२	१४	१	४४	१०	१८	१९	१२	२३	२२	२१	१८	१३	३५	२	२९	९	४	१८	५२	२३	२१
१८	२०	४२	११	५३	१	२१	१०	३९	१९	२६	२३	२४	२१	८	१३	१६	२	६	९	२५	१९	७	२३	२३
१९	२०	३०	११	३२	०	५७	११	०	१९	३९	२३	२५	२०	५८	१२	५७	१	४२	९	४७	१९	२१	२३	२४
२०	२०	१८	११	११	०	३४	११	२१	१९	५२	२३	२६	२०	४७	१२	३७	१	१९	१०	९	१९	३५	२३	२५
२१	२०	५	१०	४९	०	१०	११	४१	२०	४	२३	२७	२०	३६	१२	१८	०	५६	१०	३०	१९	४८	२३	२६
२२	१९	५२	१०	२८	उ०	१४	१२	२	२०	१७	२३	२७	२०	२४	११	५८	०	३२	१०	५२	२०	१	२३	२७
२३	१९	३८	१०	६	-०	३८	१२	२२	२०	२९	२३	२७	२०	१२	११	३८	०	९	११	१३	२०	१४	२३	२७
२४	१९	२४	९	४४	१	२	१२	४२	२०	४०	२३	२६	२०	०	११	१८	द.०	१५	११	३५	२०	२७	२३	२६
२५	१९	९	९	२२	१	२६	१३	२	२०	५१	२३	२५	१९	४७	१०	५७	०	३९	११	५६	२०	३९	२३	२५
२६	१८	५४	९	०	१	५०	१३	२१	२१	२	२३	२३	१९	३४	१०	३६	१	२	१२	१७	२०	५१	२३	२३
२७	१८	३९	८	३८	२	१४	१३	४१	२१	१२	२३	२१	१९	२०	१०	१५	१	२६	१२	३८	२१	२	२३	२१
२८	१८	२३	८	१६	२	३८	१४	०	२१	२२	२३	१९	१९	६	९	५४	१	४९	१२	५८	२१	१३	२३	१९
२९	१८	७	८	४	३	२	१४	१९	२१	३२	२३	१६	१८	५२	९	३३	२	१२	१३	१८	२१	२४	२३	१६
३०	१७	५१	०	०	३	२६	१४	३७	२१	४१	२३	१३	१८	३८	९	१२	२	३६	१३	३८	२१	३४	२३	१३
३१	१७	३५	०	०	३	५०	०	०	२१	५०	०	०	१८	२४	८	५	०	०	१३	५७	०	०	२३	९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि.	सै.	फरवरी मि.	सै.	मार्च मि.	सै.	अप्रैल मि.	सै.	मई मि.	सै.	जून मि.	सै.	जुलाई मि.	सै.	अगस्त मि.	सै.	सितम्बर मि.	सै.	अक्टूबर मि.	सै.	नवम्बर मि.	सै.	दिसम्बर मि.	सै.
	+		+		+		+		—		—		+		+		+		—		—		—	
१	३	३४	१३	३८	१२	३५	४	७	२	५२	२	२५	३	३३	६	१५	+	९	१०	७	१६	२१	११	३
२	३	५२	१३	४६	१२	२३	३	४९	३	०	२	१६	३	४५	६	११	—	१०	१०	२७	१६	२३	१०	४३
३	४	२०	१३	५४	१२	११	३	३२	३	७	२	७	३	५६	६	७	०	२९	१०	४६	१६	२४	१०	१८
४	४	४८	१४	०	११	५९	३	१४	३	१३	१	५७	४	८	६	२	०	४८	११	५	१६	२४	९	५३
५	५	१६	१४	६	११	४६	२	५६	३	१९	१	४७	४	१८	५	५७	१	८	११	२३	१६	२३	९	२८
६	५	४२	१४	१०	११	३२	२	३९	३	२४	१	३६	४	२८	५	५१	१	२८	११	४३	१६	२१	९	३
७	६	९	१४	१४	११	१८	२	२२	३	२९	१	२५	४	३८	५	४४	१	४८	११	५९	१६	१७	८	३७
८	६	३५	१४	१७	११	४	२	४	३	३३	१	१४	४	४८	५	३७	२	९	१२	१६	१६	१४	८	११
९	७	०	१४	२०	१०	४९	१	४८	३	३६	१	३	४	५८	५	२९	२	२९	१२	३३	१६	९	७	४५
१०	७	२५	१४	२१	१०	३४	१	३१	३	३९	०	५२	५	७	५	२१	२	५०	१२	४९	१६	४	७	१८
११	७	४९	१४	२२	१०	१८	१	१५	३	४२	०	४०	५	१५	५	१२	३	११	१३	५	१५	५८	६	५१
१२	८	१३	१४	२२	१०	२	०	५९	३	४४	०	२८	५	२३	५	३	३	३२	१३	२१	१५	५२	६	२३
१३	८	३६	१४	२१	९	४६	०	४३	३	४५	०	११	५	३०	४	५३	३	५३	१३	३६	१५	४३	५	५५
१४	८	५८	१४	२९	९	२९	०	२७	३	४६	-०	३	५	३७	४	५२	४	१४	१३	५०	१५	३४	५	२७
१५	९	२०	१४	१७	९	१२	+	१२	३	४६	+०	९	५	४४	४	३१	४	३६	१४	४	१५	२५	४	५८
१६	९	४१	१४	१४	८	५५	—	३	३	४६	०	२२	५	५०	४	२०	४	५७	१४	१७	१५	१५	४	२९
१७	१०	०	१४	१०	८	३८	०	१७	३	४५	०	३४	५	५६	४	८	५	१८	१४	३०	१५	४	४	०
१८	१०	२१	१४	६	८	२१	०	३१	३	४३	०	४८	६	१	३	५५	५	४०	१४	४२	१४	५२	३	३१
१९	१०	४०	१४	१	८	३	०	४५	३	४१	१	१	६	६	३	४२	६	१	१४	५३	१४	३	३	२
२०	१०	५८	१३	५५	७	४५	०	५७	३	३८	१	१४	६	१०	३	२८	६	२२	१५	४	१४	२४	२	३२
२१	११	१५	१३	४८	७	२८	१	११	३	३५	१	२७	६	१३	३	२४	६	४३	१५	१४	१४	१०	२	२
२२	११	३२	१३	४१	७	१०	१	२३	३	३१	१	४०	६	१६	२	५९	७	४	१५	२४	१३	५५	१	३२
२३	११	४९	१३	३४	६	५१	१	३५	३	२७	१	५३	६	१९	२	४४	७	२५	१५	३३	१३	३९	१	२
२४	१२	४	१३	२४	६	३३	१	४६	३	२२	२	६	६	२१	२	३०	७	४६	१५	४१	१३	२२	०	३२
२५	१२	१९	१३	१७	६	१५	१	५७	३	१७	२	१९	६	२३	२	१३	८	७	१५	४९	१३	४	—	०२
२६	१२	३२	१३	७	५	४७	२	८	३	११	२	३२	६	२३	१	५६	८	२७	१५	५६	१२	४६	+	२८
२७	१२	४५	१२	५७	५	३८	२	१८	३	५	२	४४	६	२३	१	३९	८	४८	१६	२	१२	२७	०	५८
२८	१२	५८	१२	४६	५	२०	२	२७	२	५८	२	५७	६	२३	१	२२	९	८	१६	७	१२	७	१	२८
२९	१३	९			५	२	२	३६	२	५०	३	९	६	२२	१	४	९	२८	१६	१२	११	४६	१	५८
३०	१३	२०			४	४४	२	४४	२	४२	३	२१	६	२०	०	४६	९	४७	१६	१६	११	२५	२	२७
३१	१३	२९			४	२५			२	३४			६	१८	०	२८			१६	१९			२	५६
	+		+		+		—		—		+		+		+		—		—		—		+	

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अत: यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट										चरान्तर सारिणी											क्रांति दक्षिण हो तो धन							
	यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००	इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२	इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२	इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०	कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४	इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८	इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४	उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०	उतरोला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६	कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२	ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८	कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	उदय मण्डलम	तमिलनाडू	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०	खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४	एचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८	ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
असिनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४	कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।४	कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०	कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८	गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८	गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	कल्पाद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२	करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८	गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०	कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+२।४८	+२३।५२	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२	घाटमशार	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
ओरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६	काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४	चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०	कांचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८	कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।०	—४।४	चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८	किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागकोविंल	तमिलनाडू	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चित्तौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।८	ढाका	बंग्लादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।८	+३०।१२	तलागंग	तलांगंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।८	—१९।४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छत्तरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।८	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छबराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।८
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।८
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाइंगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।८
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडू	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।८	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडू	१०।१३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।८	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।८	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०	पेशाबर	प. पाकि.	३४।१	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।८	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडू	१२।८	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाढ़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।८	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२.५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६	फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।८	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।८	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८	बरंगल	आं. प्र.	१८।६	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।८	—१४।१४	[illegible]	राजस्थान	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२	रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०	भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।१४	+१५।०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८	भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४	ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२	लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२	मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।८	मद्रास	तमिलनाडु	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२	शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०	मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६	शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४	मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।८	—१।४	राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८	मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०	शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४	मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६	श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
बालू घाट	प. दिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५।८	+४६।१२	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४	शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४	संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।८	—२७।४
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२	सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।८	सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४	सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४	मैसूर	कर्नाटक	१२।२९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६	सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बैतूल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८	मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४	सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२	सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।३	+२।३२	मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४	सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६	यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।८	+१९।५६	सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।९	—२१।२४	—०।२०
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४	यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४	सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।८	—१७।२८	+३।३६	सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२।८	+३३।१२	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।८	—१७।२८	+ ३।३६	सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बीकानेर	राजस्थान	२८।१	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०	रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४	सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।८	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०	सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२	राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६	हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।८	+३।५६
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।२	—४१।५२	—२०।४८	राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८	हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०	राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०	हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४	रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४	रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०	हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
भरुच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६	रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।८	+१५।५६	हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—९।८	राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०	रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।८	+१।५६
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६	राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०	हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।८	—२५।२८	—४।२४	राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५	हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
भावनगर	गुजरात	२१।४४	४२।१०	—४२।२०	—२०।१६	रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	—१।३
कान्बेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।२७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।१०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।१४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।१४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिजीदीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेईचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बेंगकांक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+११।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
काडी	सीलोन लंका	७।२१उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।८	+०।५
कराची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।४८पू.	+५।२२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।२२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	" ०।२७
अम्मन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	" ०।२८
जेरूसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	—२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+ ४।०	" २।०	" ३।३०	—३।२२।५६	" ०।३२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+ २२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+ ०।३८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+ १६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	— ७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	— १०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।१९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	— ३१।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	— ३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	— ४२।३६	+ १।०	— ४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	— ५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	— ०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	— ०।२०	— ०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	— ७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	— ८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	— ३६।४०	— ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+ ४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+ ४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	— ८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।१६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	— ३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच(वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८
२४		४५		२०		४३		२२		४२		२४		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]

उत्तर अक्षांश	१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला. ३
७		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ ४८	६ २२	५ ४६	६ २३	५ ४४	६ २५	५ ४२	६ २७	५ ४१	६ २९	५ ३९	६ ३०	५ ३७	६ ३२	५ ३५	६ ३४	५ ३३	६ ३६	५ ३१	६ ३८	५ ३०	६ ४०	५ २८	६ ४२	जन. ४
१२	४९	२२	४८	२४	४६	२६	४४	२७	४२	२९	४१	३०	३९	३२	३७	३४	३५	३६	३३	३८	३२	३९	३०	४१	१०
१८	५०	२२	४९	२३	४७	२५	४५	२७	४४	२९	४२	३०	४०	३२	३९	३३	३७	३५	३५	३७	३४	३९	३२	४०	१५
२४	५१	२२	५०	२३	४८	२५	४७	२६	४५	२८	४४	२९	४२	३१	४०	३२	३९	३४	३७	३५	३६	३७	३४	३९	२१
३०	५२	२१	५१	२२	४९	२३	४८	२५	४६	२६	४५	२७	४४	२९	४२	३१	४१	३२	३९	३३	३८	३५	३६	३६	२७
अग. ५	५३	१९	५२	२०	५०	२२	४९	२३	४८	२४	४७	२५	४५	२७	४४	२८	४२	३०	४१	३१	४०	३२	३८	३४	फर. १
११	५३	१७	५२	१८	५१	२०	५०	२१	४८	२२	४७	२३	४६	२४	४५	२५	४४	२७	४२	२८	४१	२९	४०	३०	७
१७	५३	१५	५२	१६	५१	१७	५०	१८	४९	१९	४८	२०	४७	२१	४६	२२	४५	२३	४४	२४	४३	२५	४२	२६	११
२३	५३	१२	५२	१३	५१	१४	५०	१५	४९	१६	४९	१७	४८	१८	४७	१८	४६	१९	४५	२०	४४	२१	४३	२२	१८
२९	५२	१०	५२	१०	५१	११	५०	१२	४९	१२	४९	१३	४८	१४	४७	१४	४७	१५	४६	१६	४५	१७	४४	१७	२४
सितं. ४	५२	६	५२	६	५१	७	५०	८	४९	८	४९	९	४८	१०	४८	१०	४७	११	४७	११	४६	१२	४६	१२	मार्च २
१०	५१	३	५१	३	५०	४	५०	४	४९	५	४९	५	४९	५	४८	६	४८	६	४७	६	४७	७	४७	७	८
१६	५०	०	५०	०	५०	०	५०	०	४९	०	४९	०	४९	१	४९	१	४८	१	४८	१	४८	२	४८	२	१४
२२	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५७	४९	५ ५७	२०
२८	४९	५३	४९	५३	४९	५३	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५१	५०	५१	२६
अक्टू. ३	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४९	४९	४९	४९	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५१	४७	५१	४७	३०
९	४८	४७	४८	४६	४८	४६	४९	४६	४९	४५	५०	४४	५०	४४	५१	४४	५१	४३	५२	४३	५२	४२	५२	४२	अप्रै. ५
१५	४७	४४	४८	४३	४९	४३	४९	४३	५०	४२	५१	४१	५१	४१	५२	४०	५२	३९	५३	३९	५३	३८	५४	३७	१२
२१	४७	४२	४८	४१	४९	४०	५०	४०	५०	३९	५१	३८	५२	३७	५३	३६	५४	३६	५४	३५	५५	३४	५६	३३	१८
२७	४८	४०	४९	३९	५०	३८	५१	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३१	५८	३०	२४
नवं. २	४९	३९	५०	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ १	२६	३०
८	५०	३८	५१	३६	५२	३५	५४	३४	५५	३३	५६	११	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ ०	२७	२	२५	४	२४	मई ६
१४	५१	३७	५३	३६	५४	३५	५६	३३	५७	३२	५९	३०	६ ०	२८	६ १	२८	२	२६	४	२५	५	२४	७	२२	१२
२०	५४	३८	५५	३६	५६	३५	५८	३३	५९	३२	६ १	३०	२	२९	४	२७	५	२६	७	२४	९	२३	१०	२१	१९
२६	५६	३९	५८	३७	५९	३६	६ १	३४	६ २	३२	४	३०	५	२९	७	२८	९	२६	१०	२४	१२	२३	१४	२१	२५
दिसं. २	५९	४०	६ १	३८	६ २	३७	४	३५	५	३४	७	३२	९	३०	१०	२८	१२	२७	१४	२५	१६	२३	१७	२१	३१
८	६ २	४२	४	४०	५	३९	७	३७	९	३५	११	३३	१२	३२	१४	३०	१६	२८	१७	२६	१९	२५	२१	२३	जून ७
१४	५	४५	७	४३	८	४१	१०	३९	१२	३८	१४	३६	१५	३४	१७	३२	१९	३०	२१	२९	२३	२७	२५	२५	१३
२०	८	४७	१०	४५	११	४४	१३	४२	१५	४०	१७	३८	१८	३७	२०	३५	२२	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	१९
२६	११	५०	१३	४८	१४	४७	१६	४५	१८	४३	२०	४१	२१	४०	२३	३८	२५	३६	२७	३४	२९	३२	३१	३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जन. १	६ ३५	५ ३२	६ ३७	५ ३०	६ ३९	५ २८	६ ४१	५ २६	६ ४३	५ २४	६ ४५	५ २२	६ ४७	५ २०	६ ४९	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १४	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ १	५ ७	७ ३	५ ४	७ ६	५ २	जुला. ३
७	३७	३६	३९	३४	४१	३२	४३	३०	४५	२८	४७	२६	४९	२४	५१	२२	५३	२०	५५	१८	५७	१६	५९	१४	२	११	४	९	६	७	९
१३	३८	४०	४०	३८	४१	३६	४३	३४	४५	३३	४७	३१	४९	२९	५१	२७	५३	२५	५५	२३	५७	२१	५९	१९	१	११	४	१४	६	१२	१५
१९	३८	४४	४०	४२	४१	४१	४३	३९	४५	३७	४७	३५	४८	३३	५०	३२	५२	३०	५४	२८	५६	२६	५८	२४	०	२२	२	२०	४	१८	२२
२५	३७	४८	३९	४६	४०	४५	४२	४३	४४	४१	४५	४०	४७	३८	४९	३६	५०	३५	५२	३३	५४	३१	५६	२९	६ ५८	२७	०	२५	२	२३	२८
३१	३६	५१	३७	५०	३९	४९	४०	४७	४२	४६	४३	४४	४५	४३	४६	४१	४८	३९	५०	३८	५१	३६	५३	३५	५५	३३	६ ५६	३१	६ ५८	२९	अग. ४
फर. ६	३४	५५	३५	५४	३६	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४८	४२	४७	४३	४६	४४	४४	४६	४३	४७	४१	४९	४०	५०	३८	५२	३७	५३	३५	१०
१२	३१	५८	३२	५७	३३	५६	३४	५५	३६	५३	३७	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४२	४८	४३	४६	४४	४५	४५	४४	४७	४२	४८	४१	१६
१८	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५९	३०	५८	३१	५७	३२	५६	३३	५५	३४	५४	३५	५३	३६	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४१	४८	४२	४७	२२
२४	२४	३	२४	३	२५	६ २	२६	६ १	२७	६ ०	२८	६ ०	२८	५९	२९	५८	३०	५७	३१	५६	३२	५५	३२	५५	३३	५४	३४	५३	३५	५२	२९
मार्च २	१९	५	२०	५	२०	४	२१	४	२२	३	२२	३	२३	६ २	२३	६ २	२४	६ १	२५	६ ०	२५	६ ०	२६	५९	२७	५८	२७	५८	२८	५७	सितं. ४
८	१५	७	१५	७	१५	७	१६	६	१६	६	१७	६	१७	५	१७	५	१८	५	१८	४	१९	४	१९	६ ३	१९	६ ३	२०	६ २	२०	६ २	१०
१४	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	११	८	११	८	११	८	११	८	११	८	१२	८	१२	७	१२	७	१२	७	१३	७	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	१२	२२
२६	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१६	५ ५६	१६	५ ५६	१६	२८
अप्रै. २	५३	१५	५३	१५	५२	१५	५२	१६	५१	१६	५१	१७	५१	१७	५०	१८	५०	१८	४९	१९	४९	१९	४८	२०	४८	२०	४७	२१	४७	२१	अक्टू. ६
८	४८	१६	४७	१७	४७	१७	४६	१८	४६	१९	४५	१९	४४	२०	४४	२१	४३	२१	४२	२२	४२	२३	४१	२४	४०	२४	३९	२५	३९	२६	११
१४	४३	१८	४२	१९	४२	१९	४१	२०	४०	२१	३९	२२	३८	२३	३७	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	१७
२०	३८	२०	३८	२१	३७	२२	३६	२३	३५	२४	३४	२५	३३	२६	३१	२७	३०	२८	२९	२९	२८	३०	२७	३१	२६	३३	२५	३४	२३	३५	२३
२६	३४	२२	३३	२३	३२	२४	३१	२५	३०	२६	२८	२८	२७	२९	२६	३०	२५	३१	२३	३३	२२	३४	२१	३५	१९	३७	१८	३८	१७	४०	२९
मई १	३१	२३	३०	२५	२९	२६	२७	२७	२६	२९	२५	३०	२३	३१	२२	३३	२०	३४	१९	३६	१७	३७	१६	३९	१४	४०	१३	४२	११	४३	नवं. ३
७	२८	२६	२६	२७	२५	२९	२३	३०	२२	३२	२०	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	३९	१२	४१	११	४३	९	४५	७	४६	५	४८	९
१३	२५	२८	२३	३०	२२	३१	२०	३३	१९	३४	१७	३६	१५	३८	१३	४०	१२	४१	१०	४३	८	४५	६	४७	४	४९	२	५१	०	५३	१५
१९	२३	३०	२१	३२	१९	३४	१८	३६	१६	३७	१४	३९	१२	४१	१०	४३	८	४५	६	४७	४	४९	२	५१	०	५३	४ ५८	५५	४ ५६	५७	२०
२५	२१	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	४०	१२	४२	१०	४४	८	४६	६	४८	४	५०	२	५२	४ ५९	५५	४ ५७	५७	५५	५९	५३	७ २	२६
३१	२०	३५	१८	३७	१६	३९	१४	४१	१२	४३	१०	४५	८	४७	६	४९	४	५१	२	५४	०	५६	५७	५८	५५	७ ०	५३	७ ३	५०	५	दिसं. २
जून ६	२०	३८	१८	४०	१६	४२	१४	४४	१२	४६	१०	४८	७	५०	५	५२	३	५४	१	५७	४ ५९	५९	५६	७ १	५४	४	५१	६	४९	९	७
१२	२०	४०	१८	४२	१६	४४	१४	४६	१२	४८	१०	५०	७	५२	५	५४	३	५७	१	५९	५८	७ १	५६	४	५३	६	५१	९	४८	१२	१३
१८	२१	४१	१९	४३	१७	४५	१५	४७	१२	५०	१०	५२	८	५४	६	५६	३	५९	१	७ १	५९	३	५६	६	५४	८	५१	११	४८	१४	१९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जुला.६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू.३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै.५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस.२	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३३	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के नीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) सूर्योदय—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

	६ ०० ००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६ ०० ००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	० २२ ३२
किरण वक्री भवन संस्कार	० २ ००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६ २४ ३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६ १० ००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	० २६ ४०
किरण वक्री भवन संस्कार	० २ ००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६ ३८ ४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार क्षितिज के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) इष्टकाल—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) सूर्य स्पष्ट—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) लग्न सारिणी—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रात: ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घं. मि. सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११ ५५ ००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५ २८ ००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६ २७ ००
	६ २७ ००
	३ १३ ३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६ ७ ३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५—२९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ [illegible]

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित) | लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मीरजापुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, आजमगढ़, झांसी, ललितपुर, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	[illegible]	६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन																														

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २...

...अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुजा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८		११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१२	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३४	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

इन्द्रप्रस्थ नगर लग्न सारिणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अ...

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षड्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद
(२) वृषभ	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद
(३) मिथुन	शूद्र	वायु	मानव
(४) कर्क	ब्राह्मण	वारि	जलचर
(५) सिंह	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर
(६) कन्या	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	चरण	अक्षर	वर्ग	अवकहड़ा चक्र		पूर्ण राशि	अंश	कला
अश्विनी-१	१	चू	सिंह	योनि	अश्व	०	३	२०
	२	चे	:	गण	देव	०	६	४०
	३	चो	:	युंजा	पूर्व	०	१०	०
	४	ला	मृग	नाड़ी	आद्य	०	१३	२०
भरणी-२	१	ली	:	योनि	गज	०	१६	४०
	२	लू	:	गण	मनुष्य	०	२०	०
	३	ले	:	युंजा	पूर्व	०	२३	२०
	४	लो	:	नाड़ी	मध्य	०	२६	४०
कृतिका-३	१	आ	गरुड़	योनि	मेष	१	०	०
	२	इ	:	गण	राक्षस	१	३	२०
	३	ऊ	:	युंजा	पूर्व	१	६	४०
	४	ए	:	नाड़ी	अंत्य	१	१०	०
रोहिणी-४	१	ओ	:	योनि	सर्प	१	१३	२०
	२	वा	मृग	गण	मनुष्य	१	१६	४०
	३	वी	:	युंजा	पूर्व	१	२०	०
	४	वु	:	नाड़ी	अंत्य	१	२३	२०
मृगशीर्ष-५	१	वे	:	योनि	सर्प	१	२६	४०
	२	वो	:	गण	देव	२	०	०
	३	का	मार्जार	युंजा	पूर्व	२	३	२०
	४	की	:	नाड़ी	मध्य	२	६	४०
आर्द्रा-६	१	कु	:	योनि	श्वान	२	१०	०
	२	घ	:	गण	मनुष्य	२	१३	२०
	३	ङ	:	युंजा	मध्य	२	१६	४०
	४	छ	सिंह	नाड़ी	आद्य	२	२०	०
पुनर्वसु-७	१	के	मार्जार	योनि	मार्जार	२	२३	२०
	२	को	:	गण	देव	२	२६	४०
	३	हा	मेष	युंजा	मध्य	३	०	०
	४	ही	:	नाड़ी	आद्य	३	३	२०
पुष्य-८	१	हू	:	योनि	मेष	३	६	४०
	२	हे	:	गण	देव	३	१०	०
	३	हो	:	युंजा	मध्य	३	१३	२०
	४	डा	श्वान	नाड़ी	मध्य	३	१६	४०
आश्लेषा-९	१	डी	:	योनि	मार्जार	३	२०	०
	२	डु	:	गण	राक्षस	३	२३	२०
	३	डे	:	युंजा	मध्य	३	२६	४०
	४	डो	:	नाड़ी	अंत्य	४	०	०
मघा-१०	१	मा	उंदर	योनि	उंदर	४	३	२०
	२	मी	:	गण	राक्षस	४	६	४०
	३	मू	:	युंजा	मध्य	४	१०	०
	४	मे	:	नाड़ी	अंत्य	४	१३	२०
पू.फा.-११	१	मो	उंदर	योनि	उंदर	४	१६	४०
	२	टा	श्वान	गण	मनुष्य	४	२०	०
	३	टी	:	युंजा	मध्य	४	२३	२०
	४	टू	:	नाड़ी	मध्य	४	२६	४०
उ.फा.-१२	१	टे	:	योनि	गौ	५	०	०
	२	टो	:	गण	मनुष्य	५	३	२०
	३	पा	उंदर	युंजा	मध्य	५	६	४०
	४	पी	:	नाड़ी	आद्य	५	१०	०
हस्त-१३	१	पू	:	योनि	महिषी	५	१३	२०
	२	ष	मेष	गण	देव	५	१६	४०
	३	ण	श्वान	युंजा	मध्य	५	२०	०
	४	ठ	:	नाड़ी	आद्य	५	२३	२०
चित्रा-१४	१	पे	उंदर	योनि	व्याघ्र	५	२६	४०
	२	पो	:	गण	राक्षस	६	०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(७) तुला	शूद्र	वायु	मानव
(८) वृश्चिक	ब्राह्मण	वारि	कीट
(९) धनु	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत
(१०) मकर	वैश्य	भूमि	चत/जल
(११) कुंभ	शूद्र	वायु	मानव
(१२) मीन	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र	चरण	अक्षर	वर्ग	अवकहड़ा चक्र		पूर्ण राशि	अंश	कला
चित्रा-१४	३	रा	मृग	युंजा	मध्य	६	३	२०
	४	री	:	नाड़ी	मध्य	६	६	४०
स्वाति-१५	१	रु	:	योनि	महिषी	६	१०	०
	२	रे	:	गण	देव	६	१३	२०
	३	रा	:	युंजा	मध्य	६	१६	४०
	४	ता	सर्प	नाड़ी	अंत्य	६	२०	०
विशाखा-१६	१	ती	:	योनि	व्याघ्र	६	२३	२०
	२	तू	:	गण	राक्षस	६	२६	४०
	३	ते	:	युंजा	मध्य	७	०	०
	४	तो	:	नाड़ी	अंत्य	७	३	२०
अनुराधा-१७	१	ना	:	योनि	मृग	७	६	४०
	२	नी	:	गण	देव	७	१०	०
	३	नू	:	युंजा	मध्य	७	१३	२०
	४	ने	:	नाड़ी	मध्य	७	१६	४०
ज्येष्ठा-१८	१	नो	:	योनि	मृग	७	२०	०
	२	य	मृग	गण	राक्षस	७	२३	२०
	३	यी	:	युंजा	अंत्य	७	२६	४०
	४	यु	:	नाड़ी	आद्य	८	०	०
मूल-१९	१	ये	:	योनि	श्वान	८	३	२०
	२	यो	:	गण	राक्षस	८	६	४०
	३	भा	उंदर	युंजा	अंत्य	८	१०	०
	४	भी	:	नाड़ी	आद्य	८	१३	२०
पू.षा.-२०	१	भु	:	योनि	वानर	८	१६	४०
	२	धा	सर्प	गण	मनुष्य	८	२०	०
	३	फा	उंदर	युंजा	अंत्य	८	२३	२०
	४	ढा	श्वान	नाड़ी	मध्य	८	२६	४०
उ.षा.-२१	१	भे	उंदर	योनि	नकुल	९	०	०
	२	भो	:	गण	मनुष्य	९	३	२०
	३	जा	सिंह	युंजा	अंत्य	९	६	४०
	४	जी	:	नाड़ी	अंत्य	९	१०	०
श्रवण-२२	१	खी	मार्जार	योनि	वानर	९	१३	२०
	२	खु	:	गण	देव	९	१६	४०
	३	खे	:	युंजा	अंत्य	९	२०	०
	४	खो	:	नाड़ी	अंत्य	९	२३	२०
धनिष्ठा-२३	१	गा	:	योनि	सिंह	९	२६	४०
	२	गी	:	गण	राक्षस	१०	०	०
	३	गु	:	युंजा	अंत्य	१०	३	२०
	४	गे	:	नाड़ी	मध्य	१०	६	४०
शत.-२४	१	गो	:	योनि	अश्व	१०	१०	०
	२	सा	मेष	गण	राक्षस	१०	१३	२०
	३	सी	:	युंजा	अंत्य	१०	१६	४०
	४	सु	:	नाड़ी	आद्य	१०	२०	०
पू.भा.-२५	१	से	:	योनि	सिंह	१०	२३	२०
	२	सो	:	गण	मनुष्य	१०	२६	४०
	३	दा	सर्प	युंजा	अंत्य	११	०	०
	४	दी	:	नाड़ी	आद्य	११	३	२०
उ.भा.-२६	१	दु	:	योनि	गौ	११	६	४०
	२	झा	मेष	गण	मनुष्य	११	१०	०
	३	झा	सिंह	युंजा	अंत्य	११	१३	२०
	४	था	सर्प	नाड़ी	मध्य	११	१६	४०
रेवती-२७	१	दे	:	योनि	गज	११	२०	०
	२	दो	:	गण	देव	११	२३	२०
	३	चा	सिंह	युंजा	पूर्व	११	२६	४०
	४	ची	:	नाड़ी	अंत्य	०	०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसंत

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

षड्वर्ग फलादेश

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षड्वर्ग फलादेश

षड्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षड्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

राशि	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६

राशि	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२

अथ जन्म समय आदि विचार

...किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान— प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान— बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान— सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार— सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग— मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष— सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट— कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष— माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क— प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह— माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ... उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या— माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला— माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक— माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु— माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ— माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन— माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले बसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का ... चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के— विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्राय: सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट— जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति— इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग— बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरष्टि योग— सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे—चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियां

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही [illegible] करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए।

अथ आश्लेषा चक्रम्

... अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्य:
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रम:	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानि:	मातृ हानि:	पितृ हानि:	अल्पायु:

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभाग:
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानि:	धन हानि:	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	निम्ब पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुँ

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्त्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षु: प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यम:)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्नि:)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिंजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरूचोवेनआव: सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठा: सतश्चयोनिमसतश्चविधव:॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्र:)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: बाहुभ्यामुतते नम: ॥ ॐ रुद्राय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्र: विश्वे देवा अदिति: पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नम:॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छ्वत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नम:॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौं, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्प:)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:॥ ॐसर्पेभ्यो नम:॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितर:)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितर: पितर: शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरभ्ये नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भग:)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्न: भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैन: स्याम॥ ॐभगाय नम:॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावधध्वर्यूक्षागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आकरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजा: पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नम:॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदध:॥ ॐ विश्वकर्मणे नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायुः)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नमः॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखाः (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्मिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशश्ठसत्॥ ॐ मित्रायनमः॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ठ्ठ हवे हवे सुहवश्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रश्ठस्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्त्रृतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदुःस्वप्न्यश्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नमः॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठानहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवाः शृणुतेमश्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णुः)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नेप्त्रेस्थो विष्णोः स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुधः॥ ॐ वसुभ्यो नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुणः)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नमः॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अघन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृंङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ठ्ठ सी निननवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पूषा.)	बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि [illegible]	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैतलपात्र [illegible]

विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी बिहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोध, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ की हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिदृव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य शुभ योग

होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुच्छल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध [illegible] हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण**—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४

विकला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को [illegible]

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है। [illegible]

तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र
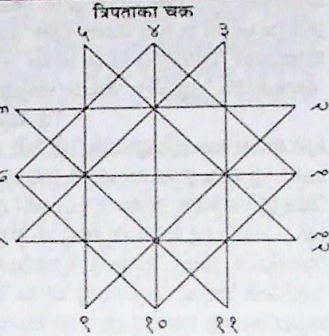
मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को [illegible]

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कसत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव,अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी	नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप	कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश	कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दु:ख	मृति	स्थिति	हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	.....	.....
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शूद्र	संकर	गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
आकार	चतुरस्त्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......	रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत,	विद्वानों से	विद्वानों से	जलचर	पर्वत,	पर्वत,	पर्वत,	धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
			वनचर	युक्तग्रा. चर	युक्तग्रा.चर		वनचर	वनचर	वनचर	वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	......	......	काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रात:	प्रात:	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैर्ऋत्य	सर्वदिशा	पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैर्ऋत्य	वायव्य	भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक	स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा (३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध	शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र	पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुडी	गुप्त-तंत्र	ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्ववूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जूलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१,.३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे

५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, [illegible] प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता से [illegible]

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही [illegible]

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५५ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ १२	५६ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	५९ ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६३ ०	६३ ५	६३ १	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६५ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६०।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि- चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
० १३ २० ०	० २६ ४० ०	१ १० ० ०	१ २३ २० ०	२ ६ ४० ०	२ २० ० ०	३ ३ २० ०	३ १६ ४० ०	४ ० ० ०
मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
४ १३ २० ०	४ २६ ४० ०	५ १० ० ०	५ २३ २० ०	६ ६ ४० ०	६ २० ० ०	७ ३ २० ०	७ १६ ४० ०	८ ० ० ०
मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
८ १३ २० ०	८ २६ ४० ०	९ १० ० ०	९ २३ २० ०	१० ६ ४० ०	१० २० ० ०	११ ३ २० ०	११ १६ ४० ०	० ० ० ०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	१८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	[illegible]

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२२	१२	२५	१६	१	०	२९
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (वृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३२	३७	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	४५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

ग्रह दशा फल

...था दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है,

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल— आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल— लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से— ४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ— सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग— केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल— दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**— विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**— धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**— तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**— बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**— चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**— निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**— अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट— जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्ध्य दें। **नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, [illegible]

अथ [illegible] गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैत्य	विजय:	मार्ग:गमन	पीड़ा:	सुक नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	व्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.लाभ	पुत्र: प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनि:	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्म हानि	विजय:	सुलाभं	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म: १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतित:
बुध:	विद्वान	धनी	दुर्जन:	सुखी	मंत्री	दु:शील	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्म हानि	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दु:खार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौम:	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दंक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३½	½	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	×	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	५°-८'-४३".४३	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	४-८-१२	४-८-१२	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	२-५-९	१-२-५-७-९	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	५-१-८-१२	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५
	शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९- १०-५	चन्द्र वर्जित			सूर्य वर्जित		

टिप्पणी — चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,१२ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ... [illegible]

१. मूंग (बुध) (शुक्र) १. वशपात्र

बुध
१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत
ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००
शुक्र
१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत
पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००
चंद्र
१. वंशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख
आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००
गुरु
१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन
उ. दाधचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००
रवि
१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण
मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००
मंगल
१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कणेहर
९. वृषभ
द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००
केतु
१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र
वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००
शनि
१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र
प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००
राहु
१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंभ्रक
नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कष्णवर्ण जप १८०००
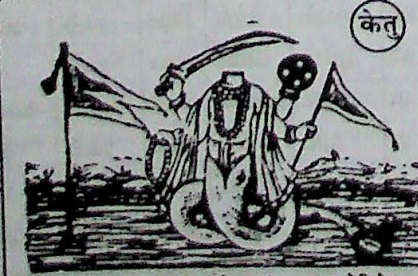
ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०

जन्म राशि से ग्रहों का गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह
प्रहर	१	४	३	१	१	१
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक

राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिविंशाकरधातुहेम प्रवालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेया:॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा:।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अत: गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अत: हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले.	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग.	रेव., अनु., अश्वि., पुन. पुष्य	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव.	श्रवण रोहिणी स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अत: कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोनयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि— **"प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा"** तथा **"पुंसवनवत्"** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र—* **ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भुवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार [illegible]

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार— जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार— मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मृ., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष— ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त— जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मृ., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त— शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त— अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त— शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६, ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है। दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं— (१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (S) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता— सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा:
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात— साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति— जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध—पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र—विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल—विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह—विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य—जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि—जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार—लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)—रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना—आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष—दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु—जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु—जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार—जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से [illegible] हो।

नेष्ट रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र—जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र—जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न—हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त—विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त—विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ—कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त—व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण, देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**—वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**—राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**—वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक-पृथक लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**—राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**—राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**—राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**—वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**—अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय: सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत: प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्ष श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सफलता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति— कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

२ १ १२ ३ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

भाग-१

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

← कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२५ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १३.१.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३
	अश्ले. ४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४
	पू.फा. ४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४
	उ.फा. १	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२
कन्या	उ.फा. ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+
	ह. ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

← कन्या	वर →	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१६ ३
	रो. ४	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले. ४	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा. ४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा. १	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा. ३	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह. ४	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। जिनका अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखे हैं।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

भाग-२

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

← कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा	उ.फा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा	उ.षा	उ.षा.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रे.
	चरण	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२१	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्
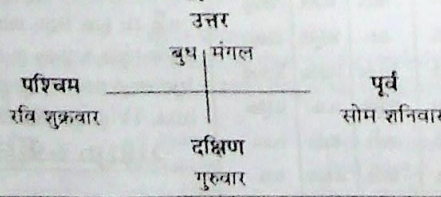
दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।
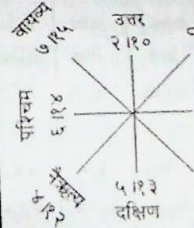
योगिनी वास **कालराहु चक्रम्**
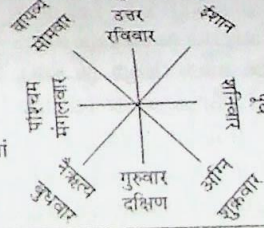
दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा के समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जानें। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	राई	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पू.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चपुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में [illegible]

...स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होता है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य,

...गृह प्रवेश कर्णादि मुहूर्तः

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें घट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ षट् याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषद् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.गु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुऔ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्टु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पचिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेपुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।६।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द बुध वृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा; पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्वलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारे ४, ९, १४ तिथौ [illegible]

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वांकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे ह णदे वाननामदितर्व जपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्वणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्रप्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्सतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषस्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मे के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभंत्रि। [illegible]

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त— अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती् नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त— चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त— तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना— उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त— विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त— अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हो। [illegible]

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर कें बली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु.रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू.म. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु.भु. चं.गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु.शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र.गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू.चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं.बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू.मं. गु.शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू.मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषोंधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबेल	शुभ	बु.गु. शु.चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू.चं. बु.गु. शु.श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु.गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू.बु. गु.शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.मं. गु.शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू.चं. बु.गु.शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र.बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अत: मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.

वार	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम:— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

करग्रे वसते लक्ष्मी: कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्द: प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अत: प्रात: काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से [illegible] [illegible]
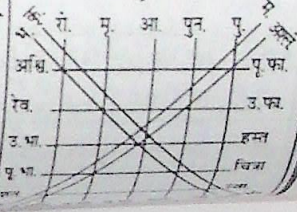
गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रबेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी— यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग— यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग— यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी— मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग— यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

... अर्थात कनिष्ठिका उंगली की ओर झुकी हो

शराबी होने का योग— चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो

डॉक्टर होने का योग— यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग— बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग— अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार— हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन— (१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग— (१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग— (१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग— (१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठिका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु— भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग— मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु— जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना— दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

मद्यसेवी होने का योग— चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग— (१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार [illegible] होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्यप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, [illegible]

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं ---

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न.हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है —

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्मा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा — प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोंनो तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३
भरणी	५	प्रीति	१२
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९
मृगशिर	४	शोभन	३६
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८
पुष्य	३६	धृति	४४
अश्लेषा	३६	शूल	१३
मघा	१५	गंड	२५
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२
हस्त	१८	व्याघात	२५
चित्रा	२५	हर्षण	२५
स्वाति	१४	वज्र	१४
विशाखा	२४	सिद्धि	२२
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९
मूल	१८	परिधि	१५
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९
श्रवण	२५	साध्य	१२
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्मह्	१३
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७
रेवती	२८	वैधृति	२६

वस्तु	ध्रुवा
धान्य	७७
कनक	१००
ज्वार	१३३
मूंग	४१
चणा	३५
झोना	७५
तोरी	७७
तेल	३९
घृत	९९
खाण्ड	९९
गुड़	४७
शक्कर	१०१
कपास	१२९
रुई	४४
कांस्य	३७
वस्त्र	१०९
स्वर्ण	९६
हल्दी	७३
चंदन	१८७
चांदी	८१
मिर्च	६८
पित्तल	९९
जौ	५०७
कस्तू.	१३४

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००

राशि	ध्रुवा
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४

तिथि	ध्रुवा
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिप, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो	सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो	दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
अनाज भरना	धन लाभ हो	शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
आग देखना	धन प्राप्ति हो	शराब पीना	कष्ट मिले
आग उठाना	कष्ट मिले	कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगड़े, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
अनाज बेचना	हानि हो	जल पीना	सौभाग्य सूचक
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले	अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
आम खाना	लाभ मिले	अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता		
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो		
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो	सांपों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो	मिठाई खाना	विपत्ती आये
हंसना	कठिनाई आवे	तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
रोना	अच्छा समाचार मिले	बिच्छू काटे	बीमारी हो
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो	अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले	कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले	चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बाल कटाना	व्यापार में हानि	बर्रे (भिड़, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति	मरा बैल देखना	सूखा पड़े
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति	सुरमा लगाना	रोग हो
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि	सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
सफेद मांस देखना	लाभ मिले	बादल देखना	उन्नति हो
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट	थूक देखना	परेशानी हो
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो	थूकना	खर्चा बढ़े
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो	भैंस देखना	मुसीबत आये
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले	हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता	भेड़िया देखना	राजभय हो
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो	अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले	मल (टट्टी) खाना	धन मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले	मल त्यागना	व्यय बढ़े
वर्षा गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो	कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो	चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव	सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो	रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले	जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
पान खाना	स्त्री संग हो	जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले	सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले	वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले	सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले	जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो	गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले	नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले	लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
सूखा वन देखना	चिन्ता हो	गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले		
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले	कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले	अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो	मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले	कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो	लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो	कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले	वीर्य पान करना	धन मिले	पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
ग्रहण देखना	आफत आये	मूत्र पान करना	धन मिले		
तेल पीना	रोग हो	रक्त पान करना	धन मिले	सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों	शरीर से रक्त निकलना	धन मिले	कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
तिल खाना	बदनामी हो	अपना सिर काटना	धन मिले	अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ	गुदा से जल पीना	धन मिले	स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि	घर जलता देखना	धन मिले	शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो	इन्द्र धनुष देखना	धन मिले	पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
सुअर देखना	आयु कम हो	शिव मंदिर देखना	धन मिले	दांतों का गिरना	धन हानि हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो	धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले	नाक-कान कटना	धन हानि हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ	अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले	जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी	मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो	हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
कुएं में गिरना	परेशानी हो	चावल खाना	धन प्राप्ति हो	जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो	मूंग खाना	धन प्राप्ति हो	दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
सफेद सांप काटे	लाभ हो	सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो	छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
काला सांप काटे	हानि हो	इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले	दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे			सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
पीला सांप काटे	रोग हो	गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े	अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
बरात देखना	रोगी हो	कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो	अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले	देवों, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो	अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
विष खाना	चिन्ता, शोक हो	सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले	केंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
सोना पाना	हानि हो			हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो	झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले	बकरी देखना	धन लाभ हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले	फल खाना व देखना	सम्मान मिले	ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
चीता देखना	असफलता मिले	बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले	टोपी फटना	मानहानि हो
विद्यालय से भागना	सफलता मिले	मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले	टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो	हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले	स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये	अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले	नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो			सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों	गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो	शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े
बिल्ली देखना	हानि, भय	भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो		

वर्षा ज्ञान सारणी

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए । पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णो को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ ॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ ॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्पास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ यह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकदमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकदमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकदमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकदमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकदमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।

१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. वर्ष आप के लिए चुनौतियों भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकदमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।

७. मुकदमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकदमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकदमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जायेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।

३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकदमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकदमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकदमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।

११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकदमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जायगी, ईश्वराधना करें।

६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विश्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जावे ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा विलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असंभव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों में नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआ बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआ बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कुआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

स्वाहा ॥ इस मंत्र द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

पति को वश में करने के लिए:- ऊँ नमो महायक्षिणि पति में वश्यं कुरू कुरू स्वाहा। इस मंत्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध कर लें। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

जलती अग्नि शीतल हो:- ऊँ नमो कोरा कराया जल सा भरिया, ले गौरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥ इस मंत्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें। **विधि:-** कुंए के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर फैंके।

नजर झाड़ने का मंत्र:- गुरु चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख टुकरियाजय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मंत्र को झाड़ने का विधान है।

सर्प विषनाशक मंत्र औषधि:- गरुड़ास्य मंत्र ऊँ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्वृहद्रयन्तरेवक्षी। सोम गरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षुर्वृहद्रयन्तरे वक्षी। सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूंविषनाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यजयज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याःशम्या सपुर्णोसि गरुश्रममान्दिवं गच्छ स्वः पत ऊँ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झाड़े का विधान है। दधि मधु नवनीता, पीप्पली शृंगवेरं, मीरचमपि कूटो प्रतिहंन्सा सुकेशी। यदि दसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा, यमस् दनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणम्॥ गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा।

चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र:- ऊँ ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

स्थायी धनस्थिति मंत्र:- ऊँ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

प्रसव समये जल मंत्र:- आकाश टले पवन राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराईर वरे शीघ्र करिया भूमि पड़े। **विधि:-** ताजा शुद्ध जल को सात बार मंत्र पढ़कर परोसने के पश्चात पिलाने का विधान है।

मृत्युंजय मंत्र:- ऊँ ह्रौ ऊँ जूं सः भूर्भव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिपुष्टिर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भवः स्वरो जूं सः ह्रौं ऊँ। पुरोणोक्तमृत्युंजय मंत्र- मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः।

धनधान्य पूर्ण कर अन्नपूर्णा मंत्र:- ऊँ ह्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहां क्लीं श्रीं ह्रीं ऊँ। इस मंत्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या ताबीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

सर्वसिद्धि हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मंत्र:- ऊँ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, उखरस, पला, पीपल, शैर की लकड़ी से हवन एक लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के लिए अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिए।

बिच्छु झाड़ने का मंत्र:- ऊँ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना। आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणवलेन च ताक्ष्र्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष॥ **विधि:** राई से उतारना।

आंख झाड़ने का मंत्र:- शर्यातिंच संकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनी। संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति॥ मंत्र पढ़कर जल से धुलवायें।

ज्वर झाड़ना:- 1. ऊँ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु स्वाहा। इस मंत्र को सात बार पढ़कर झाड़ें तो ज्वर न रहे। 2. ऊँ नमों अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।२

अन्तर तिजारा चौथिया का मंत्र:- ऊँ लंकायाम तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥ से पीपल के पत्ते पर लिखकर डोर से बांध देवे।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र:- यः स्मरेत्तुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह। कार्य कृत्वा रिपूंजित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥ थोडा सा दही खाकर यात्रा आरंभ करें और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहें।

बीमारी दूर भगाने के लिए:- गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बीमारी नहीं होगी। **मंत्र:-** अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः। कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडीव कृष्णसारथिः। एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्र प्रजायते।

झाड़ फूंक शाबर मंत्र -सिरपीड़ा दूर करने के लिए:- लंका में बैठ के माथ हिलावै हनुमंत। सो देखिके राक्षसगण पराय दूरत॥ बैठी सीता देवी अशोकवन में। देखि हनुमान को आनंद भई मन में॥ गई उर विषाद देवी सिथर दरशाय। 'अमुक' के नहीं कछू पीर नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई॥ सिर के पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर को हाथ से पकड़कर मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले लें।

आधासीसी दूर करने के लिए:- 1. वन में ब्याई कच्चे वनफल खाय। हाँक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधा सीसी उतर जाय॥ 2. ऊँ नमों वन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद-कूद शाखानरी, कच्चे वनफल खाय॥ आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमान जी, आधासीसी जाय॥ किसी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म से झाड़ें।

नेत्र रोग शमन करने के लिए:- ऊँ नमों बने बिआई बानरी जहां-हजां हनुमंत आँखि पीड़ा कषवरी गिहिया थनै लाई चरिउ जाइ। भस्मन्तन गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्चरोवाचा॥ आंख पर हाथ फेरते हुए सात बार मंत्र पढ़कर मंत्र फूंके। व्यथा मिट जाएगी॥

कर्णमूल पीड़ा दूर करने के लिये:- वनरा गांठि वावरी तो डांटे हनुमान कंठ। बिलारी बाघी थनैजी कर्णमूल सम जाइ॥ श्री रामचन्द्र की बानी पानी पथ होई जाइ॥ विभूति से सात बार झाड़ने से कर्णरोग नष्ट होता है।

बिच्छू का विष झाड़ने के लिए:- 1. पर्वत ऊपर सुरही गाइ। कारी गाइ की चमरी पूछी तेकरे गोबरे बिछी बिआइ। बिछी तोरे कर अठारह जाति। छ कारी छ पीअरी छ भूमाधारी छ रत्नपवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरू का बिछी हाड-हाड पोर-पोर ते। कस मारे लीलकंठ गरमोर महादेव की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शंडार बन छाइ उतरहिं बोडी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की। 2. ऊँ हरमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥ मंगलवार को एक लाख जप तथा दशांश हवन करने से सिद्धि होती है।

अंड वृद्धि रोग दूर करने के लिए:- ऊँ नमो आदेश गुरु को जैसे के लेहु रामचन्द कबूत ओई करहु राध बिनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाउ हर-हर रावन कूट मिरावन श्रवइ अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड-अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ बाजं गर्भ हि श्रवइ स्त्री पीलहि श्रवइ शाप हर हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर॥ मंत्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोश को हल्के हाथ से मलें तथा अभिमंत्रित जल पिलायें तो अण्डवृद्धि शांत हो जाती है। मिट्टी दें। आंगन और बरामदों में सिर्फ उड़द के दाने ही बिखेरना चाहिए। मात्र इतनी ही क्रिया से ग्रह दोष सदा के लिए दूर हो जाता है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र एक साधना एवं सफलता

विश्वासम् फलमदायकम्। श्रद्धारूपेण कर्म साधनम्॥ गुरुत्व गुरु ग्राह्य मंत्रम्। आज्ञानुसारेण साधना सफलम्॥

साधक को आवश्यकतानुसार अपने जीवन में तंत्र साहित्य का प्रयोग मंत्र-यंत्र के रूप में करना हो तो भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। हां उसमें अपने भाव समर्पित होना नितान्त आवश्यक है। तंत्र में शक्ति का योगदान, मंत्र में गुरु का योगदान तथा यंत्र में बुद्धि सरस्वती का योगदान प्राप्त करके अपना कदम रखा जाय या शाबर तंत्र की सामान्य प्रक्रिया को भी यदि अपनाया जाय तो कोई भी यंत्र-मंत्र-तंत्र में विफलता का आना संभव नहीं है। अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जरूरत है साधना के नियमों-उपनियमों एवं सीमांकन की। शिव+शक्ति=साधना का आधार। इसीलिए **सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्** की उक्ति चरितार्थ होती है।

आईये जन हिताय-सुरक्षाय-लाभाय कुछ सरल यंत्रों एवं मंत्रों की जानकारी सर्व कल्याण की भावना से परीक्षित यंत्रों की जानकारी आप भी प्रयोग करके देखें। तथा अपनी मंजिल प्राप्त होने पर हमें जरूर संकेत डाक द्वारा/फोन द्वारा बतायें। जिससे विश्वास, श्रद्धा भावना एवं कर्म का सटीक प्रमाण मिल सके। स्वयं करें, फिर लिखें। अनुभव की पाठशाला में जीवन पर्यन्त पढ़ना पड़ता है। यंत्र इस प्रकार है:-

मनोकामना पूर्ण करने के लिए-विधि- इस यंत्र को हल्दी के रस से कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें तथा इस यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही मंत्र का नित्य हल्दी की माला से जप करें तो शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होगा। मंत्र-ॐ ह्रीं ह्रां सः॥ सूर्य का पूजन भी करें। अवश्य ही लाभ होगा। प्रत्येक मनोरथ की पूर्ति अलग-अलग करें।

८	१५	२	[illegible]
६	३	१२	११
१०	[illegible]	८	[illegible]
४	५	१०	१३
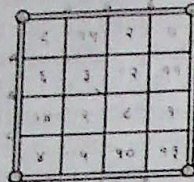
व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन २१००० यंत्र लिखकर (२४ घंटों में) फिर २१००० आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने पर यह यंत्र सिद्ध होगा। तब इस सिद्ध यंत्र को भोजपत्र या चांदी में या सोने की पत्तरी पर लगायें तो दिन-प्रतिदिन लाभ होगा।

[illegible]	[illegible]	२	[illegible]
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
[illegible]	३	५२	५५

बूरी नजर दूर करने का यंत्र-विधि- हल्दी के द्वारा पीले रंग से रंगे सूती कपड़े पर यंत्र लिखकर पोटली सी बनाकर अजवायन डालकर काले धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर दूर होती है। अथवा इस यंत्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से नजर दोष का निवारण होता है।

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
६३	७	१४०	[illegible]
२०	१३४	९	[illegible]

गर्भ धारण के लिए यंत्र-विधि- इस तावीज (यंत्र) को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में शुभ समय में बांधे तो गर्भ धारण होगा। रजस्वला समय को त्यागना है। तथा गौरी शंकर की पूजा स्त्री २१ दिन तक करें। अवश्य लाभ होगा।
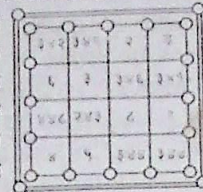
प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर रविपुष्य / गुरुपुष्य / सर्वार्थ सिद्धि योग में शुभ की होरा में केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखें। तथा अपने पास रखें तो लाभ होगा। ॐ गुरु मंत्र जपें।

विद्या प्राप्ति के लिए यंत्र-विधि- इस यंत्र को सरस्वती मंत्र से सिद्ध करके अपनी भुजा पर बांधे तो लाभ होगा। यंत्र केसर से भोजपत्र के ऊपर गुरु पुष्य, रवि हस्त बसंत पंचमी को तैयार करें। अनार की कलम से तथा ५१ दिन तक सरस्वती उपासना करें, लाभ होगा।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३
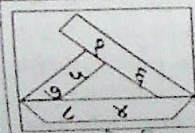
भाग्योन्नतिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन भोजपत्र पर केशर से 625 यंत्र लिखें। जितने दिनों में संख्या दस हजार पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यंत्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करते रहें, तो भाग्य की उन्नति होती है। एवं कामनाएं पूर्ण होती है।

भाग्योन्नति

परीक्षा में सफलताः- परीक्षा आरंभ होने से 15 दिन पूर्व इस यंत्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। सोलहवें दिन एक यंत्र को यथा विधि पूजकर तावीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा गले में धारण कर लें और परीक्षा देने जायें तो उसमें सफलता मिलती है।

परीक्षा में सफलता

बंधन मुक्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन कागज या भोजपत्र के ऊपर चंदन से लिखकर एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यंत्र में जिस स्थान पर कैदी का नाम लिखा है, वहां 'कैदी के नाम' का तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है वहां कैदी की मां का नाम लिखना चाहिए। बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

या हाफज	३३३	३३८	३३१
या हाफज	३२२	३३४	३३६
९९	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम मां का नाम	९९	या हाफज	या हाफज

बंधन मुक्ति

कारावास मुक्तिः- इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जो जेल में पड़ा हो। गंध, पुष्प आदि से यंत्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुंआ उस कैदी व्यक्ति को खिला दें। इस यंत्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह भी बड़ा प्रभावकारी यंत्र है।

ह्रीं
ह्रीं देवदत्त ह्रीं
ह्रीं
कारावास मुक्ति

गये हुए व्यक्ति का लौटनाः- घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप बाहर चला गया हो और न आ रहा हो तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चंदन से लिखकर चरखे पर बांध दें और कुंवारी कन्या के हाथ से उल्टा चरखा चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

क्रोध शमनः- इस यंत्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़ पत्र पर सोमवार के दिन लिखें। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जिसका क्रोध शांत करना हो फिर यंत्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर 7 दिन तक पूजन करें। अंत में ब्राह्मण को भोजन करावें। इसके प्रभाव से शत्रु मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

विद्या प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखें और उन यंत्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दें। 15 दिन तक इसी प्रकार निरंतर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यंत्र तावीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

विद्या प्राप्ति

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को

पुत्री का विवाहः-

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन

आजीविका प्राप्तिः- इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें। जब 5 हजार लिखे जा चुके हों तो उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

आजीविका प्राप्ति

पुत्री का विवाहः- इस यंत्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 225 यंत्र भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से लिखें। जब तक पांच हजार यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

पुत्री का विवाह

स्थानांतरणः- इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना आरंभ करें। सफेद कागज या भोजपत्र पर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब 2400 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो साधक व्यक्ति का स्थानांतरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।

स्थानान्तरण

भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का यंत्रः- खोए या भागे हुए व्यक्ति के पहने हुए, बिना धुले हुए वस्त्र पर गुरु से इस यंत्र को बनायें और पत्थर की सिर के नीचे दबा कर रख दें। व्यक्ति के वापस आने तक रोज सायंकाल इसके ऊपर दीप जलाकर रखें। ऐसा करने से व्यक्ति आ जाता है। शीघ्र न लौटे तो पत्थर को कोड़े से मारें। इस तरह वह व्यक्ति जीवित होगा तो लौट आयेगा। नहीं तो समाचार तो मिल ही जाएगा।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

भागे व्यक्ति को बुलाना

पारिवारिक सुखः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन 101 की संख्या में लिखना प्रारंभ करें। यंत्र को भोजपत्र पर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब 5000 की संख्या पूरी हो जाय तब से यंत्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दें। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

पारिवारिक सुख

आत्म रक्षाः- इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर यथाविधि धूप दीप आदि से पूजा कर त्रिलोहर के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा अथवा कंठ में धारण करें तो आत्म रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

आत्म रक्षा

राजदण्ड से मुक्तिः- इस यंत्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र पर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। फिर यंत्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गिलोह के ताबीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करें तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा वंदन (कैद भय से) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबरदस्ती रोक रखा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

राजदण्ड से मुक्ति

यश प्राप्तिः- इस यंत्र को रविवार के दिन प्रातःकाल 5 बजे से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 101 यंत्र भोजपत्र पर केशर या गोरोचन से लिखें। जब 2400 यंत्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दें तो इसके प्रभाव से यश और संतान की प्राप्ति होती है।

यश प्राप्ति

धन प्राप्तिः- इस यंत्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखना प्रारंभ करें। प्रतिदिन 125 यंत्र लिखें, जब 5000 यंत्र लिख जायें, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दें तथा एक यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दांई भुजा में धारण करें, तो धन की प्राप्ति होती है।

धन प्राप्ति

शत्रु विजयः- इस यंत्र को शमशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र पर लिखकर उसे धूप, दीप दें। तत्पश्चात् उस वस्त्र को जमीन में गाड़ दें या किसी नदी में बहा दें तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता छोड़ देता है।

हं.	हं.	तं.	तं.
तं.	तं.	तं.	तं.
हं.	हं.	तं.	तं.
हं.	हं.	तं.	तं.

शत्रु विजय

सम्मान प्राप्तिः- यंत्र को केसर अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर सवा लाख की संख्या में लिखें। लिखने का प्रारंभ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यंत्र लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यंत्र लिखते समय धूप दीप भी जलानी चाहिए।

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

सम्मान प्राप्ति

शत्रु विनाश :- शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यंत्र को लोहे की कलम से तांबे के यंत्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन करें तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करें तो यंत्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है। वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.
लं.	लं.	लं.	लं.

शत्रु विनाश

खोई हुई वस्तु का मिलनाः- इस यंत्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी पर 108 बार लिखें। तत्पश्चात् भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करें तो इसके प्रभाव से खोई वस्तु मिल जाती है। इस यंत्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

हुं.	हुं.	हुं.	हुं.
ह्रूं.	ह्रूं.	ह्रूं.	ह्रूं.
जं.	जं.	जं.	जं.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

खोई हुई वस्तु का मिलना

संतान सुखः- इस यंत्र को रविवार के दिन से लिखना आरंभ करें। प्रतिदिन 201 यंत्र लिखें। जब 2500 यंत्र पूरे हो जायें, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दें। इस यंत्र के प्रभाव से संतान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई संतान सुधर जाती है।

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

संतान सुख

सर्वकामना सिद्ध, इक्कीसा यंत्रः- इस इक्कीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से लिखकर भुजा में बांधे। इससे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण होकर सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। ❖

४	१२	५
८	७	६
९	२	१०

इक्कीसा यंत्र

क्या-क्या करें उपाय कि घर और दुकान में सुख समृद्धि हो सके

वास्तु नियमों के अनुसार पूर्व दिशा और उत्तर दिशा श्रेष्ठ ऊर्जावान दिशायें मानी जाती हैं। इन्हीं दिशाओं में स्वास्थ्य समृद्धि और रचनात्मक शक्ति का विकास होता हैं। फेंगशुई के अनुसार काष्ठ तत्व को घर या दफ्तर के पूर्व दिशा में स्थापित करने से यह दिशा ऊर्जावान होती है। ऐसी मान्यता है कि यदि घर, कार्यालय, शोरूम आदि के पूर्वी हिस्से में लकड़ी का फर्नीचर या लकड़ी से निर्मित वस्तुएं आलमारी, शोपीस, पेड़-पौधे या फ्रेम जड़े हुए चित्र लगाये जायें तो अपेक्षित लाभ होता है। यदि आप अपने घर और दुकान कार्यालय में कुछ अच्छी ऊर्जाओं को संचारित करना चाहते हैं तो निम्नलिखित काष्ठ और लकड़ी के पेड़-पौधे या वस्तुएं रखकर इन्हें सुधार सकते हैं। जिन चीजों का विरोध होता है ऐसी वस्तुयें घर या कारोबार के स्थल पर नहीं लगानी चाहिए।

- घर की बैठक में जहां घर के सदस्य आमतौर पर एकत्र होते हैं, बांस का पौधा लगाना चाहिए।
- तीन चीनी बुद्धिमान पुरुषों फुक, लुक और साउ की मूर्तियां घर की पूर्वी दिशा में रखें।
- नुकीले औजार जैसे कैंची, चाकू आदि कभी भी इस प्रकार नहीं रखें जाने चाहिए कि उनका नुकीला सिरा घर में रहने वालों की तरफ हो। ये नुकीले सिरे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।
- शयन कक्ष में पौधा नहीं रखना चाहिए। किन्तु बीमार व्यक्ति के कमरे में ताजे फूल रखने चाहिए। इन फूलों को रात को कमरे से हटा दें।
- मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए चंदन, चमेलियां आदि से बनी अगरबत्ती जलाएं। इससे मानसिक बेचैनी कम होती है।
- तीन हरे पौधे मिट्टी के बर्तनों में घर के अंदर पूर्व दिशा में रखें। ध्यान रहे फेंगशुई में बोनसाई और कैक्टस को हानिकारक माना जाता है। क्योंकि बोनसाई प्रगति में बाधक एवं कैक्टस हानिकारक होता है।
- परिवार की खुशहाली और स्वास्थ्य के लिए पूरे परिवार का चित्र लकड़ी के एक फ्रेम में जड़वाकर घर में पूर्वी दीवार पर लटकाएं।
- घर के सदस्यों की दीर्घायु के लिए स्फटिक का बना हुआ एक कछुआ घर में पूर्व दिशा में रखें।
- घर को नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त रखने के लिए उसमें पूर्व दिशा में मिट्टी के एक छोटे से पात्र में नमक भर कर रखें और हर २४ घंटे के बाद नमक बदल दें।
- अपने ऑफिस में पूर्व दिशा में लकड़ी से बनी ड्रेगन की एक मूर्ति रखें। इससे ऊर्जा एवं उत्साह प्राप्त होंगे।

ऊपर वर्णित उपायों के अतिरिक्त निम्नलिखित उपाय भी करके देख सकते हैं-

- घर या दफ्तर में झाड़ू का जब इस्तेमाल न हो रहा हो, तब उसे नजरों के सामने से हटाकर रखें।
- यदि घर का मुख्य द्वार उत्तर, उत्तर-पश्चिम या पश्चिम में हो तो उसके ऊपर बाहर की तरफ घोड़े का नाल लगा देना चाहिए। इससे सुरक्षा एवं सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।
- पूर्व दिशा हेतु हरा रंग सर्वोत्तम है। साथ ही नीला एवं काला रंग भी इस दिशा के लिए उत्तम है। किन्तु इसके लिए सफेद तथा सिल्वर रंग प्रयोग में नहीं लाएं।

फेंगशुई के अनुसार हरा रंग लकड़ी या वनस्पति और नीला एवं काला रंग जल का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए पूर्व दिशा में इन रंगों की उपस्थिति इस दिशा को ऊर्जावान बनाती है। सफेद और सिल्वर रंग धातु के प्रतिनिधि होने के कारण इस दिशा के लकड़ी तत्व को हानि पहुंचाते हैं। इसलिए फेंगशुई के अनुसार भवन के पूर्वी भाग में हरे, नीले तथा काले रंग के पेंट, फर्नीचर, पर्दे आदि का प्रयोग करना श्रेयस्कर तथा सफेद एवं सिल्वर रंग की वस्तुओं का प्रयोग करना वर्जित माना गया है।

- घर को नकारात्मक प्रभावों से मुक्त रखने के लिए घर को नमक के पानी से धोना चाहिए।
- प्रवेश द्वारों के ठीक ऊपर घड़ी अथवा कैलेण्डर नहीं लगाने चाहिए। क्योंकि इससे उन द्वारों से होकर आने जाने वालों की आयु पर कुप्रभाव पड़ता है।
- कमरों में पूरे फर्श को घेरते हुए कालीन आदि बिछाने से लाभदायक ऊर्जा का प्रवाह रुकता है।
- किताबें रखने की आलमारियों में दरवाजे होने चाहिए। यदि बिना दरवाजों के शेल्फ में किताबें रखी जाती है तो उनसे स्वास्थ्य को हानि होती है।
- घर के प्रवेश द्वार के एकदम सामने अथवा एकदम बराबर में शौचालय होने से घर में प्रवेश करने वाली लाभदायक ऊर्जा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- घर का कूड़ा-करकट कभी भी घर के मुख्य द्वार से ले जाकर बाहर नहीं फेंकना चाहिए। इससे स्वास्थ्य और धन पर कुप्रभाव पड़ता है।
- घर के मुख्य द्वार के सामने कोई भी बाधा (खंभा, सीढ़ियां, दीवार आदि) नहीं होनी चाहिए।
- किसी भी प्रत्यक्ष दिखायी देती बीम के ठीक नीचे सोने या बैठने से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है।
- यदि सोते समय शरीर का कोई अंग दर्पण में दिखाई देता है तो उस अंग में पीड़ा होने लगती है।
- सोते समय सिर या पैर किसी भी दरवाजे की ठीक सीध में नहीं होने चाहिए।
- जो घड़ियां बंद पड़ी हों, उन्हें या तो घर से हटा दें या चालू करें। बन्द घड़ियां हानिकारक होती हैं। ऐसी फेंगशुई की मान्यता है। उपर्युक्त बातों का ध्यान रखकर आप अपने जीवन और घर में नई ऊर्जा का संचार कर सकते हैं।

नोट-वास्तु का यह विद्या काफी गहन है। इसका पूर्ण विवेचन यहां संभव नहीं है। इसके लिए आप अपने घर, मकान, दुकान या फैक्टरी का इस वास्तु विशेषज्ञ से निरीक्षण करवा सकते हैं।

लेखक-पं. केवल आनन्द जोशी
डी.1/सी.-33ए, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
मो.-09868716447, 09810202780
Email:kajoshi46@yahoo.co.in;
kajoshi46@gmail.com

रमल ज्योतिष से जाने मकान का योग

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र से भवन निर्माण के वास्ते कि भाग्य में जीवन यापन हेतु मकान का योग है या नहीं? इस नियत से भावनात्मक स्थिति में रमल ज्योतिष शास्त्र के विद्वान के समक्ष सवाल करें। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के पासे जिसे अरबी भाषा में **कुरा** कहते हैं, विद्वान आचार्य द्वारा एक शुद्ध पवित्र स्थान पर डलवाए जाते हैं। यह कार्य प्रणाली विद्वान के सम्मुख होती है। यदि प्रश्नकर्ता विद्वान के सम्मुख नहीं हो तो एक नवीन शोध विधि **प्रश्न फॉर्म** के द्वारा भी यह कार्य सम्पादित किया जा सकता है। इन दोनों प्रश्न करने की विधि में अंतर अवश्य ही है। मगर गणित का फलादेश-समाधान समय आने पर एक ही आता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में नाम, माता-पिता का नाम, घड़ी, वार, तिथि, पंचांग की जरूरत भी नहीं होती है। मात्र पासे से ही सवाल का जबाव मय समाधान बराबर शीघ्र प्राप्त होता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में पासे डालने के उपरांत प्रस्तार यानि कि जायचे में जल तत्व बिन्दु और पृथ्वी तत्व बिन्दु की अधिकता हो तो अमुक जमीन जातक की जागृति अवस्था में होती है। यदि उक्त प्रस्तार में अग्नि तत्व बिन्दु और वायु तत्व बिन्दु की अधिकता हो तो अमुक जमीन जातक की सोती अवस्था में होना पायी जाती है। अमुक जातक को जाग्रती अवस्था वाली जमीन प्रस्तार के घरों के मुताबिक बलावल, शुभ-अशुभ, दृष्टि-कुष्टिता आदि को मद्दे नजर रखते हुए शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व भौतिक सुख-सुविधा साथ पारिवारिक स्थिति में भी शुभता का प्रतीक है। यदि उन घरों में विपरीत स्थिति हो तो सारी स्थिति प्रश्नकर्ता को जीवन भर विपरीत होकर हानिप्रद ही होगी। सवाल में इस स्थिति को सबसे पूर्व जानना अति आवश्यक है। जिससे कि मकान निर्माण होने से पूर्व की स्थिति की जानकारी हो सके। यदि प्रस्तार के 5वें घर, 6ठे घर में महान अशुभ शक्लें हों व बलावल भी निर्बलता हो तो क्रमांश संतान लाभ प्राप्ति नहीं होगी। अथवा कन्या रत्न की बरावर प्राप्ति होगी। अमुक मकान में निवासरत संतान और अन्य सदस्यों में आपस में मानसिक, आर्थिक तनावग्रस्त जीवन यापन की स्थिति पैदा होती रहेगी। यदि 5वें घर, 6ठें घर में पूर्णत: महान अशुभ शक्लें हों तो मकान का योग नहीं होना पाया जाता है। प्रश्नकर्ता के पास मकान लम्बे वक्त तक रहने का योग भी नहीं बनता है। यदि लग्न घर में शुभ कब्जुल दाखिल, अतवे दाखिल जो क्रमांश सिंह राशि, वृष राशि की शक्ल है, यह दोनों शक्लें महान शुभता की हैं। इनकी दृष्टि बरावर आ रही हो तो प्रश्नकर्ता के कई मकान प्रासि का योग पाया जाता है। जातक को सारे आनंद, सुख-शांति, धन-धान्य से पूर्ण, वैभवमय, मान-सम्मान, ख्याति का योग भी होना दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में मां सरस्वती और मां लक्ष्मी की असीम कृपा बरावर दोनों हाथों से होना दिखाई देती है। यह स्थिति प्रश्नकर्ता के 40 वर्ष से पहले ही प्राप्ति होना पायी जाती है।

यदि इसके विपरीत स्थिति होगी तो प्रश्नकर्ता बरावर विनाश व अनिष्ठता की ओर अग्रसर अनवरत रहने का योग बनता है। साथ ही 40 से पूर्व विनाश के कगार पर साथ ही चिन्ताग्रस्त, शोकाकुल स्थिति में होना दिखाई देता है।

मानव शरीर में बसने वाले नौ ग्रह

हिन्दू संस्कृति के दर्शन शास्त्र के मुताबिक नौ ग्रह मानव के शरीर के प्रत्येक अंगों में विद्यमान होते हैं। जैसे इंसान के माथे के बीच में सांस लेने वाली नाड़ी के एक उंगल नीचे की ओर सूरज होता है। ग्रहों का संबंध मानवीय चिन्तन से होता है। और चिन्तन का मस्तिष्क से होता है। यह जगह ज्ञान की चरम सीमा से संबंधित होती है। और चिन्तन सूरज का प्रतीक है। इसलिए हमारे ऋषियों-मुनियों ने सूरज का स्थान इंसान के माथे में निश्चय किया है। माथे के इस स्थान को **ब्रह्म-रंध्र** कहते हैं। महात्मा बुद्ध की ज्ञान-ज्योति माथे से प्रगट हुई थी।

ब्रह्म रंध्र से एक अंगुली नीचे सूरज का स्थान कहते हैं और उसमें एक अंगुली और नीचे की ओर चन्द्रमा का। चन्द्रमा ग्रह को इंसान की भावुकता से और चंचलता से जोड़ते हैं, साथ ही उसकी कल्पना शक्ति से भी। क्योंकि चन्द्रमा को सूरज से रोशनी लेनी पड़ती है। इसलिए इसका सूरज के साए के नीचे रहना जरूरी है। सूर्य का तेज यानि कि ज्ञान का उजाला जब चन्द्रमा पर पड़ता है। तब इंसान की शक्ति, ओज, वीरता चमकती है।

गरुड़ पुराण शास्त्र के मुताबिक मंगल ग्रह का स्थान मानव के नेत्रों यानि कि आंखों से माना जाता है। मंगल शक्ति का प्रतीक है। क्रोध का और प्रतिभा का भी दर्शक है, साथ ही खून से संबंध रखता है। मानव की आंख मन का शीशा होता है। जैसे शिव का तीसरा नेत्र उनके क्रोध का प्रतीक है। इंसान के मन की हालात को उसकी आंखों से साफ पढ़ा और समझा जा सकता है। इसलिए मंगल ग्रह का स्थान नेत्रों को माना गया है।

बुध ग्रह का स्थान मानव के हृदय में होता है। बुध ग्रह बौद्धिकता का प्रतीक है। वाणी का कारक भी है। हृदय में ही लहू (रक्त) छनता है, जो शरीर की सारी नाड़ियों की जान होती है। हमें किसी आदमी का कार्य-व्यवहार, काव्य शक्ति अथवा प्रवचन शक्ति जाननी हो तो हम रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के अनुसार बुध ग्रह को विशेष रूप से देखते हैं।

गुरु ग्रह का स्थान इंसान की नाभि में होता है। वृहस्पति देव वेद-पुराणों के ज्ञाता हैं। ये समस्त शास्त्रों के ज्ञाता साथ ही अथाह ज्ञान के प्रतीक होते हैं। आपने गौर से देखा होगा कि विष्णु की नाभि से कमल का फूल उगा हुआ दिखाया जाता है। जिस प्रकार से ब्रह्मा का आसन होता है और ब्रह्मा के हाथ में चार वेद होते हैं। इसलिए वृहस्पति का स्थान नाभि में है। गर्भवती स्त्री के गर्भ के बच्चे को सारी खुराक माता की नाभि से ही प्राप्ति होती है। नाभि संचार शक्ति का संचार है। इसलिए यह वृहस्पति का स्थान माना गया है।

शुक्र ग्रह का स्थान वीर्य में होता है। शुक्र दैत्यों के गुरु हैं। मानव की सृष्टि इसी कार्य से गतिमय है। इंसानी जिस्म की फालतू शक्ति आनंद के वास्ते काम वासना के रास्ते निकलती है। इसलिए इच्छा शक्ति का प्रतीक शुक्र ग्रह है। यह मानव के वीर्य में निवास करता है।

शनि ग्रह का स्थान नाभि गोलक में है। और नाभि में वृहस्पति यानि कि गुरु का ज्ञान का प्रतीक है। और चिन्तन का साथ ही ख्यालों की गहराई का भी है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा हमें किसी व्यक्ति के चिन्तन की गहराई देखनी हो तो उसकी चिन्तनशीलता देखनी होगी। हमें उसके शनि ग्रह की स्थिति कहां-कहां और किस प्रकार से कितनी स्थिति में है, यह स्थिति सूक्ष्म और गहन गणित द्वारा जाननी होगी। चिन्तन की चरम सीमा अथाह ज्ञान है। यदि किसी व्यक्ति द्वारा रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार यानि कि जायचा में एक ही स्थान पर शनि ग्रह और गुरु ग्रह एक निश्चित अनुपात में जो रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के गणित के मुताबिक हो, ऐसे व्यक्ति खोजी, वेद-पुराणों के ज्ञाता, शोधकर्ता साथ ही शास्त्रार्थ करने वाले व्यक्ति होते हैं।

राहु ग्रह का स्थान इंसान के मुंह में होता है। यह राहु ग्रह एक ऐसा ग्रह है, जिसका कोई दीन, ईमान, धर्म नहीं होता है। यह बिना पैंदे के लोटे के समान होता है। इसकी मित्रता अच्छे ग्रहों से होती है। और बुरे ग्रहों से भी होती है। उसका काम मात्र टांग अड़ाना है यानि कि बनते कार्य को बिगाड़ना होता है। इसलिए इसे जीभ पर स्थान दिया गया है। जिसका कोई भी भरोसा नहीं कि जीभ किस समय क्या और कैसे उच्चारण कर दे? यदि मंगल ग्रह की शक्ति पीछे हो तो जीभ गुस्से भरी वाणी, गंदी वाणी और वीरता पूर्ण वाणी बोलेगी। यदि बुध ग्रह की शक्ति पीछे हो तो अच्छी मधुर वाणी बोलेगी। यदि गुरु ग्रह की शक्ति पीछे हो तो ज्ञानवर्द्धक और शास्त्रार्थ की वाणी बोलेगी। यदि शुक्र ग्रह की शक्ति पीछे हो तो आशिकाना बातें करेगी। केतू ग्रह का स्थान हृदय से लेकर कंठ तक होता है। साथ ही केतू ग्रह का संबंध गुप्त चीजों से भी होता है। किसी भी कार्य बात के रहस्यों से भी होता है। इंसान भी कई बातों को कंठ तक लाकर रोक लेता है। वह अपनी जीभ पर भी नहीं लाता है। इसलिए केतू का होना अंदर ही अंदर गुप्त स्थान से माना गया है। इंसान के शरीर में यह सब नौ ग्रह अपनी-अपनी जगह पर निवासरत रहते हैं। मगर खून की गर्दिश के जरिये एक-दूसरे का प्रभाव ग्रहण करते रहते हैं। जैसे शरीर के अंग अपनी-अपनी जगह होते हैं। उसी तरह यह नौ ग्रह भी रहते हैं। यह सिर्फ तगड़े अंगों की शक्ल में कमजोर अंगों पर असर डालते हैं। मान लीजिए कि यदि पेट की खराबी से नाभि का शनि दुर्बल पड़ गया हो तो उस इंसान के माथे (ललाट) का सूर्य निस्तेज हो जाएगा। नेत्रों का मंगल विकृत हो जाएगा अथवा माथे का चन्द्रमा नीच का चन्द्रमा होकर पागल बना देगा।

परिलेखकर्ता-डॉ0 नरेन्द्र कुमार "भैया"
रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान
3, महल खास, किला-भरतपुर (राज0)
फोन-05644-223216 मो.-9414268172

भविष्य जानने की विद्यायें

प्रत्येक व्यक्ति को अपना भविष्य जानने की जिज्ञासा होती है। अतः वह इसके लिए भविष्य बताने वाली विद्याओं और उनके जानकारों से सम्पर्क करता है। भविष्य बताने वाली उन विद्याओं की यहां व्याख्या करूंगा। इनमें विदेशी विद्वानों गिब्स बंधुओं की पुस्तक आत्मा या जीव संबंधित विज्ञान (Psychic Scienc) का भी बड़ा योगदान है। यह विद्याएं निम्न हैं:

1. ज्योतिष विज्ञान

इसका उद्‌गम विज्ञान है-ग्रह एवं नक्षत्रों से जुड़ा खगोलशास्त्र। इसे साईन्स ऑफ हैवेन्ली बाडीज भी कहते हैं। वास्तव में यह ज्योतिष का गणित पक्ष है। पूरे विश्व में इसकी मान्यता है। भारत में इसके प्रमुख एवं प्रथम विद्वान **आचार्य आर्यभट्ट** थे। जिनके नाम से धर्मसन प्रकाशन, दिल्ली ने श्री आर्यभट्ट पंचांग आदि की रचना 25 वर्ष पूर्व की थी। और आज यह 27वें वर्ष में भी यह सफलता पूर्वक जारी है। सन् 476 ई. में प्राचीन भारतीय नगरी पाटलीपुत्र (पटना) में इनका जन्म हुआ था। गणित में शून्य के यह जन्मदाता थे। इनकी रचित कविता शैली में पुस्तिका **आर्यभटिया** में खगोल, ज्योतिष, अंकगणित, बीज गणित, त्रिकोणमिती आदि के 33 नियम हैं। अंतर्राष्ट्रीय खगोली एवं ज्योतिष संघ ने पिछले दिनों चांद के बड़े गड्ढे का नाम इन्हीं के नाम पर रखा है। 1975 में प्रक्षेपित प्रथम भारतीय उपकरण का नाम भी आर्यभट्ट था। सात वर्ष पूर्व नैनीताल की खगोलिय वेधशाला का नाम आर्यभट्ट प्रेक्षणात्मक विज्ञान एवं अनुसंधान हो गया है।

ऐसे महान विद्वानों (वराह मिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कर प्रथम एवं द्वितीय आदि) के अथक प्रयास से विकसित भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष विद्या के आधार पर इसके दो पक्ष गणित एवं फलित माध्यम से ग्रहों एवं नक्षत्रों द्वारा द्वादश भाव की जन्म कुण्डलियों का निर्माण करके जातक का भविष्य उसकी महादशाओं, अंतर्दशाओं और सूक्ष्म अंतर्दशाओं द्वारा बताया जाता है। प्रस्तुत विद्या में शुभ-अशुभ ग्रहों, उनकी दृष्टियें, युतियें तथा योगों आदि के फलित से भविष्य ज्ञान की यह विद्या विकसित हुई। आज राहु काल, काल सर्प योग आदि का महत्व बढ़ गया है। बाद में रावण संहिता, भृगु संहिता, लाल किताब, काली किताब, दक्षिण का नाड़ी शास्त्र आदि ने भी इसमें सहयोग दिया।

2. हस्तरेखा शास्त्र (पामिस्ट्री) या सामुद्रिक शास्त्र-

इसमें जातक की हथेली, उंगलियें, अंगूठों आदि पर पड़ी रेखायें (प्रमुख हैं-जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा, भाग्य रेखा एवं अन्य उर्वरक रेखायें), पर्वत, त्रिकोण, द्वीप, डमरू, त्रिशूल आदि के आधार पर एक कुशल हस्तरेखा विशेषज्ञ (जिसकी दृष्टि को एक्सरे आई कहा जाता है) जातक का भविष्य बताता है। भारतीय हस्तरेखा विज्ञान को सामुद्रिक शास्त्र का प्रमुख अंग कहा जाता है। पाश्चात्य पामिस्ट्री में वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों का बड़ा योगदान है। कीरो आदि विद्वानों ने इसे भारतीय सामुद्रिक शास्त्र से भी जोड़ा। कद्दे, मोटे अंगूठे वालों को अपराधी निर्धारित किया। इस प्रकार अंगूठे के द्वारा व्यक्ति का चरित्र गठित हुआ। हथेली के गुलाबी रंग की रेखाओं समेत श्रेष्ठ माना गया। पीले, धूमिल रंग उसके बाद माने गये। हांथों का कठोर और मुलायम होना भी जातक की विशेषता बताता है। तीसरा पामिस्ट्री का रूप पूर्वी मुस्लिम देशों में **इल्म-उल-काफ** के नाम से विकसित हुआ। पर यह तीनों ही भविष्य बताने में भारतीय ज्योतिष के नियमों को मानते हैं। क्योंकि यहां भी ग्रह स्थित हैं।

3. अंक ज्योतिष (न्यूमेरोलाजी)

इसमें नाम के शब्दों, जन्म तिथियों, माहों, सन्, वार आदि के अंकों के आधार पर भविष्य बताया जाता है। मूलांक और भाग्यांक प्रमुख होते हैं। ग्रहों आदि के अंक निर्धारित हैं। सूर्य का एक, चन्द्र का दो, मंगल का नौ, बुध का पांच, गुरु का तीन, शुक्र का छः, शनि का आठ, राहु, केतु, हर्षल एवं वरुण चार व सात के अंतर्गत आते हैं। इनकी संख्या एक से नौ तक की है। यदि अधिक होती है तो उन्हें जोड़कर 1 से 9 के बीच कर लेते हैं। इनमें नौ का ही अंतर होता है। इन संख्या के द्वारा स्वभाव, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, स्वास्थ्य, कार्य, जय-पराजय, शुभ-अशुभ का निर्धारण किया जाता है। कमोवेश ज्योतिष से जुड़ी विद्या है।

4. मुखाकृति ज्ञान

इसके द्वारा भी जातक के भविष्य की जानकारी दी जाती है। यह भी सामुद्रिक शास्त्र से जुड़ी रहस्यपूर्ण विद्या है। यह मानवीय अंग लक्षणों का वृहद एवं सम्पूर्ण प्रमुख ज्ञान है। वराह मिहिर ने इसके 13 तत्व कहे, बाद में एक तत्व और जुड़ गया। मानवीय चेहरों के आकार, बाह्य रूप से ज्योतिषिय आकारों में, जानवरों आदि से मिलते हुए, विभिन्न ग्रह प्रधान भविष्य का दर्पण स्वभाव अनुसार होते हैं।

5. लेखन व हस्ताक्षर

इसके द्वारा भी भविष्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। क्योंकि दो व्यक्तियों की हांथ की रेखायें समान नहीं होतीं। उसी प्रकार उसका लेखन एवं हस्ताक्षर भी समान नहीं होते। जातक के चारित्रिक गुण-दोष, उसकी प्रवृति इससे पता चलती है। आजकल हस्तलेख जानकार का न्याय व्यवस्था में बड़ा महत्व है। इसमें अक्षरों की बनावट, उस पर रेखायें, बिन्दु, टूटना और लहरदार होना प्रमुख स्थितियां हैं। इनका सूक्ष्म अध्ययन करके व्यक्ति विशेष और उसके भाग्य का निर्णय किया जाता है।

6. टेरो कार्ड एवं अन्य कार्ड

इसके द्वारा भी भविष्य बताया जाता है। टेरो कार्ड में 78 कार्ड (22 प्रमुख और 56 सहायक) की संख्या एवं नामों के आधार पर भविष्य का निर्धारण जातक द्वारा कार्ड उठवाने के बाद होता है। सम्वत् 2063 के आर्यभट्ट पंचागम् में मेरे लिखे लेख से विस्तृत जानकारी प्राप्त करें। ताश के 52 प्लस एक.जोकर पत्तों के अलग-अलग समूहों में पत्ते उठाने से भी भविष्य की जानकारी उसके नियमों से होती है।

7. पांसों द्वारा रमल विद्या

इसमें पांसे फेंककर उसके बिन्दुओं के योग के आधार पर 16 कोष्ठकों के निर्धारित फलों को देखकर भविष्य साबित, खारिज, दाखिल, मुकविल स्थितियों में भविष्य बताया जाता है। इसके भारतीय संस्करण में अपने इष्टदेव को याद करके अपने प्रश्न के उत्तर के लिये 108 बार एक मंत्र 'ऊँ नमो भगवती देवी' का जाप करते हुए पांसे फेकते हैं।

8. स्वप्न विचार

यह केवल यह स्वप्न देखो तो यह होना ही नहीं है वरन् इसका विस्तृत रूप है। कौन सा स्वप्न कब देखा, उसका क्या प्रभाव होगा आदि। कुछ स्वप्न जो याद रहते हैं उनके ही विश्लेषण द्वारा भविष्य जाना जाता है।

9. अन्य कुछ विद्याओं में रंगो द्वारा, विभिन्न संसाधनों द्वारा जैसे-दर्पण ताल, पैण्डलम आदि द्वारा, शरीर फलित देखकर, श्री रामचरित मानस के 225 कोष्ठकों में श्री राम शलाका द्वारा, श्री हनुमान ज्योतिष द्वारा, गौतमी केवली महाविद्या द्वारा, चीनी ज्योतिष द्वारा, पशु चिन्हों के आधार पर, पशु-पक्षियों द्वारा गाय, नन्दी, तोता, रीछ आदि के समक्ष प्रश्न बोलकर। पिछले वर्ष विश्व हाकी कप के जर्मनी में परिणाम एक एप्पयरास मछली द्वारा सत्य हुए थे। इस प्रकार भविष्य जानने की विद्याएं अनेकों हैं, केवल जातक के विश्वास पर निर्भर है।

लेखक : पं. लक्ष्मी शंकर शुक्ल 'लक्ष्मेष'
लक्ष्मेष ज्योतिष केन्द्र
टाईप 101/बी., रेलवे बंगला,
भुसावल (महाराष्ट्र)-425201 मो : 09423935938

सर्व विध रक्षा हेतु 'श्री राम रक्षा यंत्र'

संसार में अनेकों चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं-महाराज राम को छोड़कर किसी भी शासन में कृषि कला परिपूर्ण नहीं थी। रामराज्य में खेती खूब फली-फूली। न कभी अतिवृष्टि या सूखा पड़ा, न अधिक ताप से फसल जली। टिड्डी तथा चूहों का भी प्रकोप नहीं था। एक बार बीज बोने के बाद फिर बोने की आवश्यकता नहीं थी। जावा में अब भी एक वर्ष बोकर दस वर्ष तक काटते हैं। जब सब नर-नारी, देव-पितर, पशु-पक्षी अनाज से तृप्त हो जाते, तो बचा अनाज खाद रूप में खेत में डाला जाता था। उनके राज्य में कृषि के लिए बाहरी साधन के रूप में जुताई, खाद, निकाई और सिंचाई का समुचित प्रबन्ध किया जाता था। नव सम्वत् पर नागरिक सामूहिक यज्ञ करते थे। जिससे भीतरी साधन सम्पन्न होते थे। गणेश, सूर्य, वायु, पृथ्वी, इन्द्र इनकी प्रमुख पूजा होती थी। वैदिक मंत्रों में भी मुख्यतया: इन्हीं की पूजा होती थी। गणेश-चूहा, टिड्डी, दीमक से रक्षा करते थे। सूर्य-किरणों द्वारा खेती का पोषण करते थे। वायु-अनुकूल समय पर बादलों को मानसून रूप में लाते थे। पृथ्वी-अपने गर्भ से उर्जा को देती थी। इन्द्र-समय पर जल की उचित वर्षा करते थे।

इन्हीं चक्रवर्ती सम्राट मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का आज भी स्मरण व जप-यंत्र-मंत्र इतने महत्वपूर्ण हैं जितने अन्य किसी के नहीं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि उनके राज्य में किसी भी प्राणी को कोई भी मानसिक दुःख भी नहीं था-

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नाहीं काहुहि व्यापा।।

स्वयं 21 बार पृथ्वी से परशुराम ने दुष्ट, अन्यायी राजाओं को ढूंढ-ढूंढकर मात्र फरशा की सहायता से वध किया। उनका कहना था-राजा प्रजा का रक्षक है, प्रजा का सेवक है, प्रजा तनिक भी यदि दुःख पावे तो राजा को राज्य करने का अधिकार नहीं है। इसी सिद्धांत के विरोधी राजाओं को मार-मारकर पृथ्वी को भयहीन किया था। जब भगवान राम ने सीता स्वयंवर के समय धनुष भंग के समय, वाद-विवाद हुआ तो राम के उच्च आदर्श, प्रजापालक गुण देखकर ही उन्हें क्षमा किया। अतः आज भी सर्वविध रक्षा के लिए श्रीराम रक्षा यंत्र राज और राम रक्षा स्तोत्र का उपयोग किया जाता है।

श्री राम रक्षा यंत्र-श्री राम रक्षा यंत्र अगस्त्य संहिता में दिया हुआ है। इस यंत्र को धारण किया जा सकता है। ताम्रपत्र पर अंकित कर किसी पवित्र जगह रखा भी जा सकता है। अगस्त्य संहिता के अनुसार वज्र पंजर नामक श्री राम रक्षा यंत्र को धारण से सर्व सिद्धियां उपलब्ध होती हैं। पाप व आपत्तियां समूल नष्ट हो जाते हैं। शत्रु मित्रवत् व्यवहार करते हैं। क्रूर ग्रह भी प्रसन्न एवं शांत हो जाते हैं। राज्य अधिकारियों से अनुकूलता प्राप्त होती है। श्री राम रक्षा यंत्र के पूजन व धारण से कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं रह जाता। अगस्त्य ऋषि के अनुसार स्वर्णपत्र पर अंकित यंत्र जीवन पर्यन्त, चांदी पत्र पर 20 वर्ष, भोजपत्र पर 12 वर्ष, ताम्र पत्र पर 6 वर्ष तक प्रभावी रहता है। उपासक अपनी शक्ति के अनुसार यंत्रराज को बनाकर या लिखकर प्राण प्रतिष्ठा कर धारण करें। राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करते हुए प्रतिदिन तुलसी मंजरी एवं तुलसी पत्र अर्पण करें। यह प्रयोग आयु, आरोग्य, पुत्र-पौत्र आदि को देने वाला है।

श्री राम रक्षा स्तोत्र-यह पुस्तिका गीता प्रेस से प्रकाशित है। मात्र 3 मिनट का पाठ है। सर्वविध रक्षा के लिए प्रतिदिन पाठ करना चाहिए। जो व्यक्ति वायुयान, जलयान, रेलयान या मार्गयान से निरन्तर जाते हों, उन्हें श्री राम रक्षा स्तोत्र का पाठ कंठस्थ कर प्रवास में अवश्य पढ़ना चाहिए। या फिर छोटी सी पुस्तिका साथ में जेब में रख सकते हैं। इस स्तोत्र में पूर्ण पुरुषोत्तम सीताराम एवं उनकी समस्त शक्तियां, उनके मित्र और सेवक हनुमान आदि से अपने अंग-प्रत्यंग की रक्षा और सर्वविध सुख की कामना की गई है। इसको बुध कौशिक ऋषि ने स्वप्न में प्राप्त किया था, जो सर्व जन कल्याण के लिए ऋषि ने लिपिबद्ध किया। इसका पाठ करने से पूर्व हनुमान जी का भक्ति भाव से स्मरण या हनुमान चालीसा का पाठ करने से इसकी शीघ्र सिद्धि होती है।

श्री राम स्तोत्र को सिद्ध करने के लिए वर्ष में दो बार नवरात्र आते हैं। एक चैत्र मास में रामनवमी से पहले तथा दूसरा आश्विन मास में दशहरा से पूर्व। इन मितियों में प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत होकर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, कुश के आसन पर, उत्तर या पूर्व की ओर मुखकर श्री राम दरबार का चित्र सामने रखकर तुलसी, चन्दन, पुष्पादि, अग्नि को स्थापित कर प्रतिदिन 11 पाठ का नौ दिन लगातार पाठ करें। पाठ के समय दीपक, धूप इत्यादि का भी प्रयोग प्रतिपदा से लेकर नवमी तक करें। जितनी आपकी श्रद्धा होगी उतनी शीघ्र ही सिद्धि आपको होगी। इसके बाद आपको प्रतिदिन केवल एक पाठ कण्ठाग्र से करना है। यही स्तोत्र के सिद्ध होने के लक्षण हैं।

श्री रामरक्षा स्तोत्र द्वारा रोग निवारण विधि

इस स्तोत्र की पाठ विधि ही रोग निवारण की क्षमता रखता है। किसी रोग के निवारणार्थ अभिमन्त्रित जल से रोगी का मार्जन करना होता है। कमल, गुलाब या रक्त कनेर या कोई सुगन्धित लाल पुष्प उसकी प्राकृत दशा में लेना चाहिए। प्राकृत दशा का अर्थ है-गीले वस्त्र में लपेटना, सूंघना, धोना या गंदे हाथों से छूते ही उनकी प्राकृत दशा समाप्त हो जाती है। सर्वप्रथम रोगी के पास जल से भरकर लोटा तांबा या पीतल का रख दें। फिर नवरात्र में सिद्धि की गई पुस्तक और यंत्र के सामने 11 या 21 पाठ पूर्ण कर पुष्प यंत्र पर रखकर चार पुष्प लोटे में इस प्रकार डालें ताकि पुष्प तैरते रहें। फिर हाथ में पुष्प लेकर लोटे के जल से स्पर्श कराकर भगवान श्री राम व उनकी शक्तियों का ध्यान करके रोगी के सिर से पांव तक पुष्प से हल्की सी छींटें दें। ऐसा 11 बार करके पुष्प को यंत्र के चरणों में रखकर लोटे वाले चारों पुष्प रोगी के सिरहाने रख दें। ज्यों-ज्यों रोग ठीक होता जायेगा, त्यों-त्यों पुष्प सूख जायेंगे। सूखे पुष्प गाड़ देना चाहिए तथा यंत्र वाला पुष्प जल में प्रवाहित कर दें। कठिन और दुःसाध्य रोग होने पर मार्जन कई बार किया जा सकता है। पुस्तिका न मिलने पर मंगाने को मुझे लिख सकते हैं।

लेखक : डॉ. कमल प्रकाश अग्रवाल
श्री धाम, 47-हुसैनी बाजार, चन्दौसी-202412
मो : 09927311629, 09412140444

स्वप्न से भविष्य जानिये

प्रायः निद्रा सुखदायिनी मानी गयी है। किन्तु व्यथित एवं निराश व्यक्तियों के लिए तो वह एक वरदान है, जहां जाग्रत अवस्था में द्वन्द्व एवं संघर्ष निद्रा के सुखद अंचल में नष्ट हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में स्वप्न को मन का क्रीड़ागार कहना उचित होगा। क्योंकि जाग्रत अवस्था में मनुष्य का मन प्रतिरोधकों द्वारा दबा पड़ा रहता है। और निद्रा उन प्रतिरोधकों को शिथिल कर देती है। जिसके परिणामस्वरूप मन सहज निद्रा लोक में विचरण करने लगता है। स्वप्न शारीरिक और मानसिक उत्तेजना के प्रतिफल होते हैं।

संस्कृत में स्वप्न शब्द का अर्थ है-अपने आप में रमण करना या निद्रावस्था में वस्तुदर्शन। अन्य मानसिक क्रियाओं के समान यह भी सामान्य चेष्टा या अनुभव है जिसकी अनुभूति प्रत्येक व्यक्ति को होती है। गीता में कहा है-जो अकर्मण्य है वह स्वप्न में है, किन्तु

कर्मशील सत्य में ही विचरण करता है। कोई मनुष्य बिना स्वप्नों के जीवित नहीं रह सकता यदि वह जीवित है, सक्रिय है तो यह निश्चित है कि वह किसी न किसी रूप में स्वप्न देखता है।

फ्रायड के मत से सारी वासनाओं में प्रमुख और मूलभूत काम वासना है। वह इतनी प्रबल और उग्र होती है कि उसका रंग जीवन पर चढ़े रहता है। वैसे गीता में भी इस बात का उल्लेख है-**कियमन्यत् काम हेतुकं** अर्थात् सारी सृष्टि वासना इच्छा से ही उत्पन्न हुई है। स्वप्न भी एक प्रकार की स्वैर कल्पना है जिसको दिवा स्वप्न की भांति व्यक्तिगत समस्याओं से ही शक्ति मिलती है। फ्रायड ने स्वप्नों को इच्छापूर्ति का साधन तथा नींद का रक्षक माना है।

जैविक प्रेरणाओं की संतुष्टि सोते हुए अहं (इगो) से की जाती है। कभी-कभी यह शंकाओं, अंतर्द्वन्द्वों अथवा समस्याओं के समाधान का निर्णय लेने की असमर्थता होती है। फ्रायड के अनुसार सोता हुआ अहं नींद बनाये रखना चाहता है। वह इस मांग को एक प्रकार का विघ्न मानता है तथा उससे छुटकारा पाने का प्रयास करता है। ऐसा वह उन परिस्थितियों में इस मांग में सन्निहित इच्छा की पूर्ति कर उससे पा लेता है। इच्छा पूर्ति द्वारा मांगों का प्रतिस्थापन स्वप्न कार्य की प्रमुख प्रक्रिया है। जब कुण्ठा से उत्पन्न शत्रुभाव शत्रुता पूर्ण में व्यक्त नहीं हो पाता, तो वह बहुधा स्वैर कार्यों में व्यक्त होता है।

महर्षि पतंजली के समाधिवाद की व्याख्या के अनुसार स्वप्न अर्द्ध निद्रावस्था है। जब तमोगुण की प्रधानता होती है। तब सारी वस्तुएं अस्थिर रूप से दिखाई देती हैं। और जागने पर उनकी स्पष्ट स्मृति नहीं रह पाती। स्वप्नावस्था में जब रजोगुण अधिक होता है उस समय जाग्रत दशा में देखे हुए पदार्थ अथवा घटनायें रूपांतरित होकर दृष्टिगोचर होती हैं। और उनकी स्मृति जागने पर भी रहती है। जो स्वप्न घटित हो जाते हैं, वे सात्विक कहलाते हैं। ऐसे स्वप्न उत्तम कोटि के माने जाते हैं। यह अवस्था प्राय: योगियों की होती है और कभी-कभी साधारण लोगों को भी सत्व के उदय होने पर ऐसे ही स्वप्न दिखाई देते हैं। स्वप्न का पूर्वाभास होने पर भविष्यवाणी की जा सकती है।

परामनोविज्ञान के अंतर्गत सूक्ष्म शरीर का अध्ययन किये बिना स्वप्न विज्ञान को पूर्णत: समझना जटिल है। मनोविज्ञान के अनुसार जब बाहर के कार्यों से स्थूल शरीर स्थूल जगत में कार्य करने में असमर्थ हो जाता है तो तमोगुण से दबा हुआ सूक्ष्म शरीर जाग्रत अवस्था की स्मृति के कल्पित विषयों में कार्य करना प्रारंभ करता है, वह स्वप्न कहलाता है। शरीर या आत्मा के दो भेद हैं-(1) स्थूल (2) सूक्ष्म। इसमें स्थूल आवरण मनुष्य की स्थूल देह ही है। इस स्थूल जगत को छोड़कर जब गहन दृष्टि से देखते हैं तब शरीर के अंदर पांच ज्ञानेन्द्रियां (नासिका, चक्षु, श्रोत्र, त्वचा, जीभ), पांच कर्मेन्द्रियां (हस्त, पाद, गुदा, उपस्थ, वाणी), ग्यारहवां मन (जिसके द्वारा यह सब शक्तियां काम करती हैं तथा जिससे संकल्प-विकल्प होते हैं), पांच तन्मात्राओं (स्पर्श, शब्द, रूप, रस, गन्ध) तथा इसके अतिरिक्त प्राण (चेतना) और अहंकार (अर्हता) पैदा करने वाली शक्ति, बुद्धि, चित्त सहित निर्णय करने वाली तथा भावी और संस्कारों को रखने वाली शक्ति, यह अठारह शक्तियों का समूह सूक्ष्म शरीर कहलाता है।

भारतीय मतानुसार स्वप्न का संबंध मन से है। मन को चार भागों में विभक्त किया गया है-1. मन वहिर्मन, 2. चित्त अंतर्मन, 3. बुद्धि निर्णायक मन, 4. अहंकार संचालक मन। जबकि पाश्चात्य जगत अंतर्मन और वहिर्मन यह दो विभाग मानकर मन का विश्लेषण करता है। साधारणतया मनुष्य की तीन अवस्थायें मानी जाती हैं-जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। लेकिन स्वप्न मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-1. जाग्रतावस्था स्वप्न व 2. निद्रावस्था स्वप्न।

पहले प्रकार के स्वप्न कवियों, दार्शनिकों एवं प्रेमी-प्रेमिकाओं के होते हैं। प्रेमी जाग्रत अवस्था में अपनी प्रेमिका के बारे में सोचता है और फिर कुछ क्षणों में वह उसके सामने साकार सी हो जाती है। तन्मयता के उन क्षणों में वह उसके एक-एक हाव-भाव, एक-एक चेष्टा देखता है। इसे दिवा स्वप्न भी कहते हैं। दूसरे प्रकार का स्वप्न है-निद्रावस्था स्वप्न। जब हम शरीर को शिथिल छोड़कर पूर्ण विश्राम की स्थिति में होते हैं, तब भी स्वप्न आते हैं। कभी तो वह स्वप्न हमारे भौतिक जगत के होते हैं, कभी वे अद्भूत और अनोखे होते हैं। इन स्वप्नों को तीन भागों में बांट सकते हैं। चित्त और अहंकार तो जागता रहे, किन्तु बुद्धि और मन सोता रहे, यह साधारण स्वप्न की अवस्था है। जिसमें अतृप्त वासनायें या इच्छायें किसी न किसी माध्यम से तृप्ति पाती हैं। विशेष स्वप्न में भी अवस्था तो यही रहती है किन्तु चित्त, मन के समान बुद्धि को प्रभावित करने लगता है। सामान्य स्वप्न में चित्त अहंकार को प्रभावित न करके अपने आप ही उधेड़बुन करता रहता है। इन स्वप्नों में मनुष्य विभिन्न प्रकार की कल्पना करता है। जैसे-पहाड़ पर चढ़ना, हवाई जहाज पर सैर, अंतरिक्ष में उड़ना, तारे तोड़ना, देवताओं के दर्शन करना आदि। यह स्वप्न देवताओं और पूज्यों की कृपा से दिखाई देते हैं। तीसरे भविष्य सूचक स्वप्न तब होते हैं, जब विशेष स्वप्न की अवस्था में बुद्धि भी जाग्रत रहती है। और केवल मन ही सोता है। इस प्रकार के स्वप्नों में घटनायें प्रतीकात्मक या स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। जिनका निकट भविष्य से संबंध हो। यहां एक बात स्मरणीय है कि बुद्धि और मन दोनों पृथक हैं। इन दोनों में अंतर बताने के लिए महाभारत में-व्यवसायात्मिका बुद्धि मनो व्याकरणात्मके (महाभारत शांति पर्व 251, 11) अर्थात् बुद्धि व्यवसात्मिका और मन व्याकरणात्मक है। ब्रह्म मुहूर्त में देखे गये स्वप्न ही शुभ माने जाते हैं। ऐसा अनुमान है-ब्रह्म मुहूर्त में देखे गये स्वप्नों का [illegible] मास में ही फल मिल जाता है। यदि पहला स्वप्न खराब फिर अच्छा दिखाई दे तो पहले स्वप्न का फल न मिलकर बाद के स्वप्न का फल मिलता है। इसी कारण जब कभी शुभ स्वप्न दिखाई दे तो उठकर बैठ जाना चाहिए और मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रसन्न रहना चाहिए। 11 अप्रैल 1865 की एक शाम व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति लिंकन और उनकी पत्नि को लिंकन की मृत्यु का पूर्वाभास स्वप्न द्वारा हो गया था।

विज्ञान कोई सपना नहीं है यथार्थ है लेकिन सपने से विज्ञान का संबंध है। यह बात सिलाई मशीन के आविष्कारक **एलियासहो** ने कर दिखाई। ऐलियासहो वर्षों तक सिलाई मशीन बनाने की कोशिश में लगा रहा पर सुई में धागा कहां डाला जाय, यह प्रश्न उसे विफल बना रहा था। एक दिन स्वप्न देखा कि जंगली जाति के सैनिक उसे पकड़कर अपने राजा के सामने ले गये हैं। 'हो' से राजा कह रहे हैं कि 24 घंटे में मशीन चालू नहीं हुई, तो उसे भाले से मार दिया जायेगा। तभी 'हो' ने देखा चारों ओर भालेदार सैनिकों से घिरा हुआ है। बीच में आग जल रही है। जिसकी रोशनी में भाले चमक रहे हैं। अचानक 'हो' का भय काफूर हो गया। उसने देखा कि भालों के अगले सिरों पर छेद हो रहे थे। 'हो' की आंख खुल गयी और समस्या का समाधान हो गया। उसने सुई के निचले सिरे में छेद कर सुई को मशीन में जोड़ा, तो मशीन चालू हो गयी।

जब एक ही स्वप्न बार-बार आये, तो इसका कारण यह होता है कि उसका उपचेतना उस दृश्य को तब तक दोहराता रहता है, जब तक कि बुद्धि उसके संकेतों को ग्रहण न कर लें। एक ही स्वप्न बार-बार आये, तो समझना चाहिए कि उसमें कुछ गूढ़ संकेत हैं। जिसका संबंध हमारी प्रमुख समस्या के साथ है या पूर्व जन्म की स्मृति सूक्ष्म शरीर में बनी हुई है। स्वप्न द्वारा पूर्व ज्ञान एवं स्वप्न द्वारा परिचित ज्ञान से किसी व्यक्ति के लिए स्वप्न के आदेश या भाव कुछ भी भेजा जा सकता है। यह इच्छा शक्ति (विल पावर) से संभव है। स्वप्न से वशीकरण और सम्मोहन भी संभव है। स्वप्न संबंधी रोगों में अनिद्रा, नींद में उठकर चलना प्रमुख है। कुछ उपचारक स्वप्नों का हाल सुनकर रोगी का इलाज करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि स्वप्न रोगों के उपचार में प्राथमिक सहायता की तरह काम आ सकता है। मानसिक उपचार में तो स्वप्न का हाल मालूम करके ही उपचार होता है।

अंत में आचार्य रजनीश के शब्दों में अपने स्वप्नों का निरीक्षण करो और उनका विश्लेषण करो, क्योंकि कल तुम जो बनोगे और होओगे, उसकी भविष्यवाणी अवश्य ही उनमें छिपी होगी।

लेखक - वरूण चक्रपाणि
चक्रपाणि हर्बल रिसर्च फाउण्डेशन
श्रीधाम, 47-हुसैनी बाजार, चन्दौसी-202412 (उ.प्र.)
मो. : [illegible]

पृष्ठ 27 का शेष

अथ सर्व देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
26 अप्रै.	वैशा.	शु.5	गुरु	मृग.	ल. अभिजित
28 ''	''	शु.7	शनि	पुन.	ल. अभिजित
30 मई	ज्येष्ठ	शु.9	बुध	उ.फा.	ल. कन्या
31 ''	''	शु.10	गुरु	हस्ते	ल. अभिजिते
21 जून	आषा.	शु.2	गुरु	पुन.	ल. अभिजिते
22 जून	''	शु.3	शुक्र	पुष्य	ल. अभिजिते
29 ''	''	शु.10	शुक्र	स्वा.	ल. अभिजिते
6 जुला.	श्राव.	कृ.3	शुक्र	धनि.	ल. अभिजिते
8 ''	''	कृ.5	रवि	शत.	ल. कन्या 11।32 तक
9 ''	''	कृ.6	सोम	उभा.	ल. कन्या 12।38 उप.
17 जन.	पौष	शु.6	गुरु	उभा.	ल. अभिजित
18 ''	''	शु.7	शुक्र	रेव.	ल. अभिजित
23 ''	''	शु.12	बुध	मृग.	ल. मीन,वृष
27 ''	''	शु.15	रवि	पुष्य.	ल. अभिजिते
31 ''	माघ	कृ.4	गुरु	उफा.	ल. अभिजिते
1 फर.	''	कृ.5	शुक्र	हस्त	ल. अभिजित

अथ उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
2 अप्रै.	चैत्र	शु.10	सोम	पुष्य	ल. मेष
4 ''	''	शु.12	बुध	पूफा.	ल. मेष, वृष
26 ''	वैशा.	शु.5	गुरु	मृग.	ल. अभिजिते
31 मई	ज्ये.	शु.10	गुरु	हस्त	ल. कर्क
21 जून	आषा.	शु.2	गुरु	पुन.	ल. अभिजित
22 ''	''	शु.3	शुक्र	पुष्य	ल. अभिजित
16 जन.	पौष	शु.5	बुध	पूभा.	ल. मेष
23 ''	''	शु.12	बुध	मृग.	ल. मीन, मेष
28 ''	माघ	कृ.1	सोम	श्लेषा	ल. अभिजित
1 फर.	''	कृ.5	शुक्र	हस्त	ल. कुंभ

अथ द्विरागमन मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ.11	सोम	धनि.	ल. अभि. 12।30 तक
26 ''	''	शु.5	गुरु	मृग.	ल. मिथुन
19 नवं.	कार्ति.	शु.6	सोम	श्रव.	ल. मीन
23 ''	कार्ति.	शु.10	शुक्र	उभा.	ल. अभिजित
29 नवं.	मार्ग.	कृ.1	गुरु	रोहि.	ल. अभिजित
30 ''	''	कृ.2	शुक्र	मृग.	ल. अभिजित
3 दिसं.	''	कृ.5	सोम	पुष्य	ल. मीन
10 ''	''	कृ.12	सोम	स्वा.	ल. अभिजित

अथ मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
16 अप्रै.	वैशा.	कृ.11	सोम	धनि.	ल. मिथुन
26 ''	''	शु.5	गुरु	मृग.	ल. अभि. 12।38 तक
31 मई	''	शु.10	गुरु	हस्ते	ल. अभिजित
15 जून	आषा.	कृ.11	शुक्र	अश्वि.	ल. अभि. 12।53 तक
1 फर.	माघ	कृ.5	शुक्र	हस्त	ल. मीन (चं. 7 पू.)

अथ अक्षरारंभ व विद्यारंभ मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
18 अप्रै.	वैशा.	कृ.12	बुध	पूभा.	ल. मिथुन (विद्यारंभ)
26 ''	''	शु.5	गुरु	मृग	ल. अभि.12।38तक (विद्या)
27 ''	''	शु.6	शुक्र	आर्द्रा	ल. अभिजित
31 मई	''	शु.10	गुरु	हस्त	ल. मिथुन, अभिजित
15 जून	''	कृ.11	शुक्र	अश्वि.	ल. अभि. 12।53 तक
17 जन.	पौष	शु.6	गुरु	उभा.	ल. अभि. (विद्यारंभ)
23 ''	''	शु.12	बुध	मृग.	ल. मीन (विद्यारंभ)
1 फर.	माघ	कृ.5	शुक्र	हस्त	ल. अभिजित
7 ''	''	कृ.12	गुरु	मूल	ल. मीन (विद्यारंभ)

अथ विप्पणी (दुकान) करण मुहूर्त्ता: सं. 2069 वि.

दिनांक	मास	पक्ष ति.	वार	नक्षत्र	लग्न शुद्धि समय (स्टै.टा.)
20 अप्रै.	वैशा.	कृ.13	गुरु	उभा.	ल. मेष
26 ''	''	शु.5	गुरु	मृग.	ल. मिथुन, अभि. 12।38 तक
22 जून	आषा.	शु.3	शुक्र	पुष्य	ल. सिंह, तुला
27 ''	''	शु.8	बुध	हस्त	ल. तुला
24 नवं.	कार्ति.	शु.11	शनि	रेव.	ल. अभिजिते
28 ''	''	शु.15	बुध	रोहि.	ल. कर्क
29 ''	मार्ग.	कृ.1	गुरु	रोहि.	ल. अभिजित
30 ''	''	कृ.2	शुक्र	मृग.	ल. अभिजित
3 दिसं.	''	कृ.5	सोम	पुष्य	ल. अभिजित
9 ''	''	कृ.11	रवि	चित्रा	ल. मकर, अभिजित
17 जन.	पौष	शु.6	गुरु	उभा.	ल. अभिजित
18 ''	''	शु.7	शुक्र	रेव.	ल. अभिजित
19 ''	''	शु.8	शनि	अश्वि.	ल. अभिजित
23 ''	''	शु.12	बुध	मृग.	ल. मीन
27 ''	''	शु.15	रवि	पुष्य	ल. मीन
1 फर.	माघ	कृ.5	शुक्र	हस्त	ल. अभिजिते

(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः)

पंचकों में क्या करें और क्या न करें ?

पंचक नक्षत्र-धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्रों के योग में पंचक कुंभ+मीन राशि के चन्द्र संचरण में ज्योतिषीय गणना से इन पांचों नक्षत्रों का पंचक नाम से सम्बोधित किया गया है। इन दिनों में यानि पंचकों में क्या नहीं करें और क्या करें? का प्रश्न जन मानस में उत्तरोत्तर चर्चा में रहता है। तथा पंडित जी से पूछते हैं-अभी पंचक तो नहीं है। उनका हां-ना का जबाब सुनकर आगे क्या करना है, क्या नहीं करना है, स्वयं इससे अनभिज्ञता के साथ कार्य की क्रियान्वित में भ्रमित हो जाता है। अतः ज्योतिषीय नक्षत्रों की 27 की गणना में 1 से 22 नक्षत्र व बाद 23वें से 27 वें नक्षत्रों को पंचक की संज्ञा दी गयी है। साधारणतः पंचकों में मुख्य रूप से शवदाह, चारपाई बुनना, पलंग शय्या, चटाई, कुर्सी, तखत, व्यवसाय हेतु गद्दी तैयार करना या कराना, मकान की छत डालना, लैण्टर-खम्बे सेट करना, काष्ठ, इंधन, लोहे के सरिये संग्रह करना तथा दक्षिण दिशा में यात्रा, दक्षिण मुखे नये भवन की सीढ़ियों पर चढ़ना वर्जित है। मृत्यु, व्याधि, अन्यान्य व्यथा, रोगोपद्रव होने पर शांति विधान की आवश्यकता पड़ती है। इन कार्यों में पंचक नहीं होने चाहिए। तथा शुभ कार्य, वाहनादि लेन-देन, फर्म का संचालन, मूर्ति प्रतिष्ठा आदि सभी श्रेष्ठ मुहूर्त्तों में पंचक पांचो नक्षत्र शुभ माने गये हैं। सभी व्रतोत्सव, महोत्सव यथा रक्षा बंधन, भैय्या दूज, महालक्ष्मी पूजनादि में पंचकों पर विचार नहीं किया जाता है।

पृष्ठ 34 का शेष

24, 29 अशुभ हैं। **मई**-पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वयं का तथा संतान का भाग्योदय योग बनता है। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क होने का योग तथा आर्थिक लाभ होगा। आहार एवं व्यवहार का ध्यान रखेंगे, तो माह अच्छा रहेगा। सत्संग जैसा कार्य का लाभ भी होगा। पुरस्कार प्राप्ति का योग भी। ता. 2, 8, 18, 26 अशुभदायक हैं। **जून**-माह में भाग्योदय जैसा दो अवसर प्राप्ति का योग। वाहन क्रय का भी शुभ योग है। भूमि-भवन एवं विदेशी सामग्री की प्राप्ति का भी अच्छा माह है। मशीनरी कार्य का नया धंधा भी बनता है। व्यापारिक यात्राओं में आपको लाभ होगा। राजकीय कार्यों में सफलता का योग। ता. 4, 13, 21, 27 अशुभदायक रहेंगी। **जुलाई**-माह में भौतिक सुविधाओं का लाभ मिलेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। स्थानांतरण का लाभ मिलेगा। नया प्रोजेक्ट बनाने की योजना का लाभ मिलेगा। वार्षिक स्थिति में आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। न्यायालय संबंधी प्रकरण में विजय का योग। सम्मान प्राप्ति का योग। ता. 4, 14, 22, 29 अशुभ दायक हैं। **अगस्त**-माह में राजकीय उलझनों से बचें। कर्मों योगों में तरलता रहेगी। खेलकूद में भी रुचि बढ़ेगी। प्रतियोगिता परिणाम आपके हित में रहेगा। यात्रा लम्बी व आनंददायी होगी। सामाजिक, धार्मिक कार्यों में भागदौड़ ज्यादा होगी। तीर्थाटनों में आपको आर्थिक लाभ जैसा योग बनेगा। ता. 2, 8, 14, 22, 27 अशुभदायक रहेंगी। **सितंबर**-पारिवारिक कार्यों का दायित्व ज्यादा बढ़ेगा। सरकारी पक्ष से व्यापारिक गतिशीलता की बाधाओं का निवारण होगा। भूमि-भवन के लेन-देन से विशेष लाभ होगा। मांगलिक कार्यों में भागदौड़ रहेगी। स्पष्टवादिता का परिणाम हितकर रहेगा। पशुओं से सावधान रहें। तबादला या व्यवसाय परिवर्तन योग है। ता. 1, 9, 13, 21, 28 अशुभ दायक होंगी। **अक्टूबर**-माह में आर्थिक स्थिति बिगड़ेगी। मशीनों से लाभ बनेगा। सीमेन्ट उद्योग में प्रगति होगी। संतान के विवाह संबंधी चिन्ताएं टेंगी। स्वास्थ्य के प्रति कुछ गड़बड़ी एवं सामाजिक परिवेश में दायित्व मिलेगा। जिससे परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। पैतृक जमीन से लाभ दायक योग बनेगा। चोरी या डकैती का योग। ता. 6, 18, 24, 31 अशुभ दायक हैं। **नवंबर**-माह में संतान संबंधी चिन्ताओं का निवारण होगा। व्यापारिक गतिविधि तेज चलेगी। शुभ स्थानों की यात्रा से पारिवारिक विवाद का समाधान होगा। कृषि से अच्छी आय। चापलूसी कार्य प्रणाली अपनायेंगे तो वर्चस्व अच्छा बना रहेगा। रचनात्मक प्रवृति बढ़ेगी। ता. 5, 16, 27, 30 अशुभ दायक रहेंगी। **दिसंबर**-इस माह में सरकारी क्षेत्र में तबादलों की स्थिति बनेगी। प्रेम-रोमांश से बचें तो ठीक, अन्यथा न्यायालय प्रकरण से परेशानी बढ़ेगी। साझेदारी कार्यों में विवाद जैसी स्थिति बनेगी। भूमि-भवन का शुभदायक योग से परिवार में खुशी रहेगी। भ्रष्टचारियों के चंगुल से बचें तो ठीक रहेगा। अन्यथा आर्थिक हानि होगी। ता. 7, 20, 22, 29 अशुभदायक होंगी। **जनवरी 2013 ई.**-वर्ष में नये कार्य ज्यादा होंगे। माह में मेहनत से सितारा बुलन्द होगा। दूर या समीप की यात्रा होगी। कानूनी विवाद से राहत मिलेगी। यात्रा में स्वास्थ्य में अचानक गिरावट बनेगी। राष्ट्र स्तरीय सम्मेलनों में भाग लेंगे। सम्मान प्राप्ति तथा पर्यावरण जन्य कार्य में लगे रहें तो अच्छा लाभ एवं कीर्ति बढ़ेगी। ता. 3, 14, 22, 24, 30 अशुभदायक रहेंगी। **फरवरी**-माह में शुभ समाचार मिलते रहेंगे। यात्रा योग भी अचानक अच्छी होगी। नये कार्यों में मित्र वर्ग मदद करेंगे। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेंगे। नौकरियों का अच्छा योग। देश-विदेश भ्रमण का योग भी बनेगा। ता. 4, 11, 23, 25 अशुभदायक रहेंगी। **मार्च**-माह में बैंक बैलेंस अच्छा रहेगा। माता-पिता के आशीर्वाद से संतान प्राप्ति का योग बनेगा। शुभाशुभ खबरें मिलेंगी। वाहन से सावधान रहें। हवाई यात्रा में दुर्घटना का योग बनेगा। शत्रु पक्ष का षडयंत्र बाधक रहेगा। चालू कार्यों में रुकावटें आयेंगी। ता. 6, 14, 24, 29 अशुभ दायक रहेंगी।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

स्वामी-सूर्य **नग-माणिक**

मार्च 2012 ई.-इस माह में परिवार में शांति का वातावरण रहेगा। जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ मिलेगा। सामाजिक जीवन में आपका [illegible] बढ़ेगा। नौकरी-पेशा योग बनेगा। भवन प्रवेश संबंधी कार्य बनेगा। वाहन, मोटर, मशीन क्रय एवं उद्योग जैसा योग बनता है। ता. 2, 7, 17, 24 अशुभ दायक हैं। **अप्रैल**-इस माह में परिवार में मांगलिक खर्चों का कार्य होगा। कार्य क्षेत्र में अभिवृद्धि होगी। आकस्मिक धन लाभ का योग बनेगा। भवन तथा नौकरी से आर्थिक स्थिति अच्छी बनेगी। विरोधी पक्षों द्वारा अशुभ प्रयास भी विफल हो जायेंगे। अपहरण जैसी घटना घट सकती है। दूर-दराज में चौकस रहें तो शुभ रहेगा। ता. 6, 13, 23, 26 अशुभदायक हैं। **मई**-इस माह में व्यापारिक तथा औद्योगिक गतिशीलता बढ़ेगी। साझेदारी में भी लाभ दायक योग बनेगा। धार्मिक व यज्ञादि कार्यों में खर्चा होगा। सामाजिक कार्यों में काफी पहल से कार्य करना पड़ेगा। कोर्ट-कचहरी के विवाद में विजय योग। विदेश यात्रा का योग बनेगा। अच्छे पुरस्कार प्राप्ति योग। ता. 8, 13, 20, 22 अशुभ दायक रहेंगी। **जून**-रोजगार के अवसर में रुकावट आयेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। नौकरी-पेशा वालों की मानसिकता बिगड़ेगी। दिनचर्या में परिवर्तन का योग बनता है। अधिकारियों की अनदेखी से धोखा एवं कोर्ट-कचहरी योग भी विशेष रहेगा। माह में लम्बी यात्रा नहीं करें, तो शुभ रहेगा। ता. 3, 12, 14, 21, 23 अशुभ फलदायी होंगी। **जुलाई**-माह में अध्ययन के प्रति कुछ बाधाएं आयेंगी। माता-पिता का स्वास्थ्य भी बिगड़ेगा। जल तत्व से हानि योग। पानी में डूबने का योग बनता है। स्वयं को भी खांसी जैसे रोग से परेशानी। कुलदेवी एवं कुलदेवता की साधना से समय व्यतीत करें, तो शुभ रहेगा। नया कार्य इस माह में नहीं करें। ता. 1, 4, 13, 22, 24, 27 अशुभ दायक हैं। **अगस्त**-इस माह में सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेने के कारण मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापार में कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। नौकरी पेशा में तरक्की होगी। रिश्तेदारों से लेन-देन में सावधानी रखें। विदेश यात्रा का योग। मांगलिक कार्यों का खर्चा ज्यादा होगा। तकनीकि शिक्षा का लाभ भी मिलेगा। स्त्री वर्ग का शुभ सहयोग बनेगा। ता. 7, 12, 22, 26 अशुभ दायक रहेंगी। **सितंबर**-कार्य योजना में अधिकारियों द्वारा विशेष सहयोग मिलेगा। नये कार्य के लिए पूर्व या दक्षिण दिशा की यात्रा करनी पड़ेगी। रिश्तों में कुछ टकराव के कारण मन में उदासीनता बनेगी। शेयर्स बाजार का कार्य में हानि का योग बनेगा। भवन-भूमि का लेन-देन तथा बैंकिंग कार्यों में वृद्धि होगी। ता. 2, 8, 14, 20, 24 अशुभदायक रहेंगी। **अक्टूबर**-इस माह में व्यापारिक गतिविधियों की स्थिति सुधरेगी। नये स्थान पर सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। फिजूल खर्चों पर लगाम कसे यानि नियंत्रण रखना होगा। किसी की जमानत देनी पड़ सकती है। मोटर, वाहन, कानून का इल्जाम भी लग सकता है। कुछ अशुभ सूचनाएं भी प्राप्त होने का योग बनता है। वाहन से सावधान। ता. 1, 6, 12, 23, 27 अशुभदायक हैं। **नवंबर**-इस माह में पारिवारिक यात्रा का योग बनता है। भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए धन खर्चा का योग बनेगा। घरेलू मामलों में आपकी बातों पर ध्यान दिया जाएगा। परिश्रम का फल अच्छा मिलेगा। नये कार्यों में मित्र वर्ग मदद करेंगे। राजनैतिक स्तर बढ़ेगा। सामाजिक सेवाओं का दायित्व बढ़ने का योग विशेष बनता है। कुत्तों से सावधान। ता. 3, 9, 17, 22, 28 अशुभ हैं। **दिसंबर**-माह में मानसिक परेशानियां बढ़ेंगी। स्वास्थ्य प्रतिकूल भी हो सकता है। चिकित्सालय का सहारा लेंगे, तो ठी रहेगा। महामृत्युंजय मंत्र का जप करना शुभ दायक रहेगा। वैवाहिक स्थिति में भी टकराव जैसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। हिंसक जानवरों से बचकर रहें। पारिवारिक रिश्तों में उदासीनता रहेगी। ता. 1, 8, 17, 24, 27 अशुभ हैं। **जनवरी 2013 ई.**-माह में राजकीय पक्ष के कार्य बाधाएं बनेंगी। भौतिक साधनों में वृद्धि होगी। नौकरी पेशा वाले को तरक्की जैसा वातावरण बना रहेगा। दोस्तों के द्वारा विद्या पक्ष में तकनीकि बनाने में रुचि बढ़ेगी। विश्वासघात जैसा योग भी। सावधान! व्यापारिक यात्रा का योग। उत्तरा माह अच्छा। ता. 6, 9, 14, 20, 24, 27 अशुभदायक हैं। **फरवरी**-माह में धार्मिक या उत्सव में भागीदारी होगी। संतान सुख का सामान्य योग बनेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। व्यापार में सोच समझकर कार्य करें। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। कुछ बाहरी लोग भी बुराई कर रहे हैं। आपकी शरण में आने की सोचेंगे। ता. 4, 12, 18, 27 अशुभ हैं। **मार्च**-पारिवारिक कार्य बढ़ेंगे। उच्चाटन या अन्य बाधा योग बनेगा। अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। धंधा में कुछ हानि या छापा पड़ सकता है। अनियमित दिनचर्या चलेगी। मार-पीट या बदनामी जैसा योग बनेगा। बैंकिंग कार्यों में विफलता चलेंगी। वाहन प्राप्ति का योग अचानक बनेगा। शत्रु पक्ष मजबूत होने का योग है। ता. 2, [illegible] 14, 21, [illegible] अशुभ हैं।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या

कन्या राशि चक्र

7 श. 5 मं.
8 रा. 6 4
9 3
10 सू.चं.बु. 2 के.
11 12 1 गु.शु.

स्वामी-बुध **नग-पन्ना**

मार्च 2012 ई.-व्यापारिक कार्यों में भागदौड़ चलेगी। स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता भी रहेगी। कारोबार में प्रगति का योग अच्छा बनेगा। परिश्रम का उचित फल मिलेगा। विदेश यात्रा का योग दो बार बनेगा। जायदाद बंटवारा संबंधी विवाद का योग। शनि की ढैया से वाहन प्राप्ति का योग, लेकिन दुर्घटना योग। सावधान। ता. 1, 6, 16, 23 नेष्ट हैं। **अप्रैल**-माह में संताप पक्ष की उच्च शिक्षा का योग बनेगा। स्वयं का स्वास्थ्य गिर सकता है। चापलूसों से बचकर रहें, तो अच्छा रहेगा। त्रुटि कर्ता आपसे क्षमा याचना भी मांगेगा। अतः माह में विजय योग बनता है। कहीं पर अच्छे मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। भूमि-भवन क्रय-विक्रय का योग बनता है। ता. 4, 10, 12, 27, 31 चिन्तादायक रहेंगी। **मई**-नौकरी पेशे वालों का तबादला योग बनता है। आवश्यक कार्यवश राजनेता भी मदद करेंगे, करायेंगे। पुरानी पारिवारिक घटनाओं की चर्चा को पुनः स्मरण करने से रंजिश संबंधी कार्य बन सकता है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। पुराना साथी अच्छी मदद भी करेगा। ता. 3, 12, 16, 22 चिन्तादायक हैं। **जून**-इस माह में अपने नजदीकी सदस्यों की सहभागिता का अच्छा लाभ मिलेगा। पशुओं के क्रय-विक्रय या गायों की सेवा का रख रखाव से आर्थिक लाभ मिलेगा। जीवन साथी के प्रति अनुराग में वृद्धि होगी। सामाजिक सेवा कार्य का अच्छा योग बनेगा। विदेश यात्रा का गमन। मांगलिक कार्य का खर्चा बढ़ेगा। भागदौड़ चलेगी। ता. 4, 9, 12, 18, 21 अशुभ हैं। **जुलाई**-इस माह में वित्तीय स्थिति अच्छी रहेगी। पुरानी पारिवारिक जायदाद का क्रय अच्छा है। राजकीय सेवा का योग बनता है। अग्नि तथा जल तत्व से बचकर रहें, तो शुभ रहेगा। संदेहात्मक स्थिति से दूर रहकर कार्य करें। सम्मान प्राप्ति भी। ता. 7, 15, 23, 28 अशुभ योग। **अगस्त**-सामाजिक दायित्वों का प्रभाव बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा तथा राजकीय सम्मान का योग बनता है। पारिवारिक कलह तथा पत्नि से मन-मुटाव बाधा योग बनेगा। आवश्यक कार्यवश आपको विदेश गमन या राजनेताओं से सम्पर्क सूत्र साधना पड़ेगा। निश्चय ही कोई लाभकारी योजना की प्राप्ति होगी। भवन भी बनेगा। ता. 8, 14, 22, 28 अशुभदायक हैं। **सितंबर**-यह चिन्ता दायक एवं कार्य में हानि दायक रहेगा। धन हानि या अग्नि से सम्पत्ति को हानि होगी। विद्युत करंट भी लग सकता है। घर में विवाद बढ़ेगा। आत्म हत्या तक की बात बनने का आसार है। क्षमा याचना से गृह क्लेश को शांत करें। महामृत्युंजय जप तथा सुण्दरकाण्ड अथवा हनुमान चालीसा के पाठ करें, तो शुभ रहेगा। ता. 9, 20, 24, 28 अशुभ हैं। **अक्टूबर**-इस माह में अनजान लोगों पर विश्वास करना आपको भारी परेशानी में डाल सकता है। स्त्री वर्ग का भविष्य इस माह में ज्यादा संकटदायी रहेगा। राजकीय सेवा योग। तबादला आदि कार्य। रोजगार प्राप्ति का योग। वाहन तथा भूमि खरीद का भी योग बनेगा। प्रसूता स्त्री के लिए सूर्य ग्रह की साधना शुभदायक रहेगी। ता. 3, 8, 19, 24, 29 अशुभ हैं। **नवंबर**-आपके प्रयासों का लाभ होगा। राजनीति में कदम रखें तो भी सफलता का योग बनता है। आय-व्यय में संतुलन बना रहेगा। सौंपा गया कार्य नहीं किया तो आगे हानि या अपमान होने का योग बनता है। युवा वर्ग के लिए माह प्रेरणादायी एवं रोजगार प्राप्ति के योग। नौकरी के चांस बनेंगे। देर रात्रि में अकेले घर से बाहर न घूमें। ता. 1, 9, 14, 19 अशुभ हैं। **दिसंबर**-इस माह में पुराने विवादों पर घरेलू कार्यों में सफलता मिलेगी। आपका पारिवारिक जीवन सामाजिक योग में शुभ दायक समाचार लायेगा। व्यापारिक अथवा धंधे की भागदौड़ में स्वास्थ्य खराब होगा। सरकारी कार्यालयों में दिया गया कार्य सम्पन्न होने का योग बनेगा। वाहन प्राप्ति एवं सम्मान प्राप्ति भी। ता. 3, 7, 14, 21, 24 अशुभ दायक हैं। **जनवरी 2013 ई.**-पुराने अदालती मामलों में फैसला आपके हितदायक रहेगा। रिश्तेदारों में अनबन विवाद बनेगा। पत्नि से बिगाड़। मंगल दोष का प्रभाव बनेगा। किसी अनजान शक्स से पारिवारिक कार्यों में धोखा से बचें। मान-सम्मान प्राप्ति का भी योग। वाहन एवं भूमि लेनदेन से लाभ होगा। साझेदारी कार्यों में भी लाभ होगा। ता. 4, 13, 17, 27 अशुभ हैं। **फरवरी**-इस माह में आपके दाम्पत्य जीवन का मुद्दा सामने आयेगा। घरेलु विवाद भी बनेगा। पारिवारिक कार्यों में दायित्व बढ़ेगा। घर में शुभदायक कार्य भी होंगे। अनावश्यक सूचना पर चिन्तन नहीं करें। कृषि कार्य की स्थिति अच्छी रहेगी। वाहन क्रय-विक्रय धंधा भी करने का योग। ता. 5, 11, 19, 27 अशुभ दायक हैं। **मार्च**-इस माह में अपने आपको आध्यात्मिक, धार्मिक कार्यों में तल्लीनता से जुटे रहेंगे। लाभ-खर्चा का अच्छा योग बनेगा। व्यापार में भी दोस्तों द्वारा नया ऑफर मिलता रहेगा। वित्तीय स्थिति अच्छी होगी। नौकरी का योग। व्यापार में काला धंधा जैसा आक्षेप लग सकता है। भागदौड़ रहेगी। ता. 3, 9, 16, 17, 28 अशुभ हैं।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला

तुला राशि चक्र

8 रा. 6
9 7 श. 5 मं.
10 4
11 1 गु.शु. 3
12 सू.बु.चं. 2 के.

स्वामी-शुक्र **नग-हीरा**

मार्च 2012 ई.-इस माह में व्यापार में किये गये परिश्रम का प्रतिफल आशा से अधिक प्राप्त होने से मन में उत्साह का संचार होगा। राजकीय कार्य परियोजनाओं से अच्छा आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। किसी पुराने मित्र से भेंट होगी। परिवार में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। राज सेवा योग भी। ता. 1, 12, 23, 28 अशुभ हैं। **अप्रैल**-इस माह में पारिवारिक तथा मांगलिक कार्यों में बढ़ोतरी होगी। मित्रों से सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का लाभ होगा। भूमि-भवन का योग अच्छा बनेगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। संतान के स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ जैसा योग है। मां कुल देवी की पूजा करें। ता. 2, 8, 16, 25 अशुभ हैं। **मई**-माह में अनावश्यक कार्यों में धनखर्चा होगा। आर्थिक परेशानी से जीवन में उदासी का योग बनेगा। चोर या ऊपर से गिरने की घटना का योग बनता है। नैत्र पीड़ा से कुछ परेशानी बढ़ेगी। सामाजिक दायित्वों की वृद्धि होगी। कोर्ट में विजय। ता. 3, 9, 17, 27 अशुभ हैं। **जून**-इस माह में राजनैतिक कार्यों से भ्रमण ज्यादा करना पड़ेगा। सामाजिक संस्थाओं से भी कार्य की प्रक्रिया से जुड़ेंगे। वाहन प्राप्ति तथा अन्य घरेलू सामग्री का लाभ मित्र मण्डली द्वारा मिलेगा। अनजाने शक्स का भरोसा मत करें अन्यथा आर्थिक हानि हो जायगी। पशुओं से सावधान। ता. 6, 14, 23, 28 अशुभदायक हैं। **जुलाई**-माह में आर्थिक परेशानी बनेगी। रोजगार प्राप्ति का शुभ योग तथा राज-काज में लाभ मय पदोन्नति का अवसर बनेगा। पिता का स्वास्थ्य कुछ नरम होगा। नये संबंध में कुछ भागदौड़ पर सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग अच्छा मिलेगा। विदेशी सामग्री क्रय में रुचि बढ़ेगी। संतान लाभ भी। ता. 7, 19, 23, 29 अशुभ दायक हैं। **अगस्त**-माह में यात्रा प्रवास शुभ दायक रहेगा। पुराना उलझा हुआ कार्य बनेगा। सम्मान प्राप्ति से उत्साह वर्द्धन होगा। कार्य की गति बढ़ायें तो वांछित लाभ की प्राप्ति होगी। माता का स्वास्थ्य गिरेगा। व्यापारिक कार्य स्थल में कुछ सुधार भी होगा। भवन निर्माण में रुकावट जैसा योग है। ता. 8, 19, 24, 30 अशुभ हैं। **सितंबर**-इस माह में पुराना उलझा हुआ कार्य सुलझेगा। कार्य में गति बढ़ेगी। स्त्री पक्ष से अच्छे परामर्श की प्राप्ति से आर्थिक लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों का संबंध भी होगा। राजनीति क्षेत्र में भी वर्चस्व बढ़ेगा। अन्य संगठनों में भी आपके प्रभाव से कार्य में अन्य को लाभ होगा। वित्तीय स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। आय भी अच्छी। ता. 9, 20, 23, 29 अशुभ हैं। **अक्टूबर**-माह में कार्यों की भागदौड़ में स्वास्थ्य गिर सकता है। परिश्रम फल भी कम मिलेगा। कारोबार अच्छा चलेगा। विदेश यात्रा का योग भी लाभदायक बनेगा। राजकीय सेवाओं का भी लाभ मिलेगा। संतान को उच्च शिक्षा का लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों का शुभ योग भी बनेगा। तीर्थाटन का भी अच्छा लाभ मिलेगा। ता. 10, 21, 24, 30 अशुभ दायक हैं। **नवंबर**-माह में नये व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेगा। वाहन प्राप्ति, सम्मान जनक कार्यों से नागरिक अभिनंदन जैसा योग बनेगा। वस्त्राभूषण प्राप्ति तथा धार्मिक कृत्यों का भी लाभ मिलेगा। पुराना रुका हुआ कार्य बनेगा। व्यापारिक गतिशीलता से मानसिक चिन्ता का भी निवारण होगा। साझेदारी कार्यों में एकाएक अच्छा लाभ होगा। ता. 10, 15, 22, 27 अशुभ हैं। **दिसंबर**-नये कार्यों में अभी हाथ इस माह में नहीं डालें। रिश्तेदारों से भी मन-मुटाव तथा विवाद जनक वार्ता बन सकती है। चापलूस वर्ग आर्थिक हानि करायेंगे। स्त्री वर्ग के सहयोग से इस माह कार्य

करेंगे, तो शुभ रहेगा। रचनात्मक कार्यों में भी रुचि बढ़ेगी। लेकिन आलस्य के कारण सफलता नहीं मिलेगी। ता. 4, 12, 18, 23 अशुभ हैं। **जनवरी 2013 ई.**-यह माह आपके लिए प्रगति एवं आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ रहेगा। मित्र एवं परिवार जनों से मिलने का योग बनेगा। मानसिक परेशानी बढ़ेगी। मांगलिक कार्यों के प्रति खर्चा योग ज्यादा बनेगा। वाद-विवाद भी लेन-देन से होने का योग है। प्रतियोगियों को शुभ समाचार मिलेंगे। तथा रोजगार प्राप्ति का अवसर मिलेगा। ता. 6, 7, 15, 16, 23, 24 नेष्ट हैं। **फरवरी**-ग्रह गोचर से सामाजिक कार्यों में अच्छी स्थिति बनेगी। आमदनी की प्राप्ति के अवसर बनेंगे। नये कार्यों का समीकरण बनेगा। राजनैतिक दृष्टि से यह माह काफी उत्साह वर्द्धक एवं सम्मान जनक रहेगा। स्वाध्याय में रुचि बढ़ेगी। वाद-विवाद से बचकर रहें तो वर्चस्व बढ़ेगा। मानसिकता में तनाव मुक्ति। ता. 1, 2, 13, 14, 20 अशुभ हैं। **मार्च**-इस माह में विद्यार्थी एवं मजदूर वर्ग खुश रहेंगे। सरकारी सेवार्थ कर्मी चिन्ता जनक बनेंगे। आयकर प्रकरण से काफी उदासीन बनेंगे। भूमि-भवन तथा प्रकाशन संबंधी कार्यों में अग्रसर होंगे। बोर्ड या विश्व विद्यालय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। वाहन से सावधान भी रहें। ता. 4, 8, 16, 21, 24 अशुभ रहेंगी।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिक — वृश्चिक राशि चक्र

9 | 7 श. | 10 | 8 रा. | 6 | 11 | 5 मं. | सू.बु.चं. 12 | 2 के. | 4 | 1 गु.शु. | 3

स्वामी-मंगल — **नग-मूंगा**

मार्च 2012 ई.-व्यापार एवं व्यवसाय में उन्नति होगी। समय के साथ संचलन में आप अच्छा लाभ प्राप्त कर पायेंगे। धूर्त लोगों से सावधान रहें। उधार प्रदत्त राशि प्राप्ति का योग बनेगा। यात्रा में अच्छा सम्पर्क बढ़ेगा। सामाजिक कार्यों में आपको ज्यादा भागदौड़ करनी पड़ेगी। राजकीय कार्यों में सफलता तथा नौकरी प्राप्ति का योग बनेगा। ता. 1, 7, 13, 17, 22 अशुभ हैं। **अप्रैल**-यह माह परेशानियों से युक्त रहेगा। दाम्पत्य जीवन में मधुरता का योग बनेगा। शनि की साढ़ेसाती के योग से आर्थिक हानि ज्यादा होने का योग बनेगा। पत्नी को केतु रोगी भी करेगा। विवादजन्य मामलों से बचकर चलें। सुन्दरकाण्ड का सात पाठ करना शुभदायक रहेगा। राजसेवा योग शुभ। ता. 1, 7, 20, 24 अशुभ हैं। **मई**-इस माह में पत्नी के सहयोग या स्त्री पक्ष के सहयोग से भाग्योदय कारक कार्य बनेगा। रोजगार प्राप्ति, भूमि-भवन लेन-देन का योग। मित्र वर्ग से काफी लाभ दायक बाते मिलेंगी। वाहन दुर्घटना से बचें। पारिवारिक कार्यों में गति तेज होगी। कोर्ट-कचहरी में विजय योग बनेगा। ता. 2, 8, 14, 23 अशुभ हैं। **जून**-आर्थिक दृष्टि से यह माह चिन्तादायक रहेगा। पारिवारिक विवाद का प्रभाव सामाजिक दृष्टि से अशुभ भी होगा। मान-प्रतिष्ठा में कमी का योग तथा परिश्रम अधिक एवं लाभ कम वाला योग बनेगा। कहीं पर विशेष धोखा भी होगा। अन्य स्थान की यात्रा का योग भी बनता है। ता. 3, 11, 21, 27 अशुभ हैं। **जुलाई**-पारिवारिक कार्यों की गति बढ़ेगी। सबका अच्छा सहयोग मिलेगा। शत्रु पक्ष का प्रभाव शुभ दायक बन जायेगा। रोगजगार प्राप्ति योग बनेगा। सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ेगी। समाज में कोई नया कार्य सेवा रूप में मिलेगा। राजकीय कार्यों में भी सफलता का संचार होगा। स्वास्थ्य कुछ नरम होगा। ता. 4, 13, 19, 22, 26 अशुभ उदायक हैं। **अगस्त**-नवीन कार्य की योजना में आपको बांछित सफलता मिलेगी। दम्पत्ति पक्ष से कुछ शुभदायक कार्य होगा। संतान प्राप्ति तथा संतान का भाग्योदय तथा परिवार में मांगलिक कार्य बनेंगे। व्यापारिक स्थिति में कुछ चिन्ता दायक योग बनेगा। माह के अंत में कोई शुभ सूचना प्राप्ति का योग बनता है। ता. 5, 14, 22, 26, 29 अशुभ दायक हैं। **सितंबर**-इस माह में उत्तम कार्य होंगे। शुभ मांगलिक सूचनाएं मिलेंगी। परदेश गमन में भी लाभ होगा। बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धार्मिक कार्य गति बढ़ेगी। मित्र वर्ग भी आपको अच्छा सहयोग देगा। नये कारोबार में भागदौड़ भी चलेगी। सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। चौपाये जानवर क्रय-विक्रय से लाभ होगा। ता. 6, 15, 23, 28 अशुभ दायक हैं। **अक्टूबर**-इस माह में आपको अपने व्यक्ति भी पराये नजर आयेंगे। घरेलू कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। रोग कारक समय भी रहेगा। ऊपर की चोट का भय रहेगा। अकस्मात् विदेशी यात्रा में परेशानी भी बनेगी। राजनैतिक कुयोग जैसी प्रतीत होगी। पुत्रादि से भी फालतु विवाद बनेगा। माह अशुभ दायक रहेगा। सावधान। ता. 7, 17, 24, 28, 29 अशुभ हैं। **नवंबर**-व्यापारिक कार्य अच्छा होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। घरेलू झगड़ों से बचें। भोग विलास एवं अन्य पारिवारिक झगड़ों में राशि खर्च होगी। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। कुछ मानसिक स्थिति में विकृति का योग बनेगा। माह में परिवर्तन योग ज्यादा है। स्त्री वर्ग आपकी अच्छी मदद करेगी। वाहन योग भी। ता. 7, 18, 24, 30 अशुभ हैं। **दिसंबर**-इस माह में मानसिक उलझनें बढ़ेंगी। स्त्री वर्ग तथा संतान से भी बाधाएं आयेंगी। राजपक्ष में शुभ कार्य बनेगा। नेत्र पीड़ा का योग। पथरी व अन्य उदर रोग बाधा योग बनेगा। उपाय शिवोपासना महाकाल भैरव की पूजा करें। कुटुम्ब परिवार एवं अन्य परिजनों से कार्य का विशेष लाभ मिलेगा। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। ता. 8, 18, 24, 29 अशुभ दायक हैं। **जनवरी 2013 ई.**-इस माह में सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। अन्यत्र कुछ धार्मिक यात्राओं में जाना पड़ सकता है। राजकीय कार्यों में लाभ अच्छा होगा। भूमि-भवन के लेन-देनों में अपनी कार्य प्रणाली को बढ़ा सकते हैं। विदेशी यात्रा एवं आर्थिक लाभ का योग बनता है। नवीन व्यापार के उद्योग में उत्साह वर्धक कार्य बनेगा। स्त्री वर्ग से सौहार्द पूर्ण वार्ताओं के योग से कार्य सफलता बनेगी। ता. 4, 13, 19, 22, 30 अशुभ हैं। **फरवरी**-इस माह में शत्रु पक्ष में वृद्धि होगी। आपके सामने कुछ नये धंधे की योजना बनेगी। परिवार में कुछ परेशानियां भी आयेंगी। भागदौड़ में धन खर्चा, लेकिन मांगलिक कार्य होगा। मां भगवती की आराधना से संकट का निवारण हो सकता है। पत्नी की ओर से आपको सामाजिक दायित्व सौंपा जायेगा। ता. 5, 7, 19, 22, 24, 28 अशुभ हैं। **मार्च**-इस माह में सामाजिक मन-मुटाव बनेगा। स्थान परिवर्तन का योग। परिवर्तन दायक योग भी। धंधा में नवीनता का प्रस्ताव मित्रों की ओर से आयेगा। रचनात्मक पहलू में रुचि बढ़ेगी। सम्मान प्राप्ति जैसा योग बनेगा। पत्नि बीमार हो सकती है। शिवोपासना करें तो शुभ दायक रहेगा। ता. 3, 13, 18, 24, 27 अशुभ दायक हैं।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

स्वामी-गुरु — **नग-पुखराज**

मार्च 2012 ई.-इस माह में आपको अपना व्यावसायिक प्रतिवादों पर विशेष नजर रखने की आवश्यकता है। अन्यथा हानि का योग बनेगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। संतान के विवाह संबंधी चिन्ताएं दूर होंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होगा। ता. 6, 13, 24, 27 अशुभ दायक हैं। **अप्रैल**-इस माह में धन लाभ अच्छा होगा। खर्च की मात्रा बढ़ेगी। माह के उत्तरार्द्ध में कुछ समय अच्छा आयेगा। राजनीति पार्टी में कुछ अच्छा योग। वर्चस्व बढ़ेगा। घरेलू कलह से चिन्ता बन सकती है। पुत्रादि प्राप्ति का योग बनता है। कुछ स्थानों पर मान-सम्मान भी बढ़ेगा। वाहन प्राप्ति का योग। ता. 4, 12, 23, 28 अशुभ दायक हैं। **मई**-माह में स्वास्थ्य नरम रहेगा। व्यापारिक गतिशीलता बढ़ेगी। विदेशी कार्य की गति भी तेज होगी। आलस्य वश कुछ आर्थिक हानि होगी। स्वाध्याय बढ़ायें तो शुभ रहेगा। मांगलिक कार्य का खर्चा बढ़ेगा। तीर्थाटन का भी अच्छा योग बनता है। धन के क्षेत्र में मित्र वर्ग अच्छी मदद करेंगे। ता. 7, 15, 21, 29 अशुभ दायक हैं। **जून**-माह में चलते कार्यों में बाधाएं आयेंगी। भाग्योदय का शुभ क्षेत्र, राजकीय सेवा का शुभ योग एवं देश-देशांतर में भ्रमण का योग भी बनता है। प्रेमी प्रसंग से बचें तो ठीक अन्यथा रोमांश में मान-सम्मान में न्यूनता बनने का योग है। संगठनात्मक कार्यों में अपनी सेवाएं देंगे। ता. 9, 16, 24, 30 अशुभ दायक हैं। **जुलाई**-इस माह में वास्तु दोष का समाधान करायें, तो श्रेष्ठ रहेगा। व्यापार में उन्नति का योग। नया व्यवसाय जैसी स्थिति तथा सगाई संबंध योग बनता है। कार्य में अपनी भावनात्मक स्थिति से चेतना आयेगी। रुके हुए कार्य बनेंगे। विवाद जन्य कार्यों से परहेज रखें। आलस्य वश हानि भी संभव है। ता. 8, 19, 23.

27 अशुभ हैं। अगस्त-इस माह में धार्मिक आयोजन ज्यादा होंगे। पुराने कार्यों की गति बढ़ेगी। कृषक वर्ग, व्यवसायी वर्ग, विद्यार्थी वर्ग में प्रगति दायक कार्यों में व्यस्तता चलेगी। मुकाबलों में विजय। रचनात्मक गति का प्रभाव बढ़ेगा। मान-सम्मान के साथ वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 10, 24, 29, 31 अशुभ रहेंगी। सितंबर-व्यापार एवं व्यवसायिक उन्नति होगी। समय के साथ सहयोग की भी स्थिति श्रेष्ठ बनेगी। विवादजन्य कार्यों में तथा कोर्ट संबंधी कार्यों में विजय योग बनता है। समय की गति से आपको काफी आर्थिक लाभ भी होगा। राजकीय कार्य व्यवस्था में भी सुधार तथा सफलता मिलेगी। ता. 4, 13, 19, 23, 25 अशुभ हैं। अक्टूबर-रचनात्मक एवं साहित्यिक गतिविधियों में श्रृंखलात्मक लाभ का योग बनता है। दाम्पत्य जीवन में कुछ अनबन का योग बनता है। सामाजिक दृष्टि से काफी कार्य भार भी बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से विवाद का बवण्डर भी बन सकता है। नौकर वर्ग से सावधान भी रहें। मित्र मदद करेंगे। ता. 2, 13, 19, 25 अशुभ हैं। नवंबर-इस माह में आपका कार्य एवं व्यवहार अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्यों का खर्चा बढ़ेगा। कुछ मर्यादा भंग जैसी घटना घटेगी। छोटे बच्चों के व्यवहार से बचाव योग भी। धार्मिक कार्यों में चिन्तन-मनन-मंथन चलता रहेगा। विदेश यात्रा या नौकरी का भी अच्छा योग बनता है। प्रतियोगिता में सफलता का योग। ता. 1, 6, 13, 18, 22 अशुभ हैं। दिसंबर-इस माह में साम्प्रदायिक गतिविधियों में कुछ हानि, स्वास्थ्य गड़बड़, संतान के लिए भी अशुभ दायक तथा कार्य की गति में रुकावट बनेगी। किसी अनजाने व्यक्ति से विवाद भी हो जाये तो नई बात नहीं। चोरी की घटना भी घटने का योग है। सामाजिक सेवा में आपका नया वर्चस्व एवं दायित्व का निर्वहन होने का भी योग है। ता. 2, 8, 18, 23, 29 अशुभ हैं। जनवरी 2013 ई.-इस माह में आपके ग्रह योग अच्छे हैं। आपके ही अपने मतभेद से कुछ अनहोनी घटनाएं घटेंगी। आलस्य के प्रभाव से कुछ कार्यों में रुकावट हो जाएगी। वाहन, भूमि-भवन के लेन-देनों में लाभ होगा। भाई बंधुओं से कुछ मतभेद भी चलेगा। व्यावसायिक गति में कुछ नया संशोधन से आर्थिक हानि भी बनने का योग है। सावधान! ता. 3, 14, 24, 28 अशुभ दायक हैं। फरवरी-बैंक बैलेंस की वृद्धि का योग। मांगलिक कार्यों में भी लाभ। तीर्थाटन में भी लाभ यानि यह माह आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहेगा। वाहन क्रय में कुछ चिन्ता बन सकती है। मित्र वर्ग के धोखे से बचें। आपकी शत्रुता से कुछ बाधाएं एवं कार्य क्षमता में ठेस पहुंच सकती है। कार्य बढ़ेगा। ता. 4, 13, 19, 24 अशुभ हैं। मार्च-इस माह में पूजा-पाठ तथा परीक्षाओं की दृष्टि से मानसिकता में कुछ चिन्ता का भूत सवार रहेगा। विलासिता पूर्ण जीवन का योग भी बनेगा। तनावपूर्ण वातावरण से बचें। यश प्राप्ति के अच्छे अवसर मिलेंगे। यातायात संबंधी निर्णयों में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। तकनीकि शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। ता. 4, 18, 23, 27 अशुभ दायक रहेंगी।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मकर

मकर राशि चक्रं

सू.चं.बु. 12, 11, 10, 9, 8 रा., 1 गु. शु., 7 श., 2 के., 4, 6, 3, 5 मं.

स्वामी-शनि **नग-नीलम**

मार्च-इस माह में बाहरी क्षेत्र में भ्रमण योग, मांगलिक कार्य तथा व्यापारिक भागदौड़ चलेगी। आर्थिक लाभ अच्छा होगा। राजकीय कार्यों में भागदौड़ का प्रभाव भी अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य में कुछ गिरावट का योग बनेगा। पत्नी पक्ष से चिन्ता बनेगी। ता. 6, 13, 24, 27 अशुभ हैं। अप्रैल-माह में भूमि-भवन का लेन-देन शुभ दायक रहेगा। कुछ स्थानों पर चोट या दुर्घटनाएं घटने का योग है। सावधान रहें। कार्य शैली में परिवर्तन का योग बनेगा। व्यापार, धंधे में नये अवसर प्राप्ति का योग रहेगा। केन्द्रीय सरकार से विशेष लाभ प्राप्ति का योग बनता है। ता. 6, 12, 21, 28 अशुभ हैं। मई-इस माह में नये व्यक्तियों का सम्पर्क बढ़ेगा। स्वास्थ्य के प्रति सुधार होगा। मनोबल बढ़ेगा। विदेश यात्रा योग बनेगा। माता-पिता को अचानक अशुभता बन सकती है। परिश्रम ज्यादा, लाभ कम बनता है। मानसिक विकृति का आपको खामियाजा भोगना पड़ सकता है। वाहन के लेन-देन में लाभ कमायेंगे। ता. 4, 10, 20, 27 अशुभ दायक हैं। जून-इस माह में निकटतम मित्र अथवा रिश्तेदारों के सहयोग से आपके पारिवारिक विवादों का निवटारा बन सकता है। व्यापार में साझेदारी से कार्य बढ़ेगा। सामाजिक सेवा पद प्राप्ति का योग बनता है। राजसेवा में कुछ बाधाएं जैसा योग बनता है। स्त्री वर्ग या पत्नि से श्रेष्ठ सलाह की प्राप्ति होगी। ता. 2, 12, 21, 27, 29 अशुभ हैं। जुलाई-इस माह में व्यापारिक कार्य स्थल में परिवर्तन होगा। राजकीय कार्यों में सुविधाएं सफलता मिलेगी। सभी प्रकार के विवादों का निपटारा होगा। कोर्ट-कचहरी में विजय होगी। इस माह में व्यक्तिगत मतभेद चलेगा। दोस्तों का सभी प्रकार का सहयोग मिलेगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। पशुओं से सावधान रहें। वृक्षारोपण संबंधी कार्य भी। ता. 7, 13, 18, 22, 28 अशुभ दायक हैं। अगस्त-इस माह में माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पारिवारिक गतिशीलता का शुभ दायक योग। प्रेम के मामलों में कुछ छोटी-मोटी घटनाओं के प्रभाव से अशुभता बनेगी। हिंसक पशुओं का भय बनेगा। आर्थिक दृष्टि से माह लाभदायक रहेगा। नौकरी प्राप्ति का अच्छा योग। पुराना विवाद सुलझेगा। ता. 4, 13, 22, 27, 28 अशुभ हैं। सितंबर-इस माह में धार्मिक कार्यों में खर्चा ज्यादा होगा। व्यापार में सरकारी पक्ष से कुछ परेशानी रहेगी। परिवार में नये सदस्यों का आगमन होगा। सामाजिक दृष्टि से नया कार्य, मुण्डन, सत्संग जैसा कार्यक्रम होगा। गाय, भैंस, पशुओं के लेन-देन में शुभदायक योजनाएं बनेंगी। यात्रा भी होगी। ता. 5, 13, 23, 27, 30 अशुभ हैं। अक्टूबर-इस माह में नौकरी पेशा वालों का तबादला होने का योग है। कोर्ट कार्य में सफलता का योग बनेगा। कृषि जनित कार्यों में अच्छा लाभ होगा। पुराना विवाद हो तो उसमे भी सफलता बनेगी। शत्रु पक्ष पराजित होगा। आत्मा संबंधी दोष के प्रभाव से कुछ अशांति का योग बनेगा। आर्थिक स्थिति में अच्छा सुधार होगा। ता. 1, 6, 13, 27, 29 अशुभ हैं। नवंबर-माह में साझे में व्यापार करने वालों के लिए कुछ अशुभता का योग बनेगा। व्यापारिक चापलूसता का प्रभाव बनेगा। संतान पक्ष में कुछ परेशानी भी होगी। किसी कार्य में विफलता भी बनेगी। तीर्थाटन अथवा मांगलिक कार्यों में खर्चा बढ़ेगा। वाहन एवं भूमि संबंधी लेन-देन हितकर रहेगा। ता. 5, 18, 24, 27, 30 अशुभ हैं। दिसंबर-व्यापारिक कार्यों में भागदौड़ बढ़ेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। कहीं विशेष रोग का प्रभाव न हो जाये। निजी चिकित्सक से परामर्श लेवें। मानसिकता में कुछ चिन्ता की झलक बनेगी। वाहन से सावधान रहें। राजकीय कार्यों में अच्छी सफलता का माह रहेगा। विद्या लाभ भी शुभ। ता. 2, 17, 24, 29 अशुभ हैं। जनवरी 2013 ई.-कृषि जन्य कार्यों में आंशिक हानि होगी। व्यापारिक कार्यों में गति तेज रहेगी। अचानक विदेश यात्रा संबंधी योग बनेगा। धार्मिक आयोजनों में भी राशि खर्च होगी। पारिवारिक उलझनों से बचें। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। पुराना रुका हुआ कार्य होगा। लम्बी यात्रा अकेले नहीं करें। ता. 7, 12, 20, 27 अशुभ हैं। फरवरी-इस माह में शत्रु पक्ष बढ़ेगा। परिवार में परेशानी होगी। स्वास्थ्य में भी कुछ गड़बड़ी रहेगी। बना-बनाया कार्य भी बिगड़ सकता है। सामाजिक बाधा या अपराध जैसा मामला भी बन सकता है। जीवन साथी से भी विवाद या माता को अशुभ बनेगी। माह में अचानक भागदौड़ ज्यादा रहेगी। पशुओं से भी सावधान। ता. 8, 20, 24, 29 अशुभ हैं। मार्च-पत्नी का भाग्योदय का योग बनता है। कार्य की गति बढ़ेगी। व्यापारिक कार्यों में मित्र वर्गों का सहयोग सराहनीय होगा। रचनात्मक कार्य बढ़ेगा। जन-जन से सम्पर्क बढ़ेगा। नवीन कार्यों में पत्नि या स्त्री पक्ष का सहयोग प्राप्त होगा। विद्या एवं खेलकूद की गतिविधियों में वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 9, 21, 27, 30, 31 अशुभ हैं।

कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुंभ

कुंभ राशि चक्रं

सू.चं.बु.12, 1, 10, शु.गु., 11, 9, 2 के., 8 रा., 3, 5 मं., 7 श., 4, 6

स्वामी-शनि **नग-नीलम**

मार्च 2012 ई.-माह में नवीन कार्य योजनाएं आपके लिए लाभप्रद रहेंगी। सामाजिक, मांगलिक कार्यों में धन खर्चा होगा। पारिवारिक सदस्यों में मानसिकता की शांति रहेगी। साझेदारी व्यापारिक गतिशीलता में क्लेश बनेगा। परिवार में वर्चस्व बढ़ेगा। अचानक धार्मिक यात्रा। ता. 1, 7, 15, 22 अशुभ हैं। अप्रैल-माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। तीर्थाटन का योग भी बन रहा है। सामाजिक शुभ कार्यों में भागदौड़ चलेगी। घरेलू मामलों में विवाद बनेगा। वाहन अथवा पशुओं से सावधान। दुर्घटना योग बनता है। रचनात्मक कार्य गति बढ़ेगी। नया स्थान भी मिलेगा। ता. 2, 12, 19, 22 अशुभ हैं। मई-परिवार

में भूमि-भवन एवं वाहन प्राप्ति का योग बनेगा। वाहन से सर्वप्रथम धार्मिक यात्रा करें। बेटी की भावना से घर में लक्ष्मी का आगमन होगा। नित्य कुछ नया कार्य का मन बनेगा। कोर्ट-कचहरी का मामला में विफलता का योग बनता है। अत: बचकर रहें तो शुभ रहेगा। ता. 3, 16, 22, 28, 29 अशुभ दायक हैं। **जून**-माह में व्यापारिक कार्यों के प्रति उदासीनता बनेगी। पराये वाहन का संचालन नहीं करें। रात्रि कालीन समय में अकेले भ्रमण नहीं करें। अपहरण जैसी घटना का योग है। पत्नी या स्त्री पक्ष से बचाव या लाभ होगा। राजकीय सेवारत कर्मियों का स्थान परिवर्तन योग बनता है। भूमि योग भी। ता. 4, 14, 23, 27, 30 अशुभ दायक हैं। **जुलाई**-माह में मित्र वर्ग से धंधा या कार्य प्रक्रिया में सक्रिय सहयोग मिलेगा। पदोन्नति या सेवा में चयन या एजेंसी प्राप्ति जैसा शुभ योग बनेगा। कृषि जन्य कार्य, खनिज संबंधी कार्य में भी भागदौड़ चलेगी। किराना दुकान या जनरल स्टोर जैसे व्यवसाय की स्थिति शुभ बनती है। ता. 4, 16, 25, 29 अशुभ दायक हैं। **अगस्त**-इस माह में संतान का भाग्योदय योग बनता है। आध्यात्मिक कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा। अदालती मामलों में विजय का योग बनेगा। रचनात्मक, सृजनात्मक कार्य में रुचि बढ़ेगी। नये कार्य में काफी भागदौड़ करनी होगी। व्यापारिक स्थिति सुधरेगी। मांगलिक खर्च बढ़ेगा। राजनीति वर्ग में भी लाभदायक स्थिति रहेगी। ता. 5, 17, 23, 29 अशुभ दायक हैं। **सितंबर**-इस माह में निकटतम मित्र, कार्य योजना की प्रस्तुति आपके हक में तथा आर्थिक दृष्टि से शुभदायक प्रस्तुत करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण रहने का योग बनता है। नया स्थान परिवर्तन जैसा योग बनेगा। राजकीय कार्यों में कुछ कहा-सुनी जैसा मामला बनेगा। नदी, सरोवर, तालाब में नहाते तो सावधानी रखें। ता. 6, 18, 24, 28 अशुभ दायक हैं। **अक्टूबर**-पारिवारिक कार्यों में परिजनों का भरपूर सहयोग मिलेगा। मित्रों के सहयोग से भूमि-भवन आदि का लेन-देन करने से धन प्राप्त होगा। साझेदारी व्यापार नहीं करें, तो शुभ है। अदालती मामलों में आपको हानि का सामना करना पड़ सकता है। पत्नि द्वारा बतायी गयी राय को महत्व देंगे, तो श्रेष्ठ रहेगा। ता. 4, 12, 19, 27 अशुभ दायक हैं। **नवंबर**-स्वास्थ्य की दृष्टि से माह में कुछ बाधाएं बनेंगी। पारिवारिक कार्यों में भी कुछ भागदौड़ का योग बनेगा। ससुराल पक्ष से आर्थिक लाभ या मदद जैसा योग बनेगा। विदेशी यात्राओं के दो योग बनते हैं। राजनैतिक दृष्टि से मंत्री तुल्य पद का लाभ भी बनेगा। कृषक वर्ग में कार्यरत जातक लाभ प्राप्त करेंगे। ता. 3, 15, 22, 29 अशुभ दायक हैं। **दिसंबर**-गोचर ग्रहों के योग से माह में आर्थिक स्थिति सुधरेगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता का योग बनेगा। भाग्य साथ देगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। मानसिकता की दृष्टि से कुछ परेशानी बनेगी। नूतन वस्त्र प्राप्ति का लाभ अचानक मिलेगा। आभूषण प्राप्ति का योग भी बनता है। ता. 6, 14, 23, 26 अशुभ हैं। **जनवरी 2013 ई.**-इस माह में परिवार में मांगलिक कार्य अधिक होंगे। विस्तृत यात्रा योग भी बनेगा। पुराना विवाद जन्य मामला में शांति रखें। राज्य सेवा में चयन का योग बनता है। इस माह में धार्मिक कृत्य भी आपके ज्यादा होंगे। भूमि-भवन एवं वाहन क्रय जैसे शुभ योग भी बनते हैं। मन्दिर, प्रतिष्ठा, पूजा आदि का शुभ योग भी है। ता. 7, 21, 28, 31 अशुभ हैं। **फरवरी**-यह माह आपको सामान्य फलदायी रहेगा। सामाजिक रीति-रिवाजों से कुछ कहासुनी जैसा योग बनेगा। प्राकृतिक दृष्टि से आप क्रियाशील रहकर भी शून्य मानेंगे। आत्मिक चिन्तन उदास या खिन्न रहेगा। निर्धारित कार्यक्रम में परिवर्तन भी होगा। कुछ स्थानों के भ्रमण से मन में संतोष बनेगा। ता. 8, 19, 23, 26 अशुभ हैं। **मार्च**-माह में शत्रुता की वृद्धि होगी। वांछित कार्य में भी गिरावट या कुछ विफलताएं बनेंगी। मां भगवती की साधना से शुभदायक कार्य बनेगा। प्रेम-प्रसंग से भी बचकर चलेंगे तो शुभ रहेगा। नया व्यापार-धंधा का योग बनता है। माता-पिता के स्वास्थ्य में कुछ नरम स्थिति रहेगी। ता. 7, 13, 19, 22, 29 अशुभ दायक हैं।

मीन-दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, च, ची

मीन

मीन राशि चक्रं

1 शु.गु. | 12 | 11 | 2 के. | सू.बु.चं. | 10 | 3 | 9 | 4 | 6 | 8 रा. | 5 मं. | 7 श.

स्वामी-गुरु — **नग-पुखराज**

मार्च 2012 ई.-इस माह में समय ठीक रहेगा। मानसिक मनोविकार बढ़ेगा। नवीन कार्य का योग बनेगा। परिवार में नये सदस्य का आगमन, जन्म भी हो। मांगलिक खर्चा बढ़ेगा। कुछ सामाजिक उपालन भी चलेंगे। कृषक वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। ता. 2, 6, 13, 27, 31 अशुभ दायक हैं। **अप्रैल**-इस माह में स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अपने-पराये की पहचान भी करें। सिर दर्द या उदर पीड़ा का योग, चिकित्सक से परामर्श जरूर लें। उत्तरी भारत की यात्रा में भी आपको आर्थिक लाभ मिलेगा। व्यवसाय में वृद्धि का योग बनता है। मित्र वर्ग पर भी भरोसा करें। ता. 3, 10, 18, 24 अशुभ हैं। **मई**-आत्म बल में वृद्धि होगी। कृषक वर्ग को विशेष आर्थिक सहयोग मिलने का योग बनता है। वाहन चलाते समय नियंत्रण न खोयें। राजकीय पक्ष का योग आपके हक में जायेगा। स्त्री या पत्नि के परामर्श से धन प्राप्ति तथा भाग्योदय का योग है। ता. 4, 18, 23, 28 अशुभ हैं। **जून**-माह में आलस्य प्रमाद के कारण धन लाभ में अभाव का योग बनता है। सभा, सम्मेलन में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। कुछ पारिवारिक अड़चनों के प्रभाव से क्रोधावेश बनेगा तथा अभद्रता भी बढ़ेगी। विवाद जन्य मामला से कोर्ट-कचहरी से बचें। सामाजिक परिवेश में बाधा योग। ता. 4, 16, 24, 29 अशुभ हैं। **जुलाई**-माह में परिश्रम ज्यादा करना होगा। पराये व्यक्ति भी अपना बनकर कार्य में मदद करेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता-पिता का अच्छा आशीर्वाद मिलेगा। अत्यावश्यक कार्यवश काफी लम्बी यात्राएं भी होंगी। राजकीय कार्यों का योग अच्छा रहेगा। भवन निर्माण प्रवेश जैसा मांगलिक कार्य भी होगा। संगीत कार्य भी होगा। ता. 5, 12, 17, 24, 29 अशुभ हैं। **अगस्त**-व्यवहारिक कार्यों में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। रचनात्मक, सृजनात्मक कार्य योग में श्रेष्ठ एवं पुरस्कार प्राप्ति का योग बनेगा। किसी भी शुभ आयोजन में धन खर्चा होगा। ईमानदारी के वर्चस्व से कार्य में गति प्रभावित होगी। व्यापारिक दृष्टि से अशुभता भी रहेगी। श्रीगणेश जी एवं महालक्ष्मी जी की पूजा करें। ता. 6, 14, 23, 28, 31 अशुभ हैं। **सितंबर**-रंगमंच कार्य योग में अनावश्यक खर्चा का योग बनेगा। सामाजिक कार्य में भागदौड़ बढ़ेगी। किसी औरत से विवाद एवं अपनापन से एकाएक शत्रुता हो जाएगी। हृदय रोग जैसी विकृति बन सकती है। पशुओं का क्रय-विक्रय से, गाय की सेवा से कुछ अशुभ घटनाएं शुभदायक बन जाएंगी। ता. 7, 16, 23, 29 अशुभ दायक हैं। **अक्टूबर**-आपको इस माह में जमानत संबंधी कार्य ज्यादा बनेंगे। जमानत नहीं दें। प्रेम, विलासिता के चक्र में भी धन एवं मान-हानि का योग बनता है। तीर्थाटन का योग बनता है। स्थान परिवर्तन का योग। भूमि-भवन का विवाद योग। विद्या में सफलता का योग बनेगा। वांछित कार्य भी होंगे। ता. 8, 10, 24, 28 अशुभ हैं। **नवंबर**-इस माह में सामाजिक मन-मुटाव चलेगा। कोर्ट-कचहरी एवं अन्य अग्निकाण्ड जैसी हानि का योग भी बनता है। राजकीय व्यवस्था का पूरा लाभ मिलेगा। पत्नि की बीमारी में सुधार का योग बनेगा। मित्र वर्ग आर्थिक मदद करेंगे। पूर्व दिशा की यात्रा में लाभ दायक स्थिति एवं आर्थिक योग अच्छा बनता है। ता. 3, 10, 21, 27 अशुभ दायक हैं। **दिसंबर**-माह में परिवार की स्थिति चिन्ता दायक बनेगी। गृह कार्यों में आंशिक सुधार बनेगा। व्यर्थ के झंझटों से बचें। होटल व्यवसाय जैसा धंधा का अच्छा योग बनता है। पदोन्नति का शुभ योग बनेगा। बच्चों का भाग्योदय इस माह में अच्छा बनता है। वाहन से सावधान। स्वयं चालक बनकर वाहन नहीं चलायें। ता. 2, 12, 19, 27, 29 अशुभ हैं। **जनवरी 2013 ई.**-इस माह में आपको खुशी के समाचार मिलेंगे। मित्रों एवं परिवारजनों से सम्पर्क बढ़ेगा। वाद-विवाद से बचकर रहें। व्यवसाय में परिवर्तन का योग, लघु उद्योग तथा कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान जैसे कार्य में अच्छा लाभ मिलेगा। विदेश यात्राएं एवं सामाजिक सम्मान प्राप्ति का अच्छा माह रहेगा। ता. 2, 9, 12, 24, 29, 31 अशुभ हैं। **फरवरी**-माह में राजकीय सेवाओं का लाभ प्राप्त होगा। पुरानी स्मृति का आभास होगा तथा नवीनता से कार्य की योजना बनेगी। शृंखलात्मक प्रवृति का लाभ या कार्य में भी गति बढ़ेगी। यह सभी कार्य व्यवसाय की उन्नति के परिचायक है। संतान प्राप्ति या संतान का भी भाग्योदय कारक माह रहेगा। कहीं पर चोट-सावधान। ता. 3, 14, 24, 28 अशुभ हैं। **मार्च**-इस माह में पारिवारिक विवाद जन्य मामले ज्यादा बनेंगे। वैवाहिक कार्य प्रक्रिया में बाधा योग। मान-प्रतिष्ठा की न्यूनता बनेगी। कोर्ट-कचहरी जन्य मामलों में विजय योग बनेगा। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मित्र वर्ग विदेश यात्रा तक का कार्य करायेंगे। चौपाये जानवरों का क्रय-विक्रय से लाभ। ता. 1, 13, 22, 24, 29 अशुभ हैं।

एवं सौंठ में तेजी। पिस्ता में 50 की तेजी। छोटी इलायची 50 की मंदी तो लालमिर्च में 400 की मंदी। बादाम में 300 की मंदी, खोपरा गोला में 100 की मंदी। तो जौ एवं चना में तेजी आ सकती है। 27 दिसंबर 2012 से 9 जन. 2013 तक लालमिर्च में 1100 की मंदी। 21 दिसं. से 24 फर. 2013 तक जीरा में 1500 की तेजी। 6 दिसं. से 10 जन. 2013 तक पिपरमेंट में 50 की मंदी। 19 दिसं. से 25 फर. 2013 तक अरहर में 1500 की मंदी चल सकती है।

28 जनवरी 2013 -(माघ मास में 5 सोमवार होने से)-15 दिसं. 2012 से 14 फर. 2013 तक गुड़ 250 की तेजी। 5 से 11 जनवरी 2013 तक लालमिर्च, हल्दी, पोस्तादाना में तेजी। गेहूं, चना में तेजी। केशर तेज, चीनी में अच्छी तेजी। 12 से 21 जनवरी 2013 तक सोना, चांदी में अच्छी तेजी। चावल में 400 की मंदी, उड़द में 400 की मंदी, चना में 100 की मंदी, गुड़ में 50 की तेजी, पाम ऑयल में भयंकर तेजी, सौंठ में अच्छी तेजी आ सकती है। 19 से 30 जन. 2013 तक मगज-तरबूज में 700 की मंदी, छुआरा में 500 की मंदी, मसूर, चना में 300 की मंदी, बादाम में 100 की मंदी, खोपरा गोला 200 तेज, तथा जीरा में 1100 की मंदी। 29 जन. से 7 फरवरी 2013 तक मूंग में 250 तेजी, चीनी में 150 की तेजी, काबली चना 250 तेज तो मगज-तरबूज में 300 की मंदी। तेल, गेहूं में अच्छी तेजी। लौंग, उड़द में अच्छी तेजी। जीरा में अच्छी तेजी। 30 जन. से 15 फर. 2013 तक उड़द में 500 की मंदी, तूअर-मसूर में 250 की मंदी, चिरौंजी-सुपारी में मंदी, जायफल-पोस्ता में मंदी, चांदी-सोना में मंदी आ सकती है।

26 फरवरी 2013 -(फाल्गुन में 5 मंगलवार होने से)-16 से 23 फर. 2013 तक गेहूं-मसूर तेज, गुड़ में 175 तेजी, शक्कर 75 तेज, जीरा 700 तेज, देशी घी में मंदी आ सकती है। 10 मार्च से 15 मई 2013 तक लालमिर्च 3005 की तेजी। 9 जन. से 1 मार्च 2013 तक जीरा 1500 तेज। 15 फर. से 15 मार्च 2013 तक पिपरमेंट 150 की मंदी। 26 फर. से 25 मार्च 2013 तक अरहर 505 तेज। 14 फर. से 3 मार्च तक गुड़, चीनी में अच्छी तेजी आ सकती है। 21 फर. से 3 मार्च तक चावल में 30 की मंदी, सौंठ में 500 की मंदी, सोयाबीन में 500 की तेजी। गुड़ में 50 की तेजी, ग्वार गम 1500 की मंदी। 1 से 19 मार्च 2013 तक चीनी में 250 की तेजी, गेहूं में 150 तेजी, मूंग, चना में भी तेजी। हल्दी, जीरा, खोपरा गोला में तेजी। 7 से 15 मार्च तक केशर 2000 तेज, मगज-तरबूज में तेजी, सौंठ 900 तेज, जीरा में अच्छी तेजी। सोयाबीन 700 तेज, मसूर, चना, उड़द में तेजी। गुड़ 75 तेजी आ सकती है। 19 मार्च के आसपास आमचूर में जोरदार मंदी, चीनी, सोयाबीन में जोरदार तेजी आ सकती है।

28 मार्च 2013 -(चैत्र मास में 5 गुरुवार होने से)-11 से 30 मार्च 2013 तक हल्दी, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, अजवायन, सौंफ, मूंग, उड़द, चावल में अच्छी तेजी आ सकती है। साथ में गुड़, शक्कर में भी अच्छी तेजी आ सकती है। 15 से 30 मार्च तक गेहूं, मसूर में अच्छी तेजी, सौंफ में 700 तेजी, सोयाबीन में 700 की तेजी, बाजरा में 45 की तेजी, मूंग, उड़द, मोंठ में अच्छी तेजी। देशी घी में अच्छी तेजी। 1 से 15 अप्रैल 2013 तक केशर तेज, मगज-तरबूज 500 तेज, अजवायन 200 तेज, कलौंजी में 900 की तेजी, लौंग तेज। चांदी-सोना में अच्छी तेजी आ सकती है। 5 से 20 अप्रैल तक गेहूं में 35 की तेजी। चीनी 65 तेज, उड़द 250 तेज, तूअर 200 तेज, सोना-चांदी में अच्छी तेजी। तथा जीरा, सौंठ में मंदी। 30 मार्च से 3 मई 2013 तक लालमिर्च 1500 तेज, जीरा में मंदी। 1 से 20 अप्रैल तक पिपरमेंट में 75 की मंदी। 27 मार्च से 15 अप्रैल तक चांदी 2575 तेज, सोना 1575 तेजी बन सकती है।

26 अप्रैल 2013 -(वैशाख मास में 5 शुक्रवार होने से)-9 अप्रैल से 22 मई 2013 तक तूअर में 500-700 तेजी। 10 अप्रैल से 7 मई 2013 तक गुड़ में 150 की मंदी। 25 अप्रैल से 11 मई 2013 तक गेहूं 25 तेज, केशर तेज, लौंग 45 तेज, बादाम में 200 मंदी, लालमिर्च में मंदी, मक्का तेज, तो मगज-तरबूज एवं राजमां में मंदी आ सकती है। 27 मार्च से 15 अप्रैल 2013 तक अरहर 400-500 की भड़कती तेजी आ सकती है। 20 अप्रैल से 11 मई 2013 तक काबली चना 250 तेज, सौंफ 700 तेज, चीनी 75 मंदी, मटर 50 मंदी, मसूर 306 मंदी, मगज-तरबूज 305 मंदी, गेहूं 65 मंदी, तो चावल 65 तेज, उड़द में तेजी, तूअर 107 तेज, सरसों 65 मंदी, तिल 99 तेजी आ सकती है। 27 अप्रैल से 5 मई 2011 तक पिस्ता 90 तेज, जीरा 200 तेज, धनियां 200 तेज, किशमिश 500 तेज, हल्दी 1199 तेज, लालमिर्च 1999 तेजी। 5 से 21 मई 2013 तक उड़द, मूंग, अरहर में तेजी। गेहूं 45 तेज, चावल 400 तेज, पोस्तादाना 75 तेज। 7 से 25 मई 2013 तक केशर, जीरा, हल्दी 575 तेजी आ सकती है।

सोयाबीन तेल रिफाइंड, सरसों हापुड़ मंदी के चांस

7 अप्रैल 2012, 25 अप्रैल 2012, 9 नवंबर 2012। नोट-7 मार्च से 12 जुलाई 2012 तक घटबढ़ से तैलों में तेजी चल सकती है। 23 दिसं. 2012, 2 अग. 2012, 21 जुलाई 2013। इन चांसों के लिखी तारीखों के 10-15 दिन पहले से 3 दिन बाद तक रिफाइन्ड तैल, अलसी, अरण्ड, सरसों में जोरदार मंदी 7 दिन के लिए आ सकती है।

शेयर मार्केट के स्पेशल चांस

1. 17 जुलाई 2012 से 7 जनवरी 2013 के बीच शेयर्स मार्केट में भारी तेजी आवे तो 8 जनवरी से 5 फरवरी 2013 के बीच शेयर्स मार्केट में 5000 प्वाइंट की गिरावट आ सकती है।

LEAD लेड तेजी-मंदी चांस

29 मार्च से 11 अप्रैल 2012 तक लेड में 15 की अच्छी तेजी आ सकती है। 12 अप्रैल से 17 मई 2012 तक 18 की जोरदार मंदी आ सकती है। 18 मई से 7 जून 2012 तक 11 की तेजी, 8 से 30 जून 2012 तक लेड में 15 की जोरदार मंदी आ सकती है। 1 से 30 जुलाई 2012 तक 21 की मंदी आवे तो 30 जुलाई से 18 दिसंबर के मध्य 45 की भारी तेजी। 21 दिसं. से 9 जनवरी 2013 के बीच 15 की मंदी, 11 जनवरी से 1 मार्च 2013 के बीच कभी भी लेड में 21 की तेजी। 2 से 15 मार्च 2013 तक 11 की मंदी, 16 से 29 मार्च तक 5 की तेजी, 30 मार्च से 5 मई 2013 तक 9 की मंदी आ सकती है।

नेचुरल गैस गोल्डेन चांस

17 से 23 मार्च 2012 तक गैस में 33 की मंदी, 24 मार्च से 1 अप्रैल 2012 तक 25 की तेजी, 2 से 15 अप्रैल 2012 तक 36 की मंदी, 16 अप्रैल से 25 मई 2012 तक 55 की मंदी, 3 से 18 जून 2012 तक 27 की तेजी, 19 से 29 जून 2012 तक 25 की मंदी, 30 जून से 11 जुलाई तक 27 की तेजी, व 29 जुलाई तक 41 की तेजी। 29 जुलाई से 5 अगस्त 2012 तक 29 की मंदी, 5 से 16 अग. 15 की तेजी, 17 से 31 अग. तक 17 की मंदी, 1 से 9 सितं. तक गैस में 15 की मंदी। 9 से 25 सितं. तक 25 की तेजी, 25 सितं. से 3 नवं. तक 45 की मंदी, 6 से 11 नवं. तक तेजी, 12 नवं. से 5 दिसं. तक 41 की मंदी, 7 दिसं. से 13 जनवरी 2013 तक 65 की तेजी। 15 से 21 जनवरी 2013 तक या 11 फरवरी 2013 तक गैस में 25 की मंदी, 12 से 27 फरवरी अच्छी तेजी आवे तो 28 फर. से 11 मार्च 2013 तक मंदी आवेगी। 12 मार्च से 15 अप्रैल 2013 तक 36 की मंदी, 16 अप्रैल से 21 मई तक 36 की आने की संभावना है।

क्रूड ऑयल Crude Oil

28 दिसंबर 2011 से 12 मई 2012 तक क्रूड ऑयल में 19 डॉलर प्रति बैरल की जोरदार मंदी का झटका लग सकता है। 12 से 21 मई 2012 तक क्रूड ऑयल में 7.50 डॉलर प्रति बैरल की तेजी, 21 मई से 10 अगस्त 2012 तक 10 डॉलर प्रति बैरल की मंदी, 10 अगस्त से 10 सितं. 2012 तक क्रूड ऑयल में 6 डॉलर प्रति बैरल की तेजी, 10 सितं. से 6 अक्टूबर 2012 तक 4.90 डॉलर प्रति बैरल की मंदी, 6 अक्टू. से 26 नवंबर 2012 तक 7 डॉलर प्रति बैरल की तेजी, 26 नवं. से 16 फर. 2013 तक 11 डॉलर प्रति बैरल की मंदी, 16 फर. से 24 मार्च 2013 तक 3.80 डॉलर प्रति बैरल की तेजी, 24 मार्च से 24 मई 2013 तक 7 डॉलर प्रति बैरल की तेजी आने की संभावना है।

शेयर्स मार्केट तेजी-मंदी

16 फरवरी से 28 मार्च 2012 तक शेयर्स मार्केट में तेजी चल सकती है। 28 फरवरी से 4 मई 2012 तक शयर्स मार्केट में मंदी, 4 से 20 मई 2012 तक तेजी, 20 मई से 30 जून 2012 तक तेजी, 30 जून से 12 जुलाई तक मंदी आने की संभावना है।

12 जुलाई से 30 अग. तक B.S.E. Index में 1120 प्वाइंट की तेजी, 30 अग. से 29 सितंबर 2012 तक 1236 प्वाइंट की मंदी, 29 सितंबर से 10 अक्टू. 2012 तक 1422 प्वाइंट की मंदी, 10 अक्टू. से 13 दिसं. 596 की तेजी, 13 दिसं. से 24 जन. 2013 तक 860 प्वाइंट की मंदी, 24 जन. से 12 मार्च 2013 तक 56 प्वाइंट की तेजी, 12 मार्च से 6 अप्रैल 2013 तक 1448 प्वाइंट की मंदी चल सकती है। 6 अप्रैल से 2 मई 2013 तक 900 प्वाइंट की तेजी चलने की संभावना है। नोट-व्यापार में लाभ-हानि की कोई जिम्मेवारी कभी नहीं होगी।

परिलेखकर्त्ता : प्रेमचन्द जैन पोरसा वाले
ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे, बारादरी चौराहा
मुरार, ग्वालियर (म.प्र.) पिन-474006
फोन-0751-6532062 (पी पी) मो. 09303775783 (बंटी जैन पी पी)

चन्द्र शृंगोन्नतः विचार सन् 2012 ई.

तिथि	विवरण
24 जनवरी उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30	24 जनवरी सन् 2012 ई. -चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से श्याम वर्ण वाला मुहूर्त्त 30 से होगा। घी, तेल, तिल, पैट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल में तेजी होगी। उत्तर भारत में विग्रह, उत्पात, तोड़फोड़ की वारदातें होंगी। सर्वरस, जूट, पाट, बारदाने, काष्ठ, कोयला, शीशा, सोना, चांदी, लोहा, पीतल, स्टील, ग्वार, बाजरा, मक्का, सौंठ, कालीमिर्च, इलायची, केशर, हींग, जीरा, चन्दन, कपूर में घोर तेजी।
23 फरवरी सम शृंग मुहूर्त्त 30	23 फरवरी- को चन्द्रोदय समशृंग, श्याम वर्ण से होगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, मक्का, मसूर, मोंठ, उड़द, रमास, तूअर आदि पर घोर तेजी हो। काष्ठ, कोयला, पैट्रोल, डीजल, घी, तेल, तिल, सरसों, सोना, चांदी, लोहा, पीतल, जिंक, निकिल, हींग, जीरा, धनियां, दाख, किशमिश, मखाने, हल्दी, अखरोट, लाल सफेद चन्दन, कत्था, कपूर, कचूर, चिरौंजी, गुग्गल के भाव गिरते दिखाई दें। जूट, पाट, वारदाने, रुई, कपास, ऊन, सूत, कपड़ा के भावों में साधारण तेजी हो।
24 मार्च दक्षिण शृंग मुहूर्त्त 30	24 मार्च-को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग, रक्त वर्ण वाला मुहूर्त्त 30 में होगा। व्यापार जगत में विलक्षण प्रभाव लाने वाला सिद्ध होता है। मार्केट में जोरदार उथल-पुथल भी हो सकती है। मासांत में भाव स्थिर होंगे। घटाबढ़ी के साथ चलने वाला मार्केट एकदम थम सकता है। रुई, गुड़, ग्वार, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ के भावों में घोर तेजी आती है। तिल, तेल, सरसों के भावों में स्थिरता आकर तेजी भड़क सकती है। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल पर साधारण तेजी होती है।
22 अप्रैल दक्षिण शृंग मुहूर्त्त 15	22 अप्रैल-को दीखने वाला चन्द्र दक्षिण शृंग से होगा। रक्त वर्ण 15 मुहूर्त्तों चन्द्रमा रमास, सरसों, तिली, घी, तेल, पैट्रोल, डीजल, हींग, जीरा, धनियां, नमक, कालीमिर्च, कमलगट्टा, सुपारी, जायफल, मैनफल, शाल, चीड़, देवदारु, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, कागज, स्याही, स्टेशनरी सामग्री में कुछ मंदापन होगा। जिंक, निकिल, रांगा, जस्ता, पीतल के भावों में तेजी हो। जूट, पाट, वारदाना, ऊन, रुई, कपास पर कुछ तेजी होती है।
22 मई सम शृंग मुहूर्त्त 30	22 मई-को चन्द्रदर्शन समशृंग, रक्त वर्ण वाला 30 मुहूर्त्तों से हो रहा है। मूंग, मसूर, कपड़ा, ऊन, मोंठ, तूअर, गेहूं, चना, जौ, मटर, चावल, देवदारु, शाल, चीड़, सरसों, सूत, उड़द पर मंदापन होता है। चांदी, सोना, तांबा, लोहा, जिंक, शक्कर, हल्दी, हींग, कालीमिर्च, कपूर, अगर तगर, दाख, किशमिश के भावों में गिरावट आ सकती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के प्रांतीय मंत्रीमण्डलों में परिवर्तन हो।
21 जून उत्तर शृंग मुहूर्त्त 45	21 जून-को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग, पीत वर्ण वाला 45 मुहूर्त्तों से हो रहा है। चन्द्रोदय पैट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल, बिजली का सामान, स्टेशनरी का सामान, कांच का सामान, प्लास्टिक का सामान, सोना पर घोर तेजी हो जाती है। गेहूं, चना, मटर, तीसी, सरसों, तिली, कालीमिर्च, लौंग, डोढ़ा, अगर-तगर, कपूर, चन्दन, सुपारी, रोली, जायफल, चांदी, तांबा में साधारण तेजी हो।
21 जुलाई उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30	21 जुलाई-को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग, श्वेत वर्ण वाला 30 मुहूर्त्तों से दिखाई देगा। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील, जिंक, निकिल, गेरु, जस्ता के भाव गिरते हैं। चीड़, शाल, काष्ठ, कोयला, गेहूं, चना, जौ, मटर, चावल, दाख, किशमिश, अगर तगर, सुपारी, लौंग, कालीमिर्च के भाव गिर जाते हैं। हींग, जीरा, धनियां, कत्था, कपूर, कचूर, चूना के भावों में अच्छी तेजी हो जाया करती है। मासांत में सुपारी, हरड़, बहेरा, आंवला, गैस, पैट्रोल, डीजल पर तेजी हो जाती है।
19 अगस्त उत्तर शृंग मुहूर्त्त 45	19 अगस्त-को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग, रक्त वर्ण वाला 45 मुहूर्त्तों से हो रहा है। दालवाने, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, मटर, चना, धातुवाने, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील, जिंक, निकिल, रांगा, जस्ता, कांसा में अच्छी तेजी। इन्द्र जौ, हरड़, बहेड़ा, आंवला, क्षार, हींग, हल्दी, जीरा, धनियां, कत्था, कपूर, चन्दन, दाख, किशमिश, कालीमिर्च, लौंग, डोढ़ा, अगर-तगर, चन्दन, इत्र पर विशेष तेजी हो।
17 सितंबर उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30	17 सितंबर-को चन्द्रोदय उत्तर शृंग, पीत वर्ण वाला 30 मुहूर्त्तों से हो रहा है। कमलगट्टा, सुपारी, सिंघारा, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, गुग्गल, धूप, नीलम, पुखराज, मोती, मूंगा, हींग, हल्दी, जीरा, धनियां, जूट, पाट, वारदाना, ऊन, रुई, कपास, सूत, कपड़ा पर अच्छी तेजी होती है। उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, चावल, चना, मटर, सरसों, दाख, किशमिश, हरड़, बहेड़ा, आंवला, इत्र, केवड़ा पर तेजी होती है।
17 अक्टूबर उत्तर शृंग मुहूर्त्त 45	17 अक्टूबर-को दीखने वाला चन्द्रमा उत्तर शृंग, श्वेत वर्ण वाला 45 मुहूर्त्तों से होगा। दालवाने, धातुवाने में अच्छी तेजी होती है। उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, रांगा, जस्ता, सरसों, गेहूं, जौ, चावल, अरहर, लौंग, इलायची, गुग्गल, दाख, किशमिश, छुहारे, मखाने, कालीमिर्च, डोढ़ा पर घोर तेजी हो जाया करती है। पैट्रोल तेज।
15 नवम्बर उत्तर शृंग मुहूर्त्त 15	15 नवंबरर-को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग, पीत वर्ण वाला 15 मुहूर्त्तों से हो रहा है। गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़, अरहर, उड़द, रमास, मसूर, रांगा, खाण्ड, शक्कर, दाख, किशमिश में तेजी होगी। चिरौंजी, मखाने, छुहारे, मूंग, मसूर, गुग्गल, अगर-तगर के भाव गिर सकते हैं। कालीमिर्च, डोढ़ा, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल पर घोर तेजी। पैट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल, जूट, पाट, वारदाने के भावों में कुछ गिरावट हो सकती है। तृण, भूसा, कोयला, ईंधन, काष्ठ के सामान में प्रायः तेजी के योग हैं।
14 दिसंबर उत्तर शृंग मुहूर्त्त 30	14 दिसंबर-को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग, पीत वर्ण वाला 30 मुहूर्त्तों से हो रहा है। रुई, कपास, ऊन, सूत, कपड़ा, पैट्रोल, डीजल, गैस, मिट्टी के तेल पर विशेष तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, जिंक, निकिल, रांगा के भाव ऊंचे जावेंगे। लौंग, सुपारी, कालीमिर्च, डोढ़ा, दाख, किशमिश, अगर-तगर, हींग, जीरा, धनियां, घी, तेल, स्टेशनरी के सामान पर तेजी होगी। मासांत में तेजी होती है।

तेजी-मंदी चमत्कारी भविष्यवाणी

जनवरी-ता. 1 से 8 दिन में सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, निकिल, जिंक, रुई, कपास, ऊन, खल में घोर तेजी। चावल, मटर, गेहूं, रमास, अरहर, मूंग, उड़द में कुछ गिरावट। ता. 9 से 7 दिन में सोना, चांदी, तांबा, जिंक, जस्ता, रुई, सोंठ में मंदापन हो। ता. 11 से 5 दिन में तेजी। कोयला, गैस, पैट्रोल, डीजल, दालवाने, धातुवाने पर तेजी। खल, बिनौला में जोरदार तेजी। गांजा, भांग, अफीम, कपूर, केशर, मखाने, अगर-तगर, ऊन, रुई, रेशम, गुड़, बिनौला, मूंगफली, अखरोट, जायफल में गिरावट। सोना, चांदी में तेजी। ता. 14 से 15 दिन में रमास, चना, गेहूं, सरसों, कत्था, बांस, मूंज, तिल, सरसों में गिरावट। ता. 16 से 6 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल में घोर तेजी। ता. 21 से 20 दिन में रुई, ऊन, रेशम, बिनौला, खल, गेहूं, चना, जौ, चावल, में तेजी।

फरवरी-ता. 1 से 15 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, रांगा, पत्थर, चूना पर अच्छी तेजी। ता. 6 से 12 दिन में अफीम, भांग, गांजा, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल पर साधारण तेजी होती है। ता. 10 से 7 दिन में गुड़, चावल, चना, गेहूं, मटर, सरसों, कालीमिर्च, लौंग, सूखे मेवा, अखरोट में घोर तेजी। चावल, तिल, तेल, घी, सोयाबीन, गुड़, धान में मासांत में मंदी का रुख रहे। ता. 14 से एक मास में मार्केट में घटाबढ़ी। गेहूं, चना, जौ, मटर, सरसों, कालीमिर्च, लौंग आदि के भावों में गिरावट। ता. 20 से 22 दिन में रुई, कपास, ऊन, रेशम, गुड़, कालीमिर्च, चन्दन के भावों में साधारण तेजी हो। ता. 23 से 10 दिन में रुई, कपास, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, शीशा, रेशम, जूट, पाट, वारदाने में तेजी। ता. 25 से 3 दिन तक सोना, चांदी, शेयर्स बाजार, रसकस पदार्थ, अनाज, धान, रुई, कपास के भावों में पुनः घोर तेजी हो।

मार्च-ता. 2 से 30 दिन में आलू, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चांदी, कोयला, गैस, रुई, कपास, रेशम, सूत, बिनौला, खल, भूसा, घास में मंदापन। ता. 3 से 15 दिन में दालवाने, तेल, घी पर तेजी। ता. 5 से 10 दिन में सोना, चांदी, तांबा, पीतल, स्टील, हींग, जीरा, किराना, मोटा अनाज, मोती, मूंगा, पुखराज, नीलम, गुग्गल, अगर-तगर पर कुछ तेजी। ता. 8 से 7 दिन में रुई, कपास, सूत, जूट, पाट, वारदाने पर घोर तेजी। ता. 10 से 20 दिन में उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, रमास, चना, गेहूं, सरसों, तिली पर तेजी हो। ता. 14 से 14 दिन में धान्य, धातुवाने, किराना वस्तु के भाव, नमक, जीरा, हींग, कालीमिर्च, चिरौंजी, धनियां पर घोर तेजी। ता. 17 से 15 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, पीतल, निकिल, रुई, कपास, ऊन के भावों में गिरावट। ता. 18 से दूध, घी, तेल, दही, पनीर, मूंगा, मोती, शंख, सीप, पुखराज, नीलम में अच्छी तेजी। ता. 30 से 10 दिन में सोना, चांदी, पीतल, जिंक, निकिल, रांगा, कपूर, कचूर, मखाने, दाख, किशमिश, छुहारे पर मंदी हो।

अप्रैल-ता. 5 से 10 दिन में सोना, चांदी, रुई, शेयर बाजार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, लौंग, इलायची, कालीमिर्च, शहद के भावों में गिरावट। ता. 14 से एक मास में तेल, घी, जूट, पाट, वारदाना, सोना, चांदी, रुई, कपड़ा, सूत, ऊन में घोर तेजी। ता. 16 से 15 दिन में मोटा अनाज, तिल, तेल, घी, दालवाने, धातुवाने में गिरावट। ता. 20 से गेहूं, चना, मक्का, जौ, लहसुन, प्याज, उड़द, मसूर, मोंठ, रुई, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रमास, जूट, पाट, वारदाने में तेजी। ता. 25 से 22 दिन में घी, तेल, तीसी, सोना, चांदी, रुई, कपड़ा, जस्ता में गिरावट। ता. 26 से 14 दिनों में चावल, गेहूं, मक्का, चना, उड़द, मूंग, मसूर, मेंहदी, अबीर, हल्दी, गुलाल, दाख, किशमिश, छुहारे पर घोर तेजी।

मई-ता. 1 से 7 दिन में रुई, कपास, ऊन, रेशम, चन्दन, कालीमिर्च, जीरा, दाख के भाव गिर सकते हैं। चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, पीतल, रांगा, निकिल पर भी गिरावट हो। ता. 7 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, चावल, मटर, भूसा, कोयला, गैस, काष्ठ, कपास, रुई, ऊन पर भी गिरावट होगी। ता. 11 से 6 दिन में अफीम, भांग, गांजा, अगर-तगर, घी, मूंगफली पर कुछ तेजी। ता. 17 से 8 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, गेहूं, चना, जौ, चावल, उड़द पर तेजी हो। ता. 25 से 10 दिन में जिंक, निकिल, लोहा, जस्ता, रांगा, पैट्रोल, डीजल आदि पर घोर तेजी। किराना वस्तुओं के भाव भी बढ़ सकते हैं।

जून-ता. 1 से 7 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, निकिल, रांगा, पीतल के भावों में गिरावट हो। ता. 8 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, रुई, कपास, चांदी, सोना, तांबा, पीतल में घटाबढ़ी के साथ तेजी हो। ता. 20 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, मूंग, मसूर, उड़द, मोंठ, रमास, घी, तेल, जूट, पाट, वारदाने, पीतल, तांबा, सोना, लोहा, जिंक, निकिल पर घोर तेजी। ता. 25 से 20 दिन में सोना, चांदी, तांबा, पीतल, रांगा, जिंक, निकिल, जस्ता में एकदम गिरावट आ सकती है।

जुलाई-ता. 1 से रुई, कपास, ऊन, रेशम, सोना, चांदी, तांबा, जिंक, निकिल, जस्ता, रांगा के भावों में घटाबढ़ी के साथ तेजी। ता. 10 से 5 दिन में लोहा, पारा, लौंग, गुड़, इलायची, कालीमिर्च, चन्दन, केशर आदि में अत्यधिक तेजी। ता. 20 से 15 दिन में गेहूं, चना, जौ, मटर, मूंग, मसूर, मोंठ, उड़द, सरसों, घी, वेजीटेबल, सोयाबीन, जूट, पाट, वारदाना में घोर तेजी। ता. 25 से 30 दिन एक मास में मार्केट घटाबढ़ी में चलकर गिर सकता है। पहले तेजी का रुख, फिर मंदी का रुख बन सकता है। इस समय में व्यापारी अच्छा लाभ ले सकते हैं।

अगस्त-ता. 2 से 10 दिन में गेहूं, चना, मटर, मक्का, चावल, तिल, तेल, घी, सरसों, वनस्पति तेल, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, निकिल, जिंक, रांगा, उड़द, गुलाल, चन्दन, मेहन्दी, अगर- तगर, हींग, हल्दी, जीरा, मखाने, दाख, किशमिश में साधारण तेजी। ता. 15 से 5 दिन में चावल, चना, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, सोना, चांदी, तांबा, भांग, गांजा, अफीम, तम्बाकू में घोर तेजी। ता. 26 से 31 तक धान्य, धातुवाने में कुछ गिरावट आवे।

सितम्बर-ता. 5 से 7 दिन में सोना, चांदी, तांबा, निकिल, जिंक, रांगा, जस्ता, पीतल, लोहा, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, हल्दी, हींग, जीरा, मखाने, दाख, किशमिश, वनौषधियों में घोर तेजी। इलायची, चिरौंजी, डोढ़ा, फल, फूल, दूध, दही, घी के भावों में गिरावट। ता. 16 से 7 दिन में गुग्गल, धूप, क्षार छबीला, अगर-तगर, चावल, लौंग, कपूर, कचूर आदि में साधारण तेजी। जायफल, मैनफल, नारियल, चन्दन, चूरा, गोला पर अच्छी तेजी। ता. 25 से 30 तक भांग, गांजा, अफीम, शराब, सूखे मेवा, जूट, वारदाने, ऊन, रुई, रेशम, कपास पर साधारण तेजी हो।

अक्टूबर-ता. 1 से 8 दिन में गेहूं, चना, जौ, चावल, मटर, मक्का पर अच्छी तेजी। ता. 10 से 7 दिन में इन्हीं वस्तुओं में घोर तेजी। ता. 14 से 20 दिन तक रुई, कपास, कपड़ा, सूत, रेशम, ऊन, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, रांगा, निकिल, जिंक में साधारण तेजी हो सकती है। ता. 21 से 25 दिन में गेहूं, चावल, चना, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, अफीम, गांजा, भांग, हल्दी, हींग, जीरा, मखाने, दाख, किशमिश पर घोर तेजी। ता. 26 से 1 मास में सरसों, तिल, तेल, चन्दन, हींग, जीरा, कालीमिर्च, अगर-तगर, सूखे मेवा, इलायची में अच्छी तेजी।

नवंबर-ता. 1 से 15 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातुओं, रुई, सूत, कपड़ा, ऊन, रेशम, कालीमिर्च, हींग, हल्दी, दाख, किशमिश, चिरौंजी, लौंग आदि में मंदी होकर तेजी। ता. 16 से 7 दिन में घी, तेल, वनस्पति तेल, कड़वा तेल, तिली का तेल, तिल, सरसों, गेहूं, चना, नमक, चन्दन, सूखे मेवा, जूट, पाट, वारदाने, जायफल, तेजपत्ता, सोना, चांदी आदि के भाव कुछ गिर जाते हैं। ता. 22 से 8 दिन में ऊन, रुई, सूत, कपड़ा, रेशम, स्टील, लोहा आदि में अच्छी तेजी। ता. 25 से 30 तक दालवाने (उड़द, मूंग, मसूर, रमास, मोंठ, अरहर), हींग, जीरा, कालीमिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, दाख, किशमिश, छुहारे आदि में घोर तेजी।

दिसम्बर-ता. 1 से 10 दिन में सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्ता, निकिल, जिंक, रांगा, पत्थर, चूना, सीमेन्ट, गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, मक्का, उड़द, मूंग, मसूर, अरहर, मोंठ, रमास आदि पर घोर तेजी होती है। चांदी का भाव एक सप्ताह में आखिरी दिनों में गिर सकता है। ता. 18 से 10 दिन में सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, मोती, हीरा, पुखराज, नीलम, जस्ता, निकिल, जिंक पर घोर तेजी बनती है। ता. 25 से 31 तक गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, चावल, सोयाबीन, सरसों, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेजी।

सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् 2069 वि.

इस वर्ष आकाशीय काउंसिल में राजा शुक्रदेव बनें हैं, साथ ही मंत्री पद पर भी शुक्रदेव ही हैं। राजा व मंत्री शुक्र होने से वृक्ष फलों से युक्त होंगे। गौ संवर्द्धन होगा। सस्येश चन्द्र होने से शुभ है। धान्येश शनि दुर्भिक्ष का कारक है अत: कहीं-कहीं कलह कारक व फसल की हानि होगी। मेघेश गुरु अच्छी वर्षा करने वाले होंगे। रसेश भौम होने से प्रजा सुख-समृद्धि करने वाले होंगे। नीरसेश सूर्य व फलेश गुरु भी अपने-अपने क्षेत्र की वृद्धि करेंगे। धनेश रवि व दुर्गेश गुरु धन-समृद्धि के क्षेत्र में भारत को आगे बढ़ायेंगे। तथा गुरुदेव शत्रु के षडयंत्रों को भेदते हुए राष्ट्र रक्षा में सक्षम होंगे।

चैत्र शुक्ल पक्ष -तीन शुक्रवारों से युक्त होने से भारी मंदी का फल देंगे। अत: जो वस्तुयें तेजी में पहले से चली आ रही हों, उनमें मंदी की सूचना समझें। उ.भा. नक्षत्रयुक्त शुक्रवारी प्रतिपदा से वायदा वस्तुओं में जोरदार मंदी। विशेष रूप से हरे रंग की वस्तुएं, जीरा, धनियां, अजवाइन, सोना, चांदी, रुई, कपास, जूट, पाट, सरसों, सोयाबीन, सोया तेल, गुड़, चना, ग्वार, कॉपर, जिंक, लैड, क्रूड में जोरदार मंदी होगी। **नोट**-अगर ता. 23 मार्च को ता. 22 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाये तो तेजी का चांस ही उस वस्तु में लम्बी लाइन का ता. 3 अप्रैल तक सम्पन्न होगा। आज ही शाम को मघा नक्षत्र में मंगलदेव के वक्री होने से आलू, लालमिर्च, केसर, मसूर, बादाम, छुआरा के भावों में नरमी का रुख घटबढ़ के साथ रहने की धारणा है। इन वस्तुओं में ता. 24 मार्च को 23 के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जायें, तब उसी वस्तु में तेजी चलेगी।

ता. 28 मार्च को वृष राशि में शुक्र के प्रवेश से रुई, कपास, खल, बिनौला के भावों में श्रेष्ठ मंदी। सोना, चांदी में चलती मंदी में तेजी का रिएक्शन। यह तेजी ता. 30 तक होगी। यह चाल ता. 28 मार्च को 12 बजे के बाद चलेगी। **नोट**-अगर ता. 28 मार्च को 12 बजे के बाद, ता. 27 को बने नीचे भाव उपर्युक्त वस्तुओं में तथा ता. 28 मार्च को 12 बजे तक बने नीचे भावों में से जो भी सबसे नीचा हो, उसे काटकर मार्केट टूट जाय, तब मंदी की चाल जानना। किन्तु ऊंचे बने भाव के क्रॉस होने पर तेजी ही मार्केट में चलती रहेगी। **तेजी-मंदी लगाने की तारीखें**-ता. 22 मार्च की शाम 23 की 10 मंदी, तो 4 तेजी भी लगायें। ता. 29 मार्च को 30 के लिये दुतर्फा गली लगायें। ता. 4 अप्रैल को 5 के लिए मंदी लगाना लाभप्रद होगा। गुड़, खाण्ड का स्टॉक लाभप्रद रहेगा।

वैशाख -मास में पांच शनिवार व पांच रविवार होने से बदी प्रतिपदा की रात्रि में रोहिणी में शुक्र के प्रवेश से नारियल, सुपारी, दाख, सोना व चांदी के भावों में मंदी। जो कम से कम 15 दिन प्रभावकारी होगा। वैशाख बदी 5 ता. 11 अप्रैल को षष्ठी तिथि का क्षय चाल पलटने वाला होगा। बुधवारी पंचमी ज्येष्ठा नक्षत्र युक्त होने से गुड़, खाण्ड, चीनी, जीरा, धनियां, लालमिर्च, गेहूं, जौ, चना में 18 अप्रैल तक तेजी। क्रूड ऑयल, कॉपर, जिंक, लैड, नेचुरल गैस के भावों में नई चाल चलेगी।

नोट-जिस वस्तु में ता. 11 अप्रैल को ता. 10 के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाये, तब उसी वस्तु में मंदी की चाल एक सप्ताह की बन जाएगी। ता. 14 अप्रैल मेष संक्रांति के प्रभाव से रुई, सूत, नारियल, कपास, बादाम, सुपारी, तिल तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में तेजी कारक तथा गेहूं, जौ, चन्ना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग के भावों में मंदी। उपरोक्त में से जिस वस्तु में ता. 14 अप्रैल को 13 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा, तब उसी वस्तु में मंदी की चाल ता. 21 अप्रैल तक बन जायेगी। ता. 23 अप्रैल वैशाख सुदी दोज चन्द्रवारी कृतिका नक्षत्र युक्त होने से वायदा बाजारों में भारी उतार-चढ़ाव होंगे। ता. 3 मई की रात्रि को गुरु अस्त से एक मास की मंदी चलेगी। विशेष रूप से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, कांसा, जिंक, लैड, क्रूड ऑयल, मैंथा, मूंग, मोंठ, मसूर, ग्वार, चना, जीरा, कालीमिर्च, हल्दी, तेल, सोयाबीन में जोरदार गिरावट। **लक्ष्मी चांस**-ता. 11 अप्रैल की प्रात: दुतर्फा गली लगाना। ता. 13 अप्रैल की शाम को तेजी, ता. 3 मई की रात्रि में मंदी लगाना।

ज्येष्ठ-मास में पांच चन्द्रवार तथा प्रतिपदा तिथि क्षय से खाद्यानों तथा व्यापारिक वस्तुओं में घोर मंदी। गेहूं, जौ, चना, मटर, जई, जूट, पाट, खल, रुई, सूत, कपास, खल बिनौला में नरमी चलेगी। सरसों, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन में घटबढ़ से मंदी होगी। ज्येष्ठ बदी पक्ष में यह चाल चलती रहने की धारणा है। ता. 14 मई की शाम को वृश्चिक संक्रांति के प्रभाव से घटबढ़ साथ नरमी अनाजों में चलेगी। सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, सरसों, सोयाबीन के भाव तेज रहेंगे। लालमिर्च व लाल रंग की वस्तुओं के भावों में मंदी। ता. 16 को बुधास्त से चांदी, घी, तेल, रुई, कपास, सूत, सन, पाट, इलायची, जीरा, धनियां, अजवायन व हरे रंग की वस्तुओं के भावों में जोरदार मंदी चलेगी। आज ही रात्रि को गुरुदेव के वृष राशि में प्रवेश से घी, तेल, चांदी, कपूर के भावों में तेजी। गेहूं, जौ, चना, बाजरा में तेजी का रुख बनेगा।

नोट-वायदा मार्केटों में ग्वार, जीरा, कालीमिर्च, सोना, इलायची, खल, बिनौला, रुई, कपास के भावों में मंदी चलने की धारणा तीन दिन में ही तूफानी चाल चलने की है। **नोट**-अगर ता. 16 मई को 11:30 के बाद ता. 15 मई को बने ऊंचे भाव तथा ता. 16 को 11:30 तक बने ऊंचे भावों में से जो भी सबसे ऊंचा हो, उसे काटकर मार्केट बढ़ जाये, तब तेजी की चाल उसी वस्तु में आगामी 3 दिन में तूफानी चल पड़ेगी। यह चांस इस वर्ष के एटमबम चांसों में से एक सिद्ध होगा।

ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा कृतिका नक्षत्र युक्त तथा अतिगंड नक्षत्र होने से तूफानी मंदी की चाल क्रूड ऑयल, कॉपर, जिंक, लैड, सोना, चांदी में चलेगी। **नोट**-अगर ता. 21 मई को ता. 20 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाये, तब उसी वस्तु में तेजी ता. 26 मई प्रात: तक चलेगी। हाजिर मार्केटों में ता. 1 जून तक या पहले ही नीचे स्तर पर गेहूं, जौ, चना, जई का स्टॉक करना लाभप्रद होगा।

आषाढ़-मास में पांच भौमवार तेजी को प्रदर्शित करते हैं। आषाढ़ बदी प्रतिपदा ता. 5 जून की शाम को बुध उदय होना, ता. 6 जून से रुई, कपास, सुती वस्त्र व धान्यों में 15 दिन में नरमी का रुख रहेगा। गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना, चांदी, लालमिर्च, जूट, पाट, बारदाना में तेजी। **नोट**-वायदा मार्केटों में जिस वस्तु में ता. 6 जून को ता. 5 के बने नीचे भाव टूटेंगे, तब उसी वस्तु में जोरदार मंदी ता. 12 जून तक चलेगी। विपरीत में विपरीत चाल समझें। सुपीरियर लाईन का प्रभाव तमाम माह तिलहनों में नरमी कारक रहेगा। ता. 12 जून को 24 घटी पर शुक्रोदय होने से अनाजों के भावों में भारी तेजी कारक होगा। ता. 14 जून गुरुवार आषाढ़ बदी दशमी को रात्रि में मिथुन संक्रांति के प्रभाव से गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, उड़द, मूंग, चावल, गेहूं, चना, अरहर, सरसों, सोयाबीन, ग्वार, रुई, सूत, कपास के भावों में तेजी का रुख बनेगा। सोना, चांदी के भावों में घटबढ़ के साथ तेजी चलने की धारणा है। तब भी हाजिर मार्केट में तीन दिन का रुख देखते हुए व्यापार करना लाभप्रद होगा।

ता. 21 जून की शाम को कर्क राशि में बुध तथा कन्या राशि में मंगलदेव के प्रवेश से लालमिर्च, लालरंग की वस्तुओं, लाल रंग के ऊनी व सूती वस्त्रों में तथा सोना, चांदी, रुई, सूत, चन्दन, जूट, पाट, बारदाना, रेशमी वस्त्र, अलसी, सोयाबीन के भावों में तूफानी तेजी पूरे मास तक चलेगी। बुध के अधिकार की वस्तुऐं भी तेज होंगी। **नोट**-ऊपर लिखी जिन वस्तुओं में ता. 22 जून को ता. 21 के बने नीचे भावों से जिस वस्तु के भाव टूटें, तब उसी में मंदी का दौर सप्ताह भर चलेगा। विपरीत के भाव क्रास होने पर विपरीत चाल ही चलेगी। ता. 26 जून की रात्रि शुक्र देव का मार्गी होना शक्कर, घी, चावल के भावों में तेजी करेगा। ग्वार, चना, गुड़, जीरा, कालीमिर्च, खल बिनौला में श्रेष्ठ तेजी होगी। क्रूड ऑयल, कॉपर, जिंक, लैड, सोना, चांदी, नेचुरल गैस के भावों में घटबढ़ साथ तेजी होगी। **नोट**-जिस वस्तु में ता. 27 जून को ता. 26 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा, तब उसी वस्तु में तूफानी मंदी 29 जून तक ही चलेगी। **लक्ष्मी चांस**-ता. 5 जून की शाम को दुतर्फा गली लगायें। ता. 12 जून की शाम 3 बजे तेजी लगायें। ता. 30 जून को 2 जुलाई के लिए 1 बजे दुतर्फा गली लगानी लाभप्रद होंगी।

श्रावण-माह में पांच बुधवार तथा पांच ही गुरुवार का होना घटाबढ़ी से मंदी को प्रदर्शित करता है। इस माह में सुपीरियर लाईन चलती रहेगी। जिसका प्रभाव तेलवाना के आइटमों में नरमी का रुख बना रहेगा। मासांत तक तिलहनों का स्टॉक विशेष लाभकारी होगा। श्रावण बदी दोज ता. 5 जुलाई की रात्रि को पुनर्वसु में सूर्यदेव का प्रवेश सोना, चांदी, कपास, खल बिनौला, बिनौला, सरसों, अलसी, अरण्डी, गुड़, चावल, तिल, ग्वार, मोंठ, बाजरा, नील, सब्जी, मजीठ, केसर, माजूफल व सुगन्धित पदार्थों में तेजी करेगा। ता. 12 जुलाई को 56 घटी 22 पल पर बुधदेव का वक्री होना ता. 13 जुलाई से गुड़, खाण्ड, चीनी, सरसों, तिल,

तेल, मूंग, मोठ, जीरा, धनियां व पंसारठ की वस्तुओं में मंदी कारक होगी। साथ ही सोना, चांदी, तांबा, जिंक, लैड में भी मंदी होगी। धान्यों के भाव सम रहेंगे। ता. 16 जुलाई की प्रात: कर्क संक्रांति का प्रभाव तिल, तेल, मजीठ, नारियल, गोला, गोलाकस के भावों में मंदी की लाईन एक माह तक चलेगी। तिलहनों में अच्छी मंदी की चाल चलने की धारणा है। ता. 19 जुलाई श्रावण बदी अमावस्या को अर्द्ध राज्योत्तर बुधास्त का होना, व्यापारी बंधुओं के लिए मोटे मुनाफा का एटमबम चांस देगा। विशेष रूप से ता. 20 जुलाई से सोना, चांदी, गुड़, जीरा, धनियां, इलायची, कालीमिर्च, ग्वार, चना, सोयाबीन, तेल, गेहूं, चीनी के भावों में ता. 24 जुलाई तक ही तूफानी तेजी वायदा मार्केटों में चलेगी। **नोट**-जिस वस्तु में ता. 20 जुलाई को ता. 19 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे और नीचे ही बंद हो, तब उसी वस्तु में मंदी उक्त अवधि तक चलेगी। शेयर्स तथा निफ्टी वायदा में तूफानी मंदी। ता. 25 जुलाई से पिछली चाल के पलटकर चलने की धारणा है। श्रावण शुदी 13 को मिथुन राशि में शुक्र के प्रवेश से ता. 1 अग. से गेहूं, जौ, चना, धान्य के भावों में श्रेष्ठ तेजी कारक तथा ग्वार, अरहर, रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों के भावों में मंदी की चाल चलेगी। अत: जो वस्तु उच्च स्तर पर मिले, उनका स्टॉक बेचना लाभप्रद होगा। ता. 22 अग. पूर्णिमा को तुला में शनि का प्रवेश रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, चीनी, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी करेगा। **लक्ष्मी चांस**-ता. 13 जुलाई की प्रात: 14 के लिए दुतर्फा गली लगायें। ता. 19 जुलाई को बंद घंटी पर तेजी लगायें। ता. 2 अग. की शाम 3 की दुतर्फा गली लगायें।

प्र0 भाद्रपद-माह में पांच शुक्रवार होने से मंदी का प्रभाव अधिक। तब भी प्र0 भाद्रपद के प्रथम पक्ष में तेजी का प्रभाव अधिक होगा। यह तेजी किसी वस्तु में तूफानी भी होगी। ता. 2 अग. की शाम आश्लेषा में सूर्यदेव का प्रवेश सोना, चांदी, रुई, खल बिनौला, गेहूं, चावल, गुड़, चीनी, घी, तेल, सोयाबीन, सरसों, उड़द, चना के भावों में तेजी की चाल देगा। **नोट**-अगर ता. 4 अग. को या बाद में ता. 2 व 3 अग. के बीच बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटे, तब मंदी उसी वस्तु में ता. 14 तक चलेगी। तेल, सोयाबीन, सरसों नीचे में स्टॉक करना लाभप्रद होगा। ता. 6 अग. की प्रात: बुधदेव का पूर्व दिशा में उदय होना भारी उथल-पुथल कारक होगा। विशेष रूप से लोहा, कोयला, जिंक, लैड, क्रूड ऑयल, नेचुरल गैस के भावों में भारी तेजी। तब भी रुख समय पर अवश्य देखें। हमेशा हानि की अवस्था में सौदा तुरन्त काटना चाहिए और लाभ की दशा में सौदा आगे लेकर चलना चाहिए। अगर उपरोक्त वस्तु में ता. 6 अग. से मंदी चल पड़े तब 14 अग. तक मंदी ही चलती रहेगी।

ता. 14 अग. के दोपहर में तुला राशि में मंगल के प्रवेश से काले रंग व लाल रंग की वस्तुओं में जोरदार तेजी होगी। अत: अगर जिंक, लैड, कोयला, कॉपर, क्रूड ऑयल, नेचुरल गैस, लालमिर्च, कालीमिर्च, लौंग, इलायची, जीरा, चना, मसूर, गोला, नारियल, पीपल के भावों में अभी तक नरमी चली आ रही हो, तब नीचे भाव में स्टॉक करना लाभप्रद होगा। उक्त वस्तुओं में जो वस्तुएं वायदा मार्केट में चल रही हैं, उनमें खरीद करके चलना आगामी एक सप्ताह में ही मोटा लाभ देने वाला होगा। **नोट**-अगर किसी वस्तु में ता. 16 अगस्त को या बाद में ता. 14 अग. को बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, तब मंदी उस वस्तु में चार दिन में ही चलेगी। ता. 16 अग. की सिंह संक्रांति के प्रभाव से सोना, चांदी, शेयर्स में तेजी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, बिनौला, खल बिनौला, सरसों, सोयाबीन, तिल, तेल के भावों में मंदी का रुख 12 दिन तक रहने की धारणा है। भाद्रपद शुक्ला दोज को चन्द्रदर्शन होने से हरे रंग की वस्तुएं व लाल रंग की वस्तुएं विशेष तेजी पकड़ सकती हैं। धान्यों के भावों में विशेष चाल न चलकर भाव स्थिर रहने की धारणा है। ता. 28 अग. को बुधास्त होने से सोना, चांदी में लम्बी मंदी की चाल एक पक्ष तक चल सकती है। गुड़, चीनी, रुई, कपास, खल बिनौला, गेहूं, चना, ग्वार, ज्वार, बाजरा, पाट, बारदाना के भावों में 15 दिन में श्रेष्ठ मंदी होगी। कोई भी दुविधा होने पर हापुड़ के पते पर सम्पर्क करें। ता. 3 अग. की प्रात: दुतर्फा गली लगायें। ता. 14 अग. दोपहर में दुतर्फा गली लगायें। ता. 24 अग. 2 बजे दुतर्फा गली लगायें।

द्वि0भाद्रपद-यह महीना पांच शनिवार एवं पांच ही रविवारों से युक्त है। जो घटाबढ़ी से तेजी की चाल व्यापारिक वस्तुओं में दिया करते हैं। ता. 8 सितं. तक इंफीरियर लाईन ता. 10 सितं. से सुपीरियर लाईन में बदलेगी जो सरसों, तिल, तेल, अरण्डी, मूंगफली, अलसी, सोयाबीन के भावों में तेजी के बाद मंदी का रुझान बनेगा। अत: ऊंचे भाव में स्टॉक बाहर किया जा सकता है।

माह के प्रथम दिन कर्क राशि में शुक्र के प्रवेश से गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल में तेजी 10 दिन चलेगी। गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर में मंदी होगी। चांदी में लम्बी मंदी की लाईन। रुई, कपास में घटबढ़ साथ नरमी। **नोट**-जिस ऊपर लिखी वायदा वस्तु में ता. 1 सितंबर को ता. 31 अग. के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, तब मंदी श्यौर आगामी 3 दिन तक और चलेगी। किन्तु ऊंचे बने भाव से बढ़ने पर तेजी की चाल बनेगी। आलू के हाजिर मार्केटों में अभी तेजी की चाल बनने की धारणा है। तो कन्या संक्रांति लगने के बाद नरमी में बदल जायेगी। ता. 16 सितं. की शाम कन्या संक्रांति का प्रभाव रुई, सूत, सुपारी, नारियल, मेवा, मजीठ, लालरंग के पदार्थ, अरण्डी, तिल तेल, सरसों, सोना, चांदी, शेयर, तांबा, पीतल, कांस्य में मंदी। **नोट**-उपरोक्त वस्तुओं में ता. 17 सितं. को या बाद में जिस वस्तु के ता. 10 सितं. से 15 के बीच बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाय, उसी में तेजी की चाल एक पक्षीय चलेगी। ता. 28 सितं. की शाम वृश्चिक राशि में मंगलदेव का प्रवेश भारी उठा-पटक कारक होंगे। क्रूड ऑयल, नेचुरल गैस, लालमिर्च, तांबा, जिंक, लैड, निकिल, मसूर, चना के वायदा व हाजिर मार्केटों में चल रही तेजी का ब्रेक लग सकता है। **लक्ष्मी चांस**-ता. 1 सितं. की प्रात: दुतर्फा गली, ता. 17 सितं. की साप्ताहिक मंदी, ता. 27 सितं. की शाम दुतर्फा गली लगायें।

आश्विन-मास में पांच चन्द्रवारों का होना भारी मंदी का द्योतक है। ता. 1 अक्टू. दोपहर तुला राशि में बुधदेव के प्रवेश से गुड़, चीनी, सोना, रुई, कपास के भावों में तेजी। अलसी, सरसों, सोयाबीन, मेंथा, मूंगफली, कपास, खल बिनौला में मंदी 14 दिन चलेगी। **नोट**-जिस वस्तु में ता. 1 अक्टू. को 1 बजे के बाद ता. 29 सितं. को बने नीचे भाव तथा 1 अक्टू. को 1 बजे तक बने नीचे भावों में से जो भी सबसे नीचा हो, उसे काटकर टूट जाए, तब उस वस्तु में मंदी ता. 5 तक जोरदार सम्पन्न होगी।

ता. 5 अक्टू. दोपहर बाद गुरुदेव का नवमी होना सोना, चांदी, पीतल, कांसा, चने, मूंग, चना दाल, गुड़ के भावों में तेजी कारक है। **नोट**-अगर 6 अक्टू. को 5 के बने नीचे भाव टूटे, तब मंदी जानना, जो ता. 15 तक होगी। ता. 16 अक्टू. आश्विन सुदी प्रतिपदा की रात्रि में तुला राशि में सूर्यदेव का प्रवेश, ता. 17 अक्टू. से नारियल, सुपारी, लाल चंदन, मजीठ, गेहूं, जौ, चना, स्वर्ण के भावों में तेजी। रुई, चांदी के भाव में नरमी। वायदा मार्केटों में ता. 17 की चालू चाल ता. 18 तक चलकर ता. 19 अक्टू. से 23 तक पलट होगी। ता. 24 के 10।18 बजे से पुन: चाल पलट जाएगी। जो ता. 26 तक चलेगी। **नोट**-जिस वस्तु में ता. 17 अक्टू. को 16 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा, तब उसी वस्तु में मंदी ता. 18 तक होगी। ता. 19 अक्टू. को 18 के बने ऊंचे भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ जायेंगे, तब उसी वस्तु में तेजी की चाल ता. 23 तक चलेगी। ता. 24 को 23 के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जायेंगे, तब उसी वस्तु में मंदी की चाल ता. 26 तक चलेगी। दालों का स्टॉक नीचे लेवल पर किया जा सकता है। **लक्ष्मी चांस**-ता. 8 अक्टू. की शाम दुतर्फा गली लगाना। ता. 16 अक्टू. की प्रात: भी दुतर्फा गली लगाना।

कार्तिक-मास में पांच मंगलवार व पांच ही बुधवार होने से मार्केटों की दिशा तेजी की ओर रहेगी। प्रथम पक्ष में बदी दोज का बढ़ना और अंत में अमावस्या तिथि का क्षय होना घटबढ़ व तेजी के रियेक्शन के साथ झुकाव नरमी का रहने की धारणा। अत: दुतर्फा धारणा बन रही है। यानि कभी तेजी तो कभी मंदी के झटके मार्केट में लगेंगे। बदी दोज ता. 31 अक्टू. रात्रि में हस्ते शुक्र के प्रभाव से चांदी, रुई, चावल, देशी घी के भावों में मंदी। सोना में साधारण तेजी। ता. 4 नवं. रविवार की शाम शनिदेव के उदय से ता. 5 से मेंथा, धान्य, रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी के भाव तेज होंगे। ता. 9 नवं. प्रात: धनु में मंगलदेव का प्रवेश धान्य, तृण पदार्थ, घी, मूल पदार्थ, रस पदार्थ, कपास, रुई, सूत, सन, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, बिनौला, खली, सरसों, सोयाबीन व सभी प्रकार के अनाजों के भाव तेज होंगे। वायदा मार्केटों में ता. 30 अक्टू. को पूर्व चाल बाद ता. 31 से 3 नवं. प्रात: 11 बजे तक तेजी, बाद मंदी ता. 6 नवं. के शाम तक चलेगी। ता. 7 से 8 तेजी, बाद 9 से 13 नवं. तक जोरदार मंदी। **नोट**-अगर ता. 31 अक्टू. को ता. 30 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब बेचकर ता. 3 नवंबर के 11 बजे तक या पहले ही लाभ उठा लें। बाद ता. 3 नवं. को 11 बजे के बाद ता. 2 के बने ऊंचे भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ जाये, तब उसी में तेजी ता. 6 नवं. तक समझें। ता. 11 नवं. रविवार शाम बुधास्त पश्चिम में होने से रुई, कपास, निफ्टी, खल बिनौला, सोना, चांदी, गेहूं, ग्वार, चना, गुड़, चीनी, जूट, पाट के भावों में भारी तेजी। ता. 13 नवं. तक घटबढ़ साथ तेजी, बाद जोरदार तेजी ता. 23 तक होगी। **नोट**-जिस वस्तु में ता. 12 नवं. को 10 के बने नीचे भाव टूटेंगे, उसी में 13 तक मंदी होगी। ता. 14 को 13 के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटेंगे, उसी वस्तु में मंदी की चाल 21 नवं. तक चलेगी। 23 नवं. को बुधोदय पूर्व दिशा में होने से श्रेष्ठ मंदी का संकेत है। अत: जो वस्तुएँ तेज चल रही होंगी वे एक तेजी का झटका देकर नरमी की ओर अग्रसर हो जायेंगी। विपरीत में विपरीत चाल जानें। **लक्ष्मी चांस**-ता. 6 नवं. प्रात:, ता. 13 नवं. शाम को अगले दिन की दुतर्फा गली लगाना।

मार्गशीर्ष-माह में पांच गुरुवार एवं पांच ही शुक्रवारों का होना जोरदार मंदी का सूचक है। ता. 2 दिसं. बदी पंचमी को ज्येष्ठा नक्षत्र में

खाण्ड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, अरण्डी, गुग्गल के भावों में तेजी। लालमिर्च, चना, केसर, बादाम, छुआरा, नारियल घटबढ़ बाद तेज 15 दिन रहेंगे। रुई में 11 दिसं. तक मंदी होकर तेजी। ता. 6 दिसं. प्रात: वृश्चिक में बुध का प्रवेश समस्त अनाज, घी, सरसों, तिल, तेल के भावों में जोरदार मंदी करेगा। देशी घी का स्टॉक करना लाभप्रद सिद्ध होगा। मंदी का प्रभाव 13 दिसं. तक रहेगा। ता. 11 दिसं. को वृश्चिक राशि में शुक्र के प्रवेश से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ग्वार, ज्वार, बाजरा के भावों में मंदी। क्रूड ऑयल, जिंक, लैड, नेचुरल गैस, कॉपर के भावों में तेजी। **नोट**-जिस वायदा वस्तु में ता. 12 दिसं. को ता. 11 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, उसी में बेचकर ता. 13 दिसं. तक मोटा लाभ मिलेगा।

ता. 15 दिसं. शाम धनु में सूर्यदेव के प्रवेश से सोना, चांदी, रुई, कपास, बिनौला, खली, तिल, तेल, सोयाबीन के भावों में तेजी होगी। अनाजों में मंदी का रुख कायम रहेगा। ता. 15 दिसं. से 2 दिन मार्केट का रुख देखकर व्यापार करें। ता. 18 दिसं. प्रात: मकर में मंगल का प्रवेश घी, गुड़, तेल, सोना, चांदी, तांबा, पीतल के भावों में तेजी कारक होगा। घी का स्टॉक करना लाभ देगा। वायदा मार्केटों में 15 दिसं. से 18 को 4।40 बजे तक तेजी होकर मंदी के रिवेक्शन में मार्केट ता. 19 दिसं. से 21 तक चलकर, बाद ता. 22 से 25 तक जोरदार तेजी होगी। ग्वार, चना, सोयाबीन, गुड़, चीनी, सोना, चांदी, मैंथा, तांबा, क्रूड ऑयल, जिंक में यह चाल लागू होगी। **नोट**-अगर ता. 15 दिसं. को 14 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटें तब मंदी उसी वस्तु में ता. 18 को 4।40 बजे तक चलेगी। ता. 19 दिसं. को 18 के बने ऊंचे भाव से मार्केट के बढ़ने पर तेजी ता. 21 तक होगी। जिस वस्तु में ता. 22 दिसं. को 21 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा, तो उसी वस्तु में ता. 25 तक मंदी रहेगी।

ता. 26 दिसं. शाम को बुधास्त का होना तूफानी मंदी की चाल देने वाला होगा। जो वस्तुएं ता. 25 तक विशेष तेज रही होंगी, उनमें मंदी का श्रीगणेश होगा। सोयाबीन, सरसों, मूंगफली, तिल, तेल के भावों में तेजी का बिगुल बजेगा। एक से डेढ़ माह में मोटा लाभ होगा। **लक्ष्मी चांस**-ता. 8 जन. प्रात: 9 के लिए दुतर्फा गली लगायें। ता. 14 की शाम 15 के लिए दुतर्फा व ता. 26 की शाम 27 के लिए मंदी लगाना।

पौष-पौष मास में पांच शनिवार व पांच रविवारों का होना घटाबढ़ी व मंदी के रियेक्शन के साथ तेजी का ट्रेन्ड बनाते हैं। बदी चतुर्दशी का क्षय एवं बुधास्त मंदी कारक है। ता. 28 दिसं. शाम पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में सूर्यदेव के प्रवेश से गुड़, खाण्ड, सरसों, सोयाबीन, तेल, हल्दी, गुग्गल, चांदी, कपूर, ऊन, सन, पाट के भावों में तेजी। बदी सप्तमी को धनु राशि में शुक्र के प्रवेश से रुई, कपास, बिनौला, खली, सूत, वस्त्र, गेहूं, जौ, चना, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं के भावों में वृद्धि होगी। ता. 5 जन. से सफेद रंग की वस्तु, ग्वार, रुई, चांदी, कपूर, तिल, तेल, सोयाबीन, जिंक, लैड, क्रूड ऑयल, मेंथा, कॉपर, गैस के भावों में वृद्धि होगी। वायदा मार्केट में विशेष तेजी। **नोट**-जिस वायदा मार्केट में ता. 5 जन. को ता. 4 के बने नीचे भाव से टूटें, उसे बेचकर ता. 10 तक ही लाभ उठाना चाहिए। ता. 13 को मकर राशि में सूर्य के प्रभाव से गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, रुई, पाट में मंदी। सोना, चांदी, शेयर्स में नरमी। **नोट**-जिस वायदा या हाजिर वस्तु में ता. 14 जन. को ता. 12 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा, तब उसी वस्तु में तेजी का चांस ता. 24 जन. तक सम्पन्न होगा। ता. 21 जन. से सुपीरियर चाल तेलों में होगी। ता. 25 जन. कुंभ राशि में मंगल के प्रवेश से अन्न, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना में घटबढ़ साथ तेजी। **लक्ष्मी चांस**-ता. 2 जन. प्रात: दुतर्फा गली, ता. 14 व 25 की प्रात: अगले दिन की दुतर्फा गली लगायें।

माघ-माघ माह पांच चन्द्रवारों से युक्त तथा प्रतिपदा चन्द्रवारी श्लेषा नक्षत्र युक्त होने से जोरदार मंदी की चाल ग्वार, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, मसूर, सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड में एक सप्ताह तक चलेगी। ता. 28 जन. दोपहर बाद मकर राशि में शुक्रदेव के प्रवेश से गुड़, खाण्ड, चीनी, घी व गेहूं, जौ, चना, मटर, चावल, मक्का के भावों में तेजी। रुई में घटबढ़ से तेजी। ता. 30 जन. प्रात: मार्गी गुरु के प्रभाव से ता. 30 जन. से तूफानी मंदी की चाल सोना, चांदी, रुई, जूट, पाट, हल्दी, मूंग, मोठ, चना, गेहूं, चावल, तांबा, रस पदार्थ विशेष चलेंगे। **नोट**-जिस वस्तु के भाव ता. 29 जन. के बने ऊंचे भाव से ता. 30 को बढ़ जायेंगे, तब उसी में तेजी का चांस ता. 2 फर. तक सम्पन्न होगा।

ता. 3 फर. की प्रात: कुंभ राशि में बुधदेव के प्रवेश से रुई, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, सोयाबीन, सरसों में जोरदार गिरावट होगी। जो ता. 8 फर. तक तूफानी चाल देने वाला होगा। उपरोक्त वस्तुओं के वायदा बाजारों में अगर ता. 3 को ता. 2 के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा, तब तेजी का चांस ता. 8 फर. के 12।10 बजे तक सम्पन्न होगा। ता. 11 फर. चन्द्रदर्शन से नरमी। ता. 12 फर. कुंभ संक्रांति 30 मुहूर्ती से तेल, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, अलसी, राई के भावों में विशेष तेजी। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, पाट, जूट, बारदाना के भावों में मंदी। **नोट**-उपरोक्त वायदा वस्तुओं में ता. 13 फर. को 12 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, तब मंदी होगी। बाद में ता. 14 फर. को भी मंदी चले तब मंदी ता. 25 तक। लेकिन ऊंचे भाव क्रॉस होने पर तेजी। ता. 15 की शाम शुक्रास्त के प्रभाव से धान्यों में पहले तेजी आकर फिर मंदी। ता. 21 को प्रात: कुंभ राशि में शुक्रदेव के प्रवेश से सफेद रंग की वस्तुओं, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, ग्वार तथा रस पदार्थों में मंदी। ता. 23 फर. को बुध वक्री होकर, ता. 25 रात्रि में बुधास्त का होना वर्ष का सर्वश्रेष्ठ चांस सम्पन्न होगा। यहां पर ता. 23 से 25 फर. तक घटबढ़ होगी, बाद में बुधास्त का प्रभाव अगले माह दृष्टिगोचर होगा। **लक्ष्मी चांस**-3 फर. को 5 के लिए एवं ता. 8 फर. को 9 की दुतर्फा गली लगायें।

फाल्गुन-माह में पांच मंगलवार एवं पांच ही बुधवारों के योग से तेजी की प्रधानता व्यापारिक वस्तुओं में होगी। कृष्ण पक्ष में द्वादशी तिथि क्षय से नरमी की चाल प्र. पक्ष में रहेगी। और द्वितीय पक्ष में षष्ठी तिथि वृद्धि भी नरमी कारक है। ता. 26 फर. की शाम शतभिषा में शुक्र के प्रभाव से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, रुई, कपास, घी, सरसों के भावों में तेजी होगी। क्रूड ऑयल, लोहा, तांबा, जिंक, लैड के भावों में मंदी। **नोट**-अगर ता. 27 फर. को 26 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, तब मंदी का चांस ता. 8 मार्च तक सम्पन्न होगा। मेंथा ऑयल में मंदी होगी।

ता. 10 मार्च रात्रि में बुधोदय का प्रभाव ता. 11 को घटबढ़ करेगा। ता. 12 को 11 के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूट जाए उसे बेचकर ता. 16 मार्च तक व्यापार करें। ता. 14 मार्च की शाम से पूर्व मीन संक्रांति का प्रभाव विशेष रूप से सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, चीनी, सोयाबीन, तिल, सरसों, अलसी के भावों में तेजी कारक होगी। अनाजों में कुछ तेजी आकर फिर मंदी। ता. 18 मार्च मीन राशि में शुक्र का प्रवेश धान्य, सरसों, तिल, सोयाबीन, तेल, गुड़, खाण्ड में नरमी करेगा। रुई, चांदी के भावों में वृद्धि। **नोट**-ता. 15 मार्च को 14 के बने नीचे भाव से जिस वायदा या हाजिर वस्तु के भाव टूट जाएं, तब उसी वस्तु में मंदी ता. 20 मार्च तक चलेगी। ता. 18 मार्च को ता. 17 के बने ऊंचे भाव से उपरोक्त वस्तुओं में से जिस वस्तु के ऊंचे बने भाव से मार्केट बढ़े, तब तेजी की धारणा बनाकर ता. 27 मार्च तक लाभ उठाया जा सकता है।

ता. 20 मार्च को होलाष्टक लगने से मार्केट का रुख घटबढ़ या मामूली उतार-चढ़ाव में रहेगा। ता. 26 मार्च को प्रात: रेवती में मंगल का प्रवेश चांदी के भावों में उछाला करेगा। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, ग्वार, ज्वार, बाजरा में मंदी बनेगी। मेंथा में घटबढ़ से मंदी। **लक्ष्मी चांस**-ता. 26 को 27 फर. की तेजी लगाना। ता. 8 मार्च को 9 की दुतर्फा गली दोपहर में लगाना। ता. 18 को प्रात: भी दुतर्फा गली लगाना।

चैत्र कृष्ण पक्ष-पक्ष में तिथि क्षय नरमी को बल देगा। माह का प्रथम दिन गुरुवार हस्त नक्षत्र व ध्रुव योग से युक्त होने से सोना, चांदी, तांबा, ग्वार, चना, जीरा, कालीमिर्च, सरसों, सोयाबीन, तेल के हाजिर व वायदा वस्तुओं में तूफानी तेजी। जो एक सप्ताह तक चलेगी। **नोट**-अगर उपरोक्त किसी वस्तु में ता. 28 मार्च को या बाद में ता. 27 के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, तब मंदी की चाल ता. 2 अप्रैल तक जानना। ता. 31 मार्च की प्रात: रेवती नक्षत्र में सूर्यदेव के प्रवेश से रुई, चावल, चांदी, सरसों, अलसी, लाख, गेहूं, जौ, चना में तेजी कारक होने से नीचे भाव मिलने पर स्टॉक करें। किन्तु उच्च स्तरीय भाव मिलें तब कतई स्टॉक न करें। यही चाल पक्ष के अंत तक चलेगी। चैत्र बदी अमावस्या को मीन राशि में बुध के प्रवेश से रुई के भावों में तेजी होगी। गेहूं, गुड़, खाण्ड में वर्ष की लास्ट मंदी चलेगी। सोना, चांदी में तेजी होकर मंदी का झुकाव आगे बनेगा। मैंथा ऑयल में जोरदार मंदी। **स्पेशल लक्ष्मी चांस**-ता. 30 मार्च को प्रात: 31 की दुतर्फा गली लगाना। ता. 3 अप्रैल को 4 के लिए तेजी लगाना। ता. 10 अप्रैल को 11 बजे ता. 11 के लिए मंदी लगाना।

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव सं. 2069 वि.

चैत्र-वि.सं. 2069 चैत्र मास का नवीन चन्द्रदर्शन दिनांक 24 मार्च सन् 2012 ई. शनिवार को हो रहा है। चन्द्रदर्शन मेष राशि अंतर्गत अश्विनी नक्षत्र में हो रहा है। अतः इसकी दक्षिणी शृंग (नोंक) ऊंची होगी, जो सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी को बल प्रदायक है। उदित समय इसका वर्ण रक्त होगा। अतः सोना, चांदी, सूत, सन, पाट, बारदाना, कपासिया के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। गुरुवासरी अमावस्या व पूर्णिमा अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से मंदी को बल। गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा में मंदी। सींगदाना, बिनौला, तिल, तेल, मटर, सोयाबीन, सूर्यमुखी तेज। लोहा, शीशा, जस्ता, शेयर्स के भाव घटाबढ़ी से तेज।

वैशाख-वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन 22 अप्रैल सन् 2012 ई. सोमवार को हो रहा है। जो शशि उगै सोम शनि से तीस दिनों के अंदर अनाजों के भावों में तेजी का संकेत। चन्द्रदर्शन वृष राशि अंतर्गत है अतः इसका दक्षिण शृंग (नोंक) उच्च होगा। जो तेजी को बल प्रदायक है। चांदी, शीशा, जस्ता, रांगा, कलई के भावों में तेजी। सोना, सूत, कपास, शेयर्स, जूट, पाट, बारदाना, सूती वस्त्र, रंग, रोगन के भावों में अस्थिरता को बल मिलेगा। गुड़, चीनी, अफीम, शक्कर के भावों में तेजी। सरसों, तिल, अरण्डी, सोयाबीन के भावों में नर्मी-गर्मी की अधिकता रहेगी। धनियां, सौंठ, मिर्च, कपूर, दालवाना तेज। नमक, दूध, दही, रसीले फल के भावों में तेजी।

ज्येष्ठ-दिनांक 22 मई 2012 मंगलवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मिथुन राशि अंतर्गत मृगशिर नक्षत्र व 30 मुहूर्त्ती है। उदित समय इसके दोनों शृंग (नोंक) शूल के समान व उच्च होंगे जो कि प्रत्येक जिन्सों में तेजी। अन्न व वायदा व्यापार के भावों में तेजी। रुई गिरकर तेज। सोना, चांदी के भावों में घटाबढ़ी तो होगी लेकिन मान तेजी का ही रहेगा। घी, तिल, तेल, मूंगफली, अरण्डी, सोयाबीन तेज। रुई, कपासिया, सूत में 8 से 10 प्रतिशत, शेयर, पाट, बारदाना, जूट, पटसन में 50 से 80 प्रतिशत तक की तेजी। ज्वार, बाजरा, मक्का में स्थिरता को बल। रसायन पदार्थ, रसीले फल व पदार्थ, किराना तेज।

आषाढ़-दिनांक 21 जून 2012 को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 45 मुहूर्त्ती पुनर्वसु नक्षत्र व कर्क राशि अंतर्गत हो रहा है। उदित समय वर्ण श्वेत व दोनों शृंग (नोंक) समान होंगे। अतः गेहूं, जौ, चना, सूत के भावों में तेजी। रुई, सूत, सूती व रेशमी वस्त्र, सरसों, घी, तिल, तेल के भावों में तेजी। सोना, चांदी, गुड़, शक्कर के भावों में घटाबढ़ी से मंदी। यदि आज उदित समय चन्द्रमा पर मंडल हो तो ज्वार, बाजरा, मक्का के भावें में मंदी। उड़द, मूंग, मसूर, अरहर में घटाबढ़ी से तेजी। गैस, सोनमक्खी के भावों में भी तेजी।

श्रावण-ता. 21 जुलाई 2012 ई. शनिवार को मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मघा नक्षत्र व सिंह राशि के अंतर्गत हो रहा है। उदय काल में इसका वर्ण श्वेत रंग का होगा। अतः सोना, चांदी, स्टील, पीतल के भावों में तेजी। रुई, सूत, पाट, पटसन, बारदाना, शेयर्स, जूट के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। गेहूं, जौ, चना, मटर के भावों में सुधार। उड़द, मूंग, मसूर घटाबढ़ी से गिरकर तेज। मक्का, ज्वार, पशुचारा के भावों में तेजी। सरसों, तिल, तेल, अलसी, सींगदाना, बिनौला, खोपरा के भाव भी आलस्य त्याग देंगे। गुड़, शक्कर, घी, चावल में स्थिरता। कालीमिर्च, उड़द, जीरा, कपूर, केसर तेज। जीवनोपयोगी वस्तुओं के भावों में भी तेजी बनेगी।

प्र० भाद्रपद-दिनांक 19 अगस्त 2012 ई. रविवार को प्र.भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन पूर्वाफाल्गुनी, 45 मुहूर्त्ती व कन्या राशि अंतर्गत हो रहा है। उदित समय पीत वर्ण व इसके दोनों शृंग (नोंक) समान होंगे। जो कि प्रत्येक व्यापारिक जिन्स में तेजी का झटका देगा। राई, सूत, सूती वस्त्र, पाट, बारदाना, हैशियन, शेयर्स बाजार में तेजी को बल प्राप्त होगा। चांदी घटाबढ़ी से तेजी लेगी। रंग, रोगन, गेरू, मज्जा, अरहर, सोना के भावों में तेजी। लकड़ी, पत्थर, कोयला तेज। अन्न के भाव तेजी लेकर गिर जायेंगे। अन्न उत्पादन उत्तम होगा। गुड़, चीनी, घी में तेजी। सरसों, सींगदाना, अरण्डी, लाहा, करण्डा में तेजी। आलू, प्याज, अदरख के भावों में तेजी।

द्वि० भाद्रपद-दिनांक 17 सितंबर 2012 ई. सोमवार को द्वितीया (अधिक मास) का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन वृश्चिक राशि अंतर्गत व 15 मुहूर्त्ती है। अतः पारा, स्टील, पीतल में तेजी। शेयर्स बाजार में घटाबढ़ी से अच्छी तेजी व अच्छी मंदी के झटके आयेंगे। सूत, सन, पाट, बारदाना, वेजीटेबल, पशुचारा के भावों में तेजी। चांदी गिरकर सुधार ले। ऑवरेज में चलती लाईन में परिवर्तन।

आश्विन-दिनांक 17 अक्टूबर सन् 2012 ई. बुधवार को आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन विशाखा नक्षत्र व वृश्चिक राशि अंतर्गत व 45 मुहूर्त्ती है। उदित समय दोनों शृंग (नोंक) समान व वर्ण श्वेत से बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। रुई, सूत, पाट, बारदाना, जूट, पाट, हैशियन के भाव गिरकर तेज व सोना, चांदी, स्टील, तांबा घटाबढ़ी से तेज। ज्वार, बाजरा, मक्का, मौंठ, उड़द, चना, मघ, मसूर में तेजी को बल मिलेगा। धनियां, सौंठ, मिर्च, हींग, मेवा, गोला के भावों में तेजी।

कार्तिक-ता. 15 नवंबर 2012 ई. गुरुवार को मास का नवीन चन्द्रदर्शन ज्येष्ठा नक्षत्र अंतर्गत व 15 मुहूर्त्ती में हो रहा है। उदित समय उत्तरी शृंग (नोंक) ऊंची होगी जो घटाबढ़ी से समता को बल देगा। गुड़, शक्कर, घी, चीनी में मंदी। घी, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, अरण्डी, लाहा, अलसी व रेशम के भाव गिरकर तेजी लेंगे। सोना, चांदी गिरकर तेज होंगे। ज्वार, बाजरा, मक्का, मौंठ, उड़द के भावों में नर्मी। दालवाना में सुस्ती व अनाजों में भी स्थिरता को बल मिलेगा। आलू, प्याज व कंद-मूल के भावों में सुधार। धनियां, सौंफ, सौंठ, हल्दी के भाव गिरकर सुधार लेंगे। पशुचारा, कोयला, गैस, लकड़ी के भाव तेज।

मार्गशीर्ष-दिनांक 14 दिसंबर 2012 शुक्रवार को मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती व उदय काल में इसका वर्ण श्याम (काला) होगा व दोनों शृंग (नोंक) समान होंगे। जो कि प्रत्येक जिन्स में घटाबढ़ी। सोना, चांदी, स्टील, पीतल, जस्ता व धातुवाना, शेयर्स में घटाबढ़ी से तेजी। अलसी, अरण्डी, सींगदाना, सोयाबीन, मूंगफली, खोपरा के भाव में गिरकर सुधार। रुई, सूत, सन, पाट, शेयर्स, हैशियन के भावों में तेजी। गुड़, घी, चीनी, चावलों के भावों में तेजी।

पौष-ता. 13 जनवरी सन् 2013 रविवार को पौष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती से सोना, चांदी, जस्ता, शेयर्स व तांबा के भावों में तेजी। किसी-किसी धातुवाना में चमक। गुड़, शक्कर, घी, चीनी, चावल में नर्मी। रुई, सूत, कपास के भावों में तेजी। ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, मसूर, अरहर, गेहूं के भावों में तेजी। इलायची, गुग्गल, कस्तूरी, केशर, चाय, दालचीनी के भावों में तेजी। सरसों, तिल, सोयाबीन तेल के भाव गिरकर सुधार लेंगे।

माघ-12 फरवरी सन् 2013 ई. सोमवार को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्त्ती है। घी, चावल, धान के भावों में तेजी। रुई में 10, 15, 25 की तेजी। कपास में 3 से 15 तक की तेजी। शेयर, पाट, बारदाना, जूट, हैशियन, कपासिया के भाव उठकर गिर जायेंगे। उड़द, चना, मसूर के गिरे भावों में सुधार। ऊन व ऊनी वस्त्रों के भाव मंदी का मान करेंगे। हल्दी, जीरा, मिर्च, नारियल, गोला, सोयाबीन के भावों में तेजी। पोस्त, अफीम में भी तेजी।

फाल्गुन-दिनांक 13 फरवरी सन् 2013 ई. को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ती है। उदित समय इसका वर्ण पीत होगा। अन्न के संग्रह को आयी तेजी में बेचकर लाभ लें, स्टॉक न रखें। शेयर्स, रुई, सूत, सन, ऊन, बारदाना में घटाबढ़ी से तेजी। गुड़, चीनी, खाण्ड, शक्कर के भावों में मंदी। ज्वार, बाजरा, ग्वार, अरहर, मूंग में घटाबढ़ी। सीसा, पीतल, स्टील, तांबा घटाबढ़ी से तेज। सोना स्थिर, चांदी तेज। जीरा, कालीमिर्च व गुग्गल, अदरक, दालचीनी के भावों में नर्मी। रक्त वर्ण की वस्तुओं में मासान्त तक तेजी।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

सन् 2012 में ग्रहों का शेयर्स मार्केट पर प्रभाव

जनवरी-ता. 4 धनु के शुक्र योग से शीत प्रकोप, केमीकल्स, रसायन, साफ्टवेयर, इलेक्ट्रिकल्स व इंजीनियरिंग, वित्तीय संस्थानों के शेयर्सों में तेजी। ता. 5 जनवरी तिथि वृद्धि भावों में मंदी। ता. 9 सोमवासरी पूर्णिमा घटाबढ़ी से मंदी का झटका। ता. 10 भावों में घटाबढ़ी से गिरकर सुधार। ता. 14 मकर संक्रांति शनिवासरी से आयरन, धातु, मेडीसन, रसायन, इजी0, विद्युत, काली जिन्सों के शेयर्सों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 18 जनवरी योगक्षय से भावों में एकतरफा तेजी का झटका। ता. 23 सोम माघी अमावस्या सभी चुनिन्दा शेयर्सों के भावों में मंदी। ता. 24 मंदी का दौर। ता. 28 पंचमी शनि. योग भाव गिरकर तेजी। ता. 30 घटाबढ़ी से तेजी। माह की ता.1, 3, 5, 8, 9, 13, 16, 19, 22, 24 को सामान्य तेजी।

फरवरी-ता. 1 भाव दोपहर बाद गिरकर सुधार लेंगे। ता. 3 मीन के शुक्र घटाबढ़ी से मंदी का झटका। ता. 7 भौमवासरी पूर्णिमा लगभग सभी शेयर्सों में सुधार। चुनिन्दा शेयर्सों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 8 शनि वक्री भारत के कई राज्यों में हिंसक घटनायें, अफवाहों के जोर से मंदी का योग। ता. 13 कुंभ संक्रांति सोमवासरी है, अत: दो दिन तक घटाबढ़ी से भावों में मंदी। ता. 17 तिथि क्षय घटाबढ़ी से सुधार। ता. 21 मंगलवासरी अमावस्या से तेजी। ता. 24 फरवरी तिथि वृद्धि भावों में मंदी। ता. 28 मेष के शुक्र योग से धातुवाना, आयल, स्टील, चुनिन्दा वित्तीय संस्थानों के शेयर्सों में तेजी।

मार्च-ता. 2 भावों में घटाबढ़ी तो होगी, लेकिन मान तेजी में रहेगा। ता. 8 गुरु वासरी पूर्णिमा भावों में मंदी को बल प्रदायक है। ता. 10 मार्च दो दिन के अंदर घटाबढ़ी से तेजी। ता. 14 मीन संक्रांति भावों में मंदी का योग। ता. 12 को बुध वक्री से सभी प्रमुख चुनिन्दा लाईनों में तेजी का झटका। ता. 17 मार्च मंदी का योग। ता. 22 गुरु वासरी अमावस्या मंदी कारक है। ता. 24 भावों में सायं तक एकतरफा तेजी। ता. 28 तिथि वृद्धि दो दिन तक बाजार सुस्त रहेंगे।

अप्रैल-ता. 2 कुंभ के बुध भावों में घटाबढ़ी से गिरकर सुधार। ता. 5 चतुर्दशी क्षय सतर्कता से काम करें। भावों में अच्छी तेजी का योग। ता. 8 योग क्षय से तेजी। ता. 13 दोपहर बाद गिरकर तेजी। ता. 15 राहु-केतु का नक्षत्र परिवर्तन से दो दिन तक विशेष घटाबढ़ी का योग। मेष संक्रांति भी तेजी कारक है। ता. 21 शनिश्चरी अमावस्या दो दिन तक तेजी का योग। ता. 24 चलती लाईन में परिवर्तन। ता. 26 गिरे भावों में सुधार। ता. 27 अप्रैल भावों में मंदी का योग।

मई-ता. 2 मई दो दिन के अंदर तेजी। ता. 5 मेष के बुध भावों में घटाबढ़ी से गिरकर सुधार। ता. 7 तिथि क्षय से तेजी का योग। ता. 10 मई बुध अस्त तीन दिन के अंदर घटाबढ़ी से तेजी। ता. 14 वृष संक्रांति भावों में आज मंदी का रुख रहेगा। ता. 15 शुक्र वक्री मंदी का योग। ता. 18 वृष के शुक्र योग भावों में एकतरफा तेजी का योग। ता. 19 मई भावों में दोपहर बाद गिरकर तेजी। ता. 21 मई तिथि वृद्धि दो दिन के अंदर अच्छी मंदी का योग। ता. 24 मई तेजी। ता. 30 मई गुरु उदय धातुवाना, शेयर्स, मेडीसन, रसायन, इंजी0, स्टील, चाय व वित्तीय संस्थानों से जुड़े शेयर्स तेज।

जून-ता. 1 जून तिथि क्षय दो दिन तक बाजार में तेजी। ता. 4 जून सोमवासरी पूर्णिमा भावों में स्थिरता को बल। ता. 5 बुध उदय प्राकृतिक प्रकोप भावों में विशेष घटाबढ़ी, अनिश्चितता का माहौल। ता. 8 जून भावों में तेजी। ता. 11 मंदी का झटका। ता. 14 जून मिथुन संक्रांति एक सप्ताह के अंदर मंदी। ता. 19 जून भौमवासरी अमा0 घटाबढ़ी से तेजी। ता. 22 जून कन्या के भौम धातुवाना, शेयर्स तेज। ता. 26 जून शनि मार्गी भावों में मंदी का योग। ता. 30 जून शनिवासरी एकादशी भावों में दो दिन तक तेजी का माहौल। विशेष रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

जुलाई-ता. 1 चतुर्दशी क्षय सतर्कता से काम करें। भावों में तेजी व किसी-किसी शेयर्सों में विशेष तेजी। ता. 3 जुलाई तेजी। ता. 7 जुलाई भावों में सायं तक मंदी। ता. 13 चार दिनों के अंदर सभी चुनिन्दा शेयर्सों में मंदी का झटका । ता. 16 जुलाई सोम कर्क संक्रांति घटाबढ़ी से मंदी। ता. 19 जुलाई गुरुवासरी अमा0 मंदी को बल देगी। ता. 24 जुलाई तिथि क्षय गिरे भावों में सुधार। ता. 29 जुलाई भावों में घटाबढ़ी से तेजी । वायु प्रकोप।

अगस्त-ता. 1 अग. भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 4 तीन दिन के अंदर भावों में अच्छी तेजी का झटका। घटाबढ़ी विशेष होगी। सतर्कता से कार्य करें। ता. 11 भावों में तेजी। ता. 14 अग. तुला के मंगल भावों में गिरकर तेजी देंगे। ता. 16 अग. सिंह संक्रांति भावों में घटाबढ़ी देगी। ता. 17 तेजी। ता. 20 भावों में मंदी का झटका। ता. 25 तिथि क्षय दो दिन के अंदर घटाबढ़ी से तेजी। ता. 30 अग. बुधास्त अच्छी तेजी की लाईन। प्रथम पांच दिन तेजी, चार दिन मंदी। रुख देखकर कार्य करें।

सितंबर-ता. 1 कर्क के शुक्र से दैत्यगुरु यदा कर्के से प्राकृतिक प्रकोप, बाजार चाल में सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. 8 अष्टमी तिथि वृद्धि से भावों में दो दिन के अंदर मंदी का झटका। ता. 16 कन्या संक्रांति भावों में एक सप्ताह के अंदर तेजी का झटका। ता. 19 योग क्षय तेजी को बल मिले। ता. 21 भावों में नर्मी रहेगी। ता. 28 भावों में दोपहर बाद सुधार, सायं तक तेजी का योग।

अक्टूबर-ता. 1 तुला के बुध तीन दिन के अंदर तेजी। ता. 5 शनि अस्त राजनैतिक अस्थिरता या प्राकृतिक प्रकोप से भाव गिर सकते हैं। ता. 10 चित्रा के सूर्य भावों में तेजी का योग। ता. 15 सोमवती अमा0 तीन दिन तक भावों में मंदी का योग। ता. 18 तीन दिन तक तेजी का योग। ता. 23 भावों में दोपहर बाद मंदी का झटका। ता. 28 भावों में घटाबढ़ी से तेजी, मासांत में मंदी।

नवंबर-ता. 1 भावों में घटाबढ़ी से मंदी का माहौल। ता. 8 शनि उदय लगभग सभी चुनिन्दा शेयर्सों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 13 भौमवासरी दीपावली से शेयर्स बाजार में आकर्षता का माहौल घटाबढ़ी। विशेष सतर्कता से कार्य करें। ता. 15 नक्षत्र क्षय सायं तक गिरे भावों में सुधार। ता. 17 भाव गिरकर तेजी लेंगे। ता. 25 दो दिन के अंदर भावों में मंदी का झटका। ता. 30 भावों में घटाबढ़ी लेकिन कोई विशेष अंतर नहीं।

दिसंबर-ता. 2 भावों में नर्मी, ता. 8 सतर्कता से कार्य करें, घटाबढ़ी से तेजी। ता. 13 गुरुवासरी अमा0 मंदी का योग। ता. 15 दोपहर बाद एकतरफा तेजी की लाईन। शनिवासरी धनु संक्रांति तेजी का योग विशेष। ता. 21 सायं तक गिरे भावों में सुधार। ता. 25 तीन दिनों के अंदर मंदी का योग। ता. 28 शुक्रवासरी पूर्णिमा दो दिन के अंदर तेजी।

विशेष-ता. 8 फरवरी से शनि वक्री हो रहे हैं। अत: अच्छी व लम्बी तेजी का योग 50 दिनों तक। तेजी दिनांक 3, 9, 10, 21, 25 जनवरी, ता. 3, 8, 9, 15, 16, 17, 19, 28, 29 फर., 3, 10, 11, 16, 24, 25 मार्च, 3, 5, 7, 12, 13, 19, 20, 29, 30 अप्रैल, ता. 6, 7, 10, 11, 13, 14, 15, 24, 26, 29, 30 मई, 1, 2, 7, 8, 11, 18, 24, 25, 30 जून, 2, 5, 9, 16, 18, 24, 25, 28 जुलाई, 3, 4, 10, 15, 23, 25, 26, 28 अग., ता. 4, 6, 10, 15, 17, 19, 24, 29 सितं., 5, 6, 9, 13, 21, 25, 28 अक्टू., 3, 8, 13, 14, 21, 25, 30 नवं., 1, 7, 8, 9, 11, 14, 15, 20, 24, 28 दिसं.। शेयर्स बाजार की जानकारी पूर्णतया ग्राफ पर आधारित है। परन्तु शेयर्स बाजार में कुछ अन्य जैसे राजनैतिक परिवर्तन, अस्थिर, मौसम परिवर्तन, प्राकृतिक प्रकोप, धार्मिक उन्माद आदि बाजार को प्रभावित करते हैं। तथा स्वयं दलाल की ग्रह दशा, अंतर्दशा आदि से भी बाजार प्रभावित होता है। अत: स्वयं दशा का उपाय करें। तो लाभ प्राप्ति संभव है। व्यापार में लाभ के लिए वर्ष 2012 ई. का भविष्यफल 251 रु0, दिनांकानुसार तेजी-मंदी रिपोर्ट 551 रु0, वार्षिक 5100 रु0, डाक सेवा के लिए 50 रु0 पृथक लगते हैं व मिलने से पहले समय लें। समस्या समाधान हेतु पत्र व्यवहार जबावी करें। सेवा नि:शुल्क।

निर्देशक-डा. वसंत लाल व्यास, लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा) उ. प्र.-281204
सम्पर्क सूत्र-, 05663-273353, 273492
मो. 09720686322, 09897157276

व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी लाईनों का ब्यौरा सन् २०१२ ई.

जनवरी 2012-ता. 3 जनवरी **धनिष्ठायां शुक्रे** से उड़द, ज्वार, बाजरा, मूंग, मौंठ, सोना, चांदी, रुई के भावों में तेजी। गेहूं, जौ, बाजरा, चना के भाव नर्मी में रहेंगे। ता. 4 पौष शुक्ला 11 कृतिका युक्त है। अत: लाल रंग की वस्तुओं के व्यापार में लाभ। ता. 9 जनवरी **कुंभ राशौ स्थिते शुक्रे** से हर वस्तु के भावों में मंदी का रुख दिखाई देगा। रुई, चांदी, गुड़, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा व सफेद जिन्सों में मंदी का झटका। ता. 12 जनवरी पू.षा. के बुध अनाज, सोना, चांदी के भावों में तेजी। खल-बिनौला के भावों में तेजी। ता. 14 मकर संक्रांति शनिवासरी 45 मुहूर्त्तों से गेहूं, जौ, चना, कपास में घटाबढ़ी से तेजी। शक्कर, गुड़, सरसों, अलसी, मूंगफली में तेजी के बाद मंदी। मक्का, ज्वार, बाजरा, तेल, लालमिर्च, लाल चंदन, हल्दी, केशर, चावल, चना, सिंघारा में तेजी के बाद मंदी। रुई, सूत, सन, बिनौला, जस्ता, पीतल, तांबा के भावों में घटाबढ़ी। ऊन, रेशम तेज, सोना तेज, चांदी घटाबढ़ी से नर्मी। ता. 21 जन. उ.षा. के बुध से गेहूं, जौ, चना, उड़द के भावों में तेजी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल के भावों में घटाबढ़ी। ता. 23 जनवरी **निशापतेश्च तनय: शनि क्षेत्रे यदा भवेत्** से रुई, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना के भाव घटाबढ़ी से समता को बल देंगे व सोमवती अमावस्या भी सभी चुनिन्दा शेयर्सों के भावों में घटाबढ़ी से मंदी का मान करा देगी। ता. 24 जनवरी चन्द्रदर्शन मंगलवासरी से अन्न व वायदा व्यापार में तेजी का रुख। रुई मंदी लेकर तेज। गुड़, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी। ता. 30 जनवरी **अष्टमी कृतिका** युक्त से फागुन में अनाजों के भावों में तेजी आयेगी। श्रवणे बुध योग से गुड़, अलसी, चावल, चना के भावों में तेजी।

विशेष-सोमवती तीनउ बुरी सावन, कार्तिक माह। गुण करती अवगुण करें, सुन लो सब साह॥ माघ बदी दोयज या तीज वृहस्पतिवार। उत्तम वर्षा शांति सुख, बाढ़ै मंगलाचार॥

फरवरी-ता. 2 फरवरी **मीन राशि गते शुक्रे** से चांदी गिरकर तेज। अनाज, सरसों, तेल, तिल, अलसी, गुड़, खाण्ड, बिनौला के भावों में मंदी। रुई में घटाबढ़ी चलेगी। ता. 6 **धनि.** के बुध से एक सप्ताह के अंतर्गत चावल तेज। सोना, चांदी, रुई में घटाबढ़ी से मंदी का झटका। सोना, चांदी, शेयर्स, अनाजों के भावों में तेजी। ता. 8 फरवरी को शनि वक्री से शेयर्स बाजार धाराशायी। सोना, चांदी के भावों में तेजी। ता. 14 फरवरी कुंभ संक्रांति 15 मुहूर्त्तों से गेहूं, चना, जौ, चावल, मटर, उड़द, मूंग, लकड़ी, कोयला, सफेद वस्त्र, सूत, कपास के भावों में तेजी। घी, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, लोबिया, मसूर, ऊन के भावों में मंदी। सोना, चांदी, जस्ता, रांगा, पीतल के भाव तेजी लेकर गिर जायेंगे। तिल, तेल, अलसी, इलायची, कालीमिर्च, लालमिर्च, जीरा के भावों में घटाबढ़ी। ता. 16 फरवरी **रेवती के शुक्र** योग से रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर व सुगन्धित द्रव्य पदार्थ, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में मंदी। ता. 21 फर. फाल्गुनी अमावस्या भौमवासरी से अल्पवृष्टि, दूध, दही, घी, चीनी, फल, रसीले पदार्थ के भावों में तेजी। सोना घटाबढ़ी से तेज। ता. 23 फरवरी चन्द्रदर्शन गुरुवासरी व 30 मुहूर्त्तों से दो दिन के अंदर घटाबढ़ी। रुई, सूत, सूती व ऊनी वस्त्र रेशमी वस्त्रों, सरसों, घी, तेलों के भावों में तेजी। सोना, चांदी, खाण्ड, गुड़ के भावों में मंदी। ता. 28 फरवरी मेषे आश्विने शुक्रे से **दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता** से ज्वार, बाजरा, चांदी व दालें, गुड़, खाण्ड, पाट, जूट, बारदाना के भावों में तेजी। व 10 दिन के अंदर तिल, तेल, अलसी, सरसों, घी, चावल, ज्वार, मिर्च, सूत के भावों में तेजी। रुई गिरकर तेज। ता. 29 फर. उ.भा. के बुध से चांदी के भावों में घटाबढ़ी। रुई, गुड़ व अनाजों के भावों में समता।

विशेष-षष्ठी फागुन बदी में, चित्रा करे सुभिक्ष। यदि स्वाती नक्षत्र तो, तीन मास दुर्भिक्ष॥ कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥

मार्च-मास में गुरु-शुक्र के मिलन से घी, किराने के भावों में तेजी। ता. 2 मार्च चांदी, सोना, धातुवाना, हीरा, माणिक, जवाहरात, चावल, जौ, उड़द, तिल, मूंग, तुअर, चना, लाख, ऊन, चमड़ा के भावों में घटाबढ़ी से मंदी का झटका। ता. 8 फाल्गुनी पूर्णिमा गुरुवासरी से अन्न व धान्यों के भावों में घटाबढ़ी। ता. 11 मार्च तिथि क्षय से आज जनरल लाईन में तेजी। सोना तेज। चांदी में घटाबढ़ी। शेयर्स बाजार में तेजी व भरणी के शुक्र से 12 दिनों के अंदर सोना, चांदी, अफीम, लालमिर्च, सरसों, तिल, तेल, घी, उड़द, नारियल के भावों में मंदी। मूंग, मौंठ, उड़द, तुअर के भावों में घटाबढ़ी। रुई के भावों में तेजी। ता. 14 मार्च मीन संक्रांति 15 मुहूर्त्तों व बुधवासरी से गेहूं, जौ, चना, मक्का, ज्वार, बाजरा, दूध, लालचंदन, रुई के भावों में समता को बल। गुड़, शक्कर, सोना, चांदी, जीरा, तम्बाकू तेजी लेकर गिर जायेंगे। कपास, मिर्च, हल्दी, नमक, खोपरा, छुआरा के भावों में घटाबढ़ी। लौंग, कालीमिर्च, नारियल, जावित्री, जायफल गिरकर तेजी लेंगे। सरसों, राई, घी में तेजी। लोहा, तांबा, पीतल, जस्ता, रंग के भावों में तेजी। (इस संक्रांति में गल्ला भरने में कोई फायदा नहीं, फौरन खरीद-फरोख्त में लाभ) ता. 19 मार्च भरणी 2 गुरु से सोना, चांदी, धातु, हीरा, मजीठ, जवाहरात, मूंग, तुअर, मौंठ, दांख, चना, लाख, ऊन, चमड़ा के भावों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 21 मघा के मंगल से मूंग, मौंठ, उड़द, चना, सरसों, राई, गेहूं व अनाजों के भावों में तेजी का योग। रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, आयरन, मेडीसन व रसायन, बैंकिंग, हेवी इंजीनियरिंग शेयर्सों के भावों में तेजी। किसी-किसी शेयर्स में तेजी का झटका।

विशेष-चैत सुदी पड़वा दिना, सोम, शुक्र, गुरुवार। बढ़ै धान्य धन सम्पदा, सुखी रहे संसार॥ पड़वा पांचै चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो जब छीन॥

अप्रैल-ता. 2 अप्रैल **कुंभ राशौ बुध** से अलसी, रुई, चांदी के भाव घटाबढ़ी से तेज। घी, तेल, रसीले फल, डीजल, पैट्रोल, जीवन रक्षक उपयोगी वस्तुओं के भावों में तेजी। सोना घटाबढ़ी से तेज। शेयर्स बाजार में भी घटाबढ़ी। ता. 6 चतुर्दशी क्षय से तेजी व मीन राशि में बुध का प्रवेश योग से रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी। सोना, चांदी घटाबढ़ी से तेज। बिनौला तेज। ता. 7 रोहिणी के शुक्र योग से 12 दिनों के अंतर्गत सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल व समस्त धातुवाना, रसायन, मेडीसन, इंजी. से जुड़े शेयर्सों के भावों में तेजी। अलसी, अरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दांख, छुआरा, सुपारी, नारियल, ऊन के भावों में मंदी। अफीम के भावों में भी तेजी का झटका। ता. 13 मेष संक्रांति 15 मुहूर्ती शुक्रवासरी से रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, सभी प्रकार के फल, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी के भावों में तेजी। गेहूं, चावल, मूंग, अरहर, जौ, चना, मटर के भावों में मंदी का झटका। ता. 15 को राहु-केतु का नक्षत्र परिवर्तन, सूर्य के ताप में वृद्धि व भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. 19 वृष के मंगल मार्गी होने से मूंगा, मोती, हीरा, माणिक, घी, धातु, गेहूं, चना, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड के भावों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 21 वैशाखी अमावस्या शनिवासरी से धातुवाना, शेयर्स व सभी प्रकार की धातुओं में तेजी। ता. 22 चन्द्रदर्शन रविवासरी से ऑवरेज में मंदी। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी। रुई में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 26 भरणी के सूर्य से रुई, अलसी में मंदी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल के बर्तन, चादर, गेहूं, जौ, चना, चावल, मौंठ, अलसी, राई, सरसों, गुड़, घी, खाण्ड के भावों में तेजी।

विशेष-जेहि पखवारे तिथि बढ़ै, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी रहे, महंगाई हट जाय॥ बदी चौदश वैशाख में, गुरु अथवा भृगुवार। उत्तम उपजेगी फसल, मंदा चले बाजार॥

मई-मासारंभ में नमक, घी, किराना, तिल, तेल, रसीले फल व पदार्थों के भावों में तेजी। ता. 4 मेष राशि के बुध योग से मूंगा, मोती, हीरा, जवाहरात, सभी प्रकार की धातुएं, गेहूं, जौ, चना, तिल, तेल, सरसों के भावों में घटाबढ़ी से भाव नर्म रहेंगे। ता. 10 मई को बुधास्त से अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से अच्छी मंदी या तेजी की लाईन निकल सकती है 15 दिनों के अंदर घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, अरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मौंठ, चावल, सरसों, राई के भावों में तेजी। ता. 11 मई मिथुने च यदा शुक्रे से गेहूं, जौ, चना, चावल, चांदी में विशेष तेजी कारक है। रुई, पाट, वारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में नर्मी। गुड़ व घी में अच्छी घटाबढ़ी की लाईनें चलेंगी। ता. 14 वृष संक्रांति सोमवासरी से जौ, चना, गेहूं, मटर,बादाम, सुपारी, मूंग, चावल में तेजी। शेयर्स बाजार किसी अफवाह के कारण गिर सकता है। सोना, चांदी, कॉपर में तेजी। ता. 18 वृष के शुक्र योग से रुई, कपास में अच्छी मंदी। सोना, चांदी घटाबढ़ी से गिरकर तेज। अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से सुस्ती रहेगी। ता. 21 प्रतिपदा वृद्धि से शेयर्स, सोना, चांदी के भावों में मंदी चलेगी। ता. 26 रोहिण्यां बुधे से एक सप्ताह के अंदर कपास, रुई, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़ के भावों में तेजी। राई, तुअर, सन, ऊनी व रेशमी वस्त्रों के भावों में तेजी का झटका। ता. 30 मई को गुरु उदय से अनाजों के भावों में तेजी। रस, घी, किराना तेज।

विशेष-जेठ मास में सूर्य सह, पांच ग्रह एक संग। सावन सूखा जायेगा, मंत्री मंडल भंग॥ एक राशि यदा यांति, चत्वारः पंच खेचरा। प्लावयंति मही सर्वा, रुधिरेण जलेन वा॥

जून-ता. 3 जून रोहिणी के शुक्र से 12 दिनों के अंदर सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, सरसों, घी, तेल, खाण्ड, दाख, छुआरा, सुपारी, नारियल, ऊन के भावों में घटाबढ़ी से नर्मी का रुख रहेगा। ता. 4 ज्येष्ठ पूर्णिमा सोमवासरी है। **बुधो मिथुन राशिस्थो** से सरसों व तारामीरा में घटाबढ़ी। सोना, चांदी नर्म। चौपायों पशुओं के भावों में तेजी। ता. 5 को बुधोदय हो रहे हैं अतः एक महीने पश्चात अन्न के भावों में तेजी। ता. 7 जून को **मृगे सूर्ये** से रुई, सूत, सन, शेयर्स, कपूर व कस्तूरी, चंदन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मौंठ, चना, अलसी व जलीय पदार्थ, नारियल के भावों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। ता. 14 को मिथुन संक्रांति गुरुवासरी 30 मूहूर्ती से आलू, प्याज, लहसुन, फल-फूल, पाट, शेयर्स, वारदाना, रुई, सरसों, सूत, तिल, तेल, गुड़, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना व सभी प्रकार के अनाज, सोना, चांदी में तेजी। सतर्कता से कार्य करें, तेजी की लम्बी लाईन भी निकल सकती है। ता. 21 जून को आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश रुई, सूत, सन, खल, अलसी, अरण्ड, गेहूं, चना, चांदी में तेजी करायेगा। सोना के भावों में घटाबढ़ी व कर्क राशि के बुध से रुई में करीब 15 रुपये की मंदी व चांदी के भावों में घटाबढ़ी से 2 रुपये की तेजी। गुड़, दूध, तिल, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना तेजी लेकर मंदी का मान करेंगे। ता. 28 को शुक्र मार्गी से गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एक महीने पश्चात तेजी।

विशेष-पौष मास वैशाख या सावन या आषाढ़। भयकारी बुध का उदय, अस्त होय सुख बाढ़॥ जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तुयें मंदी रहें, महंगाई हट जाय॥

जुलाई-ता. 3 पूर्णिमा मंगलवासरी व चतुर्दशी क्षय से सोना, चांदी, अनाजों व शेयर्स बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। ता. 5 पुनर्वसु के सूर्य से रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, अरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मौंठ, बाजरा, चावल, उड़द, नमक, सब्जी, माजू, केशर, नील, सौंठ, गुग्गल व सुगन्धित पदार्थों के भावों में तेजी। ता. 11 हस्त के मंगल 21 दिनों के अंदर अनाज, घी, गुड़, खाण्ड, नमक के भावों में तेजी। ता. 16 कर्क संक्रांति सोमवासरी से रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, शक्कर, तिल, तेल, नारियल, सरसों, सोना, चांदी के भावों में तेजी। गेहूं, जौ, चना, उड़द, अरहर, मूंग, मौंठ के भावों में नर्मी। ता. 19 पुष्ये रवि से दो सप्ताह के अंदर तिल, तेल, सरसों, गुड़, मध, खाण्ड, चावल, ज्वार, बाजरा, सुपारी, गुग्गल, मोम, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सोना, चांदी, शेयर्स के भावों में तेजी। रुई घटाबढ़ी से तेजी लेकर गिर जायेगी। ता. 21 चन्द्रदर्शन शनिवासरी से अगले महीने में अन्न के भावों में तेजी का संकेत, रुई, वस्त्र, सूत, सन, चांदी, मूंगफली व अनाजों व शेयरों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 26 बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। ता. 31 **मिथुने च यदा शुक्रे** से गेहूं, जौ, चना में तेजी। चावलों में अच्छी तेजी का झटका। रुई, पाट, वारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। रस, घी, किराना में तेजी।

विशेष-श्रावण बदी तीज में पंचक लगे जो आन। जल उपद्रव रुके नहीं, कष्ट होय महान॥ सावन शुक्ला पक्ष में, होय तिथि कोई नाश। छत्र भंग का योग है, आगे कार्तिक मास॥

अगस्त-ता. 1 को शनिदेव कन्या राशि त्यागकर तुला में प्रवेश करने से रुई, गुड़, सभी प्रकार के अनाजों में तेजी। शेयर्स बाजार में काफी घटाबढ़ी से अच्छी तेजी। रस, घी, किराना, तिल, तेल में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 3 चित्रा के मंगल दो सप्ताह के अंदर जौ, चना, गेहूं, सोना, चांदी व पीतल के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 8 बुध मार्गी व आर्द्रा के शुक्र से गेहूं व अन्य अनाजों के भावों में अकस्मात् मंदी का झटका। रसायन, मेडीसन से जुड़े शेयर्स, तेल, औषधियों के भावों में भी तेजी। ता. 13 **भूमिपुत्रोस्तुले जातः** से सभी प्रकार के अनाजों, अलसी, रुई, बिनौला, मूंगफली, मूंग, दलहन, गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी। शेयर्स तेज। सोना तेज। चांदी में सुधार। ता. 16 **सिंहस्थे च दिवाकरे** सिंह संक्रांति से सभी प्रकार के धान्य, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रसीले पदार्थ, फल, सोना के भावों में तेजी। वर्षा में कमी। ता. 19 चन्द्रदर्शन रविवासरी व 45 मुहूर्ती से ऑवरेज में मंदी। गुड़, तेल, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी। रुई के भावों में मंदी का झटका। ता. 22 पुनर्वसु के शुक्र से बिनौला तेज। सूत, रुई, कपास, मोती, कपूर, चांदी के भावों में मंदी का झटका। ता. 28 सिंह राशि में बुध के प्रवेश से चांदी, सोना, रुई, सूत, ऊनी वस्त्र, देवदारू, खट्टे पदार्थ, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर व रसीले पदार्थों में मंदी। अनाज के भावों में घटाबढ़ी तो होगी लेकिन भाव स्थिरता पर बल देंगे। ता. 31 अग. पू.फा. के सूर्य से दो सप्ताह के अंतर्गत जीरा, सोना, सूत, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, कपड़ा के भावों में तेजी।

विशेष-एक राशि पर होय जब, बुध शुक्र और सूर। वर्षा की कमती करे, तेजी होय भरपूर॥ अनुराधा सुदी सप्तमी आवै भादव मास। यदि उस दिन वर्षे नहीं, तो आगे छोड़ो आस॥

सितंबर-ता. 1 **दैत्यगुरु यदा कर्के** से सोना, चांदी, रुई, अलसी, अरण्ड, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में तेजी। चांदी, गेहूं, अरहर, मटर में घटाबढ़ी से मंदी। चाय के भावों में 1 महीने के अंतर्गत तेजी का झटका। ता. 5 **पुष्य के शुक्र** से रुई, सूत, सन, रेशम, ऊन व धान्य के भावों में तेजी। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में नर्मी। ता. 13 सितं. **कन्या राशि गतेज्ञेहि** से 6 महीने तक सोना, शक्कर में तेजी के बाद मंदी। गेहूं, गुड़, चना, शक्कर, खाण्ड व हल्दी के भावों में तेजी। ता. 16 कन्या संक्रांति रविवासरी से गेहूं, जौ, चावल, चना, अनाजों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी के भावों में तेजी। घी, तिल, तेल के भावों में घटाबढ़ी से अच्छी तेजी व मंदी की लाईनें निकलेंगी। ता. 19 चन्द्रदर्शन से ऑवरेज में मंदी। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी। रुई के भावों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 22 पुनर्वसु के शुक्र से 10 दिन के अंदर धान्य व बिनौला के भावों में तेजी। सोना, चांदी, रुई, कपास के भावों में मंदी का झटका। ता. 28 **वृश्चिक राशौ गते भौमे** से धान्य के भावों में समता। सोना और देवदारू के भावों में तेजी। चांदी, सोना, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र, देवदारू, खट्टे पदार्थों के भावों में तेजी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, रसीले फल व रस पदार्थों के भावों में मंदी। अनाज के भाव सम। ध्यान रहे मंगल+राहु की युति से सोना में विशेष तेजी।

विशेष-पड़वा पांचै चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो जब छीन॥ शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है, आगे कातिक मास॥

अक्टूबर-ता. 1 **यदा च तुलाराशिस्थौ निशाकर सुत** से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम के भावों में तेजी। अलसी, अरण्डी, चांदी, बिनौला, मूंगफली के भावों में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 5 को गुरु वक्री व ता. 6 को शनि वक्री होने से सोना, घी, तेल व पशुओं के भावों में तेजी। ता. 10 अक्टूबर चित्रा के सूर्य से दो सप्ताह के अंतर्गत सूत, सोना, चांदी, मोती, रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, चना, तिल, तेल, नारियल, सन, केशर, कपूर, लालमिर्च, लाल वस्त्रों व मसूर के भावों में तेजी। ता. 16 अक्टूबर तुला संक्रांति मंगलवासरी व 45 मुहूर्ती से गेहूं, जौ, चना, कुल्थी, नमक, मिर्च, हल्दी, नारियल, जायफल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, उड़द, मूंग, मौंठ, ज्वार, बाजरा के भाव घटाबढ़ी से समता को बल देंगे। अरहर, रुई, वस्त्र तेज। चौपाये पशु व कंगनी चावल के भावों में मंदी। ता. 22 **बुधोवृश्चिक राशिस्थौ** से घी, तेलों के भावों में तेजी। प्रजा में सुख, सौभाग्य की वृद्धि, अफीम व अनाजों के भावों में मंदी। ता. 27 **कन्या राशि गते शुक्रे** से तीन सप्ताह के अंतर्गत प्राकृतिक प्रकोप से फसल हानि, चावलों में विशेष तेजी। रुई, पाट, वारदाना, कालीमिर्च, सोना में मंदी। गुड़, खाण्ड में भी मंदी का झटका। ता. 31 **हस्ते शुक्र** से रुई, चांदी, चावल नर्म। अनाज यदि मंदा हो तो संग्रह से लाभ। सोना, चांदी, शेयर्स तेज। गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी योग। हरी घास, फूल, सब्जी के भावों में तेजी।

विशेष-सोमवती अमावस पड़े, कभी जो आश्विन मास। अन्न गुड़ खाण्ड तेल में, मंदी का है आभास॥ किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय। ग्राहक मांगे मूंग घी, विक्रेता नट जाय॥

नवम्बर-ता. 2 तिथि वृद्धि से आज जनरल लाईन में घटाबढ़ी से मंदी। सोना तेज, चांदी उठकर गिर जायेगी। ता. 5 विशाखा के सूर्य से दो सप्ताह के अंतर्गत जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, तिल, तेल, सरसों, अरण्ड व अफीम के भावों में तेजी। अलसी, चांदी घटाबढ़ी से तेज। ता. 8 को बुधास्त व शनि उदय से बाजार में तेजी का माहौल। गेहूं व रसीले पदार्थों के भावों में तेजी। सोना, चांदी नरम। लोहा, इस्पात, मेडीसन, रसायन, पेट्रोलियम व धातुवाना से जुड़े शेयर्स के भावों में तेजी। ता. 9 **धनराशि गते भौमे** से जड़ीय पदार्थ, लकड़ी, घी, कपास और पशुओं के भावों में तेजी। रुई घटाबढ़ी से तेज। सरसों, तिल, तेल के भावों में तेजी आयेगी। ता. 13 अमावस्या भौमवासरी से बाजार में तेजी का माहौल। ता. 15 वृश्चिक संक्रांति गुरुवासरी से गुड़, खाण्ड, शक्कर, लालमिर्च, गेरू, कलई, नारियल, जायफल, रुई, तिल, तेल, सरसों, सौंठ के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। सोना, चांदी, कॉपर गिरकर तेजी लेंगे। ता. 18 **तुला राशिगते बुधे** से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, शेयर्स, अफीम के भावों में तेजी। अलसी, सरसों, अरण्ड, मूंगफली के भावों में मंदी। ता. 22 बुधोदय से सन, तिल, साल के भावों में तेजी। व 10 दिन के अंदर गुड़, खाण्ड में तेजी। ता. 27 बुध मार्गी से घी, अलसी, शक्कर, रसायन व मेडीसन से जुड़े शेयर्स व अफीम के भावों में तेजी। ता. 30 जनरल लाईन घटाबढ़ी से तेज, सोना तेज, चांदी नरम।

विशेष-कार्तिक मावस के दिना, स्वाती नखत विचार। जो कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥ कार्तिक लगत त्रयोदशी, जो आवे रविवार। तो जौ गेहूं में, तेजी चले व्यापार॥

दिसम्बर-ता. 2 ज्येष्ठा के सूर्य से दो सप्ताह के अंदर वस्त्र, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी। रुई घटाबढ़ी से गिरकर तेज। ता. 6 वृश्चिक के बुध **यदा वृश्चिक राशिस्थौ बुध** से रुई, सोना, चांदी, गुड़ के भावों में तेजी। एक स्पताह के अंतर्गत लगभग सभी चुनिन्दा शेयर्स, सोना, चांदी, किराना, दालवाना में तेजी। तिलों में तेजी का झटका। ता. 11 **वृश्चिके च गते शुक्रे** से प्रजा में सुख व आरोग्यता का संचार। सभी प्रकार के धान्यों के भावों में मंदी। रुई, शेयर्स, चांदी, अफीम गिरकर तेज। गुड़ के भावों में घटाबढ़ी। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, बाजरा में तेजी। ता. 15 धनु संक्रांति 45 मुहूर्ती व शनिवासरी से गेहूं, जौ, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, सभी धातुवाना व रसायन, मेडीसन से जुड़े शेयर्स के भावों में तेजी। घी तेजी लेकर गिरे। ता. 18 मकर के मंगल योग से रुई, सोना, चांदी, गुड़, तांबा, खाण्ड, घी, तेल, अलसी में तेजी। अनाजों के भावों में नरमी रहेगी। ता. 27 धनु मूल के बुध योग से तेजी का योग अधिक व पूर्वाषाढ़ के सूर्य से दो सप्ताह के अंदर तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गल, चमड़ा, कपूर, चांदी के भावों में तेजी। ता. 31 श्रवण के भौम योग से दो सप्ताह के अंदर गेहूं के भावों में विशेष तेजी। जौ, तिल, चना, अफीम, चांदी के भावों में तेजी। रुई में घटाबढ़ी से अच्छी तेजी व अच्छी मंदी की लाईन। विशेष हमारे यहां से रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

विशेष-जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी रहे, महंगाई हट जाय॥ मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥

विशेष-हमारे ज्योतिष रत्न कार्यालय से आप चांदी, सोना, तांबा, समस्त धातु, रुई, रेशम, ऊन, सूत, कालीमिर्च, तिलहन, दलहन, खल, चना, तुअर, मसूर, मटर, उड़द, मौंठ, ग्वार, ज्वार, चावल, सरसों, बाजरा, गेहूं, किराना, जीरा, धनियां, अजवाइन, सौंफ, मैथी, सोंठ, हल्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, शेयर्स बाजार आदि में से किसी एक वस्तु की हाजिर तथा स्टॉक की वार्षिक भेंट 5451 रु0, छ: मास की 2851 रु0, तीन मास की 975 रु0 और एक मास की 351 रु0 है। वायदे रिपोर्ट की फीस जवाबी पत्र द्वारा जानें। वायदे की रिपोर्ट टाईम (दैनिक टाईम) सहित तैयार की जाती है। मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता तथा पिन कोड नम्बर किसी भी भाषा में साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखें। वी.पी. किसी भी ग्राहक को नहीं भेजी जाती। पत्रोत्तर चाहें तो जवाबी कार्ड ही भेजें। यहां आने से पहले पत्र से समय ले लेवें, क्योंकि कभी-कभी बाहर भी जाना पड़ता है। वैसे मिलने के लिए शनिवार-रविवार को 8 से 12 बजे तक का समय है। स्पेशल चांस की फीस एक मास की 251 रु0 व साल भर की एक वस्तु के लिए 1500 रु0 है।

पता-पं. अनिल कुमार व्यास,
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ राया, मथुरा (उ0प्र0)
सम्पर्क सूत्र-05663-273353 मो. 09927269304

क्यों होते हैं विवाह असफल कुण्डली मिलाने के बाद

वर और वधू में आपसी विश्वास बना रहे, उनका वैवाहिक जीवन, सुखमय एवम् सफल रहे, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर वर-वधू के गुण-दोष हम कुण्डली के माध्यम से मिलाते हैं। किन्तु कुण्डली मिलाने के बाद अथवा मेलापक के बाद भी क्यों होते हैं विवाह असफल! क्या आपने कभी सोचा है?

कभी-कभी यह लड़ाई-झगड़ा कोर्ट-कचहरी तक पहुंच जाता है। वर पक्ष, वधू पक्ष पर और वधू पक्ष वर पक्ष पर दोषारोपण करते हैं। ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान है। इस विज्ञान के माध्यम से हम पूर्व घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान लगाते हैं। अथवा लगा सकते हैं। अत: काल की गणना करने का विज्ञान है-ज्योतिष शास्त्र।

कुण्डली मिलाना अथवा वर-वधू मेलापक, मांगलिक दोष तथा अन्य गुण दोष आदि इस शास्त्र के माध्यम से हम जान सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से ही दो अंजान लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली का मिलान कर हम उन्हें एक साथ जीने-मरने की आज्ञा अथवा सामाजिक मान्यता प्रदान करते हैं।

विवाह उपरांत वर-वधू के परिवार का विकास हो, परिवार फले-फूले, उन्नति करें। परिवार में योग्य संतान हो, ऐसी संतान जो राष्ट्र की उन्नति-प्रगति करे, साथ ही कुटुम्ब का नाम रोशन करें। सम्मान बढ़ायें। यही सब सोच-विचार कर हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने कुण्डली मिलाने की परम्परा को विकसित किया था। किन्तु कुण्डली या गुण-दोष का मिलान हम कैसे करते हैं। यह कुशल ज्योतिषाचार्य, पंडित, पुजारी आदि पर निर्भर करता है। छ:-आठ महीने किसी से ज्योतिष और पंचांग देखने का ज्ञान प्राप्त कर अपनी दुकान चलाने वाले पंडित कुण्डलियों का मिलान अथवा गुण-दोष की बारीकियों को नहीं समझ सकते। अत: ऐसा अल्प ज्ञानी पंडितों के कारण ही विवाह असफल होते हैं। वर अथवा वधू के माता-पिता पूर्ण विश्वास के साथ पंडित जी अथवा आचार्य अथवा दैवज्ञ के पास कुण्डली मिलवाने आते हैं। उन्हें क्या मालूम, जो अपनी अच्छी खासी दुकान अथवा ऑफिस सजाकर बैठा है, वह अल्प ज्ञानी अथवा नादान है। अत: अधूरा या अल्प ज्ञान वर-वधू के जीवन में जहर घोल देता है। विवाह उपरांत कलह, दोषारोपण आदि का आरंभ हो जाता है।

कुण्डली विद्वान एवं योग्य पंडित अथवा आचार्य से मिलवायें

वर-वधू की कुण्डली अथवा गुण-दोष योग्य अनुभवी विद्वान, पंडित से ही मिलवानी चाहिये। बातें बनाने वाले, आपकी हां में हां मिलाने वाले, लालची, पाखंडी पंडित से कभी भी गुण-दोष न मिलवायें। विद्वान ऐसा होना चाहिए जो वर-वधू की जन्म कुण्डली का अपनी अनुभवी दृष्टि से एक्स-रे ले लें। क्योंकि जन्म कुण्डली हमारे जीवन का एक्स-रे है। भूत, भविष्य, वर्तमान सभी उसमें दिखाई देता है। मात्र गुण-दोष मिलने से विवाह सफल नहीं होता। लड़के-लड़की के स्वास्थ्य, स्वभाव, आचार-विचार, विद्या, संतान, कुटुम्ब, धन और आयु भावों पर भी गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। गुण-दोष अथवा कुण्डली मिलाते समय वर-वधू की राशियों, लग्न और लग्नेश, सप्तम और सप्तमेष का भी मनन करना आवश्यक है। पंचांग में मात्र गुण मिलाये और कह दिया कर दो विवाह, गुण मिलते हैं-ही काफी नहीं होता वैवाहिक जीवन को सफल और सुखमय बनाने के लिये।

कुण्डली मिलाते समय ध्यान रखें

कुण्डली मिलाते समय ध्यान रखें कि विवाह दो परिवार, दो शरीरों का संबंध और मिलन है। अत: विवाहोपरांत वर-वधू का मानसिक स्तर, शैक्षिक योग्यता, आर्थिक पक्ष, पारिवारिक स्तर ठीक रहेगा अथवा नहीं। कुण्डली मिलाते समय मात्र गुण ही न देखें, दोष पर भी ध्यान दें। वर-वधू के नाम से मिलान न कर, कुण्डली से गुण-दोष मिलना ज्यादा अच्छा रहता है। क्योंकि जन्म कुण्डली से मंगली दोष, स्वास्थ्य, स्वभाव, आयु, पारिवारिक स्थिति आदि का ज्ञान हो जाता है। वर-वधू के माता-पिता को चाहिये कि सही जन्म कुण्डली ही मिलवायें। गलत बनाई गई अथवा ऐसी जन्म कुण्डली न मिलवायें, जो आवश्यकतानुसार बनवाई गई हो अथवा एक पक्ष की कुण्डली देखकर बनवाई गई है। यदि आप आवश्यकतानुसार बनवाई गई जन्म कुण्डली मिलवाते हैं अथवा गलत बनी हुई जन्म कुण्डली मिलवाते हैं, तो आप का लड़का या लड़की परेशान रहेगा। उसका वैवाहिक जीवन प्रभावित रहेगा।

मेलापक क्यों जरूरी है?

वर-वधू का चुनाव करते समय उनकी प्रवृति, मनोवृति, अभिरुचि, ग्रहों में समानता का मूल्यांकन उनकी जन्म कुण्डलियों को मिलाकर ही किया जा सकता है। मेलापक या कुण्डली मिलान में अष्टकूटों-वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गण, भकूट व नाड़ी के आधार पर वर-वधू के स्वभाव व उनकी रुचि समानता व असमानता का पता चलता है।

यह सब जानने के लिए मेलापक अथवा कुण्डली मिलाना अति आवश्यक है। कुण्डली मिलान करने वाला पंडित अथवा ज्योतिषाचार्य निष्पक्ष और इंमानदार होना चाहिये। किसी एक पक्ष की ओर उसका झुकाव नहीं होना चाहिये। निष्ठा, विश्वास और धैर्यपूर्वक कुण्डली मिलान करना चाहिए। जिससे वर-वधू का वैवाहिक जीवन सफल, आनंददायक और प्रगतिशील हो। अत: सफल व सुखमय वैवाहिक जीवन के लिये कुण्डली मिलाकर विवाह करें, नाम से मिलाकर नहीं।

लेखक : डॉ. नीरज पाण्डेय 'दादा'
मां ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
651, सैक्टर-10, आवास-विकास कॉलोनी
सिकन्दरा, आगरा-282007 (उ0प्र0) मो: 09897646528

व्यापार दिग्दर्शन (तेजी-मंदी) सन् 2012-13 ई.

मार्च-यह माह फाल्गुन सुदी 8 अष्टमी (होलाष्टक) गुरुवार से प्रारंभ होकर चैत्र सुदी अष्टमी शनिवार तक रहेगा। इस माह में वारों के योग से राजनैतिक स्थिति बिगड़ेगी। तथा अविश्वास जनक अशुभ घटनाओं का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। माह में चैत्र कृष्ण सप्तमी बुधवार को मीन संक्रांति बालावस्था (बैठी) मुहुर्त्ती 15 होना धान्य भाव और महंगे होंगे। ज्येष्ठा में संक्रांति का प्रवेश होना धान्य में तेजी करेगा।

बुधवार को जब कभी हो सूर्य संक्रांत।
रस पदार्थ गुड़ खाण्ड अरु तिलहन तेज नितांत॥

यानि रस वाले सभी पदार्थों में तेजी का रुख इस माह में चलेगा। ईख तथा कपूर एवं इत्र आदि के भावों में अस्थिरता रहेगी। इस माह में रस वाली चीजों का अभाव योग बनता है। अतः तेजी के योग 10 से 15 % तक बनेंगे। माह में ता. 1 से 7 तक मूंग, मोंठ, तिल, अरहर, सरसों, मूंगफली, बाजरा, पशु आहार, खाद्यान्न, तिलहन, दलहन के भावों में तेजी बनेगी। जो 7 से 10 % तक बनेगी। ता. 8 से 16 तक सभी जिन्सों के भावों में मंदी का झटका लगेगा। उड़द, चावल, मसूर, मटर, चना, हींग, हल्दी, लालमिर्च, कालीमिर्च तथा गुड़, खाण्ड के भावों में मंदी का योग 2 से 7 % तक बनता है। ता. 17 से 23 तक घी, तेल, तिल, लाल रंग, पीले रंग की चीजों में एकतरफा भाव चलेगा। ता. 24 से 31 तक सब्जी, किराना सामग्री, पशु आहार, ज्वार, कपास, बिनौला, तारामीरा, रायड़ा, अरहर, पैट्रोल के भावों में तेजी बनेगी। माह में तेजी का योग 45%, एकतरफा 12%, मंदी 30% तथा समभाव 7% रहेंगे। राजकीय नियंत्रण से कुछ परिवर्तन का योग बनता है।

अप्रैल-यह माह चैत्र शुक्ला श्री रामनवमी वि. सं. 2069 रविवार से प्रारंभ होकर वैशाख शुक्ला सीता नवमी तक रहेगा। गुरु ग्रह का अस्त माह के अंत में तेजी का योग एकाएक बनेगा तथा घटेगा। माह में मेष संक्रांति वैशाख बदी 8 ता. 13 अप्रैल 2012 को ऊभी मु. 45 शुक्रवार सायं काल पूर्वाषाढ़ बाद उषा के प्रथम चरण में प्रवेश होने से

शुक्रवार के दिन कभी सूर्य संक्रमण होय।
हाथी घोड़ा ऊंट गुड़ में महंगा पन होय॥

यानि पृथ्वी में अन्न उत्पत्ति का योग अच्छा बनेगा। पशु, चौपाये महंगे होंगे। ता. 1 से 6 तक तिल, तेल, चना, गेहूं, अनाज, किराना, मशीनरी के भावों में स्थिरता समभाव रहेंगे। ता. 7 से 13 तक बाजार एकतरफा सभी वस्तुओं के लिए बनेगा। यानि जो भाव प्रातः खुलेगा, दिन भर वही भाव सभी जिन्सों में चलेगा। यह तेजी या मंदी 5 से 12% बनती है। ता. 14 से 20 तक लाल रंग की वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी। सोना, चांदी, तांबा, विद्युत सामग्री के उपकरण, ग्वार, लोहा, तुअर, राई, रुई, शक्कर में तेजी बनेगी। यह तेजी 7% तक नजर आती है। ता. 21 से 25 अप्रैल तक खाण्ड, शक्कर, रसकस, बारदाना, जस्ता, मिट्टी, मूंगफली, गेहूं, तारामीरा, लालमिर्च, धनियां, जौ, बाजरा, ज्वार में अच्छी तेजी बनेगी। ता. 26 से 30 अप्रैल तक सभी वस्तुओं के भावों में घटबढ़ या उथल-पुथल तेजी या मंदी का भाव चलेगा। इस दौरान प्राकृतिक आपदा के योग से घटबढ़ भी बनती है। माह में 42% तेजी, 18% अस्थिरता, 4% मंदी का योग बनता है।

मई-यह माह वैशाख शुक्ला 10 मंगलवार से प्रारंभ होकर ज्येष्ठ शुक्ला 10 गुरुवार तक रहेगा। गुरु व बुध अस्त तथा ज्येष्ठ कृष्ण 9 सोमवार को भुवन भास्कर सूर्यदेव वृषभ में प्रवेश मध्याह्न में प्रौढ़ावस्था 15 मुहुर्त्ती संक्रांति के योग से सभी जिन्सों में तेजी का रुख चलेगा।

सोमवार के दिन कभी हो सूर्य संक्रांति।
मूंगा मोती धान्य सब सस्ता अरु सुख शांति॥

संक्रांति के योग से मोती, मूंगा, जेवरात तथा अन्न में मंदापन योग बनता है। लेकिन नक्षत्र शतभिषा के योग से तेजी का रुख बना रहेगा। माह में ता. 1 से 5 तक अरण्डी, नारियल, शक्कर, खाण्ड, कपूर, चावल, सोयाबीन, तारामीरा, वनस्पति घी, पामोलीन तथा तिल, मूंगफली आदि में तेजी 10% तक बनेगी। ता. 6 से 12 तक अनाज, खाद, बीज, जीरा, कॉपर, कपास, उड़द, ईलायची, शेयर्स, मूंग, मोंठ, मटर, पटसन, वनस्पति घी में तेजी बनेगी। ता. 13 से 16 तक अदरख, चावल, चंवला, लहसुन, तृण, पशु आहार में तेजी बनेगी। ता. 17 से 24 तक बाजरा, मसूर, मूंग, नमक, लालमिर्च, कालीमिर्च, कपास, रुई, बिनौला में तेजी 10 से 12% तक बनने का योग है। ता. 25 से 31 तक एकाएक मंदी का झटका सभी जिन्सों में 2 से 4% तक बनेगा। तेजी का योग 47%, मंदी 33%, समभाव 10%। इस प्रकार माह सामान्यतः तेजी के रुख में व्यतीत होगा।

जून-यह माह ज्येष्ठ सुदी 11 शुक्रवार क्षय तिथि 12 से प्रारंभ होकर आषाढ़ सुदी 11 शनिवार तक चलेगा। माह में शुक्रास्त पश्चिम में तथा गुरु उदय का योग बनेगा।

उदय-अस्त सप्ताह में अगर शुक्र हो जाय।
शांत-अशांत प्रजा रहे, दुःख नितांत अधिकाय॥

प्रजा सुख से हीन उपद्रव योग बनने का योग। आषाढ़ कृष्ण 10 गुरुवार भुवन भास्कर सूर्यदेव मिथुन राशि में प्रवेश सायंकाल अश्विनी नक्षत्र योग कुमारिका अवस्था 30 मुहुर्त्ती संक्रांति के प्रभाव से समभाव बनेंगे। धान्य के भावों में गिरावट का योग भी एकाएक बनेगा।

गुरुवारी संक्रांतियां जब-जब जग में आव।
सुखी प्रजा धन धान्य युक्त सभी वस्तु समभाव॥

इसके योग से माह में मंदी का या तेजी का योग न्यून। मात्र समभाव रूप से माह चलेगा। माह में धातु बाजार भी स्थिर जैसा चलेगा।

केतु शुक्र गुरु की युक्ति द्वादश भाव।
कलह वृद्धि परिवार में तेजी-मंदी का आव न ताव॥

यानि सुस्ती का योग चलेगा। ता. 1 से 4 तक घी, किराना सामग्री, रसकस में तेजी 10% तक योग। ता. 5 से 9 तक सभी जिन्स स्थिर भाव में चलेंगे। यानि न तेजी, न मंदी का सप्ताह चलेगा। ता. 10 से 17 तक **सोना, चांदी, पैट्रोल नहीं रहेगा इन पर कंट्रोल।** ईंधन सामग्री तेज होगी। ता. 18 से 22 तक कपास, तिल, तेल, जीरा, धनियां, गर्म मसाला, अरहर, सोना, चांदी, कॉपर, कपूर, औषधि बाजार में तेजी आयेगी। ता. 23 से 25 तक एकतरफा मंदी चलेगी। सावधान रहें! ता. 26 से 30 तक सभी जिन्सों में 5 से 12% तेजी का रुख चलेगा। तेजी 42%, मंदी 40%, समभाव 18% चलेगा। अतः सामान्य तेजी रहेगी।

जुलाई-यह माह आषाढ़ सुदी 12 रविवार अनुराधा नक्षत्र के योग से शुरू होकर श्रावण शुक्ला 13 मंगलवार तक चलेगा। माह में श+मं की युति से विश्व व्यापार में चिन्ताजनक घटनाएं घटेंगी। किसी का अपमान भी होगा। पांच गुरु तथा पांच बुधवार के योग से खाद्यान्नों के भाव सम बनते हैं। गेहूं, चना, चावल, चांदी, चीनी में तेजी का रुख मास पर्यन्त रहेगा। श्रावण कृष्ण 12 सोमवार को कर्क संक्रांति प्रातःकाल प्रौढ़ावस्था बैठी 30 मुहुर्त्ती मृगशिरा चन्द्र वृषभ योग में लगेगी यानि सूर्यदेव कर्क में प्रवेश करेंगे। अतः धान्य भाव सम रहेंगे।

मिथुन रवि महंगे बिकैं मूल रू कन्द कपास।
तिलहन सारे धान्य में तेजी का आभास॥

तिलहन में विशेष तेजी 15 जुलाई तक बनती है।

सावन में दशमी बिना जो आवे संक्रांति।
बाढ़ै भाव धान्य धन सम्पदा वर्षा हो बहु भांति॥
सोमवार के दिन कभी हो सूर्य संक्रांति।
मूंगा मोती धान्य सम सस्ता अरु सुख शांति॥

यानि जेवरात बाजार, शेयर्स बाजार मंदा होगा। ता. 1 से 8 तक ग्वार गम, चांदी, इस्पात, कपास, बाजरा, ज्वार, मक्का में 2 से 8% तेजी बनेगी। ता. 9 से 10 तक बिनौला, चावल में समभाव। ता. 11 से 14 तक किशमिश, छुहारा, धनियां, अजवायन, कालीमिर्च, पटसन, बारदाना में तेजी का योग। ता. 15 से 20 तक सोना, चांदी, लोहा,

जस्ता, बारदाना में तेजी। ता. 21 से 25 तक दूध, पाऊडर, वनस्पति, लकड़ी, सीमेन्ट में 2 से 10% तेजी का योग बनेगा। ता. 26 से 31 तक काजू, पिस्ता, रबड़, सरसों, रसायन पदार्थ, औषधियों में तेजी तथा खाद्यान्नों में मंदी का दौर चलेगा। कपड़ा, सूत, रुई, सन, अरहर, मक्का, बाजरा, ज्वार, ग्वार में मंदी के झटके लगेंगे। माह में अस्थिरता ज्यादा रहेगी। तेजी 37%, मंदी 40%, समभाव योग 23% बनता है। यह माह स्टॉक कर्त्ताओं को लाभ देगा।

अगस्त-यह माह श्रावण शुक्ला 14 बुधवार उ.षा. नक्षत्र से प्रारंभ होकर प्रथम भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा शुक्रवार तक रहेगा। माह में बुधास्त अंत में बनता है। तथा पुरुषोत्तम मास 18 अगस्त 2012 से प्रारंभ हो रहा है। जो 16 सितं. तक रहेगा। सिंह संक्रांति का योग प्रथम भाद्रपद कृष्ण 14 गुरुवार पुष्य नक्षत्र चतुर्थ चरण योग में बंध्यावस्था मुहूर्त्ती 30 धन-धान्य भाव सम लेकिन पीली वस्तु को तेजी में चमकायेगी। अतः हल्दी, मसूर की दाल, चने की दाल, मक्का, सोना, पीली रंग की सभी वस्तुओं के लिए यह माह तेजी दायक रहेगा।

गुरुवारी हो संक्रांति काम सु रूप समाज।
सुखी प्रजा धन धान्य युक्त मंदी की आवाज॥

प्रजा सुखी, व्यापारी दुखी, चिन्ता करायेगा। मंदी-तेजी की मार में रुलायेगा।

मावस से अधिक नक्षत्र सस्ता करै अनाज।
हीन नक्षत्र मावस अधिक तो तेजी का राज॥

इस योग से अमावस्या नक्षत्र से ज्यादा है। अतः पूरा माह तेजी कारक रहेगा। माह में ता. 1 से 8 तक इस्पात, आमचूर, पामोलीन, पाट, बारदाना, ग्वार गम में तेजी का योग चलेगा। ता. 9 से 16 तक सोयाबीन, मूंगफली, कोयला, धनियां, अजवायन, चावल, चीनी, अखरोट, काजू, बादाम के भाव अस्थिर रहेंगे। ता. 17 से 22 तक सभी वस्तुओं में 5 से 10% तेजी बनती है। ता. 23 से 31 तक खाण्ड, रुई, सन, जीरा, चिरौंजी, कालीमिर्च, शेयर्स बाजार, सोना, चांदी, तांबा, सोयाबीन में तेजी 10% तक बनेगी। माह में 35% तेजी, 35% मंदी तथा 30% समभाव चलेंगे। सावधानी से सौदा करें।

सितंबर-यह माह द्वि.भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा शनिवार पूर्वाभा. से प्रारंभ होकर पूर्णिमा रविवार उभा. नक्षत्र तक रहेगा। इस माह में सूर्यदेव कन्या राशि में द्वि.भाद्रपद कृष्ण अमावस्या रविवार को उफा. नक्षत्र में ऊभी मु. 45 के योग से पूर्वस्याम शुक्रोदय के योग से राजनैतिक दृष्टिकोण से अशांति दायक बनेगी।

सूर्य चन्द्र संक्रांति को एक राशि पर नेष्ट।
मित्र ग्रह में होय तो हो जाते हैं श्रेष्ट॥

चन्द्रमा का मित्र ग्रह बुध की राशि पर युक्ति शुभदायक है।

सूर्य संक्रमण सूर दिन राजाओं में रार।
[illegible]

राजाओं में राड़ दुःख संकट के योग। अनाज तथा रस पदार्थों में तेजी बनेगी। प्रजा दुःखी होगी। माह में ता. 1 से 4 तक जीरा, पाट, बारदाना, लाल चंदन, सुपारी तथा औषधि बाजार तेज रहेंगे। गेहूं, चना, मूंगफली, उड़द, चंवला, तिल तथा मूंग-मोंठ में स्थिति समभाव बनेगा। तथा स्टॉक करने का समय ठीक है। ता. 5 से 14 तक सभी जिन्सों का भाव मंदा चलेगा। 10% एकाएक मंदी आयेगी। कपास, बिनौला, शेयर्स, चिरौंजी, छुहारा, सोना, चांदी, कन्या राशि को शुभ योग। किशमिश में समभाव रहेंगे। ता. 15 से 22 तक किराना बाजार में अच्छी तेजी बनेगी। मूंगफली, चावल, लवण, ईलायची, वनस्पति घी, तरबूज, सब्जी, औषधियों में तेजी आयेगी। ता. 23 से 30 तक सभी जिन्सों का बाजार एकतरफा चलेगा। मंदी या तेजी जैसा खुलेगा, वैसा चलेगा। माह में व्यापारिक क्रियाशीलता भ्रामक रहेगी। तेजी 27%, मंदी 30%, भ्रामक 10%, समभाव 33% बनता है।

अक्टूबर-माह आश्विन बदी 1 प्रतिपदा सोमवार रेवती नक्षत्र से प्रारंभ होकर कार्तिक बदी 2 बुधवार कृतिका तक चलेगा। माह में शनि अस्त होगा। शारदीय नवरात्रा विजयोत्सव, विजयादशमी नक्षत्रानुसार

किसी राशि पर संक्रमण करै भौम दिन सूर।
तो महंगा होवै नमक रस घी तेल कपूर॥

मंगलवारी संक्रांति हो तो नमक, रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, कपूर में तेजी आयेगी।

हरिन हाथी हेम की तुला राशि गत सूर।
सभी तरह के धान्य में तेजी हो भरपूर॥

तुला राशि के सूर्य के योग से सभी प्रकार के अनाज तेज होंगे। हाथियों का नाश होगा। सोना में तेजी आयेगी।

सोमवती अमावस पड़ै, कभी जौ आश्विन मास।
अन्न खाण्ड गुड़ तैल में मंदी का आभास॥

अमावस्या सोमवती के योग से मंदी का आभास होगा। ता. 1 से 8 तक कपास, रुई, बिनौला, खाण्ड, गुड़ में तेजी का योग। कपड़ा, तेल, तिल, पाट, बारदाना, अलसी में मंदी का योग रहेगा। ता. 9 से 13 तक सरसों, रायरा, तारामीरा, जीरा, अजवायन, गमग्वार, अखरोट, कालीमिर्च, लालमिर्च, लौंग, पंचमेवा, किशमिश, डिब्बा बंद तेल, हल्दी में तेजी बनेगी। ता. 14 से 18 तक सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, पशु आहार, कपास, काजू, बादाम, बाजरा में मंदी के योग बनेंगे। ता. 19 से 26 तक कोयला, चना, गेहूं, उड़द, सरसों, मूंगफली में तेजी का योग बनता है। शेयर्स बाजारों में तेजी आयेगी। ता. 27 से 31 तक तेजी का बाजार एकतरफा होगा। माह में तेजी 62%, मंदी 30%, समभाव 8% बनेंगे।

नवंबर-यह माह कार्तिक बदी 3 गुरुवार कृतिका नक्षत्र से प्रारंभ [illegible] बदी 2 शुक्रवार मृगशिरा तक रहेगा। माह में दीपोत्सव दीपावली पर्व 14 को तथा अमावस्या का क्षय होना अशुभ दायक योग बनता है। माह में सूर्य वृश्चिक राशि में कार्तिक सुदी 2 गुरुवार को मध्य रात्रि बाद प्रभात वेला में अनुराधा नक्षत्र योग में युवावस्था 15 मुहूर्त्ती संक्रांति के योग से महंगाई का हवाला बनता है। पांच बुध के योग से रस वाली वस्तुओं में तेजी बनेगी। पंचमी को आर्द्रा होने से घास, तृण के भाव तेज होंगे। अल्प वृष्टि तथा चौपायों को रोग पीड़ा होगी।

गुरुवारी संक्रांति पीत वस्त्र रंग वस्तु तेज।
धान्य भाव मंदा चले धातु बाजार भी तेज॥
मंगल राहु साथ में मंगल घर में वास।
अनावृष्टि का योग बने नहीं बरखा की आस॥

इससे तेजी का वर्चस्व बढ़ेगा।

वृश्चिक गत जब सूर्य हो अन्न वस्त्र सम भाव।
साथ द्रव्य मंदे मिले, तो खरीद कर लाव॥
छठे महिने लाभ हो, बेचो तब हो तेज।
तेज वस्तु लेना नहीं, रखना यह परहेज॥
मावस्या तुल चन्द्रमा, मंगल धनु विचार।
रोग से नासै प्रजा, बाढ़ै व्यापार अपार॥

इन सब घटनाओं के द्वारा इस माह में ता. 1 से 8 तक कपूर, जस्ता, सोना, सरसों, सोयाबीन, कालीमिर्च, घी वनस्पति, बिनौला, खाण्ड, गुड़, ईख, मिश्री में तेजी बनेगी। ता. 9 से 14 तक सभी जिन्सों के भाव स्थिर बनते हैं। कपास, रुई, चांदी के भावों में मंदी भी होगी। ता. 15 से 22 तक चावल, साबूदाना, तुअर, चना, दालचीनी, हल्दी, लहसुन, अजवायन, सोयाबीन, क्रूड आयल, पीपरमेन्ट, जीरा, तिलहन, दलहन में तेजी 10% तक बनेगी। ता. 23 से 30 तक सभी वस्तुओं में अस्थिर भाव चलेंगे। अफीम, मूंग, मोंठ, गुड़, खाण्ड, चाय, केशर, मजीठ, मैंथी, इमली, लौहादि में घटबढ़ चलेगी। शेयर्स बाजार तेज रहेगा। यह तेजी-मंदी 8% के लगभग रहेगी। जीरा में कुछ विशेष परिवर्तन भी होंगे। माह में तेजी 42%, मंदी 30%, समभाव 28% रहेंगे।

दिसंबर-यह माह मंगशिर बदी 3 शनिवार आर्द्रा नक्षत्र में प्रारंभ होकर पौष बदी 3 सोमवार पुष्य नक्षत्र के योग तक रहेगा। माह में बुध, शुक्र, राहु, सूर्य वृश्चिक में, सूर्य से मंगल आगे, शनि-मंगल बीच चार ग्रह व्यापारिक दृष्टि से माह काफी चिन्ता जनक रहेगा। इस माह में मंगशिर सुदी 3 शनिवार को सूर्य धनु राशि में दिवा-सायं गोधूलि वेला में उषा. नक्षत्र धनु मकर राशि के योग एवं प्रौढ़ावस्था बैठी 45 मुहूर्त्ती धान्य भाव में तेजी का बोलबाला ज्यादा रहेगा। महंगाई की मार जनता पर विशेष पड़ेगी। त्राहि-त्राहि भी होने का योग बनेगा। इसमें मंदी का योग अनाज का बनता है।

शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अहित काज॥

तिलहन तेज तथा युद्धादि जैसा वातावरण या विवाद के घेरों में सरकारें चलेंगी। तथा उपद्रव, बलात्कार, बदनजर ज्यादा होंगे।

सूर्य बुध शुक्र राहु वृश्चिक क्षेत्र में आय।
राज विग्रह पैदा करे, जनता में घृणा छा जाय॥

तीज को आर्द्रा होने से धान्य के भावों में मंदी का योग बनता है। प्रदेशों में सुख योग। कृष्णा 11 को रविवार होने से कपास का भाव मंदा। अमावस्या को ज्येष्ठा नक्षत्र होने से दुर्भिक्ष का योग तथा गुरुवारी अमावस्या से वृष्टि हो सुभिक्ष बनता है। पूर्णिमा को मृगशिरा अभाव होने से महंगाई का योग ज्यादा है। ता. 1 से 8 तक रुई, कपास, बिनौला, चावल, कपूर, सरसों, मूंग, मोंठ, बाजरा के भाव स्थिर रहेंगे। ता. 9 से 14 तक गुड़, दूध, पाउडर, कालीमिर्च, चना, गेहूं, छुहारा, ईसबगोल, लोहा, वाहन, मशीनरी, बिल्डिंग मैटेरियल में तेजी। यह तेजी 10 से 12% तक बनती है। ता. 15 से 21 तक अफीम, क्रूड आयल, सिल्वर, साबूदाना, मेहंदी, लाल चंदन, ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, तिल तेल, खल आदि में भाव एकतरफा जोरदार तेजी के पक्ष में चलेगा। ता. 22 से 27 तक सभी जिन्सों में झटका से तेजी-मंदी यानि भाव अस्थिर रहेंगे। ता. 28 से 31 तक सोना, चांदी, तांबा, पीतल, कांसी, लोहा तथा जेनरातों के भावों में मंदी का जोरदार झटका लगेगा। माह में तेजी 43%, मंदी 27%, समभाव 30% प्रतीत होते हैं।

जनवरी 2013 ई.-यह माह पौष बदी 4 मंगलवार से प्रारंभ होकर माघ बदी 4 गुरुवार उफा. नक्षत्र तक रहेगा। माह में पांच सोमवार होना धान्य सस्ता का कारक बनता है। पौष बदी 14 का क्षय होना तथा शुक्रवारी अमावस्या के योग से व्यापारिक गतिविधियों में अस्थिरता बनती है। ता. 13 जनवरी को पौष सुदी 2 रविवार को मकर संक्रांति मध्य रात्रि बाद शुभ प्रभात वेला में प्रवेश होना, श्वेत कंचुकी प्रौढ़ावस्था 30 मुहूर्त्ती से धान्य भाव सम योग। रविवार को ही चन्द्रदर्शन योग है। दोनों योग रविवार को होना एकाएक परिवर्तन दायक योग बनेगा। शेयर्स बाजार में विशेष तेजी भी।

शुक्र क्षेत्र में चन्द्र सूर शनि उदय कभी होय।
राजाओं में युद्ध धान्य तेज योग होय॥
सूर्य देव भृगु नाथ का एक राशि पर साथ।
पकड़ा देती है फसल महंगाई को हाथ।

प्रत्येक वस्तु में तेजी बनेगी।

धनु राशिगत भानु में मंदा रहे अनाज।
तिलहन तेजी कपास में महंगाई का राज॥

धान्य मंदा। तिलहन, दलहन में तेजी। ता. 1 से 10 तक सरसों, तिल, रायड़ा, सोना, चांदी, लोहा, पीतल, सोया खल, कपास में अच्छी तेजी बनेगी। ता. 11 से 16 तक संक्रांति योग से भावों में उतार-चढ़ाव चलेगा। चांदी में विशेष तेजी। नया सौदा कर्त्ता घाटे में रहेगा। मूंग, मोंठ, ग्वार, चना, ज्वार में तेजी। ता. 17 से 22 तक सभी वस्तुओं का भाव एकतरफा चलेगा। ता. 23 से 25 तक सभी खाद्यान्न तेज होंगे। चंवला, जीरा, तिल, मूंगफली विशेष तेजी का लाभ देगी। ता. 26 से 31 तक तारामीरा, चना, जौ, बाजरा, ज्वार, ग्वार, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चीनी, मिश्री, खोपरा, सीमेन्ट, लोहा, पत्थर में तेजी बनेगी। कालीमिर्च, उड़द, सरसों, राई, सोयाबीन, अरहर में भी अच्छा चढ़ाव बनेगा। जुलाई 2012 में स्टॉक कर्त्ता को लाभ इस सप्ताह मिलेगा। शेयर्स बाजार अस्थिर चलेगा।

सूर संक्रमण सूर दिन राजाओं में रार।
धान्य तथा रस तेज हो, दुःखी रहे संसार॥
कूर वार तेजी करे, मावस पूनम दोय।
सोम शुक्र गुरुवार शुभकारी मंदी होय॥

सम भाव योग बनता है।

फरवरी-यह माह माघ बदी 5, शुक्रवार से प्रारंभ होकर फाल्गुन बदी 3 गुरुवार तक रहेगा। चन्द्रदर्शन मु. 15 प्रतिपदा सोमवार को बुधोदय पश्चिम में, शुक्रास्त फाल्गुन सुदी 3 बुधवार को तथा कुंभ संक्रांति माघ सुदी 2 मंगलवार सायं प्रदोष वेला में प्रवेश भुवन भास्कर का संक्रमण होगा। युवावस्था मु. 30 धान्ये भाव सम के योग से तथा बदी अष्टमी का क्षय तथा रविवार को अमावस्या का होना तथा धनिष्ठा नक्षत्र के योग से दुर्भिक्ष का योग बनता है। तथा सभी वस्तुओं में तेजी का योग भी करता है। सोम प्रतिपदा सुभिक्ष व कुछ मंदी का प्रतीक बनेगी।

अष्टमी बदी यदा भवति, तदा वस्तुओं में वृद्धि भविष्यति।
पूर्णिमा सोम मघा युक्ति धान्य भावों में तेजी भविष्यति॥
किसी राशि पर संक्रमण करै भौम दिन सूर।
तो महंगा होवे नमक रस घी तेल कपूर॥

माह में ता. 1 से 7 तक चावल, धान, शेयर्स, पाट, बारदाना, चना, मसूर में तेजी बनेगी। ता. 8 से 14 तक कपड़ा में तेजी। सूत, सन, कपास, बिनौला, खल, तिल कुछ मंदे। सोना, चांदी में वृद्धि। ता. 15 से 23 तक सभी वस्तुओं का भाव एकतरफा चलेगा। मंदी या तेजी का घटक रहेगा। उदित समय चन्द्रमा का वर्ग पीठ युक्त होना स्टॉक संग्रह का संकेत भी करता है। ता. 24 से 28 तक रुई, सूत, सन, कपास, गुड़, खाण्ड, जीरा, तारामीरा, जूट, खल, तृण, गेहूं आदि के अस्थिर भाव उठा-पटक के चलेंगे। चांदी की स्थिति दयनीय रहेगी।

मार्च-यह माह फाल्गुन बदी 4 शुक्रवार से चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय से चैत्र बदी 5 पंचमी रविवार तक रहेगा। इस माह में कृष्णा 8 को बुधवार होना अल्प वर्षा का कारक बनता है। अमावस्या को रेवती का होना सुभिक्ष योग करता है। रेवती में शुक्र का होना भी शुभदायक है। पूर्वाभाद्रपद में बुध ग्रह का होना दुर्भिक्ष तथा शेयर्स बाजार को प्रभावित उठा-पटक में करेगा। अश्विनी में शुक्र ग्रह होने से ब्राह्मण जाति में विरोध बढ़ेगा। जौ, तिल, उड़द में तेजी विशेष रहेगी। फाल्गुन सुदी 3 को मीन संक्रांति भुवन भास्कर सूर्यदेव गुरुवार को सायं काल में प्रवेश करेंगे। प्रौढ़ावस्था मु. 30 धान्ये भाव सम। चन्द्रदर्शन बुध के योग से घटाबढ़ी चलेगी।

गुरुवारी संक्रांति जब जब जग में आव।
सुखी प्रजा धन धान्य युक्त सभी वस्तु समभाव॥
पांच मंगल होना उद्गल योग।
प्रजा राजा दुःखी सब लोग॥

पांच बुध रसवाली वस्तुओं में तेजी कारक रहेगा। बुधेरसक्षयो भूम्याम। सोमवती अमावस्या सुभिक्ष आरोग्य तथा वस्तुओं के भावों में मंदी का योग करती है। पीत वर्ण की वस्तुएं तेज रहेंगी। ता. 1 से 10 तक सभी वस्तुओं में 3 से 5% तक तेजी। ता. 11 से 17 तक एकतरफा भाव जो प्रातः खुलेगा, चलेगा। ता. 18 से 25 तक सोना, चांदी, शेयर्स के भाव आकाश छूयेंगे। ता. 26 से 31 मार्च तक अस्थिरता बनी रहेगी।

अप्रैल (ता. 1.4.2013 से 10.4.2013 चैत्र बदी अमावस्या 2069 तक)-नये वित्त वर्ष का शुभारंभ शुभ रहेगा। ता. 1 से 3 तक चांदी विशेष तेज। ता. 4 से 10 तक सोना, तांबा, पीतल, स्टील, खाद्यान्नों में तेजी। तिलहन, दलहनों में उतार-चढ़ाव चलेगा। शेयर्स भाव अनियंत्रित रहेंगे।

कपड़ा लकड़ी और ककड़ी में।
तेजी का रुख रहे सब कड़की॥
सर्वधान्य महंगे बिकै मीन राशि गत भानु।
तेजी तिलहन नमक में साधारण अनुयान॥

यानि सभी वस्तुओं में तेजी रहेगी।

व्यापार दिग्दर्शन (तेजी-मंदी)

शुभ वि. सं. 2069 शाके 1934

दिनांक 23 मार्च 2012 से 10 अप्रैल 2013 तक

इस वार्षिक पुस्तिका में सभी जिन्सों, वस्तुओं की मासिक, साप्ताहिक, दैनिक विषय एवं वर्ग वस्तु से संबंधित तेजी-मंदी का योग, कारोबार-धंधा, संक्रांति बोध समस्त प्रकार की उपयोगी वस्तुओं की तेजी-मंदी की जानकारी मिलेगी। आप चाहें तो अग्रिम बुक भी करा सकते हैं। मूल्य 500 रुपये मात्र, डाक खर्च एवं रजि. सहित है।

लेखक एवं सम्पादक-**ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक**
(ज्योतिषायुर्वेदाचार्य ज्योतिष महामहोपाध्याय शास्त्री)
वेदांग ज्योति प्रकाशन-सारडा बाजार, मेड़ता सिटी
जिला-नागौर (राजस्थान) पिन-341510
फोन-01590-220792, मो.-09799011197, 09413930247

व्यापार भविष्यफल प्रकाश सन् 2012 ई.

जनवरी 2012 ई.-यह मास पौष सुदी 8 रविवार से शुरू हो रहा है। मास में तेजी की प्रमुख ता. 6, 10, 17, 19, 23, 24, 25, 26, 28 एवं मंदी की प्रमुख ता. 3, 4, 12, 13, 16, 30 हैं। ता. 2 जनवरी सुदी 9 रेवती युक्त होने से अनाज स्टॉक नहीं करने की राय देती है। गुड़, चीनी, चांदी, सोना, रुई में अच्छी मंदी। ता. 3 जनवरी उफा. का भौम दालें, चावल, धातुएं, रुई, कालीमिर्च, गुड़, चीनी तेज करेगा। सुदी 13 शनिवारी घी तेज करेगी।

पौष सुदी तेरस दिना भौम शुक्र शनिवार।
वर्षे तो भरलो सभी गेहूं के भण्डार॥ (भविष्य भारती)।

कुंभे शुक्र व्यापारिक वस्तुओं में मंदी के झटके सोमवारी पूनम एवं कुंभे शुक्र व्यापारिक वस्तुओं में मंदी के झटके लायेगा। अपोजिशन में मंगल होने से दो सप्ताह के अंदर हिन्दव्यापी घोर वर्षा की भी आशंका रहेगी। गुवार, जीरा, किराना, तिलहन, दलहन में अच्छा मंदा भी चल सकता है। माघ कृष्ण पक्ष-मास में पांच मंगलवार प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी समर्थक है। बदी पक्ष में जिन प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छा मंदा आवे तो खरीदना लाभदायक रहेगा। ता. 12 जन. माघ बदी 3 गुरुवारी मघा नक्षत्र युक्त होने से व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का संचार तथा उत्तम वर्षाकारी है।

माघ बदी दोयज तथा तीन वृहस्पतिवार।
उत्तम वर्षा शांति सुख बढ़ै मंगलाचार॥ (भविष्य भारती)।

ता. 14 जनवरी बुधास्त पूर्व रुई, सोना, चांदी में काफी उतार-चढ़ाव करेगा। 45 मुहूर्ती शनिवार मकर संक्रांति भी काफी घटाबढ़ी कारक है। तेज वस्तुएं बेचें, मंदा खरीदें, लाभ होगा। ता. 15 जनवरी षष्ठी क्षय रुई, पाट, बारदाना आदि में काफी मंदी कारक है। यदि इससे पूर्व बाजार तेज चल रहे हों तो यहां जोरदार मंदी का झटका भी आ सकता है। अतः रुख देखें। ता. 23 जनवरी सोमवती मावस उपा. युक्त होने से आगे अचानक अनाज, गल्ला, मालों में भारी तेजी ला सकती है। माघी सोमवती मावस व्यापारियों के हक में नहीं होती। लाभ होते-होते प्रायः हानि हो जाती है। यथा-

सोमवती तीनउ बुरी सावन कातिक माघ।
गुण करती अवगुण करे सुन लो तुम यो साह॥ (भविष्य भारती)।

माघ सुदी पक्ष-सुदी एकम मंगलवारी शनि अंगारक योग युक्त होने से व्यापार की सभी प्रमुख वस्तुओं में जबरदस्त तेजी या मंदी व्यापारियों को हैरान व परेशान करेगा। पक्ष में तेज वस्तुएं बेचें। मंगल वक्री होगा। अपने वक्री काल में किराना मालों में अच्छी तेजी लायेगा।

जिस राशि पर भ्रमण भौम का जब हो उसमें निश्चय वक्र।
वक्री होने पर किरायानों में चलता तेजी का चक्र॥ (भविष्य भारती)।

ता. 30 जून सुदी 7 सोमवारी दुर्भिक्षकारी है। तिलहन, रुई, धातुएं आदि अन्य प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी को सपोर्ट करती है।

माघ सुदी सातै पड़ै शनि रवि चन्द्रवार।
विग्रह भय दुर्भिक्ष से दुख पावै संसार॥ (भविष्य भारती)।

ता. 31 जन. सुदी 8 मंगल लाल वर्ण में अधिक उतार-चढ़ाव तथा रुई, चना में अच्छी तेजी समर्थक है।

फरवरी-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. 2, 8, 15, 16, 17, 28, 29 एवं मंदी की प्रमुख ता. 9, 12, 20, 22, 23, 24 हैं। ता. 1 को यदि रात्रि में चन्द्रमा कुण्डल घेरा में दिखाई दे तो उस क्षेत्र में आषाढ़ मास में भारी वर्षा होगी। तथा अनाज भी तेज रहेगा। ता. 3 फरवरी मीने शुक्र गुड़, तिलहन तेज। अनाज, रुई, कालीमिर्च, सोना, चांदी में मंदी कारक है। ता. 5 फरवरी उभा. का शुक्र चावल, मोती आदि सफेद वर्ण की वस्तुओं में मंदी कारक है। आलू, प्याज, शाक-सब्जियों में अच्छी तेजी कारक है। ता. 7 फरवरी मंगलवारी पूनम चना, रुई, पीपरमेन्ट, अनाज, गेहूं, दालों में अच्छी तेजी के झटके लायेगी। फागुन कृष्ण पक्ष-ता. 8 फरवरी बदी एकम बुधवारी से पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, घी, तेल, तिलहन, अनाज, दालें, किराना मसाला, शाक-सब्जियां, मूल पदार्थ आदि में तेजी लायेगी। सुबह शनि वक्री होगा। साथ में मंगल भी वक्री चल रहा है।

फागुन अथवा चैत्र में मंगल या शनि वक्र।
मंदी रह कर चले फिर तेजी का चक्र॥ (भविष्य भारती)

यह योग प्रथम बाजारों को मंदा करके फिर बाजारों में अच्छी तेजी का वातावरण बनाता है। सर्व अनाज, किराना, रुई, गुड़, तिलहन पदार्थ, सरसों, घी, तेल, खल, प्रमुख शेयर्स आदि पर विशेष प्रभाव होगा। अनाज का स्टॉक लाभदायक रहेगा। बदी 6 स्वाती युक्त है।

षष्ठी फागुन बदी में चित्रा करे सुभिक्ष।
यदि स्वाती नक्षत्र तो तीन मास दुर्भिक्ष॥ (भविष्य भारती),

के अनुसार दुर्भिक्षकारी है। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में वैशाख तक तेजी चल सकती है। शनि से पंचम कुंभ संक्रांति भी दुर्भिक्षकारी एवं तेजी समर्थक है।

शनि राहु से तीसरे क्रूर ग्रह सुखकार।
पंचम हो तो जगत में दुख दुर्भिक्ष अपार॥ (भविष्य भारती),

के अनुसार यदि आज वर्षा हो तो मंदी में लाल वर्ण की वस्तु मात्र का स्टॉक करके 4 माह पश्चात बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. 17 फरवरी रेवती का शुक्र रुई, चांदी, चावल, कालीमिर्च, अनाज, धातुएं आदि में मंदा समर्थक है। बदी 14 सोमवारी महाशिवरात्री व्रत है। यदि आज पश्चिमी वायु चले तो तेजी चलेगी। स्थूल रूप से यहां पिछली चलती लाईनों में प्रायः परिवर्तन होकर कोई अच्छी चाल निकलेगी। रुख देखें। ता. 21 फरवरी मंगलवारी मावस अनाज स्टॉक की राय देती है।

मंगल शनि रवि अमावसी फागुन चैती जोय।
पशु बेचा अन्न संग्रहो अवश्य दुकाली होय॥ (भविष्य भारती)

फागुन शुक्ल पक्ष-पक्ष में तीन बुधवार घी तेज, दालों में मंदी का प्रभाव एवं सोना, चांदी, रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च में प्रथम मंदी आकर अंत में तेजी। स्थूल रूप से जिन व्यापारिक वस्तुओं में फागुन मास में अच्छी मंदी चले तो उन वस्तुओं में प्रायः चैत्र मास में अच्छी तेजी चला करती है। ता. 28 फर. गुरु+शुक्र का योग अनावृष्टि या अतिवृष्टि से जनता को कष्ट तथा तेजी समर्थक है।

मार्च-मास में तेजी की प्रमुख ता. 5, 6, 13, 20, 27, 30, 31 और मंदी की प्रमुख ता. 2, 9, 12, 15, 19, 23, 26, 28 हैं। ता. 1 मार्च सुदी 8 रोहिणी युक्त है।

कुंभ मीन के अंतरे अष्टमी रोहिणी जोय।
भारी से भारी तेजी अन्न में होय॥ (भविष्य भारती)

के अनुसार यह योग प्रथम बाजारों को एकदम मंदा करके फिर धीरे-धीरे दो मास के अंदर भारी तेजी लाता है। ता. 3 मार्च सुदी 10 आर्द्रा नक्षत्र युक्त होने से दुर्भिक्षकारी है। पैदावार में कमी का संकेत देती है। चैत्र कृष्ण पक्ष-मास में 5 शुक्रवार प्रजा का नाश दुर्भिक्ष एवं दिन-प्रतिदिन बाजार तेज हो।

चैत्र मास में आ पड़े पांच शुक्र शनिवार।
प्रजा नाश दुर्भिक्ष दिन-दिन तेज बाजार॥ (भविष्य भारती)।

मास में गुरु+शुक्र एक राशि पर चल रहे हैं।

चैत महीने में रहै गुरु शुक्र इक मोन।
घी तेल कपास में मंदी की टोन॥
एक राशि पर चैत्र में गुरु भृगु करे निवास।
सूत तेल तिल संग्रहो लाभ दूसरे मास॥ (भविष्य भारती)

के अनुसार उपरोक्त वस्तुओं में मंदी रहे। स्टॉक करके आगे बेचने से लाभ होगा। ता. 12 मार्च वक्री बुध रुई, सोना, चांदी, गुड़, चीनी, घी, चावल में तेजी कारक। ता. 15 मार्च को बुध का अस्त उपरोक्त में मंदी कारक तो गल्ला माल, किराना मूल पदार्थ तेज करेगा। ता. 22 मार्च गुरुवारी मावस वर्षा कारी गुड़, चीनी में अच्छी तेजी के झटके तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में मंदी का वातावरण बना

सकती है। चैत्र सुदी पक्ष-संवत् का शुक्र राजा, मंत्री भी शुक्र है। यह संवत् लोंद का होने से गुड़, चीनी, दालें, तिलहन पदार्थ प्रायः तेज बिकेंगे।

अन्न उपज वर्षा अधिक बढ़ै वृक्ष फल-फूल।
गऊ दुधारी प्रजा सुख, भृगु राजा अनुकूल॥
चैत सुदी पड़वा दिना सोम शुक्र गुरुवार।
बढ़ै धान्य धन सम्पदा सुखी रहै संसार॥ (भविष्य भारती)।

के अनुसार संवत् में प्रजा में सुख-शांति तथा धन-धान्य में बढ़ोतरी होगी। ता. 24 मार्च कृतिका का शुक्र सप्ताह दस दिन के अंदर धातुएं, रुई, तिलहन, प्रमुख वस्तुओं में मंदी कारक। ता. 28 मार्च सुदी 5 की वृद्धि उपरोक्त वस्तुओं में मंदी समर्थक है। ता. 30 मार्च रात को पूर्व में बुध का उदय धातुएं, रुई, चीनी, अनाज, दालों में आगे तेजी लायेगा।

अप्रैल-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. 3, 10, 17, 24, 28, 30 व मंदी की प्रमुख ता. 2, 5, 12, 13, 18, 19, 26 हैं। ता. 1 अप्रैल श्री रामनवमी है। तुलसी दास कृत रामायण का अखण्ड पाठ करने से धन-धान्य की वृद्धि तथा घर में सुख-शांति, व्यापार में वृद्धि होती है। ता. 4 अप्रैल बुध मार्गी-सभी प्रमुख वस्तुएं, तिलहन, गुड़, धातुएं आदि में प्रथम मंदी लाकर तेजी लायेगा। शुक्रवारी पूनम हस्त नक्षत्र युक्त होने से तिलहन, तेल, चना आदि अन्न और प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी ला सकता है। **वैशाख कृष्ण पक्ष**-मास में पांच शनिवार होने से प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में भारी उतार-चढ़ाव से अच्छी तेजी की संभावना रहेगी। ता. 7 रोहिणी शुक्र एक सप्ताह में चांदी, रुई में तेजी कारक तो सोना, तिलहन, घी, गुड़, तेल, नारियल, सुपारी में मंदी कारक है। ता. 9 बदी 3 विशाखा युक्त है। फसल पर खरीदी हुई वस्तुओं के संग्रह से आसोज मास तक बेचने में अच्छा लाभ होगा। ता. 13 अप्रैल मेषे संक्रांति 45 मुहूर्त्ती शनि दृष्ट गुरु के साथ राशि योग बनायेगा। संक्रांति महेन्द्र मण्डल में होने से सुख-सुभिक्ष, अनाजादि में मंदी कारक है। तथा एक मास के अंदर अग्निकांड की घटनाओं में काफी वृद्धि होगी।

नोमी रेवती रोहिणी मघा उत्तरा तीन।
शनि हो वैशाख में दुनिया दुखिया दीन॥ (भविष्य भारती)।

बदी 9 उषा. युक्त शनिवारी दुर्भिक्षकारी है। रात को मंगल मार्गी पिछली चलती लाईनों में परिवर्तन आयेगा। किराना सामान, रुई, सोना, चांदी में आगे भी मंदा आ सकता है। तथा प्रमुख शेयरों में एक मास करीब तेजी चल सकती है। ता. 20 अप्रैल बदी 14 शुक्रवारी है।

बदी चौदस वैशाख में गुरु अथवा भृगुवार।
उत्तम उपजेगी फसल मंदा चले बाजार॥ (भविष्य भारती)।

इस योग से बाजार में अच्छी मंदी संभव है। स्टॉक करना लाभदायक रहेगा। ता. 21 अप्रैल शनिवारी मावस को सूर्य गुरु चन्द्र योग है। यथा फल-

चन्द्र सूर्य गुरु तीन का एक ही राशि पर वास।
कपड़ा जौ अरु मूंग में लाभ सातवे मास॥ (भविष्य भारती)

तदानुसार स्टॉक करने से आगे अच्छा लाभ होगा। **वैशाख शुक्ल पक्ष**-ता. 22 अप्रैल सुदी एकम भरणी युक्त होने से पक्ष में गुड़, चीनी, पशु आहार में बाजार गिरेंगे। ता. 24 अप्रैल अक्षय 3 रोहिणी युक्त अनाज, मिर्च, किराना आदि में अच्छी तेजी समर्थक है। ता. 26 अप्रैल रेवती बुध एक सप्ताह में लाल वर्ण, तिलहन, दलहन, सोना, चांदी, धातुएं, गुड़ आदि रस पदार्थों में अच्छी मंदी के झटके लाता रहेगा। ता. 27 शुक्रवारी षष्ठी एक साल के अंदर रुई के आधे भाव कर देगी। तथा साथ-साथ पाट, बारदाना, वस्त्र, रेशम, कालीमिर्च पर भी प्रभाव हो सकता है। ता. 30 को शनि दृष्ट गुरु का अस्त होगा। एक मास के अंदर अनाचार की वृद्धि होगी। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं, रुई, कालीमिर्च, तिलहन, अनाज, दलहन आदि में मंदी का रुख है। परन्तु शनि की दृष्टि से प्रभाव विपरीत भी हो सकता है।

मई-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. 1, 11, 16, 18, 19, 22, 26, 28, 29, 31 एवं मंदी की प्रमुख ता. 3, 9, 14, 24 हैं। ता. 3 मई कृतिका का गुरु अनाज, रुई, कालीमिर्च, चावल, गुड़, खाण्ड, चीनी में एक सप्ताह घटाबढ़ी से एवरेज मंदी लायेगा। ता. 5 मई शनि दृष्ट मेषे बुध 10 दिन के अंदर चांदी, दालों, इन्दौर तेल, वायदा में काफी उतार-चढ़ाव होगा। रविवारी पूनम स्वाती युक्त होने से सोना, गुड़, चीनी में आगे दो तीन मासों के अंदर भारी तेजी ला सकती है। तथा ज्येष्ठ बदी पक्ष में गेहूं, चना, अनाजादि में अच्छी तेजी के झटके ला सकती है। **ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष**-मास में 5 सोमवार सुख-सुभिक्ष तथा प्रजा धन-धान्य से परिपूर्ण रहे। बदी पक्ष में प्रथम व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आकर मंदी होगी। बदी 1 रविवारी का क्षय मंदी कारक। ता. 10 मई को यदि दक्षिण की वायु चले तो घी, तेल, तिलहन का स्टॉक करके आसोज में बेचने से उत्तम लाभ होगा। आज रात को बुधास्त पूर्व में होगा। रुई, सोना, चांदी, किराना में प्रथम कुछ दिन तेजी का वातावरण बनाकर मंदी लायेगा। पू.फा. मंगल तेजी समर्थक है। गुड़, तिलहन, लालमिर्च भी तेज होंगे। 11 मई मिथुने शुक्र अनाज, चावलों में अच्छी तेजी के झटके, तो रुई, घी में अच्छी मंदी ला सकता है। ता. 14 वृष सोमवार संक्रांति 15 मुहूर्त्ती अच्छी वर्षाकारी है। तिलहन, दलहन, गुड़ आदि रस पदार्थ, रुई में अच्छी तेजी को सपोर्ट करती है। यदि आज वर्षा हो तो अनाज, किराना की प्रमुख वस्तुएं जो कि मंदे स्तर पर हो स्टॉक करके चार माह पश्चात बेचें, अच्छा लाभ होगा। ता. 15 मई रात को शुक्र वक्री होगा। वक्रकाल में शाक-सब्जियों, फल-फूल, टमाटर आदि की उत्तम पैदावार से इनमें काफी मंदी चल सकती है। रुई, सोना, चांदी, प्रमुख शेयर्स में अच्छी तेजी। ता. 17 को वृष राशि में गुरु के प्रवेश से रुई, चांदी, घी, अनाज के भाव तेज, तो आगे सावन में प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी होगी। ता. 19 मई वक्री अवस्था में शनि का कन्या राशि में प्रवेश से रुई, गुवार, दालों, चावल, धनियां, राई आदि में तेजी का संचार होगा। अच्छी तेजी भी ला सकता है। 20 मई रविवारी मावस अनाज, सरसों, खल, तेल आदि का स्टॉक करने की राय देती है।

मावस्या तिथि माघ या जेठ पड़े रविवार।
घोर युद्ध जन हानि से माचै हाहाकार॥ (भविष्य भारती),

के अनुसार सभी खाद्य वस्तुएं, अनाज, तिलहन, दालों में जबर्दस्त तेजी ला सकती है। **ज्येष्ठ सुदी पक्ष**-ग्रह योगों के अनुसार यह पक्ष काफी उतार-चढ़ाव वाला है। सावधानी से काम करें। ता. 24 सुदी 3 गुरुवारी आर्द्रा युक्त है।

दुतिया तृतीया जेठ सुदी, आवै आर्द्रा रिक्ष।
वर्षे जो कर्षे नमी दर्से दुख दुर्भिक्ष॥ (भविष्य भारती)

अतः आज वर्षा होना नेष्ट फलकारी है। ता. 26 मई सुदी 5 शनिवारी रुई, पाट, बारदाना, रेशम में अच्छी मंदी का वातावरण बना सकती है। सुदी 8 मंगलवारी रुई, चना में अच्छी तेजी के झटके लायेगी।

जून-मास में तेजी की प्रमुख ता. 6, 8, 11, 12, 13, 19, 26 और मंदी की प्रमुख ता. 1, 2, 16, 22, 23, 27, 28, 29 हैं। ता. 1 को वक्री शुक्रास्त होगा। प्रथम अनाज तेज, पीछे एक मास सस्ता रहे। वर्षा कारक तथा सोना में तेजी कारक, तो रुई, चांदी में काफी उतार-चढ़ाव। शुक्रास्त के समय यदि वर्षा अच्छी हो तो सभी वस्तुओं में मंदी की चाल बन जायेगी। ता. 4 जून शनि दृष्ट मिथुन राशि में बुध के प्रवेश से प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में उतार-चढ़ाव अधिक रहेगा। **आषाढ़ कृष्ण पक्ष**-मास में पांच मंगलवार तथा मंगलवारी पूनम व मावस शनि अंगारक योग से युक्त है। व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में जबरदस्त तेजी-मंदी से व्यापारी वर्ग परेशान रहेगा। रुई में अच्छी तेजी की संभावना। ता. 5 जून बदी 1 आषाढ़ में बुध का उदय प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में घोर तेजी की सूचना देता है। सोना, चांदी बेचकर अनाज, तिलहन, गुड़, चीनी, दालों का स्टॉक आगे उत्तम लाभ देगा। ता. 11 जून शुक्रोदय पूर्व तीन दिन के अंदर प्रमुख वस्तुओं में कोई तूफानी चाल। बदी 9 मंगलवारी प्रमुख वस्तुओं में तेजी का संचार करेगी। ता. 14 मिथुन संक्रांति गुरुवारी उत्तम वर्षा सूचक कार्तिक तथा रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, प्रमुख शेयरों में अच्छी तेजी परन्तु एक मास के अंदर सभी प्रमुख वस्तुओं में घटाबढ़ी से मंदी का प्रभाव रखती है। ता. 18 जून बदी 14 सोमवारी रोहिणी युक्त है।

साढ़ी चौदस हो कभी सोमवार समवेतू।
खेत न उपजे धान्य तृण गाय भैंस केहि हेतु॥
साढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग।
करफ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावै सब लोग॥ (भविष्य भारती)।

घी में मंदी समर्थक तो धान्य संग्रह से लाभ हो। प्रथम भाद्रपद कृष्ण

इनमें वर्षा न हो तो घोर तेजी चलेगी। ता. 21 सित. सुदी 6 शुक्रवारी

अनाज, चारा की उत्पत्ति कम। आषाढ़ शुक्ल पक्ष-पक्ष में सभी
व्यापारिक वस्तुओं मूल पदार्थ, सभी खाद्य पदार्थ, गल्ला माल, मसाले
आदि में जनरल लाईन तेज रहने की आशा है। ता. 21 जून सुदी 2 एवं
9 दोनों गुरुवारी हैं।

दोयज नोमी साढ़ सुदी सोम गुरु भृगुवार।
उत्तम वर्षा अन्न का मंदा रहे बाजार॥ (भविष्य भारती)

के अनुसार अच्छी वर्षा तथा भारी तेजी कारक है। ता. 26 जून
शनि मार्गी प्रमुख वस्तुओं में पिछली चलती लाईनें पलट देगा।

वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय।
चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय॥ (भविष्य भारती)।

ता. 28 शुक्र मार्गी से व्यापारिक वस्तुओं में उतार-चढ़ाव। 30
जून देवशयनी एकादशी शनिवारी सभी खाद्य वस्तुओं में एक मास के
अंदर तेजी का विचित्र चमत्कार दिखा देगी। सावधानी से काम करें।

जूलाई-माह में तेजी की प्रमुख ता. 2, 4, 10, 14, 17, 20, 24,
25, 28, 31 व मंदी की ता. 5, 12, 23, 26, 27 हैं। ता. 3 मंगलवारी
पूनम मूल युक्त है तथा सुदी 14 का क्षय प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी
समर्थक है।

पडवा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करे तेजी हो जब छीन॥ (भविष्य भारती)।

श्रावण कृष्ण पक्ष-मास में 5 बुध+गुरुवार कभी-कभी बाजारों
में भारी तेजी का वातावरण बना देते हैं। ता. 4 बदी 1 बुधवारी पक्ष में
आलू, प्याज, साग, सब्जियां, घी, तेल, मसाले, खाद्य पदार्थों में तेजी
को सपोर्ट करती है। ता. 11 जुलाई हस्ते भौम से गुड़, दालें, अनाज,
कालीमिर्च, रुई, पाट, रेशम, तिलहन, सोना, चांदी में तीन सप्ताह के
अंदर अच्छी तेजी लायेगा। सभी मंदी वस्तुएं खरीदो। 15 जुलाई को
बुध वक्री रस पदार्थ, गुड़, धातुएं, प्रमुख शेयर्स में तेजी कारक है।
मूल पदार्थ, प्याज, घी, गेहूं, चांदी में भारी तेजी/मंदी दिखायेगा। ता.
18 बदी 14 आर्द्रा युक्त है। चौदश आर्द्रा अन्न को संग्रह करो जरूर,
आगे मंदी में अनाज का स्टॉक लाभदायक रहेगा। गुरुवारी मावस
पुनर्वसु युक्त है। गुड़, चांदी में तेजी के झटके लायेगी। **श्रावण
शुक्ल पक्ष**-ता. 21 जुलाई सुदी 2 का चन्द्रदर्शन अनाजों में तेजी
कारक है। ता. 25 सुदी 6 का क्षय रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च,
प्रमुख शेयर्स आदि में एक मास जनरल लाईन तेज रहे। ता. 28 जुलाई
सुदी 10 शनिवारी है, आगे सिंह की संक्रांति काल में उपज को श्रेष्ठ
बनायेगी। ता. 31 जुलाई मिथुने शुक्र गेहूं, जौ, चना, चावलों में दो
सप्ताह के अंदर अच्छी तेजी, तो रुई, घी, तिलहन पदार्थ, अरहर,
गुवार में मंदी कारक परन्तु शनि की दृष्टि से इन वस्तुओं में तेजी भी
चल सकती है। अतः रुख देखकर काम करें।

अगस्त-मास में तेजी की प्रमुख ता. 4, 6, 7, 8, 9, 16, 22,
23, 29 व मंदी की प्रमुख ता. 10, 20, 21, 27, 30 हैं। ता. 1 अगस्त
तुला में शनि का प्रवेश तिलहन पदार्थों में तेजी की लम्बी लाईन। रुई,
घी में मंदी समर्थक तो धान्य संग्रह से लाभ हो। **प्रथम भाद्रपद कृष्ण
पक्ष**-ता. 3 अगस्त बदी 1 चित्रा मंगल तिलहन, दलहन, धातुएं,
गुवार, गेहूं, चना, चावल में तेजी कारक है। ता. 8 अगस्त मार्गी बुध
घटाबढ़ी कारक भी है तो आर्द्रा शुक्र 10 दिन में वर्षा कारक तथा गेहूं
आदि अनाजों, रुई, कालीमिर्च, गुड़, दालों में अचानक मंदी का
वातावरण बना सकता है। ता. 14 तुला में मंगल का प्रवेश सभी प्रमुख
वस्तुओं में अच्छी तेजी का संचार करेगा। **शुक्र क्षेत्र में भौम हो
महंगाई दो मास। प्रथम भाद्रपद शुक्ल पक्ष**-सुदी एकम शनिवारी
आगे प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी के झटके लायेगी। ता.
23 सुदी 6 गुरुवारी स्वाती युक्त पृथ्वी को उपज से परिपूर्ण करेगी।
तथा दशमी रविवारी योग से पक्ष में रुई, गुड़, रस पदार्थ, घी आदि में
तेजी लायेगी। ता. 28 अगस्त सिंहे बुध लाल वर्ण की वस्तुएं, धातुएं
तेज तो प्रमुख शेयरों के भावों में गिरावट लायेगा। ता. 31 शुक्रवारी
पूनम अरहर, चांदी आदि में अच्छी गिरावट लायेगी।

भादव शुक्ला पूर्णिमा बादल बिजली गाज।
बादल में चन्दा उदय बेचो शीघ्र अनाज॥ (भविष्य भारती)।

सितंबर-द्वितीय भाद्रपद कृष्ण पक्ष-इस संवत् में दो भाद्रपद
हैं। यथा-

दो आश्विन दो भादव दो आषाढ़ के माह।
सोना, चांदी बेचकर नाज वे साहो साह॥ (भविष्य भारती)।

अर्थात् अनाज, चावल आदि का व्यापार उत्तम लाभ देगा। वैसे
तो लोंद के संवत् में गुड़, चीनी, मीठा, दालें, अनाज, तिलहन,
किराना प्रायः तेज बिकते हैं। मास में 5 शनि+रविवार हैं। मावस को
कन्या संक्रांति रविवारी भी खर्पर योग युक्त है। ग्रह योगानुसार स्थूल
रूप से यह मास अच्छी तेजी का प्रतीत होता है। ता. 4 सितं. बदी 4
अंगारक की चतुर्थी सभी प्रमुख वस्तुओं, लाल वर्ण में अच्छी तेजी
कारक है। पुष्ये शुक्र 10 दिन के अंदर सरकार द्वारा छापामारी,
व्यापारियों पर संकट से प्रमुख बाजारों में मंदी का जोश भर जायेगा।
ता. 11 उ.फा. बुध एक सप्ताह के अंदर रुई, कालीमिर्च, सोना,
तिलहन में मंदी कारक तो चांदी में अच्छी मंदी के झटके, तो दालों,
अनाजों में उतार-चढाव रहेगा। ता. 13 सितं. कन्या बुध से सोना,
चना, गुड़, हल्दी, अनाज, रुई, चांदी में घटाबढ़ी से गुरु की दृष्टि होने
से गिरावट आ सकती है। ता. 16 सितं. रविवारी मावस- **घी महंगा
रविवार हो भादव मावस मेल।** कन्या संक्रांति खर्पर योग से प्रमुख
व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी कारक है। श्लेषा शुक्र तिलहन में
अच्छी मंदी कारक परन्तु संक्रांति तेजी समर्थक होने से घटबढ़ चलेगी।
चना, अनाजों में आगे अच्छी तेजी संभव होगी। **द्वितीय भाद्रपद
शुक्ल पक्ष**-ता. 17 सितं. प्रतिपदा का क्षय एवं चन्द्रदर्शन तेजी कारक
है। हस्त में चन्द्रदर्शन होने से अनाज सस्ता हो तो स्टॉक करके तीसरे
माह बेचने से लाभ होगा। ता. 18 सुदी 3 को चित्रा सुदी 4 को स्वाती
एवं सुदी 5 की विशाखा में वर्षा होने पर बाजारों में मंदी चलेगी। यदि
इनमें वर्षा न हो तो घोर तेजी चलेगी। ता. 21 सितं. सुदी 6 शुक्रवारी
एक मास में रुई, पाट, बारदाना, कालीमिर्च, प्रमुख शेयरों में धीरे-
धीरे गिरावट लायेगी। ता. 28 सितं. सिंहे शुक्र से लाल वर्ण, घी, गुड़,
रसादि पदार्थों में तीन सप्ताह के अंदर अच्छी तेजी कारक है। वृश्चिक
राशि में मंगल का प्रवेश होकर राहु के साथ राशि योग बनाएगा।

मंगल राहु साथ में इक नखत इक रास।
अनावृष्टि दुर्भिक्ष दुख हो खेती का नाश॥ (भविष्य भारती)।

फसलों को नुकसान तथा दुर्भिक्षकारी है। लालवर्ण आदि अन्य
प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी को सपोर्ट करता है। ता. 30 रविवारी
पूनम रुई, कालीमिर्च, प्रमुख शेयरों में अच्छी तेजी के झटके 5 दिन
के अंतर्गत लायेगी।

अक्टूबर-आश्विन कृष्ण पक्ष-मास में अनाजादि मंदे स्तर की
वस्तुएं खरीदने से आगे लाभ होगा। ता. 1 अक्टू. बदी 1 तुला राशि में
बुध का प्रवेश होकर शनि के साथ मिटिंग करेगा। प्रमुख व्यापारिक
वस्तुओं में तेजी के बिल पास होंगे। ता. 4 मंगल राहु दृष्ट गुरु वक्री
होगा। यदि बादल वर्षा करे तो सभी वस्तुओं में अच्छी मंदी एवं वर्षा
न हो तो रुई, घी, तेल, तिलहन तेज। हल्दी में भारी उतार-चढ़ाव।
सर्व अनाज संग्रह करने से आगे भारी लाभ की आशा। ता. 5 शनि
अस्त से रेशम, कालीमिर्च, रुई, सरसों तेज। दालें, तिलहन, धातुएं,
अनाज, गुड़, खाण्ड, किराना में मंदी कारक। परन्तु स्वाती का बुध
प्रथम एक सप्ताह अच्छी मंदी लाकर फिर तेजी ला सकता है। ता. 7
बुध का उदय धातुएं, तिलहन, गुड़, दालें, अनाज, मक्का में अच्छा
मंदा तो रुई तेज करेगा।

आश्विन में बुध का उदय महंगी करे कपास।
तथा आश्विन में बुध का उदय होवे सुखद सुकाल।

अर्थात् सुभिक्षकारी है। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का
संचार या मंदी का दौर भी चल सकता है। ता. 10 अक्टू. स्वाती शनि
से सर्व अनाज मंदे। रुई, तिलहन में तेजी। ता. 13 शनिवारी त्रयोदशी
को सूर्य अपने नक्षत्रों पर चलने से तेजी का रुख रहे। यथा-

आश्विन तेरस शनि दिना सुर नखत पर सूर।
अन्न हीन भूमि रहे मंदी समझो दूर॥

ता. 15 अक्टू. सोमवती मावस मंदी कारक भी है।

सोमवती मावस पड़े कभी जू आश्विन मास।
अन्न खाण्ड गुड़ तेल में मंदी का आभास॥ (भविष्य भारती)।

आश्विन शुक्ल पक्ष-ता. 16 अक्टू. सुदी 1 मंगलवारी शनि
अंगारक योग युक्त है। इससे समय काफी खराब रहेगा। तुला राशि में
सूर्य का प्रवेश करके शनि-बुध के साथ मिटिंग करेगा। अनाजों तथा
प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के बिल पास होंगे।

शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज।
जौ गेहूं चावल चना ज्वार बाजरा तेज॥ (भविष्य भारती)।

ता. 19 अक्टू. सुदी 5 शुक्रवारी, सुदी 4 का क्षय होगा।

किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥ (भविष्य भारती)।

स्थूल रूप से पक्ष में दालें, अनाज, तिलहन तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी चलने की आशा है। ता. 23 सुदी 9 मंगलवारी है।

नवमी मंगलवार जो शुक्ला आश्विन मास।
मूंग मोठ चना उड़द संग्रह करो कपास॥ (भविष्य भारती)।

उपरोक्त वस्तुएं स्टॉक करने की राय देता है। कन्या शुक्र एक मास अंदर प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान, शाल की लकड़ी में विशेष तेजी आयेगी। प्रमुख शेयरों, अनाजों, खल तेजी में रहे। रुई, धातुएं, गुड़, चीनी में भारी उतार-चढ़ाव रहेगा। ता. 29 अक्टू. सोमवती पूनम सुख-सुभिक्षकारी, व्यापारिक वस्तुओं में प्रथम मंदी के झटके आकर तेजी होगी।

आश्विन पूनम को अगर बादल बिजली गाज।
नफा मिलेगा चैत्र में संग्रह करो अनाज॥ (भविष्य भारती)।

कार्तिक कृष्ण पक्ष- इस मास में 5 मंगलवार तथा 5 बुधवार हैं। मास में सरसों, तिलहन पदार्थ, दालें, अनाज, पशु आहार, रस पदार्थ, घी, गुड़ आदि में अधिकतर तेजी का वातावरण रहने की आशा है। मास में कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक कारणों से जन-धन की हानि, महाग्निकांड, फसलों को नुकसान आदि होने का योग है। ता. 31 हस्ते शुक्र 13 दिन के अंदर जो वस्तुएं मंदी हो खरीदें एवं तेज हो तो बेचें, लाभ होगा।

नवम्बर-ता. 4 नवं. बदी 5 आर्द्रा युक्त से पशुओं के चारे में अच्छी तेजी का योग। ता. 7 नवं. बुध वक्री होगा। अतः सोना, चांदी, रुई, अनाज, रस पदार्थ, घी, गुड़, चीनी आदि में अच्छी तेजी का झटका आकर आगे मंदी आयेगी। ता. 8 बुधास्त पश्चिम तथा शनि का उदय पूर्व में होने से सभी प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तीन दिन काफी उतार-चढ़ाव रहेगा। ता. 9 धनु मंगल मूल पदार्थ, तिलहन, चांदी, बिनोला, कालीमिर्च, लौंग, गुड़, हल्दी, सौंठ, अदरख, लहसुन आदि में तेजी लायेगा। ता. 13 नवं. शुभ दीपावली मंगलवारी स्वाती युक्त है। **मंगलवारी पड़े दीवाली हंसे किसान रोवे व्यापारी।** अतः स्टॉकिस्टों को नुकसान। चना आदि में यहां दीवाली तक ऊंचे भाव, तो आगे फागुन तक भयंकर मंदी। दीवाली से फिलहाल दो-तीन सप्ताह बाजार तेज रहने की आशा है। **कार्तिक सुदी पक्ष-**सुदी एकम बुधवारी से पक्ष में आलू आदि मूल पदार्थ, तिलहन एवं प्रमुख वस्तुओं में बाजार तेज चलने की आशा है।

पड़वा आठै पूर्णिमा जो बुधवारी आव।
सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥ (भविष्य भारती)।

अतः पक्ष में बाजार तेज रहेगा। सोना, चांदी एक सप्ताह तेज रहकर बाद में मंदी की लम्बी लाईन भी चल सकती है। ता. 15 नवं. वृश्चिक संक्रांति गुरुवारी-**गुरु च शुक्रो तिल तेल सूत्र कपास वस्त्रादि महर्घता स्यात।** अर्थात् तिल, तेल, तिलहन, रुई, कपास, लाल वर्ण आदि तेज हो। ता. 18 सुदी 5 रविवारी एक मास के अंदर तिलहन, दाल, अनाज, गुड़, रुई, कालीमिर्च में भारी तेजी। तो अनुराधा सूर्य धातुएं मंदी करेगा। ता. 22 बुध का उदय तेजी समर्थक है। यथा- **शुक्ल पक्ष में उदय हो तो तिल जौ नाश विचार।** ता. 27 नवं. बुध मार्गी से प्रमुख वस्तुओं में मंदा अथवा चलती लाईन पलट देगा। बुधवारी पूनम कृतिका युक्त होने से शीत कालीन उपज को श्रेष्ठ बनायेगी। **मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-**मास में दोनों पक्षों की एकादशी रविवारी होने से रुई, कपास का स्टॉक लाभदायक। मावस के आसपास पांच ग्रहों का योग मास में मंदी में अनाज स्टॉक करना लाभदायक रहेगा।

दिसंबर-बदी 3 आर्द्रा युक्त होने से अनाजों में मंदी कारक है।

मंगशिर लागत तीज को पुनर्वसु आय।
राजा प्रजा सुखी रहे मंदा धान्य बिकाय॥ (भविष्य भारती)।

ता. 3 दिसं. विशाखा शुक्र एक सप्ताह के अंदर किसी नामी सटोरियों पर घोर संकट, छापेमारी हो। रुई, चांदी, चावल, सोना, सरसों आदि में मंदी समर्थक है। ता. 11 दिसं. वृश्चिक शुक्र दो सप्ताह के अंदर प्रमुख वस्तुओं में प्रथम मंदी लाकर तेजी लायेगा। रुई, कपास में भारी उतार-चढ़ाव होगा। ता. 13 गुरुवारी मावस वर्षा कारक है।

सूरज बादल में उगे मावस मंगशिर मास।
अन्न उपज कमती रहे महंगा चारा घास॥ (भविष्य भारती)।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-पक्ष में तिथि क्षय होकर तिथि वृद्धि हुई है। सर्व प्रमुख वस्तुओं, रुई, सोना, चांदी आदि में प्रथम मंदी आकर पक्ष के अंत में अच्छी तेजी की आशा है। ता. 14 दिसं. प्रतिपदा शुक्रवारी एवं चन्द्रदर्शन तीन सप्ताह के अंदर रुई, कपास, कालीमिर्च, प्रमुख शेयरों में अचानक भारी तेजी का वातावरण बन सकता है। ता. 15 धनु संक्रांति शनिवारी तिलहन, तेलों, खल, बिनौला, चना, गुवार, गुड़, खाण्ड आदि में आगे भारी तेजी ला सकती है। इस संक्रांति काल में यदि इत्र, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों को खरीदकर आगे बेचने से उत्तम लाभ की आशा रहेगी। ता. 18 दिसं. मकरे मंगल सावणी फसल का माल मंदा करेगा। तथा रुई, पाट, कालीमिर्च में अचानक मंदी का वातावरण बनाकर अच्छी तेजी के झटके लायेगा। लालमिर्च, तिलहन भी तेज होंगे। ता. 23 दिसं. तुला राशि में राहु का प्रवेश होकर शनि के साथ राशि योग बनायेगा। सभी प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं, अनाजादि में भारी तेजी कारक है।

शनि राहु भेला रहे राशि कोई होय।
अन्न तो महंगा होयगा निश्चय लियो जोय॥
तुला राशि गत राहु हो क्रूर ग्रहों के साथ।
तो अकाल के कारणे उपज लगे नहीं हाथ॥ (भविष्य भारती)।

दोनों का राशि योग महा दुर्भिक्षकारी है। ता. 27 दिसं. बुधास्त पूर्व सोना, चांदी, रुई में अच्छी तेजी कारक है। तथा अन्य प्रमुख वस्तुओं में भी घटाबढ़ी से तेजी का संचार होगा। ता. 31 दिसं. श्रवणे मंगल अनाजादि प्रमुख वस्तुओं में तेजी समर्थक है।

श्रवण नखत पर कोई ग्रह हो क्रूर।
अन्न भाव महंगा रहे गेहूं तेज जरूर॥ (भविष्य भारती)।

इस मास की तेजी की प्रमुख ता. 1, 3, 4, 11, 16, 19, 24, 28, 29, 31 तथा मंदी की प्रमुख ता. 6, 8, 17, 20, 26 दिसं. हैं।

आवश्यक सूचना

यह लेख ग्रहों की विभिन्न स्थिति, राशि परिवर्तन, दृष्टि संबंध, वक्री-मार्गी, उदयास्त, नक्षत्र परिवर्तन, केन्द्र, त्रिकोण, वार, तिथि योग आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों को आधार बना कर लिखा गया है। होना या न होना ईश्वर के अधीन है। अतः लाभ-हानि में लेखक अथवा प्रकाशक की किसी भी स्टेज पर कोई जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा एक योग मंदी का हो तो संदेह में न पड़ें। बाजार का रुख देखते हुए काम करें।

हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर अनेक व्यापारियों ने हमें पत्र लिखे हैं। हम उनके आभारी हैं। यह लेख सूक्ष्म रूप में लिखा गया है। पूर्ण विवरण सिलसिले वार जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक **भविष्य फल प्रकाश** सन् 2012 ई. मंगाकर लाभ उठायें। पुस्तक में गुवार, गेहूं, चना, जौ, मक्का, मूंग, मौंठ, मटर, अरहर, उड़द आदि दालें, गुड़, चीनी, घी, तेल, सरसों, मूंगफली, अरण्डी, खोपरा आदि तिलहन पदार्थों, रुई, सूत, बारदाना, पाट, जूट, सोना, चांदी धातुएं, लाख, चपड़ा, नमक, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, जीरा, धनियां, कालीमिर्च, लालमिर्च, इलायची, अजवायन आदि किराना सामान, शेयर्स आदि की दैनिक लाईनें, माल खरीदने बेचने की लाभकारी तारीखें। स्टॉक करने के उचित मौके, मासिक विश्लेषण और लाभकारी चांस भी लिखे गये हैं। मंगाकर लाभ उठायें। मूल्य एक प्रति 250/-, डाक खर्च 25/-, टोटल 275/-रु0 का मनीआर्डर भेजकर मंगा लें। कार्यालय द्वारा उपरोक्त सभी प्रमुख वस्तुओं के स्पेशल चांस विशेष तौर पर अलग-अलग बनाये जाते हैं। एक वस्तु का एक वर्ष का चार्ज 2500/-रु0 तथा 6 मास का 1500/-रु0 है। सोना-चांदी एवं इन्दौर तेल, वायदा की दैनिक रिपोर्ट टाईम सहित बनाई जाती है। एक वर्ष का चार्ज 7500/-रु0 तथा तीन मास का चार्ज 2000/-रु0 तथा मासिक चार्ज 750/-रु0 है। शेयर्स मार्केट की दैनिक टाईम सहित रिपोर्ट बनाई जाती है। एक वर्ष का चार्ज 6000/-रु0, तीन मास का चार्ज 1800/-रु0, तथा मासिक चार्ज 600/-रु0 है। मंगाकर लाभ उठायें। परीक्षा प्रार्थनीय हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें। हमारा पता है:-

लेखक-राम अवतार गुप्ता "व्यापार भूषण"
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड
पो0 व जिला-रेवाड़ी 123401 (हरियाणा)
मो.-094161 10996, फोन-01274-223947
Web : www.commodityastro.in

भारतीय मानसून, प्राकृतिक वातावरण व आकाशीय लक्षण

जनवरी-वर्ष के प्रारंभ में शुक्र श्रवण नक्षत्र में, बुध ज्येष्ठा में, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में एक साथ विचरण करेंगे। जिससे जन-जीवन कष्ट अनुभव करेंगे। ता. 11 को सूर्य नक्षत्र परिवर्तन कर उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 14 को सूर्य उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मकर राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 18 को बुध पूर्व में अस्त होने से शीत लहर का प्रकोप जारी रहेगा। जिससे आलू, लहसुन, प्याज, अदरख अन्य खड़ी फसलों को ठंड से हानि। ता. 9, 10, 11, 12, 15 को कहीं-कहीं व्यापक वर्षा हो सकती है। ता. 21, 23, 25, 28, 29 को बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा दिल्ली, पंजाब के कुछ भागों में छिटपुट वर्षा हो सकती है।

फरवरी-मासारंभ में ता. 1 को बुध श्रवण में, ता. 3 को सूर्य, ता. 7 को शनि वक्री होगा। ता. 10 को सूर्य धनिष्ठा में तथा ता. 19 को शतभिषा नक्षत्र में विचरण करने से ओला, पाला, शीत लहर का प्रकोप क्रमशः जारी रहेगा। वायु वेग अधिक। ता. 2, 4, 7, 8, 10, 11, 13 को मौसम परिवर्तित होने से साधारण वर्षा कुछ प्रांतों में संभव है। शनि वक्री होने से प्राकृतिक प्रकोप से जन-जीवन को हानि तथा पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात जारी रहेगा। ता. 15, 16, 18, 21, 22, 26, 27 को दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, बिहार, बंगाल तथा दक्षिणी भारत में वर्षा से कृषि को लाभ पहुंच सकता है।

मार्च-ता. 4 को सूर्य पूर्वा भाद्रपद में, ता. 17 को उत्तरा भाद्रपद में तथा 31 को रेवती में विचरण करने से मौसम में व्यतिक्रम जारी रहेगा। गुजरात, हमिाचल प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के कुछ भू-भागों में व्यापक वर्षा से कृषि जिन्सों की हानि हो सकती है। गर्मी और सर्दी का मिला-जुला मौसम होने से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ेगा। ता. 8, 9, 10, 13, 15 को मौसम परिवर्तित रहेगा। मीन की सूर्य संक्रांति महेन्द्र मण्डल में पड़ रही है। अतः ता. 14 के बाद मौसम सुहाना होगा। दिन के तापमान में धीरे-धीरे गर्मी का एहसास होगा। परन्तु रात्रि में अभी भी ठंड जारी रहेगी। कुछ प्रांतों में 23, 24, 28 को बूंदा-बांदी हो सकती है।

अप्रैल-मासारंभ में सूर्य रेवती नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 13 को अश्विनी नक्षत्र में तथा ता. 27 को भरणी नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 6 को बुध मार्गी होगा। फलतः मौसम में गर्मी बढ़नी शुरू हो जायेगी। दक्षिणी एवं पूर्वी दक्षिणी भारत में कहीं-कहीं वर्षा से किसानों को राहत मिलेगी। गर्मी का प्रकोप बढ़ता जायेगा। तेज धूप, लू से जन-जीवन परेशान रहेगा। ता. 13 को सूर्य संक्रांति मेष राशि में होने से पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों में हल्की से भारी वर्षा, आंधी, तूफान से जन-धन की हानि हो सकती है। ता. 14, 17, 18, 21, 23, 25, 27, 29 को मौसम में परिवर्तन दीखेगा।

मई-मासारंभ में सूर्य भरणी नक्षत्र में विचरण करते हुए, ता. 10 को कृतिका में, ता. 24 को रोहणी नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 2 को शुक्र वक्री होगा, फलतः गर्मी, लू का प्रकोप तेजी से बढ़ता रहेगा। रसकस पदार्थ तथा सफेद जिन्सों के उत्पादन में वृद्धि। मृत्यु दर का ग्राफ आश्चर्य जनक तरीकों से ऊपर उठना चाहिए। विषैले सर्प, जीव-जन्तुओं की वृद्धि होने से आमजनों में भय का संचार। ता. 2, 9, 10, 11 को मौसम में गर्मी, वायु वेग बढ़ेगा। ता. 14 को वृष की सूर्य संक्रांति चन्द्र मण्डल में पड़ने से किसी प्रांतों में छिटपुट वर्षा या बदली दिखेगी। ता. 14, 15, 20, 21, 23, 26, 29, 31 को मौसम परिवर्तित रहेगा। मौसम की अनुकूलता से कृषक वर्ग खुश रहेंगे।

जून-मासारंभ में सूर्य रोहिणी नक्षत्र में, ता. 7 को मृगशिरा में, ता. 21 को आर्द्रा में विचरण करेंगे। ता. 3 को शुक्र अस्त होंगे, ता. 7 को बुध उदय होगा, ता. 12 को शुक्र उदय से उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में तीव्र शीत लहर से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। दक्षिण भारत में मानसून में गतिरोध, परन्तु उत्तर भारत के प्रांतों में ता. 12 के बाद छिटपुट वर्षा। ता. 4, 6, 8, 9, 12 को साधारण से भारी वर्षा संभावित है। कुछ प्रांतों में तेज हवा, लू के कारण जन-जीवन अस्त-व्यस्त। आकाश में बादल होते हुए भी वर्षा का अभाव रहेगा। ता. 14 को मिथुन संक्रांति अग्नि मण्डल में पड़ने से किसान मौसम के रुख से अचानक नाखुश हो सकते हैं। ता. 6, 18, 19, 21, 22, 24, 25, 27, 30 को मौसम परिवर्तित रहेगा। कुछ प्रांतों में अतिवृष्टि और अनावृष्टि से किसान चिन्तित हो सकते हैं।

जुलाई-सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में विचरण कर रहे हैं। ता. 5 को पुनर्वसु में, ता. 19 को पुष्य नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 12 को बुध वक्री होगा जिससे मानसून की स्थिति अच्छी रहेगी। लगभग सभी प्रांतों में व्यापक वर्षा संभावित है। कुछ प्रांतों में अतिवृष्टि से जन-धन की हानि। बुध वक्री होने के बाद वर्षा में अचानक गतिरोध, ता. 16 को कर्क की सूर्य संक्रांति वायुमण्डल में पड़ने से वर्षा के क्रम को और बाधित कर सकती है। ता. 1, 5, 6, 7, 8, 11 को अनेक स्थानों में व्यापक वर्षा संभावित है। परन्तु ता. 12 के बाद कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से कृषि जिन्सों के उत्पादन पर भी कुप्रभाव पड़ेगा। गर्मी के प्रकोप से जन-जीवन, पशु-पक्षी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ सकता है।

अगस्त-मासारंभ में ता. 2 को सूर्य अश्लेषा में विचरण करते हुए ता. 16 को मघा में, ता. 30 को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 2 को शनि तुला में, ता. 6 को बुध पूर्व में उदय होगा। ता. 8 को बुध मार्गी होगा। फलतः मासारंभ में वर्षा का क्रम अव्यवस्थित रहेगा। कहीं-कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से किसान चिन्तित रहेंगे। वायु प्रकोप के कारण मेघों का संचरण अनियंत्रित रहेगा। ता. 1, 2, 3, 5, 9 को अनेक स्थानों पर व्यापक वर्षा, ता. 8 को मंगल मार्गी होने से वर्षा में गतिरोध, ता. 16 को सिंह सूर्य संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ने से मानसून की सक्रियता को कमजोरी की ओर संकेत कर रही है। ता. 20, 21, 24, 26, 30 को मौसम परिवर्तित। माह में ग्रहों की आपसी तालमेल नहीं होने से प्राकृतिक उत्पात समुद्रतटीय प्रदेशों में जन-धन की हानि हो सकती है।

सितम्बर-मासारंभ में सूर्य पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में विचरण कर रहे हैं। ता. 13 को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र तथा ता. 26 को हस्त नक्षत्र में विचरण करेंगे। ता. 1 को शुक्र जलीय राशि कर्क में विचरण करने से मासारंभ में लगभग सभी प्रांतों में व्यापक वर्षा से जन-जीवन राहत महसूस करेंगे। परन्तु रोग-व्याधि से जन-जीवन कष्ट भय रहेगा। ता. 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 12 को सभी भू-भागों में व्यापक वर्षा संभावित है। ता. 12 के बाद धीरे-धीरे वर्षा का क्रम कमजोर पड़ने लगेगा। मेघ के संचरण जारी रहते हुए भी वर्षा नहीं होगी। ता. 16 को सूर्य कन्या की संक्रांति में प्रवेश करने से वरुण मण्डल अशांत रहेगा। ता. 13 से 25 तक वर्षा में गतिरोध बना रहेगा। ता. 26 को अचानक वायुवेग के साथ जोर-शोर से भाग्यशाली प्रदेशों में वर्षा होने से कृषक वर्ग प्रसन्न रहेंगे। दिन की अपेक्षा रात के तापमान में धीरे-धीरे गिरावट दीखेगी। ता. 26, 27, 28, 29, 30 को सामान्य से भारी वर्षा का क्रम जारी रहेगा।

अक्टूबर-मासारंभ में सूर्य हस्त नक्षत्र में विचरण करते हुए ता. 10 को चित्रा में, ता. 23 को स्वाती में विचरण करेंगे। ता. 21 को बुध तुला में, ता. 5 को गुरु वक्री होंगे। इस वर्ष लौटते मानसून से सामान्य से भारी वर्षा की संभावना। पूर्व-दक्षिण समुद्रतटीय क्षेत्रों में तूफान, वर्षा, वायुवेग का उपद्रव संभावित है। उत्तर भारत में वर्षा का क्रम ता. 7 के बाद लगभग समाप्ति की ओर रहना चाहिए। धीरे-धीरे आसमान साफ होता जाएगा। ता. 1, 2, 3, 4, 5, 6 को मौसम में परिवर्तन दीखेगा। जिससे दलहन, तेलहन के उत्पादन के लिए मौसम सुहाना रहेगा। गमग्वार तथा हल्दी का उत्पादन कुछ प्रभावित हो सकता है। ता. 16 को तुला की सूर्य संक्रांति चन्द्रमण्डल में पड़ रही है। जो शुभ है। मौसम का मिजाज ठीक रहेगा। उत्तर भारत में सर्द हवाओं का जोर बनने से ठंड का प्रभाव रात्रि में जारी रहेगा। ता. 17, 19, 21, 24, 29 को मौसम में परिवर्तन दीखेगा।

नवम्बर-मासारंभ में सूर्य स्वाती नक्षत्र में, ता. 6 को विशाखा में, ता. 19 को अनुराधा में विचरण करेंगे। ता. 5 को बुध वक्री होने से मास के प्रारंभ में पर्वतीय क्षेत्रों में अचानक तापमान में भारी गिरावट से ठंड बढ़ जायेगी। उत्तर भारत के सभी भू-भागों में गुलाबी ठंड बढ़ने से मैदानी भू-भागों में वर्षा हो सकती है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से मौसम अनुकूल रहेगा। ता. 1, 2, 4, 6, 7, 9, 11 को मौसम परिवर्तित रहेगा। ता. 15 को सूर्य वृश्चिक संक्रांति अग्निमण्डल में पड़ रही है, जो अशुभ है। मौसम के मिजाज की बेरुखी से सामान्य जन प्रभावित होंगे। रोगों का प्रकोप बढ़ेगा। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय जगत में प्राकृतिक उत्पात से व्यापक जन-धन की हानि हो सकती है। ईश्वर सबकी रक्षा करें। ता. 16, 18, 19, 25, 29 को उत्तर भारत में मौसम में अप्रत्याशित बदलाव रहेगा।

दिसम्बर-मासारंभ में सूर्य अनुराधा में विचरण करते हुए, ता. 2 को ज्येष्ठा में, ता. 15 को मूल नक्षत्र में तथा ता. 28 को पू.षा. नक्षत्र में विचरण से तापमान में आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ नीचे आना चाहिए। इससे पशु-पक्षी तथा जन-जीवन काफी कष्ट अनुभव करेंगे। मृत्यु दर का ग्राफ काफी ऊपर उठेगा। बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान तथा तराई वाले क्षेत्रों में व्यापक ठंड जारी रहेगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात, भू-स्खलन आदि से व्यापक जन-धन की हानि। ता. 1, 2, 5, 7, 9, 13 को अनेक भू-भागों में ओला, पाला, बादल वृष्टि से ठंड दर का ग्राफ नीचे आ सकता है। ता. 15 को सूर्य धनु की संक्रांति वरुण मण्डल में पड़ने से शीत कालीन वर्षा में वृद्धि है। आलू, प्याज, लहसुन, अदरख, तेलहन, दलहन की फसलों, किराना जिन्सों के उत्पादन प्रभावित होने की आशंका।

लेखक : पं. टुनटुन शास्त्री

व्यापार भविष्य दर्शन एवं कमोडिटी ट्रेडिंग विवरण

जनवरी-मासारंभ में सोना, कॉपर, जिंक, लैड, धनियां, अजवायन, लालमिर्च, कालीमिर्च में सामान्य सुधार की संभावना बनी रह सकती है। ता. 4 को बुध धनु राशि में प्रवेश करने से ता. 8 तक रुई, कपास, कॉटन, बारदाना, सिल्वर, चावल, चीनी में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 9 को शुक्र कुंभ में प्रवेश से ता. 13 तक रुई, कपास, सिल्वर, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा तथा श्वेत वस्तुओं में व्यापक मंदी। ता. 14 को सूर्य मकर राशि में प्रवेश से घृत, डिब्बा बंद तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास में घटाबढ़ी अधिक चलकर स्थिरता बनती हैं। गेहूं आदि अनाज, बारदाना में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। जबकि कालीमिर्च, लालमिर्च, जीरा, धनियां, अजवायन, हल्दी में कुछ तेजी बन सकती है। धातुओं में स्थिरता नहीं बन पायेगी। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. 18 को बुध पूर्व में अस्त होने से एक सप्ताह के अंदर अनाज, घृत में व्यापक मंदी, जबकि रुई, कपास, सोना, कॉपर तथा किराना जिन्सों में मांग निकलने से तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 23 को मंगल वक्री होने से सोना, चांदी, कॉपर, इस्पात, जिंक, लैड, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा तथा कुछ तेल-तेलवाना में व्यापक तेजी। काजू, अखरोट, बादाम, नारियल, सुपारी, चिरौंजी, पाट, पटसन में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 24 को बुध मकर में प्रवेश करने से सोना, चांदी, कॉपर, रुई, कपास, कॉटन तथा किराना जिन्सों में तेजी, सभी प्रकार के अनाजों में घटाबढ़ी से सुधार हो सकता है। मासांत तक तिल, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, आमचूर, सूखा मेवा, सिंघाड़ा, निकिल, विरोजा आदि में सुधार होता रहेगा। कमोडिटी बाजार में ता. 14 के बाद धातुओं में तथा किराना जिन्सों में दैनिक कारोबार के अंतर्गत तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है।

फरवरी-मासारंभ में धातुओं, डिब्बा बंद तेल, चावल, चीनी, चाय, कॉफी, मूंग, मोंठ, तुअर, हल्दी, जीरा, धनियां, ग्वार में सामान्य सुधार की संभावना है। ता. 3 को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करने से धान, चावल, गेहूं, चना, उड़द, तुअर तथा अन्य अनाजों में, तेल-तेलवाना में व्यापक मंदी की धारणा लम्बी लाईन में बन सकती है। ता. 7 को शनि वक्री होने से यह योग बनने से सभी जिन्स धातुओं में के रुखों में अचानक परिवर्तन होकर मंदी की धारणा गंभीर बन सकती है। ता. 10 को बुध कुंभ में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना, रुई, सिल्वर में व्यापक घटाबढ़ी चलकर अंत में कुछ सुधार हो सकता है। रस, गुड़, खाण्ड में तेजी तथा किराना जिन्सों में अचानक कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, कॉपर में भी अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। इसी राशि में शुक्र भी विचरण कर रहा है। जिससे घृत, वनस्पति घी, डिब्बा बंद तेल, लवण में सामान्य सुधार। रुई, पाट, पटसन, गेहूं, चना, तुअर, गुड़, खाण्ड में कुछ मंदी। गमग्वार, सोना, चांदी तथा किराना जिन्सों में समभाव बना रहेगा। ता. 19 को बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई में तेजी। सिल्वर, पाट, पटसन, बारदाना में तेजी तथा सोना, कॉपर में अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 27 को बुध मीन राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, जीरा, हल्दी, धनियां, ग्वार, लालमिर्च में कुछ मंदी। सोना, चांदी में घटबढ़ चलकर सुधार होकर फिर मंदी की लम्बी लाईन बन सकती है। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. 29 को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से चावल में तेजी। पाट, बारदाना, गुड़, शक्कर, सिल्वर में घटाबढ़ी चलकर सुधार हो सकता है। घृत, तेल, सोयाबीन, सरसों, अरण्डी में तेजी की धारणा बन सकती है। अचानक वायु वेग चालू हो जाने से ठंड में वृद्धि एवं वर्षा भी हो सकती है। जिससे खड़ी फसलों को नुकसान हो सकता है।

मार्च-मासारंभ में सूर्य कुंभ में, बुध मीन में, गुरु मेष में, मंगल सिंह में, शनि तुला में विचरण करेंगे। मासारंभ में गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, घृत, वनस्पति घी, सोना, चांदी, कॉपर में तेजी। जबकि गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना में घटबढ़। तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन आदि तेल-तेलवाना में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 12 को बुध वक्री होने से गुड़, शक्कर, चावल, घृत में घटबढ़ चलकर मंदी। रुई, कपास, वस्त्र में मंदी। ता. 14 को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, समस्त तेल-तेलवाना में तेजी। तथा अनाजों में घटाबढ़ी चलकर मंदी की धारणा बन सकती है। किराना जिन्सों में अस्थिरता बनी रहेगी। इसी तारीख को बुध के अस्त से सिल्वर में तेजी, पाट, पटसन तथा रुई में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 27 तक इसका प्रभाव रहेगा। हालांकि कुछ किराना जिन्सों में भयंकर तेजी भी बन सकती है। अतः बाजार की दशा-दिशा देखकर काम करें। ता. 28 को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा, जिससे रुई में व्यापक मंदी, चावल, सोना, चांदी में घटाबढ़ी चलकर तेजी की धरणा बन सकती है। किराना जिन्सों में अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 29 को बुध पूर्व में उदय होने से एक माह के अंदर घृत में तेजी। रुई में घटाबढ़ी चलकर मंदी तथा सोना में मंदी की धारणा बन सकती है। कमोडिटी बाजार में सोना, कॉपर, सिल्वर, कालीमिर्च, जीरा, कुछ तेल-तेलवाना में रुख देखकर तेजी का सौदा किया जा सकता है। जबकि अन्य जिन्सों में अस्थिरता बनी रह सकती है। बाजार पकड़ में नहीं आयेगा।

अप्रैल-मासारंभ में शुक्र-केतु वृष में विचरण करेंगे। जिससे रुई, कपास, कॉटन, बारदाना में व्यापक मंदी। हल्दी, जीरा, कालीमिर्च, लालमिर्च, ग्वार, उड़द, तूअर, चना, मूंग, मोंठ, सोयाबीन, सरसों, मेंथोल आदि में घटबढ़ चलकर ता. 5 तक कुछ सुधार की धारणा बन सकती है। ता. 6 को बुध मार्गी 7:38 पर होने से सोना, सुपारी, सरसों, सोंठ, चमड़ा में तेजी। जबकि किराना जिन्सों में अस्थिरता। ता. 13 को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, कॉटन, नारियल, सुपारी, बादाम, काजू, अखरोट, सूखा मेवा, गुड़, खाण्ड, चीनी, तिल, तेल-तेलवाना, सोना-चांदी आदि धातुओं, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, चावल, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग में कुछ घटबढ़ चलकर सुधार होता रहेगा। परन्तु धातुओं में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। वायदा बाजार में धातुओं में तेजी का सौदा सुरक्षित प्रतीत हो रहा है। इसी तारीख को मंगल मार्गी होने से तेल-तेलवाना, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, गेहूं आदि अनाजों में 30 दिन के अंदर अच्छी तेजी बन सकती है। मासान्त तक लालमिर्च, धनियां, जीरा, हल्दी, लवण, इलायची, गमग्वार, चिरौंजी, किशमिश, पोस्ता, अखरोट तथा धातुओं में प्रायः तेजी की धारणा बनी रह सकती है। ऐसे तो किराना की प्रमुख जिन्सों में सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है।

मई-मासारंभ में सूर्य-गुरु मेष में तथा केतु-शुक्र वृष राशि में विचरण करेंगे। ता. 2 को शुक्र वक्री होने से रुई, कपास, सिल्वर, गुड़, खाण्ड में तेजी। ता. 3 को गुरु पश्चिम में अस्त होने से बाजार में अस्थिरता बनकर सभी जिन्स धातुओं में धारणा अग्रसर बन सकती है। ता. 5 को बुध मेष राशि में प्रवेश से सोना, चांदी आदि धातुएं, हीरा, जवाहरात, गेहूं, जौ, चना में तेजी। रसकस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, तेल, तेलवाना, तिल, घृत, रुई, कपास में मंदी। परन्तु हल्दी, जीरा, कालीमिर्च, लवण, इलायची, लालमिर्च, ग्वार में ता. 13 तक घटबढ़ जारी रह सकती है। ता. 14 को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करने से जनता में सुख-शांति की भावना जागृत होती है। धान का उत्पादन अच्छा होता है। फिर भी अनाजों में साधारण तेजी बनी रह सकती है। रुई, कपास, कॉटन, सोना में अच्छी तेजी बन सकती है। किराना जिन्सों में प्रायः तेजी बनती रहेगी। यह धारणा लम्बी चल सकती है। ता. 16 को बुध पूर्व में अस्त होने से एक माह के अंदर घृत में मंदी। रुई में घटाबढ़ी। सोना में तेजी बन सकती है। ता. 18 को शनि कन्या में प्रवेश करने से धातुओं के राजा सोना, सिल्वर, हीरा, जवाहरात में मंदी। रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, नमक तथा अनाजों में तेजी। किराना जिन्सों एवं तेल, तेलवाना में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 21 को बुध वृष राशि में प्रवेश करने से सभी जिन्स, धातुओं में घटाबढ़ी होगी। पृथ्वी पर रक्तपात तथा युद्ध की आशंका बनी रह सकती है। तिल, तेल, तेलवाना, रुई, कपास, कॉटन, गेहूं, जौ, चना, मटर आदि अनाजों में तेजी की संभावना। जबकि कीमती धातुओं में अस्थिरता से आम जन परेशान रहेंगे। किराना जिन्सों तथा गमग्वार में कुछ स्थिरता बन सकती है। ता. 29 को गुरु पूर्व में उदय होने से सभी धातुओं तथा किराना जिन्सों दलहन, हल्दी, जीरा, ग्वार आदि में मंदी की धारणा बन सकती है।

जून-मासारंभ में वृष राशि के अंतर्गत चतुर्थ ग्रहीय योग बन रहा है। जो सभी जिन्स धातुओं के लिए मंदी कारक है। अतः सावधानी से काम करें। ता. 3 को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, लैड, इस्पात, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, कॉटन, घी, तेल, बिनौला आदि में मंदी की धारणा बन सकती है। परन्तु रुई में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। ता. 4 को बुध मिथुन राशि में पर प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, कपास में मंदी। सरसों, सोयाबीन में घटबढ़। वायु का प्रकोप अधिक चल सकता है। वर्षा भी व्यापक हो सकती है। जिससे किराना जिन्सों में निर्यात मांग की संभावना से तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 7 को बुध पश्चिम में प्रवेश होने से अनावृष्टि से किसान चिन्तित रहेंगे। किराना जिन्स तथा अनाजों में अच्छी तेजी बन सकती है। धातुओं में खामोशी बनी रह सकती है। ता. 12 को शुक्र पूर्व में उदय होने से रुई में तेजी। सिल्वर में घटाबढ़ी चलकर मंदी। अनाजों में मंदी जबकि धातुओं में व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 14 को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। जिससे रुई, कपास, पाट, पटसन, बारदाना, कॉटन, तेल, तेलवाना, इस्पात, गुड़, खाण्ड, चीनी, घृत, उड़द, मूंग, मोंठ, चावल, गेहूं, चना, अरहर, मटर आदि में तेजी। जीरा, धनियां, आमचूर, इमली, लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार, मैन्थोल, सोना, चांदी में घटबढ़ चलकर सुधार होता रहेगा। ता. 21 को बुध कर्क राशि में प्रवेश करने से रसकस पदार्थ, धान, गुड़, खाण्ड, दूध, दही, तेल, तेलवाना, सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च में तेजी किन्तु यह तेजी अस्थिर होती है। चांदी में घटबढ़। रुई, कपास, हल्दी, जीरा, धनियां, ग्वार में कुछ मंदी हो सकती है। इसी तारीख को मंगल कन्या में प्रवेश से सभी धातुओं में अच्छी तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। किराना तथा गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 24 को शनि मार्गी होने से 6 दिन में रुई, कपास में मंदी चलकर फिर सुधार हो सकता है। दो मास के अंदर तिल, समस्त तेल, तेलवाना, गमग्वार, मिर्च आदि में अच्छी तेजी बनती है। ता. 26 को शुक्र भी मार्गी होने से 4 दिन पीछे रुई में मंदी और 5 दिन बाद सिल्वर, सोना में भयंकर तेजी।

जुलाई-मासारंभ में सूर्य-चन्द्रमा मिथुन राशि में तथा केतु-मंगल वृष राशि में विचरण करेंगे। जिससे मासारंभ में रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, बारदाना, मखाना, सिंघाड़ा, नारियल, खोपड़ा, सुपारी आदि में घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की ओर जा सकती है। एक सप्ताह के बाद सिल्वर, सोना, हीरा, जवाहरात आदि में तेजी बन सकती है। जबकि चावल, गुड़, खाण्ड, घृत, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोंठ आदि में संग्रह करना भविष्य में लाभकारी हो सकता है। हल्दी, जीरा, धनियां, अजवायन, आमचूर, इमली, ग्वार, कालीमिर्च, लालमिर्च में घटबढ़ चलकर कुछ सुधार होता रहेगा। परन्तु स्थिरता नहीं बन पायेगी। अतः बाजार की धारणा देखकर काम करना चाहिए। अन्यथा एक बार गलत सौदा हो जाने पर इससे निकलना बड़ा मुश्किल हो सकता है। यह धारणा ता. 11 तक चलनी चाहिए। ता. 12 को बुध वक्री होने से समस्त व्यापारिक वस्तुओं पर प्रायः मंदी का संचार होता है। व्यापारिक जिन्स धातुओं में पहले मंदी चल रही हो तो तेजी की धारणा और तेजी चल रही हो तो मंदी की धारणा समझना। ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करने से धान के उत्पादन को लेकर संशय की स्थिति होने से कहीं तेजी, कहीं मंदी की धारणा बन सकती है। सिल्वर में अच्छी तेजी बन सकती है। नारियल, तिल तेल, लालमिर्च, मजीठ में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 19 को बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई में व्यापक मंदी। पाट, हैशियन, कपास, चीनी, काजू, अखरोट में भी मंदी की धारणा बन सकती है। ग्वार में व्यापक मंदी की लाईन बन सकती है। प्रायः सभी जिन्स धातुओं में अस्थिरता के कारण बाजार की धारणा आम निवेशक पहचान नहीं सकेंगे। हालांकि किराने की कुछ जिन्सों में निर्यात मांग या अफवाह के कारण बाजार में कुछ तेजी बन सकती है। ता. 31 को शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, चावल, ग्वार, बाजरा, तुअर, उड़द में तेजी। ग्वार, रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, बारदाना, अरण्डी, तिल, अन्य तेल, तेलवाना में मंदी की धारणा बन सकती है। गुड़, घृत, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, मैन्थोल, हल्दी, लवण, इलायची, तेजपात, लहसुन, प्याज, अदरख, मेंथी, आलू में घटाबढ़ी चलकर धारणा अग्रसर तेजी की ओर जा सकती है।

अगस्त-मासारंभ में सूर्य कर्क राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में बाजार में धातुओं में अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 2 को शनि अपनी ऊंच राशि तुला में मिनट पर प्रवेश करेगा। जिससे सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, हल्दी जीरा, धनियां, कालीमिर्च, गमग्वार आदि में तेजी। कहीं अधिक वर्षा, कहीं अनावृष्टि से कृषि को हानि हो सकती है। धातुओं में अस्थिरता बनी रहेगी। बाजार पकड़ में नहीं आ पायेगा। ता. 6 को बुध पूर्व में उदय होने से एक माह के अंदर अनाज, घृत में तेजी। रुई में घटाबढ़ी चलकर मंदी। सोना तथा अन्य धातुओं में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 8 को बुध मार्गी होने से सिल्वर, चावल, चीनी, कपूर, रुई, कपास, कॉटन, मखाना, नारियल, सिंघाड़ा में मंदी की धारणा बन सकती है। पशुचारा, जलावन, कोयला, लकड़ी में तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 14 को मंगल तुला में प्रवेश करेगा जिससे रुई, कपास, कॉटन, उड़द, मूंग, मोंठ, समस्त अनाज, रसकस पदार्थ, सोना, चांदी, कॉपर, इस्पात, जिंक, लैड, जूट, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, डिब्बा बंद तेल, किराने की सभी जिन्सों तथा गमग्वार में अच्छी तेजी बन सकती है। इस राशि में मंगल-शनि की युति विशेषकर धातुओं में अच्छी तेजी कारक है। कमोडिटी ट्रेडिंग में दैनिक कारोबार के अंतर्गत सोना, सिल्वर, कॉपर, इस्पात, जिंक, लैड, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा के वर्तमान स्तर में तेजी का सौदा सुरक्षित प्रतीत हो रहा है। फिर भी बाजार की दशा-दिशा देखकर स्वयं विवेक से अथवा संबंधित जानकार अर्थशास्त्रीयों से परामर्श अवश्य ले लेना चाहिए। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करने से गन्ना, गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, गमग्वार, लालमिर्च, इमली, सरसों, तिल, डिब्बा बंद तेल, हीरा, जवाहरात में तेजी। अनाजों में कुछ मंदी, जबकि सोना, चांदी, कॉपर आदि में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 28 को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घृत में मंदी। रुई में घटाबढ़ी चलकर सुधार। सोना में घटाबढ़ी चलकर तेजी की धारणा। ता. 29 को बुध सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। जिससे सोना, चांदी आदि धातुएं, रुई, कपास, कॉटन, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी में तेजी। चावल में खामोशी। गुड़, खाण्ड तथा सूखा मेवा में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है।

सितंबर-मासारंभ में शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। जिससे समस्त रसकस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, घृत, तेल, तेलवाना आदि में तेजी। रुई, कपास, सिल्वर में घटाबढ़ी की धारणा चल सकती है। ता. 13 को बुध कन्या में प्रवेश करेंगे। सोना, चांदी आदि धातुएं, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गेहूं, जौ, चना, जीरा, कालीमिर्च, लालमिर्च, ग्वार में तेजी। रुई में मंदी। तथा वायुवेग तेज चाल में चल सकती है। ता. 16 को सूर्य कन्या में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। जिससे रुई, कपास, कॉटन, नारियल, सुपारी, मेवा, मजीठ, लाल जिन्स, अरण्ड, समस्त तेल, तेलवाना, सोना, चांदी, इस्पात आदि धातुओं में अचानक मंदी की धारणा बन सकती है। बुध पश्चिम में उदय होगा। जिससे रुई में तेजी। सिल्वर में मंदी। पाट, हैशियन, सोना में घटबढ़ चलकर तेजी बन सकती है। ता. 28 को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। उसी दिन मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। जिससे धातुओं के राजा सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मजीठ, लालमिर्च, कालीमिर्च, रसकस पदार्थ, जीरा, धनियां, इमली, ग्वार आदि में अच्छी तेजी। कमोडिटी से धातुओं में तथा ग्वार, किराना जिन्सों में तेजी का सौदा किया जा सकता है।

अक्टूबर-ता. 1 को बुध तुला में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। जिससे गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा, धनियां, अजवायन, आमचूर, इमली, मैन्थोल, गुड़, खाण्ड, सोना, कॉपर, रुई, कपास में तेजी। सिल्वर, समस्त तेल, तेलवाना, डिब्बा बंद तेल, हल्दी, चावल आदि अनाजों में तथा दलहनों में कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 5 को गुरु वक्री होने से जिन्स धातुओं में अचानक परिवर्तन हो सकता है। ता. 8 को शनि 18:04 पर अस्त होने से चावल में तेजी। कालीमिर्च, उड़द, गमग्वार, लालमिर्च, इस्पात, सोना में कुछ तेजी बन सकती है। प्राकृतिक उत्पात या आयात-निर्यात संबंधी मामलों में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है। जो तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी लम्बी लाईन में बन सकती है। ता. 16 को सूर्य अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश कर सूर्य बुध-शनि से प्रतियुति करेगा। जिससे गेहूं, जौ, चना, मसूर आदि अनाज के भावों में तेजी। रुई, सिल्वर, कपास, पाट, पटसन, बारदाना, काजू, अखरोट, बादाम में कुछ मंदी। सोना, कॉपर, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, जीरा आदि में अच्छी तेजी बन सकती है। अतः कमोडिटी में इनके सौदे तेजी सूचक प्रतीत हो रहे हैं। ता. 23 को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से समस्त अनाजों, घृत, तेल, तेलवाना, तिल तथा किराने की कुछ जिन्सों में मंदी की धारणा बन सकती है। सोना, चांदी में समभाव चलकर सुधार होता रहेगा। हालांकि सिल्वर में कम सुधार होगा। सोना, कॉपर में विशेष सुधार होग। परन्तु शुक्र कन्या में प्रवेश करेगा। जिससे अनाजों में तेजी। तथा समस्त तेल, तेलवाना में तेजी की लंबी लाईन बन सकती है। अत. बाजार की दशा-दिशा देखकर काम करें।

नवम्बर-मासारंभ में सूर्य-शनि तुला में तथा राहु-बुध-मंगल वृश्चिक में विचरण करने से सोना, कॉपर, समस्त तेल, तेलवाना तथा किराना जिन्सों में प्रायः तेजी की धारणा चलनी चाहिए। ता. 5 को बुध वक्री होगा। जिससे गुड़, शक्कर में तेजी। तेल, तेलवाना में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 9 को मंगल धनु में प्रवेश करने से रसकस पदार्थ, रुई, कपास, पाट, पटसन आदि धातु, समस्त तेल, तेलवाना, गमग्वार, लालमिर्च, कालीमिर्च, घृत, जीरा, हल्दी में तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 11 को बुध अस्त तथा शनि उदय से चावल, रसकस पदार्थ में तेजी। किराना जिन्सों में खामोशी बन सकती है। ता. 15 को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश करेगा। जिससे सोना, चांदी, कॉपर, रुई, कपास, तेल, तेलवाना, लालमिर्च में कुछ तेजी। परन्तु 3 दिन बाद लालवर्ण की जिन्सों में अचानक मंदी भी बन सकती है। ता. 17 को शुक्र तुला में प्रवेश से गुड़, खाण्ड, सोना, कॉपर, रुई, किराना जिन्सों, गमग्वार, सुपारी, नारियल में तेजी। सिल्वर तथा तेल, तेलवाना में मंदी। ता. 23 को बुध पूर्व में उदय होने से एक माह के अंदर घृत, अनाज, रुई में घटाबढ़ी चलकर कुछ सुधार। धातुओं में मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 27 को बुध मार्गी होने से घृत, गुड़, खाण्ड, तेल, तेलवाना, औषधि तथा किराना जिन्सों में मासान्त तक तेजी बन सकती है।

दिसम्बर-मासारंभ में किराना जिन्सों में तेजी बनी रह सकती है। धातुओं में अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 6 को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से समस्त अनाजों, तेल, तेलवाना, घृत में मंदी तथा धातुओं में अस्थिरता बनी रहेगी। ता. 11 को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश कर बुध-सूर्य के साथ युति करेगा। जिससे गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा, चना में मंदी। तेल, तेलवाना में तेजी बन सकती है। ता. 15 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, तिल, तेल, कपास में तेजी बन सकती है। ता. 18 को मंगल मकर राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, कॉपर, गमग्वार, कालीमिर्च, लालमिर्च, जीरा आदि में तेजी बन सकती है। सोना में विशेष तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। वायदा बाजार में गमग्वार, लालमिर्च, सोना, कॉपर, कालीमिर्च में तेजी का सौदा सुरक्षित प्रतीत हो रहा है। अतः बाजार रुख देखते हुए स्वयं विवेक से काम करें। किसी प्रकार की हानि-लाभ की जिम्मेदारी लेखक व प्रकाशक की नहीं होगी।

यदि आप विस्तार से जिन्स धातुओं की सम्पूर्ण जानकारी चाहते हैं, तो वार्षिक मेम्बर बनकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। किसी प्रकार के सेम्पल या ट्रायल की जानकारी नहीं दी जाती है।

लेखकः पं. टुनटुन शास्त्री

ग्रहीय मंत्री परिषद वर्ष फल व राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालात

ग्रह मंत्री परिषद में इस वर्ष राजा और मंत्री दैत्य राज्य शुक्र ग्रह को प्राप्त हुआ है। **शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य सकला स्व तीव्र वेगाः सरितोऽम्बु राशीभिः फलन्ति वृक्षाः बहुगो प्रसूतिः वसुन्धरा पार्थिव सौस्य संयुक्त** अर्थात् अन्न तथा घास, पशुचारा की उत्पत्ति अच्छी होती है। वर्षारंभ में अनाजों में मंदी की धारणा बनी रहती है। परन्तु अंत में अनाजों में तेजी की धारणा बन जाया करती है। फलों में फल-फूल अधिक लगने से इनके मूल्यों में प्रायः मंदी की धारणा बन जाया करती है। कारोबारी, कुशल व्यापारी तथा कृषक गण स्मरण रखें कि धान्य के उत्पादन किसी न किसी कारण से प्रभावित होने से चावल के मूल्यों में आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। अतः चावल का संग्रह भविष्य में अच्छा लाभकारी हो सकता है। शुक्र राजा होने से वर्षा अच्छी होती है। धान का उत्पादन अच्छा होते हुए भी कीड़े-मकोड़े प्राकृतिक कारणों से प्रभावित होते हैं। जन-जीवन में भाईचारा नहीं बन पाता तथा रक्तपात, अनाचार, बलात्कार, चोरी, डकैती आदि घटनाओं में अचानक वृद्धि होती है। मौसम सुहाना होने से वायु युद्ध भी प्राकृतिक वातावरण में गतिरोध बना रह सकता है। मंगल कृत कार्यक्रम होते हैं। धर्म, अध्यात्म तथा धार्मिक अनुष्ठानों में गतिरोध बना करेगा। प्राकृतिक उत्पात से जन-जीवन त्रस्त रहेगा। मंत्री पद भी दैत्य राज शुक्र को ही सुशोभित है। **भृगुसुते ननु मंत्रीपद गते शलभ मूस करानन। माहिषै भवति धान्य समर्घ तमथाम्यम् जन पदे सुजलं सरितोऽधिकम्॥** अर्थात् जिस वर्ष में मंत्री पद शुक्र राजा को प्राप्त होता है, उस वर्ष में कीड़े मकोड़े, चूहा, सर्प, जंगली जानवरों का भय उत्पात से जन-जीवन बाधित होते हैं। समयानुकूल वर्षा होने से नारियल, सुपारी, अखरोट, छुहारा, किशमिश, चिरौंजी, मखाना, काजू, बादाम आदि का उत्पादन अच्छा होता है। व्यापक वर्षा से कहीं हानि, कहीं लाभ की संभावना बनती है। जिससे अनाजों में मंदी का संचार होता है। दूध, घृत आदि का अधिक उत्पादन से इनके मूल्यों में मंदी का संचार होता है। रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, बारदाना के उत्पादन कुछ कम हो सकते हैं। इस वर्ष धान्येष सूर्य पुत्र शनि को प्राप्त होने से वर्षा का अभाव रहता है। अन्नों का उत्पादन कम होता है। शासन में निरर्थक व्ययशीलता से जनता में आक्रोश बढ़ेगा। रोग, महामारी से जन-जीवन त्रस्त रहेगा। कालीमिर्च, जीरा, उड़द, तिल, कपास के उत्पादन में गतिरोध उत्पन्न होता है। शासन-प्रशासन में अशांति, राजनेताओं के हत्या, चरित्र हनन तथा लोकसभा-विधानसभा में खुलम-खुल्ला एक-दूसरे पर वाक्‌युद्ध जारी रहता है। जिससे मर्यादा तथा राजनेताओं का चरित्र हनन जारी रहता है। आतंकवाद, अत्याचार, बलात्कार, नरसंहार जैसी घटनाओं का ग्राफ ऊपर उठने से कई प्रांतीय सरकारों का पतन भी संभावित है। धनियां, अजवायन, सौंफ, लालमिर्च, लवण, इलायची, लहसुन, अदरख, प्याज, जायफल, दालचीनी, चावल, चीनी, गुड़ आदि के मूल्यों में अचानक बेतहासा तेजी की संभावना बन सकती है। नीरसेश और धनेश का पद सूर्य को प्राप्त होने से कॉपर, लाल चंदन, मजीठ, हीरा, जवाहरात, ग्वार, इमली, आमचूर, सोना आदि के मूल्यों में तेजी बन सकती है। किराने की प्रमुख जिन्सों में अधिक तेजी। घोड़ा, हाथी, दूधारू पशुओं के क्रय-विक्रय में अच्छे लाभ प्राप्ति का अवसर प्राप्त होता है। सस्येश चन्द्रमा होने से वर्षा समयानुकूल उत्तम होती है। अन्नों के उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। रसेश मंगल होने से वर्षा में गतिरोध बना रहता है। रसकस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, चीनी, चाय, कॉफी, गमग्वार, लालमिर्च, अफीम, आमचूर, इमली में प्रायः तेजी की धारणा बन जाया करती है। अत्याचार, अनाचार में वृद्धि। राजनेताओं की हत्या का ग्राफ ऊपर उठता है। प्राकृतिक कारणों से जन-धन की हानि। मेघेश, फलेश, दुर्गेश का पद इस वर्ष देव गुरु वृहस्पति को प्राप्त हुआ है। जिससे शासन में लोकप्रियता, न्यायप्रियता की अधिकता से जन-जीवन में विश्वास की भावना मुखर होती है। जनता के हित में कई प्रकार के नये कानून पारित होते हैं। जन-जीवन मधुरता, स्नेह की भावना मुखर होती है। धर्म, अध्यात्म में लोगों की भावना जागृत होती है। मंगलकृत कार्य अधिक होते हैं। वर्षा समयानुकूल अच्छी होने से फसल अच्छी होती है। सर्वत्र सुभिक्ष की स्थिति बनी रहती है। लकड़ी, जलावन, कोयला, गैस, तेल, फूल-फल, मेवा आदि के मूल्यों में कुछ गिरावट की संभावना बन सकती है। सोना, कॉपर, सिल्वर, हल्दी आदि के मूल्यों में अस्थिरता के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में व्यापक घटाबढ़ी। बाजार की धारणा आम लोगों में भय का संचार करेगी। जिससे, आम लोग इसकी दशा-दिशा पहचान नहीं सकेंगे। अतः सावधानी अपेक्षित है। इस ग्रह मण्डल की विधान सभा में छः स्थान सौम्य ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। चार स्थान उग्र ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। अतः वर्षफल में उठापटक जारी रहेगी।

चैत्र-वर्ष लग्न होने से पूर्व में स्थिरता बनकर पुनः अत्याचार, अनाचार, घोटाले, चरित्र हनन तथा राजसभा, विधानसभा, लोकसभा की परम्परा को राजनेताओं द्वारा निर्वस्त्र का असफल प्रयास जारी रहेगा। कठोर कानून पारित होने से उग्रवाद पर कुछ हद तक नियंत्रण संभावित है। कठोर कानून से आम जनों में भय का संचार होगा। दूध, पाउडर, घी, वनस्पति के मूल्यों में तेजी बनी रहेगी। तीन मास के अंदर अचानक लालमिर्च, मजीठ, गमग्वार, इमली के मूल्यों में मंदी। कुछ राज्यों में जन प्रदर्शन से अशांति हो सकती है। चावल आदि अनाजों में अच्छी तेजी बन सकती है।

वैशाख-तुला का शनि होने से कालीमिर्च, जीरा, धनियां, अजवायन, आमचूर, ग्वार, जीरा, इलायची, उड़द, तिल आदि में तेजी

की धारणा बनती बिगड़ती रहेगी। सोना, चांदी, कॉपर, इस्पात, जिंक, लैड, निकिल, बिशोजा, अन्य रस रसायन, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोंठ, तुअर आदि अनाजों तथा रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन के मूल्यों में घटबढ़ चलकर सुधार होता रहेगा। शृंगार की वस्तुएं तथा सुगन्धित सामग्री महंगी होंगी। इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के मूल्यों में बेतहासा तेजी। मकान मैटेरियल के मूल्यों में विशेष तेजी। वैद्य, हकीम, नौका चालक, मछुआरा आदि को कष्ट। जल में उत्पन्न होने वाले फल-फूल महंगे होंगे। ईख, दूध, रसकस पदार्थ, तेल, तेलवाना में अस्थिरता बनी रहेगी। जबकि किराना जिन्सों में अनुपलब्धता, आयात-निर्यात, उत्पादन-खपत आदि नीतियों के कारण प्राय: तेजी बनी रह सकती है। क्रूड आयल, पामोलिन, शेयर्स बाजार की हालात अस्थिर तथा अशांत बनी रह सकती है। तेज गर्मी व लू से जन-जीवन बाधित होगा। तथा मृत्यु दर का ग्राफ आश्चर्य जनक तरीकों से ऊपर उठ सकता है। जो आम जनों में भय का संचार उत्पन्न करेगा। प्राकृतिक उत्पात भी संभावित है।

ज्येष्ठ-डिब्बा बंद तेल, वनस्पति घी, समस्त तेल, तेलवाना, हल्दी, जीरा के मूल्यों में तेजी। वृष राशि में गुरु के विचरण से नंदशाल नामक मेघ वर्षा करता है। जिससे रसकस पदार्थ, चाय, कॉफी में मंदी का संचार हो सकता है। हाथीयों तथा जंगली जानवरों को पीड़ा हो सकती है। गेहूं, चावल, चना, मूंग, उड़द, तिल, हल्दी, जीरा, धनियां, अजवायन, कालीमिर्च, तेजपात, सौंफ, लवण, इलायची, दलचीनी आदि में प्राय: तेजी। गमग्वार, लालमिर्च, सोना, कॉपर, सिल्वर तथा रस रसायन में अस्थिरता बनी रहेगी। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अशांति तथा भारतीय प्रांतों में अशांति से पद परिवर्तन, सत्ता परिवर्तन तथा किसी राष्ट्र का शासन भंग हो सकता है। वर्षा में गतिरोध बना रह सकता है। हीरा, जवाहरात में तेजी। ज्येष्ठ में गुरु उदय से अनावृष्टि तथा कृतिका नक्षत्र में गुरु उदय होने से अनावृष्टि तथा कृतिका नक्षत्र में गुरु उदय से वाहन तथा अग्नि से संबंधित जीविका चलाने वाले लोहार, सोनार में व्याधियां उत्पन्न होती रहेंगी।

आषाढ़-सभी पीत वर्ण की जिन्स धातुओं के भाव में बेतहासा तेजी हो सकती है। चावल, गेहूं, चना, गमग्वार, जीरा में मंदी का संचार। आषाढ़ में बुध का उदय होने से कहीं भी प्राकृतिक आपदा से बाधित होंगे। आर्द्रा नक्षत्र में बुध होने से व्यापक वर्षा हो सकती है। गेहूं, तिल, उड़द में मंदी का संचार। ग्रहपात तथा पवन के प्रवाह से जन-जीवन बाधित होगा। हाथी, घोड़ों के मूल्यों में वृद्धि। पुनर्वसु में बुध होने से वृद्ध व बालकों में रोग का संचार। रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, मखाना, सिंघारा आदि में मंदी का संचार। रोहिणी नक्षत्र में गुरु विचरण से वर्षा तथा अन्य उत्पादन मध्यम होती है। सर्प से जनता में भय। विश्व के विकाशशील राष्ट्रों में अशांति तथा गृह युद्ध स्थितियों से शेयर्स बाजार तथा मूल्यवान धातुओं में अस्थिरता बनी रह सकती है। ओपेक राष्ट्रों में अशांति से कच्चे तेलों के मूल्यों में बेतहासा तेजी बनी रह सकती है।

श्रावण-अश्लेषा में बुध के प्रवेश से कहीं अनावृष्टि, कहीं अतिवृष्टि से जन-जीवन चिन्तित रहेंगे। धान का उत्पादन संतोषप्रद हो सकता है। घृत, गुड़, खाण्ड, लवण, रस, रसायन, नमक, सोना, चांदी, कॉपर, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी, जायफल, इलायची महंगे हो सकते हैं। कहीं-कहीं प्राकृतिक उत्पात हो सकते हैं।

प्रथम भाद्रपद- चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, तुअर, उड़द में तेजी। आर्द्रा नक्षत्र में शुक्र प्रवेश से किसी-किसी प्रांतों में उपद्रव तथा अतिवृष्टि से जन-धन की हानि हो सकती है। अश्लेषा में बुध के प्रवेश से अतिवृष्टि से महाप्रलय जैसी स्थितियां बन सकती हैं। कुल मिलाकर अनाजों के उत्पादन संतोषप्रद हो सकते हैं। पशुचारा, जलावन, कोयला, लकड़ी, मकान मैटेरियल, सीमेन्ट, इस्पात आदि के मूल्यों में बेतहासा वृद्धि हो सकती है। मास के उत्तरार्द्ध के बाद सिंह राशि में बुध अचानक वर्षा में गतिरोध बन सकता है।

द्वितीय भाद्रपद-पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में बुध प्रवेश से सीमा पार तनाव जैसी स्थितियां बन सकती हैं। सीमाओं पर गोलीबारी हो सकती है। एक बार फिर खाद्य पदार्थ के वैश्विक स्तर पर लगातार कीमतों से विकाशशील राष्ट्रों में खाद्य आयात दोहराया जा सकता है। हाल में तेल की कीमतों में उछाल, वैश्विक अनाज में स्टॉक के तेजी से निकलने के कारण आपूर्ति का संकट पैदा हो सकता है। गहरी चिन्ता का विषय विकास शील राष्ट्रों में तेजी से आर्थिक विकास ऊंची औद्योगिक अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ होने का संकेत मिल रहा है। उत्तरी अमेरिका और मध्य पूर्व के कई राष्ट्रों में बढ़ती कीमतों पर काबू पाने के लिए बड़ी मात्रा में अनाजों की खरीदारी की जाने लगी है। तेल की कीमतों में बेतहासा वृद्धि तथा ढुलाई की लागत बढ़ जाने से इसका असर आम उत्पादक जिन्स धातुओं पर भी प्रलक्षित होने लगा है। जो चिन्ता का विषय बना हुआ है। इससे विकास शील देशों की अनाज के आयात की क्षमता पर दूरगामी असर देखने को मिल सकते हैं। भारत के बाजारों में किराना जिन्सों में बेतहासा मूल्य वृद्धि से आम जन-जीवन परेशान रहेगा। डिब्बा बंद तेलों तथा मेवा में भी अच्छी तेजी बनेगी।

आश्विन-वृष राशि के गुरु वक्री चाल में चलने से चतुष्पद, तेल, तेलहन, बर्तन, सोना, चांदी आदि के मूल्यों में प्राय: तेजी बनी रह सकती है। जबकि चावल, रसकस पदार्थ, किराना जिन्सों में मंदी की धारणा बनेगी। तुला राशिगत बुध का उदय से प्राकृतिक उत्पात, कुछ राष्ट्रों में गृह युद्ध जैसी स्थितियां, भारतीय प्रांतों में कहीं-कहीं अतिवृष्टि एवं धातुओं में अच्छी तेजी बन सकती है। विशेष तौर पर लहसुन, प्याज, आलू, अदरख, धनियां, अजवायन, आमचूर, ग्वार, काजू, अखरोट, बादाम, किशमिश, छुहारा, चिरौंजी, कॉफी, चाय, सोना, चांदी में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। शेयर्स बाजार तथा क्रूड आयल में अस्थिरता।

कार्तिक-सोना, चांदी, कॉपर, निकिल के भावों में तेजी। चावल, गेहूं, चना, तुअर, उड़द, मूंग, मोठ, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी, गमग्वार, आमचूर में भी तेजी। तुला का शनि उदय से प्राकृतिक उत्पात विशेष होगी। कमोडिटी बाजार तथा शेयर्स बाजार में विशेष तौर पर उड़द, कालीमिर्च, तिल, इस्पात, ऑटो मोबाइल, सीमेन्ट आदि के मूल्यों में तेजी। जबकि पाट, पटसन, रुई, कपास, बारदाना, सिंघारा, काजू, अखरोट, मखाना के मूल्यों में मंदी।

मार्गशीर्ष-डिब्बा बंद तेल, रसकस पदार्थ, लवण, इलायची, दालचीनी, लहसुन, प्याज, अदरख, आलू, उड़द, घी, गुड़, खाण्ड तथा पशुओं के मूल्यों में तेजी बन सकती है। खाद्य पदार्थों के विदेशी निर्यात से प्राय: तेजी बनी रह सकती है। विशेष तौर पर मसालों के मूल्यों में बेतहासा तेजी बन सकती है। इस पर नजर रखकर काम करें।

पौष-खरीफ फसल संतोषप्रद नहीं होगी। वृद्ध, बालकों में रोग पीड़ा से कष्ट होगा। जल में उत्पन्न होने वाले फल-फूल महंगे होंगे। जल में निवास करने वाले जीव जन्तु पीड़ित होंगे। चावल, चीनी, कपूर, काजू, मखाना, गुड़, खाण्ड में मंदी। दलहन, तेलहन के मूल्यों में तेजी। सोना, सिल्वर, क्रूड आयल, पामोलिन, सीमेन्ट, इस्पात तथा कॉपर के मूल्यों में तेजी।

माघ-दुधारू पशुओं में रोग-बीमारी हो सकती है। शतभिषा में मंगल के प्रवेश से शीत प्रकोप से खड़ी फसलों की हानि। प्राकृतिक उत्पात होने से जन-जीवन पीड़ित होंगे। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आयात-निर्यात से संबंधित गलत अफवाह से क्रूड आयल तथा सोना के मूल्यों में स्थिरता बनी रह सकती है। कुछ राष्ट्र नायकों के पद, सम्मान पर अचानक काले बादल छा जायेंगे। ओपेक राष्ट्रों में तनाव जैसी स्थितियां। जिससे कच्चे तेल के मूल्यों में व्यापक उठापटक होने की संभावना है।

फाल्गुन-इस मास में तेल, तेलवाना, गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा, तुअर, उड़द, मूंग, मोंठ, लहसुन, प्याज, अदरख, सुपारी, नारियल, काजू, अखरोट, बादाम, चिरौंजी, लवण, दालचीनी, गमग्वार, कालीमिर्च, जीरा आदि में घटबढ़ चलकर धारणा मंदी की ओर जा सकती है। केसर, आमचूर, सिंघाड़ा, मखाना, किशमिश, छुहारा आदि में कुछ सुधार। सोना, चांदी, कॉपर, अन्य धातुओं तथा रस रसायन में प्राय: तेजी की धारणा बनी रह सकती है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मुस्लिम राष्ट्रों में विशेष तौर पर अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तालीबान में अमेरिकी कार्यवाही से अंतर्राष्ट्रीय हालात अचानक बिगड़ सकते हैं। जिससे आयात-निर्यात संबंधी मामलों में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है। भारत-पाक सीमा पर काले बादल छाये रहेंगे। पाक के अंदर उग्रवादी संगठनों द्वारा तबाही का मंजर गृह युद्ध जैसी स्थितियां भयावह रूप धारण कर सकती हैं। जो पूरे विश्व के लिए चिन्ता का विषय होगा।

चैत्र-दालवाना, तेलवाना तथा किराना जिन्सों में प्राय: मंदी की धारणा बनती है। चावल, गुड़, चीनी, चाय, कॉफी, गमग्वार, किशमिश, छुहारा, हल्दी, क्रूड आयल, पामोलिन, मैन्थोल, सुपारी, नारियल, सोना, चांदी में तेजी। अंतर्राष्ट्रीय हालात अभी भी अशांत रहेंगे।

लेखक : पंडित टुनटुन शास्त्री (विभिन्न राष्ट्रीय पंचांगकर्ता)
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरॉव (नटवार)
रोहतास (बिहार)-802218
मो.-09431486216, 09801873719

प्रमुख जिन्स धातुओं में तेजी-मंदी विवरण

सोना, कॉपर के प्रमुख चांसों का विवरण

जनवरी-मासारंभ में सोना, कॉपर में घटबढ़ जारी रहेगी। स्थिरता नहीं बन पायेगी। आम निवेशक इसकी दशा-दिशा पहचान नहीं सकेंगे। जिससे सौदा अक्सर गलत हो सकता है। ता. 4 को बुध धनु राशि में प्रवेश करने से ता. 8 तक बाजार में खामोशी बनी रह सकती है। ता. 9 को शुक्र कुंभ राशि में प्रवेश करने से ता. 13 तक बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है। अतः बाजार की दिशा खामोशी सूचक प्रतीत हो रही है। ता. 14 को सूर्य मकर में प्रवेश करने से ता. 17 तक अस्थिरता चलकर कुछ सुधार हो सकता है। ता. 18 को बुध अस्त होने से सोना, कॉपर में घटाबढ़ी चलकर कुछ सुधार हो सकता है। ता. 23 को मंगल वक्री होने से अंतर्राष्ट्रीय बाजार या देशवारी अचानक मांग निकलने से धातुओं में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 24 को बुध मकर में प्रवेश से दोनों धातुओं में तेजी की संभावना प्रबल प्रतीत हो रही है। कुल मिलाकर कमोडिटी बाजार में ता. 14 के बाद तेजी का सौदा सर्वथा उचित प्रतीत हो रहा है। **फरवरी**-मासारंभ में तेजी, ता. 3 से 6 तक घटबढ़, ता. 7 से 9 तक सोना, कॉपर में व्यापक मंदी की लम्बी लाईन, ता. 10 से 12 तक मंदी कायम, ता. 13 से 18 तक मंदी की धारणा, ता. 19 से 26 तक खामोशी बनी रह सकती है। अतः 3 से 26 तक मंदी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत हो रहा है। ऐसे तो इस बाजार में कब धारणा बदल जाए, यह तो आंकलन भविष्य के गर्भ में छुपा रहता है। अतः दशा-दिशा देखकर स्वयं विवेक से काम लेना चाहिए। ता. 27 को सोना, कॉपर में घटबढ़ चलकर कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा और यह तेजी ता. 29 के बाद और बढ़ सकती है। अतः ता. 27 से 29 तक तेजी का सौदा विशेष लाभकारी हो सकता है। **मार्च**-मासारंभ में सोना, कॉपर में तेजी, ता. 11 तक जोखिम लेकर तेजी का सौदा किया जा सकता है। ता. 12 से सोना, कॉपर में रुख परिवर्तन हो सकता है। फिर भी ता. 14 से 27 तक अस्थिरता अर्थात घटाबढ़ी चलकर कुछ सुधार होता रहेगा। ता. 28 से 31 तक घटाबढ़ी चलकर बाजार में अस्थिरता बनी रहेगी। अतः सौदा तेजी-मंदी के हिसाब से कुछ मजबूती की ओर रहेगा। परन्तु भारी जोखिम लेकर काम न करें। **अप्रैल**-मासारंभ में अस्थिरता, ता. 6 से 12 तक तेजी की संभावना, ता. 13 से मासांत तक घटबढ़ चलकर अच्छी तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। अतः तेजी का सौदा लेकर चलना लाभप्रद हो सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी तेजी बन सकती है। **मई**-मासारंभ में गुरु मेष राशि में स्तम्भी बनकर चल रहा है। मासारंभ से 13 तक गुरु के साथ युति करेगा, ता. 14 से राशि परिवर्तन कर वृष राशि में विचरण करेंगे। मासारंभ में सोना, कॉपर में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 3 से 13 तक व्यापक घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता. 14 से 17 तक अचानक अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 18 से 28 तक सोना, कॉपर में प्रायः मंदी की धारणा बन सकती है। फिर भी सावधानी अपेक्षित है। क्योंकि तीन ग्रहों की प्रतियुति तेजी-मंदी दोनों में सहायक हो सकती है। ता. 29 से 31 तक गुरु उदय होने से मंदी का क्रम जारी रह सकता है। **जून**-मासारंभ में शुक्र-बुध-सूर्य-केतु वृष राशि के अंतर्गत पंचग्रही योग बना रहे हैं। जो बाजार में तूफानी तेजी-मंदी की धारणा बनाते बिगाड़ते रहते हैं। ऐसे तो इस बाजार में अस्थिरता भी बनी रह सकती है। अतः 2 से 11 तक व्यापक मंदी की धारणा बन सकती है। बाजार पकड़ में नहीं आयेगा। ता.12 से धीरे-धीरे तेजी बननी शुरू हो जाएगी। यह तेजी 20 तक चलनी चाहिए। ता. 21 से 23 तक व्यापक तेजी बन सकती है। ता. 24 से मासांत तक रुखों में परिवर्तन तो होगा, रुक-रुककर तेजी बनती रहेगी। **जुलाई**-मासारंभ से ता. 11 तक सोना, कॉपर में तेजी। ता. 12 से 15 तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. 16 से 30 तक अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 31 को व्यापक घटाबढ़ी जारी रहेगी। कुल मिलाकर इस माह में विशेष जोखिम लेकर काम न करें। **अगस्त**-मासारंभ में बुध-सूर्य की युति जलीय राशि कर्क में हो रहा है। जबकि मंगल-शनि की युति कन्या राशि में हो रही है। मासारंभ में तेजी चल सकती है। ता. 2 से 7 तक मंदी की संभावना, ता. 8 से 13 तक रुखों में परिवर्तन, ता. 14 से 27 तक घटाबढ़ी चलकर अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 28 से 31 तक भयंकर तेजी बन सकती है। **सितम्बर**-मासारंभ में बुध-सूर्य की युति सिंह राशि में होने से धारणा तेजी की ओर अग्रसर रहनी चाहिए। ता. 12 से 13 तक घटाबढ़ी चलकर बाजार कुछ मंदी की ओर, ता. 26 तक हालांकि मंदी विशेष नहीं होगी। ता. 27 से मासांत तक तेजी की धारणा गंभीर भी हो सकती है। फिर भी सावधानी से काम करें। इस बाजार में कब क्या हो जाए यह संभावनाएं प्रकृति के गर्भ में छुपी रहती हैं। अंतर्राष्ट्रीय हालात्, कच्चे तेलों में उठापटक तथा विश्व आर्थिक हालातों के कारण बाजार में कभी भी परिवर्तन हो सकता है। **अक्टूबर**-मासारंभ में सूर्य कन्या में, शनि-बुध तुला में तथा मंगल-राहु वृश्चिक में भ्रमणशील है। अतः मासारंभ में बाजार के हालात तेजी सूचक प्रतीत हो रहे हैं। ता. 1 से 7 तक अच्छी तेजी, ता. 8 से 15 तक अचानक मंदी, ता. 16 से मासांत तक अच्छी तेजी बन सकती है। हालांकि ता. 23 से 31 तक थोड़ी खामोशी सी बनी रह सकती है। फिर भी तेजी का पलड़ा भारी महसूस हो रहा है। दैनिक कारोबार में ता. 1 से 7 तक तेजी, ता. 8 से 15 तक मंदी, ता. 16 से 23 तक गंभीर तेजी, ता. 24 से 31 तक घटाबढ़ी। **नवम्बर**-मासारंभ में शनि-सूर्य तुला में तथा राहु-बुध-मंगल वृश्चिक में भ्रमणशील होने से ता. 4 तक गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 5 से 8 तक कुछ मंदी, ता. 9 से 14 तक सामान्य सुधार, ता. 15 से 22 तक अच्छी तेजी, ता. 23 से 26 तक घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की ओर, ता. 27 से 30 तक कुछ सुधार संभावित है। **दिसंबर**-मासारंभ में ता. 5 तक सुधार, ता. 6 से 14 तक खामोशी, ता. 15 से मासांत तक धीरे-धीरे तेजी बनते हुए गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है। दैनिक कारोबार में मासांत तक तेजी का सौदा सर्वथा उचित प्रतीत हो रहा है।

सिल्वर, जिंक, लैड, इस्पात तेजी-मंदी विवरण

जनवरी-मासारंभ में सामान्य सुधार, ता. 4 से 8 तक अचानक मंदी की धारणा, ता. 9 से 13 तक व्यापक मंदी, ता. 14 से 22 तक अस्थिरता, ता. 23 से मासांत तक धीरे-धीरे अच्छी तेजी। **फरवरी**-मासारंभ में तेजी बनी रह सकती है। ता. 6 से 7 तक रुखों में परिवर्तन से घटाबढ़ी चलकर बाजार में अस्थिरता ता. 16 तक बनी रह सकती है। ता.19 के बाद अचानक मंदी की धारणा ता. 26 तक चल सकती है। ता. 27 से मासांत तक घटाबढ़ी चलकर सामान्य से भारी तेजी। **मार्च**-मासारंभ में सूर्य शत्रु राशि कुंभ में तथा गुरु शुक्र मेष राशि में विचरण करेंगे। फलतः मासारंभ में ता. 11 तक सिल्वर, जिंक, लैड में अच्छी तेजी। इस्पात में घटाबढ़ी चल सकती है। ता. 12 से 27 तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. 16 के बाद धीरे-धीरे स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 28 से 31 तक घटाबढ़ी चलकर कुछ सुधार हो सकता है। **अप्रैल**-मासारंभ में बाजार में बिकवाली दबाव से बाजार में मासारंभ में खामोशी बनी रहेगी ता. 5 तक। ता. 6 से 12 तक घटाबढ़ी चलकर कुछ सुधार, ता. 13 से बाजार में अचानक अंतर्राष्ट्रीय हालात तथा विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार में सभी धातुओं में आश्चर्य जनक सुधार हो सकता है। अतः तेजी का सौदा सुरक्षित प्रतीत हो रहा है। **मई**-मासारंभ में तेजी, ता. 2 से 13 तक मंदी, ता. 14 से 17 तक धीरे-धीरे तेजी, ता. 18 से पुनः मंदी की धारणा ता. 28 तक चलेगी। हालांकि बीच-बीच में एकाध बार जोरदार तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 29 को गुरु उदय से अचानक तेजी की धारणा मासांत तक चलेगी। **जून**-मासारंभ में धातुओं में तेजी, ता. 3 से 6 तक मंदी, ता. 7 से 13 तक घटाबढ़ी, ता. 14 से 20 तक तेजी, ता. 21 से मासांत तक तेजी की लंबी लाईन बन सकती है। अतः बाजार रुख देखते हुए तेजी का सौदा उचित प्रतीत हो रहा है। **जुलाई**-मासारंभ में घटाबढ़ी, ता. 12 से 15 तक बाजार के रुखों में परिवर्तन, ता. 16 से 30 तक तेजी की लम्बी लाईन, ता. 31 को शुक्र खामोशी बन सकती है। **अगस्त**-मासारंभ में बुध-सूर्य कर्क राशि में विचरण करेंगे। जिससे मासारंभ में सभी धातुओं में अस्थिरता बनी रह सकती है ता. 7 तक। ता. 8 से धीरे-धीरे सुधार होकर ता. 15 तक तेजी की धारणा अस्थिर होकर चलेगी। ता. 16 से धीरे-धीरे तेजी बनकर मासांत तक अच्छी तेजी बन सकती है। **सितंबर**-ता. 1 को शुक्र कर्क राशि में तथा बुध-सूर्य सिंह राशि में विचरण करने से मासारंभ में सभी धातुओं में तेजी बनी रह सकती है ता. 12 तक। ता. 13 से 26 तक अचानक मंदी, ता. 27 से मासांत तक व्यापक घटाबढ़ी। दैनिक कारोबार

आर्यभट्ट पंचांगम् 219

में अस्थिरता बनी रह सकती है। अक्टूबर-मासारंभ में ता. 1 से 4 तक व्यापक मंदी, ता. 5 से 15 तक अस्थिरता बनकर दैनिक कारोबार में बाजार की धारणा मंदी की ओर, ता. 16 से 22 तक व्यापक मंदी, ता. 23 से 31 तक बाजार में धीरे-धीरे तेजी की धारणा बनने लगेगी। **नवम्बर**-मासारंभ में ता. 8 तक तेजी, ता. 9 से 14 तक सब कुछ सामान्य रहा तो अच्छी तेजी, ता. 15 से 22 तक व्यापक घटाबढ़ी अस्थिरता बनी रह सकती है। दैनिक कारोबार में बाजार की धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। ता. 23 से मासांत तक घटबढ़ चलकर कुछ स्थिरता बन सकती है। **दिसंबर**-मासारंभ में ता. 5 तक तेजी, ता. 6 से 25 तक भयंकर तेजी की अवधारणा, ता. 26 से मासांत तक अचानक मंदी बन सकती है।

गमग्वार, लालमिर्च, मेंथी, कालीमिर्च, उड़द

जनवरी-मासारंभ में गुरु मेष राशि में तथा मंगल सिंह राशि में विचरण करेंगे। जिससे कालीमिर्च, लालमिर्च में तेजी, मेंथी, इमली, ग्वार में घटबढ़ ता. 8 तक। ता. 9 से 13 तक सभी जिन्सों में अच्छी तेजी, ता. 14 से 23 तक समभाव, ता. 24 से मासांत तक सभी जिन्सों में अचानक मांग निकलने से तेजी। **फरवरी**-मासारंभ से ता. 2 तक घटबढ़, ता. 3 से 6 तक खामोशी, ता. 7 से 18 तक तिल, ग्वार, मेंथी, कालीमिर्च, उड़द में सामान्य तेजी, ता. 19 से 26 तक व्यापक घटाबढ़ी चलकर धारणा मंदी की ओर, ता. 27 से मासांत तक घटाबढ़ी चलकर बाजार में एक बार जोरदार तेजी। **मार्च**-मासारंभ में सूर्य कुंभ में तथा गुरु-शुक्र की युति से ता. 11 तक सभी जिन्सों में अच्छी मंदी। ता. 12 से रुखों में परिवर्तन हो सकता है। ता. 14 से 27 तक बाजार में अस्थिरता, ता. 28 से धीरे-धीरे तेजी की धारणा बनने लगेगी और मासांत तक सुधार की धारणा। ता. 28 को शुक्र के राशि परिवर्तन से स्थिरता बन पायेगी। **अप्रैल**-मासारंभ में सभी जिन्सों में घटाबढ़ी परन्तु बाजार में धारणा तेजी की ओर रहेगी। ता. 6 से 11 तक अच्छा सुधार, ता. 13 को सूर्य-गुरु की युति से मासांत तक सभी जिन्सों में तेजी। उड़द, तिल तथा ग्वार में अपेक्षाकृत उतनी तेजी नहीं बन पाएगी। अन्य जिन्सों में सुधार होता रहेगा। **मई**-मासारंभ में सूर्य-गुरु की युति से सभी जिन्सों में तेजी बनती रहेगी ता. 13 तक। ता. 14 को सूर्य राशि परिवर्तन कर गुरु-केतु के साथ प्रतियुति करेगा। जिससे ता. 17 तक भयंकर तेजी। ता. 18 को शनि कन्या राशि में प्रवेश करने से बाजार के रुखों में अचानक परिवर्तन, ता. 26 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 27 से सभी जिन्सों में अच्छी तेजी। **जून**-मासारंभ में शुक्र-बुध-सूर्य-गुरु-केतु पंचग्रही योग वृष राशि के अंतर्गत बन रहा है। जिससे सभी जिन्सों में अफवाहों पर आधारित रुक-रुककर तेजी ता.11 तक बननी चाहिए। ता. 12 से सभी जिन्सों में अच्छी तेजी, ता. 14 से 20 तक अचानक आवक के दबाव में धारणा मंदी की ओर, ता. 21 से मासांत तक के बीच शनि शुक्र मार्गी होने से लालमिर्च, कालीमिर्च, ग्वार में अच्छी तेजी बन सकती है। अन्य जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। **जुलाई**-मासारंभ में शुक्र-गुरु की युति से बाजार में मंदी, परन्तु ग्वार, लालमिर्च, जीरा में तेजी। ता. 12 से मासांत तक रुखों में परिवर्तन होगा, फिर भी खामोशी बनी रहेगी। **अगस्त**-मासारंभ में शुक्र के राशि परिवर्तन से शनि अपनी उच्च राशि में विचरण करने से सभी जिन्सों में ता. 13 तक अच्छी तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 14 को मंगल तुला में प्रवेश करने से ग्वार, लालमिर्च छोड़कर सभी जिन्सों में मासांत तक अच्छी तेजी बन सकती है। **सितंबर**-मासारंभ में शुक्र कर्क राशि में विचरण करने से सभी जिन्सों में खामोशी बनी रहेगी। ता. 18 से 26 तक घटबढ़ चलकर सुधार, ता. 27 से 30 तक तेजी। **अक्टूबर**-मासारंभ में ता. 7 तक मंदी, ता. 8 को शनि अस्त होने से ता. 22 तक अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 23 से मासांत तक घटबढ़ जारी रहेगी। **नवम्बर**-मासारंभ में ता. 4 तक तेजी, ता. 5 से रुखों में परिवर्तन, ता. 9 से 22 तक अस्थिरता, ता. 23 से मासांत तक अच्छी तेजी। **दिसंबर**-मासारंभ में तेजी ता. 5 तक बनी रहेगी। ता. 6 से 14 तक खामोशी, ता. 15 से 31 तक अफवाहों पर आधारित अच्छी तेजी बन सकती है।

समस्त तेल, तेलवाना में तेजी-मंदी विचार

जनवरी-मासारंभ में बुध धनु राशि में प्रवेश करने से तेल, तेलवाना में ता. 8 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 9 से 22 तक सोयाबीन, सरसों, तिल आदि में अच्छी तेजी। ता. 22 से मासांत तक सभी तेल, तेलवाना में तेजी बन सकती है। **फरवरी**-मासारंभ में ता. 2 तक घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 3 से 12 तक डिब्बा बंद तेलों में तेजी। ता. 13 से 26 तक अच्छी तेजी, ता. 27 से मासान्त तक व्यापक मंदी। **मार्च**-ता. 11 तक मंदी की धारणा, ता. 12 से रुखों में परिवर्तन फिर भी धारणा मंदी की ओर, ता. 28 से 31 तक व्यापक मंदी। **अप्रैल**-ता. 5 तक मंदी, ता. 6 से 12 तक व्यापक मंदी, ता. 13 से बाजार में धीरे-धीरे सुधार, मासांत तक भड़कती तेजी बन सकती है। **मई**-मासारंभ में शुक्र वक्री होने से तेलों में मंदी ता. 13 तक रहेगी, ता. 14 से धीरे-धीरे तेजी बनकर, ता. 18 तक अच्छी तेजी। ता. 19 से मासांत तक घटबढ़ जारी रहेगी। हालांकि डिब्बा बंद तेलों में तेजी की धारणा रुक-रुककर बनती रहेगी। **जून**-मासारंभ में मंदी ता. 3 तक, ता. 4 से 11 तक घटबढ़, ता. 12 से 20 तक सामान्य सुधार, ता. 21 से मासांत तक अच्छी तेजी। **जुलाई**-मासारंभ में तेजी बनी रहेगी, ता. 12 से रुखों में परिवर्तन, ता. 16 से 30 तक अच्छी तेजी, ता. 31 को मंदी बन सकती है। **अगस्त**-मासारंभ में मंदी की धारणा ता. 7 तक चलनी चाहिए। ता. 8 से 13 तक रुखों में परिवर्तन, ता. 14 से मासांत तक अच्छी तेजी बन सकती है। **सितंबर**-मासारंभ में शुक्र जलीय राशि कर्क में प्रवेश करने से ता. 27 तक रुक-रुककर तेजी बनती रहेगी। ता. 28 से मासांत तक घटाबढ़ी जारी रहेगी। **अक्टूबर**-मासारंभ में मंदी की धारणा ता. 4 तक चलनी चाहिए। ता. 5 से 7 तक मंदी, ता. 8 से मासांत तक भड़कती तेजी बनती रहेगी। हालांकि भाह की तेजी अफवाहों पर आधारित होगी। **नवम्बर**-मासारंभ में कुछ तेजी, ता. 5 को बुध वक्री होने से ता. 8 तक रुखों में परिवर्तन होगा। ता. 9 से 10 तक तेजी, ता. 11 से अचानक मंदी की धारणा ता. 26 तक चलेगी। ता. 27 से रुखों में परिवर्तन होगा। **दिसंबर**-प्रायः घटबढ़ जारी रहेगी। स्थिरता नहीं बन पायेगी। अफवाहों पर आधारित तेजी-मंदी पकड़ में नहीं आयेगी। अतः सावधानी अपेक्षित नहीं होगी।

रुई, कपास, कॉटन, पाट, पटसन, जीरा, धनियां, अजवायन, हल्दी, मैन्थोल आदि में मंदी-तेजी विचार

जनवरी-मासारंभ में जीरा, धनियां, अजवायन, रुई, कपास में तेजी। ता. 4 से रुई, कपास, कॉटन में मंदी। अन्य जिन्सों में ता. 8 तक तेजी। ता. 9 से रुई, कपास, मैन्थोल में घटबढ़ अस्थिरता व अन्य जिन्सों में कुछ सुधार ता. 22 तक चल सकता है। ता. 23 को मंगल वक्री होने से सभी जिन्सों में सुधार। **फरवरी**-मासारंभ में रुई, कपास, कॉटन में तेजी, अन्य जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी ता. 6 तक। ता. 7 शनि वक्री होने से ता. 12 तक सभी जिन्सों में खामोशी, ता. 13 से 26 तक व्यापक मंदी की धारणा, जबकि धनियां, अजवायन, जीरा में कुछ सुधार, हल्दी में घटबढ़ जारी रहेगी। **मार्च**-मासारंभ में मंदी की धारणा ता. 11 तक चलेगी। ता. 12 को बुध वक्री होने से रुखों में परिवर्तन, ता. 14 से 27 तक सभी जिन्सों में घटबढ़ चलकर सुधार। ता. 28 से मासांत तक पुनः मंदी की धारणा। **अप्रैल**-मासारंभ में सभी जिन्सों में खामोशी ता. 5 तक बनी रह सकती है। ता. 6 से 12 तक व्यापक घटाबढ़ी, ता. 13 से सभी जिन्सों में सुधार की संभावना। **मई**-मासारंभ में तेजी बनी रहेगी ता. 4 तक। ता. 5 से 13 तक अचानक मंदी, किराना जिन्सों में विशेष घटबढ़ होगी। ता. 14 से 20 तक रुई, कपास, कॉटन में अच्छी तेजी, जबकि किराना जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। ता. 21 से मासांत तक सभी जिन्सों में अस्थिरता। **जून**-मासारंभ में सभी जिन्सों में मंदी की धारणा ता. 13 तक। ता. 14 से सभी जिन्सों में धीरे-धीरे अच्छी तेजी। **जुलाई**-मासारंभ में रुई, कपास में व्यापक घटाबढ़ी जबकि जीरा, धनियां, अजवायन, हल्दी, मैन्थोल में अच्छी तेजी ता. 11 तक। ता. 12 से रुखों में परिवर्तन, ता. 16 से मासांत तक सभी जिन्सों में अच्छी तेजी। **अगस्त**-मासारंभ में शनि तुला राशि में विचरण करने से सभी जिन्सों में प्रायः तेजी की धारणा। **सितंबर**-मासारंभ में सभी जिन्सों में व्यापक घटाबढ़ी ता. 12 तक चलेगी। ता. 13 से 27 तक रुई, कपास में मंदी। किराना जिन्सों में तेजी। ता. 28 से 30 तक सभी जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी। बाजार में स्थिरता नहीं बन पायेगी। **अक्टूबर**-मासारंभ में रुई, कपास, कॉटन में तेजी, अन्य जिन्सों में घटबढ़ जारी रहेगी ता. 7 तक। ता. 8 से मासांत तक सभी जिन्सों में अच्छी तेजी। **नवम्बर**-माह में ता. 14 तक तेजी बनी रहेगी। ता. 15 से 30 तक सभी जिन्सों में घटाबढ़ी चलकर अच्छा सुधार होता रहेगा। **दिसम्बर**-मासारंभ में हल्दी, जीरा, धनियां, अजवायन, मैन्थोल में तेजी ता. 10 तक चल सकती है। ता. 11 से 26 तक सभी जिन्सों में मंदी, ता. 27 से 31 तक रुई, कपास में व्यापक मंदी, अन्य जिन्सों में कुछ सुधार होता रहेगा।

यदि आप चाहें तो दैनिक कारोबार या हाजिर बाजार की प्रत्येक जिन्स धातुओं की सम्पूर्ण गतिविधियों की तेजी-मंदी की जानकारी हमारे कार्यालय से भी प्राप्त कर सकते हैं। अचूक चांसों की जानकारी मो0: 09431486216 तथा 09801873719 पर दी जाती है। लिखित रूप में रिपोर्ट, दैनिक गतिविधियों की जानकारी भी भेजी जाती है।

लेखक : पंडित दुनदुन शास्त्री

शेयर बाजार तेजी-मंदी सम्पूर्ण गतिविधियां सन् २०१२ ई.

जनवरी-यह मास रविवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 4 को बुध धनु राशि में प्रवेश 7।12 पर होगा। धनु राशि में बुध-सूर्य की युति होगी, ता. 9 को शुक्र कुंभ राशि में 13 घंटा 39 मिनट पर प्रवेश करेगा, ता. 14 को सूर्य मकर राशि में 24 घंटा 59 मिनट पर प्रवेश करेगा। ता. 18 बुध पूर्व में अस्त 15 घं. 12 मि. पर होगा। ता. 23 को मंगल वक्री 30 घं. 23 मि. पर होगा। ता. 24 को बुध मकर राशि में 6घं.55मि. पर प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। फलत. मासारंभ में बाजार की हालत मंदी सूचक प्रतीत हो रही है। ता. 2 को बाजार खुलते ही भारी बिकवाली बन सकती है। ता. 3 से 4 तक नई पुरानी अर्थ व्यवस्था के शेयरों में अस्थिरता बनी रहेगी। बाजार पकड़ में नहीं आएगा। ता. 5 से 6 तक सब कुछ सामान्य रहा तो सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन मिलने से सुधार हो सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार की धारणा तेजी में रहेगी। फिर भी बाजार की दशा-दिशा देखकर ही काम करें। ता. 9 से 10 तक बैंक, ऑटोमोबाइल, सिमेन्ट, इस्पात, सॉफ्टवेयर, रियेल इस्टेट, गैस, विद्युत, कंपनियों के शेयरों में अच्छी तेजी बन सकती है। ता. 11 को अचानक बिकवाली से बाजार के सूचकांक में गिरावट बन सकती है। ता. 12 से 13 तक विभिन्न सेक्टरों के ब्लूचिफ कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से खरीददारी होने से अच्छा सुधार हो सकता है। आगामी सप्ताह घटबढ़ अधिक चलेगी। इस सप्ताह बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, फार्मा के शेयरों में बिकवाली या दबाव बना रह सकता है। ता. 16 से 17 तक इस्पात, पावर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन से सुधार, ता. 18 को बिकवाली की आशंका, ता. 19 से 20 तक घटबढ़ चलकर सामान्य सुधार की संभावना। आगामी सप्ताह बाजार की धारणा मंदी सूचक प्रतीत हो रही है। ता. 23 को सामान्य सुधार, ता. 24 से 26 तक अंतर्राष्ट्रीय हालात व अन्य कारणों से बाजार में भारी बिकवाली बनने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक गिरावट बन सकती है। अत: तेजी की जगह मंदी का सौदा करना उचित प्रतीत हो रहा है। ता. 27 को सामान्य सुधार, फिर भी अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 30 से 31 तक कोई अनहोनी घटना या गलत अफवाह के कारण साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा बैंकों के शेयरों में बिकवाली की आशंका अधिक प्रतीत हो रही है।

फरवरी- यह मास बुधवार कृतिका नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 3 को शुक्र मीन राशि में, ता. 7 को शनि 11 घं. 30 मि. पर वक्री होगा। ता. 10 को बुध कुंभ राशि में 24 घं. 11 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 13 को सूर्य कुंभ राशि में 13 घं. 58 मि. पर प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता. 19 को बुध 22 घं. 5 मि. पर पश्चिम में उदय होगा। ता. 27 को बुध मीन राशि में 16 घं. 4 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 29 को शुक्र कुंभ राशि को छोड़कर मेष राशि में 7 घं. 23 मि. पर प्रवेश करेगा। फलत: बाजार में घटबढ़ चलकर सुधार होता रहेगा। परन्तु मुनाफा वसूली जारी रहने से बाजार में कभी भारी बिकवाली से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। ता. 1 से 3 तक सब कुछ सामान्य रहा तो बैंक, रीयेल इस्टेट, सुगर, पावर, विद्युत, इस्पात तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। आगामी सप्ताह सब कुछ सामान्य रहा तो बाजार की दशा तेजी के समर्थन में सहायक प्रतीत हो रहा है। ता. 6 से 7 तक विद्युत, सिमेन्ट, पावर, इस्पात, ऑटो मोबाइल कंपनियों के शेयरों में समर्थन से अच्छा सुधार हो सकता है। ता. 8 को अचानक बिकवाली से बाजार में स्थिरता नहीं बन पायेगी। ता. 9 से 10 तक विभिन्न ब्लूचिफ कंपनियों के शेयरों में विदेशी निवेशकों तथा संस्थागत निवेशकों की लिवाली से सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार होना चाहिए। आगामी सप्ताह घटबढ़ अधिक चलेगी। फिर भी स्थिरता तेजी की ओर ही रहनी चाहिए। ता. 13 को सामान्य सुधार, ता. 14 को अचानक बिकवाली की आशंका, ता. 15 से 17 तक इस्पात, ऑटो मोबाइल, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, पेट्रो रसायन तथा धातुओं के शेयरों में सामान्य समर्थन से सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। आगामी सप्ताह बाजार में भारी बिकवाली की आशंका प्रतीत हो रही है। अत: सावधानी अपेक्षित है। ऐसे तो इस बाजार में कब, क्या हो जाए? यह तो संभावनाएं भविष्य के गर्भ में छुपी रहती हैं। अंतर्राष्ट्रीय हालात, विदेशी निवेशकों की खामोशी, बाजार की दशा-दिशा कभी भी बदल सकती है। इसका सदैव स्मरण रखकर ही काम करना चाहिए। अन्यथा कभी भी फलाफल में अंतर हो जाता है। ता. 20 से 22 तक भारी बिकवाली के कारण बाजार आंधी की आम के तरह गिर सकता है। अत: तेजी की अपेक्षा मंदी का सौदा किया जाना उचित होता है। ता. 23 से 24 तक घटबढ़ चलकर सामान्य सुधार हो सकता है। ता. 27 से 28 तक व्यापक घटाबढ़ी चलकर अस्थिरता , ता. 29 को सामान्य सुधार, ता. 22 से 28 तक बाजारीय कारणों से बाजार की हालात नकारात्मक प्रतीत हो रही है। बाजार में अनुकूलता या प्रतिकूलता बाजारी अफवाहों पर आधारित होगी।

मार्च-यह माह गुरुवार रोहिणी नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में ता. 12 को बुध 13 घं. 23 मि. पर वक्री होगा, ता. 14 को सूर्य मीन राशि में 10 घं. 51 मि. पर प्रवेश करेगा, इसी तारीख को बुध पश्चिम में 13 घं. 59 मि. पर अस्त होगा। ता. 28 को 14 घं. 22 मि. पर शुक्र वृष राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। ता. 30को 13 घं. 59 मि. पर बुध पूर्व में उदय होगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार मास के प्रारंभ में जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाएगा, शेयर बाजार मंदी के हर झटके को झेलकर आगे तेज होता जाएगा। इस माह में बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, धातुओं के शेयर अग्रसर मजबूती की ओर रहना चाहिए। ता. 1 से 2 तक बिभिन्न सेक्टरों के ब्लूचिफ कंपनियों के शेयरों में लिवाली से गंभीर तेजी की धारणा बन सकती है। ता. 5 से 9 तक सब कुछ सामान्य रहा तो बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, इस्पात, धातु तथा विद्युत कंपनियों के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक सुधार हो सकता है। परन्तु एकाध दिन गंभीर मंदी की धारणा से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। अत: बाजार की दशा-दिशा देखकर काम करना बुद्धिमानी होगा। ऐसे बाजार की धारणा तेजी सूचक है। आगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ अधिक चल सकती है। घटबढ़ चलकर भी धारणा किसी न किसी कारण से तेजी की ओर ही रहना चाहिए। ता. 12 से 16 तक इस्पात, पावर, विद्युत, गैस, रीयेल इस्टेट, ऑटो मोबाइल, सिमेन्ट, टेक्सटाइल्स तथा सुगर कंपनियों के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। जबकि इस सप्ताह साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों तथा बैंकों के शेयरों में कुछ दबाव बनता रहेगा। आगामी सप्ताह बाजार में भारी बिकवाली की आशंका प्रतीत हो रही है। ता. 19 से 21 तक बाजार कोई गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालात के कारण भारी बिकवाली से आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 22 से 23 तक इस्पात, विद्युत, रीयेल इस्टेट, ऑटो मोबाईल तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। परन्तु इसमें भी संदेह है। अत: दशा-दिशा देखकर काम करें। आगामी सप्ताह सब कुछ सामान्य रहा तो स्थिरता बन सकती है। ता. 26 को बिकवाली, ता. 27 से 30 तक नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं तथा मिडकैफ, स्मॉल कैफ श्रेणी के शेयरों में अचानक समर्थन से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। फिर भी सावधानी से काम करें।

अप्रैल-यह मास रविवार पुनर्वसु नक्षत्र कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 6 को 7।33 पर बुध मार्गी होगा, ता. 13 को सूर्य मेष में 18।8 पर प्रवेश करेगा। तथा गुरु के साथ युति करेगा। इसी तारीख को 11।31 पर मंगल मार्गी होगा। ग्रहीय आकलन के अनुसार मासारंभ में ग्रह चाल तेजी में सहायक प्रतीत हो रहा है। विशेष तौर पर मासारंभ में साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, फार्मा, बैंक तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना अधिक है। ता. 2 से 6 तक सब कुछ सामान्य रहा तो उपरोक्त सेक्टरों में विदेशी निवेशकों तथा संस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार अच्छी तेजी की ओर जा सकता है। आगामी सप्ताह के प्रारंभ में चन्द्रोदय होने से बाजार में व्यापक घटाबढ़ी तथा कुछ अस्थिरता गलत अफवाहों के कारण बनी रह सकती है। इस सप्ताह एकाध दिन गंभीर मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 9 से 13 तक घटबढ़ चलकर कुछ सुधार परन्तु मुनाफा

वसूली के कारण विशेष तेजी नहीं बन पायेगी। आगामी [illegible] बाजार में व्यापक घटाबढ़ी चलकर बाजार बिकवाली के दबाव में भारी गिरावट की ओर भी जा सकता है। विशेष तौर पर विद्युत, गैस, पैट्रोरसायन तथा धातुओं के शेयरों में बिकवाली की आशंका से व्यापक गिरावट की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। यह धारणा ता. 16 से 20 तक चल सकती है। ता. 20 को पंचक समाप्त होने से बाजार स्थिर रह सकती है। ता. 23 से 26 तक इस्पात, सिमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, बैंक, मीडिया, फार्मा आदि कंपनियों के शेयरों में समर्थन से अच्छी तेजी। विश्व के अन्य राष्ट्रों में तेजी का माहौल की अफवाह से भारतीय बाजार अच्छी तेजी की ओर रहना चाहिए। ता. 27 को बिकवाली बन सकती है। ता. 30 को घटबढ़ चलकर कुछ मंदी की ओर जा सकता है।

मई-यह मास मंगलवार मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 2 को 19 ।54 पर शुक्र वक्री होगा, ता. 3 को गुरु 27 ।3 पर पश्चिम में अस्त होगा, ता. 5 को 22 ।42 पर बुध मेष राशि में प्रवेश कर गुरु, सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 14 को सूर्य राशि परिवर्तन कर वृष राशि में 15 ।8 पर प्रवेश करेगा। सूर्य, केतु-शुक्र के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 16 को बुध पूर्व में 10 ।48 पर अस्त होगा। ता. 18 को शनि कन्या राशि में 7 ।5 पर प्रवेश करेगा, ता. 21 को बुध वृष राशि में 22 ।18 पर प्रवेश कर शुक्र-बुध-सूर्य-गुरु-केतु के साथ पंचग्रही योग बनायेगा। ता. 24 को गुरु 14 ।48 पर पूर्व में उदय होगा। फलतः मासारंभ में बाजार तेजी की ओर रहना चाहिए। बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, रीयेल इस्टेट, पावर, ऑटो मोबाइल, इस्पात तथा धातुओं में ता. 1 से 9 तक अच्छी तेजी। आगामी सप्ताह बाजार थोड़ी खामोशी में रहना चाहिए। परन्तु खामोशी के बावजूद संस्थागत निवेशकों के समर्थन से ता. 7 से 11 तक अग्रसर ब्लूचीफ, विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में रुक-रुककर समर्थन मिलने से सुधार की संभावना है। ता. 13 को पंचक प्रारंभ हो रहा है। ता. 14 को भारी बिकवाली की आशंका, ता. 15 से 16 तक सामान्य सुधार, ता. 17 से 18 तक व्यापक घटाबढ़ी चल सकती है। बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 17 से 18 तक बिकवाली बन सकती है। आगामी सप्ताह सब कुछ सामान्य रहा तो बाजार की दशा-दिशा तेजी प्रतीत हो रही है। ता. 21 से 25 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्था के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से अच्छी तेजी। ता. 28 से 31 तक विभिन्न सैक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों के शेयरों में लिवाली होने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक सुधार हो सकता है।

जून-यह मास शुक्रवार चित्रा नक्षत्र तुला राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में शुक्र-बुध-सूर्य-गुरु-केतु, वृष राशि के अंतर्गत पंचग्रही योग बना रहा है। जबकि ता. 3 को 25 ।36 मि. पर शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। ता. 4 को बुध मिथुन राशि में 16 ।50 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 7 को बुध 16 ।8 मि. पर पश्चिम में उदय होगा। ता. 12 को शुक्र 14 ।47 मि. पर पूर्व में उदय होगा। ता. 14 को सूर्य मिथुन राशि में 21 ।50 मि. पर प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता. 21 को बुध राशि परिवर्तन कर कर्क राशि में 16 ।1 मि. पर प्रवेश कर, इसी तारीख को मंगल कन्या राशि में 22 ।32 मि. पर प्रवेश कर शनि के साथ युति [illegible] ता. 24 को शनि 25 ।38 पर मार्गी होगा। ता. 26 को शुक्र भी 18 ।32 मि. पर मार्गी होगा। फलतः ग्रहीय आंकलन के अनुसार बाजार में गलत अफवाहों या अन्य हलातों से अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 1 को बाजार खुलते ही इस्पात, भारी इंजीनियरिंग, पावर, विद्युत, सुगर, धातुओं के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से सुधार हो सकता है। आगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ अधिक चलेगा। ता. 4 से 7 तक सब कुछ सामान्य रहा तो टेक्सटाइल्स, रीयेल इस्टेट, पावर, पेट्रो रसायन, विद्युत, गैस, सिमेन्ट, ऑटो मोबाईल तथा दूर संचार, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों में कुछ समर्थन मिल सकता है। फिर भी सावधानी अपेक्षित है। ता. 8 को गलत अफवाह के कारण बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। आगामी सप्ताह घटबढ़ जारी रहेगी। स्थिरता नहीं बन पायेगी। ता. 11 से 12 तक सामान्य सुधार, ता. 13 से 15 तक अंतर्राष्ट्रीय हालात या अन्य कारणों से भारी बिकवाली बन सकती है। आगामी सप्ताह बाजार में स्थिरता बन सकती है। ता. 18 से 22 तक बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, ऑटो मो., सिमेन्ट आदि सैक्टरों में समर्थन से अच्छा सुधार हो सकता है। इस समय में विश्व बाजार में जोरदार तेजी बनी रह सकती है। ता. 25 से 29 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं तथा विभिन्न सैक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन प्राप्त होने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक सुधार की संभावना अधिक है। ऐसे तो इस बाजर में कब, क्या हो जाए, यह सदैव भविष्य के गर्भ में छुपा रहता है।

जुलाई-यह मास रविवार अनुराधा नक्षत्र वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में शुक्र मिथुन में बुध कर्क में शनि-मंगल कन्या में विचरण करेंगे। ता. 12 को बुध 27 ।53 मि. पर वक्री होगा, ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में 8 घं. 52 मि. पर प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता. 19 को बुध 8 घं. 7 मि. पर पश्चिम में अस्त होगा। ता. 31 को शुक्र मिथुन राशि में 26 घं. 48 मि. पर प्रवेश करेगा। फलतः दैनिक ग्रह चाल एवं ग्रहों का प्रवेश, उदयास्त, वक्री-मार्गी, युति-प्रतियुति के माया जाल में विश्व की अर्थव्यवस्था भारतीय शेयर बाजार की हालात तथा विदेशी निवेशकों के सहयोग समर्थन क्या होगा, इसका आंकलन सम्पूर्ण ग्रहीय चाल पर आधारित है। ता. 2 से 5 तक बाजार में घटाबढ़ी चलकर कुछ स्थिरता बन सकती है। जब भी बाजार तेजी की ओर बढ़ना शुरू करेगा, तब ही मुनाफा वसूली के कारण बाजार विशेष तेजी की ओर नहीं जा पायेगा। ता. 6 को अचानक बिकवाली बनने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। अतः बाजार की दशा-दिशा देखकर ही काम करें। जल्दबाजी में कोई निर्णय लेना हानि का कारण बन सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है। ता. 9 से 10 तक इस्पात, पावर, विद्युत, गैस, बैंक, मीडिया, फार्मा तथा रीयेल इस्टेट, ऑटो मो. कंपनियों के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। परन्तु ता. 11 से 13 तक अचानक अंतर्राष्ट्रीय हालात या राजनैतिक घटना चक्र प्राकृतिक कारणों से बाजार प्रभावित होकर बिकवाली के माया जाल में फंसा रहेगा। जिससे सूचकांक में गिरावट बन सकती है। आगामी सप्ताह सब कुछ सामान्य रहा तो कुछ स्थिरता बननी चाहिए। ता. 16 से 17 तक व्यापक सुधार, ता. 18 को बिकवाली, ता. 19 से 20 तक रीयेल इस्टेट, पावर, विद्युत, पेट्रो रसायन, गैस तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से सूचकांक में सुधार हो सकता है। आगामी सप्ताह भी बाजार में स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 23 से 27 तक विभिन्न सैक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से खरीदारी होने से शेयर बाजार में अच्छे सुधार की संभावना है। ता. 30 से 31 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं तथा मिड कैफ, स्मॉल कैफ श्रेणी के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से तेजी बनी रह सकती है।

अगस्त-यह मास बुधवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में बुध-सूर्य कर्क राशि में, गुरु-केतु वृष राशि में विचरण करेंगे। ता. 2 को शनि तुला राशि में 14 घं. 17 मिनट पर प्रवेश करेगा। ता. 6 को बुध पूर्व में 5 घ. 54 मि. पर उदय होगा। ता. 8 को 20 घं. 44 मि. पर बुध मार्गी होगा, ता. 14 को मंगल तुला राशि में 11 घं. 45 मि. पर प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में 17 घं. 16 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 28 को बुध पूर्व में 9 घ. 4 मि. पर अस्त होगा। ता. 29 को बुध सिंह राशि में 6 घं. 17 मि. पर प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा। फलतः ग्रहीय आंकलन के अनुसार मासारंभ में ग्रह स्थिति बाजार के प्रतिकूल होने से ता. 1 से 3 तक विभिन्न सैक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों के शेयरों में व्यापक बिकवाली होने से बाजार में गिरावट की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। अतः तेजी की अपेक्षा मंदी का सौदा लेकर चलना उचित प्रतीत हो रहा है। आगामी सप्ताह भी बाजार में बिकवाली बने रहने की संभावना है। ऐसे तो आज की तारीख में बुध पूर्व में उदय हो रहा है, जो बाजार के लिए तेजी सूचक है। परन्तु अन्य ग्रह चाल बाजार के विपरीत होने से बाजार की दशा-दिशा देखकर काम करें। ता. 6 से 10 तक इस्पात, पावर, विद्युत, धातु, आटो मो., रीयेल इस्टेट, बैंक तथा साफ्टवेयर कंपनियों के शेयरों में बिकवाली की आशंका प्रतीत हो रही है। आगामी सप्ताह ता. 13 से 17 तक सब कुछ सामान्य रहा तो, बाजार में स्थिरता बन सकती है। विशेष तौर पर साफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, बैंक, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार हो सकते हैं। हालांकि एकाध दिन जोरदार मंदी के झटके भी आ सकते हैं। ता. 20 से 23 तक नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं तथा कुछ अन्य सेक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों में समर्थन प्राप्त होने से तेजी की धारणा बनी रह सकती है। ता. 24 से कुछ मंदी की धारणा बन सकती है। ता. 27 को सामान्य सुधार, ता. 28 से 31 तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, दूर-संचार, विद्युत, पावर तथा सिमेन्ट सैक्टरों में अचानक भारी बिकवाली बनने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। अतः तेजी की अपेक्षा मंदी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत हो रहा है।

सितंबर-यह मास शनिवार पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में ता. 1 को शुक्र कर्क राशि में 6 घं. 12 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 13 को बुध कन्या राशि में 20 घं. 58 मि. पर प्रवेश कर मंगल-शनि के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 16 को सूर्य कन्या में 17 घं. 12 मि. पर प्रवेश कर मंगल-शनि-बुध के साथ प्रतियुति करेगा। ता.

27 को बुध पश्चिम में उदय होगा 11 घं. 1 मि. पर। ता. 28 को शुक्र सिंह राशि में 7 घं. 59 मि. पर प्रवेश करेगा। इसी तारीख को मंगल वृश्चिक राशि में 18 घं. 21 मि. पर प्रवेश कर राहु के साथ युति करेगा। ग्रह गोचर के अनुसार मासारंभ में बाजार अस्थिरता पूर्ण धारणाओं में चलेगा। सर्वथा अस्थिरता के कारण आम निवेशक बाजार की दशा-दिशा पहचान नहीं सकेंगे। जिससे अधिकतर सौदे गलत हो सकते हैं। ता. 3 से 7 तक अस्थिरता चलकर बाजार गंभीर बिकवाली की ओर जा सकता है। अत: तेजी की जगह मंदी का सौदा किया जाना उचित प्रतीत हो रहा है। आगामी सप्ताह सब कुछ सामान्य रहा तो कुछ स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 10 को व्यापक घटाबढ़ी, ता. 11 से 14 तक बैंक, साफ्टवेयर, इस्पात, पावर, विद्युत, रीयेल इस्टेट, टेक्सटाइल्स, सुगर, पेट्रो रसायन, ऑटो मोबाइल कंपनियों के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से सुधार की दिशा गंभीर भी हो सकती है। आगामी सप्ताह में भी स्थिरता बनी रह सकती है। ता. 17 को चन्द्रदर्शन होने से 21 तक विभिन्न सेक्टरों के ब्लूचीफ कंपनियों के शेयरों में संस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार में रुक रुककर तेजी बनती रहेगी। आगामी सप्ताह बाजार दिशाहीन या बिकवाली के दबाव में भयंकर गिरावट की ओर जा सकती है। अत: हर पहलू पर सावधानी अपेक्षित है। ता. 24 से 25 तक घटबढ़, ता. 26 से 28 तक अचानक बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। फिर भी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय हालात देश काल की स्थितियां देखकर ही स्वयं विवेक से काम करें। ऐसे तो इस बाजार में तेजी की जगह मंदी और मंदी की जगह तेजी बनाने में अंतर्राष्ट्रीय हालात अनुकूल अफवाह, प्रतिकूल दशा-दिशा तथा विदेशी निवेशकों के खरीदारी या बिकवाली बाजार को जब चाहे दशा-दिशा बदल सकती हैं। परन्तु यह संभावनाएं कभी-कभी घटित होती हैं। फिर भी तथागत दशा-दिशा इन्हीं संभावनाओं पर आधारित है।

अक्टूबर-यह मास सोमवार रेवती नक्षत्र मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को बुध तुला में प्रवेश कर शनि के साथ 11 घं. 38 मि. पर युति करेगा। ता. 5 को गुरु 13 घं. 2 मि. पर वक्री होगा, ता. 8 को शनि 18 घं. 4 मि. पर अस्त होगा, ता. 16 को सूर्य तुला में 21 घं. 0 मि. पर प्रवेश कर शनि-बुध के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 23 को बुध वृश्चिक में 8 घं. 13 मि. पर प्रवेश करेगा। इसी तारीख को शुक्र कन्या राशि में प्रवेश करेगा। फलत: दैनिक ग्रह चाल के अनुसार माह में अधिकतर दूर-संचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां, बैंक, साफ्टवेयर, फार्मा, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति के सुधार हेतु प्रयत्न जारी रहेंगे। अर्थ व्यवस्था के सुधार हेतु प्रयास सार्थक होंगे। विश्व के छोटे-बड़े राष्ट्रों में हालांकि तनाव की स्थिति भी बनती रहेगी। जिससे बीच-बीच में बाजार के अंदर दबाव भी बन सकता है। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। मासारंभ में ता. 3 तक बिकवाली के दबाव से सूचकांक में गिरावट बन सकती है। ता. 4 से 5 तक इस्पात, सीमेन्ट, विद्युत, रीयेल इस्टेट, पावर, विद्युत, ऑटो मो. कंपनियों के साथ ही अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन मिल सकता है। जिससे बाजार में सुधार संभावित है। आगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ चलकर सुधार होता रहेगा। हालांकि इस्पात, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, ऑटो मो., पेट्रो रसायन आदि कंपनियों के शेयरों में दबाव बन सकता है। अन्य सेक्टरों में समर्थन मिलते रहने से सुधार भी होता रहेगा। ता. 8 को घटबढ़, ता. 9 से 12 तक सब कुछ सामान्य रहा तो अच्छा सुधार भी हो सकता है। आगामी सप्ताह घटाबढ़ी चलकर बाजार अग्रसर सुधार की स्थिति में रहना चाहिए। ता. 15 को बुध विशाखा नक्षत्र में, ता. 15 से 19 तक बैंक, सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा अर्थ व्यवस्था संबंधित शेयरों में समर्थन से बाजार में सुधार होता रहेगा। फिर भी सावधानी अपेक्षित है। आगामी सप्ताह बाजार में बिकवाली की आशंका प्रतीत हो रही है। ता. 22 को सामान्य सुधार, ता. 23 से 25 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 26 को सामान्य सुधार, ता. 31 को घटबढ़ चलकर बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है।

नवम्बर-यह मास गुरुवार कृतिका नक्षत्र वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 5 को बुध 26 घं. 38 मि. पर वक्री होगा, ता. 9 को मंगल 6 घं. 23 मि. पर धनु राशि में प्रवेश करेगा। ता. 11 को बुध 22 घं. 14 मि. पर पश्चिम में अस्त होगा। इसी तारीख को शनि 17 घं. 1 मि. पर उदय होगा। ता. 15 को सूर्य अपनी नीच राशि छोड़कर वृश्चिक राशि में 28 घं. 43 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 17 को शुक्र तुला राशि में 10 घं. 45 मि. पर प्रवेश करेगा। ता. 18 को बुध भी 10 घं. 45 मि. पर तुला में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। ता. 23 को बुध 28 घं. 47 मि. पर पूर्व में उदय होगा। ता. 27 नवंबर को बुध 16 घं. 6 मि. पर मार्गी होगा। कुल मिलाकर ग्रहीय आंकलन तथा ग्रहों के योग आदि कारणों से बाजार की स्थिति सकारात्मक प्रतीत हो रही है। विश्व के विकासशील राष्ट्रों में भी अर्थ व्यवस्था सुधार की ओर अग्रसर रहनी चाहिए। फिर भी निवेशक गण बाजार की दशा-दिशा का परिपूर्ण आंकलन करके ही स्वयं विवेक से काम लें। यह बाजार एक ऐसा बाजार है, जो मनमौजी चाल में चलता रहता है। इसका ताल्लुक अंतर्राष्ट्रीय हालात, कच्चे तेलों के अनियंत्रण, मूल्य वृद्धि तथा गलत अफवाह, किसी भी समय बाजार की दशा-दिशा बदल सकती है। इसका सदा स्मरण रखें। ता. 1 से 2 तक नई-पुरानी अर्थ व्यवस्था के शेयरों में समर्थन से सुधार, ता. 5 से 9 तक ब्लूचीफ विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में समर्थन से सुधार संभावित है। ता. 12 से 13 नवंबर तक सामान्य सुधार, ता. 14 को 12:15 तक बिकवाली, इसके बाद सुधार की धारणा ता. 16 तक तक चल सकती है। ता. 19 से 21 तक भारी बिकवाली की आशंका अधिक प्रतीत हो रही है। ता. 22 से 23 तक सामान्य सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ता. 26 को मंगल पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश करने से ता. 27 तक बाजार में अस्थिरता, ता. 28 से 30 तक सब कुछ सामान्य रहा तो इस्पात, ऑटो मोबाईल, सीमेन्ट, रीयेल इस्टेट, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में अचानक समर्थन प्राप्त होने से शेयर बाजार के सूचकांक में आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठना चाहिए। ऐसे इस माह में तेजी की अपेक्षा मंदी ज्यादा प्रतीत हो रही है। फिर भी बाजार रुख देखकर ही काम करें।

दिसंबर-यह मास शनिवार आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 6 को बुध वृश्चिक में 10:54 पर प्रवेश कर राहु सूर्य के साथ प्रतियुति करेगा। ता. 11 को शुक्र भी वृश्चिक राशि में 13:37 पर प्रवेश कर राहु बुध सूर्य के साथ चतुर्थ ग्रहीय योग बना रहा है। ता. 15 को सूर्य राशि परिवर्तन कर धनु राशि में 14:23 पर प्रवेश करेगा। ता. 18 को मंगल अपनी उच्च राशि में 10:31 पर प्रवेश करेगा। ता. 26 को बुध 20:17 पर पूर्व में अस्त होगा। ता. 27 को बुध धनु राशि में प्रवेश कर युक्ति करेगा। फलत: ग्रहीय आंकलन के अनुसार बाजार की दशा-दिशा प्राय: सकारात्मक दिशा में अग्रसर होना चाहिए। ता. 3 से 7 तक इस्पात, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, रीयेल इस्टेट, बैंक, मीडिया, फार्मा आदि कंपनियों के शेयरों में समर्थन से अच्छी तेजी। आगामी सप्ताह बाजार में घटबढ़ चलकर धारणा सुधार की ओर रहनी चाहिए। ता. 10 से 14 तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, बैंक, ऑटो मो., इस्पात, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन बाजार की ओर रहना चाहिए। यह सुधार तभी संभव है, जब सब कुछ सामान्य चल रहा हो। आगामी सप्ताह बाजार में व्यापक घटाबढ़ी। ता. 17 से 18 तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. 19 को घटबढ़, ता. 20 से 21 तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ सुधार होगी। बाजार में अस्थिरता बनी रह सकती है। अत: विशेष जोखिम लेकर काम न करें। ता. 24 को घटबढ़, ता. 25 से 28 तक सब कुछ सामान्य रहा तो इस्पात, सीमेन्ट, पावर, विद्युत, गैस, पेट्रो रसायन, ऑटो मो., रीयेल इस्टेट कंपनियों के शेयरों में समर्थन मिलने से शेयर बाजार के सूचकांक में अच्छा सुधार। परन्तु सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, दूर-संचार तथा बैंकों के शेयरों में कुछ दबाव बनेगा। कुल मिलाकर इस माह की तेजी-मंदी के संतुलन में तेजी का पलड़ा भारी है।

यह आंकलन जनवरी से दिसंबर तक ग्रहीय चाल पर आधारित है। इसे शत प्रतिशत सत्य कैसे कहा जा सकता है। मानवीय आंकलन में थोड़ी सी भूल भारी हानि का कारण बन सकता है। इसमें सत्यता का बहुमत 45 से 60 प्रतिशत तक सहायक होता है। स्थितियां तथा अंतर्राष्ट्रीय हालात, विदेशी निवेशकों का समर्थन, राजनैतिक उठापटक का परिपूर्ण ध्यान रखकर स्वविवेक से भी काम लें। इसमें लाभ-हानि की जिम्मेदारी किसी प्रकार से लेखक व प्रकाशक की नहीं होगी।

सम्पूर्ण वर्ष की तेजी-मंदी दैनिक चांसों की जानकारी आप हमारे यहां से प्राप्त कर सकते हैं। शुल्क वार्षिक ही स्वीकार होते हैं। 6 माह, 3 माह या 1 माह की रिपोर्ट नहीं भेजी जाती है। किसी प्रकार की ट्रायल की याचना न करें। साधारण सेवा शुल्क 12 माह 15500 रु०, मध्यम 20500 रु०, स्पेशल 25500 रु०, सर्वोत्कृष्ट 30500 रु० निर्धारित हैं। शेयर बाजार तथा कमोडिटी ट्रेडिंग की सम्पूर्ण उत्कृष्ट रिपोर्ट 50,000 रु० निर्धारित है। अचूक चांसों की जानकारी मो.: 09431486216 तथा 09801873719 पर दी जाती है। लिखित रूप में रिपोर्ट, दैनिक गतिविधियों की जानकारी भी भेजी जाती है।

लेखक: पं. दुनदुन शास्त्री

शेयर बाजार तेजी-मंदी समीक्षा सं. 2069 सन् 2012-13 ई.

गत् वर्ष की अपने शेयर बाजार के आकलन में हमने स्पष्ट रुप से कहा था कि 'मंगल तथा शनि का एक्जैक्ट 90 अंशों का का केन्द्र योग 25 अगस्त 2011 में 16:16 पर बनेगा. इसी समय से शेयर बाजार की चलती लाईन में परिवर्तन होगा.पाठकगण स्वयं देख सकते है कि जो शेयर बाजार अभी तक निगेटिव जा रहा था, इसके बाद ही मजबूत होने लगा तथा 08 दिनों के ट्रेडिंग सैशन में ही सैसेंक्स में 1010 अंको की बढ़ोत्तरी हुई. इसी प्रकार हमारा अन्य कथन कि '04 जून 2011 तक अर्थात गुरु के उनकी तेजीकारक राशि में 13:57 पर प्रवेश समय तक शनि एवं गुरु का मंदीकारक राशियों में गोचर शेयर बाजार में गिरावट का रुख बनाये रखेगा. सत्य सिद्ध हुआ. वास्तव में वर्ष 2011 के प्रारम्भ से 04 जून के मध्य तक सैंसेक्स में 2245 अंकों की गिरावट आई. कोई भी पाठक उक्त तथ्यों कि पुष्टि विभिन्न पत्रिकाओं एवं पंचागों में छपे हमारे लेखों एवं सैसेंक्स के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर कर सकता है. वास्तव में इससे ज्योतिष की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है. साथ ही यह मानने अथवा कहने का कोई आधार नही बनता कि ग्रहों का शेयर बाजार अथवा व्यापारिक गतिविधियों पर कोई प्रभाव नही पड़ता.

वर्ष 2012-13 का शेयर बाजार का आकलन उन्हीं ज्योतिषीय सिद्धांतों, मतों एवं परम्परा तथा ग्रह गोचर पर आधारित है जिन की गणना के आधार पर हमारा शेयर बाजार का आकलन पूर्व में बहुचर्चित, सर्वत्र प्रशंसित तथा सराहनीय रहा है. विभिन्न संचार माध्यमों से दिन प्रतिदिन अनेक पाठकों ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है. पूर्व की भांति इस वर्ष भी हम इस आलेख में वर्ष के प्रत्येक मंगलवार के लिये शेयर बाजार का आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं, उसका कारण जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके है, मात्र इतना है कि अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है. अपने संशोधन तथा शोध के उपरान्त हम भी इस निर्णय पर पहुंचे है कि मंगल ग्रह का शेयर बाजार पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है. हमारा प्रयास सदैव शोधात्मक कार्य को प्रस्तुत करना रहा है ताकि वह अनेकानेक प्रकार से विद्वत जनों के लिये न केवल उपयोगी हो वरन विचारोत्तेजक भी हो तथा विद्वान पाठकों को इस दिशा में और भी अधिक परिष्कृत रुप में कार्य करने के लिये प्रेरित करें. ध्यान रहे कि बाजार के आकलन में प्रतिशत में बताई गई तेजी मंदी इन्ट्राडे है, बाजार किसी दिन तेजी में जाने के उपरान्त भी पिछले दिन की तुलना में गिरकर बंद हुआ हो सकता है. वर्ष 2012 के प्रारम्भ से अन्त तक शनि, हर्षल तथा नेपे. जैसे बड़े ग्रह मंदी कारक राशियों में गोचर कर रहे होंगे. प्लूटो का गोचर जिस राशि से हो रहा है वह न तो तेजी की राशि है और न ही मंदी की. अत: राशि स्थिति से प्लूटो का शेयर बाजार पर प्रभाव न्यूनतम होगा परन्तु प्लूटो का अन्य ग्रहों के साथ दृष्टि योग प्लूटो के प्रभाव के शेयरों को प्रभावित करता रहेगा. 08 मई दोपहर 14:18 से सायन गुरु भी इन ग्रहों का साथ देते हुए अपनी मंदीकारक राशि मेष में गोचरवश आ जायेंगे. अत: 08 मई 2012 से अर्थात गुरु के उनकी मंदीकारक राशि में दोपहर 14:18 पर प्रवेश समय से शनि एवं गुरु का मंदीकारक राशियों में गोचर शेयर बाजार में गिरावट का रुख बनायेगा.

वर्ष 2012 में शेयर बाजार अधिकतर वोलेटिलीटी में रहेगा तथा कई अवसरों पर भारी गिरावट आयेगी. वर्ष पर्यन्त चाय तथा टोबेको सैक्टर की कम्पनियों के शेयरों में मजबूती रहेगी. टैक्स्टाईल, सीमेंट, स्टील, इन्फास्ट्रक्चर, हैवी इन्जीनियरिंग तथा ऐनर्जी सैक्टर में अत्याधिक वोलेटिलीटी रहेगी. हमारी सलाह कि इन सैक्टर में अत्यन्त सावधानी पूर्व करे.

20 मार्च : लगभग 70 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 14 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 16 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ. गैमन इण्डिया में तेजी बनेगी. सीमेंट, स्टील, इन्फ्रास्ट्रक्चर, टिन, रबर, लेदर, मशीनरी उद्योग, कापर तथा जिंक सैक्टर के शेयर कमजोर रहेंगे.

27 मार्च : लगभग 48 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 32 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अभिषेक इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिंन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी तथा टी, टोबेको सैक्टर के शेयरों में तेजी बनेगी. शुगर तथा टैक्स्टाईल सैक्टर में गिरावट आयेगी. सीमेंट, स्टील, इन्फास्ट्रक्चर, सैक्टर के शेयर कमजोर रहेंगे.

03 अप्रैल : लगभग 40 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 42 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल के शेयरों में तेजी बनेगी. वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स के शेयर कमजोर रहेंगे.

10 अप्रैल : लगभग 48 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 32 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, बैंक आफ बरोदा, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक तथा टी, टोबेको सैक्टर के शेयर मजबूत रहेंगे. अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो माटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा. मारुती उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस. के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स के शेयर कमजोर रहेंगे.

17 अप्रैल : लगभग 40 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई

परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. टी, टोबेको सैक्टर के शेयरों में तेजी आयेगी. इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, गोडफे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में सुधार होगा. रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया. बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी के शेयर कमजोर रहेंगे.

24 अप्रैल : लगभग 42 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 42 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 16 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, ओरियेन्टल बेंक आफ कामर्स, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर तथा टी, टोबेको सैक्टर के शेयर मजबूत रहेंगे. अभिषेक इण्डस्ट्रीज, आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, आलोक इण्डस्ट्रीज, बाम्बे डाईग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर में गिरावट रहेगी.

01 मई 2012: लगभग 32 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 28 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.12 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

टी, टोबेको सैक्टर के शेयर मजबूत रहेंगे. इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिक, गोडफे फिलिप्स, आई टी सी के शेयर कमजोर रहेंगे.

08 मई 2012: लगभग 32 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 28 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.70 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत गिरकर बंद होगा.

मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, टी, टोबेको सैक्टर के शेयर मजबूत होंगे. निकोलस पीरामल, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम लैब्स. वाईथ, अस्तरा माइको, एम टी एन एल, बी एस एन एल. अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो माटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स में गिरावट आयेगी.

15 मई 2012: लगभग 40 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. सेन्टीमेन्टस गिरावट के रहेंगे. मार्केट 0.60 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया के शेयर वोलेटाईल रहेंगे. अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, अलाहाबाद बैंक, आंध्रा बैंक, बैंक आफ बरोदा, बैंक आफ राजस्थान, कैनरा बैंक, कारपोरेशन बैंक, फैडरल बैंक, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक के शेयरों में गिरावट आयेगी.

22 मई 2012: लगभग 32 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 52 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 16 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. सेन्टीमेन्टस गिरावट के रहेंगे. मार्केट 0.70 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर के शेयर मजबूत होंगे. गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, एशियन होटल्स, ई आई एच, होटल लीला वेंन्चर, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट रहेगी.

29 मई 2012: लगभग 50 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 25 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.70 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर तथा टी, टोबेको सैक्टर के शेयर मजबूत होंगे. अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिविस लैबोरेट्रीज, डा रैड्डीज लैब्स, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, एन डी टी वी, टी वी 18, टी वी टुडे, जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में गिरावट रहेगी.

05 जून 2012: लगभग 50 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 32 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.60 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास, वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया के शेयरों में तेजी आयेगी. रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम लैब्स. वाईथ, अस्तरा माइको, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल. अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो में गिरावट आयेगी.

12 जून 2012: लगभग 40 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास के शेयरों में तेजी आयेगी. हिन्दुस्तान जिक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, हीरो माटर्स कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, स्वराज माजदा, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा में गिरावट आयेगी.

19 जून 2012: लगभग 40 प्रतिशत शेयरों में तेजी तथा 40 प्रतिशत शेयरों में गिरावट के योग होने से तेजी तथा मंदे के शेयरों का अनुपात बराबर रहेगा. 20 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, टाटा स्टील, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स में तेजी बनेगी. गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में गिरावट आयेगी.

26 जून 2012: लगभग 25 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 50 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया में तेजी बनेगी. अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, कोटक महिंद्रा बैंक, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स, पंजाब नेशनल बैंक में गिरावट आयेगी.

03 जुलाई : लगभग 16 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 50 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा.

बजाज हिन्दुस्तान, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, एच डी एफ सी बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, ओरियेन्टल बैंक आफ कामर्स,, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया में गिरावट आयेगी. एस्सार स्टील, मद्रास सीमेंट, एल जी बालाकृष्णण, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी, रेड्डिको खेतान का प्रदर्शन अतिसाधारण रहेगा.

10 जुलाई 2012: स्टाक मार्केट में मंदे का रुख चलता रहेगा. आज लगभग 16 प्रतिशत शेयरों में तेजी रहेगी. 68 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 16 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज का प्रदर्शन स्ट्रांग रहेगा. रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट में गिरावट आयेगी.

17 जुलाई 2012: स्टाक मार्केट में कुछ सुधार होता दिखाई पड़ेगा. 32 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 56 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 12 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत साधारण ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा इतना ही गिरकर लगभग फ्लैट बंद होगा. अभी भी अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

एशियन होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में सुधार होगा. महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर में गिरावट आयेगी.

24 जुलाई 2012: लगभग 24 प्रतिशत शेयर तेजी की और जायेंगे. 65 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 11 प्रतिशत शेयरों में कोई प्ररिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.60 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

जी टेलीफिल्मस, भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो मार्टस कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग में तेजी बनेगी.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, ई आई एच, होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, रेड्डिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास के शेयर गिरावट में रहेंगे.

31 जुलाई 2012: लगभग 24 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 58 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

डाबर फार्मा, ल्यूपिन, नोवार्टिस, आर्किड एण्ड फार्मा, रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, फोर्स मोटर्स, हीरो मार्टस कार्प, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स में सुधार होगा. एस्सार स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान में गिरावट आयेगी.

07 अगस्त 2012 : लगभग 24 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 52 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 24 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.075 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, आरती ड्रग, एलैम्बिक, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो में मजबूती आयेगी. आदित्य बिरला नोवो, अरविन्द मिल्स, इण्डो रामा सिन्थैटिक, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, एशियन होटल्स, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज में गिरावट आयेगी.

14 अगस्त 2012 : लगभग 32 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 36 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 32 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन मजबूती में जायेंगे. वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया में वोलेटिलिटी रहेगी. गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, टी, टोबेको सैक्टर में गिरावट आयेगी.

21 अगस्त 2012 : स्टाक मार्केट में सुधार होता दिखाई देने लगेगा. परन्तु अभी भी लगभग मंदे के शेयरों का अनुपात 64 प्रतिशत होने से रुख गिरावट का ही रहेगा. 32 प्रतिशत शेयरों में सुधार होकर मजबूती आयेगी. 10 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.21 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

रैन्बैक्सी लैबोरेट्रीज, साशन कैम, सन फार्मा, सुवैन लाईफ साईन्सेज, टौरेन्ट फार्मा, युनिकैम लैब्स. वाईथ, अस्तरा माइको, अव्या ग्लोबल कनैक्शन, भारती टेलीवेन्चर्स, एम टी एन एल, बी एस एन एल, अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो मार्टस कार्प में मजबूती आयेगी. एस्सार स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई

प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी में गिरावट आयेगी.

28 अगस्त 2012 : लगभग 32 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 44 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 24 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

टाटा स्टील, जे के लक्ष्मी सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, धर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर में तेजी आयेगी. टी सैक्टर की कम्पनियों - टाटा काफी, टाटा टी, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, टोबेको में गिरावट रहेगी.

04 सित. 2012 : लगभग 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 26 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 24 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा. अधिकतर सैक्टर गिरावट में रहेंगे.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, एस आर एफ, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर में तेजी बनेगी. अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी, बैंक आफ बरोदा, बैंक आफ इण्डिया, कारपोरेशन बैंक में गिरावट आयेगी.

11 सित. 2012 : लगभग 43 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 33 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 24 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

इण्डियन होटल्स, जे पी होटल्स, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में तेजी बनेगी. एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, महिन्द्रा गैस्को, नागार्जुन कंसट्रक्शन, यूनीटैक, मिर्जा इन्टरनेशनल, बाटा इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान कापर, निटको टाईल्स में गिरावट बनेगी.

18 सित. 2012 : लगभग 43 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 43 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 14 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

टाटा स्टील, उत्तम स्टील ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी में तेजी बनेगी. अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिक, गोडफ्रे फिलिप्स, आई टी सी में गिरावट बनेगी.

25 सित. 2012 : लगभग 43 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 50 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 07 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया के शेयर वोलेटाईल रहेंगे. पंजाब नेशनल बैंक, एस बी आई, यूनियन बैंक आफ इण्डिया, एक्सिस बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बाल में गिरावट बनेगी.

09 अक्टू. 2012: लगभग 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 35 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 15 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत गिरकर बंद होगा.

अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ, टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिक, आई टी सी, कोटक महिद्रां बैंक, ओरियेन्टल बेंक आफ कामर्स, पंजाब नेशनल बैंक, एस बी आई में तेजी बनेगी. हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, टिन प्लेट, हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एशियन होटल्स, इण्डियन होटल्स, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, टी, टोबेको सैक्टर में गिरावट आयेगी.

16 अक्टू. 2012: लगभग 65 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 17 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.27 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा साधारण ऊपर ऊठकर बंद होगा.

एस्सार स्टील, ए सी सी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, धर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी, रेडिको खेतान, इण्डो रामा सिन्थैटिक, वैलस्पन इण्डिया, धामपुर शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी में तेजी बनेगी. एशियन होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट आयेगी.

23 अक्टू. 2012: लगभग 56 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 26 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत साधारण ऊपर ऊठकर बंद होगा.

उत्तम स्टील, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, जे के लक्ष्मी सीमेंट केशेयर में वोलेटीलिटी रहेगी. टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी रेडिको खेतान में तेजी बनेगी. हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया, एच सी सी, आई वी आर सी एल इन्फास्ट्रक्चर, जैप्रकाश एसोशियेट, महिन्द्रा गैस्को के शेयर कमजोर सिद्ध होगे.

30 अक्टू. 2012: शेयर मार्केट में तेजी का रुख बदलता दिखाई देगा. लगभग 65 प्रतिशत शेयर साधारण तेजी की ओर जायेंगे. 26 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 09 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत साधारण ऊपर ऊठकर बंद होगा.

सिन्डिकेट बैंक, यूको बैंक, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल के शेयर मजबूत रहेंगे. अरविन्द मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर में गिरावट आयेगी.

06 नवं. 2012 : लगभग 57 प्रतिशत शेयर साधारण तेजी की ओर जायेंगे. 35 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 08 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत साधारण ऊपर ऊठकर बंद होगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान

जिंक, आई टी सी शेयर मजबूत रहेंगे. चाय एवं टोबैको सैक्टर की कम्पनियाँ - गोडफ्रे फिलिप्स के शेयर कमजोर रहेंगे.

13 नवं. 2012 : दीपावली तथा 14 नव. में प्रतिपदा के कारण शेयर बाजार बंद रहेगा. केवल मुहूर्त सेल के लिये बाजार खुलेगा जिसका निर्णय बाद में होगा अत: 15 नव. गुरुवार का फल दिया जा रहा है.

15 नवं. 2012 : शेयर मार्केट में तेजी का रुख बनता दिखाई देगा. लगभग 75 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 17 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 08 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. परन्तु मार्केट 0.15 प्रतिशत निगेटिव खुलेगा तथा साधारण निगेटिव रहकर बंद होगा.

टाटा स्टील, ए सी सी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, एल जी बालाकृष्णण, ओरियेन्टल होटल्स, ताज जी वी के होटल्स, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में तेजी रहेगी. वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर के शेयरों में गिरावट आयेगी.

20 नवं. 2012 : लगभग 56 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 26 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 18 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत निगेटिव खुलेगा तथा 1.20 प्रतिशत साधारण ऊपर उठकर बंद होगा.

ल्यूपिन, मार्कसेन फार्मा, मैट्रिक्स लैब्स, मर्क, नाटको फार्मा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, पंजाब ट्रेक्टर्स, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, एन डी टी वी, टी वी 18, गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, चाय तथा टोबैको सैक्टर में तेजी बनेगी. इण्डो रामा सिन्थैटिक, महावीर स्पिनिंग मिल्स, इण्डियन होटल्स, जे पी होटल्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर के शेयरों में गिरावट आयेगी.

27 नवं. 2012 : शेयर बाजार का रुख तेजी का बनेगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर उठकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत साधारण ऊपर उठकर बंद होगा.

हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ. गैमन इण्डिया, कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स में तेजी बनेगी. सीमेंट, इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्टील सैक्टर कमजोर रहेंगे.

04 दिसं. 2012: शेयर बाजार में तेजी का रुख रहेगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर उठकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत गिरकर बंद होगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, अरविन्द मिल्स, महावीर स्पिनिंग मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, असाई इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर के शेयरों में तेजी बनेगी. जे के लक्ष्मी सीमेंट, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स के शेयरों में गिरावट आयेगी.

11 दिसं. 2012: शेयर बाजार में तेजी का रुख बना रहेगा. लगभग 75 प्रतिशत शेयरों में तेजी बनने से बाजार में बुल्स का बोलबाला रहेगा. ओरियेन्टल होटल्स, जे पी होटल्स, यू बी, मोहन मीकिन्स, रेडिको खेतान, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केंटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में तेजी रहेगी. चाय तथा टोबैको सैक्टर की कम्पनियों का प्रदर्शन उत्तम रहेगा.

18 दिसं. 2012: शेयर बाजार में बुल्स का बोलबाला रहेगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर उठकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर उठकर बंद होगा. सिक्योरिटीज, वरुण शिपिंग, कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स तथा चाय तथा टोबैको सैक्टर गवर्नमेन्ट में तेजी रहेगी. इन्फ्रास्ट्रक्चर, सीमेंट तथा स्टील सैक्टर कमजोर रहेंगे.

25 दिसं. 2012: शेयर बाजार की तेजी पर ब्रेक लगेगा. लगभग 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 25 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर उठकर बंद होगा.

अरविन्द मिल्स, नाहर एक्सपोर्ट, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, असाई इण्डिया ग्लास, जी एम डी सी, सेसा गोआ. गैमन इण्डिया, हिन्दुस्तान कापर में तेजी बनेगी. इन्फ्रास्ट्रक्चर, सीमेंट तथा स्टील सैक्टर कमजोर रहेंगे.

01 जनवरी 2013: लगभग 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 25 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर उठकर बंद होगा.

हिन्दुस्तान जिंक, स्टरलाईट इण्डस्ट्रीज, रुचि सोया, जी एम डी सी, नाहर स्पिनिंग, राजस्थान स्पिनिंग, रेमण्ड, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी के शेयरों में मजबूती आयेगी. चाय, टोबैको सैक्टर तेजी में रहेंगे. भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केंटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग. कन्टेनर कारपोरेशन, असाई इण्डिया ग्लास में गिरावट आयेगी.

08 जनवरी 2013: बाजार में बुल्स का प्रभाव बढ़ेगा. लगभग 58 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 17 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट साधारण गिरकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर उठकर बंद होगा.

वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर, ई आई डी कन्फैक्शनरी, आसी इण्डिया ग्लास, हिन्दुस्तान कापर, जी ई शिपिंग, मर्केंटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन में तेजी बनेगी. अशोका लैलेण्ड, बजाज आटो, आईशर मोटर्स, फोर्स मोटर्स, हीरो मोटर्स कार्प के शेयर साधारण रहेंगे.

15 जनवरी 2013: बाजार अभी बुल्स के प्रभाव में ही रहेगा परन्तु धीरे धीरे गिरावट का प्रभाव दिखाई देने लगेगा. लगभग 58 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 17 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट साधारण गिरकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर उठकर बंद होगा.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स के शेयरों में मजबूती बनेगी. गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एण्ड सिक्योरिटीज, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी, जय श्री टी में गिरावट आयेगी.

22 जनवरी 2013: प्राय: ही 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 33 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 17 प्रतिशत शेयरों

में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट साधारण गिरकर खुलेगा तथा 0.075 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफे फिलिप्स, आई टी सी के शेयरों में मजबूती रहेगी. मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट, श्री सीमेंट, टैक्समेको, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, लार्सन एण्ड टूब्रो, प्रज इण्डिया, शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी में गिरावट आयेगी.

29 जनवरी 2013: प्राय: ही 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 25 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

हिन्दुस्तान आयल एक्सप्लोरेशन, ओ एन जी सी, एग्रोटैक फूड, रुचि सोया, जी एम डी सी, सेसा गोआ, गैमन इण्डिया के शेयर स्ट्रांग रहेंगे. एस्सार स्टील, सनफ्लैग आयरन एण्ड स्टील, टाटा स्टील, उत्तम स्टील के शेयर गिरावट में रहेंगे. ए सी सी सीमेंट, अम्बुजा सीमेन्ट ईस्टर्न, मद्रास सीमेंट, प्रिज्म सीमेंट में वोलेटिलीटी रहेगी.

05 फरवरी 2013: प्राय: ही 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 43 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 07 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत गिरकर खुलेगा तथा 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

स्टील, सीमेंट, इन्फास्ट्रक्चर सैक्टर कमजोर रहेंगे. टैक्स्टाईल, शुगर पर्सनल हैल्थ केयर सैक्टर में सुधार होगा. वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्प्टन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया में तेजी बनेगी. शान्ति गियर्स, थर्मैक्स, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी, टाटा टी, विलियमसन टी जय श्री टी में गिरावट आयेगी.

12 फरवरी 2013: प्राय: ही 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 43 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 07 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नहीं होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत गिरकर बंद होगा.

होटल लीला वैन्चर, इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स में तेजी बनेगी. चाय तथा टौबेको सैक्टर स्ट्रांग रहेगे. स्टील, सीमेंट, इन्फ्रास्ट्रक्चर सैक्टर कमजोर रहेगे. कोलगेट पामोलिव, डाबर, गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल का प्रदर्शन अच्छा नही रहेगा.

19 फरवरी 2013: प्राय: ही 48 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 43 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 09 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

अपोलो टायर्स, बालकृष्ण इण्डस्ट्रीज, जे के इण्डस्ट्रीज, एम आर एफ. टिन प्लेट इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान जिंक, गोडफे फिलिप्स, आई टी सी. एच डी एफ सी बैंक, जी एम डी सी, सेसा गोआ. गैमन इण्डिया, आई सी आई सी आई बैंक में तेजी रहेगी. इण्डियन होटल्स, ओरियेन्टल होटल्स, भारती शिपयार्ड, एस्सार शिपिंग, जी ई शिपिंग, मर्केटर लाईन्स, शिपिंग कार्पोरेशन, वरुण शिपिंग में गिरावट आयेगी.

26 फरवरी 2013: लगभग 25 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 50 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 25 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर बंद होगा.

वीडियोकोन, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्प्टन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स, सोलेक्ट्रोन सैन्टम इलैक्ट्रोनिक्स, अस्तरा माइको में तेजी बनेगी. टाटा स्टील, उत्तम स्टील, ए सी सी सीमेंट, एल एम डब्ल्यू, एल जी बालाकृष्णण, भारत अर्थ मूवर्स, आल्सटम प्रोजेक्टस, इन्जीनियर्स इण्डिया, लार्सन एण्ड टूब्रो,, सी सी आई प्रोडक्टस, टाटा काफी में गिरावट आयेगी.

05 मार्च 2013: बियरिश मार्केट में 42 प्रतिशत शेयर तेजी की और जायेंगे. 50 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 08 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.30 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा 0.15 प्रतिशत गिरकर बंद होगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, काम्प्टन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया में तेजी बनेगी. गोदरेज कन्ज्यूमर प्रोडक्ट, हिन्दुस्तान लीवर, मेरिको, निरमा, प्रोक्टर एण्ड गैम्बल, वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी में गिरावट आयेगी. अधिकतर सैक्टर गिरावट का रुख पकड े गे.

12 मार्च 2013: 25 प्रतिशत अस्त तथा 17 प्रतिशत वक्री ग्रहों से सभी व्यापारिक गतिविधियों में परिवर्तन होगा. शेयर बाजार भी इससे अछूता नहीं रहेगा. 33 प्रतिशत शेयर तेजी की और जायेंगे. 58 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 09 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा लगभग फ्लैट बंद होगा.

एम्को, हैवेल्स इण्डिया, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, आप्टो सर्किट, सीमेन्स में तेजी बनेगी. केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा, डिव्सि लैबोरेट्रीज, डा रैड्डीज लैब्स, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा. मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टी वी एस मोटर्स, एडलैब फिल्मस में गिरावट आयेगी.

19 मार्च 2013: 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 42 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 08 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा लगभग फ्लैट बंद होगा.

गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, ए बी बी, भारत बिजली, बी एच ई एल, काम्पटन, एम्को, हैवेल्स इण्डिया में तेजी बनेगी. एलैम्बिक, अरबिन्दो फार्मा, केडिला हैल्थ केयर, सिप्ला, डाबर फार्मा, डिस्मैन फार्मा में गिरावट आयेगी.

26 मार्च 2013: 50 प्रतिशत शेयर तेजी की ओर जायेंगे. 34 प्रतिशत शेयर निगेटिव रहेंगे. 16 प्रतिशत शेयरों में कोई परिवर्तन नही होगा. मार्केट 0.15 प्रतिशत ऊपर ऊठकर खुलेगा तथा लगभग फ्लैट बंद होगा.

वैलस्पन इण्डिया, बजाज हिन्दुस्तान, बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, मवाना शुगर, रेणुका शुगर के शेयरों के प्रदर्शन में सुधार होगा. बजाज आटो, हीरो मोटर्स कार्प, एच एम टी, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, मारुती उद्योग, एडलैब फिल्मस, बालाजी टेली फिल्मस, के सेरा सेरा प्रोडक्शन्स, जी टेलीफिल्मस. भारत एल्यूमीनियम, हिण्डाल्को, मद्रास एल्यूमिनियम में गिरावट आयेगी.

शेयर बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित हैं तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है. बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है. बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आकलन कर लेना हितावह है. ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक किसी भी रुप में जिम्मेदार नही होगें. बाजार की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिर्पोट के लिये लेखक से उनके स्थायी आवास सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड, वडोदरा (गुजरात), पिन - 390009 मो 095 7433 7962 पर अथवा pmummy@gmail.com सम्पर्क किया जा सकता है.

प्रवीन कुमार जैन

व्यापारिक भविष्य फल संवत् 2069 सन् 2012-13

गत अनेक वर्षों से ज्योतिष जगत के सर्वश्रेष्ठ पंचाग-आर्यभट्ट में प्रकाशित हमारा कमोडिटी बाजार का ग्रह गोचर आधारित आकलन सर्वथा सत्य होकर पूर्वाचार्यो के सिंद्धातों की सत्यता एवं सफलता को प्रतिष्ठित कर रहा है. वास्तव में हमारा प्रयास तो मात्र ज्योतिष की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना भर रहा है. पूर्वाचार्यों के अध्ययन, मनन एवं विश्लेषण तक पहुंचना तो दूर हम उसको छूने भर की कल्पना भी नहीं कर सकते. इस वर्ष पुनः इन्हीं पृष्ठों के माध्यम से हम कमोडिटी बाजार की ई. वर्ष 2012-13 की संभावित गतिविधियों का आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं. ज्योतिष जगत की अन्य विधाओं के साथ वैदिक ज्योतिष का तालमेल हमने नहीं किया है अतः प्रस्तुत आकलन पूर्णतया वैदिक ज्योतिष पर आधारित है.

चैत्र मास की गुरुवारी अमावस्या तथा शुक्रवारी पूर्णिमा-दोनों ही सौम्य वारों की होने से चैत्र मास में प्रायः ही सभी वस्तुओं में गिरावट रहेगी. व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य मंदे का रुख रहेगा. रसकस में तेजी बनेगी. अमावस्या का घट्यात्मक मान तथा पूर्णिमा घट्यात्मक मान रुई में गिरावट का योग बना रहा है. चैत्र मास में मेष राशि से गुरु तथा शुक्र का गोचर रुई, सूत, कपास तथा तैल का स्टाक दूसरे महीने से लाभकारी रहेगा.

चैत्र शुक्ल पक्ष : 23 मार्चः प्रतिपदा के नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से कम होकर रुई तथा चांदी में तेजी का योग बना रहा है. चैत्र शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी प्रतिपदा धन धान्यों की वृद्धि में सहायक होने से सामान्य जन के लिये हितकारी सिद्ध होगी.

चैत सुदी पड़वा दिना सोम शुक्र गुरुवार । बढ़ै धान्य धन सम्पदा सुखी रहै संसार ।।

24 मार्च : शनिवारी द्वितीया रुई एवं चांदी में तेजी का योग बना रही है. 25 मार्च : शुक्र कृतिका में सरसों, उड़द के उत्पादन में कमी आयेगी परन्तु अन्य धान्यों का उत्पादन सामान्य रहेगा. सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, वस्त्र, हींग, तिल, तैल, सरसों में मंदा रहेगा. 26 मार्च : वक्री बुध पू.भाद्रपद में अन्न की उपलब्धता में वृद्धि होगी. सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा धान्यों के मूल्यों में तेजी आयेगी. रुई में घटाबढ़ी चलेगी. आरोग्यता एवं कुशलता की हानि होगी. 27 मार्च : मंगलवारी पंचमी से रुई एवं चांदी में तेजी का योग बन रहा है. 28 मार्च : पंचमी तिथि वृद्धि शुक्र वृष में बुधोदय वक्रावस्था में मीन राशि पू.भाद्रपद नक्षत्र रुई में मंदा करेगा. धान्यों में तेजी बनेगी. सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा. 29 मार्च : गुरुवारी षष्ठी से दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी. 31 मार्च : सूर्य रेवती में-रुई, चावल, चांदी, नमक, सरसों, अलसी, लाख, गेहूँ, जौ चना आदि में तेजी.

अप्रैल मासः मास का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल पक्ष की रविवारी नवमी से वैशाख शुक्ल पक्ष की सोमवारी नवमी तक है. 01 अप्रैल : चैत्र शुक्ल पक्ष की रविवारी नवमी से धान्यों के भावों में तेजी का योग बन रहा है. 02 अप्रैल : वक्री बुध कुंभ में 16:02 परः अन्न के भावो में घटबढ़ चलेगी. रसकस में तेजी आकर मंदा होगा. 04 अप्रैल : बुध मार्गी कुंभ राशि पू. भाद्रपद में - सोना, सुपारी, सरसों, सोंठ, लाख तथा चमड़ा में तेजी बनेगी. 06 अप्रैल : बुध मीन मेंः शुक्रवारी पूर्णिमा रुई में घटबढ़ तथा चांदी में तेजी बनायेगी. घी, गुड़, खांड़, तैल, मूंगफली अरण्डा, बिनोला तथा रुई में मंदा आयेगा.

वैशाख मास : वैशाख मास का शुभारम्भ शनिवारी प्रतिपदा से हुआ है. कृष्ण पक्ष में षष्ठी का क्षय होकर त्रयोदशी की वृद्धि हुई है. एक ही पक्ष में तिथि का क्षय होकर तिथि की वृद्धि हो जाना पक्ष के शुभत्व को प्रभावित कर रहा है. मास के पांच शनिवार तथा पांच ही रविवार अशुभफलकारक हैं. सभी वस्तुओं में तेजी रहेगी. अमावस्या तथा पूर्णिमा घट्यात्मक मान रुई में रुई, तैल, गुड़, खांड़ में तेजी का योग बना रहा है.

वैशाख कृष्ण पक्ष : 08 अप्रैल : शुक्र रोहिणी मेंः वैशाख कृष्ण रविवारी द्वितीया चांदी, रुई में साधारण तेजी बनायेगी. नारियल, द्राक्ष, सुपारी, सोना, चांदी में गिरावट आयेगी. 11 अप्रैल : वैशाख कृष्ण षष्ठी का क्षय रुई में तेजी बनायेगा. 13 अप्रैल : सूर्य अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में बुध उ . भाद्रपद में : अन्नों में तेजी लायेगा. सभी वस्तुऐं मंहगी होंगी. सोना, चांदी, अलसी, अनाज, लोहा, तांबा, सूत, कपड़ा, सुपारी, नारियल, लाल चन्दन, मेथी, लौंग, इलायची, हींग, अरण्डा, ईख, तिल, तेल, तिलहन, कपास, बारदाना, फलों आदि सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी. गुड़, खांड, चांदी, रुई में घटबढ़ चलेगी तथा रुई, कपास में पहले मंदा आकर बाद में तेजी आयेगी. धान्य एवं चावलों के मूल्यों में समता रहेगी. शुक्रवारी संक्रांति से गुड़ तथा कार, स्कूटरों, मोटर साईकिलों आदि वाहनों के मूल्यों में बढ़ोत्तरी होगी. घोड़ा, ऊँट तथा हाथियों के भावों में भी तेजी आयेगी. मेष के सूर्य से छः मास तक गुड़, घी, दूध, रुई कपास में तेजी रहेगी.

शुक्रवार के दिन कभी सूर्य संक्रमण होय ।हाथी, घोड़ा, ऊँट गुड़ में मंहगापन होय ।। मेष राशि में सूर्य का जब होता है वास ।खांड़ तेज तिल तेज हो रुई, सूत, कपास ।। चंद्र सूर गुरु तीन का एक राशि पर वास ।कपड़ा जौ अरु मूंग में लाभ सातवें मास ।।

14 अप्रैल : मंगल मार्गी सिंह राशि में : रुई में मंदा होगा. 15 अप्रैल : वैशाख कृष्ण रविवारी दशमी धान्यो एवं घी में तेजी तथा रुई में गिरावट का योग बना रही है. 19 अप्रैल : वैशाख कृष्ण गुरुवारी त्रयोदशी की वृद्धि रुई में गिरावट लायेगी. 20 अप्रैल : रात्रि 21:31 से 23 अप्रैल प्रातः 10:25 तक की अवधि में सूर्य चन्द्रमा एवं गुरु ग्रहों के मेष से गोचर में कपड़ा, जौं एवं मूंग का संग्रह सातवें मास में लाभदायक रहेगा. ध्यान रहे कि योग के समय चन्द्रमा के अस्त होने से योग का फल पूर्णरूपेण घटित नहीं होगा तथा फल में किंचित न्यूनता रहेगी. बैशाख कृष्ण शुक्रवारी चतुर्दशी उत्तम कृषि उत्पादन के कारण खाद्य पदार्थों की मंहगाई दर में कमी का संकेत दे रही है. भविष्य भारती के मत से :

वदि चौदस वैशाख में गुरु अथवा भृगुवार । उत्तम उपजेगी फसल मन्दा चलै बाजार ।।

21 अप्रैल : बैशाख शुक्ल पक्ष में रुई में गिरावट रहेगी. बैशाख कृष्ण अमावस्या का अश्विनी नक्षत्र मध्यम शुभ फलों का संकेत कर रहा है. शनिवारी अमावस्या अन्न की उपलब्धता में अत्याधिक कमी करेगी तथा भावों में घटाबढ़ी रहेगी. गेहूँ, जौ, चना, मूंग आदि का स्टाक आगे चलकर तेजी आने के कारण लाभप्रद रहेगा.

बैशाख शुक्ल पक्ष : 23 अप्रैल : सोमवारी द्वितीया से रुई एवं चांदी में गिरावट आयेगी. 24 अप्रैल मंगलवारी तृतीया से रुई एवं चांदी में तेजी रहेगी. 25 अप्रैल : शुक्र मृगशिरा में : गुड़, खांड, शक्कर तथा सभी प्रकार के धान्यों में तेजी आयेगी परन्तु गेहूँ, जौ, चना में मंदा रहेगा. 26 अप्रैल : बुध रेवती मेंः चांदी, गुड़, खांड, घी, तैल, सरसों, तिल तथा तिलहनों में मंदा आयेगा. लाल मिर्च, गेहूँ, मजीठ, लाल चन्दन, गेरू, कुंकम, केसर में तेजी बनेगी. गुरुवारी बैशाख शुक्ल पंचमी से अन्न उपलब्धता संतोष जनक रहेगी. 27 अप्रैल : सूर्य भरणी में - सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं, चावल, गेहूँ, जौ, चना, मोंठ, अलसी, सरसों, राई, गुड़, खांड, घी में तेजी आयेगी. रुई में मंदा रहेगा. शुक्रवारी षष्ठी दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनायेगी.

मई मास : मास का प्रारम्भ वैशाख शुक्ल पक्ष की मंगलवारी दशमी से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की गुरुवारी दशमी तक है. 03 मई :

धान्य तथा रुई में मंदा चलेगा. सोना, चांदी, गुड़, खांड़ घटाबढ़ी चलेगी. 05 मई : बुध मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में: चांदी, घी, तैल, तिल, तिलहन, सूत, अलसी, ईख, गुड़, खांड, शक्कर, सरसों तथा रसकसों के मूल्यों में गिरावट बनायेगा. गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मोंठ, मूंग आदि कृषि उत्पादों में तेजी आयेगी. सोना के भावों में समता रहेगी. 06 मई : रविवारी पूर्णिमा गेहूँ, गुड़, चांदी में तेजी तथा अलसी में मंदा बनायेगा.

ज्येष्ठ मास : ज्येष्ठ मास का शुभारम्भ रविवारी क्षय प्रतिपदा से हुआ है. शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा की वृद्धि होकर चतुर्दशी की हानि होने से शुक्ल पक्ष का शुभत्व प्रभावित हो रहा है. मास पांच सोमवार युक्त है. कृषि उत्पादन प्रचुर होगा. धान्यों की वृद्धि होगी. फलस्वरूप व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य तेजी मंदी का मिश्रित प्रभाव रहेगा परन्तु शुक्ल पक्ष की सोमवारी सप्तमी तथा शनिवारी त्रयोदशी के संयोग से सभी प्रकार के अन्न एवं अन्न पदार्थों में बाजार के सेन्टीमेन्टस तेजी के रहेंगे. अमावस्या तथा पूर्णिमा के घट्यात्मक मान से रुई, तैल, गुड़, खांड में तेजी का योग बना है. शकुन शास्त्र के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के आर्द्रा नक्षत्र में यदि वर्षा हुई तो खाद्यान्नों की कमी से महंगाई बढ़ेगी. परन्तु 26 मई में वृष के सूर्य में वर्षा हुई तो खाद्यान्नों की कमी नहीं होगी. इसी प्रकार यदि 06 अथवा 07 जून में वर्षा हुई तो खाद्यान्नों की कमी नहीं होगी.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष : 10 मई : मंगल पू फा में : गुड़, खांड़, नमक, सरसों लाही, अलसी, मूंगफली, घी तथा तैल के मूल्यों में तेजी बनेगी. 11 मई : सूर्य कृतिका में: अन्न उत्पादन उत्तम रहेगा. सोना, चांदी, अलसी, गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोंठ, सरसों में तेजी आयेगी. 14 मई : सूर्य वृष में: शुक्र के क्षेत्र का सूर्य दो मास तक तेजी बनाये रखेगा. अन्न उत्पादन उत्तम रहेगा. सोमवारी संक्रांति अनाजों, मूंगा, मोती के भावों में गिरावट का योग. अनाजों, दूध, दही, घी एवं अन्य दुग्ध उत्पादों के भावों में तेजी रहेगी.

सोमवार के दिन कभी हो सूर्य संक्रांति । मूंगा, मोती, धान्य सब सस्ता अरु सुख शांति ।। वृष राशि के रवि करै सुख सम्पदा सुकाल । दूध, दही, घी में रहै महंगाई की चाल ।।

15 मई : बुधास्त मेष राशि भरणी नक्षत्र में, शुक्र वक्री: रुई, चांदी, शक्कर, घी, तैल एवं धान्यों में तेजी आयेगी. अन्न उत्पादन अनुकूल रहेगा. ज्येष्ठ कृष्ण मंगलवारी दशमी धान्यों गुड़, खांड आदि रसकसों में तेजी बनायेगी. 16 मई से 25 जून तक कन्या में वक्री शनि अन्न पदार्थों में गिरावट देकर फिर तेजी बनायेगा. कीमती रत्नों, धातुओं- सोना, चांदी में, हाथी, घोड़े, बैलों, भैंसों, मजीठ, केशर तथा सभी प्रकार के रसकस में तेजी बनेगी. धान संग्रह लाभदायक रहेगा. रुई, कपास, गुड़, खांड़, नमक तथा अन्नों में मंदा आयेगा. 17 मई : गुरु वृष में: चांदी, घी, तैल, रसकस, दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों में तेजी बनेगी. खाद्यान्नों एवं अन्य भूसा वाले धान्यों का उत्पादन संतोषजनक रहेगा. अनाज आदि में साधारण तेजी रहेगी. 20 मई : बुध कृतिका में: धान्यों में तेजी. चांदी, घी में गिरावट आयेगी. रुई में घटबढ़ चलेगी.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष : 21 मई : बुध वृष में: प्रतिपदा के नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से अधिक होकर रुई, चांदी, गेहूँ, अलसी, शक्कर, सूत तथा वस्त्रों में गिरावट का योग बना रहा है. 22 मई : प्रात: बुध गुरु की युति वर्षा में कमी का योग बना रही है. 23 मई : बुधवारी द्वितीया से रुई एवं चांदी में मंदा बनायेगी. 25 मई : सूर्य रोहिणी में: गेहूँ, जौ, चना, गुड़, खांड, घी, ज्वार, बाजरा, सरसों, तेल, तिल, अरण्डा, अलसी, सूत, सन, के भावों में तेजी आयेगी. रुई में साधारण तेजी बनेगी. चांदी में गिरावट आयेगी. 26 मई : बुध रोहिणी में: तिल, सूत, कपास, सोना, चांदी, तैल, सरसों, चावल, गुड़, खांड में तेजी आयेगी. सन, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों में गिरावट आयेगी. रुई में तेजी आकर मंदा होगा. 27 मई : ज्येष्ठ शुक्ल रविवारी षष्ठी रुई, कपास, सूत, चावल, घी तथा धान्यों में तेजी का योग बना रही है. 28 मई : गुरोदय वृष राशि कृतिका नक्षत्र में : सभी प्रकार के अन्नों का उत्पादन संतोष जनक रह कर सुभिक्ष बनेगा. कीमती रत्नों एवं पत्थरों में तेजी आयेगी अन्य व्यापारिक वस्तुओं में गिरावट चलेगी.

जून मास : मास का प्रारम्भ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी एकादशी से आषाढ़ शुक्ल पक्ष की शनिवारी एकादशी तक है.

01 जून : वक्री शुक्रास्त, बुध मृगशिरा में: गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द मंदे होंगे. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी एकादशी तथा व्यतिपात का संयोग चांदी में गिरावट देगा. रुई में घटबढ़ बनेगी. हैवी टैक्सेशन तथा पैनल्टी से धन हानि होगी. धान्यों का उत्पादन उत्तम रहेगा. धान्यों में पहले मंदा आकर एक मास के बाद तेजी बनेगी. छः मास के बाद सोना चांदी के मूल्यों में गिरावट बनेगी. 03 जून : वक्री शुक्र रोहिणी में: शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से अधिक होकर घी, सूत, चांदी में गिरावट का योग बना रहा है. नारियल, द्राक्ष, सुपारी, सोना, चांदी में तेजी आयेगी. 04 जून : बुध मिथुन में, सांय वृश्चिक राशि ज्येष्ठा नक्षत्र में चन्द्र ग्रहण होगा. वृश्चिक राशि का चन्द्रग्रहण सभी जातियों के लिये दुखद होगा. धान्यों का नाश होगा. सोमवारी चन्द्र ग्रहण से अन्न, घी, तैल में तेजी आयेगी. इन वस्तुओं का स्टाक आगे चलकर लाभकारी सिद्ध होगा. गुड़ एवं खांड के स्टाक से पांचवे मास में लाभ रहेगा. चना, मूंग, मोठ के मूल्यों में गिरावट आयेगी.

आषाढ़ मास : आषाढ़ मास के पांच मंगलवार शुभफलदायक सिद्ध होंगे. कृष्ण पक्ष में तृतीया का क्षय होकर नवमी की वृद्धि हुई है. शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी का क्षय हुआ है. एक ही पक्ष में तिथि का क्षय होकर तिथि की वृद्धि हो जाना कृष्ण पक्ष के शुभत्व को प्रभावित कर रहा है. कृषि उत्पादों में मंदा रहेगा. लाल वस्तुओं एवं धान्यों के मूल्यों में तेजी आयेगी. अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई में रुई, खांड़ में गिरावट का योग बना रहा है.

आषाढ़ कृष्ण पक्ष : 06 जून : राहु वृश्चिक में: आषाढ़ कृष्ण बुधवारी द्वितीया चांदी तथा रुई में गिरावट का योग बना रही है. 07 जून : सूर्य मृगशिरा में: सोना, चांदी, धान्य, रुई, रेशम, सूत, सन, कपास, कपूर, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोंठ, बाजरा, अलसी में तेजी आयेगी. 08 जून : बुध आर्द्रा में, बुधोदय मिथुन राशि आर्द्रा नक्षत्र में - सांयकालीन बुधोदय पीड़ा एवं भयकारक सिद्ध होगा. गेहूँ , जौ, चना, तिल, तैल, उड़द, मूंग, मोठ के भावों में गिरावट आयेगी. 09 जून : आषाढ़ मास की कृष्ण शनिवारी षष्ठी आगे कार्तिक मास में गेहूँ के मूल्यों में अप्रत्याशित तेजी बनायेगी. भविष्य भारती के मत से अनुसार : षष्ठी आषाढ़ै बदी जौ शनिवारी आव । गेहूँ संग्रह कीजिये कातिक दुगुना भाव ।।

11 जून : वक्री शुक्रोदय वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में: वक्रावस्था में उदित शुक्र से धान्यों में तेजी बनेगी. घी तथा अन्नों में घटबढ़ चलेगी. सोना, चांदी, कपास, रुई तथा सूत में तेजी बनेगी. 14 जून : सूर्य मिथुन में, मंगल उ. फा. में : मगंलवारी संक्रांति पापकारी है. आषाढ़ कृष्ण गुरुवारी दशमी तथा मंगलवारी संक्रांति से सभी प्रकार के अनाजों, नमक, घी, तिल, तैल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई आदि तिलहनों, कपूर, गुड़, खांड, शक्कर तथा अन्य रसकस, आलू, अरवी, अदरक, सोंठ, हल्दी, प्याज, कपास, जूट, भारी माल वाहकों के मूल्यों में तथा सवारी गाड़ियों मूल्यों में तेजी आयेगी. रुई में घटबढ़ चलेगी.

मिथुने रवि महंगे बिकै मूल रु कन्द कपास । तिलहन सारे धान्य में तेजी का आभास ।। किसी राशि पर संक्रमण करे भौम दिना सूर । तो महंगा होवे नमक रस घी तैल कपूर ।।

15 जून : बुध पुनर्वसु में: रुई, सूत, कपास, सन, चांदी के भावों में गिरावट आयेगी. 18 जून : केतु कृतिका में, आषाढ़ कृष्ण पक्ष की सोमवारी चतुर्दशी से अनाज, चारा घास का उत्पादन कम होगा.

साढ़ी चौदस हो कभी, सोमवार समवेतु । खेत न उपजै धान्य तृण, गाय भैंस केहि हेतु ।। साढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग । कर्फ्यू और कंट्रोल से दुख पावै सब लोग ।।

19 जून : आषाढ़ कृष्ण पक्ष की मंगलवारी अमावस्या गेहूँ, जौ, चना में साधारण तेजी आयेगी.

आषाढ़ शुक्ल पक्ष : 20 जून : बुधवारी शुक्ल प्रतिपदा तथा प्रतिपदा के नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से अधिक होकर रुई, चांदी तथा घी में गिरावट

का योग बना रहा है. 21 जून : बुध कर्क में, सूर्य आर्द्रा में: गुरुवारी द्वितीया से चावल, चांदी तथा रुई में घटबढ़ी चलेगी. सूत, कपास, अलसी, सरसों, अरण्डा, गुड़ खांड, मोती, धान्य, गेहूँ, जौ, चना, कपूर में तेजी आयेगी. सोने में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी. कपड़ा में गिरावट रहेगी. 22 जून : मंगल कन्या में: चन्दन, रेशम एवं रेशमी वस्त्र, अलसी, लाल रंग की वस्तुओं एवं सभी लाल रंग के वस्त्रों, ऊनी वस्त्रों, जूट, सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास में तेजी बनेगी. 24 जून : बुध पुष्य में : आषाढ़ शुक्ल रविवारी पंचमी के प्रवेश के समय के लग्न पर दो क्रूर ग्रहों मंगल एवं वक्री शनि की पूर्ण सप्तम दृष्टि तथा पंचमी का शनिवार में प्रवेश सोना, चांदी, मोती, मूंगा तथा बहुमूल्यों पत्थरों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. रुई में घटाबढ़ी के बाद गिरावट रहेगी. 25 जून : शनि मार्गी: बाजार की चलती लाईन में परिवर्तन होगा. आषाढ़ शुक्ल सोमवारी षष्ठी से चांदी, सोंठ, पीपल, सरसों, गेहूँ, जौ, चना, गुड़ तथा अलसी में तेजी बनेगी. 27 जून : शुक्र मार्गी वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में : आषाढ़ शुक्ल पक्ष की बुधवारी अष्टमी अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. शक्कर, चावल, घी में एक मास के बाद तेजी बनेगी. 30 जून :रोहिणी नक्षत्र में गुरु का प्रवेश सोना, चांदी, गुड़, खांड में मंदा होगा. रुई में घटाबढ़ी चलेगी.

जुलाई मास : मास का प्रारम्भ आषाढ़ शुक्ल द्वादशी से श्रावण शुक्ल की मंगलवारी त्रयोदशी तक है. 01 जुलाई : शुक्ल त्रयोदशी का क्षय से रुई एवं चांदी में तेजी का योग बन रहा है. 02 जुलाई : शुक्ल 14 का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से अधिक होकर घी, सूत, चांदी में गिरावट का योग बना रहा है. धान्यादि के भावों में तेजी. 03 जुलाई : मंगलवारी पूर्णिमा का मान रुई, चांदी में तेजी बनायेगा, अन्य वस्तुओं में गिरावट. पूर्णिमा में मास नक्षत्र का न होना अन्न में तेजी का संकेत है.

श्रावण मास: श्रावण मास का शुभारम्भ बुधवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार से धान्यों की तेजी घटेगी तथापि पांच बुधवार आने वाले तीन मासो में मंहगाई का योग बना रहे हैं.

शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि का नास । छत्र भंग का योग है आगे कातिक मास ।। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाये । सभी वस्तुएं तेज हो सस्तापन हट जाये ।।

अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई में रुई, तैल, गुड़, खांड में तेजी का योग बना रहा है. इस मास में धान्यों का भाव सम रहेगा. रसकस की हानि होगी. तीन बुधवार युक्त कृष्ण पक्ष घी में तेजी का संकेत है.

श्रावण कृष्ण पक्ष : 04 जुलाई : बुधवारी कृष्ण प्रतिपदा का मान दिन के नक्षत्र के मान से अधिक होकर चांदी, रुई में मंदा होगा. 05 जुलाई : सूर्य पुन. में: चांदी, सोना, कपास, बिनौला, तिल, ज्वार, मोंठ, बाजरा, उड़द, अलसी, सरसों, गुड़, खांड, चावल, नमक, अरण्डा, नील, सज्जी, मजीठ, माजूफल, केसर, कुसुंभा तथा सुगन्धित पदार्थों में तेजी आयेगी. 08 जुलाई : बुध । आश्लेषा में गुड़, खांड, तिल, तैल, सरसों, मूंग, उड़द, मूंगफली में तेजी आयेगी. 11 जुलाई : मंगल हस्त में : घी, गुड़, खांड, नमक तथा सभी प्रकार के अन्नों में तेजी आयेगी. धान्यों के उत्पादन में कमी रहेगी. 15 जुलाई : बुध वक्री कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में: गुड़, खाण्ड, घी, तैल, तिलहनों में तेजी बनेगी. सभी प्रकार की व्यापारिक वस्तुओं तथा खाद्यान्नों के भावों में गिरावट आयेगी. वक्री बुध से धन हानि रहेगी. 16 जुलाई : सूर्य कर्क में: सोमवारी संक्राति से अनाजों, मूंगा, मोती, जौ, गेहूँ, चना, चावल, गुड़, शक्कर, खांड, में घटबढ़ आयेगी. बाजरा, ज्वार, सरसों, तिल तैल घी, नमक में तेजी बनेगी. सोना, चांदी, लोहा, पीतल आदि धातुओं में मंदा रहेगा. धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी.

सोमवार के दिन कभी हो सूर्य संक्रांति। मूंगा, मोती, ध ान्य सब सस्ता अरु सुख शांति।।

17 जुलाई : श्रावण कृष्ण मंगलवारी त्रयोदशी की वृद्धि से रुई में मंदे का योग बन रहा है. 18 जुलाई : श्रावण कृष्ण चतुर्दशी के आर्द्रा नक्षत्र में अन्न का संग्रह आगे विक्रय करने पर लाभ देगा. 19 जुलाई : सूर्य पुष्य में : 08 घटी 01 पल की अमावस्या श्रावण शुक्ल पक्ष में रुई में तेजी के बाद गुरुवारी अमावस्या से रुई, चांदी, घी में साधारण गिरावट आयेगी. तिल, तैल, सरसों, मद्य, गुड़, खांड, ज्वार, बाजरा, सुपारी, गुग्गल, नारियल, सोंठ, सोना, चांदी में तेजी आयेगी.

सावन मावस उत्तरा रेवति पुनरु धनिष्ठ । एक मास दुर्भिक्ष से जग में रहै अनिष्ट ।।

श्रावण शुक्ल पक्ष : 20 जुलाई : प्रतिपदा नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से कम होकर रुई तथा चांदी में तेजी का योग बना रहा है. 21 जुलाई : वक्री बुधास्त कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में - शनिवारी द्वितीया से रुई एवं चांदी में तेजी बनेगी. श्रावण शुक्ल पक्ष में अस्त बुध शुभफलकारक है. 22 जुलाई : वक्री बुध पुष्य में - सोना, चांदी, मोती, मूंगा तथा बहुमूल्य पत्थरों के मूल्यों में तेजी आयेगी. रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी. 23 जुलाई : शुक्र मृगशिरा में : गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा सभी प्रकार के धान्यों में तेजी आयेगी परन्तु गेहूँ, जौ, चना में मंदा रहेगा. 24 जुलाई : मंगलवारी पंचमी रुई एवं चांदी में तेजी का योग बना रही है. 26 जुलाई : श्रावण शुक्ल पक्ष की गुरुवारी अष्टमी अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. 28 जुलाई : श्रावण शुक्ल पक्ष की शनिवारी दशमी से रुई के मूल्यों में तेजी बनेगी. 31 जुलाई : शुक्र मिथुन में : जौ, गेहूँ, चना, चावल में तेजी. अरहर, ग्वार, रुई, कपास, सूत, पटसन, बारदाना, अरण्डी, तैल, सरसों में गिरावट रहेगी. गुड़, खाण्ड, घी में घटाबढ़ी चलेगी.

अगस्त मास : मास का प्रारम्भ श्रावण शुक्ल पक्ष की रविवारी द्वादशी से प्रथम भाद्रपद शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी पूर्णिमा तक है. 01 अगस्त : शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से अधिक होकर घी, सूत, चांदी में गिरावट का योग बना रहा है. 02 अगस्त : सूर्य आश्लेषा में, चन्द्रमा धनिष्ठा में : कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र का सूर्य, पूर्णिमा में धनिष्ठा नक्षत्र का प्रवेश तथा गुरुवारी पूर्णिमा का मान- इन सभी का योग सोना, चांदी, रुई, बिनोला, गेहूँ, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, तेल, सरसों, तिल, चना, उड़द में तेजी बनायेगा.

प्रथम भाद्रपद मास : वर्ष में भाद्रपद मास अधिक मास है. प्र. भाद्रपद मास का शुभारम्भ शुक्रवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास के पांच शुक्रवार शुभफलकारक हैं. कृष्ण पक्ष में द्वितीया की हानि व पंचमी की वृद्धि हुई है. शुक्ल पक्ष में अष्टमी का क्षय हुआ है.

प्रथम भाद्रपद कृष्ण पक्ष : 03 अगस्त : मंगल चित्रा में : गेहूँ , जौ, चना, चावल, चांदी, सोना, पीतल, तांबा में तेजी बनेगी. 04 अगस्त : शनि तुला में : सभी प्रकार के अन्नो में तेजी, रुई, अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी. 08 अगस्त : बुध मार्गी पुष्य नक्षत्र कर्क राशि में, शुक्र आर्द्रा में : चांदी, कपड़ा चावल, में गिरावट आयेगी. अन्नों में अचानक मंदा आयेगा. 12 अगस्त : प्र. भाद्रपद कृष्ण रविवारी दशमी धान्यों एवं घी में तेजी तथा रुई में गिरावट का योग बना रही है. 14 अगस्त : मंगल तुला में : सभी प्रकार के धान्यों में विशेष रूप से उड़द, मूंग, सूत, कपास, रुई, जूट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, मूंगफली, गेहूँ आदि अन्नों में तथा सभी प्रकार की धातुओं में तेजी बनेगी. शुक्र के क्षेत्र का मंगल दो मास तक तेजी बनाये रखेगा. 15 अगस्त : मंगल-शनि की कन्या राशि मे युति से - धन धान्य की हानि होगी. 16 अगस्त : सूर्य सिंह राशि मघा नक्षत्र में : गुरुवारी संक्राति से सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में समता बनाये रखने का प्रयास होगा. ज्वार, बाजरा, अरण्डा, द्राक्ष, मिर्च, चांदी, रुई, कपास, सरसों, सुगन्धित पदार्थ, ईख, शक्कर, खांड, गुड़, हल्दी, तिल, तैल, तिलहन, सोना, तांबा, पीतल, आदि धातुऐं तथा लाल रंग के पदार्थो में तेजी बनेगी. घी में मंदा होगा.

गुरुवारी संक्रांतियां जब जब जग में आव । सुखी प्रजा धन धान्य युत सभी वस्तु समभाव ।। ईख शर्करा मिष्ट रस गुड़ हल्दी तिल तैल । सोना तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेल ।।

17 अगस्त : भाद्रपद कृष्ण अमावस्या में आश्लेषा नक्षत्र का मान अमावस्या के मान से कम होकर खाद्य एवं अन्न पदार्थों

में तेजी का योग बना रहा है. शुक्रवारी अमावस्या में खाद्य पदार्थों की महंगाई, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी.

प्रथम भाद्रपद शुक्ल पक्ष : 18 अगस्त : प्रतिपदा नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से कम होकर रुई तथा चांदी में तेजी का योग बना रहा है. 19 अगस्त : रविवारी द्वितीया रुई एवं चांदी में तेजी बनायेगी. 20 अगस्त : सोमवारी तृतीया रुई एवं चांदी में तेजी बनायेगी. 21 अगस्त : बुध आश्लेषा में : गुड़, खाण्ड, तिल, तैल, सरसों, मूंग, उड़द, मूंगफली में तेजी आयेगी. 22 अगस्त : शुक्र पुन. में : अन्नों की अनुपलब्धता से इनमें तेजी आयेगी. सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास में मंदा रहेगा. 23 अगस्त : गुरुवारी षष्ठी दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनायेगी. 24 अगस्त : मंगल स्वाति में : गेहूँ, तिल, रुई में तेजी आयेगी. चांदी में घटाबढ़ी चलेगी तथा सोना में साधारण मंदा रहेगा. 25 अगस्त : शनिवारी नवमी धान्यों के भावों में तेजी बनायेगी. 26 अगस्त : बुधास्त कर्क राशि आश्लेषा नक्षत्र में : रविवारी दशमी रुई के भावों में तेजी बनायेगी. 29 अगस्त : बुध सिंह राशि मघा नक्षत्र में : रुई, पटसन, शेयर्स में मंदा आकर तेजी बनेगी. धान्यों की हानि होने के उपरान्त भावों में समता बनी रहेगी. गेहूँ, जौ, चना, रुई, सूत, कपास, इमली, आंवला आदि खट्टे पदार्थों, तथा औषधीय वनस्पति, सोना में तेजी आयेगी. 30 अगस्त : सूर्य पू. फा. में : सोने में अच्छी तेजी बनेगी. चांदी, रुई, सूत, चावल, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, तिल तैल, सरसों, ज्वार, घी, ऊनी वस्त्रों में तेजी आयेगी.

द्वितीय भाद्रपद एवं सितम्बर मास : द्वि.भाद्रपद मास का शुभारम्भ शनिवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास के पांच शनिवार एवं पांच रविवार दोनों ही अशुभफलकारक हैं. प्रत्येक व्यापारिक वस्तु में तेजी बनेगी. महंगाई में अत्याधिक वृद्धि से जनजीवन त्रस्त होगा.

कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाये । सभी वस्तुएं तेज हों सस्तापन हट जाये ।।

अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई में गिरावट का योग बना रहा है. सितम्बर मास का प्रारम्भ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण पक्ष की शनिवारी प्रतिपदा से द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष की रविवारी पूर्णिमा तक रहेगा.

द्वितीय भाद्रपद कृष्ण पक्ष : 01 सितं. : शुक्र कर्क में : कर्क का शुक्र तेजी का योग बना रहा है. गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तैल तथा अन्य सभी रसकस में तेजी बनेगी. चांदी तथा सभी धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी. रुई में गिरावट आकर तेजी बनेगी. गेहूँ, जौ, चना, अरहर, मटर में मंदा रहेगा. 02 सितं. : द्वितीय भाद्रपद कृष्ण रविवारी द्वितीया चांदी, रुई में साधारण तेजी बनायेगी. 04 सितं.: शुक्र पुष्य में : खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी आयेगी. गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपूर, पारा, हींग, लाख, चमड़ा में मंदा रहेगा. रुई, कपास, सूत, सन, रेशम, ऊन तथा धान्यों में तेजी बनेगी. 05 सितं. : बुध पूर्वा फाल्गुनी में : सभी प्रकार के अन्न एवं अन्न पदार्थों, गुड़, खाण्ड के भावों में गिरावट आयेगी. 08 सितं. : कृष्ण पक्ष की रोहिणी युक्त शनिवारी अष्टमी से तीन मास पश्चात् जौ, गेहूँ, बाजरा, मटर, गुवार आदि सभी प्रकार के अनाजों, हल्दी, सोंठ, जीरा, आदि किराने की वस्तुओं, कस्तूरी, हींग, गुड़, तिल, तैल तथा शीशा, पारा आदि धातुओं में तेजी बनायेगी. 11 सितं. : चन्द्रमा कर्क में द्वि. भाद्रपद कृष्ण मंगलवारी दशमी के योग से गुड़, खांड आदि रसकसों में तेजी बनेगी. धान्यों में घटबढ़ चलेगी. 12 सितं. : बुध उ.फा. में : उड़द, मोठ, अरहर, मसूर एवं मूंग का उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होगा. चांदी में गिरावट रहेगी. रुई में घटाबढ़ी के बाद गिरावट आयेगी. 13 सितं. : सूर्य उ.फा. में, बुध कन्या में : सोना, चांदी, लोहा, तिल, तेल, सरसों, घी, चावल, उड़द, नारियल, सुपारी, मूंज, बांस, नील में तेजी आयेगी. अगले छः मास तक सोना, चन्दन, सुपारी, नारियल, शहद एवं उत्तम क्वालिटी की शक्कर में तेजी चलेगी. 14 सितं. : मंगल विशाखा में : रुई, कपास, वस्त्र तथा गेहूँ में तेजी बनेगी. 16 सितं. : शुक्र आश्लेषा में, सूर्य कन्या में : बुध की कन्या राशि का सूर्य भूषा, धान्य, ज्वार, बाजार, मकई, ग्वार की पैदावार में वृद्धि का योग बना रहा है. रविवारी भाद्रपद कृष्ण अमावस्या से नारियल, मंजिष्ठा आदि लाल वस्तु में तेजी आयेगी. घी, तेल, तिल, सरसों रुई, कपास, पशु आहारों, भूसा में घटबढ़ चलेगी. चावल, मोठ, चना तथा धान्यों, सुपारी, मेवा, अरण्डा, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल तथा शेयर्स में गिरावट आयेगी.

द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष : 17 सितं. : द्वि. भाद्रपद शुक्ल पक्ष की सोमवारी द्वितीया उत्तम कृषि उत्पादन एवं पशुधन वृद्धि का योग बना रही है. रुई एवं चांदी में मंदा रहेगा. 18 सितं. : मंगलवारी तृतीया रुई एवं चांदी में तेजी बनायेगी. 19 सितं.: बुध हस्त में अन्न के भावों में गिरावट आयेगी. 21 सितं.: शुक्रवारी षष्ठी दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनायेगी. 23 सितं. : शुक्ल पक्ष की रविवारी अष्टमी का मूल नक्षत्र दूध, दही, गाय, बैल, सन, सूत, कपड़ा, बिनोला, सोना, चांदी, सफेद वस्त्र, घी, गुड़, शक्कर में तेजी देगा. अब से पांचवे मास में अन्न, सैंधा नमक, सन, सूत, रुई, कपास में तेजी आयेगी. 26 सितं. : सूर्य हस्त में : गेहूँ, जौ, चना, गुड़, खांड, सूत, जूट, कपास, हल्दी, हींग, धनिया, घास, लकड़ी, नमक, रुई में तेजी आयेगी. 27 सितं.: बुध चित्रा में रुई, चांदी में घटबढ़ चलेगी. धान्यों में तेजी बनेगी. 28 सितं. : शुक्र सिंह राशि मघा नक्षत्र में, मंगल वृश्चिक में : वृश्चिक का मंगल छः मास तक गुड़, घी, दूध, रुई कपास में तेजी बनायेगा. सभी प्रकार के धान्य, पशु, रुई, सोना, चांदी, तांबा, गेहूँ, जौ, चना, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च तथा लाल रंग के अन्य सभी पदार्थ मंहगे होंगे. 29 सितं. : बुधोदय कन्या राशि चित्रा नक्षत्र में -धान्यों का उत्पादन उत्तम रहेगा. शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से कम होकर घी, सूत, चांदी में तेजी का योग बना रहा है. 30 सितं. : रविवारी पूर्णिमा का मान रुई में घटबढ़, अलसी में मंदा तथा गेहूँ, गुड़, चांदी में तेजी बनायेगा.

आश्विन एवं अक्तूबर मास : आश्विन मास का शुभारम्भ सोमवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास पांच सोमवार युक्त है. शुक्ल पक्ष में चतुर्थी की हानि हुई है. व्यापारिक वस्तुओं में गिरावट का रुख बनेगा परन्तु मूंग, घी में तेजी बनेगी. अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई, तैल, गुड़, खाण्ड में तेजी का योग बना रहा है. अक्तूबर मास का प्रारम्भ आश्विन कृष्ण पक्ष की सोमवारी प्रतिपदा से कार्तिक कृष्ण पक्ष की बुधवारी द्वितीया तक रहेगा.

आश्विन कृष्ण पक्ष : 01 अक्तू. : बुध तुला में : घी, शक्कर, अलसी तथा यूनानी एवं आयुर्वेदिक औषधियों में तेजी बनेगी. 03 अक्तू. : मंगल अनुराधा में : गेहूँ, लाल मिर्च, लाल चन्दन तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी. 04 अक्तू. : गुरु वक्री पर वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में घी, दूध एवं दुग्ध पदार्थों के भावों में गिरावट आयेगी. मंगल एवं राहु की वृश्चिक राशि में युति से आगे छठे मास में घी तथा वस्त्रों में तेजी का योग बना रही है अतः इस समय इन दोनो वस्तुओ का स्टाक आगे चलकर लाभकारी सिद्ध होगा. सभी प्रकार के अन्न का संग्रह आठ मास तक तेजी बने रहने के कारण लाभदायक होगा. श्रावण भादो, आश्विन एवं कार्तिक मास के बाद अत्याधिक तेजी बनेगी. दुधारू पशुओं के मूल्यों में विशेष तेजी आयेगी. 06 अक्तू. : बुध स्वाति में - रुई में मंदा रहेगा. 08 अक्तू.: शनि अस्त तुला राशि चित्रा नक्षत्र में : धान्यों के भावों में तेजी बनेगी. 09 अक्तू. : शुक्र पू.फा. में गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा मंदा रहेगा. 10 अक्तू.: सूर्य चित्रा में : गेहूँ, चना, कपास, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, अरहर, लाख चपड़ा, केसर कपूर में तेजी आयेगी. 12 अक्तू.: शनि स्वाति में : कृषि उत्पादन उत्तम रहेगा. धान्यो के मूल्यो में गिरावट बनेगी. 14 अक्तू. : आश्विन कृष्ण रविवारी चतुर्दशी से गेहूँ, जौ, चना तथा रुई में तेजी बनेगी. 15 अक्तू. : बुध विशाखा में - आश्विन कृष्ण पक्ष की सोमवारी अमावस्या सभी प्रकार के अन्नों, गुड़, खाण्ड, तैल, तिलहन, रुई, चांदी, घी में गिरावट का योग बना रही है.

आश्विन शुक्ल पक्ष : 16 अक्तू. : मंगलवारी प्रतिपदा तथा चित्रा नक्षत्र के योग से रुई तथा चांदी में घटाबढ़ी चलेगी. 17 अक्तू. : सूर्य तुला में : सूर्य की बुधवारी तुला संक्रांति से गेहूँ, जौ, चना, आदि के भाव में समता रहेगी. चांदी, चावल, रुई, सन,

जूट, पटसन, कोयला, लकड़ी, तिल, तैल, सरसों में गिरावट आयेगी. सोना, कपूर, इलायची, लाल मिर्च, हल्दी, लौंग, कस्तूरी में घटाबढ़ी चलेगी. शुक्र के क्षेत्र का सूर्य दो मास तक तेजी बनाये रखेगा. अन्न का उत्पादन उत्तम तथा संतोष जनक रहेगा फिर भी सभी प्रकार के अन्न पदार्थों में तेजी बनेगी. बुधवारी द्वितीया भी रुई एवं चांदी में मंदा बनायेगी. 18 अक्तू. : चतुर्थी के क्षय से घी, मूंग, उड़द में तेजी बनेगी. 20 अक्तू. : शनिवारी षष्ठी गेहूँ, गुड़, अलसी, सरसों, रुई, सूत, कपास तथा चांदी में तेजी बनायेगी. 21 अक्तू. : शुक्र उ.फा. में : धान्य एवं रुई में तेजी आयेगी. सोना, चांदी में घटबढ़ चलेगी. 22 अक्तू. : मंगल ज्येष्ठा में : आश्विन शुक्ल पक्ष की सोमवारी अष्टमी अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. चांदी में गिरावट तथा रुई में घटाबढ़ी रहेगी. 23 अक्तू. : बुध वृश्चिक में, शुक्र कन्या में, सूर्य स्वाति में : आश्विन शुक्ल पक्ष की मंगलवारी नवमी से कपास एवं उड़द का इस मास में किया संग्रह चैत्र मास में लाभदायक रहेगा. मंगलवारी नवमी मूंग, मोठ, उड़द, चौला आदि सभी प्रकार के दलहनों, अन्नों तथा कपास में आगे आने वाले महीनों में तेजी का योग बना रही है. धान्यों, सोना, रुई, सूत, कपड़ा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, ऊनी वस्त्रों, सुपारी, मिर्च, राई, हींग, सरसों, अलसी, घी, तैल, अरण्डा, बिनोला आदि तिलहनों, उत्तम क्वालिटी के चावलों-बासमती आदि में तेजी बनेगी. धान्यों के मूल्यों में गिरावट बनेगी. चांदी में घटबढ़ चलेगी. 26 अक्तू. : बुध अनुराधा में : सोना, चांदी, रुई, सूत, सन के भावों में गिरावट रहेगी. धान्यों के भावों में समता रहेगी. 28 अक्तू. : शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से कम होकर घी, सूत, चांदी में तेजी का योग बना रहा है. 29 अक्तू. : सोमवारी पूर्णिमा का मान रुई, चांदी में तेजी बनायेगा.

कार्तिक मास : कार्तिक मास का शुभारम्भ मंगलवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार युक्त है. कार्तिक मास के पांच मंगलवार शुभफलदायक सिद्ध होंगे. धान्यों के भाव प्राय: स्थिर रहेंगे. रसकस की हानि होगी. कृष्ण पक्ष में द्वितीया की वृद्धि होकर अमावस्या का क्षय हुआ है. क्षय अमावस्या का घट्यात्मक मान तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई, तैल, गुड़, खाण्ड में तेजी का योग बना रहा है. शुक्ल पक्ष के तीन बुधवार घी तथा अन्य सभी वस्तुओं में तेजी का योग बना रहे हैं.

कार्तिक कृष्ण पक्ष : 31 अक्तू. : कार्तिक कृष्ण बुधवारी द्वितीया चांदी, रुई में मंदा बनायेगी. नवम्बर मास: मास का प्रारम्भ कार्तिक कृष्ण पक्ष की गुरुवारी द्वितीया से मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की शुक्रवारी द्वितीया तक रहेगा. 01 नवम्बर : शुक्र हस्त में : चांदी, रुई, चावल में मंदा रहेगा. सोना में साधारण तेजी बनेगी. गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहेगी. 06 नवम्बर : सूर्य विशाखा में - चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, कपास, गेहूँ, जौ, चना, सरसों, तिल में तेजी बनेगी. 07 नवम्बर : बुध वक्री वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र में : गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी. अलसी, सरसों, तैल, तिलहनों तथा खाद्यान्नों के भावों में गिरावट आयेगी. 09 नवम्बर : मंगल धनु राशि मूल नक्षत्र में - अदरक, हल्दी, प्याज, आलू, सभी प्रकार के अन्नों, सोना, चांदी, घी, रुई, कपास, सूत एवं दुधारू पशुओं के मूल्यों में, सरसों, बिनोला आदि तिलहनों में तेजी आयेगी. गेहूँ, जौ, चना, चावल, चांदी, सोना, रुई में तेजी बनेगी. 11 नवम्बर : तुला राशि स्वाति नक्षत्र में - धान्यों, गेहूँ आदि में, रसकस में तथा घी में तेजी बनेगी. 12 नवम्बर : शुक्र चित्रा में, वक्री बुधास्त वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र में : सोना, चांदी तथा समस्त धान्यों के मूल्यों में समता रहेगी. सभी प्रकार की धातुओं में तेजी आयेगी. 13 नवम्बर : रिक्ता तिथि की क्रूर वार - मंगलवार की अमावस्या व्यापारिक वस्तुओं में तेजी करेगी. रुई तथा घी में तेजी रहेगी.

कार्तिक शुक्ल पक्ष : 14 नवम्बर : बुधवारी शुक्ल प्रतिपदा रुई, चांदी तथा घी में मंदा बनायेगी. परन्तु प्रतिपदा में दिन के नक्षत्र का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से कम होकर रुई तथा चांदी में तेजी का योग बना रहा है अत: रुई तथा चांदी में घटाबढ़ी चलेगी. शुक्ल पक्ष की बुधवारी प्रतिपदा सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संकेत दे रही है. 15 नवम्बर : गुरुवारी द्वितीया रुई एवं चांदी में मंदा बनायेगी. 16 नवम्बर : सूर्य वृश्चिक में, वक्री बुध विशाखा में : शुक्रवारी वृश्चिक संक्रांति छ: मास तक गुड़, घी, दूध, रुई कपास में तेजी बनायेगी. चांदी, तांबा में साधारण तेजी होगी. ऊन एवं ऊनी वस्त्रों में तेजी के रुख के बाद भी भावों में समता रहेगी. तिल, तैल, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, गुड़ तथा कार, स्कूटरों, मोटर साईकिलों आदि वाहनों, घोड़ों, ऊँटों तथा हाथियों आदि पशुओं में तेजी आयेगी. लाल रंग के पदार्थों में गिरावट रहेगी. 17 नवम्बर : शुक्र तुला में - सोना, गुड़, खांड में साधारण तेजी आयेगी. रुई में तेजी आकर मंदा बनेगा. धान्यों के मूल्यों में गिरावट रहेगी. 19 नवम्बर : वक्री बुध तुला में, सूर्य अनुराधा में : कार्तिक शुक्ल सोमवारी षष्ठी से सरसों, गेहूँ, जौ, चना, गुड़, अलसी में तेजी बनेगी. सोना, चांदी में घटाबढ़ी चलेगी. 21 नवम्बर : कार्तिक शुक्ल पक्ष की बुधवारी अष्टमी अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. 22 नवम्बर : शुक्र स्वाति में : गुड़, खाण्ड, शक्कर, पशु आहारों एवं भूसी वाले धान्यों में तेजी बनेगी. अन्य सभी अन्नों में घटाबढ़ी चलेगी. 23 नवम्बर : बुधोदय वक्रावस्था में तुला राशि विशाखा नक्षत्र में : कार्तिक शुक्ल पक्ष में उदित बुध जौं, तिल, गेहूँ में तेजी आयेगी. 27 नवम्बर : मंगल पू.षा. में, बुध मार्गी तुला राशि विशाखा नक्षत्र में : शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से कम होकर शक्कर, सूत, धान, तिल, उड़द, चावल, उड़द, मूंगफली, घी, अलसी चांदी, सोना तथा आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों में तेजी का योग बना रहा है. दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों में कमी आयेगी. अन्न का उत्पादन संतोष जनक रहेगा. 28 नवम्बर : चन्द्रमा रोहिणी में, वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में चन्द्र ग्रहण होगा. वृष राशि का ग्रहण, दुग्ध उत्पादकों एवं व्यापारियों, के लिये कष्टकारी रहेगा. इस समय चन्द्रमा का स्वाति नक्षत्र में स्थित शुक्र से वेध होने के कारण सूत तथा कपास के स्टाक से विशेष लाभ नहीं होगा. अन्नों का स्टाक पांचवे मास में लाभकारी रहेगा. बुधवारी चन्द्रग्रहण सुपारी, लाल वस्त्रों के स्टाक से आगे चलकर लाभ देगा. पूर्णिमा तथा नक्षत्र के मान से मास के फलों का प्रभाव मात्र 25 प्रतिशत ही होगा. रुई में गिरावट रहेगी. अलसी, सरसों, चांदी में तेजी बनेगी.

मार्गशीर्ष मास : मार्गशीर्ष मास का शुभारम्भ गुरुवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवार युक्त है. धान्यों के मूल्यों में कमी होगी. रसकस में घटबढ़ चलेगी.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष : 29 नवम्बर : कृष्ण प्रतिपदा का मान दिन के नक्षत्र के मान से अधिक होकर सामान्य वर्षा तथा सामान्य जन के शुभ समय का संकेत दे रहा है.

दिसम्बर मास : मास का प्रारम्भ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की शनिवारी तृतीया से पौष कृष्ण पक्ष की सोमवारी तृतीया तक रहेगा. 01 दिसं.: मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया का आर्द्रा नक्षत्र अन्न एवं अन्न पदार्थों में गिरावट का संकेत कर रहा है. 02 दिसं.: सूर्य ज्येष्ठा में : सोना, चांदी, गेहूँ, जौ, चना, चावल, सरसों, गुड़, खांड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, अरण्डा, गूगल में तेजी आयेगी. 03 दिसं. : शुक्र विशाखा में : पशु आहारों एवं भूसी वाले धान्यों में घटबढ़ रहेगी. रुई में अच्छी गिरावट आयेगी. 05 दिसं.: मार्गशीर्ष कृष्ण बुधवारी षष्ठी का मान रुई में गिरावट का योग बना रहा है. 06 दिसं. : बुध वृश्चिक में : घी, तैल, अरण्डा, बिनोला आदि तिलहनों में तेजी आयेगी. धान्यों के मूल्यों में गिरावट बनेगी. 08 दिसं. : मार्गशीर्ष कृष्ण शनिवारी दशमी का क्षय घी एवं रुई में तेजी करेगा. 09 दिसं. : बुध अनुराधा में : आज मार्गशीर्ष मास की कृष्ण पक्ष की रविवारी एकादशी में किया सूत, रुई, कपास स्टाक बैशाख मास में लाभ देगा. सुभिक्ष से धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. रुई में मंदा रहेगा. 11 दिसं. : शुक्र वृश्चिक में : गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा में गिरावट रहेगी. रुई, अलसी, चांदी में तेजी बनेगी. गुड़ में घटाबढ़ी चलेगी. वृश्चिक का शुक्र छ: मास तक घी, दूध, रुई कपास में तेजी बनायेगा तथा 'मंगल घर में शुक्र हो अन्न तेज तब जान के अनुसार' अन्न पदार्थों में तेजी रहेगी. गुरुवारी अमावस्या से रुई, चांदी, घी में साधारण गिरावट आयेगी.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष : 14 दिसं. : शुक्र अनुराधा में, मंगल उ.षा. में : शुक्रवारी प्रतिपदा के चन्द्रदर्शन से रुई में अच्छी तेजी बनेगी. धान, तिल, घी, तैल, उड़द में तेजी बनेगी. गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल, नमक तथा क्षारीय पदार्थों में गिरावट आयेगी. दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों में कमी आयेगी. अन्न का उत्पादन संतोष जनक रहेगा. 15 दिसं.: सूर्य धनु राशि मूल नक्षत्र में, शनिवारी तृतीया रुई एवं चांदी में तेजी बनायेगी. सोना, कपास, सूत, अलसी, तिल, तैल में तेजी आयेगी.शनिवारी संक्राति सभी प्रकार के धान्यों में तेजी बनायेगी. मार्गशीर्ष मास की धनु संक्राति 'मंगशिर में संकाति धनु आवै तो दुर्भिक्ष' के अनुसार अन्न पदार्थो की उपलब्धता में कमी करेगी. धनु का सूर्य सभी प्रकार के अन्नों में मंदा बनायेगा. कपास, सूत, तैल, घी में तेजी बनेगी. तैल, सरसों, अलसी, रुई, पाट एवं बारदाना में तेजी बनेगी. 18 दिसं. : मंगल मकर में, बुध ज्येष्ठा में : मंगल गुरु का त्रिकोण योग सुभिक्ष का योग बना रहा है. सभी प्रकार के धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. तैल, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, धान, ईख तथा घी में तेजी बनेगी. मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की मंगलवारी षष्ठी सरसों, गेहूँ, चना, गुड़, अलसी में तेजी बनायेगी. 20 दिसं. : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की गुरुवारी अष्टमी अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. 22 दिसं. : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की शनिवारी दशमी रुई के भावों में तेजी बनायेगी. 23 दिसं. : राहु तुला में : शुक्र के क्षेत्र का राहु दो मास तक तेजी बनाये रखेगा. सभी प्रकार के खाद्यान्नों में तेजी बनेगी. 24 दिसं. : बुधास्त वृश्चिक राशि ज्येष्ठा नक्षत्र में, शुक्र ज्येष्ठा में : सोना, चांदी, तिल, चावल, तैल, सरसों में मंदा रहेगा. धान्यों में साधारण तेजी बनेगी. सभी प्रकार की धातुओं में तेजी आयेगी. 25 दिसं. : मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में द्वादशी की वृद्धि रुई में तेजी का योग बना रही है. 27 दिसं. : बुध धनु राशि मूल नक्षत्र में : शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से कम होकर घी, सूत, चांदी, ईख तथा चावल में तेजी का योग बना रहा है. सोना, चांदी तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. रुई में घटाबढ़ी चलेगी. 28 दिसं. : सूर्य पू.षा. में : तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, हल्दी गुग्गल, चांदी, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन में तेजी बनेगी.

पौष मास : मास का प्रारम्भ शनिवार प्रतिपदा से हुआ है. कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी का क्षय होकर शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी की वृद्धि हुई है. मास में पांच शनिवार एवं पांच ही रविवार हैं. इस वर्ष ऐसी ही स्थिति द्वितीय भाद्रपद मास में बन चुकी है. शनि एवं रवि दोनों ही वार अशुभफलकारक हैं. व्यापारिक वस्तुओं में तेज घटाबढ़ी चलेगी. रसकस के मूल्यों में गिरावट रहेगी. व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में कमी आयेगी. अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई में रुई, तैल, गुड़, खाण्ड में तेजी का योग.

पौष कृष्ण पक्ष : 30 दिसं. : पौष कृष्ण रविवारी द्वितीया चांदी, रुई में साधारण तेजी बनायेगी. 31 दिसं.: मंगल श्रवण में-धान्यों की उपलब्धि में कमी से सभी प्रकार के अन्नों में विशेषकर गेहूँ में तेजी आयेगी. चांदी, सोना में साधारण तेजी बनेगी. रुई में घटबढ़ चलेगी.

जनवरी मास 2013: मास का प्रारम्भ पौष कृष्ण पक्ष की मंगलवारी चतुर्थी से माघ कृष्ण पक्ष की बुधवारी तृतीया तक रहेगा. 04 जनवरी : शुक्र मूल नक्षत्र में: धान्यों में तेजी बनेगी. सोना में घटाबढ़ी चलेगी. रुई पहले तेज होकर बाद में मंदे में जायेगी. 05 जनवरी : बुध पूर्वाषाढ़ में : गेहूँ, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी में मंदा आयेगा. गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, बिनोला, रुई, कपास में तेजी आयेगी. 10 जनवरी : पौष कृष्ण गुरुवारी चर्तुदशी का क्षय रुई में तेजी का योग बना रहा है. 11 जनवरी : सूर्य उ.षा. में : पौष कृष्ण पक्ष अमावस्या का पूर्वाषाढ़ नक्षत्र धान्यों में तेजी बनायेगा. गेहूँ, उड़द, मूंग, जूट, सूत, कपास, चावल, बांस, सरसों, तिल, तेल, गुड़, शक्कर, खांड, चीनी, हल्दी, घी, चना आदि में तेजी आयेगी. चांदी में साधारण तेजी बनेगी. रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा.

पौष शुक्ल पक्ष : 13 जनवरी : बुध उ.षा. में : रविवारी द्वितीया रुई एवं चांदी में तेजी बनायेगी. अन्न उत्पादन श्रेष्ठ रहने से धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. 14 जनवरी : सूर्य मकर में : सवत् 2069 की कर्क एवं मकर संक्रांतियां दोनों ही सोमवारी हैं. सोमवारी मकर संक्रांति से अनाजों, मूंगा, मोती के भावों में गिरावट का योग. सभी प्रकार के धान्यों में मंदा बनेगा. सोमवारी तृतीया से रुई, चांदी, घी तथा तेल में तेजी बनेगी. 15 जनवरी : शुक्र पूर्वाषाढ़ में, बुध मकर में : शनि के क्षेत्र का बुध सोना, चांदी आदि धातुओं तथा अन्न के भावों में समता बनाये रखने में मदद करेगा. शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फल प्राप्त होंगे. रुई, गुड़, खांड, घी, तैल, उड़द, मूंग, मोठ, तिल, तैल, सरसों, नमक में मंदा रहेगा. 17 जनवरी : मंगल धनिष्ठा में : गुरुवारी षष्ठी दो मास में सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनायेगी. चांदी, सोना, पीतल, तांबा, जस्ता, लोहा धान्य, गेहूँ, गुड़, शक्कर में घटबढ़ रहेगी. 20 जनवरी: पौष शुक्ल पक्ष की रविवारी नवमी धान्यों के भावों में तेजी बनायेगी. 21 जनवरी : बुध श्रवण में : गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, चना, गेहूँ में तेजी आयेगी. 24 जनवरी : सूर्य श्रवण में : उड़द, मूंग, जूट, रुई, सूत, कपास, चावल, बांस, सरसों, गुड़, खांड, चीनी, जौ, गेहूँ, सन, सोना, चांदी में तेजी आयेगी. 25 जनवरी : पौष शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी की वृद्धि हुई है. धान्यों तथा रुई में तेजी बनेगी. मंगल कुंभ में, शुक्र उ.षा. में : अनाज में तेजी आयेगी. रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर चांदी में घटबढ़ चलेगी. 26 जनवरी : शुक्ल चतुर्दशी का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के मान से कम होकर घी, सूत, चांदी में तेजी का योग करेगा. 27 जनवरी : रविवारी पूर्णिमा का मान रुई में घटबढ़, अलसी में मंदा तथा गेहूँ, गुड़, चांदी में तेजी बनायेगा.

माघ मास : माघ मास का शुभारम्भ 28 जनवरी से हुआ है. कृष्ण पक्ष में अष्टमी की हानि हुई है. मास का पांच सोमवार युक्त होना शुभफलकारक है. व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य मंदे का रुख बनेगा. अमावस्या तथा पूर्णिमा का घट्यात्मक मान रुई में गिरावट का योग. भविष्य भारती के अनुसार :

शुक्र पंचमी शनि को षष्ठी तथा सप्तमी को रविवार । माघ: बदी में क्रमश: हो तो पृथ्वी पर हो युद्ध अपार ।।

माघ कृष्ण पक्ष : 28 जनवरी: शुक्र मकर में : कृष्ण प्रतिपदा का मान दिन के नक्षत्र के मान से कम होकर गुड़, खाण्ड, घी तथा सभी प्रकार के खाद्यान्नों में तेजी बनेगी. रुई तथा चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी. 29 जनवरी : बुध धनिष्ठा में: सोना, चांदी, धान्यों में गिरावट आयेगी. रुई में घटाबढ़ी चलेगी. चावल में तेजी बनेगी. 30 जनवरी : गुरु मार्गी वृष राशि रोहिणी नक्षत्र में : व्यापारिक वस्तुओं में गिरावट आयेगी.

फरवरी मास : मास का प्रारम्भ माघ कृष्ण पक्ष की गुरुवारी चतुर्थी से फाल्गुन कृष्ण पक्ष की गुरुवारी तृतीया तक रहेगा. 02 फरवरी : बुध कुंभ में : अन्न एवं अन्य वस्तुओं के मूल्यों में अधिक घटबढ़ न होने से समानता रहेगी. सोना, सुपारी, सरसों, सोंठ, लाख तथा चमड़े में तेजी बनेगी. 03 फरवरी : मंगल शतभिषा में : चांदी, सोना, रुई में पहले मंदा आकर फिर तेजी बनेगी. 05 फरवरी : शुक्र श्रवण नक्षत्र में : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ में मंदा रहेगा. तिल, तैल, सरसों, कपास में तेजी बनेगी. रुई में साधारण मंदा आकर बाद में तेजी बनेगी. 06 फरवरी : सूर्य धनिष्ठा में, बुध शतभिषा में: माघ कृष्ण मंगलवारी दशमी धान्यों, गुड़, खांड आदि रसकसों, सोना, चांदी, रुई, चावल, जौ, गेहूँ, अलसी, तिलहन, सूत, सन, जूट में तेजी देगी. खाद्यान्नों की अनुपलब्धता से कुछ स्थानों पर तेजी तथा अन्य स्थानों पर भावों में समता रहेगी. 10 फरवरी : दिन के नक्षत्र का मान रविवारी अमावस्या के मान से अधिक होकर मंदी का योग बना रहा है. रुई, चांदी, घी में गिरावट आयेगी.

माघ शुक्ल पक्ष : 11 फरवरी : माघ मास की शुक्ल पक्षीय सोमवारी प्रतिपदा से 'सुख, सुभिक्ष सुदी मास में एकम् गुरु भृगु सोम' के अनुसार अनाजों का उत्पादन अनुकूल रहेगा. सोमवारी प्रतिपदा में चन्द्रदर्शन से रुई में मंदा आयेगा. 12 फरवरी : कुंभ संकाति : मंगलवारी द्वितीया तथा कुंभ संक्राति रुई, चांदी, नमक, घी, तैल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई, कपूर तथा रसकस के भावों में तेजी बनायेगी. अन्न में मंदा चलेगा. अगले दो मास तक

ज्वार, मसूर तथा अन्य धान्यों की हानि का योग बन रहा है. 14 फरवरी : बुध पूर्वा भाद्रपद में : अन्न पदार्थों की उपलब्धता में कमी आयेगी. सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. रुई में घटाबढ़ी चलेगी. 16 फरवरी : शुक्र ध निष्ठा नक्षत्र में, शुक्रास्त मकर राशि धनिष्ठा नक्षत्र में : गेहूँ में घटबढ़ चलेगी. गुड़, अलसी, सरसों, रुई, सूत, कपास सोना, चांदी, चावल, उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, ज्वार में तेजी बनेगी. 18 फरवरी : माघ शुक्ल पक्ष की सोमवारी अष्टमी का कृतिका नक्षत्र अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी करेगी. आगे फाल्गुन मास में जौं, गेहूँ की फसलों को कीटों से हानि तथा श्रावण मास में वर्षा के अभाव से कृषि उत्पादन में कमी के कारण तेजी का योग बन रहा है. 19 फरवरी : सूर्य शतभिषा : माघ शुक्ल पक्ष की मंगलवारी नवमी धान्यों, सरसों, चना, तिल, तेल, नील, हींग, जायफल, द्राक्ष, छुआरा, सोंठ, रुई, सूत, कपास, जूट, कपड़ा, सोना, चांदी, गेहूँ, खांड, गुड़, हल्दी आदि में तेजी बनायेगी. 20 फरवरी : मंगल पू.भाद्रपद में : तिल, कपास, रुई, वस्त्र तथा सुपारी, चांदी, सोना, सरसों, लाही, अलसी, मूंगफली, तिल, नारियल में तेजी बनेगी. 21 फरवरी : शुक्र कुंभ में : चांदी, रुई, गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजार आदि अन्नों तथा सभी प्रकार की सफेद वस्तुओं एवं रसकस में गिरावट बनेगी. मंहगाई बढ़ेगी. 23 फरवरी : बुध वक्री कुंभ राशि पू. भाद्रपद में: गुड़, खाण्ड, घी, तैल, तिलहनों में तेजी बनेगी. खाद्यान्नों के भावों में गिरावट आयेगी. रसकस में तेजी आकर मंदा आयेगा. 25 फरवरी : सोमवारी पूर्णिमा का मान रुई, चांदी में तेजी बनायेगा.

फाल्गुन मास : फाल्गुन मास का शुभारम्भ 26 फरवरी की मंगलवारी प्रतिपदा से हुआ है. मास पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार से युक्त मास मिश्रित फलकारक है. शुक्ल पक्ष के तीन बुधवार घी तथा अन्य सभी वस्तुओं में तेजी का योग बना रहे हैं. लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी. धान्यों में तेज घटबढ़ के मध्य गिरावट का रुख बनेगा. रसकस की हानि होगी.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष : 26 फरवरी : बुधास्त कुंभ राशि पू. भा. नक्षत्र में, शुक्र शतभिषा में : फाल्गुन कृष्ण पक्ष की मंगलवारी प्रतिपदा में पू.फा. नक्षत्र का संयोग मास में अन्य योगों से बने अशुभ फलों को नष्ट कर रहा है. सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, चावल, तिल, तैल, सरसों, घी में तेजी बनेगी. 27 फरवरी : फाल्गुन कृष्ण बुधवारी द्वितीया चांदी, रुई में मंदा करेगी.

मार्च मास : मास का प्रारम्भ फाल्गुन कृष्ण पक्ष की शुक्रवारी चतुर्थी से चैत्र कृष्ण पक्ष की रविवारी पंचमी तक रहेगा. 03 मार्च : फाल्गुन कृष्ण रविवारी षष्ठी घी, धान्यों एवं रुई में तेजी बनायेगी. 04 मार्च : सूर्य भाद्रपद में, वक्री बुध शतभिषा में, मंगल मीन में : अन्न में तेजी कुछ स्थानों पर तथा अन्य स्थानों पर भावों में समता रहेगी. सोना, चांदी, गेहूँ, चावल, चना, ज्वार, बाजारा, गूग्गल, गुड़, खाण्ड, देशी शक्कर, घी, सरसों, तिल, तैल, रुई, कपास, सूत, रेशम तथा काष्ठ फर्नीचर में तेजी होगी. 08 मार्च: फाल्गुन कृष्ण शुक्रवारी द्वादशी का क्षय रुई में साधारण तेजी का योग बना रही है. 09 मार्च : मंगल उ.भाद्रपद में, शुक्र पू. भाद्रपद में : चांदी, सोना, रुई, गेहूँ, जौ, चना, चन्दन, कपूर में तेजी आयेगी. 10 मार्च : वक्रावस्था में बुधोदय कुंभ राशि शतभिषा नक्षत्र में : फाल्गुन कृष्ण रविवारी चतुर्दशी से गेहूँ, जौ, चना तथा रुई में तेजी बनेगी. 11 मार्च : फाल्गुन कृष्ण पक्ष की सोमवारी अमावस्या धान्यों की श्रेष्ठ उत्पति का योग बना रही है. दिन के नक्षत्र का मान अमावस्या के मान से कम होकर तेजी का योग बना रहा है. रुई, चांदी, घी में गिरावट आयेगी.

फाल्गुन शुक्ल पक्ष : 12 मार्च : मंगलवारी प्रतिपदा का घट्यात्मक मान पूर्णिमा के नक्षत्र के घट्यात्मक मान से अधिक होने के योग से आज रुई तथा चांदी में घटाबढ़ी चलेगी. 14 मार्च : सूर्य मीन में : नमक, तिल, तैल तथा सभी धान्यों में तेजी बनेगी. 17 मार्च : शुक्र मीन में : फाल्गुन शुक्ल रविवारी षष्ठी से खाद्यान्नों की उपलब्धता में कमी होगी. चांदी, रुई, कपास, सूत, चावल, घी तथा धान्यो में तेजी आयेगी. तैल, तिलहन, अलसी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड में गिरावट रहेगी. 18 मार्च: सूर्य उ.भाद्रपद में, बुध मार्गी कुंभ राशि शतभिषा में : फाल्गुन शुक्ल सोमवार की वृद्धि प्राप्त षष्ठी सोना, चांदी, रुई, सरसों, गेहूँ, जौ, चना, सुपारी, सोंठ, लाख, चमड़ा, गुड़, खांड, शक्कर तथा अलसी में तेजी देगी. 20 मार्च : फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष की अष्टमी का आर्द्रा नक्षत्र कृषि उत्पादनों में कमी का योग बना रहा है. फाल्गुन शुक्ल पक्ष में बुधवारी अष्टमी के संयोग से अन्न तथा अन्न पदार्थों में घटाबढ़ी चलेगी. शुक्र के उ. भाद्रपद में प्रवेश के साथ ही सूर्य मंगल एवं शुक्र का गोचर एक ही नक्षत्र उ. भाद्रपद से हो रहा होगा. दोनो ग्रह 26 मार्च तक एक साथ इसी नक्षत्र में गोचर करेंगे. इस समयावधि में घी, तैल, मसूर आदि दलहनों में तेजी बनेगी. उ. भाद्रपद नक्षत्र का शुक्र - स्वर्ण द्वार का शुक्र सुभिक्ष का योग बना रहा है. सामान्य जन को राहत रहेगी. सोना, चांदी, मोती, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, चावल, नमक, कपूर में मंदा रहेगा. फलों, अदरक, हल्दी, प्याज, लहसुन में तेजी बनेगी. 26 मार्च : मंगल रेवती में : शुक्ल चतुर्दशी के घट्यात्मक मान के पूर्णिमा के मान से अधिक होने तथा सुभिक्ष के योगो से अन्न उत्पादन अधिक होगा. घी, सूत, चांदी, गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजारा में गिरावट आयेगी. सोना में साधारण गिरावट रहेगी. रुई में घटबढ़ के बाद तेजी बनेगी. चांदी में तेजी बनेगी.

चैत्र मास : चैत्र मास का शुभारम्भ 28 मार्च से हुआ है. कृष्ण पक्ष में चतुर्थी का क्षय हुआ है. शुक्ल पक्ष में अष्टमी की वृद्धि होकर चतुर्दशी की हानि हुई है. शुक्ल पक्षीय चतुर्दशी की हानि से मंहगाई का जोर रहेगा.

चैत्र कृष्ण पक्ष : 28 मार्च: सूर्य एवं शुक्र दोनों ग्रहों की वृष राशि में अंशात्मक युति 28 मार्च को होगी. जब-जब भी सूर्य एवं शुक्र एक साथ किसी राशि पर गोचर करते हैं, तब-तब देश में मंहगाई बढ़ती है. इससे पूर्व 12 जनवरी 2010 तथा 29 अक्तूबर 2010 तथा वर्ष 2011 में 16 अगस्त में सूर्य एवं शुक्र दोनों ग्रहों की युति हुई थी उस समय की मंहगाई का आंकलन पाठक स्वयं पिछले रिकार्ड से कर योग की सत्यता को अनुभव कर सकते हैं. 30 मार्च : शुक्र रेवती में : स्वर्ण द्वार का शुक्र सुभिक्ष का योग बना रहा है. चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, कपास, चावल में मंदा रहेगा. 31 मार्च : सूर्य रेवती में : रुई, चावल, चांदी, नमक, सरसों, अलसी, लाख, गेहूँ, जौ चना आदि में तेजी आयेगी.

अप्रैल मास : मास का प्रारम्भ चैत्र कृष्ण पक्ष की सोमवारी षष्ठी से वैशाख कृष्ण पक्ष की मंगलवारी पंचमी तक रहेगा. 01 अप्रैल : बुध पूर्वा भाद्रपद में : अन्न की उपलब्धता में वृद्धि होगी. सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा धान्यों के मूल्यों में गिरावट आयेगी. रुई में घटाबढ़ी चलेगी. 10 अप्रैल : बुध मीन में, शुक्र मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में : बुधवारी अमावस्या कृषि उत्पादन में हानि. जौं, तिल, उड़द का उत्पादन कम रहेगा. घी में तेजी आयेगी. सोना, चांदी, तिल, तैल, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनोला, मूंग, मोठ, अरहर तथा रुई, कपास में मंदा आयेगा. गेहूँ, जौ, चना, तथा अन्य सभी प्रकार के धान्यों एवं गुड़, शक्कर, पटसन, बारदाना में घटबढ़ के बाद तेजी बनेगी. दुधारू पशुओ विशेषकर भैंसो को पीड़ा होगी.

कमोडिटी मार्केट का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है. बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है. बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आकलन कर लेना हितावह रहेगा. ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, मुद्रक अथवा प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होगें. बाजार की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिपोर्ट के लिये लेखक से सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने, नोविनो तरसाली रोड, वड़ोदरा (गुजरात), पिन - 390009 मो 095 7433 7962 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

लेखक -प्रवीन कुमार जैन
सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर सोसायटी के सामने,
नोविनो तरसाली रोड, वड़ोदरा (गुजरात),
पिन - 390009 मो 095 7433 7962

शेयर्स बाजार एवं किराना जिन्स धातुओं में तेजी-मंदी की चाल

व्यपारिक वस्तुओं में वर्ष 2012-13 की तेजी-मंदी विशेष स्थान रखती है। आज के समय में सारे विश्व में व्यापार पर और आर्थिक संबंधों पर भी अधिक चर्चा और नीति-राजनीति तथा जन-साधारण में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है। प्रमुख रूप से खाद्यान्न जैसे गेहूं, चावल, जौ, मक्का, बाजरा, ज्वार आदि। दलहन में सभी प्रकार की दालें, तिलहन में सरसों, अलसी, सोयाबीन तथा नारियल, रुई, जूट-पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, घी, उड़द, चीनी सहित लोहा, तांबा, पीतल, कोयला तथा सोना, चांदी, सभी जिन्स व्यापार में आते हैं। इसके अलावा शनि ग्रह का शेयर बाजार की अर्थ व्यवस्था को संचालित करने में विशेष योगदान रहता है। वि. सं. 2069 के आरंभ में शनि, तुला और वृहस्पति मेष राशि का रहेगा। अन्य सभी प्रमुख ग्रहों के गोचर का उपरोक्त वस्तुओं पर तेजी-मंदी का क्या प्रभाव रहेगा? उसके लिए देखें निम्नलिखित विश्लेषण:-

अप्रैल-शेयर बाजार में मासारंभ में तेजी का वातवरण रहेगा। दूसरे और तीसरे सप्ताह में सभी शेयर घटाबढ़ी के शिकार होंगे। 5 अप्रैल को बुध मीन राशि में आने से जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चांदी, सोना, हीरा, नीलमणी, मोती, तांबा में मंदी बनेगी। 7 अप्रैल को जब मेष राशिगत गुरु होगा तथा शुक्र रोहिणी नक्षत्र वृष राशि में आयेगा। मीन के बुध पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। रुई, कपास में अच्छी मंदी। सोना, चांदी, तांबा, चना, घी, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख रहेगा। 15 से 20 अप्रैल तक पंचक रहने से शेयरों में अच्छा उछाल आयेगा। 22 से 30 अप्रैल के मध्य मुनाफा वसूली के चलते शेयर नीचे गिर सकते हैं।

मई-मासारंभ 5 मई की रात्रि को बुध मेष राशि में आने से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में अच्छी मंदी बने। अलसी, गुड़, घी, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी होगी। गेहूं, जौ, चना, चावलों में तेजी होगी। 10 मई को बुध कृतिका में अस्त होगा। तथा मंगल सिंह राशि में होगा। और गुरु भी कृतिका दूसरे चरण वृष राशि का होकर तुला के शनि और सिंह राशिस्थ मंगल को अष्टम / एकादश दृष्टि से देखेगा। सोना, रुई, तृण, लकड़ी, अनाज, गेहूं, तांबा में तेजी। चांदी, चावल में घटाबढ़ी होकर मंदी बनेगी। शेयर बाजार में 1 से 6 मई तक जहां तेजी का दौर रहेगा, वहां 9 मई को अचानक मंदी का दौर आ सकता है। 14 मई के बाद शेयर बाजार संभलेगा। और उसके बाद 28 मई तक लगातार घटबढ़ के बाद बीच-बीच में अच्छी तेजी का दौर भी रहेगा। महीने के अंत तक शेयर्स मजबूती लिये रहेंगे।

जून-महीने में शनि के वक्री होकर कन्या राशि में संचार करने तथा शुक्र के अस्त होने से रुई, सूत, सन, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी बनेगी। शेयर बाजार सहित जिन्स तथा सर्राफा में भी 7 जून तक बाजार में अस्थिरता एवं मंदी का रुख रहेगा। 8 जून को सूर्य मृगशिरा में आने के बाद से रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी आदि में तेजी बनेगी। 13 जून को वृष का गुरु रोहिणी के प्रथम चरण में तथा शनि चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में आने से रुई, चांदी, तिल में मंदी। अन्य व्यपारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी। इस महीने शेयर बाजार में 2 जून से तेजी का दौर 8 जून तक रहेगा। उसके बाद 13 जून को घटबढ़ या मंदी रहेगी। 14 जून से शेयरों में उछाल आयेगा। और 26 जून तक एकतरफा तेजी रहेगी। 27 जून के बाद शेयरों में जबरदस्त गिरावट दर्ज होगी जो आगामी महीने ही थमेगी।

जुलाई-3 जुलाई को शुक्र वृष राशि में केतु के साथ मेल करेगा। उधर शनि-मंगल भी कन्या राशि में एक दूसरे के समीप आयेंगे। सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, लालचंदन, लालरंग की अन्य व्यापारिक वस्तुएं, घी, उड़द में तेजी बने। चांदी व रुई में पहले मंदी, बाद में मामूली तेजी बने। 5 जुलाई को मंगल भरणी में आने से गेहूं, चना आदि अनाजों, सोना, चांदी और रुई में तेजी बनेगी। 6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आने से रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, अरण्डी, अलसी, सरसों में लाभ। तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, सोंठ, गुग्गल आदि करियाना पदार्थों में तेजी बने। शेयर बाजार की मंदी 3 जुलाई तक रहेगी। और 6 जुलाई तक घटबढ़ बराबर रहेगी। 9 जुलाई से शेयरों में तेजी आनी आरंभ होगी और 12 और 13 की मंदी के बाद 16 से शेयर संभलने लग जायेंगे। और लगातार 20 जुलाई तक तेजी के माहौल में रहेंगे। 25 जुलाई के बाद मुनाफा वसूली का दौर चलेगा। फलतः 31 जुलाई तक शेयर मंदे अथवा घटबढ़ की स्थिति में रहेंगे।

अगस्त-मासारंभ 1 अग. को बुध कर्क राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। इस पर तुला के मार्गी शनि की दृष्टि रहेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी। गुड़, दूध, तेल, घी, मूंगफली, सरसों, सोना, रुई में पहले कुछ तेजी, फिर मंदी का रुख शुरू होगा। 3 अग. को सूर्य अश्लेषा तथा बुध पुष्य में आयेगा। इसी दिन बुध पूर्व में उदय होगा। रुई में घटाबढ़ी के बाद मंदी। सोना, चांदी, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी, मिर्च, मजीठ में तेजी बनेगी। 8 अग. को शनि मेष के चन्द्रमा से प्रतियोग होने से सोना, चांदी तथा शेयरों में तेजी रहेगी। 8 अग. को बुध मार्गी तथा शुक्र मिथुन में होने से रुई, चांदी में पहले मंदी फिर तेजी बने। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू में तेजी बनेगी। सोना, घी, बिनौला, मूंगफली में मंदी बनेगी। 9 अग. को शुक्र के आर्द्रा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में तेजी का रुख शुरू होगा। 12 अग. को शनि चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में आने से सन, दाख, हींग, घी, गुड़, खाण्ड, तेल में तेजी बनेगी। शेयर्स में पहले हफ्ते की तेजी के बाद 9 अग. से मंदी जाहिर हो रही है। और 13 अग. तक यह घटबढ़ कायम रहेगी। 17 अग. से बाजार हल्की तेजी के साथ आगे बढ़ेंगे। और 23 अग. तक बाजार में संभलने की स्थिति आयेगी। 26 अग. के बाद एक बार फिर गिरावट दर्ज होगी। जो 28 तक कायम रहेगी। 29 अग. से बाजार का रुख बदलेगा। और 31 तक कुछ तेजी की झलक मिलेगी।

सितंबर-ता. 1 को ही शुक्र कर्क राशि में आने से रुई, चांदी में मंदी। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी। ता. 4 को मंगल मृगशिरा में आने से तिल, चांदी, रुई, कपास, घी, गुड़, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 7 सितंबर को शनि चित्रा नक्षत्र तथा मंगल के स्वाती के तीसरे चरण में आने से दही, दूध, तेल, कपास, गुड़, घी, तेल, क्रूड आयल में तेजी बनेगी। ता. 12 को शनि आश्लेषा में आयेगा। शुक्र मार्गी तथा शनि तुला में उदय होगा और पूर्ण दृष्टि शुक्र पर रखेगा। घी, तेल, खल, बिनौला, लोहा, रिफाइण्ड तेल, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, तांबा में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। चना, गेहूं आदि अनाज में मंदी बनेगी। ता. 13 को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आने तथा कन्या राशिस्थ अमावस्या होने से रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, अरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी में तेजी। खाण्ड, गुड़ में मंदी बने। शेयर बाजार में यह महीना अच्छा साबित होगा। उद्योगों तथा बैंको के अच्छे नतीजे एवं खरीफ की अच्छी पैदावार से 2 से 11 सितं. तक शेयरों में एकतरफा तेजी रहेगी। ता. 12 से 14 तक मंदी तथा घटबढ़ है। 17 से 21 तक हल्की तेजी के बीच 1 से 2 दिन की मंदी भी है। ता. 24 से 28 तक शेयर पुनः तेजी की रफ्तार लिए रहेंगे।

अक्टूबर-मासारंभ में वायदा एवं हाजिर बाजार में घटाबढ़ी के बीच मंदी का वातावरण रहेगा। ता. 5 को शनि अस्त होगा। और बुध स्वाती नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर सब प्रकार के अनाजों में तेजी करेगा। ता. 12 को तुला राशिस्थ बुध-शनि की युति होने से सोना, घी, गुड़, चीनी, शक्कर, अलसी, चांदी में तेजी बनेगी। गेहूं, जौ,

चनादि में मंदी बनेगी। ता. 16 अक्टूबर को तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से नवरात्रारंभ से बर्तन, सोना, चांदी, रुई, सूत, सरसों, मूंगफली में अच्छी तेजी बनेगी। शेयर बाजार में ता. 1 से 5 अक्टूबर तक हल्की तेजी रहेगी। ता. 8 से 12 तक तेजी का दौर है। 15 से 20 तक घटबढ़ के बीच एक दो दिन बाजार तेज रहेगा। ता. 22 से 25 अक्टूबर तक बाजार में तेजी का ही दौर है। ता. 28 से 31 तक मंदी चल सकती है।

नवंबर-ता. 1 को वृश्चिक राशिस्थ बुध मार्गी होने से सोना, चन्दन, सुपारी, चांदी, गेहूं, जौ, चना, अनाज में तेजी बने। रुई में पहले मंदी फिर तेजी। रेशम, तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर में मंदी बने। ता. 3 को शुक्र चित्रा नक्षत्र कन्या में और मंगल वृश्चिक में आकर बुध के साथ होगा। इन पर वृहस्पति की दृष्टि रहेगी। चांदी में घटबढ़ होकर तेजी। चावल, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड, शेयर बाजार, घी, रुई, ग्वार में तेजी बनेगी। ता. 8 को बुध पुनः वृश्चिक राशि में वक्री होगा और शनि-तुला में सूर्य के साथ मेल करेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, सरसों, अलसी, बिनौला, मूंगफली में तेजी बने। चांदी में घटाबढ़ी के बाद मंदी बनेगी। शेयर बाजार में इस महीने बेहद अनिश्चितता रहेगा। ता. 1 से 9 नवंबर तक बाजार घटबढ़ के दौर में ही रहेगा। ता. 12 से हल्की तेजी रहेगी। परन्तु ता. 15 से 16 तक मंदे के बाद ता. 19 से 23 नवंबर तक तेजी रहेगी। फिर ता. 26 से 30 नवंबर के बाद मंदी और तेजी की दोतरफा लाईनें रहेंगी।

दिसंबर-ता. 3 को सूर्य ज्येष्ठा में आने से सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुग्गल, गुड़, चीनी में तेजी बने। रुई में पहले मंदी फिर तेजी बने। 6 दिसंबर को शुक्र-शनि स्वाती तथा गुरु रोहिणी नक्षत्र के दूसरे चरण में आने से गुड़, चीनी, चना, तेल, सोयाबीन में तेजी। सोना, चांदी में मंदी बने। ता. 8 को बुध अनुराधा नक्षत्र में आने से घी, गुड़, चीनी, चावल, चना में तेजी बने। ता. 11 को शुक्र वृश्चिक में होने से घी, तेल, तिल, उड़द, सोना, चांदी में मंदी। रुई तथा शेयरों में तेजी बने। ता. 14 को धनु राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से रुई में पहले मंदी, बाद में तेजी। सोना, चांदी, गुड़, सरसों, मूंगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। शेयर्स बाजार के लिए यह महीना राहत देने योग्य है। ता. 3 से 8 तक बाजार मामूली स्तर पर उठने लगेगा। ता. 11 से 15 तक बाजार में अच्छी तेजी रहेगी। ता. 19 से 21 तक जोरदार तेजी आ सकती है। ता. 24 से 28 तक कुछ घटबढ़ और रिकवरी का दौर रहेगा। ता. 31 को बाजार पुनः तेजी के साथ खुलेगा।

जनवरी 2013-ता. 4 को शुक्र धनु राशि में चलने से गेहू, सोयाबीन, बिनौला, रुई, जौ, पशु आहार तथा दलहनों में समग्र रूप से तेजी रहेगी। सोना, चांदी और शेयर बाजार में घटबढ़ के आसार रहेंगे। 14 जनवरी के बाद सूर्य-बुध तथा मंगल के मकर में संचरण करने से तमाम वस्तुओं में तेजी आयेगी। जिसमें प्रमुख खाद्यान्न और गुड़, खाण्ड, रुई आदि उल्लेखनीय हैं। शेयर बाजार भी इस महीने तेजी में रहेगा। बीच-बीच में एक दो दिन की मंदी हर सप्ताह रहेगी। जैसे-ता. 1 से 4 तक तेजी, उसके बाद 5/8 की मंदी। ता. 9 से 11 तक तेजी। पुनः 14 से 17 तक बाजार मजबूती लिए रहेगा। ता. 18 और 21 को बाजार गिर सकता है। उसके बाद ता. 22 से 25 तक बाजार में तेजी है। ता. 28 से 31 के बीच मामूली घटबढ़ रहेगी।

फरवरी-इस महीने बुध धनिष्ठा नक्षत्र तथा कुंभ राशि में संचार करेगा। शनि ग्रह भी वक्री चाल से तुला राशि में चल रहा होगा। ऐसी स्थिति में सोना, चांदी, तांबा तथा मेन्था और गेहूं, अरहर, चना में तेजी रहेगी। मूंगफली, घी, तेल, हल्दी सहित अदरख, प्याज आदि में भी इस महीने तेजी आ सकती है। ता. 14 को बुध वक्री होने से शेयर्स बाजार में एकाएक घटबढ़ या मंदी का संकेत रहेगा। ता. 18 से 27 तक सभी प्रकार के वायदा बाजार ढीले चलेंगे। शेयर्स बाजार में पहले सप्ताह में मंदी परन्तु दूसरे सप्ताह में पुनः तेजी का संचार होगा। ता. 4 से 8 तक शेयर घटबढ़ अथवा मंदी की मार से ग्रस्त रहेंगे। ता. 11 से 15 के बीच तेजी तो आयेगी पर ज्यादा नहीं। ता. 18 से 22 के बीच मामूली उठान होगा। पर ता. 25 से 28 के बीच विदेशी बाजारों की तेजी के चलते भारतीय बाजारों में भी तेजी की संभावना रहेगी।

मार्च-मासारंभ में बुध ग्रह पूर्वी आकाश में अस्त होने से गेहूं, चना आदि अनाजों, अलसी, बिनौला, तिल, घी, लालमिर्च, चांदी तेजी में रहे। सोना, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी बने। 3 मार्च को मंगल के मीन में होने तथा 9 मार्च से पंचक प्रारंभ होने से तथा सूर्य-बुध-शुक्र के कुंभ राशि में प्रवेश से गेहूं, जौ, चना, तिल, पीतल, सिक्का, जस्ता, सोना, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। अलसी, सरसों, अरण्डी, उड़द, तिल, तेल, लोहा संग्रह करने से भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा। 14 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र मीन में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। रेशम, बाजरा, उड़द, चना, गेहूं, ज्वार, घी, सरसों, सोना, चांदी, चावल, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई में अच्छी तेजी बनेगी। ता. 7 तक घटाबढ़ी रहेगी। शेयर बाजार इस महीने अपने अच्छे तिमाही नतीजों से तेजी की ओर अग्रसर रहेगा। ता. 4 से 8 तक शेयर्स जोरदार तेजी प्रगट करेंगे। ता. 11 से 15 तक तेजी के बीच एक या दो दिन की मंदी है। इसके बाद ता. 18 से 22 मार्च के बीच बेहतरीन तेजी है। ता. 25 से 29 तक तेजी का स्वरूप बना रहेगा।

विशेष तारीखवार तेजी-मंदी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

Pt. Kewal Anand Joshi
D-I/C-33 A, Janakpuri, New Delhi-58
M : 09868716447, 09810202780

पृष्ठ 238 का शेष

हो। रियल स्टेट या कमर्शियल प्रापर्टी में आप निवेश करने की दृष्टि से भाग्य आजमाना चाहें तो मई-जून से अक्टूबर-नवंबर के बीच के समय का इंतजार करें। वृहस्पति ग्रह आपको इस साल कुछ ऐसी प्रापर्टी का भी मालिक बना सकता है। जो पुश्तैनी या खानदानी तौर से आपको वसीयत में मिल सकती हो।

मकर-यह पूरा साल जमीन-जायदाद की खरीद बेच के मामले में आपको थोड़ा उदासीन रखेगा। इसका मुख्य कारण यही है कि आपकी राशि का स्वामी शनि ग्रह पिछले 6 महीने से उच्च राशि में जाकर आपको जमीन जायदाद खरीदने की बजाय जोड़ी गई प्रापर्टी को बेचने के लिए मजबूर कर सकता है। प्रतिकूल छठे गुरु के कारण कुछ ऐसे हालात आपके व्यक्तिगत जीवन में पैदा हो जायेंगे जिसके चलते आपको अपनी देनदारी चुकाने में निजी या परिवार के सदस्यों के नाम से खरीदी गई प्रापर्टी को बेचना पड़ सकता है। यदि निवेश या लाभ कमाने के लिए कोई प्रापर्टी आपने पहले जोड़ रखी है तो उसको बेचने के लिए अप्रैल-मई का महीना ज्यादा अनुकूल है।

कुंभ-नवम भाव गोचर का उच्च राशि का यानि जमीन जायदाद के मामले में वर्ष 2012 आपको बहुत ही उमदा और अच्छा लाभ की स्थिति में रखेगा। कुछ ऐसी प्रापर्टी आपके हाथ लग सकती है जो अचानक ही आगे चलकर सोना उगलने वाली हो। इसमें उस फालतू और बेकार प्रापर्टी को भी शामिल करें, जो आगे चलकर कमर्शियल या रेजीडेंसियल जोन में आकर बड़े-बड़े बिल्डरों को ललचा सकती है। खुद आप भी मकान और जमीन जायदाद को डेवलप करने की सोच सकते हैं। यदि आप जमीन जायदाद की ठेकेदारी या प्रापर्टी डीलिंग का भी काम करते हैं तो यह साल आपको दोनों हाथों से कमाई करने का अवसर दे रहा है।

मीन-जमीन जायदाद के मामले में अन्य राशियों के मुकाबले आपके ग्रह काफी पिछड़े हुए और कमजोर कहे जा सकते हैं। आपका संतोषी स्वभाव और लालच रहित जीवनचर्या जमीन जायदाद की बजाये अकस्मात ही हाथ में आने वाली प्रापर्टी से आपको इस साल लाभान्वित करेगा। मार्च-अप्रैल तक आपको कुछ ऐसे संकेत मिल सकते हैं कि आप कहीं न कहीं पर किसी उपयोगी या लाभदायक प्रापर्टी के मालिक बन सकते हैं। मई-जून में आपको अपना पैसा और पूंजी को ऐसे रियल स्टेट पर लगा देना फायदेमंद हो सकता है। जो जल्द ही आपके लिए सोने की खान बन सकती है। नवंबर-दिसंबर में जमीन जायदाद के लिए कुछ और अधिक निवेश करने की ताकत या फिर पुरानी को बेचकर नई खरीदने का अवसर भी आपको मिल सकता है।

नोट-प्रापर्टी की तेजी-मंदी के समीकरण देश, आर्थिक व्यवस्था और अन्य कारणों से कहीं भी और कभी भी बदल सकते हैं। लेन-देन से पहले एक्सपर्ट की सलाह अवश्य ले लें।

लेखक-केवल आनंद जोशी

प्रापर्टी बाजार तेजी-मंदी समीक्षा सन् 2012-13 ई.

सन् 2012 में प्रापर्टी बाजार पर ग्रहों की चाल से अधिकांश समय में उतार-चढ़ाव चलता रहेगा। पिछले दो सालों के भीतर तमाम शहरी और ग्रामीण जमीन जायदाद के भाव जिस बेहिसाब अनुपात में बढ़ रहे हैं उसको देखते हुए यही लगता है कि जब भी शनि और मंगल अपनी नीच राशियों में चलते हैं तो उससे पहले प्रापर्टी बाजार पर भयंकर उछाल आता है। वर्ष 2011 के अंत से शनि कन्या से अपनी उच्च राशि तुला में चला गया और 2013 और 2014 तक यह बदस्तूर तुला राशि में ही रहेगा। इस दरम्यान मंगल ग्रह भी 9 अगस्त से 30 अक्टूबर 2011 में अपनी नीच राशि कर्क में रहेगा। और मार्च से मई 2012 तक वहां घटबढ़ करता रहेगा। वृहस्पति की दृष्टि सारे साल भर शनि और मंगल के आगे-पीछे रहेगी। तो यही कहा जा सकता है कि बेहतर सप्लाई के बावजूद मांग कम होने पर भी जमीन जायदाद और रियल स्टेट का कारोबार पहले 6 महीने अपनी ऊंचाई नहीं पकड़ सकता है। अर्थात् मंदी का ही आलम चौतरफा रहेगा।

प्रापर्टी बाजार को ही तेजी के दामन से क्यों परहेज रहे जब सोना, चांदी, सर्राफा और अलौह धातु के साथ-साथ शेयर मार्किट ने भी वर्ष 2012-13 की शुरूआत में ही एक नई ऊंचाई पकड़ ली है। तो यही मानकर चलें कि 2013 पहले तीन चार महीने हर चीज अपनी असली कीमत से दस से बीस गुना तक अधिक लाभ देने की हालत में हो सकती है, या नीचे गिर सकती है।

अतः वर्ष 2012 में अप्रैल से मई-जून तक बीच-बीच में प्रापर्टी बाजार कुछ धीमा जरूर रहेगा। जिसके चलते रियल स्टेट में 10 से 20 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। ज्यों ही जून-जुलाई में मंगल ग्रह और शनि ग्रह सिंह राशि में योग करेंगे, तब एक बार धन की तंगी के कारण प्रापर्टी बाजार में कुछ गिरावट आ सकती है। लेकिन यह गिरावट फ्लेटों, मकानों या फार्म हाऊसों की बजाय ऐसी अरबन प्रापर्टी पर होगी। जिनमें झुग्गी, झोपडी, बस्तियों, नाले और यमुना के खादर हो सकते हैं। कह नहीं सकते है कि 2012 के अंत तक हमारे पास कृषि योग्य भूमि किस मात्रा में घट जायेगी। क्योंकि महानगरों के आसपास छोटी बस्तियों और शहरों के बीच प्रापर्टी पर बिल्डर समाज बुरी तरह नजर गड़ाये बैठा है। और शनि-मंगन इनके लालच की ओर भी अधिक हवा देता जा रहा है। बैंकों में धोखाधड़ी और फ्राड के चलते अब हाउसिंग लोन भी लोगों को आसान ब्याज दरों पर उपलब्ध नहीं रहेंगे। और एक समय ऐसा आयेगा कि मकान या छत के लिए आम आदमी अपने जीवन भर की होने वाली कमाई को पहले से ही गिरवी रख देगा। यह सब हालत वर्ष 2012 के आखिरी दो-तीन महीनों से ज्यादा उग्र होते रहेंगे। और सभी राशियों पर इस तेजी और मंदी का समग्र प्रभाव निम्नलिखित विश्लेषण के आधार पर हो सकता है:-

मेष-आपकी राशि का स्वामी मंगल ग्रह वर्ष 2012 में प्रापर्टी के लेन-देन में अच्छी कमाई कर सकता है। यदि आप बेचने के इच्छुक हैं तो इसे या तो जून के बाद ही बेचें या फिर अक्टूबर-नवंबर के बाद मंगल ग्रह वृश्चिक राशि में चला जायेगा तब बेचें। प्रापर्टी खरीदने के लिए आपको मार्च, अप्रैल और मई के महीने ज्यादा अनुकूल रहेंगे। यह साल आपके लिए जमीन-जायदाद से लाभ देने में काफी अनुकूल रहेगा।

वृष-आपकी राशि पर शनि और मंगल का दबाव प्रापर्टी को बेचकर पुनः प्रापर्टी में ही निवेश करने के लिए उत्तम रहेगा। फरवरी से अप्रैल तक आप इस प्रकार के फेर बदल से फायदा उठा सकते हैं। मार्च में अगर किसी दूर दराज की जमीन जायदाद पर निवेश करेंगे तो अगले छः महीने के बाद ही आप उससे लाभान्वित हो सकते हैं।

मिथुन-जमीन जायदाद की खरीद फरोख्त के लिए यह साल आपके लिए बहुत ज्यादा अनुकूल तो नहीं है, फिर भी यदि अपना पैसा कमर्शियल या रेजीडेंशियल प्रापर्टी में लगाना चाहें तो फायदा हो सकता है। मार्च-अप्रैल तक आप रुक जायें। मई-जून और जुलाई के महीने आपको ऐसी प्रापर्टी पर निवेश के अवसर दे सकता है जो आगे चलकर अपनी कीमतों में इजाफा करेगी। अक्टूबर और नवंबर के महीने में खरीदी हुई जमीन बेचने से आपको लाभ हो सकता है।

कर्क-तुला के शनि के प्रभाव के कारण जमीन खरीदने के बजाय मकान या फ्लैट आदि पर निवेश करना लाभदायक रहेगा। ऋण या लोन लेकर भी आप इस समय जमीन जायदाद पर इन्वेस्ट करेंगे, तो साल के अंत तक अपने पुराने ऋण को उतारने में कामयाब हो जायेंगे। इतना जरूर है कि शनि-मंगल का असर मई-जून तक आपको विवादग्रस्त प्रापर्टी को नहीं खरीदने की सलाह देता है। आगे चलकर भी आपको जमीन जायदाद के सत्यापन के आधार पर ही निवेश करना चाहिए। अन्यथा आप मुकदमें बाजी अथवा झगड़े में पड़ सकते हैं।

सिंह-शनि ग्रह आपकी राशि से तीसरा पर चल रहा है, साथ में राहु और मंगल भी मई-जून तक आपकी राशि से चौथे और दशम पर आ रहे हैं। आपके लिए इस वर्ष यही खतरा है कि जायदाद और जमीन के फायदे के लालच में आकर कोई आपको गुमराह न करें। अगर आप बुरे वक्त पर नहीं चेते तो आगे चलकर परेशानी में गिर सकते हैं। मार्च से लेकर जुलाई तक आपका समय ठीक नहीं है। सितम्बर-अक्टूबर के बाद कुछ राहत मिलेगी। तभी आप जमीन जायदाद में हाथ डालने की सोच सकते हैं।

कन्या-फिलहाल 2012 में दूसरा शनि और साढ़ेसाती में जमीन जायदाद खरीदना इस साल आपके लिए आ बैल मुझे मार वाली स्थिति पैदा कर सकता है। साल के पहले दो-तीन महीने जमीन-जायदाद बेचने के लिए अच्छे हैं। लेकिन प्रापर्टी की फेस वैल्यू आंकने में आपके द्वारा किया गया आंकलन गलत भी हो सकता है। शनि की साढ़ेसाती चल रही है। कहीं ऐसा न हो कि आप ऐसी फिजूल की प्रापर्टी खरीद कर बैठ जायें जो कि आगे चलकर न तो बिकने योग्य हो और न ही रहने योग्य। जमीन-जायदाद खरीदने से पहले किसी जानकार ज्योतिषी से अपने ग्रहों और कुण्डली की जांच पड़ताल अवश्य करा लें।

तुला-उच्च राशि पर गोचर का शनि के दौरान आपके लिए इस साल कुछ भी खरीदना-बेचना मुनाफे का सौदा रहेगा। यदि किसी महंगी कमर्शियल प्रापर्टी पर भी आपने नजर गड़ाई है तो मार्च-अप्रैल तक आपके ग्रह नक्षत्र उस प्रापर्टी पर कब्जा करने की कोशिश कर सकते हैं। मई-जून में आप जमीन जायदाद के मामले में सतर्क होकर चलें। किसी गैर मुनासिब सौदे में आपका पैसा फंस सकता है। वर्ष के आखिर तक यानि नवंबर-दिसंबर में पुनः जमीन जायदाद और महंगी प्रापर्टी पर आपका हाथ जायेगा। लेकिन आर्थिक प्रतिबंध या अन्य कारणों से कुछ रुकावट भी आ सकती है।

वृश्चिक-जमीन-जायदाद के कारोबार में आपके सितारे कभी भी मार नहीं खा सकते हैं। मंगल ग्रह आपकी राशि का स्वामी है जो साल के अंत तक आपकी राशि में प्रवेश करेगा। हो सकता है उस समय किसी जमीन-जायदाद के वाजिब झगड़े में आप फंसे हों। सावधानी की बात यही है यदि आप अपने शुभचिन्तकों और दोस्तों के लिए जमीन-जायदाद के सौदे करने में मिडिलमैन का काम कर रहे हैं या दलाल या कमीशन एजेन्ट का काम कर रहे हैं तो विवादग्रस्त और झगड़े वाली जमीनों के सौदे कदापि न करें। अन्यथा लम्बे झंझटों के फेर में पड़ सकते हैं। मध्यम स्तर की प्रापर्टी बेचने के लिए मई-जून के महीने अनुकूल रहेंगे।

धनु-जमीन-जायदाद के मामले में यह साल आपके लिए बहुत ज्यादा फलदायी तो नहीं है क्योंकि राशि सप्तम पर चल रहा वृहस्पति और एकादश भाव का शनि आपको ऐसे सौदेबाजी से दूर रखेगा। जिसमें उतार-चढ़ाव या विवाद की आशंका शेष पृष्ठ 237 पर

वर्षा बरसने के प्रश्न, कहावतें और वर्षा के अन्य लक्षण

वर्षा बरसने का प्रश्न-जिस समय व्यक्ति वर्षा होने का प्रश्न करे कि वर्षा होगी या नहीं, तो उस समय की लग्न निकालकर कुण्डली बनावें। फिर तात्कालिक ग्रह अंकित करें फिर देखें कि नीचे लिखे योगों में से जो भी योग बने, उसी के अनुसार उत्तर देखें।

1. लग्न से सातवें अथवा चन्द्रमा से सातवें स्थान में शुक्र और शनि बैठे हों, तो पानी बरसे। 2. दूसरे या तीसरे घर शुक्र या शनि बैठे हों तो वर्षा हो। 3. यदि शुक्ल पक्ष में प्रश्न हो और पानी की राशि कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्न हो और केन्द्र में शुभ ग्रह पड़े हों तो पानी बरसे। 4. यदि प्रश्न के समय कर्क, वृश्चिक अथवा मीन लग्न हो और उसमें चन्द्रमा विराजमान हो तो वर्षा हो। 5. यदि दूसरे घर में जल संबंधी ऊपर वाले तीन लग्नों में से कोई लग्न हो तो वर्षा हो। 6. दूसरे व तीसरे स्थान में चर लग्न 1, 4, 7, 10 में से कोई हो और शुभ ग्रह भी पड़े हों तो 27 दिन में पानी बरसे। 7. वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ और मीन लग्न में चन्द्रमा और शुक्र परस्पर सम्मुख पड़े हों तो भी वर्षा हो। 8. वर्षा ऋतु में शनि के सातवें अथवा नवमें चन्द्रमा पड़े, तो भी वर्षा हो। 9. वर्षा ऋतु में चन्द्रमा शुक्र पानी के लग्नों में स्थित हों और केन्द्र में विराजमान हों और चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखता हो तो उस वर्ष पश्चिम दिशा में वर्षा अधिक होगी। 10. चौथे घर में जल संबंधी ग्रह हों तो पानी बरसे। 11. यदि प्रश्न समय में पूरब दिशा कौआ बोले तो पानी बरसे। 12. शुक्ल पक्ष में प्रश्न हो और वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा हो और शुभ ग्रह देखते हों और लग्न या चौथे घर में चन्द्रमा हो तो भी वर्षा हो।

ग्रहों के अतिरिक्त वर्षा के अन्य लक्षण एवं कहावतें भी अपना प्रभाव दिखाते हैं। जो कि शास्त्र सम्मत है। जो निम्न प्रकार से है- **चैत्र मास -एक बूंद जो चैत मंह परै, तो सहस्त्र बूंद सावन मंह हरै। ज्येष्ठ मास-जेठ मास जो तपै निराशा, तब जानो बरखा कै आशा। आषाढ़-आषाढ़ै नौमी दिना ना बादल ना बीज, हल फाड़ ईंधन करो बैठा खावो बीज। दूसरी-मोर पंख बादल उठै काजर रंडा रेख, वो बरसे वो घर करे या में मीन ना मेख। श्रावण-श्रावण पहली पंचमी बरसे करै निहाल, हवा चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल।** दूसरी-दोपहर में सूर्य के चारों ओर कुण्डल (घेरा) बने तो वर्षा शीघ्र ही होती है। **भाद्रपद-रात निवद्दर दिन को छाहिं, घाघ कहे अब बरखा नाहिं।** इसकी दूसरी कहावत है-**उल्टा बादल जो चढ़ै विधवा खड़ी नहाय, तो यह निश्चय कर जानियो वो बादल बिन बरसे नाहिं जाय।** भादों आश्विन में 29 अगस्त के आसपास अगस्त तारा होता है जिससे वर्षा रुक जाती है। लेकिन कभी-कभी वर्षा बहुत होती है। कहावत है-**उगे अगस्त मेघ नहीं मण्डे, जो मण्डे तो धार नहीं खण्डे। भादो सुदी की पंचमी जो जल नहीं बरसंत, ता यह निहचय कर जानियो जलधर हुवो अंत। माघे गर्मी जेठा जाड़, घाघ कहै हम होवे उजाड़।** मास में कभी-कभी चन्द्रमा के कुण्डल बनता है, तो वह भी वर्षा को दर्शाता है-**शशि के कुण्डल इक नजदीक इक दूर, वर्षा झड़ी लगायसी नदी बहै भरपूर। आश्विन**-यदि पर्वत के आकार के बादल दृष्टिगोचर हों तो भी वर्षा होने का संकेत है। और यदि उत्तर दिशा में बिजली चमके तो भी वर्षा शीघ्र ही होना चाहती है। और भी वर्षा के लक्षण शास्त्रों में लिखे हैं-पानी आकाश का बिल्कुल निर्मल हो जाना या अत्यधिक गर्मी का होना या अधिक हवा चले या बिल्कुल हवा बंद हो जाना। **कार्तिक-जो उदय देव शनि होय, नदी नाला सूकसी वर्षा थोड़ी होय।** जब मंगल शनि राशि बदलते हैं तब वर्षा होती है।

चींटियों का शकुन-वर्षा ऋतु में यदि चींटियां अपने अण्डे पानी में या ऊपर स्थान से नीचे के स्थान को लावे तो वर्षा रुक जाती है। यदि वे अपने अण्डे नीचे से ऊपर वृक्षादि पर ले जाएं तो वर्षा शीघ्र होती है।

वैशाख मास में कौआ किसी निरुपदमी वृक्ष पर अपना घोंसला बनाये, तो उस वर्ष सुभिक्ष होता है। और मंगल कारक भी होता है। यदि वह किसी कांटेदार या किसी निन्दित वृक्ष पर घोंसला बनाये तो दुर्भिक्ष की आशा रहती है तथा अनिष्टकारी होता है। यदि आश्विन-कार्तिक मास में कौआ वृक्ष की पूरब दिशा वाली शाखा पर अपना घोंसला बनाये तो पहले पश्चिम दिशा में वर्षा होती है। यदि दक्षिण और उत्तर दिशा वाली शाखाओं यानि डाल पर अपना घोंसला बनाये तो घोर वर्षा होती है। जैसे कि संवत् 2067 में घोर वर्षा हुई। यदि ईशान कोण में घोसला बनाये तो सुभिक्ष होता है। यदि वायव्य कोण में बनाये तो इससे खेती में चूहों के द्वारा नुकसान की संभावना रहती है। वैशाख-ज्येष्ठ में भी घोंसला बनाने का यही फल है। यह फल कई बार परिक्षित है।

विशेष-आषाढ़ की नौमी के दिन जैसा मौसम होगा, वैसा ही फल होगा। जिस दिन अगस्त तारा उदय होता है, उस दिन जैसा मौसम होगा, वैसा ही फल होगा। भादों सुदी पंचमी को जैसा मौसम होगा, वैस ही फल होगा। ध्यान रखना! पाठक इनका वर्ष के अंदर अवलोकन करके देखें। उदय या अस्त ग्रह से वर्षा का ज्ञान-शुक्र या बुध जब अस्त या उदित होते हैं, तो वर्षा होती है। सर्प पेड़ों पर चड़ते दिखाई दे, तो भी वर्षा शीघ्र ही आना चाहती है। पूर्णमासी, अमावस्या या संक्रांति के दिन चन्द्रमा जल राशि में हो तथा बुध या शुक्र से युक्त हो तो वर्षा अवश्य होती है। सायंकाल के समय वर्षा ऋतु में चिड़ियां धूल में नहाती हों तो भी वर्षा शीघ्र ही आना चाहती है। शुक्रवार को बादल छायें और शनिवार को बरसते रहें तो एक सप्ताह तक लगातार वर्षा होती रहती है। इसमें रुक-रुककर वर्षा होती रहती है। ऐसा जाना जाता है। माघ, पौष में दक्षिण दिशा की हवा चले तो वर्षा शीघ्र होती है। कहावत भी है-माघ पौष जो दखना चलै, तो सावन कै लक्षण भले। यह सर्व योग अपने-अपने समय पर अपना प्रभाव दिखाते हैं। ऋषि-मनीषियों की कहावतें भी सटीक नहीं निकलती हैं। तथापि 90 प्रतिशत अवश्य सत्य सिद्ध होती हैं। क्योंकि मैंने भी अब तक बहुत कहावतें एवं योगों की परीक्षा की, जो सही ही बैठती है। वैसे तो त्रुटियों से रहित परमपिता परमात्मा ही हैं, अन्य नहीं। विद्वानों से भी प्राचीन ग्रन्थों के संकेतों को समझने में कभी-कभी भूल हो जाती है। वेद-शास्त्र अपने स्थान पर सब ठीक हैं।

लेखक : आनन्द प्रकाश प्रजापति
ग्राम-कालेवाला, पोस्ट-गोपीवाला
जिला-मुरादाबाद, उ.प्र.-244601

आर्यभट्ट पंचांग के थोक विक्रेता

दिल्ली

अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावली	दिल्ली
पुस्तक महल, खारी बावली	दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, नई सड़क	दिल्ली
कमल पुस्तकालय, नई सड़क	दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार	दिल्ली
के.के. गोयल एण्ड कं., दरीबा बाजार	दिल्ली
नाथ पुस्तक भण्डार, दरीबा बाजार	दिल्ली

राजस्थान

अग्रवाल जनरल स्टोर, सदर बाजार, नसिराबाद	अजमेर
आर्य ब्रदर्स बुक सेलर्स, पुरानी मंडी	अजमेर
गनपत लाल अग्रवाल, पुरानी मंडी	अजमेर
मानक चन्द रतन लाल गोडिया, नेकरी	अजमेर
अखंड भारत समाचार बिक्रेता, बुक सेलर्स	बांसबाड़ा
भारतीय पुस्तक भण्डार, नानी गली, जगदीश रोड	उदयपुर
फेमस बुक स्टोर, 27-बापू बाजार	उदयपुर
हितेषी पुस्तक भण्डार, सूरज पोल	उदयपुर
राजस्थान बुक स्टोर्स, 25, बापू बाजार	उदयपुर
सिंघतवादिया स्टोर्स, घंटा घर	उदयपुर
यूनिवर्सल बुक स्टोर, चेतक सर्कल	उदयपुर
देवी साई बुक सेलर्स, त्रिपोलिया बाजार	जयपुर
अमृत लाल देवी लाल बुक सेलर्स	बाड़मेर
भांढ़ी सरदार चन्द जैन एण्ड सन्ज, त्रिपोलिया बाजार	जोधपुर
किताब घर बुक सेलर्स, सजती गेट के बाहर	जोधपुर
भरतपुर बुक स्टोर, जामा मस्जिद	भरतपुर
गोयल नावेल स्टोर, बस स्टैन्ड	पाली मारवार
हिन्दी पुस्तक मंदिर, नेहरू मार्ग	सिकार
जगन्नाथ गुरुमल बुक सेलर्स	गंगापुर सिटी
खुशी राम लक्ष्मी नारायण बुक सेलर्स, गोल बाजार	श्रीगंगानगर
किताब घर, बुक सेलर्स	सुजान गढ़
लोकप्रिय पुस्तक भण्डार, गुड़ मंडी	भिलवाड़ा
सरस्वती स्टोर्स, कॉलेज रोड	भिलवाड़ा
मोहन न्यूज एजेन्सी, रामपुरा बाजार	कोटा
महावीर बुक स्टॉल	सरदार शहर
शारदा पुस्तक मंदिर, बुक सेलर्स	सरदार शहर
विजय स्टोर, नजदीक पोस्ट ऑफिस	सरदार शहर
महावीर पुस्तक भण्डार, सदर बाजार	नोखा
मिसरी लाल बस्तीमल कटारिया	पाली मारवाड़
नटवर पुस्तक भण्डार, बुक सेलर्स	चित्तौड़गढ़
श्रृंगार स्टोर, 4/5, नेहरू बाजार	चित्तौड़गढ़
पालीवाल जेनरल स्टोर, सिनेमा रोड	कांकरोली
प्रेम बुक डिपो, बस स्टैन्ड	मेड़ता सिटी
पं. बंसीधर शर्मा, बुक सेलर्स	किशन गढ़
राधाकृष्णा रामविलास जिन्दल, बुक सेलर्स	आबू रोड
राम बल्लभ राम गोपाल	दिदवाना
रामचन्दर हीरालाल बुक सेलर्स, खजांची बिल्डिंग	बीकानेर
राठौर प्लेइंग स्टोर, बुक सेलर्स, गणेश चौक	जलोर
सरस्वती पुस्तक भण्डार, मेन रोड	डुंगरपुर
श्री हनुमान स्टोर, बुक सेलर्स	रतनगढ़

हरियाणा

गुजराल पुस्तक भण्डार, दाल बाजार	अम्बाला सिटी
गुरदयाल सिंह एण्ड सन्ज, रेलवे रोड	अम्बाला सिटी
नागिया पुस्तक भण्डार, चौक सब्जी मंडी	अम्बाला कैन्ट
नाथ पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड	रोहतक

पंजाब

जवाहर सिंह किरपाल सिंह, बाजार माई सेवा	अमृतसर
तिरथ राम जोशी एण्ड सन्ज, बाजार माई सेवा	अमृतसर
उत्तम सिंह गुरबचन सिंह, बाजार माई सेवा	अमृतसर
भाटिया बुक डिपो, रेलवे रोड	पठानकोट
रामा न्यूज एजेन्सी, रेलवे रोड	पठानकोट
स्टैन्डर्ड बुक डिपो, रेलवे रोड	पठानकोट
चपत राय किशोरी लाल बुक सेलर्स	अबोहर
चोपरा पब्लिशर्स, शीश महल	होशियारपुर
गुप्ता ब्रदर्स बुक सेलर्स, बाजार शिखा	जालंधर
न्यू भारत पुस्तक भण्डार, अड्डा होशियारपुर	जालंधर
हंसराज अग्रवाल, अरना बरना बाजार	पटियाला
हरवंश बुक डिपो, बुक मार्केट	लुधियाना
मोहन पुस्तकालय, बुक मार्केट	लुधियाना
प्रताप बुक डिपो, बुक मार्केट	लुधियाना

चण्डीगढ़

लक्ष्मी स्टेशनर्स, बूथ नं. 19, सेक्टर-22 डी.	चण्डीगढ़
मोडर्न बुक शोप, बूथ नं. 5, सेक्टर-22 डी.	चण्डीगढ़
पाल प्रकाशन, शोप नं. 9, सेक्टर-45	चण्डीगढ़
शर्मा बुक डिपो, एस.सी.एफ.-4, सेक्टर-19 सी.	चण्डीगढ़
इंगलिश बुक डिपो, शोप नं. 33-34, से.-22 डी.	चण्डीगढ़

उत्तर प्रदेश

अग्रवाल बुक डिपो, अमरोहा गेट	मोरादाबाद
मो. मुस्तकीन बुक सेलर, तेहसील गेट	मोरादाबाद
गर्ग पुस्तक भण्डार, कुशल नगर	मोरादाबाद
अनवर बुक डिपो, 37-अमीनाबाद पार्क	लखनऊ
ब्रजवासी पुस्तक भण्डार, छाता बाजार	मथुरा
श्रीजी प्रकाशन मंदिर, विश्राम बाजार	मथुरा
सी.एल. अग्रवाल एण्ड सन्ज, बड़ा बाजार	अलीगढ़
के.बी. एण्ड सी.एल. अग्रवाल, बड़ा बाजार	अलीगढ़
चित्र प्रकाशन, पुरानी तहसील	मेरठ
जवाहर बुक कं., बुधाना गेट	मेरठ
जवाहर बुक डिपो, स्वामी पारा	मेरठ
दीप पब्लिकेशन, कंचन मार्केट, हॉस्पीटल रोड,	आगरा
महावीर बुक एजेन्सी, हॉस्पीटल रोड	आगरा
श्री नारायण हरिश चन्द, जौहरी बाजार	आगरा
हरभजन सिंह एण्ड सन्ज, बड़ा बाजार	हरिद्वार
हरदास बुक सेलर्स, गांधी रोड	झांसी
रामकुमार महावीर प्रसाद, मेन बाजार	धामपुर
श्रीकृष्णा पुस्तकालय, चौक	कानपुर

हिमाचल प्रदेश

अजय स्टेशनरी मार्ट, मेन बाजार	सोलन
मंगत राम एण्ड सन्ज, न्यूज एजेन्ट	सोलन
राज कुमार डिपो, मेन बाजार	सोलन
गोयल बुक डिपो, मेन बाजार	पालमपुर
पालम स्पोर्ट एण्ड स्टेशनर्स	पालमपुर
स्नो लाईन ट्रेडिंग कारपोरेशन, मेन बाजार	पालमपुर
किरण कुमार विनोद कुमार, मेन बाजार	ऊना
किशन लाल एण्ड सन्ज, 193, लोअर बाजार	शिमला
पं. सुन्दर दास एण्ड सन्ज, लोअर बाजार	शिमला
राज ब्रदर्स बुक सेलर्स, लोअर बाजार	शिमला
राजपाल स्टेशनरी मार्ट, लोअर बाजार	शिमला
रमेश बुक डिपो, लोअर बाजार	शिमला
मदी दी हटी, मेन बाजार	मान्डी
शर्मा बुक डिपो, स्कूल बाजार	मान्डी
नवीन पुस्तक भण्डार, बुक सेलर्स	सरकाघाट
प्रेम जनरल स्टोर, बुक सेलर्स एण्ड स्टेशनर्स	चम्बा
रामनाथ जोशी एण्ड सन्ज, अड्डा मार्केट	नांगल टाउनशीप
रामा कृष्णा एण्ड सन्ज, सिविल लाईन	धर्मशाला
रिकी बुक स्टोर, अखोरा बाजार	कुलू
टेकनीकल बुक डिपो	बैजनाथ
त्रिलोकचन्द सूद न्यूज पेपर एजेन्ट, बस स्टैन्ड	बिलासपुर

काश्मीर

अब्दुला न्यूज एजेन्सी, लाल चौक	श्रीनगर
ज्ञानचन्द ओम प्रकाश, लाल चौक	श्रीनगर
एशिया बुक सेन्टर, कोची छावनी	जम्मू
दुर्गा स्टेशनरी स्टोर, हॉस्पीटल रोड	जम्मू
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, सिटी चौक	जम्मू
साहित्य संगम बुक सेलर्स, कोची छावनी	जम्मू
सानिक स्टेशनरी मार्ट, सदर बाजार	जम्मू कैन्ट
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, बुक सेलर्स	उधमपुर

मध्य प्रदेश

गोपालजी धनामल एण्ड कं.	गंज बासोदा
रामचन्द्र जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, गणेश बाजार	शिवपुर कलां
कोठारी पुस्तक भण्डार, बुक मार्केट	नीमच कैन्ट
श्रीकृष्णा पुस्तक भण्डार	नीमच कैन्ट-2
नेशनल बुक डिपो, 21, राजवारा चौक	इन्दौर
सरदार सहन सिंह बुक सेलर्स, 28, बक्शी गली	इन्दौर
विरेन्दर पुस्तकालय, सिया गंज	इन्दौर
ओंकार प्रिंटिंग प्रेस, सर्राफा बाजार	मंदसोर
सरस्वती स्टोर्स, लक्ष्मीबाई मार्केट, बड़ा	ग्वालियर

महाराष्ट्र

भंवरलाल राम चन्दर व्यास, 112-शांति पेठ	जलगांव
गर्ग एण्ड कं., 106-सी.पी. टैंक	मुम्बई
नाज बुक डिपो, मो. अली बिल्डिंग, अली मार्ग	मुम्बई
न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, बजीर बिल्डिंग, भिंडी बाजार	मुम्बई
श्रीलक्ष्मी बुक डिपो, सी.पी. टैंक, माधव मार्ग	मुम्बई
कर्मवीर बुक डिपो, मोहेल	नागपुर-2
श्री विष्णु बुक सेलर्स, गांधी रोड	अकोला
सुखदेव जोधराज सर्राफा बाजार, नेहरू रोड	जालान
सुरेश जनरल स्टोर, फूल बाजार	जालान

उत्तरांचल

अमर बुक डिपो, हरकी पौरी	हरिद्वार
अर्जुन सिंह बुक सेलर, बड़ा बाजार	हरिद्वार
महेन्द्र पुस्तक भण्डार, विकास नगर	देहरादून
यशपाल एण्ड सन्ज, रेलवे रोड	रूड़की

पश्चिमी बंगाल

गणेश एण्ड ब्रदर्स, 30/31, कलाकार स्ट्रीट	कोलकाता
हिन्दी पुस्तक भण्डार, 177-एम.जी. रोड	कोलकाता
काशी स्टोर, मेन रोड, कलिमपौंग	दार्जिलिंग

असम

अखबार घर, फैंसी बाजार	गुवाहाटी
बी.एन. मादी, एच.एस. रोड	डिब्रूगढ़
कंगन स्टेशनरी स्टोर, बुक सेलर्स	डिब्रूगढ़
रावतमल सूरजमल शर्मा, बुक सेलर्स	डिब्रूगढ़
विश्वखुश बुक सेलर्स, मंदिर मार्ग	शिव सागर
धार्मिक पुस्तक भण्डार, जी.एन.बी.रोड	तीनसुकिया
ललन बुक स्टाल, चौक बाजार	तेजपुर
नवीन पुस्तक भण्डार, मेन रोड	गोला घाट

वि. सं. 2069, शाके 1934 मध्ये शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

पृष्ठ 189 का शेष

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
वैशाख कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.										
10	15	अप्रैल	रवि	धनि.	9	॥॥॥ऽ॥ (गणितेन क्रांति)	ल. मीन रात्री 28 ।31 बजे।	मेष	मेष	कुंभ
11	16	''	सोम	''	8	॥॥ऽअग्नि. ।ऽ॥	ल. मिथुन 11 ।16 तक	मेष	मेष	कुंभ
12	18	''	बुध	उभा.	7	॥ऽबु. ॥ऽरा.ऽ॥।	ल. धनु रात्री 23 ।01 बजे, मीन रात्री 28 ।19 बजे।	मेष	मेष	मीन
वैशाख शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.										
3	24	अप्रैल	मंगल	रोहि.	8	॥ऽ।ऽ॥॥।	ल. मीन रात्री 27 ।56 बजे (स्वयं सिद्धि)	मेष	मेष	वृष
9	30	''	सोम	मघा	7	॥ऽ॥।ऽ।ऽ।	लं. धनु रात्री 22 ।14 से, मीन रात्री 27 ।26 से	मेष	मेष	सिंह
आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.										
7	26	जून	मंगल	उफा.	7	।ऽऽ॥।ऽ॥।	ल. मेष रात्री 25 ।13 बजे।	मिथुन	वृष	कन्या
कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.										
12	25	नवं.	रवि	अश्वि.	7	ऽऽ॥।ऽ॥।	ल. कर्क रात्रि 20 ।56 बजे, सिंह रात्री 23 ।17 बजे।	वृश्चि.	वृष	मेष
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.										
11	9	दिसं.	''	चित्रा	9	॥॥ऽ॥।	ल. कुंभ 11 ।24 रात्री कर्क 20 ।1 बजे।	वृश्चि.	वृष	कं/तुला
12	10	''.	सोम	स्वा.	9	॥॥ऽचौर॥॥	ल. दिवा कुंभ 11 ।20, रात्री कर्क 19 ।5 7, सिंह 22 ।18 बजे।	वृश्चि.	वृष	तुला
पौष शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.										
3	14	जन.	''	धनि.	10	॥॥॥॥ (गुरौदोषाभाव)	ल. वृष दिवा 13 ।29 बजे।	मकर	वृष	कुंभ
8	19	''	शनि	अश्वि.	8	॥॥॥ऽऽ॥	ल. वृष दिवा 13 ।9 बजे, मिथुन 15 ।05 बजे।	मकर	वृष	मेष
11	22	''	मंगल	रोहि.	7	॥ऽगु. ॥ऽरो. ॥ऽ।	ल. वृष दिवा 12 ।58 बजे (शु.पू.)	मकर	वृष	वृष

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय विवाह मुहूर्त्ताः सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण	सूर्य	गुरु	चन्द्र
आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.										
13	2	जुला.	सोम	मूल	7	॥॥ऽरौ. ।ऽऽ।	ल. मकर रात्री 20 ।11 बजे।	मिथुन	वृष	धनु
15	3	''	मंगल	''	7	॥॥ऽरौ. ।ऽऽ।	ल. तुला 13 ।24 बजे।	मिथुन	वृष	धनु

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
2	5	जुला.	गुरु	श्रव.	8	।। ।।ऽ ।ऽ ।। ।	ल. मेष रात्री 24 ।38 बजे।	मिथुन	वृष	मकर
6	9	"	सोम	उभा.	8	।। ।।ऽ ।ऽ ।। ।	ल. मकर रात्री 19 ।43 बजे, मेष रात्री 24 ।22 बजे।	मिथुन	वृष	मीन
9	12	"	गुरु	अश्वि.	6	।। ।। ।ऽऽरो.ऽऽ ।	ल. तुला दिवा 12 ।49 बजे।	मिथुन	वृष	मेष

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
2	21	जुला.	शनि	मघा	7	।ऽ ।। ।ऽरा.ऽ ।। ।	ल. धनु दिवा 16 ।52 बजे, मेष रात्री 23 ।31 बजे।	कर्क	वृष	सिंह
8	26	"	गुरु	स्वा.	7	ऽऽ ।। ।। ।ऽ ।।	ल. धनु दिवा 18 ।34 तक	कर्क	वृष	तुला
12	30	"	सोम	मूल	7	ऽ ।। ।ऽऽनृ. ।। ।।	ल. धनु दिवा 16 ।16 बजे, मेष रात्री 22 ।55 बजे।	कर्क	वृष	धनु
14	1	अग.	बुध	उषा.	6	ऽ ।।ऽशु. ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. धनु दिवा 16 ।8 बजे, मेष रात्री 22 ।47 बजे।	कर्क	वृष	मकर

प्रथम भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
9	11	अग.	शनि	रोहि.	7	।।ऽगु. ।ऽ ।।ऽ ।।	ल. धनु दिवा 15 ।29 बजे, मिथुन रात्री 25 ।42 बजे।	कर्क	वृष	वृष

द्वितीय भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
3	18	सितं.	मंगल	स्वा.	9	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. मिथुन रात्री 23 ।9 बजे।	कन्या	वृष	तुला
7	22	"	रवि	मूल	8	।। ।। ।। ।ऽ ।ऽ	ल. मकर दिवा 14 ।48 बजे, कुंभ दिवा 16 ।31 बजे।	कन्या	वृष	धनु
11	26	"	बुध	धनि.	7	ऽ ।।ऽशु.ऽ ।। ।। ।	ल. कुंभ दिवा 16 ।15 बजे।	कन्या	वृष	मकर

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
7	21	अक्टू.	रवि	उषा.	8	।। ।। ।ऽरा. ।ऽ ।।	ल. मिथुन रात्री 21 ।0 बजे।	तुला	वृष	धनु
9	23	"	मंगल	श्रव.	7	ऽ ।। ।।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. कुंभ दिवा 14 ।29 बजे।	तुला	वृष	मकर

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
3	1	नवं.	गुरु	रोहि.	7	।।ऽगु. ।ऽऽचौ. ।। ।।	ल. मकर दिवा 12 ।11 बजे, रात्री मिथुन 20 ।16 बजे।	तुला	वृष	वृष
4	3	"	शनि	मृगे	6	।। ।।ऽऽऽऽ ।।	ल. मकर दिवा 12 ।03 बजे।	तुला	वृष	मिथुन
9	8	"	गुरु	मघा	7	।। ।। ।ऽरा.ऽऽ ।।	ल. कुंभ दिवा 13 ।26 बजे, रात्री मिथुन 19 ।49 बजे।	तुला	वृष	सिंह
12	11	"	रवि	हस्त	10	।। ।। ।। ।। ।।	ल. कुंभ दिवा 13 ।14 बजे, कर्क रात्री 21 ।51 बजे।	तुला	वृष	कन्या

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. 2069 वि.

तिथि	दिनांक		वार	नक्षत्र	रेखा	लतादि दशदोष शुद्धि	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (भा.स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चन्द्र
5	18	नवं.	रवि	उषा.	7	ऽऽ ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. कुंभ दिवा 12 ।46 बजे, रात्री सिंह 23 ।44 बजे।	वृश्चि.	वृष	मकर
7	20	"	मंगल	धनि.	9	।। ।। ।ऽरा. ।। ।।	ल. कुंभ दिवा 12 ।39 बजे।	वृश्चि.	वृष	कुंभ
10	23	"	शुक्र	उभा.	9	।। ।। ।।ऽ ।। ।	ल. कुंभ दिवा 12 ।27 बजे, कर्क रात्री 21 ।4 बजे।	वृश्चि.	वृष	मीन